<u>आप</u> बाइबल को समझ सकते हैं!

प्रिय शिष्य के संस्मरण और पत्र: यूहन्ना रचित सुसमाचार, 1, 2 और 3 यूहन्ना

बॉब उट्ले
प्रोफेसर ऑफ़ हेर्मेनेयुटिक्स
(बाइबल संबंधी व्याख्या)

स्टडी गाइड कमेंटरी सीरीज
न्यू टेस्टामेंट, VOL. 04

बाइबल लेसंस इंटरनेशनल, मार्शल, टेक्सास

विषयसूची

लेखक की ओर से एक शब्द: यह टिप्पणी कैसे आपकी सहायता कर सकती है? i

अच्छे बाइबल वाचन के लिए एक मार्गदर्शक: प्रमाणयोग्य सत्य के लिए एक निजी खोज iii

टिप्पणी:

- यूहन्ना की प्रस्तावना 1
- यूहन्ना 1 8
- यूहन्ना 2 44
- यूहन्ना 3 58
- यूहन्ना 4 78
- यूहन्ना 5 98
- यूहन्ना 6 114
- यूहन्ना 7 141
- यूहन्ना 8 155
- यूहन्ना 9 171
- यूहन्ना 10 180
- यूहन्ना 11 190
- यूहन्ना 12 205
- यूहन्ना 13 222
- यूहन्ना 14 233
- यूहन्ना 15 253
- यूहन्ना 16 263
- यूहन्ना 17 274
- यूहन्ना 18 288

यूहन्ना 19..303

यूहन्ना 20..317

यूहन्ना 21..328

1 यूहन्ना की प्रस्तावना..335

1 यूहन्ना 1..340

1 यूहन्ना 2..351

1 यूहन्ना 3..369

1 यूहन्ना 4..390

1 यूहन्ना 5..402

2 यूहन्ना...417

3 यूहन्ना...426

परिशिष्ट:

यूनानी व्याकरणिक संरचना की संक्षिप्त परिभाषाएँ..435

पाठ्य समीक्षा..444

शब्दकोष..448

मत-संबंधी कथन...457

विशेष विषयों की विषयसूची

ARCHĒ, यूहन्ना 1:1..11

यहोवा का दूत, यूहन्ना 1:5..13

आस्था, विश्वास या भरोसा, यूहन्ना 1:7..14

यीशु के गवाह, यूहन्ना 1:8...18

जानना (अधिकतर व्यवस्थाविवरण को परिपेक्ष्य के रूप में प्रयोग करते हुए), यूहन्ना 1:10.................................19

शरीर *(SARX)*, यूहन्ना 1:14..21

महिमा *(DOXA)*, यूहन्ना 1:14..22

करुणा *(HESED)*, यूहन्ना 1:14...23

पुराने नियम में आस्था, भरोसा, विश्वास या और विश्वासयोग्यता, यूहन्ना 1:14..23

मूसा की व्यवस्था के प्रति पौलुस के विचार, यूहन्ना 1:17..27

फरीसी, यूहन्ना 1:24..32

प्रेरितों के नामों की सूची, यूहन्ना 1:45...38

यीशु नासरी, यूहन्ना 1:45..40

आमीन, यूहन्ना 1:51..41

स्वर्ग और तीसरा स्वर्ग, यूहन्ना 1:51...43

मदिरा और मदिरा के दुरुपयोग के प्रति बाइबल की अभिवृत्ति, यूहन्ना 2:3...46

प्राचीन निकटपूर्वी तौल और माप (मापविद्या), यूहन्ना 2:6-7...49

फसह, यूहन्ना 2:13...52

यूहन्ना का क्रिया “विश्वास” का प्रयोग (संज्ञा यदा-कदा ही है), यूहन्ना 2:23...56

महासभा, यूहन्ना 3:1..59

परमेश्वर का राज्य, यूहन्ना 3:4...63

साँस, हवा, आत्मा, यूहन्ना 3:8...65

मनुष्य रूप में वर्णित परमेश्वर (अवतारवाद), यूहन्ना 3:16....67

चुनाव/पूर्वनियति और एक धर्मशास्त्रीय संतुलन की आवश्यकता, यूहन्ना 3:16....69

छाप, यूहन्ना 3:33....75

जातिवाद, यूहन्ना 4:4....80

पुराने नियम की भविष्यवाणी, यूहन्ना 4:19....85

नये नियम की भविष्यवाणी, यूहन्ना 4:19....89

पिता, यूहन्ना 4:23....91

मसीहा, यूहन्ना 4:25....92

परमेश्वर की इच्छा (*THELĒMA*), यूहन्ना 4:34....94

क्या चंगाई हर युग के लिए परमेश्वर की योजना है?, यूहन्ना 5:14....102

अक्षम्य पाप, यूहन्ना 5:21....105

भेजना *(APOSTELLŌ),* यूहन्ना 5:24....106

घड़ी, यूहन्ना 5:25....107

आरंभिक कलीसिया का *KERYGMA,* यूहन्ना 5:39....111

यीशु के दिवस में पलस्तीन में प्रचलित सिक्के, यूहन्ना 6:7....117

संख्या बारह, यूहन्ना 6:13....119

देवता के लिए नाम, यूहन्ना 6:20....120

मसीही आश्वासन, यूहन्ना 6:37....126

यूहन्ना के लेखन में "सत्य", यूहन्ना 6:55....131

सर्वदा *('OLAM),* यूहन्ना 6:58....132

स्वर्गारोहण, यूहन्ना 6:62....135

आत्मा *(PNEUMA)* नये नियम में, यूहन्ना 6:63....136

स्वधर्मत्याग (*APHISTĒMI*), यूहन्ना 6:64....137

निर्भीकता *(PARRHĒSIA),* यूहन्ना 7:4....143

दुष्टात्माएँ (अशुद्ध आत्माएँ), यूहन्ना 7:20.......147

धीरज धरने की आवश्यकता, यूहन्ना 8:31.......163

ज्ञानवाद, यूहन्ना 8:40.......166

उद्धार (यूनानी क्रिया काल), यूहन्ना 9:7.......174

अंगीकार, यूहन्ना 9:22-23.......176

विनाश *(APOLLUMI),* यूहन्ना 10:10.......183

बाइबल में अभिषेक (BDB 603), यूहन्ना 11:2.......192

शोक संस्कार, यूहन्ना 11:20.......195

बाइबल में स्त्रियाँ, यूहन्ना 11:28.......197

दफ़नाने की परम्पराएँ, यूहन्ना 11:44.......201

व्यक्तिगत दुष्टता, यूहन्ना 12:31.......214

स्वर्ग में लड़ाई, यूहन्ना 12:31.......216

हृदय, यूहन्ना 12:40.......218

यूहन्ना के लेखन में "आज्ञा" का प्रयोग, यूहन्ना 12:49-50.......220

फसह (सेवा का क्रम), यूहन्ना 13:2.......225

इस्करियोती, यूहन्ना 13:26.......229

मृतक, कहाँ हैं वे? (*SHEOL/HADES, GEHENNA, TARTARUS*), यूहन्ना 14:3.......236

प्रभावी प्रार्थना, यूहन्ना 14:13-14.......242

प्रभु का नाम, यूहन्ना 14:13-14.......243

यीशु और आत्मा, यूहन्ना 14:16.......244

पौलुस का *KOSMOS* (विश्व) का प्रयोग, यूहन्ना 14:17.......245

उस दिन, यूहन्ना 14:20.......246

त्रिएकत्व, यूहन्ना 14:26.......248

आत्मा का व्यक्ति होना, यूहन्ना 14:26.......249

मसीह और शान्ति, यूहन्ना 14:27......250

अग्नि, यूहन्ना 15:6......256

प्रकाशन, यूहन्ना 16:13......267

चुनाव/पूर्वनियति और एक धर्मशास्त्रीय संतुलन की आवश्यकता, यूहन्ना 17:2......276

एकेश्वरवाद, यूहन्ना 17:3......277

यूहन्ना के लेखन में "सत्य" (शब्द) , यूहन्ना 17:3......279

पवित्र, यूहन्ना 17:11......282

चुनाव/पूर्वनियति और एक धर्मशास्त्रीय संतुलन की आवश्यकता, यूहन्ना 18:2......291

यीशु नासरी, यूहन्ना 18:5......293

प्रीटोरियुम का सैनिक, यूहन्ना 18:28......297

पुन्तियुस पिलातुस, यूहन्ना 18:29......298

यीशु के पीछे-पीछे चलने वाली स्त्रियाँ, यूहन्ना 19:25......311

दफ़न-क्रिया के सुगन्ध द्रव्य, यूहन्ना 19:39......315

यीशु का पुनरुत्थान के बाद दर्शन, यूहन्ना 20:16......321

रूप (*tupos*) , यूहन्ना 20:25......324

यूहन्ना 1 1 यूहन्ना 1 की तुलना में, 1 यूहन्ना 1:1......343

KOINŌNIA (सहभागिता), 1 यूहन्ना 1:3......344

मसीहत सामूहिक है, 1 यूहन्ना 1:3......344

यूहन्ना के लेखन में "बने रहना", 1 यूहन्ना 2:10......356

जानना (अधिकतर व्यवस्थाविवरण को परिपेक्ष्य के रूप में प्रयोग करते हुए), 1 यूहन्ना 2:13......359

मानवीय शासन-प्रबंध, 1 यूहन्ना 2:15......360

यह युग और आनेवाला युग, 1 यूहन्ना 2:17......362

एक पवित्र, 1 यूहन्ना 2:20......364

यीशु के पुनरागमन के लिए नये नियम के शब्द, 1 यूहन्ना 2:28......371

धार्मिकता, 1 यूहन्ना 2:29..373

किसी के उद्धार के लिए नये नियम के प्रमाण, 1 यूहन्ना 3:1..376

पवित्रीकरण, 1 यूहन्ना 3:5..380

परमेश्वर का पुत्र, 1 यूहन्ना 3:8..381

प्रार्थना, असीमित फिर भी सीमित, 1 यूहन्ना 3:22...386

क्या मसीहियों को एक दूसरे का न्याय करना चाहिए?, 1 यूहन्ना 4:1...392

परखना और उनके संकेतार्थों के लिए यूनानी शब्द, 1 यूहन्ना 4:1...392

YHWH की अनंत छुटकारे की योजना, 1 यूहन्ना 4:15..398

आश्वासन, 1 यूहन्ना 5:13...407

मध्यस्थता की प्रार्थना, 1 यूहन्ना 5:14...409

पाप का फल मृत्यु क्या है?, 1 यूहन्ना 5:16..412

प्राचीन, 2 यूहन्ना 1...419

कलीसिया (*ekklēsia*), 3 यूहन्ना 6...430

लेखक की ओर से एक शब्द: यह टिप्पणी कैसे आपकी मदद कर सकती है?

बाइबल व्याख्या एक तर्कसंगत और आध्यात्मिक प्रक्रिया है जो एक प्राचीन प्रेरित लेखक को ऐसे तरीके से समझने का प्रयास करती है कि परमेश्वर का संदेश हमारे दिन में समझा और लागू किया जा सके।

आध्यात्मिक प्रक्रिया महत्वपूर्ण है लेकिन परिभाषित करना मुश्किल है। इसमें परमेश्वर के लिए एक समर्पण और खुलापन शामिल है। यहाँ एक भूख होनी चाहिए,(1) उसके लिए (2) उसे जानने के लिए, और (3) उसकी सेवा करने के लिए। इस प्रक्रिया में प्रार्थना, अंगीकार और जीवन शैली में बदलाव की इच्छा शामिल है। व्याख्यात्मक प्रक्रिया में आत्मा महत्वपूर्ण है, लेकिन निष्कपट , धर्मपरायण ईसाई बाइबल को अलग-अलग तरीके से क्यों समझते हैं, यह एक रहस्य है।

तर्कसंगत प्रक्रिया का वर्णन करना आसान है। हमें पाठ्य के अनुरूप और निष्पक्ष होना चाहिए और हमारे व्यक्तिगत या सांप्रदायिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। हम सभी ऐतिहासिक रूप से अनुबंधित हैं। हम में से कोई भी निष्पक्ष, तटस्थ व्याख्याकार नहीं है। यह टिप्पणी हमें सावधानीपूर्वक तर्कसंगत प्रक्रिया प्रदान करती है जिसमें तीन व्याख्यात्मक सिद्धांत निर्मित हैं जो हमें अपने पूर्वाग्रहों पर विजय पाने में मदद करते हैं।

पहला सिद्धांत

पहला सिद्धांत यह है कि जिस ऐतिहासिक वातावरण में बाइबल की पुस्तक लिखी गई थी और उसके लेखन के लिए जो विशेष ऐतिहासिक अवसर थे, उन पर ध्यान देना । मूल लेखक का एक उद्देश्य था, व्यक्त करने के लिए एक संदेश था। पाठ्य हमारे लिए ऐसा कुछ अर्थ नहीं रखता है जो मूल, प्राचीन, प्रेरित लेखक के लिए कभी था ही नहीं। उसका इरादा- न कि हमारी ऐतिहासिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत या सांप्रदायिक आवश्यकता - यह कुंजी है। अनुप्रयोग, व्याख्या का एक अभिन्न भागीदार है, लेकिन अनुप्रयोग से पहले हमेशा योग्य व्याख्या होनी चाहिए। यह दोहराया जाना चाहिए कि प्रत्येक बाइबल पाठ का एक और केवल एक अर्थ है। यह वह अर्थ है जो कि मूल बाइबल लेखक, आत्मा के नेतृत्व के माध्यम से अपने दिन में व्यक्त करना चाहता हैं। इस एक अर्थ के विभिन्न संस्कृतियों और स्थितियों के लिए कई संभावित अनुप्रयोग हो सकतें हैं। इन अनुप्रयोगों को मूल लेखक की केंद्रीय सच्चाई से जोड़ा जाना चाहिए। इस कारण से, इस अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी को बाइबल की प्रत्येक किताब के लिए एक परिचय प्रदान करने के लिए योजनाबद्ध किया गया है।

दूसरा सिद्धांत

दूसरा सिद्धांत साहित्यिक इकाइयों की पहचान करना है। प्रत्येक बाइबल पुस्तक एक एकीकृत दस्तावेज़ है। व्याख्याकारों को दूसरे पहलुओं को छोड़कर सत्य के एक पहलू को अलग करने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए, हमें व्यक्तिगत साहित्यिक इकाइयों की व्याख्या करने से पहले हमें पूरी बाइबल पुस्तक का उद्देश्य समझने की कोशिश करनी चाहिए। अलग-अलग भागों- अध्यायों, अनुछेदों या छंदों- का मतलब वो नहीं हो सकता जो कि पूरी इकाई का मतलब नहीं है। व्याख्या को संपूर्ण के लिए एक निगनात्मक दृष्टिकोण से चल कर भागों के लिए एक विवेचनात्मक दृष्टिकोण से आगे बढ़ना चाहिए। इसलिए, यह अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी छात्रों को अनुच्छेदों द्वारा प्रत्येक साहित्यिक इकाई के ढांचे का विश्लेषण करने में सहायता करने के लिए रची गई है। अनुच्छेद और अध्याय विभाग प्रेरित नहीं है, लेकिन वे विचार इकाइयों की पहचान करने में निश्चय हमारी सहायता करते हैं।

अनुच्छेद के स्तर पर व्याख्या करना -वाक्य, खंड, वाक्यांश या शब्द स्तर पर नहीं -बाइबल के लेखक के इच्छित अर्थ का पालन करने की कुंजी है। अनुच्छेद एक एकीकृत विषय पर आधारित हैं, जिसे अक्सर विषय या प्रासंगिक वाक्य कहा जाता है। अनुच्छेद में प्रत्येक शब्द, वाक्यांश, खंड और वाक्य किसी तरह से इस एकीकृत विषय से संबंधित है। वे इसे सीमित करते हैं, विस्तृत करते हैं, इसे समझाते हैं, और / या प्रश्न करते हैं। उचित व्याख्या के लिए एक वास्तविक कुंजी बाइबल की पुस्तक को बनाने वाले व्यक्तिगत साहित्यिक इकाइयों के माध्यम से अनुच्छेद-से-अनुच्छेद के आधार पर मूल लेखक के विचारों का पालन करना है। यह अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों की तुलना करके छात्र को यह करने में मदद करने हेतु बनाई गई है। इन अनुवादों का चयन किया गया है क्योंकि वे विभिन्न अनुवाद सिद्धांतों को प्रयोग करते हैं:

1. The United Bible Society के यूनानी पाठ में संशोधित चौथा संस्करण (UBS[4]) है। यह पाठ्य आधुनिक पाठ्य विद्वानों द्वारा अनुच्छेदित था।
2. The New King James Version (NKJV) एक शब्द-से-शब्द शाब्दिक अनुवाद है जो यूनानी पांडुलिपि परंपरा पर आधारित है जिसे Textus Receptus कहा जाता है। इसके अनुच्छेद विभाजन अन्य अनुवादों की तुलना में लम्बे हैं। ये लंबी इकाइयाँ छात्र को एकीकृत विषयों को देखने में मदद करती हैं।
3. The New Revised Standard Version (NRSV) एक संशोधित शब्द-से-शब्द का अनुवाद है। यह निम्न दो आधुनिक संस्करणों के बीच मध्य बिंदु बनाता है। इसके अनुछेद विभाग विषयों की पहचान करने में काफी सहायक हैं।
4. The Today's English Version (TEV) यूनाइटेड बाइबल सोसाइटी द्वारा प्रकाशित एक सक्रिय समकक्ष अनुवाद है। यह इस तरह बाइबल का अनुवाद करने की कोशिश करता है कि एक आधुनिक अंग्रेजी पाठक या वक्ता यूनानी पाठ के अर्थ को समझ सकें। अक्सर, विशेष रूप से सुसमाचार में, यह NIV की तरह, विषय के बजाय वक्ता द्वारा अनुच्छेदों को विभाजित करता है। व्याख्याकार के प्रयोजनों के लिए, यह उपयोगी नहीं है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि UBS4 और TEV दोनों एक ही सत्ता द्वारा प्रकाशित किए गए हैं, फिर भी उनके अनुच्छेद लेखन में अंतर है।
5. The Jerusalem Bible (JB) एक फ़्रांसीसी कैथोलिक अनुवाद पर आधारित एक सक्रिय समकक्ष अनुवाद है। यूरोपीय परिप्रेक्ष्य से अनुछेद लेखन की तुलना करने में यह बहुत उपयोगी है।
6. मुद्रित पाठ 1995 में नवीनीकृत New American Standard Bible (NASB) है, जो कि शब्द-से-शब्द अनुवाद है। इस अनुच्छेद लेखन के बाद छंद-से-छंद टिप्पणियाँ आती हैं।

तीसरा सिद्धांत

तीसरा सिद्धांत है, बाइबल के शब्दों या वाक्यांशों के जितने व्यापक अर्थ हो सकते हैं, (अर्थगत क्षेत्र) उन्हें समझने के लिए अलग-अलग अनुवादों में बाइबल को पढ़ना। अक्सर एक यूनानी वाक्यांश या शब्द कई मायनों में समझा जा सकता है। ये अलग-अलग अनुवाद इन विकल्पों को लाते हैं और यूनानी पांडुलिपि विभिन्नताओं को पहचानने और समझाने में सहायता करते हैं। ये सिद्धांत को प्रभावित नहीं करते हैं, लेकिन वे हमें एक प्रेरित प्राचीन लेखक द्वारा लिखे गए मूल पाठ में वापस ले जाने की कोशिश करते हैं।

यह टिप्पणी छात्र को अपनी व्याख्याओं की जांच करने के लिए एक त्वरित तरीका प्रदान करती है। यह निश्चित नहीं मानी जा सकती है, बल्कि जानकारीपूर्ण और सोच-उत्तेजक है। अक्सर, अन्य संभव व्याख्याएं हमें इतना संकीर्ण, कट्टरपंथी, और सांप्रदायिक नहीं होने में सहायता करती हैं। प्राचीन पाठ कितना अस्पष्ट हो सकता है यह पहचानने के लिए व्याख्याकारों को व्याख्यात्मक विकल्पों की एक बड़ी श्रृंखला की आवश्यकता है। यह चौंकाने वाली बात है कि उन ईसाईओं के बीच, जो बाइबल को अपना सच्चाई का स्रोत मानते हैं, कितनी कम सहमति है।

इन सिद्धांतों ने मुझे प्राचीन पाठ से संघर्ष करने के लिए मजबूर कर बहुत कुछ मेरे ऐतिहासिक अनुकूलन पर काबू पाने में मेरी मदद की है। मेरी आशा है कि यह आपके लिए भी एक आशीर्वाद होगा।

बॉब उट्ले
जून, 27, 1996

Copyright © 2013 Bible Lessons International

अच्छे बाइबल अध्ययन के लिए एक मार्गदर्शिका: सत्यापनयोग्य सत्य के लिए एक व्यक्तिगत खोज

आगे डॉ. बॉब उटले की टिप्पणियों में प्रयुक्त उनके हेर्मेनेयुटिक्स संबंधी दर्शन और प्रक्रियाओं का संक्षिप्त विवरण है।

क्या हम सत्य जान सकते हैं? यह कहां पाया जाता है? क्या हम तर्कसंगत रूप से इसे सत्यापित कर सकते हैं? क्या कोई परम अधिकारी है? क्या हैं जो हमारे जीवन, हमारी दुनिया का मार्गदर्शन कर सकें? क्या जीवन का अर्थ है? हम यहां क्यों हैं? हम कहाँ जा रहे है? इन प्रश्नों ने - प्रश्न जिनपर सभी तर्कसंगत लोगों ने विचार किया है-समय की शुरुआत से मानव बुद्धि को त्रस्त किया है (सभोपदेशक 1:13-18; 3:9-11)। मुझे अपने जीवन के लिए एक एकीकृत केंद्र के लिए मेरी निजी खोज याद आ रही है। मैं कम उम्र में मसीह में एक विश्वासी बन गया, मुख्य रूप से मेरे परिवार में महत्वपूर्ण अन्य लोगों की गवाही के आधार पर। जैसे मैं यौवनावस्था में बढ़ने लगा, मेरे और मेरी दुनिया के बारे में प्रश्न भी बढ़ने लगे। मैंने जिन अनुभवों को पढ़ा या जिनका सामना किया, साधारण सांस्कृतिक और धार्मिक रूढ़ियाँ, उन्हें कोई अर्थ नहीं दे पायीं। यह असंवेदनशील, निष्ठुर दुनिया के सामने भ्रम, खोज, लालसा और अक्सर निराशा की भावना का समय था, जिसमें मैं रहता था।

कई लोगों ने दावा किया कि उनके पास इन चरम सवालों के जवाब है, लेकिन अनुसंधान और चिंतन के बाद मैंने पाया कि उनके जवाब (1) व्यक्तिगत दर्शन, (2) प्राचीन कल्पित कथाओं, (3) व्यक्तिगत अनुभव, या (4) मनोवैज्ञानिक कल्पनाओं पर आधारित थे। मुझे कुछ हद तक सत्यापन, कुछ सबूत, कुछ तर्कसंगतता की आवश्यकता थी जिस पर मेरा विश्ववलोकन, मेरा एकीकरण केंद्र, मेरे जीने कारण का आधारित हो।
मैंने बाइबल के अपने अध्ययन में इन्हें पाया। मैं इसकी विश्वसनीयता के सबूत तलाश करने शुरू कर दिये, जिसे मैंने (1) पुरातत्व की पुष्टि के अनुसार बाइबल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता, (2) पुराने नियम की भविष्यवाणियों की सटीकता, (3) अपने उत्पादन के सोलह सौ वर्षों में बाइबल संदेश की एकता और (4) ऐसे लोगों की निजी गवाहियाँ जिनके जीवन बाइबल के संपर्क के जरिये स्थायी रूप से बदल गये। मसीहत, श्रद्धा और विश्वास की एक एकीकृत प्रणाली के रूप में, मानव जीवन के जटिल प्रश्नों से निपटने की क्षमता रखता है। इसने न केवल एक तर्कसंगत रूपरेखा प्रदान की, लेकिन बाइबल विश्वास के अनुभवात्मक पहलू ने मुझे भावनात्मक खुशी और स्थिरता दी।

मैंने सोचा था कि मुझे अपने जीवन के लिए एकीकरण केंद्र - मसीह मिल गया है, जैसा कि पवित्रशास्त्र के माध्यम से समझा था। यह एक मादक अनुभव था, एक भावनात्मक मुक्ति। हालांकि, मुझे अभी भी सदमे और दर्द याद है जब मुझ पर यह प्रकट होना शुरू हुआ कि इस पुस्तक के कितने अलग-अलग व्याख्याओं की वकालत की गई थी, कभी-कभी एक जैसी कलीसियाओं और विचारधाराओं में भी। बाइबल की प्रेरणा और विश्वसनीयता की पुष्टि, एक अंत नहीं था, लेकिन केवल शुरुआत थी। मैं उन लोगों के द्वारा पवित्रशास्त्र के कई कठिन परिच्छेदों की विभिन्न और विरोधाभासी व्याख्याओं को कैसे सत्यापित या अस्वीकार कर सकता हूं, जो उसके अधिकार और विश्वसनीयता का दावा कर रहे थे? (सुसमाचारीय मसीहत बाइबल की विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है, लेकिन इसका अर्थ क्या है, इसपर पर सहमत नहीं हो सकता!)
यह कार्य मेरे जीवन का लक्ष्य और विश्वास की तीर्थयात्रा बन गया। मुझे पता था कि मसीह में मेरा विश्वास मुझे महान शांति और खुशी लाया था। मेरा मन मेरी संस्कृति की सापेक्षता और परस्पर विरोधी धार्मिक प्रणालियों की मतान्धता और सांप्रदायिक अहंकार के बीच में कुछ निरपेक्षता की तलाश में था। प्राचीन साहित्य की व्याख्या के लिए वैध तरीकों की मेरी खोज में, अपने ही ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक और अनुभवात्मक पूर्वाग्रहों को खोजकर मैं आश्चर्यचकित हुआ। मैंने अक्सर अपने स्वयं के विचारों को मजबूत करने के लिए बाइबल पढ़ी थी। मैंने अपनी स्वयं की असुरक्षाओं और अपर्याप्तताओं की पुष्टि करते हुए, दूसरों पर आक्रमण करने के लिए इसे धर्म सिद्धांत के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया। यह अहसास मेरे लिए कितना दर्दनाक था !

यद्यपि मैं पूरी तरह से निष्पक्ष कभी भी नहीं हो सकता, मैं बाइबल का बेहतर पाठक बन सकता हूं। मैं अपने पूर्वाग्रहों को पहचान कर और उनकी उपस्थिति को स्वीकार करके उन्हें सीमित कर सकता हूं। मैं अभी तक उनसे मुक्त नहीं हूं, लेकिन मैंने अपनी कमजोरियों का सामना किया है। एक व्याख्यकार अक्सर अच्छी बाइबल पढ़ने का सबसे बुरा दुश्मन होता है! मुझे कुछ पूर्वधारणाओं को सूचीबद्ध करने दो, जिन्हें मैं बाइबल के अपने अध्ययन के लिए लाऊं ताकि आप, पाठक, मेरे साथ उन्हें जांच सकें:

I. पूर्वधारणाएँ

1. मेरा मानना है कि बाइबल एक सच्चे परमेश्वर का एकमात्र प्रेरित आत्म-प्रकाशन है। इसलिए मूल दिव्य लेखक के इरादे के प्रकाश में एक विशिष्ट ऐतिहासिक विन्यास में मानव लेखक के माध्यम से इसकी व्याख्या की जानी चाहिए।
2. मेरा मानना है कि बाइबल आम लोगों के लिए लिखी गई थी-सभी लोगों के लिए! परमेश्वर ने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में स्पष्ट रूप से हमसे बात करने के लिए स्वयं को समायोजित किया। परमेश्वर सत्य नहीं छुपाता है-वह चाहता है कि हम समझें! इसलिए, उसके दिन की सहायता से इसकी व्याख्या की जानी चाहिए, न कि हमारे। बाइबल का हमारे लिए वो अर्थ नहीं हो सकता है जो अर्थ उन लोगों के लिए कभी नहीं हुआ जो पहले इसे पढ़ते या सुनते थे।यह एक औसत मानव दिमाग द्वारा समझा जा सकता है और सामान्य मानव संचार रूपों और तकनीकों का उपयोग करता है।
3. मेरा मानना है कि बाइबल का एक एकीकृत संदेश और उद्देश्य है। यह खुद का विरोधाभास नहीं करता है, हालांकि इसमें मुश्किल और विरोधाभासी लेखांश होते हैं। इस प्रकार, बाइबल का सबसे अच्छा व्याख्याकार बाइबल ही है।
4. मेरा मानना है कि हर लेखांश (भविष्यवाणियों को छोड़कर) का मूल, प्रेरित लेखक के अभिप्राय के आधार पर एक और केवल एक ही अर्थ है। हालांकि हम कभी भी निश्चित नहीं हो सकते हैं कि हम मूल लेखक के अभिप्राय को जानते हैं, कई संकेतक इसकी दिशा में इंगित करते हैं:
   a. शैली (साहित्यिक प्रकार) संदेश व्यक्त करने के लिए चुनी गई
   b. ऐतिहासिक विन्यास और / या विशिष्ट अवसर जो लेखन को प्रकाश में लाता है
   c. संपूर्ण पुस्तक के साथ-साथ प्रत्येक साहित्यिक इकाई का साहित्यिक संदर्भ
   d. साहित्यिक इकाइयों के पाठ प्रारूप (रूपरेखा) जिस रूप में वे पूरे संदेश से संबंधित हैं
   e. संदेश को बताने करने के लिए नियोजित विशिष्ट व्याकरणिक विशेषताएं
   f. संदेश प्रस्तुत करने के लिए चुने गए शब्द

इन क्षेत्रों में से प्रत्येक का अध्ययन करना हमारे एक लेखांश के अध्ययन का उद्देश्य बन जाता है। एक बाइबल वाचन के लिए मेरी पद्धति की व्याख्या करने से पहले, मुझे आज इस्तेमाल होने वाली कुछ अनुचित विधियों का वर्णन करने दें, जिन्होंने व्याख्या की इतनी विविधता पैदा की है, और अतः इससे बचा जाना चाहिए:

II. अनुचित तरीके

1. बाइबल की किताबों के साहित्यिक संदर्भ को अनदेखा करना और लेखक के अभिप्राय या बड़े संदर्भ से संबंध न रखने वाले सत्य के विवरण के रूप में प्रत्येक वाक्य, खंड या यहां तक कि व्यक्तिगत शब्दों का उपयोग करना। इसे अक्सर "proof texting" कहा जाता है।
2. किसी ऐसे तथाकथित ऐतिहासिक विन्यास को प्रतिस्थापित करके पुस्तकों की ऐतिहासिक विन्यास को अनदेखा करना, जो पाठ से बहुत कम या बिल्कुल आधारित नहीं है।
3. किताबों की ऐतिहासिक विन्यास को अनदेखा करना और मुख्य रूप से आधुनिक व्यक्तिगत ईसाइयों के लिए लिखे गए सुबह के गृहनगर समाचार पत्र के रूप में इसे पढ़ना।
4. पाठ का, प्रथम सुनने वालों और मूल लेखक के अभिप्राय से पूरी तरह से असंबंधित ऐतिहासिक दार्शनिक / धार्मिक संदेश में रूपक बना कर, पुस्तकों के ऐतिहासिक विन्यास को अनदेखा करना,
5. मूल लेखक के उद्देश्य और निश्चित संदेश को स्वयं की धार्मिक प्रणाली, मनपसंद सिद्धांत, या समकालीन मुद्दे से प्रतिस्थापित करके अनदेखा करना। इस प्रक्रिया के बाद, अक्सर एक वक्ता के अधिकार को स्थापित करने के लिये प्रारंभिक बाइबल वाचन किया जाता है। इसे अक्सर "पाठक प्रतिक्रिया"(" पाठ मेरे लिए क्या अर्थ रखता है") व्याख्या के रूप में जाना जाता है।

   कम से कम तीन संबंधित घटक सभी लिखित मानव संचार में पाए जा सकते हैं:

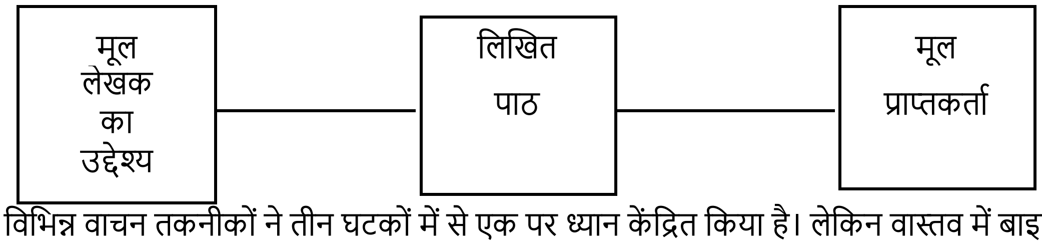

भूतकाल में, विभिन्न वाचन तकनीकों ने तीन घटकों में से एक पर ध्यान केंद्रित किया है। लेकिन वास्तव में बाइबल की अनूठी

प्रेरणा की पुष्टि करने के लिए, एक संशोधित आरेख अधिक उपयुक्त है:

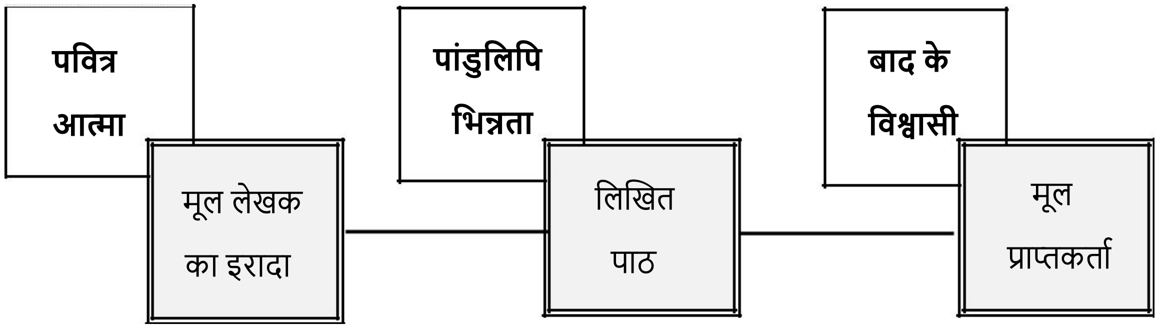

सच में सभी तीन घटकों को व्याख्यात्मक प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। सत्यापन के उद्देश्य से, मेरी व्याख्या पहले दो घटकों पर केंद्रित है: मूल लेखक और पाठ। मैं संभवतः उन दुरूपयोगों पर प्रतिक्रिया कर रहा हूं जिनका मैंने निरीक्षण किया है: (1) ग्रंथों का रूपक बनाना या आध्यात्मिक बनाना और (2)"पाठक प्रतिक्रिया" व्याख्या (इसका मेरे लिए क्या अर्थ है)। दुरुपयोग प्रत्येक चरण में हो सकता है। हमें हमेशा अपने उद्देश्यों, पूर्वाग्रहों, तकनीकों और अनुप्रयोगों की जांच करनी चाहिए। लेकिन अगर व्याख्याओं की कोई सीमा नहीं हैं, कोई पाबंदी नहीं, कोई मानदंड नहीं है तो हम उन्हें कैसे जांच सकते हैं? यहाँ पर लेखकीय इरादा और पाठ्य संरचना मुझे संभावित वैध व्याख्याओं के दायरे को सीमित करने के लिए कुछ मानदंड प्रदान करती है।
इन अनुचित वाचन की तकनीकों के प्रकाश में, एक अच्छे बाइबल वाचन और व्याख्या करने के लिए कुछ संभावित दृष्टिकोण क्या हैं जो सत्यापन और स्थिरता का दर्जा प्रदान करते हैं?

III. अच्छे बाइबल वाचन के लिए संभावित पद्धति

इस स्थान पर मैं विशिष्ट शैलियों की व्याख्या करने की अनूठी तकनीकों पर चर्चा नहीं कर रहा हूं लेकिन सामान्य अर्थ-विषयक सिद्धांत सभी प्रकार के बाइबल ग्रंथों के लिए मान्य हैं। शैली-विशिष्ट पद्धतियों के लिए एक अच्छी किताब है, Zondervan द्वारा प्रकाशित Gordon Fee and Douglas Stuart द्वारा लिखित *How To Read The Bible For All Its Worth*

मेरी पद्धति प्रारंभ में पाठक पर केंद्रित है जो पवित्र आत्मा को चार व्यक्तिगत वाचन चक्रों के माध्यम से बाइबल को प्रकाशित करने की इजाजत देती है। यह आत्मा, पाठ और पाठक को प्राथमिक बनाती है, माध्यमिक नहीं। यह पाठक को टीकाकारों द्वारा अनावश्यक रूप से प्रभावित होने से भी बचाती है। मैंने यह सुना है: "बाइबल टिप्पणियों पर बहुत अधिक प्रकाश डालती है" यह अध्ययन साधनों के बारे में एक कमजोर टिप्पणी नहीं है, बल्कि उनके उपयोग के उचित समय के लिए एक निवेदन है।
हमें पाठ से हमारी व्याख्याओं का समर्थन करने में सक्षम होना चाहिए। छह क्षेत्र कम से कम सीमित सत्यापन प्रदान करते हैं:

1. ऐतिहासिक विन्यास
2. साहित्यिक संदर्भ
3. व्याकरणिक संरचनाएं (वाक्यविन्यास)
4. समकालीन शब्द उपयोग
5. प्रासंगिक समांतर लेखांश
6. शैली

हमें अपनी व्याख्याओं के पीछे कारण और तर्क प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए। बाइबल विश्वास और अभ्यास के लिए हमारा एकमात्र स्रोत है। अफसोस की बात है, जो यह सिखाती है या पुष्टि करती है, उससे ईसाई प्रायः असहमत हैं। चार वाचन चक्रों की निम्नलिखित व्याख्यात्मक अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए रचना की गई है:

1. पहला वाचन चक्र
   a. पुस्तक को एक ही बैठक में पढ़ें। एक अलग अनुवाद में इसे फिर पढ़ें, बेहतर है एक अलग अनुवाद सिद्धांत से
      (1) शब्दश: (NKJV, NASB, NRSV)
      (2) गतिशील समकक्ष (TEV, NJB)
      (3) भावानुवाद (Living Bible, Amplified Bible)

b. पूरे लेखन के केंद्रीय उद्देश्य की तलाश करें। उसकी विषयवस्तु की पहचान करें।
c. एक साहित्यिक इकाई, एक अध्याय, एक अनुच्छेद या एक वाक्य को जो स्पष्ट रूप से इस केंद्रीय उद्देश्य या संपूर्ण पुस्तक की विषयवस्तु को व्यक्त करता है, अलग करें (यदि संभव हो)।
d. प्रमुख साहित्यिक शैली की पहचान करें
    (1) पुराना नियम
        a) इब्रानी कथा
        b) इब्रानी पद्य (बुद्धि साहित्य, भजन)
        c) इब्रानी भविष्यवाणी (गद्य, पद्य)
        d) कानून संहिता
    (2) नया नियम
        a) कथाएं (सुसमाचार, प्रेरितों के काम)
        b) दृष्टांत (सुसमाचार)
        c) पत्र / धर्मपत्र
        d) भविष्यसूचक साहित्य

2. दूसरा वाचन चक्र
    a. प्रमुख प्रसंगों या विषयों की पहचान करने के लिए पूरी किताब फिर से पढ़ें।
    b. प्रमुख विषयों की रूपरेखा तैयार करें और संक्षेप में अपनी विषयवस्तु को एक सरल कथन में बताएं।
    c. अध्ययन साधनों से अपने उद्देश्य कथन और व्यापक रूपरेखा की जांच करें।
3. तीसरा वाचन चक्र
    a. बाइबल पुस्तक से लेखन के लिए ऐतिहासिक विन्यास और विशिष्ट अवसर की पहचान करने के लिए पूरी किताब फिर से पढ़ें।
    b. बाइबल पुस्तक में वर्णित ऐतिहासिक वस्तुओं को सूचीबद्ध करें
        (1) लेखक
        (2) तारीख
        (3) प्राप्तकर्ता
        (4) लेखन के लिए विशिष्ट कारण
        (5) लेखन के उद्देश्य से संबंधित सांस्कृतिक विन्यास के पहलु
        (6) ऐतिहासिक लोगों और घटनाओं के संदर्भ
    c. आप जिस बाइबल पुस्तक की व्याख्या कर रहे हैं उसके उस भाग के लिए अनुच्छेद स्तर पर अपनी रूपरेखा का विस्तार करें। हमेशा साहित्यिक इकाई को पहचानकर रूपरेखा तैयार करें। ये कई अध्याय या अनुच्छेद हो सकतें हैं। यह आपको मूल लेखक के तर्क और पाठ प्रारूप का पालन करने में सक्षम बनाता है।
    d. अध्ययन साधनों का उपयोग कर अपने ऐतिहासिक विन्यास की जांच करें।
4. चौथा वाचन चक्र
    a. विशिष्ट साहित्यिक इकाई को अन्य अनुवादों में फिर से पढ़ें
        (1) शब्दशः (NKJV, NASB, NRSV)
        (2) गतिशील समकक्ष (TEV, NJB)
        (3) भावानुवाद (Living Bible, Amplified Bible)
    b. साहित्यिक या व्याकरणिक संरचनाओं की तलाश करें
        (1) पुनरावर्तित वाक्यांश, इफिसियों 1:6,12,13
        (2) पुनरावर्तित व्याकरणिक संरचनाएं, रोमियों 8:31
        (3) विपरीत अवधारणाएं
    c. निम्नलिखित विषयों की सूची
        (1) महत्वपूर्ण शब्दावली
        (2) असामान्य शब्दावली
        (3) महत्वपूर्ण व्याकरणिक संरचनाएं
        (4) विशेष रूप से कठिन शब्द, खंड, और वाक्य
    d. प्रासंगिक समांतर लेखांशों की तलाश करें

(1) अपने विषय पर सबसे स्पष्ट शिक्षण मार्ग की तलाश करें
   a) "व्यवस्थित धर्मशास्त्र" किताबें
   b) संदर्भ बाइबलें
   c) शब्दानुक्रमणिकाएं
(2) अपने विषय के अंतर्गत एक संभावित विरोधाभासी जोड़ी की तलाश करें। बाइबल की कई सच्चाईयाँ बोलीगत जोड़ियों में प्रस्तुत की जाती है; कई सांप्रदायिक संघर्ष बाइबल के तनाव के आधे proof texting से आते हैं। सारी बाइबल प्रेरित है, और हमें अपनी व्याख्या के लिए एक धर्मशास्त्रीय संतुलन प्रदान करने के लिए उसका पूरा संदेश खोजना होगा।
(3) एक ही किताब, एक ही लेखक या एक ही शैली के भीतर समानतरों की तलाश करें; बाइबल स्वयं की सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार है क्योंकि इसमें एक लेखक है, आत्मा।

e. ऐतिहासिक विन्यास और अवसर के अपने अवलोकनों की जांच के लिए अध्ययन साधनों का उपयोग करें
(1) अध्ययन बाइबलें
(2) बाइबल विश्वकोष, विवरण पुस्तिका और शब्दकोश
(3) बाइबल प्रस्तावनाएं
(4) बाइबल टिप्पणियां (इस समय आपके अध्ययन में, अतीत और वर्तमान के विश्वास करने वाले समुदाय को, आपके व्यक्तिगत अध्ययन की सहायता और सुधार करने की अनुमति दें।)

IV. बाइबल व्याख्या का अनुप्रयोग

इस बिंदु पर हम अनुप्रयोग की ओर ध्यान देते हैं। आपने पाठ को अपने मूल विन्यास में समझने के लिए समय निकाला है; अब आपको इसे अपने जीवन, अपनी संस्कृति पर लागू करना होगा। मैं बाइबल की सत्ता को ऐसे परिभाषित करता हूं, "यह समझना कि मूल बाइबल लेखक अपने दिन में क्या कह रहा था और उस सच्चाई को हमारे दिन पर लागू करना।"

अनुप्रयोग में समय और तर्क, दोनों में मूल लेखक के अभिप्राय की व्याख्या का पालन करना चाहिए। हम एक बाइबल लेखांश को अपने दिन पर लागू नहीं कर सकते हैं, जब तक हम यह नहीं जानते कि वह अपने दिन में क्या कह रहा था! एक बाइबल लेखांश का वह अर्थ नहीं हो सकता जो उसका अर्थ कभी भी नहीं था!
अनुच्छेद स्तर (वाचन चक्र #3) के लिए आपकी विस्तृत रूपरेखा, आपकी मार्गदर्शिका होगी। अनुप्रयोग अनुच्छेद स्तर पर किया जाना चाहिए, शब्द स्तर पर नहीं। शब्दों का अर्थ है केवल संदर्भ में; खंडों का अर्थ है केवल संदर्भ में; वाक्यों का अर्थ है केवल संदर्भ में । व्याख्यात्मक प्रक्रिया में शामिल एकमात्र प्रेरित व्यक्ति, मूल लेखक है। हम केवल पवित्र आत्मा की रोशनी में उसके नेतृत्व का पालन करते हैं। लेकिन रोशनी प्रेरणा नहीं है। "परमेश्वर ऐसा कहते हैं",यह कहने के लिए हमें मूल लेखक के अभिप्राय का पालन करना होगा। अनुप्रयोग विशेष रूप से पूरे लेखन, विशिष्ट साहित्यिक इकाई और अनुच्छेद स्तर विचार विकास के सामान्य उद्देश्य से संबंधित होना चाहिए।

हमारे दिन के मुद्दों को बाइबल की व्याख्या न करने दें; बाइबल को बोलने दें! इसके लिए हमें पाठ से सिद्धांतों लेने की आवश्यकता हो सकती है। अगर पाठ एक सिद्धांत का समर्थन करता है, तो यह मान्य है। दुर्भाग्यवश, कई बार हमारे सिद्धांत केवल "हमारे सिद्धांत" होते हैं-पाठ के सिद्धांत नहीं।

बाइबल को लागू करने में, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि (भविष्यवाणी को छोड़कर) एक और केवल एक ही अर्थ किसी विशेष बाइबल पाठ के लिए मान्य है। इसका अर्थ मूल लेखक के अभिप्राय से संबंधित है जैसा उसने किसी संकट या उसके दिन की आवश्यकता को संबोधित किया था। इस एक अर्थ से कई संभावित अनुप्रयोग प्राप्त किए जा सकते हैं। अनुप्रयोग प्राप्तकर्ताओं की जरूरतों पर आधारित होगा, लेकिन यह मूल लेखक के अर्थ से संबंधित होना चाहिए।

V. व्याख्या का आध्यात्मिक पहलू

अब तक मैंने व्याख्या और अनुप्रयोग में निहित तार्किक प्रक्रिया पर चर्चा की है। अब मुझे संक्षेप में व्याख्या के आध्यात्मिक पहलू पर चर्चा करने दें। निम्नलिखित जाँच सूची मेरे लिए सहायक रही है:

1. आत्मा की मदद के लिए प्रार्थना करें (तुलना 1 कुरिन्थियों 1: 26- 2:16)।
2. व्यक्तिगत क्षमा और ज्ञात पाप से पवित्रीकरण के लिए प्रार्थना करें (तुलना 1 यूहन्ना 1:9)।
3. परमेश्वर को जानने की अधिक इच्छा के लिए प्रार्थना करें (तुलना भजन संहिता 19: 7-14; 42: 1ff; 119: 1ff)।
4. अपने जीवन में तुरंत कोई नई अंतर्दृष्टि लागू करें।
5. विनम्र और सिखाने योग्य बने रहें।

तार्किक प्रक्रिया और पवित्र आत्मा के आध्यात्मिक नेतृत्व के बीच संतुलन रखना बहुत मुश्किल है। निम्नलिखित उद्धरणों ने मुझे दोनों को संतुलित रखने में मदद की है:

1. James W. Sire, *Scripture Twisting* pp. 17-18 से:
   "उद्बोधन केवल परमेश्वर के लोगों के दिमाग में आता है-न सिर्फ आध्यात्मिक विशिष्ट वर्ग के। बाइबल आधारित मसीहत में कोई गुरु वर्ग नहीं है, कोई उद्बोधन नहीं, न कोई भी ऐसे व्यक्ति जिनके माध्यम से सभी उचित व्याख्या आये। और इसलिए, जबकि पवित्र आत्मा बुद्धि, ज्ञान और आध्यात्मिक विवेक के विशेष दान देता है, वह इन प्रतिभाशाली ईसाइयों को अपने वचन का एकमात्र आधिकारिक व्याख्यकार नियुक्त नहीं करता है।यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह उस बाइबल के संदर्भ में सीखें, न्याय करें और समझें, जो उन लोगों के लिए भी एक सत्ताधारी के रूप में खड़ा है, जिन्हें परमेश्वर ने विशेष क्षमताएं दीं हैं। संक्षेप में, मैं पूरी किताब में जो धारणा बना रहा हूं वह यह है कि बाइबल सारी मानवता के लिए परमेश्वर का सच्चा प्रकाशन है, कि यह सभी मामलों पर हमारा अंतिम अधिकार है जिसके बारे में यह बात करता है, कि यह कुल रहस्य नहीं है किन्तु हर संस्कृति में साधारण लोगों द्वारा पर्याप्त रूप से समझा जा सकता है।"

2. Kierkegaard पर, Bernard Ramm की, *Protestant Biblical Interpretation*, p. 75 में:
   किर्केगार्ड के अनुसार बाइबल का व्याकरणिक, शाब्दिक, और ऐतिहासिक अध्ययन आवश्यक था, लेकिन बाइबल के वास्तविक वाचन के प्रारंभिक दौर में। "बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में पढ़ने के लिए उसे अपना हृदय अपने मुंह में लेकर, पंजों के बल पर, उत्सुक प्रत्याशा के साथ,परमेश्वर के साथ बातचीत करते हुए पढ़ना चाहिए। बाइबल को बिना सोचे या लापरवाही से या अकादमिक या व्यावसायिक रूप से पढ़ना, बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में पढ़ना नहीं है।जब कोई इसे ऐसे पढ़ता है, जैसे प्रेमपत्र पढ़ा जाता है, तब वह इसे परमेश्वर के वचन के रूप में पढ़ता है।"

3. H. H. Rowley, *The Relevance of the Bible*, p.19:
   "बाइबल की कोई भी केवल बौद्धिक समझ, कितनी भी सम्पूर्ण क्यों न हो, उसकी सारी निधि से युक्त नहीं हो सकती। यह ऐसी समझ की उपेक्षा नहीं करती है, क्योंकि यह पूरी समझ के लिए आवश्यक है। लेकिन अगर इसे संपूर्ण होना है तो इसे, इस पुस्तक के आध्यात्मिक खजाने की आध्यात्मिक समझ की ओर ले जाना होगा। और उस आध्यात्मिक समझ के लिए बौद्धिक सतर्कता से कुछ अधिक की आवश्यक है। आध्यात्मिक चीजों को आध्यात्मिक रूप से पहचाना जाता है, और बाइबल के छात्र को आध्यात्मिक ग्रहणशीलता की प्रवृति की आवश्यकता है, परमेश्वर को खोजने की उत्सुकता है ताकि वह अपने आप को उसे दे सके, अगर वह अपने वैज्ञानिक अध्ययन से परे सबसे महान पुस्तक की सम्पन्न विरासत में पारित होना है।"

VI. इस टिप्पणी का तरीका

The *Study Guide Commentary* को आपकी व्याख्यात्मक प्रक्रियाओं की सहायता के लिए निम्नलिखित तरीकों से योजनाबद्ध किया गया है:

1. एक संक्षिप्त ऐतिहासिक रूपरेखा प्रत्येक पुस्तक का परिचय देती है।"वाचन चक्र #तीन" पूरा करने के बाद इस जानकारी को देखें।
2. प्रत्येक अध्याय की शुरुआत में प्रासंगिक अंतर्दृष्टि मिलती है। इससे आपको यह देखने में मदद मिलेगी कि साहित्यिक इकाई की संरचना कैसे की जाती है।

3. प्रत्येक अध्याय या प्रमुख साहित्यिक इकाई की शुरुआत में अनुच्छेद विभाग और उनके वर्णनात्मक अनुशीर्षक कई आधुनिक अनुवादों से प्रदान किए गए हैं:
   a. The United Bible Society Greek text, fourth edition revised (UBS4)
   b. The New American Standard Bible,1995 Update (NASB)
   c. The New King James Version (NKJV)
   d. The New Revised Standard Version (NRSV)
   e. Today's English Version (TEV)
   f. The New Jerusalem Bible (NJB)

   अनुच्छेद विभाग प्रेरित नहीं हैं। उन्हें संदर्भ से सुनिश्चित करना चाहिए। विभिन्न अनुवाद सिद्धांतों और धार्मिक दृष्टिकोण से कई आधुनिक अनुवादों की तुलना करके, मूल लेखक के विचार की अनुमानित संरचना का विश्लेषण करने में हम सक्षम हैं। प्रत्येक अनुच्छेद में एक प्रमुख सत्य है। इसे "प्रासंगिक वाक्य" या "पाठ का केंद्रीय विचार" कहा जाता है। यह एकीकृत विचार उचित ऐतिहासिक, व्याकरणिक व्याख्या की कुंजी है। किसी एक अनुच्छेद से कम पर व्याख्या, प्रचार या शिक्षण नहीं करना चाहिए! यह भी याद रखें कि प्रत्येक अनुच्छेद उसके आसपास के अनुछेदों से संबंधित है। यही कारण है कि पूरी किताब की एक अनुच्छेद-स्तर की रूपरेखा बहुत महत्वपूर्ण है। हम मूल प्रेरित लेखक द्वारा संबोधित किये जा रहे विषय के तार्किक प्रवाह का पालन करने में सक्षम होने चाहिए।

4. टिप्पणियाँ लिखने में पद-दर-पद दृष्टिकोण से व्याख्या की जाती है। यह हमें मूल लेखक के विचारों का पालन करने के लिए मजबूर करता है। टिप्पणियाँ कई क्षेत्रों से जानकारी प्रदान करती हैं:
   a. साहित्यिक संदर्भ
   b. ऐतिहासिक, सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि
   c. व्याकरण संबंधी जानकारी
   d. शब्द अध्ययन
   e. प्रासंगिक समांतर लेखांश
5. टिप्पणी में कुछ जगहों पर, New American Standard Version (1995 update) का मुद्रित पाठ कई अन्य आधुनिक संस्करणों के अनुवादों द्वारा पूरक होगा।
   a. The New King James Version (NKJV), जो "Textus Receptive" की पाठ्यपुस्तक पांडुलिपियों का पालन करता है।
   b. New Revised Standard Version (NRSV), जो National Council of Churches of the Revised Standard Version से शब्दश: संशोधन है।
   c. The Today's English Version (TEV), जो American Bible Society गतिशील समकक्ष अनुवाद है।
   d. The New Jerusalem Bible (NJB), जो एक फ्रांसीसी कैथोलिक गतिशील समकक्ष अनुवाद पर आधारित एक अंग्रेजी अनुवाद है।
6. जो लोग यूनानी नहीं पढ़ते हैं, उनके लिए अंग्रेजी अनुवाद की तुलना पाठ में समस्याओं की पहचान करने में मदद कर सकती है
   a. पांडुलिपि विविधता
   b. वैकल्पिक शब्दार्थ
   c. व्याकरणिक रूप से कठिन ग्रंथ और संरचना
   d. अस्पष्ट ग्रंथ हालांकि अंग्रेजी अनुवाद इन समस्याओं को हल नहीं कर सकते हैं, वे उन्हें गहरे और अधिक व्यापक अध्ययन के लिए स्थानों के रूप में लक्षित करते हैं।
   e. प्रत्येक अध्याय के अंत में, प्रासंगिक चर्चा प्रश्न प्रदान किए जाते हैं जो उस अध्याय के प्रमुख व्याख्यात्मक मुद्दों को लक्षित करने का प्रयास करते हैं।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना की प्रस्तावना

प्रारंभिक कथन

A. मत्ती और लूका यीशु के जन्म के साथ शुरू होते हैं, मरकुस उनके बपतिस्मे के साथ शुरू होता है, लेकिन यूहन्ना सृष्टि से पहले शुरू होता है।

B. यूहन्ना प्रथम अध्याय के पहले वचन से नासरत के यीशु के पूर्ण देवता को प्रस्तुत करता है और पूरे सुसमाचार में इस जोर को दोहराता है। सिनॉप्टिक सुसमाचार अपनी प्रस्तुतियों ("The Messianic Secret") में देर तक इस सच्चाई पर पर्दा डाले रखतें हैं।

C. जाहिर तौर पर यूहन्ना संक्षिप्त सुसमाचारों के मूल पुष्टीकरण के प्रकाश में अपना सुसमाचार विकसित करता है। वह प्रारंभिक कलीसिया (पहली शताब्दी के अंत में) की जरूरतों के प्रकाश में यीशु के जीवन और शिक्षाओं का पूरक और व्याख्या करने का प्रयास करता है।

D. यूहन्ना यीशु मसीह की अपनी प्रस्तुति की संरचना इनके इर्दगिर्द करता प्रतीत होता है
   1. सात चमत्कार/चिन्ह और उनकी व्याख्या
   2. सत्ताईस साक्षात्कार और / या व्यक्तियों के साथ संवाद
   3. निश्चित आराधना और पर्व के दिन
      a. सब्त
      b. फसह (तुलना यूहन्ना 5-6)
      c. तम्बू (तुलना यूहन्ना 7-10)
      d. समर्पण-पर्व (तुलना यूहन्ना 10: 22-39)
   4. "मैं हूँ" कथन
      a. दिव्य नाम (YHWH)से संबंधित
         1) मैं वही हूँ (यूहन्ना 4:26; 8:24,28; 13:19; 18:5-6) 2)
         2) इस से पहले कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ,मैं हूँ (यूहन्ना 8:54-59)
      b. कर्ताकारक विधेय के साथ
         1) मैं जीवन की रोटी हूँ (यूहन्ना 6:35, 41, 51)
         2) मैं जगत की ज्योति हूँ (यूहन्ना 8:12)
         3) मैं भेड़ों का द्वार हूँ (यूहन्ना 10 : 7, 9)
         4) मैं अच्छा चरवाहा हूँ (यूहन्ना 10:11,14)
         5) मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ (यूहन्ना 11:25)
         6) मैं मार्ग, सत्य और जीवन हूँ (यूहन्ना 14:6)
         7) मैं सच्ची दाखलता हूँ (यूहन्ना 15:1,5)

E. यूहन्ना और दूसरे सुसमाचारों के बीच अंतर
   1. हालाँकि यह सच है कि यूहन्ना का प्राथमिक उद्देश्य धर्मशास्त्रीय है, उसका इतिहास और भूगोल का उपयोग अत्यंत सटीक और विस्तृत है। संक्षिप्त (सुसमाचारों) और यूहन्ना के बीच विसंगतियों का सटीक कारण अनिश्चित है।
      a. एक प्रारंभिक यहूदियाई सेवा (मंदिर की प्रारंभिक सफाई)
      b. कालक्रम और यीशु के जीवन के अंतिम सप्ताह की तारीख
      c. एक उद्देश्यपूर्ण धार्मिक पुनर्गठन
   2. यह यूहन्ना और संक्षिप्त (सुसमाचारों) के बीच स्पष्ट अंतर पर चर्चा करने के लिए एक क्षण लेने में मददगार होगा। मुझे मतभेदों पर *A Theology of the New Testament* से जॉर्ज एल्डन लैड को उद्धृत करने दें:

a. "चौथा सुसमाचार सिनॉप्टिक्स से इतना अलग है कि इस सवाल का ईमानदारी से सामना किया जाना चाहिए कि क्या यह यीशु की शिक्षाओं की सही-सही रिपोर्ट करता है या क्या ईसाई विश्वास ने इस परंपरा को इस प्रकार संशोधित किया है कि वैज्ञानिक व्याख्या में इतिहास को निगल लिया गया है" (पृष्ठ 215)।

b. "सरलता से मिलने वाला समाधान यह है कि यीशु की शिक्षाओं को जोहानिन मुहावरे में व्यक्त किया गया है। यदि यह सही समाधान है, और अगर हम यह निष्कर्ष निकालले कि चौथा सुसमाचार जोहानिन मुहावरे में लिखा गया है, तो यह महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है: किस हद तक चौथे सुसमाचार का धर्मशास्त्र यीशु के बजाय यूहन्ना का है? यीशु का शिक्षण किस हद तक यूहन्ना के दिमाग में इतना आत्मसात किया गया है कि जो हमारे पास है वह यीशु के स्वयं के शिक्षण के सटीक प्रतिनिधित्व के बजाय जोहानिन की व्याख्या है? " (पृ.215)।

c. लैड ने डब्ल्यू.डी. डेविअस और डी. डॉब द्वारा संपादित *The Background of the New Testament and It's Eschatology* में "Recent Discoveries in Palestine and the Gospel of John से डब्ल्यू. एफ.अलब्राइट के उद्धरण भी दिए हैं

"यूहन्ना और संक्षिप्त (सुसमाचारों) के बीच शिक्षण में कोई बुनियादी अंतर नहीं है; उनके बीच की विषमता मसीह की शिक्षाओं के कुछ पहलुओं के साथ परंपरा की एकाग्रता में निहित है, विशेष रूप से वे जो इस्सैन के शिक्षण के सदृश्य सबसे अधिक निकटता से प्रतीत होते हैं।

यह दिखाने के लिए बिल्कुल कुछ भी नहीं है कि यीशु की शिक्षाओं में से किसी को भी विकृत किया गया या झूठा ठहराया गया है, या उनमें एक महत्वपूर्ण नया तत्व जोड़ा गया है। प्रारंभिक कलीसिया की जरूरतों ने सुसमाचार में शामिल किए जाने वाले विषयों के चयन को प्रभावित किया, ये हम आसानी से स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन यह मानने का कोई कारण नहीं है कि उस कलीसिया की आवश्यकताएँ किसी आविष्कार या धार्मिक महत्व की नई प्रक्रिया के लिए जिम्मेवार थीं।

नए नियम के आलोचनावादी विद्वानों और धर्मशास्त्रियों की सबसे अजीब धारणा यह है कि यीशु का दिमाग इतना सीमित था कि यूहन्ना और संक्षिप्त (सुसमाचारों) के बीच कोई भी स्पष्ट विरोधाभास प्रारंभिक मसीहतशास्त्रियों के बीच मतभेदों के कारण होना चाहिए। हर महान विचारक और व्यक्तित्व अलग-अलग दोस्तों और श्रोताओं द्वारा अलग-अलग तरह से व्याखित किया जाएगा, वे,जो उन्होंने देखा और सुना है उसमें से सबसे अधिक अनुकूल या उपयोगी लगता है,उसी का चयन करेंगे "(pp.170-171)

d. और फिर से जॉर्ज ई. लाड के साथ:

"उनके बीच का अंतर यह नहीं है कि यूहन्ना धर्मशास्त्रीय है और अन्य नहीं हैं, लेकिन यह कि सभी विभिन्न प्रकार से धर्मशास्त्रीय हैं। व्याख्या किया गया इतिहास मात्र घटनाओं के कालक्रम की तुलना में वास्तव में स्थिति के तथ्यों को प्रस्तुत कर सकता है। यदि यूहन्ना एक धर्मशास्त्रीय व्याख्या है, तो यह उन घटनाओं की व्याख्या है, जिनका यूहन्ना को यकीन है कि इतिहास में हुई हैं। स्पष्ट रूप से संक्षिप्त सुसमाचारों का इरादा यीशु अथवा उसके जीवन की घटनाओं की जीवनी की *ipsissima verba of (*सटीक शब्द) रिपोर्ट देने का नहीं है। वे यीशु की छवि और उसके शिक्षण के सारांश हैं। मत्ती और लूका खुद को मरकुस में सामग्री को पुनर्व्यवस्थित करने और यीशु के शिक्षण को काफी स्वतंत्रता के साथ प्रस्तुत करने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं। यदि यूहन्ना ने मत्ती और लूका की तुलना में अधिक स्वतंत्रता का उपयोग किया, तो यह इसलिए है क्योंकि वह यीशु की अधिक गहरी और अंततः अधिक वास्तविक छवि देने की कामना करता है "(pp. 221-222)।

लेखक

A. सुसमाचार अनाम है लेकिन यूहन्ना के लेखकत्व की ओर संकेत देता है।
   1. एक प्रत्क्षयदर्शी लेखक (तुलना यूहन्ना 19:35)
   2. वाक्यांश "प्रिय शिष्य" (दोनों पॉलीक्रेट्स और इरेनाएउस उसे प्रेरित यूहन्ना के रूप में पहचानते हैं)
   3. जब्दी का बेटा, यूहन्ना, कभी भी नाम से उल्लेख नहीं किया

B. ऐतिहासिक विन्यास स्वयं सुसमाचार से स्पष्ट है, इसलिए, लेखकत्व का मुद्दा व्याख्या में एक महत्वपूर्ण कारक नहीं है। एक प्रेरित लेखक की पुष्टि महत्वपूर्ण है!

    यूहन्ना के सुसमाचार का लेखकत्व और तिथि प्रेरणा को नहीं किंतु व्याख्या को प्रभावित करते हैं, टिप्पणीकार एक ऐतिहासिक विन्यास की तलाश करते हैं, एक ऐसा अवसर जिसके कारण पुस्तक लिखी गई। क्या इनसे यूहन्ना के द्वैतवाद की तुलना करनी चाहिए

    1. दो यहूदी युग
    2. धार्मिकता का कुमरान शिक्षक
    3. पारसी धर्म
    4. ज्ञानवादी विचार
    5. यीशु का अनोखा नजरिया?

C. प्रारंभिक पारंपरिक दृष्टिकोण यह है कि ज़बदी का पुत्र प्रेरित यूहन्ना मानव, प्रत्यक्षदर्शी स्त्रोत है। यह स्पष्ट किया जाना चाहिए क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि दूसरी शताब्दी के बाहरी स्रोत सुसमाचार के उत्पादन में दूसरों को जोड़ते हैं:

    1. संगी विश्वासियों और इफिसिओं के बुजुर्गों ने वृद्ध प्रेरित को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया (यूसेबियस अलेक्जेंड्रिया के क्लीमेंट को उद्धरित करते हैं)
    2. एक संगी प्रेरित, अन्द्रियास (मुराटोरीयन फ्रैगमेंट, 180-200 ई., रोम से)

D. कुछ आधुनिक विद्वानों ने एक और लेखक को सुसमाचार की शैली और विषय के बारे में कई मान्यताओं के आधार पर माना है। कई लोग दूसरी शताब्दी की प्रारंभिक तारीख मानते हैं (115 ई. से पहले):

    1. यूहन्ना के शिष्यों (प्रभाव का एक जोहानिन चक्र) द्वारा लिखित, जिन्होंने उनकी शिक्षाओं को याद किया (जे. वीस, बी. लाइटफुट, सी.एच. डोड, ओ. कुलमैन, आर.ए. कुल्पेपर, सी.के. बैरेट)
    2. " वृद्ध यूहन्ना" द्वारा लिखित (एशिया के शुरुआती अगुवों की एक श्रृंखला जो प्रेरित यूहन्ना के धर्मशास्त्र और शब्दावली से प्रभावित है)जो यूसेबियस (280-339 ई) द्वारा उद्धृत पपियास (70-146 ई.) के एक अस्पष्ट अवतरण से ली गई है।

E. स्वयं यूहन्ना के सुसमाचार के तथ्य के लिए प्राथमिक स्रोत होने का सबूत

    1. आंतरिक सबूत
        a. लेखक यहूदी शिक्षाओं और रीति-रिवाजों को जानता था और अपने पुराने नियम के विश्व दृष्टिकोण में सहभागी करता था।
        b. लेखक पलस्तीन और यरूशलेम को उनके पूर्व-70 ई परिस्थिति में जानता था।
        c. लेखक एक प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा करता है
            1) यूहन्ना 1:14
            2) यूहन्ना 19:35
            3) यूहन्ना 21:24
        d. लेखक प्रेरित संबंधी समूह का सदस्य था, क्योंकि वह परिचित है:
            1) समय और स्थान के विवरणों से (रात परीक्षण)
            2) संख्याओं का विवरणों से (यूहन्ना 2: 6 के पानी के मटके और यूहन्ना 21:11 की मछलियाँ)
            3) व्यक्तियों के विवरण
            4) लेखक घटनाओं का विवरण और उन पर प्रतिक्रिया को जानता था
            5) लेखक को "प्रिय शिष्य" के रूप में नामांकित किया गया लगता है
                a) यूहन्ना 13: 23,25
                b) यूहन्ना 19: 26-27
                c) यूहन्ना 20: 2-5,8
                d) यूहन्ना 21: 7, 20-24
            6) लेखक पतरस के साथ आंतरिक समुदाय का सदस्य प्रतीत होता है
                a) यूहन्ना 13:24
                b) यूहन्ना 20: 2
                c) यूहन्ना 21:7

7) ज़ब्दी के बेटे, यूहन्ना का नाम इस सुसमाचार में कभी नहीं दिखाई देता है, जो अत्यधिक असामान्य लगता है क्योंकि वह प्रेरित संबंधी आंतरिक समुदाय का सदस्य था।

2. बाह्य सबूत
   a. इनसे जाना जाने वाला सुसमाचार
      1) इरेनियस (120-202 ई) जो पॉलीकार्प से जुड़ा था, प्रेरित यूहन्ना को जानता था (तुलना Eusebius' *Historical Eccleasticus* 5:20: 6-7) - "यूहन्ना प्रभु का शिष्य जो उनके सीने पर झुका और जिसने स्वयं एशिया में इफिसुस में सुसमाचार जारी किया" (*Haer*, 3: 1: 1, Eusebius *'Hist Eccl.* 5:8:4) में उद्धृत
      2) अलेक्जेंड्रिया का क्लेमेंट (153-217 ई) - "यूहन्ना ने, जिसे उसके दोस्तों द्वारा आग्रह किया गया था और जो आत्मा के द्वारा दैवीय रूप प्रेरित हुए, एक आध्यात्मिक सुसमाचार की रचना की" (Eusebius' *Historical Eccleasticus* 6:14:7)
      3) जस्टिन मार्टियर (110-165 ई) ने अपने *Dialogue with Trypho 81:4* में
      4) टर्टुलियन (145-220 ई)
   b. यूहन्ना के लेखत्व का प्रारंभिक गवाहों द्वारा दावा
      1) पॉलीकार्प (इरेनियस द्वारा दर्ज 70-156 ई), जो स्मिमा (155 ई) का बिशप था
      2) पैपिएस (70-146 ई, रोम से मार्कोनाइट विरोधी प्रस्तावना और यूसेबियस द्वारा दर्ज किया गया था), जो फ्रीगिया में हायरपोलिस का बिशप था और जिसके प्रेरित यूहन्ना के शिष्य होने की जानकारी है

F. पारंपरिक लेखकत्व पर संदेह करने में प्रयुक्त कारण
   1. ज्ञानवादी विषयों के साथ सुसमाचार का संबंध
   2. अध्याय 21 का स्पष्ट परिशिष्ट
   3. संक्षिप्त (सुसमाचारों) के साथ कालानुक्रमिक विसंगतियाँ
   4. यूहन्ना ने खुद को "प्रिय शिष्य" के रूप में संदर्भित नहीं किया होगा
   5. यूहन्ना के यीशु संक्षिप्त (सुसमाचारों) की तुलना में भिन्न शब्दावली और शैलियों का उपयोग करते हैं

G. अगर हम यह मान लें कि यह यूहन्ना प्रेरित था तो हम मनुष्य के बारे में क्या मान सकते हैं?
   1. उसने इफिसुस से लिखा (इरेनियस कहते हैं "इफिसुस से सुसमाचार जारी किया")
   2. उसने लिखा जब वह एक वृद्ध व्यक्ति था (इरेनियस कहते हैं कि वह ट्राजन के शासनकाल तक जीवित था, 98-117 ई)

तारीख

A. यदि हम प्रेरित यूहन्ना को मानते हैं
   1. 70 ई से पहले, जब यरूशलेम को रोमी जनरल (बाद में सम्राट), तीतुस द्वारा नष्ट कर दिया गया था,
      a. यूहन्ना 5:2 में, " यरूशलेम में भेड़- फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है;उसके पाँच ओसारे हैं......"
      b. प्रेरित संबंधी समूह को निरूपित करने के लिए शुरुआती उपाधि "शिष्यों" का बार-बार उपयोग
      c. काल्पनिक अंत के ज्ञानवादी तत्वों को अब मृत सागर चीरकों में खोजा गया है, जो दर्शाता है कि वे पहली शताब्दी के धार्मिक शब्दजाल का हिस्सा थे
      d. 70 ई में मंदिर और यरूशलेम शहर के विनाश का कोई उल्लेख नहीं है।
      e. प्रसिद्ध अमेरिकी पुरातत्वविज्ञानी डब्ल्यू. एफ.अलब्राइट 70 के दशक के अंत में या 80 के दशक की शुरुआत में सुसमाचार के लिए एक तारीख का दावा करते हैं।
   2. पहली सदी में बाद में
      a. यूहन्ना का विकसित धर्मशास्त्र
      b. यरूशलेम के पतन का उल्लेख नहीं है क्योंकि यह कुछ बीस साल पहले हुआ था
      c. यूहन्ना का रहस्यवादी प्रकार के वाक्यांशों का उपयोग और जोर
      d. कलीसिया की प्रारंभिक परंपराएँ

1) इरेनियस
2) यूसेबियस

B. यदि हम "बुजुर्ग यूहन्ना" मान लेते हैं, तो तारीख दूसरी शताब्दी के प्रारंभ से मध्य तक होगी। इस सिद्धांत की शुरुआत डायोनिसियस के प्रेरित यूहन्ना के लेखकत्व को (साहित्यिक कारणों से) अस्वीकार करने से हुई। यूसेबियस को, जिन्होंने यूहन्ना प्रेरित के प्रकाशन के लेखत्व को धर्मशास्त्रीय कारणों से अस्वीकार कर दिया, लगा कि उन्हें सही समय पर और सही जगह पर पापियास के उद्धरण में एक और "यूहन्ना" मिला है (*Historical Eccleasticus* 3:39: 5,6), जो दो "यूहन्नाओं" को सूचीबद्ध करता है (1) प्रेरित और (2) बुजुर्ग (प्रेस्बिटेर)।

प्राप्तकर्ता

A. मूलतः इसे एशिया माइनर के रोमन प्रांत की कलीसियाओं, विशेष रूप से इफिसुस को लिखा गया था।
B. नासरत के यीशु के जीवन और व्यक्ति के इस वृत्तान्त की गहन सादगी और गहराई के कारण

यह यूनानी मत के अन्यजाति विश्वासियों और ज्ञानवादी समूहों दोनों के लिए एक पसंदीदा सुसमाचार बन गया।

उद्देश्य

A. सुसमाचार स्वयं अपने प्रचारक उद्देश्य पर ज़ोर देता है, यूहन्ना 20: 30-31
   1. यहूदी पाठकों के लिए
   2. अन्यजाति लोगों के लिए
   3. आरंभिक ज्ञानवादी पाठकों के लिए
B. इसमें एक क्षमाशील आक्रमण प्रतीत होता है
   1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के कट्टरपंथी अनुयायियों के खिलाफ
   2. आरंभिक ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के खिलाफ (विशेष रूप से प्रस्तावना); ये ज्ञानवादी झूठे उपदेश नए नियम की अन्य पुस्तकों की पृष्ठभूमि भी बनाते हैं:
      a. इफिसियों
      b. कुलुस्सियों
      c. पादरी संबंधी पत्रियाँ (1 तीमुथियुस, तीतुस, 2 तीमुथियुस)
      d. 1 यूहन्ना (1 यूहन्ना ने सुसमाचार के लिए एक व्याख्या पत्र के रूप में कार्य किया होगा)
C. संभावना है कि यूहन्ना 20:31 के उद्देश्य कथन को उद्धार का वर्णन करने के लिए लगातार वर्तमान काल का उपयोग करने के कारण दृढ़ता के सिद्धांत के साथ ही साथ सुसमाचार प्रचार को प्रोत्साहन देने वाला समझा जाता सकता है। इस अर्थ में, यूहन्ना, याकूब की तरह, एशिया माइनर (तुलना 2 पतरस 3:15-16) में कुछ समूहों द्वारा पौलुस के धर्मशास्त्र के अत्यधिक जोर पर संतुलन बना रहा होगा। यह आश्चर्य की बात है कि प्रारंभिक कलीसिया की परंपरा यूहन्ना की पहचान इफिसुस से करती है, न कि पौलुस की (तुलना F.F.Bruce's *Peter, Stephen,James and John: Studies in Non-Pauline Christianity,* pp 120-121)।
D. उपसंहार (यूहन्ना 21) प्रारंभिक कलीसिया के विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर देता है
   1. यूहन्ना संक्षिप्त सुसमाचारों के वृत्तान्तों का पूरक है। हालाँकि, वह यहूदिया की सेवकाई, विशेषकर यरूशलेम पर ध्यान केंद्रित करता है।
   2. यूहन्ना 21 परिशिष्ट में शामिल तीन प्रश्न
      a. पतरस की बहाली
      b. यूहन्ना की दीर्घायु
      c. यीशु की देरी से वापसी
E. कुछ लोग यूहन्ना को उद्देश्यपूर्ण अनदेखा करने और अभिलेख न करने अथवा यूहन्ना 3 में (बपतिस्मा लेने के लिए) और यूहन्ना 6 में (यूचरिस्ट अथवा प्रभुभोज के लिए) उचित प्रासंगिक संदर्भों के बावजूद नियमों की चर्चा न करके संस्कारवाद पर ज़ोर न देते हुए देखते हैं।

यूहन्ना की रूप रेखा की विशेषताएँ

A. एक दार्शनिक / धर्मशास्त्रीय प्रस्तावना (यूहन्ना 1:1-18) और एक व्यावहारिक उपसंहार (यूहन्ना 21)
B. यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के दौरान सात चमत्कार के चिन्ह (अध्याय यूहन्ना 2-12) और उनकी व्याख्या:
   1. काना में विवाह भोज में पानी को दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2: 1-11)
   2. कफरनहूम के दरबार के अधिकारी के बेटे को ठीक करना (यूहन्ना 4: 46-54)
   3. यरूशलेम में बैतहसदा (यूहन्ना 5:1-18)
   4. गलील में लगभग 5,000 को भोजन (यूहन्ना 6:1-15)
   5. गलील की झील पर चलना (यूहन्ना 6:16-21)
   6. यरूशलेम में जन्म से अंधे मनुष्य की चंगाई (यूहन्ना 9:1-41)
   7. बैतनिय्याह में लाजर का जी उठना (यूहन्ना 11: 1-57)
C. साक्षात्कार और व्यक्तियों के साथ वार्तालाप
   1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (यूहन्ना 1:19-34; 3: 22-36)
   2. शिष्य
      a. अन्द्रियास और पतरस (यूहन्ना 1: 35-42)
      b. फिलिप्पुस और नतनएल (यूहन्ना 1: 43-51)
   3. नीकुदेमुस (यूहन्ना 3:1-21)
   4. सामरी स्त्री (यूहन्ना 4:1-45)
   5. यरूशलेम में यहूदी (यूहन्ना 5:10-47)
   6. गलील में भीड़ (यूहन्ना 6:22-66) 7
   7. पतरस और शिष्य (यूहन्ना 6:67-71)
   8. यीशु के भाई (यूहन्ना 7:1-13)
   9. यरूशलेम में यहूदी (यूहन्ना 7:14-8: 59; 10:1-42)
   10. ऊपरी कक्ष में शिष्य (यूहन्ना 13:1-17: 26)
   11. यहूदी गिरफ्तारी और मुकदमा (यूहन्ना 18:1-27)
   12. रोमी मुकदमा (यूहन्ना 18:28-19:16)
   13. पुनरुत्थान के बाद वार्तालाप, 20:11-29
      a. मरियम के साथ
      b. दस प्रेरितों के साथ
      c. थोमा के साथ
   14. पतरस के साथ उपसंहारक संवाद यूहन्ना 21:1-25
   15. (यूहन्ना 7:53-8:11, व्यभिचारी स्त्री की कहानी, मूलतः यूहन्ना के सुसमाचार का हिस्सा नहीं थी!)
D. कुछ आराधना/ पर्व के दिन!
   1. सब्त (यूहन्ना 5:9; 7:22; 9:14; 19:31)
   2. फसह (यूहन्ना 2:13; 6:4; 11:55; 18:28)
   3. झोपड़ियों का पर्व (यूहन्ना 8-9)
   4. हनुक्काह (रोशनी का पर्व, तुलना यूहन्ना 10:22)
E. "मैं हूँ" कथन का उपयोग
   1. "मैं “वही” हूँ" (यूहन्ना 4:26; 6:20; 8:24,28,54-59; 13:19; 18:5-6,8)
   2. "जीवन की रोटी मैं हूँ" (यूहन्ना 6:35,41,48,51)
   3. "जगत की ज्योति मैं हूँ" (यूहन्ना 8:12; 9:5)
   4. “भेड़ों का द्वार मैं हूँ" (यूहन्ना 10:7,9)
   5. "अच्छा चरवाहा मैं हूँ" (यूहन्ना 10:11,14)
   6. "पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ" (यूहन्ना 11:25)
   7. "मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ" (यूहन्ना 14:6)
   8. "सच्ची दाखलता मैं हूँ" (यूहन्ना 15:1,5)

अध्ययन चक्र एक

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक बार में पढ़िए। संपूर्ण पुस्तक की केंद्रीय विषयवस्तु अपने शब्दों में बताइए

1. पूरी पुस्तक की विषयवस्तु
2. साहित्य का प्रकार (शैली)

अध्ययन चक्र दो

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक बार में पढ़िए। मुख्य विषयों की रूपरेखा बनाएँ और एक वाक्य में विषय को व्यक्त करें।

1. पहली साहित्यिक इकाई का विषय
2. दूसरी साहित्यिक इकाई का विषय
3. तीसरी साहित्यिक इकाई का विषय
4. चौथी साहित्यिक इकाई का विषय
5. आदि

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 1

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
वचन देहधारी हुआ	अनंत वचन	प्रस्तावना	जीवन का वचन	प्रस्तावना
1:1-5	1:1-5	1:1-5	1:1-5	1:1-18
	यूहन्ना की गवाही: सच्ची ज्योति			
1:6-13	1:6-13	1:6-9	1:6-9	
		1:10-13	1:10-13	
	वचन देहधारी हुआ			
1:14-18	1:14-18	1:14-18	1:14	
			1:15	
			1:16-18	
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही	जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द	यूहन्ना की गवाही	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का संदेश	यूहन्ना की गवाही
1:19-28	1:19-28	1:19-23	1:19	1:19-28
			1:20	
			1:21a	
			1:21b	
			1:21c	
			1:22a	
			1:22b	
			1:23	
		1:24-28	1:24-25	
			1:26-27	
			1:28	
परमेश्वर का मेमना	परमेश्वर का मेमना		परमेश्वर का मेमना	
1:29-34	1:29-34	1:29-34	1:29-31	1:29-34
			1:32-34	
प्रथम शिष्य	प्रथम शिष्य	यीशु के प्रथम शिष्य की गवाही	यीशु के प्रथम शिष्य	प्रथम शिष्य

1:35-42	1:35-42	1:35-42	1:35-36	1:35-39
			1:37-38a	
			1:38b	
			1:39	
			1:40-42a	1:40-42
			1:42b	
फिलिप्पुस और नतनएल की बुलाहट	फिलिप्पुस और नतनएल		यीशु फिलिप्पुस और नतनएल को बुलाता है	
1:43-51	1:43-51	1:43-51	1:43-45	1:43-51
			1:46a	
			1:46b	
			1:47	
			1:48a	
			1:48b	
			1:49	
			1:50-51	

* प्रेरित नहीं होने के बावजूद, अनुच्छेद विभाग मूल लेखक के उद्देश्य को समझने और उनका पालन करने में कुंजियाँ हैं। प्रत्येक आधुनिक अनुवाद ने अध्याय एक को विभाजित करके उसका सार प्रस्तुत किया है। प्रत्येक संस्करण अपने विशिष्ट तरीके से उस विषय को संपुटित करता है। जैसा कि आप पाठ पढ़ते हैं, स्वयं से पूछें कि कौन सा अनुवाद विषय और छंद विभागों की आपकी समझ में उपयुक्त बैठता है।

प्रत्येक अध्याय में आप पहले बाइबल पढें और उसके विषयों (अनुच्छेदों) को पहचानने की कोशिश करें। फिर आधुनिक संस्करणों के साथ अपनी समझ की तुलना करें। केवल जब हम मूल लेखक के अभिप्राय को उसके तर्क और प्रस्तुति का पालन करके समझते हैं,तब हम वास्तव में बाइबल को समझ सकते हैं। केवल मूल लेखक प्रेरित है-पाठकों को संदेश बदलने या संशोधित करने का कोई अधिकार नहीं है। बाइबल के पाठकों की जिम्मेदारी प्रेरणादायक सत्य को अपने दिन और अपने जीवनों में लागू करने की है।

ध्यान दें कि सभी तकनीकी शब्दों और संक्षिप्त रूपों को परिशिष्ट एक, दो, तीन और चार में समझाया गया है।

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

प्रासंगिक अंतर्दृष्टि में वचन 1-18

A. कविता/ भजन/ पंथ की धार्मिक रूपरेखा
   1. अनन्त, दिव्य, सृष्टिकर्त्ता, उद्धारक मसीह, यूहन्ना 1:1-5 (शब्द के रूप में यीशु)
   2. मसीह के भविष्यसूचक गवाह, यूहन्ना 1: 4-5, 7-8, 15 (ज्योति के रूप में यीशु)
   3. अवतरित मसीह ने परमेश्वर को प्रकट किया, यूहन्ना 1:1-18 (पुत्र के रूप में यीशु)

B. यूहन्ना 1:1-18 और आवर्तक विषयवस्तुओं की धर्मशात्रीय संरचना
   1. यीशु परमेश्वर पिता के साथ पहले से विद्यमान थे (यूहन्ना 1:1a)
   2. यीशु परमेश्वर पिता के साथ अंतरंग संगति में थे (यूहन्ना1:1b, 2,18c)
   3. यीशु परमेश्वर पिता के मूलतत्व के सहभागी थे (यूहन्ना 1: 1c, 18b)
   4. परम पिता के छुटकारे और अंगीकार करने के साधन (यूहन्ना 1:12-13)
   5. देहधारण, देवता एक मनुष्य बन जाता है (यूहन्ना 1:9,14)
   6. प्रकटीकरण, देवता का पूर्ण रूप से प्रकट होना और समझा जाना (यूहन्ना 1:18d)

C. logos(शब्द)की इब्रानी और यूनानी पृष्टभूमि
   1. इब्रानी पृष्ठभूमि
      a. बोले गए शब्द का सामर्थ्य (यशायाह 55:11; भजनसंहिता 33:6; 107:20; 147:15,18), जैसा कि सृजन में है (उत्पत्ति 1:3,6,9,11,14,20,24, 26,29) और पितृसत्तात्मक आशीष (उत्पत्ति 27: 1ff; 49: 1)
      b. नीतिवचन 8:12-23 "बुद्धि" का परमेश्वर की पहली रचना और सम्पूर्ण सृष्टि के प्रतिनिधि के रूप में मानवीकरण करता है (तुलना भजनसंहिता 33: 6 और गैर-विहित *Wisdom of* Solomon, 9:9)
      c. Targums (अरामी अनुवाद और टिप्पणियाँ) वाक्यांश "परमेश्वर का वचन" को मानवरूपी शब्दों के साथ उनकी असुविधा के कारण *logos* से प्रतिस्थापित करते हैं
   2. यूनानी पृष्ठभूमि
      a. Heracleitus - दुनिया प्रवाह में थी; अवैयक्तिक दिव्य और अपरिवर्तनीय *logos* ने इसे एक साथ रखा और बदलती प्रक्रिया को निर्देशित किया।
      b. Plato - अवैयक्तिक और अपरिवर्तनीय *logos* ने ग्रहों को उनके मार्ग में रखा और ऋतुओं का निर्धारण किया।
      c. Stoics - *logos* "विश्व कारण" या प्रबंधक था, लेकिन अर्ध-व्यक्तिगत था।
      d. Philo -उसने *logos* की अवधारणा का "महा याजक" के रूप में मानवीकरण किया है जो परमेश्वर के सामने मनुष्य की आत्मा को स्थापित करता है, "या" मनुष्य और परमेश्वर के बीच का सेतु, या " पतवार जिससे ब्रह्मांड का खेवनहार सभी चीजों का परिचालन करता है "(*kosmocrater*)

D. दूसरी शताब्दी ई. के विकसित ज्ञानवादी धर्मशास्त्रीय / दार्शनिक प्रणाली के तत्व
   1. आत्मा और तत्व के बीच एक सत्तामूलक(अनंत) विरोधी द्वैतवाद
   2. तत्व बुरा और हठीला है; आत्मा अच्छा है।
   3. ज्ञानावाद प्रणाली एक उच्च, अच्छे परमेश्वर और न्यूनतर परमेश्वर के बीच दिव्य स्तर (*aeons*) की एक श्रृंखला प्रस्तुत करती है जो तत्व बनाने में सक्षम थी। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि यह न्यूनतर परमेश्वर पुराने नियम का YHWH था (जैसे मार्कियन)
   4. उद्धार इनके द्वारा आया
      a. गुप्त ज्ञान या संकेत-शब्द जिसने एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ जुड़ने के उनके मार्ग पर इन दिव्य स्तरों से गुजरने दिया।
      b. मनुष्यों में एक दिव्य चिंगारी, जिसे वे गुप्त ज्ञान प्राप्त होने तक जानते नहीं हैं
      c. प्रकटीकरण का एक विशेष व्यक्तिगत प्रतिनिधि जो मानव जाति को यह गुप्त ज्ञान देता है (मसीह की आत्मा)
   5. विचार की इस प्रणाली ने यीशु के देवत्व का दावा किया, लेकिन उनके वास्तविक और स्थायी देहधारण और केंद्रीय मोचन स्थान से इनकार कर दिया!

E. ऐतिहासिक विन्यास
   1. पद 1-18 शब्द *logos* का उपयोग करते हुए दोनों इब्रानी और यूनानी दिमागों से संबंध रखने का प्रयास है।
   2. ज्ञान-संबंधी विज्ञान का विधर्म यूहन्ना के सुसमाचार के इस उच्च संरचित परिचय के लिए दार्शनिक पृष्ठभूमि है। 1 यूहन्ना सुसमाचार का आवरण पत्र रहा होगा। "ज्ञान-संबंधी विज्ञान" कहलाये जाने वाली विचारधारा की धर्मशास्त्रीय प्रणाली दूसरी शताब्दी तक लिखित रूप से अज्ञात है, लेकिन मृत सागर चीरकों और फिलो में प्रारंभिक ज्ञानवादी विषय- वस्तुएँ पाई जाती हैं।
   3. संक्षिप्त सुसमाचार (विशेषतः मरकुस) यीशु के देवत्व को (मसीही रहस्य)कलवरी के बाद तक गुप्त रखते हैं, लेकिन यूहन्ना, बहुत बाद में लिखते हुए, पहले अध्याय में यीशु की महत्वपूर्ण विषय-वस्तुओं को सम्पूर्ण परमेश्वर और सम्पूर्ण मनुष्य (मनुष्य का पुत्र, तुलना यहेजकेल 2:1 और दानिय्येल 7:13) के रूप में विकसित करते हैं।

F. विशेष विषय देखें: यूहन्ना 1, 1 यूहन्ना 1 की तुलना में 1 यूहन्ना 1:1 में।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1:1-5
[1]आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। [2]यही आदि में परमेश्वर के साथ था। [3]सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। [4]उसमें जीवन था और जीवन वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था। [5]ज्योति अंधकार में चमकती है, और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया।

1:1 "आदि में" यह उत्पत्ति 1:1 को प्रतिबिंबित करता है और देहधारण के संदर्भ के रूप में 1 यूहन्ना 1:1 में भी प्रयुक्त किया गया है। यह संभव है कि 1 यूहन्ना सुसमाचार का एक आवरण पत्र था। दोनों ही ज्ञानवाद से व्यवहार रखते हैं। पद 1-5 सृष्टि से पहले यीशु मसीह के दिव्य पूर्व-अस्तित्व की पुष्टि है (तुलना यूहन्ना 1:15; 8: 56-59; 16:28; 17: 5; 2 कुरिन्थियों 8:9; फिलिप्पियों 2: 6 -7; कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 1: 3; 10: 5-9)।

नए नियम को निम्न रूपों में वर्णित किया गया है
1. एक नई सृष्टि, जो पतन द्वारा क्षतिग्रस्त नहीं है (अर्थात, उत्पत्ति 3:15 मानव जाति के लिए परिपूर्ण किया गया)
2. एक नई विजय (वाचा की भूमि)
3. एक नया निर्गमन (परिपूर्ण भविष्यवाणी)
4. एक नया मूसा (नियम देने वाला)
5. एक नया यहोशू (तुलना इब्रानियों 4: 8)
6. एक नया पानी का चमत्कार (तुलना इब्रानियों 3-4)
7. नया मन्ना (तुलना यूहन्ना 6)

और बहुत से, विशेष रूप से इब्रानियों में।

विशेष विषय: *ARCHĒ* (SPECIAL TOPIC: *ARCHĒ*)

यूनानी शब्द *archē* का अर्थ किसी चीज़ की "शुरुआत" या "उत्पत्ति" है।
1. सृजित क्रम की शुरुआत (तुलना यूहन्ना 1:1; इब्रानियों 1:10)
2. सुसमाचार की शुरुआत (तुलना मरकुस 1: 1; फिलिप्पियों 4:15; 2 थिस्सलुनिकियों 2:13; इब्रानियों 2:3; 1 यूहन्ना 1:1;
3. पहले प्रत्यक्षदर्शी (तुलना लूका 1: 2)
4. आरंभिक चिन्ह (चमत्कार, यूहन्ना 2:11)
5. आरंभिक सिद्धांत (तुलना इब्रानियों 5:12)
6. सुसमाचार की सच्चाइयों पर आधारित आरंभिक आश्वासन (तुलना इब्रानियों 3:14)
7. आदि, कुलुस्सियों 1:18; प्रकाशितवाक्य 3:14

इसका उपयोग "नियम" या "अधिकार" के रूप में किया जाने लगा
1. मानवीय शासकीय अधिकारियों के लिए
   a. लूका 12:11
   b. लूका 20:20

c. रोमियों 13:3; तीतुस 3:1

2. दिव्य अधिकारियों के लिए
   a. रोमियों 8:38
   b. 1 कुरिन्थियों 15:24
   c. इफिसियों 1:21; 3:10; 6:12
   d. कुलुस्सियों 1:16; 2:10,15
   e. यहूदा 1:6

▣ **"था"** (तीन बार) यह एक अपूर्ण काल है (तुलना यूहन्ना 1: 1,2,4,10) जो पिछले समय में निरंतर अस्तित्व पर केंद्रित है। इस काल का उपयोग लोगोस के पूर्व-अस्तित्व (तुलना यूहन्ना 8: 57-58; 17: 5,24; 2 कुरिंथियों 8:9; कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 10:5-7) को दिखाने के लिए किया जाता है। यह यूहन्ना 1:3, 6, और 14 के अनिर्दिष्ट कालों के विपरीत है।

▣ **"वचन"** यूनानी शब्द *logos* को एक संदेश के रूप में उल्लेखित किया गया है, न कि केवल एक शब्द के। इस संदर्भ में यह एक शीर्षक है जिसका उपयोग यूनानियों ने "विश्व कारण" वर्णित करने के लिए और इब्रानियों ने "बुद्धि" के समरूप में किया था। यूहन्ना ने इस शब्द को इस बात पर ज़ोर देने के लिए चुना कि परमेश्वर का वचन एक व्यक्ति और एक संदेश दोनों है। प्रासंगिक अंतर्दृष्टि, C. देखें।

▣ **"परमेश्वर के साथ"** "के साथ" को दूसरे शब्दों में "आमने-सामने" कहा जा सकता है। यह अंतरंग संगति को दर्शाता है। यह एक दिव्य सार और तीन व्यक्तिगत दिव्य अभिव्यक्तियों की अवधारणा की ओर भी संकेत करता है (विशेष विषय: त्रिएकत्व यूहन्ना 14:26 में)। नया नियम इस विरोधाभास का दावा करता है कि यीशु पिता से अलग है, लेकिन यह भी कि वह पिता के साथ एक है।

▣ **"वचन परमेश्वर था"** यह क्रिया अपूर्ण काल है जैसा कि यूहन्ना 1:1a में है। यहाँ *Theos* के साथ कोई वस्तु नहीं है (जो विषय की पहचान करे, F.F.Bruce, *Answers to Questions,* p.66 देखें), लेकिन *Theos* को जोर देने के लिए यूनानी वाक्यांश में पहले स्थान पर रखा गया है। यह पद और यूहन्ना 1:18 पहले से मौजूद Logos के पूर्ण देवत्व के प्रबल कथन हैं (तुलना यूहन्ना 5:18; 8:58; 10:30; 14: 9; 17:11; 20:28; रोमियों 9: 5; इब्रानियों 1: 8; 2 पतरस 1:1)। यीशु संपूर्ण दिव्य है साथ ही साथ संपूर्ण मनुष्य है (तुलना 1 यूहन्ना 4:1-3) वह परमेश्वर पिता के समान नहीं है, लेकिन वह पिता के समान वही दिव्य सार है।

नया नियम नासरत के यीशु के पूर्ण देवत्व का दावा करता है, लेकिन पिता के विशिष्ट व्यक्तित्व की रक्षा करता है। एक दिव्य सार पर यूहन्ना 1:1; 5:18; 10:30,34-38; 14:9-10; और 20:28, में ज़ोर दिया गया है जबकि उसके भेदों पर यूहन्ना 1: 2,14,18; 5:19-23; 8:28; 10:25,29; 14:11,12,13,16 में ज़ोर दिया गया है।

1:2 यूहन्ना 1:1 के समानांतर है और एकेश्वरवाद के प्रकाश में फिर से चौंकाने वाले सच पर जोर देता है कि यीशु, जो 6-5 ईसा पूर्व के आसपास पैदा हुआ था, हमेशा पिता के साथ रहा है और इसलिए, देवता है।

1:3 "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है" लोगोस अदृश्य और अदृश्य दोनों के सृजन में पिता का प्रतिनिधि था (तुलना यूहन्ना 1:10; 1 कुरिंथियों 8: 6; कुलुस्सियों 1:16; इब्रानियों 1: 2)। यह भजनसंहिता 104:24 और नीतिवचन 3:19; 8:12-23 में ज्ञान की भूमिका के समान है। (इब्रानी में "ज्ञान" एक स्त्री लिंग संज्ञा है।)

▣ **"कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई"** यह उच्च, अच्छे परमेश्वर और एक कम आध्यात्मिक प्राणी, जिसने पहले से मौजूद तत्व को बनाया, के बीच दिव्य युग के ज्ञानवादी झूठे शिक्षण का एक खंडन है। (प्रासंगिक अंतर्दृष्टि D. देखें) .

1:4 "उसमें जीवन था" यह वाक्यांश जोर दे रहा है कि "जीवन" स्वयं पुत्र, वचन से आता है। यूहन्ना, पुनरुत्थान जीवन, अनन्त जीवन, परमेश्वर के जीवन का उल्लेख करने के लिए शब्द, *zoē* का उपयोग करता है (तुलना यूहन्ना 1: 4; 3: 15,36; 4: 14,36; 5: 24,26,29,39,40; 6:27,33,35,40,47,48,51,53, 54,63,65, आदि)। "जीवन," के लिए अन्य यूनानी शब्द, *bios* का उपयोग सांसारिक, जैविक जीवन (तुलना 1 यूहन्ना 2:16) के लिए किया गया था।

▣ **"वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था"** ज्योति एक आम रूपक है जिसका उपयोग यूहन्ना सत्य और परमेश्वर के ज्ञान के लिए करता है (तुलना यूहन्ना 3:19; 8:12; 9:5; 12:46)। ध्यान दें कि जीवन सभी मनुष्यों के लिए था (भजनसंहिता 36:5-9 के लिए संभव भ्रम है)! मृत सागर चीरकों में ज्योति और अंधकार भी सामान्य विषय थे। यूहन्ना अक्सर खुद को द्वैतवादी (विपरीत) शब्दों और श्रेणियों में व्यक्त करता है।

1:5 "ज्योति चमकती है" यह वर्तमान काल है, जिसका अर्थ है निरंतर क्रिया। यीशु हमेशा अस्तित्व में रहा है, लेकिन अब वह स्पष्ट रूप से दुनिया के सामने प्रकट हुआ है (तुलना यूहन्ना 8:12; 9:5; 12:46)।पुराने नियम में परमेश्वर की शारीरिक या मानवीय अभिव्यक्ति को अक्सर प्रभु के दूत के रूप में पहचाना जाता था (तुलना उत्पत्ति 7-13; 22:11-15; 31:11,13; 48:15-16; निर्गमन 3 : 2,4; 13:21; 14:19; न्यायियों 2:1; 6:22-23; 13:3-22; जकर्याह 3:1-2)। कुछ लोगों का कहना है कि यह लोगोस का पूर्व- अवतार था।

विशेष विषय: यहोवा का दूत (BDB 521 CONSTRUCT BDB 217) (SPECIAL TOPIC: THE ANGEL OF THE LORD (BDB 521 CONSTRUCT BDB 217))

यह स्पष्ट है कि पुराने नियम में देवता स्वयं को शारीरिक रूप से मानव रूप में प्रकट करते हैं। त्रिएकत्व में विश्वास करने वालों के लिए प्रश्न यह है कि त्रिएक का कौन सा व्यक्तित्व इस भूमिका को पूरा करता है। चूंकि पिता परमेश्वर (YHWH) और उसकी आत्मा लगातार गैर-शारीरिक है, इसलिए यह सुझाव देना संभव है कि ये मानवीय अभिव्यक्तियां मसीहा का पूर्व अवतार हैं।

एक दिव्य मुठभेड़ से एक ईश्वरीय प्रभास की पहचान करने की कोशिश में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उन्हें प्रदर्शित करने के लिए निम्नलिखित सूची उदाहरणात्मक है।

1. यहोवा का दूत एक दूत के रूप में (अक्सर "उसका दूत," "एक दूत," "दूत," "परमेश्वर का दूत," यहाँ तक कि "खम्भा" भी)
   a. उत्पत्ति 24:7,40
   b. निर्गमन 23:20-23; 32:34
   c. गिनती 22:22
   d. न्यायियों 5:23
   e. 2 शमूएल 24:16
   f. 1 इतिहास 21:15-30
   g. जकर्याह 1:12-13
2. यहोवा का दूत ईश्वरीय प्रभास में
   a. उत्पत्ति 16: 7-13; 18: 1-33; 22: 11,15; 31: 11,13; 48: 15-16
   b. निर्गमन 3: 2,4; 14:19 (13:21)
   c. न्यायियों 2:15, 6: 22-24; 13: 3-23
   d. होशे 12: 3-4
   e. जकर्याह 3:1-5
   f. प्रेरितों के काम 7:30,35,38

   केवल संदर्भ दो विकल्पों के बीच अंतर कर सकता है।

NASB, NKJV "अंधकार ने उसे ग्रहण न किया"
NRSV "अंधकार उस पर काबू न कर सका"
TEV "अंधकार ने उसे कभी बुझाया नहीं"
NJB "अंधकार उसपर हावी नहीं हो सका"

इस शब्द का मूल अर्थ (*katalambanō*) "पकड़ना" है। इसलिए, इसका मतलब या तो (1) काबू में करने के लिए पकड़ना हो सकता है (तुलना मत्ती 16:18) या (2) पकड़ना ताकि ग्रहण करने या समझने में मदद मिल सके। यूहन्ना ने इस अस्पष्टता का इस्तेमाल दोनों का संकेत देने के लिए किया होगा। यूहन्ना रचित सुसमाचार की विशेषता दोहरे अर्थवाले शब्द (जैसे, "नये सिरे से जन्म" और/या "ऊपर से पैदा हुई," 3:3 और "हवा" और/या "आत्मा," 3:8) हैं।

क्रिया (*katalambanō*) यूहन्ना के लेखन में केवल दो बार होती है।(यूहन्ना 8: 3,4 में इसका उल्लेख मूल नहीं है)। यूहन्ना 1:5 में अंधकार ग्रहण / काबू नहीं कर सकता है और 12:35 अंधकार जो ज्योति (यीशु / सुसमाचार) को अस्वीकार करता है,

पीछे रह जाएगा। अस्वीकृति का परिणाम भ्रम होता है। स्वीकारने का परिणाम होता है आराधना! Manfred T. Branch, *Abusing Scripture,* p. 35, मानव परिस्थिति की विशेषता बताता है।

1. खो जाना, लूका 15
2. अंधकार, यूहन्ना 1:5
3. बैर, रोमियों 5:10
4. वियोग, इफिसियों 2:15-17
5. अभक्ति, रोमियों 1:18
6. परमेश्वर के जीवन से अलगाव, इफिसियों 4: 17-18
7. मानव पाप का सबसे अच्छा सारांश रोमियों 1:18-3:23 में मिलता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1:6-8
[6]एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिसका नाम यूहन्ना था। [7]वह गवाही देने आया कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ। [8]वह आप तो ज्योति न था, परंतु उस ज्योति की गवाही देने के लिए आया था।

1:6-8 ये पद और यूहन्ना 1:15 (एक प्रारंभिक स्मृति) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की यीशु की गवाही को दर्ज करता है। वह पुराने नियम का अंतिम भविष्यद्वक्ता था। इन पदों को काव्यात्मक रूप में रखना कठिन है। विद्वानों में इस बात को लेकर बहुत बहस है कि प्रस्तावना पद्य है या गद्य।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला पुराने नियम का अंतिम भविष्यद्वक्ता था (अपने संदेश और परिप्रेक्ष्य के अर्थ में)। वह मलाकी 3:1 और 4:5में (तुलना यूहन्ना 1: 20-25) पूर्वानुमानित अग्रदूत थे। यूहन्ना प्रेरित ने यूहन्ना 1: 6-8 को शुरुआती गलतफहमी के कारण डाला हो सकता है जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले (तुलना लूका 3:15; प्रेरितों के काम 18:25; 19: 3) के आसपास विकसित हुई थीं। यूहन्ना ने, अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में बाद में लिखते हुए, इस समस्या के विकास को देखा।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि मसीह अपूर्ण कालिक (पूर्व-अस्तित्व) क्रियाओं में वर्णित है, जबकि यूहन्ना का वर्णन अनिर्दिष्ट काल (समय में प्रकट) और पूर्ण काल (स्थायी परिणामों के साथ एक ऐतिहासिक घटना) क्रियाओं में है (तुलना यूहन्ना 1:6) है। । यीशु हमेशा मौजूद रहे हैं।

1:7 "ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ" यह एक उद्देश्य खंड है। यूहन्ना रचित सुसमाचार, सभी सुसमाचारों की तरह, (एक विशिष्ट मसीही शैली) एक धर्म-प्रचार संबंधी पुस्तिका है। यह उन सभी के लिए उद्धार का अद्भुत प्रस्ताव है जो मसीह में विश्वास रखते हैं, जो जगत की ज्योति है (तुलना यूहन्ना 1:12; यूहन्ना 3:16; 4:42; 20:31; 1 तीमुथियुस 2: 4; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3: 9;1 यूहन्ना 2:1; 4:14)।

1:7,12 "विश्वास" इस क्रिया का उपयोग यूहन्ना के सुसमाचार में 78 बार, यूहन्ना के पत्रों में 24 बार किया गया है। यह दिलचस्प है कि यूहन्ना रचित सुसमाचार में संज्ञा रूप का उपयोग कभी नहीं किया गया, केवल क्रिया। विश्वास मुख्य रूप से एक बौद्धिक या भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं है, लेकिन मूल रूप से एक ऐच्छिक प्रतिक्रिया है। यह यूनानी शब्द तीन अंग्रेजी शब्दों से अनुवादित है: विश्वास, भरोसा और आस्था। यह "उसका स्वागत करें" (तुलना यूहन्ना 1:11), और "उसे स्वीकार करें" (तुलना यूहन्ना 1:12) के समानांतर है। परमेश्वर की कृपा और मसीह के पूर्ण किये कार्य में उद्धार मुफ्त है, लेकिन इसे प्राप्त किया जाना चाहिए। उद्धार विशेषाधिकार और जिम्मेदारियों के साथ एक वाचा संबंध है।

विशेष विषय: आस्था, विश्वास या भरोसा (SPECIAL TOPIC: FAITH, BELIEVE, OR TRUST)

I. प्रारंभिक कथन

यह कहा जाना जरूरी है कि इस धर्मशास्त्रीय अवधारणा का प्रयोग, जो नये नियम के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण है, पुराने नियम में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं है। यह निश्चित रूप से विद्यमान है, लेकिन प्रमुख चयनित अवतरणों और व्यक्तियों में प्रदर्शित किया गया है।

पुराने नियम के मिश्र शब्द

A. व्यक्ति और समुदाय
B. व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट और वाचा का आज्ञापालन

विश्वास व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट और दैनिक जीवन शैली दोनों है! इसका शाब्दिक रूप (जैसे, शब्द अध्ययन) की तुलना में एक विश्वासयोग्य अनुयायी के जीवन में वर्णन करना आसान है। इस व्यक्तिगत पहलू का सबसे अच्छा चित्रण किया गया है

A. अब्राहम और उसका वंश
B. दाऊद और इस्राएल

ये लोग परमेश्वर से मिले /आकस्मिक भेंट की और उनके जीवन स्थायी रूप से बदल गए (परिपूर्ण जीवन नहीं, लेकिन निरंतर विश्वास)। परीक्षण ने परमेश्वर के साथ उनकी विश्वास की आकस्मिक भेंट की कमजोरियों और ताकत को प्रगट किया, लेकिन समय के साथ अंतरंग, भरोसेमंद संबंध जारी रहा! इसे परखा और परिष्कृत किया गया, लेकिन उनकी भक्ति और जीवनशैली इस बात का प्रमाण हैं कि वह जारी रहा।

II. प्रयुक्त मुख्य मूल
  A. אמן (BDB 52, KB 63)
    1. क्रिया
      a. *Qal* मूलशब्द - सहारा देने के लिए, पोषण करने के लिए (यानी, 2 राजाओं 10:1,5; एस्तेर 2:7, गैर-धर्मशास्त्रीय प्रयोग)
      b. *Niphal* मूलशब्द - सुनिश्चित या दृढ़ करने के लिए, स्थापित करने के लिए, पुष्टि करने के लिए, विश्वासयोग्य या भरोसेमंद होने के लिए
        (1) पुरुषों के लिए, यशायाह 8: 2; 53:1; यिर्मयाह 40:14
        (2) चीजों के लिए, यशायाह 22:23
        (3) परमेश्वर के लिए, व्यवस्थाविवरण 7: 9; यशायाह 49: 7; यिर्मयाह 42: 5
      c. *Hiphil* मूलशब्द – स्थिर रहना, विश्वास करना, भरोसा रखना
        (1) अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, उत्पत्ति 15:6
        (2) मिस्र में इस्राएलियों ने विश्वास किया, निर्गमन 4:31; 14:31 (व्यवस्थाविवरण 1:32 में अस्वीकार किया)
        (3) इस्राएलियों का मानना था कि YHWH मूसा के माध्यम से बातें करता था, निर्गमन 19:9; भजनसंहिता 106: 12,24
        (4) आहाज को परमेश्वर पर भरोसा नहीं था, यशायाह 7:9
        (5) जो कोई इस पर / उसमें विश्वास करता है, यशायाह 28:16
        (6) परमेश्वर के बारे में सत्य पर विश्वास करता है, यशायाह 43:10-12
    2. संज्ञा (पुल्लिंग) - विश्वासयोग्यता (यानी, व्यवस्थाविवरण 32:20; यशायाह 25:1; 26:2)।
    3. क्रिया विशेषण - सच में, वास्तव में, मैं सहमत हूँ, यह ऐसा ही हो (तुलना व्यवस्थाविवरण 27: 15-26; 1 राजाओं 1:36; 1 इतिहास 16:36; यशायाह 65:16; यिर्मयाह 11:5; 28:6)। यह पुराने नियम और नये नियम में "आमीन" का पूजन पद्धति संबंधी प्रयोग है।
  B. אמת (BDB 54, KB 68) स्त्रीलिंग संज्ञा, स्थिरता, विश्वासयोग्यता, सत्य
    1. पुरुषों के लिए, यशायाह 10:20; 42: 3; 48: 1
    2. परमेश्वर के लिए, निर्गमन 34: 6; भजनसंहिता 117: 2; यशायाह 38: 18,19; 61: 8
    3. सत्य के लिए, व्यवस्थाविवरण 32: 4; 1 राजाओं 22:16; भजनसंहिता 33: 4; 98: 3; 100: 5; 119: 30; यिर्मयाह 9:5; जकर्याह 8:16
  C. אמונה (BDB 53, KB 62), स्थिरता, दृढ़ता, निष्ठा
    1. हाथों की, निर्गमन 17:12
    2. दिनों की, यशायाह 33:6
    3. मनुष्यों की, यिर्मयाह 5:3; 7:28; 9:2
    4. परमेश्वर की, भजनसंहिता 40:11; 88:11; 89:1,2,5,8; 119:138

III. पौलुस के द्वारा इस पुराने नियम की अवधारणा का प्रयोग

A. पौलुस ने दमिश्क के रास्ते पर यीशु के साथ अपनी व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट को YHWH और पुराने नियम की अपनी नई समझ का आधार बनाया (तुलना प्रेरितों के काम 9:1-19; 22:3-16; 26:9-18)।
B. उसने पुराने नियम के दो प्रमुख अवतरणों में, जो मूल (אמן) का प्रयोग करते हैं, अपनी नई समझ के लिए पुराने नियम से समर्थन पाया।
   1. उत्पत्ति 15: 6 - अब्राम की परमेश्वर (उत्पत्ति 12) द्वारा शुरू की गई व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट विश्वास के एक आज्ञाकारी जीवन में परिणत हुई (उत्पत्ति 12-22)। पौलुस रोमियों 4 और गलातियों 3 में इसका संकेत देता है।
   2. यशायाह 28:16 - जो इस पर विश्वास करते हैं (यानी, परमेश्वर द्वारा परखा गया और मजबूती से रखा गया कोने का पत्थर) वे कभी नहीं होंगे
      a. रोमियों 9:33, "लज्जित" या "हताश"
      b. रोमियों 10:11, ऊपर दिये गए के समान
   3. हबक्कूक 2: 4 - जो लोग विश्वासयोग्य परमेश्वर को जानते हैं, उन्हें विश्वासयोग्य जीवन जीना चाहिए (तुलना यिर्मयाह 7:28)। पौलुस रोमियों 1:17 और गलातियों 3:11 में इस पाठ का प्रयोग करता है। (इब्रानियों 10:38 पर भी ध्यान दें।)

IV. पतरस के द्वारा पुराने नियम की अवधारणा का प्रयोग
A. पतरस जोड़ता है
   1. यशायाह 8:14 - 1 पतरस 2:8 (ठेस लगने का पत्थर)
   2. यशायाह 28:16 - 1 पतरस 2:6 (कोने का पत्थर)
   3. भजनसंहिता 118: 22 - 1 पतरस 2:7 (ठुकराया हुआ पत्थर)
B. वह निम्नलिखित को अनोखी भाषा से, जो इस्राएल का वर्णन इस प्रकार करती है, "एक चुना हुआ वंश,राज-पदधारी याजकों का समाज, एक पवित्र प्रजा, परमेश्वर की निज संपत्ति" बदल देता है
   1. व्यवस्थाविवरण 10:15; यशायाह 43:21
   2. यशायाह 61:6; 66:21
   3. निर्गमन 19:6; व्यवस्थाविवरण 7:6

   और अब इसे कलीसिया के मसीह में विश्वास के लिए प्रयोग करता है (तुलना 1 पतरस 2; 5,9)

V. यूहन्ना द्वारा अवधारणा का प्रयोग
A. इसका नये नियम में प्रयोग

   शब्द "विश्वास" यूनानी शब्द *pisteuō* से है। जिसका अनुवाद "आस्था," "विश्वास" या "भरोसा" भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना के सुसमाचार में संज्ञा नहीं आती है, लेकिन अक्सर क्रिया का प्रयोग किया गया है। यूहन्ना 2:23-25 में नासरत के यीशु के प्रति मसीहा के रूप में लोगों की प्रतिबद्धता की वास्तविकता के बारे में अनिश्चितता है। "विश्वास" शब्द के इस सतही प्रयोग के अन्य उदाहरण यूहन्ना 8:31-59 और प्रेरितों के काम 8:13, 18-24 में हैं। सच्चा बाइबल का विश्वास प्रारंभिक प्रतिक्रिया से अधिक है। इसके बाद शिष्यत्व की प्रक्रिया होनी चाहिए (तुलना मत्ती 13: 20-22,31-32)।
B. इसका संबंध सूचक अव्ययों के साथ प्रयोग
   A. *eis* का अर्थ है "में।" यह अनोखी संरचना विश्वासियों को यीशु में अपना भरोसा / विश्वास रखने पर जोर देती है
      1. उसके नाम में (यूहन्ना 1:12; 2:23; 3:18; 1 यूहन्ना 5:13)
      2. उसमें (यूहन्ना 2:11; 3:15,18; 4:39; 6:40; 7:5,31,39,39; 8:30; 9:36; 10:42; 11:45 48; 12:37,42; मत्ती 18:6; प्रेरितों के काम 10:43; फिलिप्पियों 1:29; 1 पतरस 1:8)।
      3. मुझ पर (यूहन्ना 6:35; 7:38; 11:25,26; 12: 44,46; 14: 1,12; 16: 9; 17:20)।
      4. पुत्र पर (यूहन्ना 3:36; 9:35; 1 यूहन्ना 5:10)
      5. यीशु पर (यूहन्ना 12:11; प्रेरितों के काम 19:4; गलातियों 2:16)
      6. ज्योति पर (यूहन्ना 12:36)
      7. परमेश्वर पर (यूहन्ना 14:1)
   B. *ev* का अर्थ "पर" जैसा यूहन्ना 3:15; मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 5:14 में है

C. *epi* का अर्थ है "पर" या "में", जैसा मत्ती 27:42; प्रेरितों के काम 9:42; 11:17; 16:31; 22:19; रोमियों 4:5, 24; 9:33; 10:11; 1 तीमुथियुस 1:16; 1 पतरस 2:6 में है

D. संबंध सूचक अव्यय रहित सम्प्रदान कारक जैसा गलातियों 3: 6; प्रेरितों के काम 18:8; 27:25; 1 यूहन्ना 3:23; 5:10 में है

E. *hoti*, जिसका अर्थ है "विश्वास करो कि," क्या विश्वास करना है, इस बारे में विषयवस्तु देता है

1. यीशु परमेश्वर का पवित्र जन है (यूहन्ना 6:69)
2. यीशु मैं हूँ है (यूहन्ना 8:24)
3. यीशु पिता में है और पिता उस में है (यूहन्ना 10:38)
4. यीशु मसीहा है (यूहन्ना 11:27; 20:31)
5. यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 11:27; 20:31)
6. यीशु पिता के द्वारा भेजा गया था (यूहन्ना 11:42; 17: 8,21)
7. यीशु पिता के साथ एक है (यूहन्ना 14:10-11)
8. यीशु पिता की ओर से आया (यूहन्ना 16: 27,30)
9. यीशु ने पिता की वाचा के नाम "मैं हूँ" में खुद को पहचाना, (यूहन्ना 8:24; 13:19)
10. हम उसके साथ जीएँगे (रोमियों 6:8)
11. यीशु मरा और जी भी उठा (1 थिस्सलुनीकियों 4:14)

VI. निष्कर्ष

A. बाइबल का विश्वास एक दिव्य वचन / प्रतिज्ञा के प्रति मानवीय प्रतिक्रिया है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (यानी, यूहन्ना 6: 44,65), लेकिन मनुष्यों की ओर से प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता इस दिव्य संवाद का एक हिस्सा है (यानी, विशेष विषय: वाचा देखें)।

1. पश्चाताप (विशेष विषय: पश्चाताप देखें)
2. विश्वास/भरोसा (विशेष विषय: विश्वास, आस्था, या भरोसा)
3. आज्ञाकारिता
4. धीरज (विशेष विषय: धीरज देखें)

B. बाइबल का विश्वास है

1. एक व्यक्तिगत संबंध (प्रारंभिक विश्वास)
2. बाइबल के सत्य की पुष्टि (परमेश्वर के प्रकटीकरण, यानी पवित्रशास्त्र में विश्वास)
3. उसके प्रति एक उचित आज्ञाकारी प्रतिक्रिया (दैनिक विश्वासयोग्यता)

बाइबल की आस्था स्वर्ग का टिकट या बीमा योजना नहीं है। यह एक व्यक्तिगत संबंध है। यह सृजन का उद्देश्य है, परमेश्वर की स्वरूप और समानता में मनुष्यों का बनाया जाना (तुलना उत्पत्ति 1:26-27)। मुद्दा है "अंतरंगता"।परमेश्वर संगति की इच्छा रखता है, एक निश्चित धर्मशास्त्रीय अस्तित्व नहीं ! लेकिन एक पवित्र परमेश्वर के साथ संगति यह माँग करती है कि संतान "परिवार" की विशेषताओं (यानी, पवित्रता, तुलना लैव्यव्यवस्था 19: 2; मत्ती 5:48; 1 पतरस 1:15-16) को प्रदर्शित करे। पतन (तुलना उत्पत्ति 3) ने उचित प्रतिक्रिया देने की हमारी क्षमता को प्रभावित किया। इसलिए, परमेश्वर ने हमारी ओर से कार्य किया (तुलना यहेजकेल 36: 27-38), हमें "नया हृदय" और "नई आत्मा" दी, जो हमें विश्वास और पश्चाताप के द्वारा उसके साथ संगति करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए सक्षम बनाता है!

तीनों निर्णायक हैं। तीनों को बनाए रखा जाना चाहिए। लक्ष्य है परमेश्वर को जानना (इब्रानी और यूनानी दोनों अर्थों में) और हमारे जीवन में उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करना। विश्वास का लक्ष्य किसी एक दिन स्वर्ग नहीं है, लेकिन हर दिन मसीह की समानता है!

C. मानवीय विश्वासयोग्यता परिणाम है (नया नियम), न कि परमेश्वर के साथ संबंध के लिए आधार (पुराना नियम): उसकी विश्वासयोग्यता में मानवीय विश्वास; उसकी विश्वसनीयता में मानवीय भरोसा। नये नियम के उद्धार के दृष्टिकोण का मूल यह है कि मनुष्यों को आरम्भ से और लगातार मसीह में प्रदर्शित की गई परमेश्वर की कृपा और दया का प्रत्युत्तर देना चाहिए। उसने प्रेम किया है, उसने भेजा है, उसने प्रदान किया है; हमें विश्वास और विश्वासयोग्यता में प्रत्युत्तर देना चाहिए (तुलना इफिसियों 2: 8-9 और 10)!

विश्वासयोग्य परमेश्वर चाहता है कि एक विश्वासयोग्य लोग खुद को एक विश्वासहीन जगत के सामने प्रकट करें और उन्हें उसपर व्यक्तिगत विश्वास में लाएँ।

1:8 यह संभव है कि प्रेरित यूहन्ना ने, अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में बहुत बाद में लिखते हुए, उस समस्या को पहचाना जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के अनुयायियों के बीच विकसित हुई थी जिन्होंने यीशु को सुना या स्वीकार नहीं किया था। (तुलना प्रेरितों के काम 18: 25-19:7)।

विशेष विषय: यीशु के गवाह (SPECIAL TOPIC: WITNESSES TO JESUS)

यूहन्ना में संज्ञा (*marturia*) और इसकी क्रिया (*martureō*) "गवाह" प्रमुख शब्द हैं। यीशु के कई गवाह हैं।

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (तुलना यूहन्ना 1:7,8,15; 3:26,28; 5:33)
2. यीशु स्वयं (तुलना यूहन्ना 3:11; 5:31; 8:13-14)
3. सामरी स्त्री (तुलना यूहन्ना 4:39)
4. परमेश्वर पिता (तुलना यूहन्ना 5:32,34,37; 8:18; 1 यूहन्ना 5: 9)
5. पवित्रशास्त्र (तुलना यूहन्ना 5:39)
6. लाज़र के जिलाए जाने पर भीड़ (तुलना यूहन्ना 12:17)
7. आत्मा (तुलना यूहन्ना 15:26-27; 1 यूहन्ना 5:10,11)
8. चेले (तुलना यूहन्ना 15:27; 19:35; 1 यूहन्ना 1:2; 4:14)
9. लेखक स्वयं (तुलना यूहन्ना 21:24)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1:9-13

**9सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आने वाली थी। 10वह जगत में था, और जगत
उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना। 11वह अपने घर आया, और उसके अपनों ने उसे ग्रहण
नहीं किया। 12परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात
उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं, 13वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु
परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।**

1:9 "सच्ची ज्योति" यह वास्तविक या सही मायने में "सत्य" है, न कि केवल झूठ के विपरीत। यह पहली सदी की सभी झूठी मसीहतों से संबंधित हो सकता है। यह यूहन्ना के लेखन में एक सामान्य विशेषण है (तुलना यूहन्ना 4: 23,37; 6:32; 7:28; 15: 1; 17: 3; 19:35 और 1 यूहन्ना 2:8; 5:20 और दस बार प्रकाशितवाक्य में)। विशेष विषय: यूहन्ना 6:55 में सत्य और यूहन्ना 14:17 पर विश्व देखें। यीशु जगत की ज्योति है (तुलना यूहन्ना 3:19; 8:12; 9:5; 12:46; 1 यूहन्ना: 5,7; 2: 8,9,10)। विश्वासियों को उसकी ज्योति को प्रतिबिंबित करना है (तुलना फिलिप्पियों 2:15)। यह वास्तविक अंधेरे के साथ तीव्र विरोधाभास है जो निर्मित क्रम में इन के विद्रोह के कारण है

1. मनुष्य
2. स्वर्गदूत

▣ **"जगत में आने वाली"** यूहन्ना अक्सर यीशु के स्वर्ग,आध्यात्मिक क्षेत्र, छोड़ने और समय और स्थान के भौतिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए इस वाक्यांश का उपयोग करते हैं, (तुलना यूहन्ना 6:14; 9:39; 11:27; 12:46; 16:28)। इस पद में यह

यीशु के देहधारण को संदर्भित करता प्रतीत होता है। यह जोहानिन साहित्य के सामान्य द्वैतवाद (यानी ऊपर बनाम नीचे) में से एक है।

NASB **“हर मनुष्य को प्रकाशित करता है”**
NKJV **“हर मनुष्य को प्रकाश देता है”**
NRSV **“हर एक को प्रकाशित करता है”**
TEV **"सभी लोगों पर चमकता है"**
NJB **"जो हर एक को प्रकाश देता है"**

इस वाक्यांश को दो तरीकों से समझा जा सकता है। सबसे पहले, एक यूनानी सांस्कृतिक विन्यास को मानकर, यह प्रत्येक मनुष्य में प्रकटीकरण के एक आंतरिक प्रकाश को संदर्भित करता है, एक दिव्य चिंगारी। इस तरह से क्वेकर्स ने इस पद की व्याख्या की है। हालांकि, यूहन्ना में ऐसी अवधारणा कभी नहीं दिखाई देती है। यूहन्ना के लिए, "ज्योति" मानव जाति की बुराई को प्रकट करती है (तुलना यूहन्ना 3:19-21)।

दूसरा, यह प्राकृतिक प्रकटीकरण (जो कि परमेश्वर को प्रकृति के माध्यम से जानना [तुलना भजनसंहिता 19: 1-5; रोमियों 1:19-20] या एक आंतरिक नैतिक अर्थ [तुलना रोमियों 2:14-15]) को नहीं बल्कि यीशु, एकमात्र सच्ची ज्योति, के माध्यम से आत्मज्ञान और उद्धार की परमेश्वर की पेशकश को संदर्भित करता है,

1:10 "जगत" यूहन्ना तीन अलग-अलग तरीकों से *kosmos* शब्द का उपयोग करता है।

1. भौतिक ब्रह्मांड (यूहन्ना 1:10,11; 11:9; 16:21; 17: 5,24; 21:25)
2. सारी मानव जाति (यूहन्ना 1:10,29; 3:16,17; 4:42; 6:33; 12:19,46-47; 18:20)
3. परमेश्वर से अलग होकर पतित मानव समाज संगठित और क्रियाशील है। (यूहन्ना 7:7;15:18-19;1 यूहन्ना 2:15;3:1,13)

इस संदर्भ में #2 लागू है। यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"जगत ने उसे नहीं पहचाना"** न तो गिरे हुए अन्यजाति राष्ट्रों ने और न ही चुने हुए यहूदी राष्ट्र ने यीशु को प्रतिज्ञाबद्ध मसीहा के रूप में मान्यता दी। शब्द "पहचाना" तथ्यों की बौद्धिक स्वीकृति से अधिक अंतरंग संबंध के एक इब्रानी मुहावरे को दर्शाता है (तुलना उत्पत्ति 4: 1; यिर्मयाह 1:5)।

विशेष विषय: जानना (अधिकतर व्यवस्थाविवरण को परिपेक्ष्य के रूप में प्रयोग करते हुए) (SPECIAL TOPIC: KNOW (USING MOSTLY DEUTERONOMY AS A PARADIGM))

इब्रानी शब्द "जानना" (*yada*, BDB 393, KB 390) के *Qal* मूलशब्द में कई अर्थ हैं।

1. भले और बुरे को समझने के लिए - उत्पत्ति 3:22; व्यवस्थाविवरण1:39; यशायाह 7:14-15; योना 4:11
2. समझ से जानने के लिए -व्यवस्थाविवरण 9:2,3,6; 18:21
3. अनुभव से जानने के लिए - व्यवस्थाविवरण 3:19; 4:35; 8:2,3,5; 11:2; 20:20; 31:13; यहोशू 23:14
4. विचार करना – व्यवस्थाविवरण 4:39; 11:2; 29:16
5. व्यक्तिगत रूप से जानने के लिए
   a. एक व्यक्ति – उत्पत्ति 29:5; निर्गमन 1:8; व्यवस्थाविवरण 22:2 33:9; यिर्मयाह 1:5
   b. एक परमेश्वर- व्यवस्थाविवरण 11:28; 13:2,6,13; 28:64; 29:26; 32:17
   c. YHWH -व्यवस्थाविवरण 4:35,39; 7:9; 29:6; यशायाह 1:3; 56:10-11
   d. यौन संबंधी- उत्पत्ति 4:1,17,25; 24:16; 38:26
6. एक सीखा हुआ कौशल या ज्ञान - यशायाह 29:11,12; आमोस 5:16
7. बुद्धिमान बनो – व्यवस्थाविवरण 29:4; नीतिवचन 1: 2; 4:1; यशायाह 29:24
8. परमेश्वर का ज्ञान
   a. मूसा का – व्यवस्थाविवरण 34:10
   b. इस्राएल का– व्यवस्थाविवरण 31: 21,27,29

धर्मशात्रीय रूप से #5 अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बाइबल पर विश्वास परमेश्वर के साथ प्रतिदिन, बढ़ती,अंतरंग सहभागिता है (विशेष विषय: *Koinōnia* देखें) यह केवल एक सम्प्रदाय अथवा केवल एक नैतिक जीवन मात्र नहीं है। यह एक व्यक्तिगत विश्वास का संबंध है। इसलिए पौलुस ने कलीसिया के प्रति मसीह के प्यार को चित्रित करने के लिए इफिसियों 5:22- 6:9 में मसीही घर का प्रयोग किया है।

1:11 "वह अपने घर आया और जो उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया" उसके अपनों ने" यूहन्ना 1:11 में दो बार उपयोग किया जाता है। पहला व्याकरणिक रूप नपुंसक बहुवचन है और (1) सारे सृजन या (2) भौगोलिक रूप से यहूदिया या यरूशलेम को संदर्भित करता है। दूसरा पुल्लिंग बहुवचन है और यहूदी लोगों को संदर्भित करता है।

1:12 "परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया" यह उद्धार में मानवता का अंश दिखाता है (तुलना यूहन्ना 1:16)। मनुष्यों को मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह के प्रस्ताव का प्रत्युत्तर देना चाहिए (तुलना यूहन्ना 3:16; रोमियों 3:24; 4: 4-; 6:23; 10:9-13; इफिसियों 2: 8-9)। परमेश्वर निश्चित रूप से सार्वभौम है, फिर भी उसकी सार्वभौमिकता में उसने पतित मानवता के साथ एक सशर्त वाचा का रिश्ता शुरू किया है। पतित मानवजाति को पश्चाताप, विश्वास, आज्ञापालन करना चाहिए और विश्वास में दृढ़ता से रहना चाहिए।

"ग्रहण करने" की यह अवधारणा "विश्वास करने" और "कबूल करने” के लिए धर्मशास्त्रीय समानांतर है, जो यीशु में मसीह के रूप में विश्वास की घोषणा करता है (तुलना मत्ती 10:32; लूका 12: 8; यूहन्ना 9:22; 12:42; 1 तीमुथियुस 6:12; 1 यूहन्ना 2:23; 4:15)। उद्धार एक उपहार है जिसे ग्रहण किया जाना चाहिए और स्वीकार किया जाना चाहिए।

जो लोग यीशु को "ग्रहण"(1:12) करते हैं, वे उस पिता को ग्रहण करते हैं जिसने उसे भेजा (तुलना यूहन्ना 13:20; मत्ती 10:40)। उद्धार त्रिएक परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध है!

▣ **"उसने अधिकार दिया"** यह यूनानी शब्द (यानी, *exousia*) का मतलब (1) कानूनी प्राधिकार या (2) अधिकार या विशेषाधिकार हो सकता है (तुलना यूहन्ना 5:27; 17: 2; 19: 10,11)। यीशु के पुत्रत्व और दिव्य ध्येय के माध्यम से, पतित मानव जाति अब परमेश्वर को जान सकती और उसे परमेश्वर और पिता के रूप में स्वीकार कर सकती है।

▣ **"परमेश्वर की संतान होने का"** नये नियम लेखक लगातार मसीहत का वर्णन करने के लिए पारिवारिक उपमाओं का उपयोग करते हैं: (1) पिता; (2) पुत्र; (3) संतान; (४) नये सिरे से जन्म; और (5) अंगीकार। मसीहत एक परिवार के अनुरूप है, उत्पाद के नहीं (स्वर्ग का टिकट, अग्नि बीमा पॉलिसी)। मसीह में विश्वास करने वाले नए ईश्वरवादी "परमेश्वर के लोग" बन गए हैं। संतान के रूप में हमें पिता के चरित्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए, जैसा "अद्वितीय" (तुलना यूहन्ना 1:14; 3:16) पुत्र (तुलना इफिसियों 5:1; 1 यूहन्ना 2:29; 3: 3)ने किया। पापियों के लिए कितना चौंकाने वाला शीर्षक (तुलना यूहन्ना 11:52; रोमियों 8:14,16,21;9:8; फिलिप्पियों 2:15; 1यूहन्ना 3:1,2,10; 5:2; रोमियों 9:26 में उद्धृत होशे 1:10 और 2 कुरिंथियों 6:18)

यह भी दिलचस्प है कि संतान के लिए दो यूनानी शब्दों में से, एक का उपयोग हमेशा यीशु (*huios*) के लिए, जबकि दूसरे (*teknon,tekna*) का उपयोग विश्वासियों के लिए किया जाता है। मसीही परमेश्वर की संतान हैं, लेकिन वे परमेश्वर के पुत्र, यीशु के समान उसी श्रेणी में नहीं हैं। उनका संबंध अद्वितीय है, लेकिन समरूप है।

शब्द "कलीसिया" (*ekklesia*) मरकुस, लूका या यूहन्ना में दिखाई नहीं देता है। वे आत्मा के नए गतिशील व्यक्तिगत और सामूहिक संगति के लिए परिवार की उपमाओं का उपयोग करते हैं।

▣ **"जो विश्वास रखते हैं"** यह एक वर्तमान क्रियात्मक कृदंत है जिसका अर्थ है "जो लोग विश्वास करना जारी रखते हैं।" इस शब्द की व्युत्पत्ति संबंधी पृष्ठभूमि समकालीन अर्थ को स्थापित करने में मदद करती है। इब्रानी में यह मूल रूप से एक व्यक्ति को एक स्थिर अवस्था में संदर्भित करता है। यह किसी ऐसे व्यक्ति के लिए उपमा के रूप में प्रयुक्त किया गया जो भरोसेमंद, वफादार या विश्वासयोग्य था। यूनानी समतुल्य का अंग्रेजी में इन शब्दों ("विश्वास," "भरोसा," और "आस्था") द्वारा अनुवाद किया गया है। बाइबल का विश्वास या आस्था मुख्य रूप से कुछ ऐसा नहीं है जो हम करते हैं, लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति जिसमें हम अपना भरोसा रखते हैं। यह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता है, जो केंद्रबिंदु है,हमारी नहीं। पतित मानवजाति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर विश्वास करती है, उसकी विश्वसनीयता पर आस्था रखती है, उसके प्रिय पर विश्वास करती है। मानवीय विश्वास की प्रचुरता या तीव्रता पर ध्यान केंद्रित नहीं है, बल्कि उस विश्वास के कर्म पर है। यूहन्ना 1:7 और 2:23 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"उसके नाम पर"** पुराने नियम में एक व्यक्ति का नाम बहुत महत्वपूर्ण था। यह उनके चरित्र के बारे में एक आशाजनक/संभावित भविष्यवाणी थी या उनके चरित्र का विवरण था। नाम पर विश्वास करना और उस व्यक्ति पर विश्वास करके उसे ग्रहण करना है (तुलना यूहन्ना 2:23; 3:18; 20:31; 1 यूहन्ना 5:13)। विशेष विषय: प्रभु का नाम यूहन्ना 14:13-14 में देखें।

1:13
NASB, NKJV,
NRSV **"वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, उत्पन्न हुए हैं"**
TEV **"वे स्वाभाविक माध्यमों से संतान नहीं बने, अर्थात, जन्म लेने से और एक मानव पिता की संतान"**
NJB **"जो मानव कुटुंब से अथवा शरीर की उत्तेजना से अथवा मनुष्य की इच्छा से पैदा नहीं हुआ था"**

कुछ शुरुआती कलीसियाई पिता (यानी, इरेनेअस, ओरिगेन, टर्टुलियन, एम्ब्रोस, जेरोम, ऑगस्टीन) इसे यीशु का उल्लेख करने वाले वाक्यांश के रूप में देखते हैं (यानी, एकवचन), लेकिन प्रचंड यूनानी पाठ संबंधी सबूतों में बहुवचन है (इस शब्द का बहुवचन नये नियम में केवल यहाँ पाया गया है; UBS[4] इसे "A" का दर्जा देता है), जिसका अर्थ है कि यह पद यीशु में विश्वासियों की ओर संकेत करता है (तुलना यूहन्ना 3:5; 1 पतरस 1:3,23), इसलिए, यह न तो जातीय विशेषाधिकार को संदर्भित करता है और न ही मानव यौन वंश (अक्षरशः "रक्त") को संदर्भित करता है, लेकिन परमेश्वर के चुनाव और उन लोगों को अपनी ओर लाने की ओर इंगित करता है जो उसके पुत्र पर भरोसा करते हैं (तुलना यूहन्ना 6: 44,65)। पद 12 और 13 परमेश्वर की सार्वभौमिकता और मानव प्रत्युत्तर की आवश्यकता के बीच वाचा संतुलन को प्रदर्शित करते हैं।

यूनानी क्रिया (अनिर्दिष्ट कर्मवाच्य सूचक) को यूनानी वाक्य में जोर देने के लिए अंतिम स्थान पर रखा गया है। यह दूसरे जन्म मे परमेश्वर की आरंभिक और सार्वभौमिक भूमिका पर जोर देता है (यानी, "परंतु परमेश्वर से" जो अंतिम वाक्यांश का हिस्सा है, तुलना यूहन्ना 6: 44,65)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1:14-18

14और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी,जैसी पिता के एकलौते की महिमा। 15यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी और पुकारकर कहा, "यह वही है, जिसका मैंने वर्णन किया कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है, क्योंकि वह मुझ से पहले था।" 16क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह। 17इसलिए कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची। 18परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा; एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया।

1:14 "वचन देहधारी हुआ" यूहन्ना ज्ञानवादियों के झूठे सिद्धांत पर हमला कर रहा है, जो मसीहत को यूनानी नास्तिक विचार के साथ विलय करने का प्रयास कर रहे थे। इम्मानुएल (तुलना यशायाह 7:14) की प्रतिज्ञा की पूर्ति करने में यीशु वास्तव में मनुष्य था और वास्तव में परमेश्वर था (तुलना 1 यूहन्ना 4:1-3)। परमेश्वर ने मानव जाति के बीच एक व्यक्ति के रूप में निवास किया (अक्षरशः, "उसका तम्बू को खड़ा किया")। यूहन्ना में "देह" शब्द कभी भी पौलुस के लेखन के समान पाप प्रकृति को संदर्भित नहीं करता है।

विशेष विषय: शरीर *(SARX)* (SPECIAL TOPIC: FLESH *(SARX)*)

यह शब्द पौलुस द्वारा गलातियों में और रोमियों में इसके धर्मशास्त्रीय विकास के लिए सबसे अधिक बार प्रयोग किया गया है। विद्वानों में इस शब्द के विभिन्न अर्थों की विशेषता बताने के तरीकों पर मतभेद है। अर्थों में कुछ अतिव्यापन अवश्य है। निम्नलिखित विवरण शब्द के विस्तृत शब्दार्थ क्षेत्र पर ध्यान देने का एक प्रयास मात्र है।

A. मानव शरीर, यूहन्ना 1:14; रोमियों 2:28; 1 कुरिन्थियों 5:5; 7:28; 2 कुरिन्थियों 4:11; 7:5; 12:7; गलातियों 1:16; 2:16,20; 4:13; फिलिप्पियों 1:22; कुलुस्सियों 1: 22,24; 2:5; 1 तीमुथियुस 3:16
B. मानव वंश, यूहन्ना 3:6; रोमियों 1:3; 4:1; 9: 3,5,8; 11:14; 1 कुरिन्थियों 10:18; गलातियों 4:23,29
C. मानव व्यक्तित्व, रोमियों 3:20; 7:5; 8:7-8; 1 कुरिन्थियों 1:29; 2 कुरिन्थियों 10:3; गलातियों 2:16; 5:24
D. मानवीय रूप से बोलना, यूहन्ना 8:15; 1 कुरिन्थियों 1:26; 2 कुरिन्थियों 1:12; 5:16, 10: 2; गलातियों 6:12
E. मानव की दुर्बलताएँ, रोमियों 6:19; 7:18; 8:5-6,9; 2 कुरिन्थियों 10: 4; गलातियों 3:3; 5:13,16,19-21; कुलुस्सियों 2:18
F. पतन के परिणामों से संबंधित मनुष्यों का परमेश्वर के प्रति द्वेषभाव, रोमियों 7:14; 13:14; 1 कुरिन्थियों 3:1,3; इफिसियों 2:3; कुलुस्सियों 2:18; 1 पतरस 2:11; 1 यूहन्ना 2:16

इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि "शरीर" को नये नियम में बुराई के रूप में नहीं देखा जाता है, जैसा कि यूनानी विचारधारा में है। यूनानी दार्शनिकों के लिए, " शरीर " मानवीय समस्याओं का स्रोत था; मृत्यु उसे उसके प्रभाव से व्यक्ति को मुक्त करती थी। लेकिन नये नियम में, "शरीर" आत्मिक संघर्ष का युद्ध स्थल है (तुलना इफिसियों 6:10-18), फिर भी निष्पक्ष है। व्यक्ति अच्छे या बुरे के लिए भौतिक शरीर का उपयोग कर सकता है।

▣ **"हमारे बीच में डेरा किया"** अक्षरशः यह "निवास किया" है। इसमें जंगल से भटकने की अवधि और तम्बू (तुलना प्रकाशितवाक्य 7:15; 21:3) की यहूदी पृष्ठभूमि थी। यहूदियों ने बाद में इस जंगल के अनुभव को YHWH और इस्राएल के बीच "मधुमास अवधि" कहा। परमेश्वर कभी भी इस्राएल के इतने करीब नहीं थे जितने इस अवधि के दौरान। इस अवधि के दौरान इस्राएल को निर्देशित करने वाले विशेष दिव्य बादल के लिए यहूदी शब्द "*Shekinah*"था, इब्रानी शब्द " के साथ रहना" था।

▣ **"हमने उनकी महिमा देखी"** पुराने नियम के *kabod* (महिमा) ने अब साक्षात रूप लिया है,अवतरित हुआ है। यह संदर्भित करता है (1)यीशु के जीवन में कुछ जैसे कि रूपांतरण या आरोहण (यानी, प्रेरित-संबंधी गवाही, तुलना 2 पतरस 1:16-17)है या (2) यह अवधारणा है कि अदृश्य YWWH अब दृश्य है और पूर्ण रूप से ज्ञात है। इसमें 1 यूहन्ना 1:1-4 के समान ही जोर दिया गया है, जो आत्मा और तत्व के बीच विरोधी संबंधों पर झूठे ज्ञानवादी जोर के विरोध में यीशु की मानवता पर भी जोर है।

पुराने नियम में "महिमा" (*kabod, BDB* 458) के लिए सबसे आम इब्रानी शब्द मूल रूप से एक व्यवसायिक शब्द था (जिसे तराजू की एक जोड़ी से संदर्भित किया गया था), अक्षरशः, "भारी होना।" जो भारी था वह मूल्यवान था या उसका मूलभूत मूल्य था। अक्सर परमेश्वर की महिमा को व्यक्त करने के लिए चमक की अवधारणा को शब्द से जोड़ा जाता था (यानी, पहले सीनै पर्वत पर, महिमा का *Shekinah* बादल, युगांत विषयक प्रकाश, तुलना निर्गमन 13: 21-22; 24:17; यशायाह 4;5; 60:1-2)। केवल वही योग्य और आदर के योग्य है। वह गिरी हुई मानव जाति के द्वारा देने जाने के लिए बहुत ही प्रतापी है। (निर्गमन 33:17-23; यशायाह 6: 5)।परमेश्वर को केवल मसीह के माध्यम से ही सही मायनों में जाना जा सकता है (तुलना यूहन्ना 1:14, 18; कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1: 3)।

विशेष विषय: महिमा *(DOXA)* (SPECIAL TOPIC: GLORY *(DOXA)*)

"महिमा" की बाइबल की अवधारणा को परिभाषित करना मुश्किल है। LXX ने बीस से अधिक इब्रानी शब्दों का अनुवाद करने के लिए *doxa* का उपयोग किया। इसका प्रयोग कई बार पूरे नये नियम में कई तरीकों से किया गया है। यह परमेश्वर, यीशु, मनुष्यों और मसीहाई साम्राज्य पर लागू होता है।

पुराने नियम में "महिमा" (*kabod*, BDB 458, KB 455-458) के लिए सबसे आम इब्रानी शब्द मूल रूप से तराजू की जोड़ी से संबंधित एक व्यवसायिक शब्द था ("भारी होना," KB 455)। जो भारी था वह मूल्यवान था या उसका वास्तविक मूल्य था। अक्सर परमेश्वर के गौरव को व्यक्त करने के लिए चमक की अवधारणा को शब्द के साथ जोड़ा जाता था (तुलना निर्गमन 19:16-18; 24:17; 33:18; यशायाह 60:1-2)। वह अकेला ही योग्य और सम्माननीय है (तुलना भजनसंहिता 24:7-10; 66:2; 79:9)। वह इतना तेजोमय है कि पतित मानव जाति उसे देख नहीं सकती, इसलिए वह खुद को बादल, हाथ, या धुएं में लपेटता है (तुलना निर्गमन 16:7,10; 33:17-23; यशायाह 6:5)। YHWH को वास्तव में केवल मसीह के द्वारा जाना जा सकता है (तुलना यूहन्ना 1:18; 6:46; 12:45; 14: 8-11; कुलुस्सियों 1:15; 1 तीमुथियुस 6:16; इब्रानियों 1:3; 3; 1यूहन्ना 4:12)।

kabod पर पूरी चर्चा के लिए, विशेष विषय: महिमा (नया नियम) देखें। विश्वासियों की महिमा यह है कि वे सुसमाचार को समझें और परमेश्वर में घमण्ड करें, स्वयं में नहीं (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:29-31; यिर्मयाह 9:23-24)। एक विस्तृत चर्चा के लिए, NIDOTTE, vol. 2 pp. 577-587 देखें।

NASB, NKJV “जैसे पिता से एकलौते की महिमा”
NRSV “जैसे पिता के एकमात्र पुत्र की महिमा”
TEV "वह महिमा जो उसे पिता के एकमात्र पुत्र के रूप में प्राप्त हुई”
NJB "वह महिमा जो पिता के एकमात्र पुत्र होने से उसकी है”

यह शब्द " एकमात्र"(*monogenēs*) का अर्थ है "अनोखा”, "अपनी तरह का एक" (तुलना यूहन्ना 3:16,18; 1 यूहन्ना 4:9, F. F. Bruce, *Answers to Questions,* pp. 24-25 देखें)। वुल्गेट ने इसका अनुवाद "एकलौता" किया और दुर्भाग्य से, पुराने अंग्रेजी अनुवादों ने इसका अनुसरण किया (तुलना लूका 7:12; 8:42; 9:38; इब्रानियों 11:17)। विलक्षणता और विशिष्टता केंद्रबिंदु है, न कि यौन संतति।

▣ **“पिता"** पुराना नियम परमेश्वर की अंतरंग पारिवारिक उपमा को पिता के रूप में पेश करता है।

1. इस्राएल राष्ट्र को अक्सर YHWH के "पुत्र" (तुलना होशे 11:1; मलाकी 3:17) के रूप में वर्णित किया गया है।
2. व्यवस्थाविवरण में पहले भी परमेश्वर को पिता की उपमा दी गई है (व्याख्याविवरण 1:31)।
3. व्यवस्थाविवरण 32 में इस्राएल को "उसकी संतान" कहा जाता है और परमेश्वर को "तुम्हारा पिता" कहा जाता है।
4. 4.यह समरूपता भजनसंहिता103:13 में बताई गई है और भजनसंहिता 68:5 में विकसित हुई है (अनाथों के पिता)
5. यह भविष्यद्वक्ताओं में आम था (तुलना यशायाह 1:2; 63:8; इस्राएल पुत्र के रूप में, परमेश्वर पिता के रूप में, 63:16; 64:8; यिर्मयाह 3: 4,19; 31:9)।

यीशु इस समरूपता को लेते हैं और इसे पूर्ण पारिवारिक संगति में गहराई से उतार देते हैं, विशेषकर यूहन्ना 1: 14,18; 2:16; 3:35; 4:21,23; 5:17, 18,19,20,21,22,23,26,36,37,43,45; 6:27,32,37,44,45,46,57; 8:16,19,27,28,38,42,49,54; 10:15,17,18, 25,29,30,32, 36 37,38; 11: 41; 12:26,27,28,49,50; 13:1; 14:2,6,7,8,9,10,11,12,13,16,20,21,23,24,26,28,31; 15:1,8,9,10,15,16,23,24,26; 16:3,10,15,17, 23,25,26,27,28,32; 17:1,5,11,21,24,25; 18:11; 20:17,21 में!

▣ **"अनुग्रह और सच्चाई से भरा हुआ"** यह युग्मन पुराने नियम के शब्द *hesed* (वाचा का प्रेम और निष्ठा) और *emeth*

(विश्वासयोग्यता) शब्दों का अनुसरण करता है जो निर्गमन 34:6; नहेम्याह 9:17;भजनसंहिता 103:8 में प्रयोग और विस्तारित किये जाते हैं, दोनों शब्द नीतिवचन 16:6 में एक साथ आते हैं। 16: 6। यह पुराने नियम के वाचा संबंधी शब्दों में यीशु के चरित्र (तुलना यूहन्ना 1:17) का वर्णन करता है। यूहन्ना 6:55 और 17:3 में सत्य पर विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: करुणा *(HESED)* (SPECIAL TOPIC: LOVINGKINDNESS *(HESED)*)

इस शब्द (BDB 338 I, KB 336 II) का विस्तृत शब्दार्थ क्षेत्र है।

A. मानव के संबंध में प्रयुक्त
   1. साथी मनुष्यों पर दया करना (जैसे, 1 शमूएल 20:14; 2 शमूएल 16:17; 2 इतिहास 24:22; अय्यूब 6:14; भजनसंहिता 141: 5; नीतिवचन 19:22; 20:20)
   2. गरीबों और जरूरतमंदों के प्रति दया (जैसे, मीका 6:8)
   3. इस्राएल का YHWH के प्रति स्नेह (तुलना यिर्मयाह 2:2; होशे 6:4,6) ।
   4. एक मैदान के फूल की अस्थायी शोभा (तुलना यशायाह 40:6)

B. परमेश्वर के संबंध में प्रयुक्त
   1. वाचा के प्रति निष्ठा और प्रेम
      a. "शत्रुओं और मुसीबतों से छुटकारे में" (जैसे, उत्पत्ति 19:19; 39:21; निर्गमन 15:48; भजनसंहिता 31:16; 32:10; 33:18,22; 36:7,10; 42:8; 44:26; 66:20; 85:7; 90:14; 94:18; 107:8,15,21,31; 109: 21-22; 143:8,12; यिर्मयाह 31:3 ; एज्रा 7:28; 9:9)
      b. "मृत्यु से जीवन का संरक्षण" (जैसे, अय्यूब 10:12; भजन 6:4-5; 86:13;
      c. "आत्मिक जीवन की गति बढ़ाने में" (उदा., भजनसंहिता 119: 41,76,88,124,149,159)
      d. "पाप से छुटकारे में" (तुलना भजनसंहिता 25:7; 51:1; 130:7-8)
      e. "वाचा का पालन करने में" (जैसे, व्यवस्थाविवरण 7:9,12; 2 इतिहास 6:14; नहेम्याह 1:5; 9:32; दानिय्येल 9: 4; मीका 7:20)
   2. एक दिव्य विशेषता का वर्णन करता है (जैसे, निर्गमन 34:6; भजनसंहिता 86:15; 103:8; नहेम्याह 9:17; योएल 2:13; योना 4:2; मीका 7:20)
   3. परमेश्वर की करुणा
      a. "भरपूर मात्रा में" (उदा., गिनती 14:18; नहेम्याह 9:17; भजनसंहिता 86:5; 103:8; 145:8; योएल 2:13; यिर्मयाह 4:2)।
      b. "प्रमाण में अधिक" (जैसे, निर्गमन 20:6; व्यवस्थाविवरण 5:10; 7:9)
      c. "अनन्तकालीन" (उदाहरण, 1 इतिहास 16:34,41; 2 इतिहास 5:13; 7:3,6; 20:21; एज्रा 3:11; भजनसंहिता 100:5; 106:1; 107:1; 118: 1,2,3,4,29; 136:1-26; 138:8; यिर्मयाह 33:11)
      d. गढ़ के समान (उदा., भजनसंहिता 59:17)
      e. परमेश्वर की सामर्थ्य से संबंधित (उदा., भजनसंहिता 62:11c -12 a)
   4. करुणा के कार्य (उदा., 2 इतिहास 6:42; भजनसंहिता 89:2; यशायाह 55:3; 63:7; विलापगीत 3:22)।

   इस शब्द का अंग्रेजी अनुवादों में कई तरह से अनुवाद किया गया है। मुझे लगता है कि सबसे अच्छी सारांश परिभाषा होगी "परमेश्वर की बंधन-रहित वाचा के प्रति निष्ठा।" यह नये नियम के शब्द "प्रेम" (agapao) के समानांतर है।जो वह है, इस कारण परमेश्वर विश्वासयोग्य और प्रेमपूर्ण है!

विशेष विषय: पुराने नियम में आस्था, भरोसा, विश्वास या और विश्वासयोग्यता (SPECIAL TOPIC: BELIEVE, TRUST, FAITH, AND FAITHFULNESS IN THE OLD TESTAMENT)

I. प्रारंभिक कथन

यह कहा जाना जरूरी है कि इस धर्मशास्त्रीय अवधारणा का प्रयोग, जो नये नियम के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण है, पुराने नियम में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं है। यह निश्चित रूप से विद्यमान है, लेकिन प्रमुख चयनित अवतरणों और व्यक्तियों में प्रदर्शित किया गया है।

पुराने नियम के मिश्र शब्द

A. व्यक्ति और समुदाय

B. व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट और वाचा का आज्ञापालन

विश्वास व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट और दैनिक जीवन शैली दोनों है! इसका शाब्दिक रूप (जैसे, शब्द अध्ययन) की तुलना में एक विश्वासयोग्य अनुयायी के जीवन में वर्णन करना आसान है। इस व्यक्तिगत पहलू का सबसे अच्छा चित्रण किया गया है

A. अब्राहम और उसका वंश
B. दाऊद और इस्राएल

ये लोग परमेश्वर से मिले /आकस्मिक भेंट की और उनके जीवन स्थायी रूप से बदल गए (परिपूर्ण जीवन नहीं, लेकिन निरंतर विश्वास)। परीक्षण ने परमेश्वर के साथ उनकी विश्वास की आकस्मिक भेंट की कमजोरियों और ताकत को प्रगट किया, लेकिन समय के साथ अंतरंग, भरोसेमंद संबंध जारी रहा! इसे परखा और परिष्कृत किया गया, लेकिन उनकी भक्ति और जीवनशैली इस बात का प्रमाण हैं कि वह जारी रहा।

II. प्रयुक्त मुख्य मूल

A. אמן (BDB 52, KB 63)
  1. क्रिया
    a. *Qal* मूलशब्द - सहारा देने के लिए, पोषण करने के लिए (यानी, 2 राजाओं 10:1,5; एस्तेर 2:7, गैर-धर्मशास्त्रीय प्रयोग)
    b. *Niphal* मूलशब्द - सुनिश्चित या दृढ़ करने के लिए, स्थापित करने के लिए, पुष्टि करने के लिए, विश्वासयोग्य या भरोसेमंद होने के लिए
      (1) पुरुषों के लिए, यशायाह 8: 2; 53:1; यिर्मयाह 40:14
      (2) चीजों के लिए, यशायाह 22:23
      (3) परमेश्वर के लिए, व्यवस्थाविवरण 7: 9; यशायाह 49: 7; यिर्मयाह 42: 5
    c. *Hiphil* मूलशब्द – स्थिर रहना, विश्वास करना, भरोसा रखना
      (1) अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, उत्पत्ति 15:6
      (2) मिस्र में इस्राएलियों ने विश्वास किया, निर्गमन 4:31; 14:31 (व्यवस्थाविवरण 1:32 में अस्वीकार किया)
      (3) इस्राएलियों का मानना था कि YHWH मूसा के माध्यम से बातें करता था, निर्गमन 19:9; भजनसंहिता 106: 12,24
      (4) आहाज को परमेश्वर पर भरोसा नहीं था, यशायाह 7:9
      (5) जो कोई इस पर / उसमें विश्वास करता है, यशायाह 28:16
      (6) परमेश्वर के बारे में सत्य पर विश्वास करता है, यशायाह 43:10-12
  2. संज्ञा (पुल्लिंग) - विश्वासयोग्यता (यानी, व्यवस्थाविवरण 32:20; यशायाह 25:1; 26:2)।
  3. क्रिया विशेषण - सच में, वास्तव में, मैं सहमत हूँ, यह ऐसा ही हो (तुलना व्यवस्थाविवरण 27: 15-26; 1 राजाओं 1:36; 1 इतिहास 16:36; यशायाह 65:16; यिर्मयाह 11:5; 28:6)। यह पुराने नियम और नये नियम में "आमीन" का पूजन पद्धति संबंधी प्रयोग है।

B. אמת (BDB 54, KB 68) स्त्रीलिंग संज्ञा, स्थिरता, विश्वासयोग्यता, सत्य
  1. पुरुषों के लिए, यशायाह 10:20; 42: 3; 48: 1
  2. परमेश्वर के लिए, निर्गमन 34: 6; भजनसंहिता 117: 2; यशायाह 38: 18,19; 61: 8
  3. सत्य के लिए, व्यवस्थाविवरण 32: 4; 1 राजाओं 22:16; भजनसंहिता 33: 4; 98: 3; 100: 5; 119: 30; यिर्मयाह 9:5; जकर्याह 8:16

C. אמונה (BDB 53, KB 62), स्थिरता, दृढ़ता, निष्ठा
  1. हाथों की, निर्गमन 17:12
  2. दिनों की, यशायाह 33:6
  3. मनुष्यों की, यिर्मयाह 5:3; 7:28; 9:2
  4. परमेश्वर की, भजनसंहिता 40:11; 88:11; 89:1,2,5,8; 119:138

III. पौलुस के द्वारा इस पुराने नियम की अवधारणा का प्रयोग

A. पौलुस ने दमिश्क के रास्ते पर यीशु के साथ अपनी व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट को YHWH और पुराने नियम की अपनी नई समझ का आधार बनाया (तुलना प्रेरितों के काम 9:1-19; 22:3-16; 26:9-18)।
B. उसने पुराने नियम के दो प्रमुख अवतरणों में, जो मूल (אמן) का प्रयोग करते हैं, अपनी नई समझ के लिए पुराने नियम से समर्थन पाया।
   1. उत्पत्ति 15: 6 - अब्राम की परमेश्वर (उत्पत्ति 12) द्वारा शुरू की गई व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट विश्वास के एक आज्ञाकारी जीवन में परिणत हुई (उत्पत्ति 12-22)। पौलुस रोमियों 4 और गलातियों 3 में इसका संकेत देता है।
   2. यशायाह 28:16 - जो इस पर विश्वास करते हैं (यानी, परमेश्वर द्वारा परखा गया और मजबूती से रखा गया कोने का पत्थर) वे कभी नहीं होंगे
      a. रोमियों 9:33, "लज्जित" या "हताश"
      b. रोमियों 10:11, ऊपर दिये गए के समान
   3. हबक्कूक 2: 4 - जो लोग विश्वासयोग्य परमेश्वर को जानते हैं, उन्हें विश्वासयोग्य जीवन जीना चाहिए (तुलना यिर्मयाह 7:28)। पौलुस रोमियों 1:17 और गलातियों 3:11 में इस पाठ का प्रयोग करता है। (इब्रानियों 10:38 पर भी ध्यान दें।)

IV. पतरस के द्वारा पुराने नियम की अवधारणा का प्रयोग
A. पतरस जोड़ता है
   1. यशायाह 8:14 - 1 पतरस 2:8 (ठेस लगने का पत्थर)
   2. यशायाह 28:16 - 1 पतरस 2:6 (कोने का पत्थर)
   3. भजनसंहिता 118: 22 - 1 पतरस 2:7 (ठुकराया हुआ पत्थर)
B. वह निम्नलिखित को अनोखी भाषा से, जो इस्राएल का वर्णन इस प्रकार करती है, "एक चुना हुआ वंश,राज-पदधारी याजकों का समाज, एक पवित्र प्रजा, परमेश्वर की निज संपत्ति" बदल देता है
   1. व्यवस्थाविवरण 10:15; यशायाह 43:21
   2. यशायाह 61:6; 66:21
   3. निर्गमन 19:6; व्यवस्थाविवरण 7:6

   और अब इसे कलीसिया के मसीह में विश्वास के लिए प्रयोग करता है (तुलना 1 पतरस 2; 5,9)

V. यूहन्ना द्वारा अवधारणा का प्रयोग
A. इसका नये नियम में प्रयोग

   शब्द "विश्वास" यूनानी शब्द *pisteuō* से है। जिसका अनुवाद "आस्था," "विश्वास" या "भरोसा" भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना के सुसमाचार में संज्ञा नहीं आती है, लेकिन अक्सर क्रिया का प्रयोग किया गया है। यूहन्ना 2:23-25 में नासरत के यीशु के प्रति मसीहा के रूप में लोगों की प्रतिबद्धता की वास्तविकता के बारे में अनिश्चितता है। "विश्वास" शब्द के इस सतही प्रयोग के अन्य उदाहरण यूहन्ना 8:31-59 और प्रेरितों के काम 8:13, 18-24 में हैं। सच्चा बाइबल का विश्वास प्रारंभिक प्रतिक्रिया से अधिक है। इसके बाद शिष्यत्व की प्रक्रिया होनी चाहिए (तुलना मत्ती 13: 20-22,31-32)।
B. इसका संबंध सूचक अव्ययों के साथ प्रयोग
   1. *eis* का अर्थ है "में।" यह अनोखी संरचना विश्वासियों को यीशु में अपना भरोसा / विश्वास रखने पर जोर देती है
      a. उसके नाम में (यूहन्ना 1:12; 2:23; 3:18; 1 यूहन्ना 5:13)
      b. उसमें (यूहन्ना 2:11; 3:15,18; 4:39; 6:40; 7:5,31,39,39; 8:30; 9:36; 10:42; 11:45 48; 12:37,42; मत्ती 18:6; प्रेरितों के काम 10:43; फिलिप्पियों 1:29; 1 पतरस 1:8)।
      c. मुझ पर (यूहन्ना 6:35; 7:38; 11:25,26; 12: 44,46; 14: 1,12; 16: 9; 17:20)।
      d. पुत्र पर (यूहन्ना 3:36; 9:35; 1 यूहन्ना 5:10)
      e. यीशु पर (यूहन्ना 12:11; प्रेरितों के काम 19:4; गलातियों 2:16)
      f. ज्योति पर (यूहन्ना 12:36)
      g. परमेश्वर पर (यूहन्ना 14:1)
   2. *ev* का अर्थ "पर" जैसा यूहन्ना 3:15; मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 5:14 में है

3. *epi* का अर्थ है "पर" या "में", जैसा मत्ती 27:42; प्रेरितों के काम 9:42; 11:17; 16:31; 22:19; रोमियों 4:5, 24; 9:33; 10:11; 1 तीमुथियुस 1:16; 1 पतरस 2:6 में है
4. संबंध सूचक अव्यय रहित सम्प्रदान कारक जैसा गलातियों 3: 6; प्रेरितों के काम 18:8; 27:25; 1 यूहन्ना 3:23; 5:10 में है
5. *hoti*, जिसका अर्थ है "विश्वास करो कि," क्या विश्वास करना है, इस बारे में विषयवस्तु देता है
   a. यीशु परमेश्वर का पवित्र जन है (यूहन्ना 6:69)
   b. यीशु मैं हूँ है (यूहन्ना 8:24)
   c. यीशु पिता में है और पिता उस में है (यूहन्ना 10:38)
   d. यीशु मसीहा है (यूहन्ना 11:27; 20:31)
   e. यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 11:27; 20:31)
   f. यीशु पिता के द्वारा भेजा गया था (यूहन्ना 11:42; 17: 8,21)
   g. यीशु पिता के साथ एक है (यूहन्ना 14:10-11)
   h. यीशु पिता की ओर से आया (यूहन्ना 16: 27,30)
   i. यीशु ने पिता की वाचा के नाम "मैं हूँ" में खुद को पहचाना, (यूहन्ना 8:24; 13:19)
   j. हम उसके साथ जीएँगे (रोमियों 6:8)
   k. यीशु मरा और जी भी उठा (1 थिस्सलुनीकियों 4:14)

VI. निष्कर्ष

A. बाइबल का विश्वास एक दिव्य वचन / प्रतिज्ञा के प्रति मानवीय प्रतिक्रिया है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (यानी, यूहन्ना 6: 44,65), लेकिन मनुष्यों की ओर से प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता इस दिव्य संवाद का एक हिस्सा है (यानी, विशेष विषय: वाचा देखें)।
   1. पश्चाताप (विशेष विषय: पश्चाताप देखें)
   2. विश्वास/भरोसा (विशेष विषय: विश्वास, आस्था, या भरोसा)
   3. आज्ञाकारिता
   4. धीरज (विशेष विषय: धीरज देखें)

B. बाइबल का विश्वास है
   1. एक व्यक्तिगत संबंध (प्रारंभिक विश्वास)
   2. बाइबल के सत्य की पुष्टि (परमेश्वर के प्रकटीकरण, यानी पवित्रशास्त्र में विश्वास)
   3. उसके प्रति एक उचित आज्ञाकारी प्रतिक्रिया (दैनिक विश्वासयोग्यता)

बाइबल की आस्था स्वर्ग का टिकट या बीमा योजना नहीं है। यह एक व्यक्तिगत संबंध है। यह सृजन का उद्देश्य है, परमेश्वर की स्वरूप और समानता में मनुष्यों का बनाया जाना (तुलना उत्पत्ति 1:26-27)। मुद्दा है "अंतरंगता"।परमेश्वर संगति की इच्छा रखता है, एक निश्चित धर्मशास्त्रीय अस्तित्व नहीं ! लेकिन एक पवित्र परमेश्वर के साथ संगति यह माँग करती है कि संतान "परिवार" की विशेषताओं (यानी, पवित्रता, तुलना लैव्यव्यवस्था 19: 2; मत्ती 5:48; 1 पतरस 1:15-16) को प्रदर्शित करे। पतन (तुलना उत्पत्ति 3) ने उचित प्रतिक्रिया देने की हमारी क्षमता को प्रभावित किया। इसलिए, परमेश्वर ने हमारी ओर से कार्य किया (तुलना यहेजकेल 36: 27-38), हमें "नया हृदय" और "नई आत्मा" दी, जो हमें विश्वास और पश्चाताप के द्वारा उसके साथ संगति करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए सक्षम बनाता है!

तीनों निर्णायक हैं। तीनों को बनाए रखा जाना चाहिए। लक्ष्य है परमेश्वर को जानना (इब्रानी और यूनानी दोनों अर्थों में) और हमारे जीवन में उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करना। विश्वास का लक्ष्य किसी एक दिन स्वर्ग नहीं है, लेकिन हर दिन मसीह की समानता है!

C. मानवीय विश्वासयोग्यता परिणाम है (नया नियम), न कि परमेश्वर के साथ संबंध के लिए आधार (पुराना नियम): उसकी विश्वासयोग्यता में मानवीय विश्वास; उसकी विश्वसनीयता में मानवीय भरोसा। नये नियम के उद्धार के दृष्टिकोण का मूल यह है कि मनुष्यों को आरम्भ से और लगातार मसीह में प्रदर्शित की गई परमेश्वर की कृपा और दया का प्रत्युत्तर देना चाहिए। उसने प्रेम किया है, उसने भेजा है, उसने प्रदान किया है; हमें विश्वास और विश्वासयोग्यता में प्रत्युत्तर देना चाहिए (तुलना इफिसियों 2: 8-9 और 10)!

विश्वासयोग्य परमेश्वर चाहता है कि एक विश्वासयोग्य लोग खुद को एक विश्वासहीन जगत के सामने प्रकट करें और उन्हें उसपर व्यक्तिगत विश्वास में लाएँ।

1:15 "क्योंकि वह मुझसे पहले था" यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का यीशु के पूर्व अस्तित्व के विषय में मजबूत पुष्टि का सिद्धांत है (तुलना यूहन्ना 1:1; 8: 56-59; 16:28; 17: 5; 2 कुरिंथियों 8: 7; फिलिप्पियों 2:6-7; कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 1:3; 10:5-8)। पूर्व-अस्तित्व और भविष्यसूचक भविष्यवाणी के सिद्धांत पुष्टि करते हैं कि इतिहास से ऊपर और परे एक परमेश्वर है, जो फिर भी इतिहास के भीतर काम करता है। यह एक ईसाई / बाइबल संबंधी विश्व दृष्टिकोण का एक अभिन्न अंग है।

▣ यह पद अजीब है और पाठ को स्पष्ट करने और सरल बनाने के प्रयास में कई लेखकीय परिवर्तन किए गए थे। Bruce M. Metzger, *A Textual Commentary on the Greek New Testament,* pp.197-198 देखें।

यह इसका एक अच्छा उदाहरण है कि कैसे यूनानी क्रिया कालों को मानकीकृत नहीं किया जा सकता। यह एक भूतकालीन कृत्य है जो वर्तमान काल में दर्ज किया गया है। परिशिष्ट एक देखें।

1:16-18 यूहन्ना के सुसमाचार की विशेषताओं में से एक यह है कि किस प्रकार लेखक अपने स्वयं के टिप्पणियों के साथ ऐतिहासिक घटना, संवाद या शिक्षण सत्र की गहराई में जाता है। अक्सर यीशु ,अन्य व्यक्तियों और यूहन्ना के शब्दों में अंतर करना असंभव है। अधिकांश विद्वान इस बात पर जोर देते हैं कि यूहन्ना 1:16-19 यूहन्ना लेखक की टिप्पणियाँ हैं (तुलना यूहन्ना 3:14-21)।

1:16 "परिपूर्णता" यह यूनानी शब्द *pleroma* है। ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों ने उच्च देवता और कम आध्यात्मिक प्राणियों के बीच दिव्य युग का वर्णन करने के लिए इसका इस्तेमाल किया। यीशु परमेश्वर और मनुष्य के बीच एकमात्र मध्यस्थ (यानी, सत्य और एकमात्र पूर्णता) है (तुलना कुलुस्सियों 1:19; 2:9; इफिसियों 1:23; 4:13)। यहाँ फिर से ऐसा लगता है कि यूहन्ना प्रेरित वास्तविकता के प्रारंभिक ज्ञानवादी दृष्टिकोण पर हमला कर रहा है।

NASB, NRSV "और अनुग्रह पर अनुग्रह"
NKJV "और अनुग्रह के लिए अनुग्रह"
TEV "हमें एक के बाद एक आशीष दे रहा है"
NJB "एक भेंट के बदले दूसरी"

व्याख्यात्मक सवाल यह है कि "अनुग्रह" को कैसे समझा जाए। यह है

1. मसीह में परमेश्वर की दया उद्धार तक
2. मसीही जीवन के लिए परमेश्वर की दया
3. नई वाचा में मसीह के माध्यम से परमेश्वर की दया?

प्रमुख विचार "अनुग्रह" है; यीशु के अवतार में परमेश्वर की कृपा चमत्कारिक रूप से दी गई है। यीशु पतित मानव जाति के लिए परमेश्वर की "हाँ" है (तुलना 2 कुरिंथियों 1:20)।

1:17 "व्यवस्था" मूसा का कानून बुरा नहीं था, लेकिन पूर्ण उद्धार प्रदान करने में प्रारंभिक और अधूरा था (तुलना यूहन्ना 5:39-47; गलातियों 3: 23-29; रोमियों 4)। इब्रानी भी मूसा और यीशु के कार्य /प्रकटीकरण/ वाचाओं में अंतर और तुलना करते हैं।

विशेष विषय: मूसा की व्यवस्था के प्रति पौलुस के विचार (SPECIAL TOPIC: PAUL'S VIEWS OF THE MOSAIC LAW)

यह भली है और परमेश्वर की ओर से है (तुलना रोमियों 7:12,16)।

A. यह धार्मिकता और परमेश्वर द्वारा स्वीकारे जाने का तरीका नहीं है (यह एक अभिशाप भी हो सकती है, तुलना गलातियों 3)। विशेष विषय: मूसा की व्यवस्था और मसीही देखें
B. यह अभी भी विश्वासियों के लिए परमेश्वर की इच्छा है क्योंकि यह परमेश्वर का स्व-प्रकटीकरण है (पौलुस अक्सर विश्वासियों को दोषी ठहराने और/अथवा प्रोत्साहित करने के लिए पुराने नियम को उद्धृत करता है)।
C. विश्वासियों को पुराने नियम द्वारा सूचित किया जाता है (तुलना रोमियों 4:23-24; 15:4; 1 कुरिन्थियों 10: 6,11), लेकिन पुराने नियम (तुलना प्रेरितों के काम 15; रोमियों 4; गलातियों 3; इब्रानियों) द्वारा बचाया नहीं जाता)। यह पवित्रीकरण में कार्य करती है लेकिन दोषमुक्ति में नहीं।
D. यह नई वाचा में इसके लिए कार्य करती है:
   1. पाप दिखाने (तुलना गलातियों 3:15-29)

2. समाज में छुटकारा पाई मानव जाति का मार्गदर्शन करने
3. मसीही नैतिक निर्णयों को सूचित करने

यह व्यवस्था से संबंधित यह धर्मशास्त्रीय विस्तार है, जो शाप (तुलना गलातियों 3:10-13) देने से और आशीर्वाद देने और उस स्थायित्व की ओर जाता है, जो मूसा की व्यवस्था के बारे में पौलुस के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश में समस्या का कारण बनता है। *A Man in Christ* में, जेम्स स्टीवर्ट पौलुस की विरोधाभासी सोच और लेखन को दर्शाते हैं:

"आप सामान्य रूप से एक ऐसे व्यक्ति से जो विचार और सिद्धांत की एक प्रणाली का निर्माण करने के लिए स्वयं को तैयार कर रहा था,अपेक्षा करेंगे कि वह खुद के द्वारा प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को यथासंभव कठोरतापूर्वक ठीक करे। आप उससे उसके प्रमुख विचारों की शब्द-रचना में सटीकता की ओर लक्ष्य करने की उम्मीद करेंगे। आप माँग करेंगे कि एक शब्द, जो एक बार आपके लेखक द्वारा एक विशेष अर्थ में प्रयोग किया जाता है, वह उस अर्थ को लगातार बनाए रखे। लेकिन पौलुस से इसकी आशा करना, निराश होना है। उसकी अधिकांश शब्द-रचना अस्थिर है, दृढ़ नहीं. . .'' व्यवस्था पवित्र है' वह लिखता है, 'मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ' (तुलना रोमियों 7:12,22) लेकिन यह स्पष्ट रूप से *nomos* का एक और पहलू है जो उससे कहीं और कहलवाता है, 'मसीह ने हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया' (तुलना गलातियों 3:13)" (p. 26)।

▣ **"अनुग्रह"** यह परमेश्वर के पतित मानव जाति के लिए अनुपयुक्त, नाहक प्रेम को दर्शाता है (तुलना इफिसियों 2: 8)। यह शब्द अनुग्रह (*charis*), पौलुस के लेखन में अति महत्वपूर्ण, यूहन्ना रचित सुसमाचार में केवल इस अनुच्छेद में प्रयोग किया गया है (तुलना यूहन्ना 1: 14,16,17)। नए नियम के लेखक, प्रेरणा के तहत ,अपने स्वयं के शब्दसंग्रह, उपमाओं और रूपकों का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र थे।

यीशु यिर्मयाह:31:31-34; यहेजकेल 36: 22-38 की "नई वाचा" को वास्तविकता में लाया।

▣ **"सत्य"** इसका उपयोग (1) विश्वसनीयता या (2) सत्य बनाम असत्य (तुलना यूहन्ना 1:14; 8:32; 14: 6) के अर्थ में किया जाता है। ध्यान दें अनुग्रह और सच्चाई दोनों यीशु के माध्यम से आए (तुलना यूहन्ना 1:14)। यूहन्ना 17:3 में विशेष विषय देखें।

▣ **"यीशु"** यह प्रस्तावना में मरियम के बेटे के मानवीय नाम का पहला प्रयोग है। पहले से मौजूद पुत्र अब बन गया है अवतारित बेटा!

1:18 "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा" कुछ कहते हैं कि यह निर्गमन 33: 20-23 का विरोधाभास है।। हालाँकि, निर्गमन अवतरण में इब्रानी शब्द "उत्तरदीप्ति" को संदर्भित करता है, न कि स्वयं परमेश्वर के भौतिक दर्शन को। इस अवतरण का जोर केवल इस बात पर है कि केवल यीशु पूर्ण रीति से परमेश्वर को प्रकट करता है (तुलना यूहन्ना 14:8ff)। किसी भी पापी मानव ने परमेश्वर को नहीं देखा है (तुलना यूहन्ना 6:46; 1 तीमुथियुस 6:16; 1 यूहन्ना 4:12,20)।

यह पद नासरत के यीशु में परमेश्वर के अनूठे प्रकटीकरण पर जोर देता है। वह पूर्ण और एकमात्र दिव्य आत्म-प्रकटीकरण है। यीशु को जानना परमेश्वर को जानना है। यीशु स्वयं पिता का परम् प्रकटीकरण है। उसके अलावा देवता की कोई स्पष्ट समझ नहीं है (तुलना कुलुस्सियों 1:15-19; इब्रानियों 1:2-3)। यीशु पिता को "देखता" है और विश्वासी उसके माध्यम से पिता को "देखते" हैं (उसका जीवन, शब्द, और कार्य)। वह अदृश्य परमेश्वर का संपूर्ण और पूर्ण प्रकटीकरण है (तुलना कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1: 3)।

NASB **"एकलौता परमेश्वर"**
NKJV **"एकलौता पुत्र"**
NRSV **"यह परमेश्वर का एकमात्र पुत्र है"**
TEV **"एकमात्र पुत्र"**
NJB **"यह एकमात्र पुत्र है"**

यूहन्ना 1:14 पर *monogenēs* पर टिप्पणी नोट देखें। यीशु पूर्ण रूप से परमेश्वर और मनुष्य हैं। यूहन्ना 1:1 में पूर्ण टिप्पणियाँ देखें।

यहाँ एक यूनानी पांडुलिपि विविधता है। *Theos* / परमेश्वर प्रारंभिक यूनानी पांडुलिपियों P^{66}, P^{75}, B, और C में है, जबकि "पुत्र" को "परमेश्वर" के लिए केवल MSS A और C^3 में प्रतिस्थापित किया गया है। UBS^4 "परमेश्वर" को "B" दर्जा (लगभग निश्चित) देता है। शब्द "पुत्र" संभवतः यूहन्ना 3:16,18 और "1 यूहन्ना 4:9 में (तुलना Bruce M.Metzger's *A Textual*

Commentary on the Greek New Testament p.198) लेखकों द्वारा " एकलौता पुत्र "को याद करने से आता है। यह यीशु के संपूर्ण और पूर्ण देवता होने की एक मजबूत पुष्टि है! यह संभव है कि इस पद में यीशु के लिए तीन शीर्षक हों: (1) एकलौता, (2) परमेश्वर, और (3) जो पिता की गोद में है।

Bart D. Ehrmans' *The Orthodox Corruption of Scripture,* p.78-82 में कट्टरपंथी लेखकों द्वारा इस पाठ के एक उद्देश्यपूर्ण संशोधन की संभावना की एक दिलचस्प चर्चा है।

▣ **"जो पिता की गोद में है"** यह यूहन्ना 1:1 और 2 में "परमेश्वर के साथ" वाक्यांश से अर्थ में बहुत समान है। यह अंतरंग संगति की बात करता है। यह इंगित करता है (1) उसकी पहले से मौजूद संगति या (2) उसकी पुनःस्थापित संगति(यानी, स्वर्गारोहण)

NASB **"उसने उसका वर्णन किया है"**
NKJV **"उसने उसे घोषित किया है"**
NRSV, NJB **"जिसने उसे प्रकट किया है"**
TEV **"उसने उसे प्रकट किया है"**

हमें अंग्रेज़ी शब्द "टीका" (अक्षरशः"मार्गदर्शन करना", "अनिर्दिष्ट मध्यम [प्रतिपादक] निश्चयार्थक) यूहन्ना 1:18 में प्रयुक्त इस यूनानी शब्द से प्राप्त होता है, जिसका अर्थ है एक संपूर्ण और पूर्ण प्रकटीकरण। यीशु के मुख्य कार्यों में से एक था पिता को प्रकट करना (तुलना यूहन्ना 14:7-10; इब्रानियों 1: 2-3)। यीशु को देखना और जानना पिता को देखने और जानने के समान है (पापियों को प्यार करना, कमजोरों की मदद करना, बहिष्कृतों को स्वीकार करना, बच्चों और महिलाओं को स्वीकार करना)!

यूनानी में इस शब्द का उपयोग उन लोगों के लिए किया गया था जो वर्णन करते या संदेश, स्वप्न या दस्तावेज की व्याख्या करते हैं। यहाँ फिर से शायद यूहन्ना एक ऐसे शब्द का उपयोग कर रहे हैं, जिसका यहूदियों और अन्यजातियों (यूहन्ना 1:1 के *Logos* की तरह) के लिए विशिष्ट अर्थ था। यूहन्ना अपनी प्रस्तावना के साथ यहूदी और यूनानी दोनों से संबंधित होने का प्रयास कर रहा है। इस शब्द का अर्थ हो सकता है

1. यहूदियों के लिए जो कानून वर्णन या व्याख्या करता है
2. यूनानियों के लिए जो देवताओं की व्याख्या या व्याख्या करता है।

यीशु और अकेले यीशु में, मनुष्य पूरी तरह से पिता को देखते और समझते हैं!

पद 19-51 पर प्रासंगिक अंतर्दृष्टि

A. यह अवतरण यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से संबंधित दो प्रारंभिक कलीसियाई गलतफहमियों की चर्चा करता है:
   1. जो कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के व्यक्तित्व के इर्दगिर्द विकसित हुई और यूहन्ना 1:6-9, 20,21,25 और 3:22-36 में विवादित है;
   2. वह जो मसीह के व्यक्ति को सम्मिलित करती है और जिससे यूहन्ना 1:32-34 में निपटा जाता है। यही ज्ञानवाद के विरुद्ध मत पर इसी प्रकार से 1 यूहन्ना 1 में आक्षेप किया गया है। शायद 1 यूहन्ना, यूहन्ना रचित सुसमाचार का आवरण पत्र रहा होगा।

B. यूहन्ना रचित सुसमाचार में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा यीशु के बपतिस्मा के बारे में कोई उल्लेख नहीं है। कलीसिया, बपतिस्मा और प्रभुभोज के विधान , यूहन्ना के द्वारा लिखित यीशु के जीवन वृत्तान्त में उल्लेखनीय रूप से अनुपस्थित हैं। इस लोप के कम से कम दो संभावित कारण हैं:
   1. प्रारंभिक कलीसिया में संस्कारवाद के उदय ने यूहन्ना को मसीहत के इस पहलू पर जोर न देने के लिए मजबूर किया। उसका सुसमाचार रीति-रिवाज़ों पर नहीं, रिश्तों पर केंद्रित है। वह बपतिस्मा और प्रभुभोज के दो संस्कारों पर न तो चर्चा करता है और न उन्हें दर्ज़ करता है। किसी अपेक्षित वस्तु की अनुपस्थिति इस ओर ध्यान आकर्षित करेगी।
   2. अन्य सुसमाचार लेखकों की तुलना में बाद में लिखने वाले यूहन्ना ने दूसरों की न्यूनता पूर्ण करने के लिए मसीह के जीवन के अपने वृत्तान्त का उपयोग किया। चूंकि सभी synoptics इन विधानों का समावेश करते हैं, यूहन्ना ने केवल आसपास की घटनाओं के बारे में अतिरिक्त जानकारी की आपूर्ति की। ऊपरी कक्ष में जो संवाद और घटनाएँ घटी, वे एक उदाहरण हो सकती हैं (अध्याय 13-17) लेकिन स्वयं वास्तविक भोज नहीं।

C. इस वृत्तान्त का जोर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गवाही पर है जो यीशु के व्यक्तित्व के विषय में है। यूहन्ना निम्नलिखित ख्रीस्त संबंधी कथन लिखता है:

1. यीशु परमेश्वर का मेम्ना है, (यूहन्ना 1:29) यीशु के लिए एक शीर्षक जिसका उपयोग केवल यहाँ और प्रकाशितवाक्य में किया गया है।
2. यीशु पहले से मौजूद है (यूहन्ना 1:30)
3. यीशु पवित्र आत्मा का प्राप्तकर्ता और दाता है (यूहन्ना 1:33)
4. यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:34)

D. यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के बारे में सत्य इनकी व्यक्तिगत गवाही द्वारा विकसित किए गए हैं
   1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला
   2. अन्द्रियास और शमौन
   3. फिलिप्पुस और नतनएल

यह पूरे सुसमाचार में एक आम साहित्यिक तकनीक है। इसमें यीशु के बारे में या यीशु के साथ सत्ताईस संवाद या गवाहियाँ शामिल हैं।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1: 19-23
19यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवियों को उससे यह पूछने के लिए भेजा, "तू कौन है?" 20तो उसने यह मान लिया और इन्कार नहीं किया, परन्तु मान लिया, "मैं मसीह नहीं हूँ।" 21तब उन्होंने उससे पूछा, "तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" "तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है?" उसने उत्तर दिया, "नहीं।" 22तब उन्होंने उससे पूछा, "फिर तू है कौन, ताकि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें। तू अपने विषय में क्या कहता है?" 23उसने कहा," जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है: मैं जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हूँ, कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो'।"

1:19 "यहूदी" यूहन्ना में यह (1) यहूदिया के लोगों को जो यीशु के प्रति शत्रुतापूर्ण थे या (2) केवल यहूदी धर्मगुरुओं के प्रति (तुलना यूहन्ना 2:18; 5:10; 7:13; 9:22; 12:42; 18:12; 19:38; 20:19)। कुछ विद्वानों ने दावा किया है कि एक यहूदी इस अपमानजनक तरीके से अन्य यहूदियों का उल्लेख नहीं करेगा। हालाँकि, मसीहत का यहूदी विरोध 90 ई. में जामनिया की परिषद में के बाद तीव्र हो गया।

मूलतः यहूदा के गोत्र में से किसी एक से "यहूदी" शब्द आता है। 922 ईसा पूर्व में बारह गोत्रों के विभाजन के बाद, यहूदा दक्षिणी तीन गोत्रों का नाम बन गया।दोनों यहूदी साम्राज्यों, इस्राएल और यहूदा, को निर्वासन में ले जाया गया था, लेकिन कुछ ही, जिनमें से ज्यादातर यहूदा से थे, 538 ईसा पूर्व के कुस्रू की राजाज्ञा में लौट आए। यह शब्द तब याकूब के वंशजों के लिए एक उपाधि बन गया जो पलस्तीन में रहते थे और भूमध्यसागरीय दुनिया में बिखरे हुए थे।

यूहन्ना में यह शब्द ज्यादातर नकारात्मक है, लेकिन इसका सामान्य उपयोग यूहन्ना 2:6 और 4:22 में देखा जा सकता है।

▣ **"याजक और लेवी"** जाहिर तौर पर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला भी याजक वंश से था (तुलना लूका 1:5ff)। यह यूहन्ना रचित सुसमाचार में "लेवी" शब्द का एकमात्र प्रयोग है। वे संभवतः मंदिर के व्यवस्थापक थे। यह यरूशलेम में धार्मिक अधिकारियों द्वारा भेजे गए "तथ्य खोजको" का एक अधिकृत समूह था (तुलना यूहन्ना 1:24)। याजक और लेवी सामान्य सदूकी थे, जबकि शास्त्री सामान्य रूप से फरीसी थे। (तुलना यूहन्ना 1:24)। ये दोनों समूह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से पूछताछ करने में शामिल थे। राजनीतिक और धार्मिक विरोधी, यीशु और उसके अनुयायियों का विरोध करने के लिए आधिकारिक बलों में शामिल हो गए।

▣ **"तू कौन है"** यह प्रश्न यूहन्ना 8:25 में यीशु से पूछा गया है। यूहन्ना और यीशु ने ऐसे तरीकों से सिखाया और काम किया, जो आधिकारिक नेताओं को असुविधाजनक थे, क्योंकि वे दोनों पुरुषों में पुराने नियम के गूढ़ युगांत विषयक विषय-वस्तुओं और शब्दों को देखते थे। यह सवाल, फिर, अंत समय की यहूदी अपेक्षा, नये युग के व्यक्तियों से संबंधित है।

1:20 "और उसने यह मान लिया, और इन्कार नहीं किया, परन्तु मैन लिया" यह कथन एक मजबूत, तिगुना इन्कार है कि वह वो मसीहा (ख्रीस्त) था, जिसकी उम्मीद थी और वादा किया हुआ था। "कबूल" के लिए यूहन्ना 9: 22-23 में विशेष विषय देखें।

▣ **"ख्रीस्त"** "ख्रीस्त" इब्रानी शब्द "*māšîah*" का यूनानी अनुवाद है, जिसका अर्थ है "एक अभिषिक्त।" पुराने नियम में

अभिषेक की अवधारणा परमेश्वर की विशेष बुलाहट और एक विशिष्ट कार्य के लिए सज्जित करने पर जोर देने का एक तरीका था। राजाओं, याजकों और नबियों का अभिषेक किया जाता था। यह उस विशेष व्यक्ति के रूप में पहचाना गया जो धार्मिकता के नए युग को लागू करने वाला था। कई लोगों ने सोचा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यह वादा किया हुआ मसीहा था (तुलना लूका 3:15) क्योंकि वह कुछ चार सौ साल पहले पुराने नियम के लेखकों के बाद से YHWH के लिए पहला प्रेरित प्रवक्ता था।

इस जगह पर मैं दानिय्येल 9:26 से "मसीह" पर अपनी टिप्पणी शामिल करना चाहूँगा।

दानिय्येल 9:26

NASB	**"मसीहा"**
NKJV	**"मसीहा"**
NRSV	**"एक अभिषिक्त जन"**
TEV	**"परमेश्वर का चुना हुआ अगुवा"**
NJB	**"एक अभिषिक्त जन"**

इस पद की व्याख्या करने में कठिनाई, मसीहा या अभिषिक्त जन (BDB 603) शब्द से संबंधित संभावित अर्थों के कारण है:

1. यहूदी राजाओं के लिए प्रयुक्त (उदाहरण 1 शमूएल 2:10; 12: 3)
2. यहूदी याजकों के लिए प्रयुक्त (उदाहरण लैव्यव्यवस्था 4:3,5)
3. कुस्रू के लिए प्रयुक्त (तुलना ईसा) । 45: 1)
4. #1 और #2 भजनसंहिता 110 और जकर्याह 4 में संयुक्त हैं।
5. धार्मिकता का नया युग लाने के लिए परमेश्वर के विशेष आने वाले दाऊदी राजा के लिए प्रयुक्त
   a. यहूदा का वंश (तुलना उत्पत्ति 49:10)
   b. यिशै का घराना (तुलना 2 शमूएल 7)
   c. सर्वव्यापी शासन (तुलना भजन 2; यशायाह 9: 6; 11:1-5; मीका 5: 1-4ff)

मैं व्यक्तिगत रूप से नासरत के यीशु के साथ "अभिषिक्त जन" की पहचान की ओर आकर्षित हूँ:

1. दानिय्येल 2 में चौथे साम्राज्य के दौरान एक अनंत साम्राज्य की शुरूआत
2. दानिय्येल 7:13 में "मनुष्य के एक पुत्र" को एक अनंत साम्राज्य दिये जाने की शुरुआत
3. दानिय्येल 9:24 के मोचन उपनियम जो पतित संसार के इतिहास के समापन की ओर इशारा करते हैं
4. नये नियम में यीशु के द्वारा दानिय्येल की पुस्तक का उपयोग (तुलना मत्ती 24:15; मरकुस 13:14)

1:21 "तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है" क्योंकि एलिय्याह की मृत्यु नहीं हुई थी बल्कि एक बवंडर में स्वर्ग में उठा लिया गया था (तुलना 2 राजा 2:1), उसकी मसीहा से पहले आने की उम्मीद थी (तुलना मलाकी 3:1; 4: 5)। यूहन्ना बैपटिस्ट ने एलिजा की तरह देखा और अभिनय किया (तुलना जकर्याह 13: 4)।

▣ **"मैं नहीं हूँ"** "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने खुद को एलिय्याह की युगांतकारी भूमिका में नहीं देखा, लेकिन यीशु ने उसे मलाकी की भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में कार्य करते हुए देखा (तुलना मत्ती 11:14; 17:12)।

▣ **"'क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है'"** मूसा ने भविष्यवाणी की थी कि उसके जैसा कोई (जिसे उसने"भविष्यद्वक्ता "कहा था) उसके बाद आएगा (तुलना व्यवस्थाविवरण 18: 15,18; यूहन्ना 1:25; 6:14; 7:40; प्रेरितों के काम 3:22-23; 7:37)। दो अलग-अलग तरीकों से इस शब्द का उपयोग नये नियम में किया गया है: (1) मसीहा से भिन्न एक परलौकिक व्यक्ति के रूप में (तुलना यूहन्ना 7:40-41) या मसीह के समरूप व्यक्ति के रूप में (तुलना प्रेरितों के काम 3:22)।

1:23 "मैं जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ" यह मलाकी 3:1 में समानांतर का उल्लेख करते हुए यशायाह 40:3 के सेप्टुआजिंट अनुवाद का एक उद्धरण है।

▣ **"'प्रभु का मार्ग सीधा करो'"** यह (यशायाह 40:3) यशायाह की साहित्यिक इकाई (अध्याय 40-54) से एक उध्दरण है जिसमें सेवक गीत आते हैं (तुलना यशायाह 42: 1- 9; 49:1-7; 50:4-7; 52:13-53:12)। आरंभ में वे इस्राएल को संदर्भित करते थे, लेकिन यशायाह 52:13-53:12 में, वाक्यांश को वैयक्तिकृत किया गया है। शाही यात्रा की तैयारी के लिए सड़क को सीधा करने की अवधारणा का उपयोग किया जाता था। शब्द "सीधा" शब्द "धार्मिकता" की व्युत्पत्ति से संबंधित है। 1 यूहन्ना 2:29 पर विशेष विषय देखें।

इस पूरे अनुच्छेद ने यूहन्ना प्रेरित के यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को कम मूल्यांकित करने के धर्मशास्त्रीय उद्देश्य को पूरा किया हो सकता है पहली शताब्दी में कई विधर्मी समूहों के विकास के कारण जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को उनके आध्यात्मिक नेता के रूप में लेते थे।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना1: 24-28
24वे फरीसियों की ओर से भेजे गए थे। 25उन्होंने उससे यह प्रश्न पूछा, "यदि तू न मसीह है, और न एलिय्याह और न वह भविष्यद्वक्ता है, तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है?" 26यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, "मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। 27अर्थात मेरे बाद आनेवाला है, जिसकी जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं हूँ। "ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुईं, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था।

1:24 "वे फरीसियों की ओर से भेजे गए थे" यह पाठ अस्पष्ट है। इसका अर्थ हो सकता है कि (1) फरीसियों ने यूहन्ना के प्रश्नकर्ताओं को भेजा (तुलना यूहन्ना 1:19) या (2) प्रश्नकर्ता फरीसी थे, जो इस तथ्य के प्रकाश में असामान्य है कि अधिकांश याजक सदूकी थे (तुलना यूहन्ना 1: 9)। यह यूहन्ना 1:19 की तुलना में किसी अन्य समूह को संदर्भित करता है।

विशेष विषय: फरीसी (SPECIAL TOPIC: PHARISEES)

I. इस शब्द का निम्नलिखित में से एक संभावित मूल था:
   A. "अलग होने के लिए" यह समूह मक्काबी अवधि के दौरान विकसित हुआ (यह सबसे व्यापक रूप से स्वीकार किया गया दृष्टिकोण है), और मूसा की व्यवस्था (यानी *Hasidim*) की मौखिक परंपराओं को बनाए रखने के लिए खुद को जनसाधारण से अलग कर लिया।
   B. "विभाजित करने के लिए" यह उसी इब्रानी मूल का एक और अर्थ है (BDB 827, BDB 831 I, KB 976); दोनों का अर्थ है "विभाजक" कुछ विद्वानों का कहना है कि इसका अर्थ व्याख्यकार है (तुलना नहेम्याह 8:8; 2 तीमुथियुस 2:15)।
   C. "फ़ारसी" यह उसी अरामी मूल (BDB 828, KB 970) का एक और अर्थ है। फरीसियों के कुछ सिद्धांतों में फारसी पारसी द्वैतवाद के साथ बहुत कुछ समान है (विशेष विषय: व्यक्तिगत दुष्टता देखें)।

II. इस पर कई सिद्धांत हुए हैं कि फरीसी किनसे बने हैं।
   A. प्रारंभिक यहूदी धर्म का धार्मिक संप्रदाय (यानी, जोसेफस)
   B. हसोमैन और हेरोडियन कालों से एक राजनीतिक समूह
   C. मूसा कालीन व्याख्याकारों का एक विद्वत्तापूर्ण समूह, जो आम व्यक्ति को मूसा की वाचा और उससे संबंधित मौखिक परंपराओं को समझने में मदद करता है।
   D. शास्त्रियों जैसे एज्रा और महान आराधनालय का मंदिर के याजकीय नेतृत्व के मुकाबले में सामान्य आंदोलन इनसे संघर्ष के बाद इनका गठन हुआ
      1. गैर-यहूदी अधिपति (विशेषतः एंटिओकस IV)
      2. कुलीन वर्ग के विरुद्ध समाज
      3. वे जो वाचा का जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध हैं उनके विरुद्ध पलस्तीन के आम यहूदी

III. उनके बारे में हमारी जानकारी इनसे प्राप्त होती है
   A. जोसफस, जो एक फरीसी था
      1. Antiquities of the Jews
      2. Wars of the Jews
   B. नया नियम
   C. बाद के यहूदी स्रोत

IV. उनके प्रमुख सिद्धांत।
   A. आने वाले मसीहा पर विश्वास, जो कि I हनोक जैसे अंतरबाइबल संबंधी यहूदी सर्वनाश संबंधी साहित्य से प्रभावित था।
   B. विश्वास कि परमेश्वर दैनिक जीवन में सक्रिय है। यह सदूकियों से बिल्कुल विपरीत था (तुलना प्रेरितों के काम 23:8)। कई फ़ारसी सिद्धान्त सदूकियों के सिद्धांतों से धर्मशास्त्रीय विषमता दिखाते थे।

C. सांसारिक जीवन पर आधारित एक शारीरिक रूप से उन्मुख मरणोपरान्त जीवन शैली में एक विश्वास, जिसमें पुरस्कार और दण्ड शामिल थे (तुलना मत्ती 12:2)।
D. पुराने नियम के अधिकार में विश्वास के साथ-साथ मौखिक परंपरा (तल्मूड)। वे परमेश्वर के पुराने नियम आदेशों के प्रति आज्ञाकारी होने के प्रति सचेत थे क्योंकि उनकी व्याख्या और रब्बी विद्वानों (शम्माई, रूढ़िवादी और हिलेल, उदारवादी) के सम्प्रदायों द्वारा लागू की गई थी। रब्बी व्याख्या दो अलग-अलग दर्शन, एक रूढ़िवादी और एक उदारवादी, के रब्बियों के बीच एक संवाद पर आधारित थी। पवित्रशास्त्र के अर्थ पर इन मौखिक चर्चाओं को अंत में दो रूपों में लिखा गया: बेबीलोन तल्मूड और अपूर्ण फिलिप्पियोंस्तीनी तल्मूड। उनका मानना था कि मूसा ने सीनै पर्वत पर इन मौखिक व्याख्याओं को प्राप्त किया था। इन चर्चाओं की ऐतिहासिक शुरुआत एज्रा और "महान आराधनालय" (जिसे बाद में महासभा कहा गया) के पुरुषों के साथ शुरू हुई।
E. एक उच्च विकसित देवदूतवाद में विश्वास। इसमें अच्छे और बुरे दोनों आत्मिक प्राणी शामिल थे। यह फारसी द्वैतवाद और अंतरबाइबल यहूदी साहित्य से विकसित हुआ।
F. परमेश्वर की संप्रभुता में विश्वास, परन्तु मानव की स्वतंत्र इच्छा को भी प्रयोग में लाना (*yetzers*)।

V. फरीसियों के आंदोलन की शक्तियाँ।
A. वे परमेश्वर के प्रकटीकरण से प्रेम करते थे, उसका सम्मान करते थे, उसपर भरोसा रखते थे (यानी, पूर्ण रूप से, व्यवस्था भविष्यद्वक्ता, लेखन और मौखिक परंपरा सहित)।
B. वे परमेश्वर के प्रकाशन के धर्मी अनुयायी (यानी, दैनिक विश्वास और जीवन)होने के लिए प्रतिबद्ध थे। एक नए, समृद्ध दिन के भविष्यसूचक वादों को पूरा करने के लिए "धर्मी इस्राएल" चाहते थे।
C. उन्होंने यहूदी समाज के साथ एक समानता की वकालत की, जिसमें सभी स्तर के लोग शामिल थे। एक अर्थ में, उन्होंने याजकीय (यानी, सदूकीय) नेतृत्व और धर्मशास्त्र को अस्वीकार कर दिया (तुलना प्रेरितों के काम 23:8)।
D. उन्होंने मूसा की वाचा के लिए एक मान्य मानवीय घटक का समर्थन किया। उन्होंने पूरी तरह से परमेश्वर की संप्रभुता का दावा किया, लेकिन मानव की स्वतंत्र इच्छा (यानी, दो *yetzers*) को प्रयोग में लाने की आवश्यकता को भी थामे रखा।
E. नये नियम में कई सम्मानित फरीसियों (यानी, नीकुदेमुस, धनी युवक और अरिमतिया का यूसुफ) का उल्लेख है।

VI. वे पहली शताब्दी के यहूदी धर्म के एकमात्र संप्रदाय थे, जो 70 ई. में रोमियों द्वारा यरूशलेम और मंदिर के विनाश के बाद जीवित बचे थे। यह आधुनिक यहूदी धर्म बन गया।

1:25 "तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है" उन अन्यजाति लोगों के लिए प्राचीन यहूदी धर्म में धर्मान्तरित बपतिस्मा एक मानदंड था जो धर्मान्तरित होने के इच्छुक थे, लेकिन यहूदियों के लिए खुद बपतिस्मा लेना बहुत असामान्य था (कुमरान के संप्रदायवादी यहूदियों ने स्व-बपतिस्मा के अभ्यस्त थे और मंदिर में आराधना करने वाले प्रवेश करने से पहले स्वयं स्नान किया)। इस पाठ में यशायाह 52:15; यहेजकेल 36:25; जकर्याह 13:1 से मसीही निहितार्थ शामिल हो सकते हैं।

▣ **"यदि"** यह प्रथम श्रेणी का सशर्त वाक्य है जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है।

▣ **"न मसीह है, और न एलिय्याह, और न वह भविष्यद्वक्ता"** यह मृत सागर चीरकों के प्रकाश में दिलचस्प है कि इन तीनों व्यक्तियों ने इस्सैन दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व किया कि तीन अलग-अलग मसीही व्यक्तित्व होंगे। यह भी दिलचस्प है कि प्रारंभिक कलीसिया के कुछ अगुवों का मानना था कि एलिय्याह मसीह के दूसरे आगमन से पहले शारीरिक रूप में आएगा (तुलना क्रिसोस्टम, जेरॉम, ग्रेगरी और ऑगस्टीन)।

1:26 "मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूँ" संबंध- सूचक अव्यय "से" का मतलब "के साथ" भी हो सकता है। जो भी विकल्प चुना जाये वह "आत्मा" से संबंधित यूहन्ना 1:33 के समानांतर से मेल खाना चाहिए।

▣ **"परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है"** क्रिया "खड़ा" के काल से संबंधित कई पाठ संस्करण हैं। UBS^4 ने पूर्ण काल को "B" (लगभग निश्चित) का दर्जा दिया है।

ब्रूस एम. मेट्ज़गर का दावा है कि पूर्ण काल यूहन्ना की विशेषता है और इसका अर्थ एक इब्रानी कहावत है "एक ऐसा व्यक्ति है जो आपके बीच में अपना स्थान ले चुका है" (पृष्ठ 199)।

1:27 "जिसकी जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं" यह दास के अपने मालिक घर में प्रवेश करते ही उसकी जूती के बन्ध को खोलने के कार्य को संदर्भित करता है। (सबसे नीचा, सबसे तुच्छ काम जो एक दास कर सकता है)।रब्बियों के यहूदी धर्म ने जोर देकर कहा कि रब्बी के शिष्य को जूती के बन्ध खोलने के अलावा वह सब कुछ करने के लिए राजी होना चाहिए जो एक गुलाम करना चाहता है। जूतियों को उतारने और उन्हें भंडारण के निर्दिष्ट स्थान पर ले जाने का अनकहा आशय भी है। यह अत्याधिक विनम्रता का एक रूपक था।

1:28 "बैतनिय्याह" किंग जेम्स वर्जन में नाम "Bethabara" (MSS $\aleph^2$, C^2) है। ऐसा KJV के अनुवादकों की शहर के स्थिति के बारे में ओरिजन की गलतफहमी (और स्थान के नाम की अन्योक्ति बनाने) पर निर्भरता के कारण था। सही वाचन है बैतनिय्याह (Bodmen Papyrus, P^{66}) -वह नहीं जो यरूशलेम के दक्षिण-पूर्व में स्थित है(तुलना यूहन्ना 11:18), लेकिन यरीहो से पार, यरदन नदी के पार (पूर्वी तरफ) शहर।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1:29-34
29दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है। 30यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा था, एक पुरूष मेरे पीछे आता है जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।' 31मैं तो उसे पहचानता न था, परन्तु इसलिए मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए।" 32और यूहन्ना ने यह गवाही दी : "मैंने आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया। 33मैं तो उसे पहिचानता नहीं था, जिसने मुझे जल से बपतिस्मा को भेजा, उसी ने मुझसे कहा, 'जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है।' 34"और मैंने देखा, और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है।"

1:29 "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना" फसह का पर्व दूर नहीं था (तुलना यूहन्ना 2:13)। इसलिए, यह संभवतः फसह के मेमने की ओर इंगित करता है जो मिस्र से छुटकारे (यानी, उद्धार) का प्रतीक है (तुलना निर्गमन 12)। यूहन्ना ने यीशु की मृत्यु को भी उसी दिन रखा है, जिस दिन फसह के मेमने को मारा गया था (यानी, "तैयारी का दिन")। हालाँकि, इसकी अन्य व्याख्याएँ भी रही हैं:

1. यह यशायाह 53:7 के पीड़ित दास को संदर्भित कर सकती है।
2. यह उस जानवर को संदर्भित कर सकती है जो उत्पत्ति 22:8, 13 में झाड़ी में फँसा था।
3. यह मंदिर के "नित्य" कहलाये जाने वाले प्रतिदिन के चढ़ावे को संदर्भित कर सकती है (तुलना निर्गमन 29:38-46)।

जो भी सटीक संबंध है, एक बलिदान के अभिप्राय से मेमने को भेजा गया था (तुलना मरकुस 10:45)।

यीशु के बलिदान के लिए इस शक्तिशाली रूपक का उपयोग पौलुस द्वारा कभी नहीं किया गया और शायद कभी- कभार ही यूहन्ना द्वारा किया गया है (तुलना यूहन्ना 1: 29,36; और प्रेरितों के काम 8:32 और 1पतरस 1:19 पर भी ध्यान दें)। एक "छोटा मेम्ना" के लिए यूनानी शब्द (छोटा क्योंकि यह केवल एक वर्ष का था, बलिदान की सामान्य उम्र)। यूहन्ना द्वारा यूहन्ना 21:15 में और प्रकाशितवाक्य में अट्ठाईस बार एक अलग शब्द का इस्तेमाल किया गया है।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की कल्पना के लिए एक और संभावना है: अंतर-सुसमाचारीय भविष्यसूचक साहित्य जहाँ "मेम्ना" एक विजयी योद्धा है। बलि का पहलू अभी भी मौजूद है, लेकिन युगांत- विषयक न्यायाधीश के रूप में मेम्ना पूर्व-प्रतिष्ठित है (तुलना प्रकाशितवाक्य 5: 5-6,12-13)।

▣ **"जो जगत का पाप उठा ले जाता है!"** वाक्यांश "उठा ले जाता है" का अर्थ "उठाना और सहन करना" है। यह क्रिया लैव्यव्यवस्था 16 में "बलि का बकरा" की अवधारणा के समान है। दुनिया के पाप का उल्लेख किया जाना मेमने के कार्य की सार्वभौमिक प्रकृति की ओर संकेत करता है (तुलना यूहन्ना 1:9; 3:16; 4:42; 1 तीमुथियुस 2:4; 4:10; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3:9; 1 यूहन्ना 2: 2; 4:14)। ध्यान दें कि पाप एकवचन है, बहुवचन नहीं। यीशु दुनिया की "पाप" समस्या से निपटा है।

1:30 "वह मुझसे पहले था" यह जोर देने के लिए यूहन्ना 1:15 की आवृत्ति है। यह मसीहा के पूर्व-अस्तित्व और देवता पर एक और जोर है (तुलना यूहन्ना 1:1, 15; 8:58; 16:28; 17:5,24; 2 कुरिन्थियों 8:9; फिलिप्पियों 2:67 ; कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 1:3)।

1:31 "कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए" यह एक सामान्य जोहानिन वाक्यांश है (तुलना यूहन्ना 2:11; 3:21; 7: 4; 9:3; 17:6; 21:14; 1 यूहन्ना 1: 2; 2:19,28; 3:2,5,8; 4:9), लेकिन सिनॉप्टिक सुसमाचारों में यह दुर्लभ है, केवल मरकुस 4:22 में

दिखाई देता है। यह इब्रानी शब्द “ जानना” पर एक क्रीड़ा है जो किसी के बारे में तथ्यों से अधिक किसी के साथ व्यक्तिगत संगति की बात करती है। यूहन्ना के बपतिस्मा का उद्देश्य दोहरा था: (1) लोगों को तैयार करना (2) मसीहा को प्रगट करना।

यह क्रिया यूहन्ना के लेखन में "व्यक्त" (*phaneroō*) "प्रकट" (*apokaluptō*) की जगह लेती प्रतीत होती है। यीशु स्पष्ट रूप से परमेश्वर के व्यक्तित्व और संदेश को प्रकाश / दृष्टि में लाता है!

1:32-33 यह इस तथ्य पर तिगुना जोर है कि यूहन्ना ने आत्मा को आते और यीशु पर ठहरते देखा।

1:32 "आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते" यह यशायाह का (अध्याय 40-66) मसीहा को पहचानने का तरीका था (तुलना यशायाह 42:1; 59:21; 61:1)। इसका मतलब यह नहीं है कि इस समय से पहले यीशु के पास आत्मा नहीं थी। यह परमेश्वर की विशेष पसंद और सज्जित करने का प्रतीक था। यह मुख्य रूप से यीशु के लिए नहीं, लेकिन यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के लिए था!

यहूदियों के पास दो युगों की विश्वदृष्टि थी (1 यूहन्ना 2:17 पर विशेष विषय देखें), वर्तमान दुष्ट युग और आने वाला धार्मिकता का युग। नए युग को आत्मा का युग कहा गया। इस दूरदर्शिता ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कहा होगा (1) यह मसीहा है और (2) नए युग का उदय हो गया है।

▣ **"कबूतर"** यह प्रयोग किया गया
1. इस्राएल के लिए एक रब्बियों के प्रतीक के रूप में (यानी, होशे 7:11)
2. तरगुम में उत्पत्ति 1:2 में सृजन पर “विचारमग्न”एक मादा पक्षी के रूप में आत्मा के उल्लेख के रूप में।
3. फिलो में ज्ञान के प्रतीक के रूप में
4. आत्मा के उतरने के तरीके के रूपक के रूप में (आत्मा कोई पक्षी नहीं है)

▣ **“ठहर गया”** विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "बने रहना" 1 यूहन्ना 2:10 में देखें।

1:33 "मैं तो उसे पहचानता नहीं" इसका तात्पर्य यह है कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु को मसीहा के रूप में नहीं जानता था, यह नहीं कि वह उसे बिल्कुल भी नहीं जानता था। रिश्तेदारों के रूप में, निश्चित रूप से वे वर्षों के दौरान परिवार या धार्मिक समारोहों में मिले होंगें।

▣ **"जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा"** परमेश्वर ने यूहन्ना से वैसे ही बात की जैसे कि उसने पुराने नियम के अन्य भविष्यद्वक्ताओं से की। यूहन्ना को इन विशिष्ट कृत्यों द्वारा मसीहा को पहचानना था जो उसके बपतिस्मा में घटित होने वाले थे।

यूहन्ना के बपतिस्मे ने एक धार्मिक प्रभुत्व को व्यक्त किया। यरुशलेम से आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल (तुलना यूहन्ना 1:19-28) इस प्रभुत्व के स्रोत को जानना चाहता था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला उस प्रभुत्व को यीशु पर सौंपता है। यीशु का आत्मा से बपतिस्मा, यूहन्ना के जल से बपतिस्मे से बेहतर है। यीशु का जल में स्वयं का बपतिस्मा आत्मा के बपतिस्मा का प्रतीक बन जाएगा, जो नए युग में शामिल है!

▣ **"वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है"** 1 कुरिन्थियों 12:13 से ऐसा लगता है कि यह अवधारणा किसी व्यक्ति के परमेश्वर के परिवार में प्रारंभिक समावेश से संबंधित है। आत्मा पाप का दोषी ठहराता है, मसीह से निवेदन करता है, मसीह में बपतिस्मा लेता है, और नए विश्वासी में मसीह बनाता है (तुलना यूहन्ना 16: 8-13)। विशेष विषय: एक पवित्र 1 यूहन्ना 2:20 में देखें।

1:34 "और मैंने देखा, और गवाही दी है" ये दोनों पूर्ण कर्तृवाच्य निश्चयार्थक हैं जिसका अर्थ है पिछले कार्य को पूरा करना और फिर जारी रखना। यह बहुत कुछ 1 यूहन्ना 1:1-4 के समान है।

▣ **"कि यही परमेश्वर का पुत्र है"** यह सोचकर आश्चर्य होता है कि क्या यूनानी शब्द *paīs*, जो सामान्य रूप से अनुवाद है "दास," LXX में, इब्रानी (*'ebed*, BDB 712) को दर्शाता है, "पुत्र" की पृष्ठभूमि हो सकता है। यदि ऐसा है, तो यशायाह 53 (जैसा कि यूहन्ना 1:29 में परमेश्वर का "मेम्ना" है) दानिय्येल 7:13 के बजाय पुराने नियम की ओर संकेत है। यीशु पुत्र और दास दोनों हैं! वह विश्वासियों को "एक नौकर” नहीं, “एक संतान” में बदल देता है!

इसी शीर्षक का प्रयोग यूहन्ना 1:49 में नतनएल द्वारा किया गया है। इसका प्रयोग शैतान द्वारा मत्ती 4:3 में भी किया गया है। MSS P^5 और ℵi* में एक दिलचस्प यूनानी पांडुलिपि रूपांतर पाया गया है, जिसमें “परमेश्वर के पुत्र" के बजाय "परमेश्वर का चुना हुआ" है (UBS[4] "परमेश्वर के पुत्र" को "B" दर्जा देता है)। "परमेश्वर का पुत्र" वाक्यांश यूहन्ना में आम है। लेकिन, यदि कोई पाठकीय आलोचना के तर्कसंगत सिद्धांतों का अनुसरण करता है, तो सबसे अजीब और असामान्य शब्दांकन संभवतः मूल है, फिर भी पांडुलिपि गवाह सीमित होने के बावजूद कम से कम एक वैकल्पिक अनुवाद की संभावना है। गॉर्डन फ़ी ने

The Expositor's Bible Commentary में प्रारंभिक खंडों में अपने लेख "The Textual Criticism of the New Testament"pp.419-433 में इस पाठकीय रूपांतर की चर्चा की:

> "यूहन्ना 1:34 में, क्या यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले आ ने कहा, 'यह परमेश्वर का पुत्र है '(KJV, RSV) या' यह परमेश्वर का चुना हुआ' है (NEB, JB)? प्रारंभिक पाठ-प्रकारों के बीच भी MS के प्रमाण विभाजित है। 'पत्र' प्रमुख सिकंदरियाई गवाहों (P^{66}, P^{75}, B, C, L cop^{bo}) में साथ ही कई OL (aur, c, flg) और बाद के सीरियाई गवाहों में पाया जाता है, जबकि 'चुना हुआ' सिकंदरियाई P^5, א, cop^{sa} और साथ ही OL MSS a, b, e, ff^2 और पुराने सीरियाई द्वारा समर्थित किया गया है।
>
> "प्रश्न को आंतरिक आधारों पर अंतिम रूप से तय किया जाना चाहिए। प्रतिलिपि संभाव्यता के अनुसार, एक बात स्पष्ट है: रूपांतर जानबूझकर किया गया है, न कि आकस्मिक है (तुलना Bart D.Ehrman's *The Orthodox Corruption of Scripture,pp.* 69-70)। लेकिन क्या एक दूसरी शताब्दी के लेखक ने एक प्रकार से अपनाने वाले मसीह विज्ञान का समर्थन करने के लिए पाठ को बदल दिया, या एक रूढ़िवादी लेखक को इस संभावना का एहसास कराया कि अपनाने की प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए उपाधि 'चुना हुआ' का उपयोग किया जा सकता है, और इसलिए इसे रूढ़िवादी कारणों से बदल सकते हैं? संभाव्यता के संदर्भ में, बाद वाले की कहीं अधिक संभावना है, विशिष्ट रूप से 'पुत्र' को अपनाने वालों के विचारों के अनुरूप करने के लिए सुसमाचार में कहीं और बदला नहीं गया है।
>
> "लेकिन अंतिम निर्णय में व्याख्या शामिल होनी चाहिए। चूंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने जो कहा था, वह लगभग निश्चित रूप से मसीही था और ईसाई धर्मशास्त्र का एक कथन नहीं था, सवाल यह है कि क्या यह भजनसंहिता 2:7 जैसे अनुच्छेद या यशायाह 42:1 के मसीहवाद को दर्शाता है। यूहन्ना 1:29 की पीड़ा, या फसह के मेमने के रूपांकन के प्रकाश में, यह निश्चित रूप से तर्कपूर्ण है कि 'चुना हुआ' सुसमाचार के संदर्भ में सही बैठता है "(pp. 431-432)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1:35-42

35दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे, 36और उसने यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है!" 37तब वे दोनों चेले उसकी यह सुनकर यीशु के पीछे हो लिए।
38यीशु ने मुड़कर उनको पीछे आते देखा और उनसे कहा, "तुम किसकी खोज में हो?" उन्होंने उससे कहा, " हे रब्बी (जिसका अनुवाद गुरु होता है), तू कहाँ रहता है?" 39उसने उनसे कहा, "चलो, तो देख लोगे।" तब उन्होंने जाकर उसके रहने का स्थान देखा और उस दिन उसके साथ रहे। यह दसवें घंटे के लगभग था। 40उन दोनों में से, जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। 41उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा, "हम को मसीह, मिल गया है" (जिसका अनुवाद ख्रिस्त होता है)।
42वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है: तू कैफा (जिसका अनुवाद पतरस किया गया है) कहलाएगा।"

1:35 "उसके चेलों में से दो जन" मरकुस 1:16-20 इन दो चेलों के बुलाये जाने का एक अलग विवरण प्रतीत होता है। यह अनिश्चित है कि यीशु और उसके गलील के चेलों के बीच पिछला संपर्क कितना हुआ था। यीशु के दिन में रब्बी के पूर्ण-कालिक अनुयायी बनने की प्रक्रिया में अनुशासन के विशिष्ट चरण थे। इन प्रक्रियाओं की व्याख्या रब्बी संबंधित स्रोतों में की गई है, लेकिन सुसमाचार विवरणों में इनका पालन सटीक नहीं किया गया है। उल्लेख किए गए दो चेले अन्द्रियास (तुलना यूहन्ना 1:40), और यूहन्ना प्रेरित (जो स्वयं को सुसमाचार में नाम से संदर्भित नहीं करता है)हैं।

शब्द चेले का अर्थ हो सकता है (1) सीखने वाला और / या (2) अनुयायी। यह यीशु मसीह में वादा किये हुए यहूदी मसीहा के रूप में विश्वास करने वाले विश्वासियों के लिए एक प्रारंभिक नाम था। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि नया नियम चेलों के लिए है, न कि केवल फैसलों के लिए (तुलना मत्ती 13; 28:18-20)। मसीहत एक प्रारंभिक निर्णय (पश्चाताप और विश्वास)है जिसके बाद आज्ञाकारिता और दृढ़ता का निरंतर चलने वाला निर्णय आता है। मसीहत अग्नि बीमा पॉलिसी या स्वर्ग का टिकट नहीं है, बल्कि यीशु के साथ एक दैनिक दास/ मित्र संबंध है।

1:37 "दो चेले उसकी यह सुनकर" यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु को स्वयं से परे बताया (तुलना यूहन्ना 3:30)।

1:38 "रब्बी (जिसका अनुवाद गुरु होता है)" पहली सदी के यहूदी धर्म में यह एक सामान्य पदवी थी, उन लोगों की पहचान करने के लिए जो मूसा की व्यवस्था और मौखिक परंपरा (तल्मूड) के निहितार्थ और अनुप्रयोगों की व्याख्या कर सकते थे। यह अक्षरशः है "मेरे स्वामी।" इसका प्रयोग यूहन्ना प्रेरित द्वारा "गुरु" के समतुल्य किया गया है (तुलना यूहन्ना 11:8,28; 13:13-14; 20:16)। इस तथ्य से कि यूहन्ना अपने शब्दों को समझता है (तुलना यूहन्ना 1: 38,41,42) पता चलता है कि वह अन्यजातियों को लिख रहा था।

▣ **"तू कहाँ रहता है"** यह गुरु और चेले के बीच अद्वितीय बंधन की स्थापना की पारंपरिक प्रक्रियाओं का अनुसरण करता प्रतीत होता है। उनके प्रश्न का तात्पर्य यह है कि ये दोनों व्यक्ति केवल सड़क पर कुछ प्रश्न पूछ पाने की अपेक्षा यीशु के साथ और अधिक समय बिताना चाहते थे (तुलना यूहन्ना 1:39)।

यूहन्ना 1:38,39 में शब्द *menō* (रहना) तीन बार आया है। यह एक भौतिक स्थान या आध्यात्मिक स्थान का उल्लेख कर सकता है। तीन प्रकार के शब्द प्रयोग का अर्थ एक और शब्द- क्रीड़ा है, जो दोनों संकेतार्थों को एक साथ लाता है, जो कि यूहन्ना में बहुत! आम है (यानी, यूहन्ना 1:1,5; 3:3; 4:10-11; 12:32)। यह उद्देश्यपूर्ण अनेकार्थता यूहन्ना के लेखन की विशेषता है!

1:39 "यह दसवें घंटे के लगभग था" यह अनिश्चित है कि क्या यूहन्ना रोमी समय का उपयोग कर रहा है, जिसका आरंभ (1)प्रातः 6:00 बजे या (2) सूर्योदय,या यहूदी समय, जो साँय 6:00 बजे से शुरू होता है (संध्या)। जब कोई यूहन्ना 19:14 की तुलना मरकुस 15:25 से करता है तो उसे रोमी समय का आभास होता है। हालाँकि, जब कोई यूहन्ना 11:9 को देखता है तो उसे यहूदी समय लगता है। यूहन्ना ने संभवतः दोनों का इस्तेमाल किया है। यहाँ यह रोमी समय लगता है, लगभग 4:00 बजे।

1:40 "उन दोनों में से एक जो यूहन्ना की बात सुनकर" लेखक (प्रेरित यूहन्ना) सुसमाचार में खुद का नाम नहीं लेता (अर्थात, 21: 2)। यह निश्चित रूप से संभव है कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को सुनने वाले दो चेलों में से यह घोषणा, जब्दी के पुत्र,यूहन्ना ने की थी (यानी, मत्ती 4:21; मरकुस 1:19)।

1:41

NASB	**"उसने पहले अपने सगे भाई को मिलकर"**
NKJV, NRSV	**"उसने पहले अपने ही भाई को मिलकर"**
TEV	**"एकदम उसे मिला"**
NJB	**"पहली बात अन्द्रियास ने की"**

एक पांडुलिपि रूपांतर है जो अनुवादों को प्रभावित करता है। विकल्प हैं

1. पहली चीज जो अन्द्रियास ने की ।
2. पहला व्यक्ति जिसे उसने पाया
3. अन्द्रियास पहला व्यक्ति था जिसने जाकर बताया

▣ **"मसीहा (जिसके अनुवाद का अर्थ ख्रिस्त है)"** यूहन्ना 1:20 पर टिप्पणी देंखें।

1:42 "यीशु ने उस पर दृष्टि की" यह शब्द "गहन दृष्टि" को दर्शाता है।

▣ **"यूहन्ना का पुत्र शमौन"** पतरस के पिता के नाम के विषय में नये नियम में कुछ भ्रम है। मत्ती 16:17 में पतरस को "योना का बेटा" (*Iōnas*) कहा गया है, लेकिन यहाँ उसे "यूहन्ना का बेटा" (*Iōannēs*) कहा गया है। यूहन्ना नाम MSS P^{66}, P^{75}, Ã-A और L में पाया जाता है। MS B में नाम समान है लेकिन केवल एक "n" (*Iōanēs*) के साथ है। योना नाम MSS A, B^3, K और बाद के सभी यूनानी पांडुलिपियों में आता है। इस प्रश्न का कोई स्पष्ट उत्तर नहीं है। रूपांतरण वर्तनी अरामी से लिप्यंतरित नामों के समान हैं।

Michael Mahila, *The New Testament TransLine,* p.303, कहते हैं, "'योना' और 'यूहन्ना' एक ही इब्रानी नाम के वैकल्पिक यूनानी वर्तनी हो सकते हैं, जैसे 'शमौन' और 'शिमोन'। "

▣ **"'तू कैफा कहलायेगा' (जिसका अनुवाद पतरस किया गया है)"** शब्द कैफा पत्थर (*kepa*) के लिए एक अरामी शब्द

है, जो यूनानी में *kephas* के रूप में आता है। यह नाम स्थिरता, शक्ति और स्थायित्व की याद दिलाता है।

यह सुसमाचार के लेखक द्वारा यूहन्ना 1:38 के अन्यजाति पाठकों को यीशु के जीवन और शिक्षाओं को समझाने में मदद करने के लिए कई टिप्पणियों में से एक है।

यह दिलचस्प है कि बाइबल की व्याख्या के लिए दो बाद के तकनीकी शब्द (क्रिया) इस अध्याय में दिखाई देते हैं।

1. व्याख्या, प्रगट करने के लिए, यूहन्ना 1:18 में प्रयुक्त।
2. हेर्मेनेयुटिक्स, वर्णन करने के लिए, व्याख्या करने के लिए, अनुवाद करने के लिए, यूहन्ना 1:42 में प्रयुक्त

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 1:43-51
43दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा। वह फिलिप्पुस से मिला और कहा, "मेरे पीछे हो ले।"
44फिलिप्पुस, अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था। 45फिलिप्पुस नतनएल से मिला और उससे
कहा, "जिसका वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया; वह यूसुफ का
पुत्र,यीशु नासरी है।" 46नतनएल ने उस से कहा, "क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?"
फिलिप्पुस ने उस से कहा, "चलकर देख ले।" 47यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में
कहा, "देखो, यह सचमुच इस्राएली है: इसमें कपट नहीं।" 48नतनएल ने उस से कहा, " तू मुझे कैसे जानता है?"
यीशु ने उसको उत्तर दिया, "इस से पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने
तुझे देखा था।" 49नतनएल ने उसको उत्तर दिया, "हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है: तू इस्राएल का महाराजा है।"
50यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैंने जो तुझ से कहा कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसी लिये
विश्वास करता है? तू इससे भी बड़े-बड़े काम देखेगा।" 51फिर उस से कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम
स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे।"

1:43 "दूसरे दिन" यूहन्ना में पूरे सुसमाचार में कालानुक्रमिक संकेत शामिल हैं (तुलना यूहन्ना 1: 29,35,43; 2:1; आदि)। सामान्य संदर्भ (1) यूहन्ना 1:19 में शुरू होता है, जो पहले दिन हो सकता है; (2) यूहन्ना 1:29,35,43 में "अगले दिन" है; और (3) 2:1 में "तीसरे दिन" है।

▣ **"उसने जाना चाहा"** यूहन्ना ने यहूदिया में यीशु की सेवकाई के शुरुआती दौर को दर्ज किया है, जो कि सिनॉप्टिक सुसमाचारों में दर्ज नहीं है। यूहन्ना का सुसमाचार यहूदिया और विशेष रूप से यरूशलेम में यीशु की सेवकाई पर केंद्रित है। यहाँ, हालांकि, सम्भवतः काना में विवाह के लिए वह गलील जाना चाहता है।

▣ **"मेरे पीछे हो ले"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यह एक स्थायी चेला होने के लिए एक रब्बी की बुलाहट थी। यहूदियों के तय दिशानिर्देश थे जो इस संबंध को परिभाषित करते थे।

1:44 "फिलिप्पुस बैतसैदा का निवासी था" इस शहर के नाम का अर्थ है "मछली पकड़ने का घर।" यह अन्द्रियास और पतरस का घर भी था।

1:45 "नतनएल" यह एक इब्रानी नाम है जिसका अर्थ है "परमेश्वर ने दिया है।" उसे सिनॉप्टिक सुसमाचारों में इस नाम से नहीं जाना जाता है। यह आधुनिक विद्वानों द्वारा माना जाता है कि यह वह है जिसे "बरतुल्मै" कहा गया है, लेकिन यह केवल एक धारणा है।

विशेष विषय: प्रेरितों के नामों की सूची (SPECIAL TOPIC: CHART OF APOSTLES' NAMES)

	मत्ती 10:2-4	**मरकुस 3:16-19**	**लूका 6:14-16**	**प्रेरितों के काम 1:12-18**
पहला समूह	शमौन (पतरस)	शमौन (पतरस)	शमौन (पतरस)	पतरस
	अन्द्रियास (पतरस का भाई)	याकूब (जब्दी का पुत्र)	अन्द्रियास (पतरस का भाई)	यूहन्ना
	याकूब (जब्दी का पुत्र)	यूहन्ना (याकूब का भाई)	याकूब	याकूब
	यूहन्ना (याकूब का भाई)	अन्द्रियास	यूहन्ना	अन्द्रियास
दूसरा समूह	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस
	बरतुल्मै	बरतुल्मै	बरतुल्मै	थोमा

	थोमा	मत्ती	मत्ती	बरतुल्मै
	मत्ती (महसूल लेने वाला)	थोमा	थोमा	मत्ती
तीसरा समूह	याकूब (हलफई का पुत्र)	याकूब (हलफई का पुत्र)	याकूब (हलफई का पुत्र)	याकूब (हलफई का पुत्र)
	तद्दै	तद्दै	शमौन (जेलोतेस)	शमौन (जेलोतेस)
	शमौन (कनानी)	शमौन (कनानी)	यहूदा (याकूब का पुत्र)	यहूदा (याकूब का पुत्र)
	यहूदा (इस्करियोती)	यहूदा (इस्करियोती)	यहूदा (इस्करियोती)	

लूका 6:14 की टिप्पणियों से:

▣ **"शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा"** बारह प्रेरितोंके कामके काम की तीन अन्य सूचियाँ हैं। पतरस हमेशा पहले होता है; यहूदा इस्करियोति हमेशा आखिरी होता है। चार के तीन समूह हैं जो समान रहते हैं, भले ही समूहों के भीतर नामों का क्रम अक्सर उलट जाता है (तुलना मत्ती 10: 2-4; मरकुस 3:16-19; प्रेरितों के काम 1:13)।

▣ **"अन्द्रियास"** यूनानी शब्द का अर्थ है "पुरुषोचित" यूहन्ना 1:29-42 से हम सीखते हैं कि अन्द्रियास यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का चेला था और उसने अपने भाई, पतरस, को यीशु से मिलवाया।

▣ **"याकूब"** यह इब्रानी नाम "जैकब"(BDB 784) है, जिसका अर्थ है "अड़ंगा मारनेवाला" तुलना उत्पत्ति 25:26)। बारह की सूची में याकूब नाम के दो पुरुष हैं। एक यूहन्ना का भाई (तुलना मरकुस 3:17) और आंतरिक मण्डली का हिस्सा (यानी, पतरस, याकूब और यूहन्ना)। यह यूहन्ना का भाई है।

▣ **"यूहन्ना"** यह याकूब का भाई और चेलों की आंतरिक मण्डली का सदस्य था। उसने नये नियम की पाँच पुस्तकें लिखीं और किसी भी अन्य प्रेरित से अधिक समय तक जीवित रहा।

▣ **"फिलिप्पुस"** यूनानी नाम का अर्थ है "घोड़ों का शौकीन" उसकी बुलाहट यूहन्ना 1:43-51 में दर्ज है।

▣ **"बरतुल्मै"** नाम का अर्थ है "तुल्मै का बेटा।" वह यूहन्ना रचित सुसमाचार का नतनएल हो सकता है (तुलना यूहन्ना 1:45-49; 21:20)।

▣ **"मत्ती"** इब्रानी नाम (Mattithiah से, 1 इतिहास 9:31; 15:18,21; 16:5; 25:3,21; नहेम्याह 8:4) का अर्थ है "YHWH की भेंट" यह लेवी का उल्लेख है (तुलना मरकुस 2:13-17)।

▣ **"थोमा"** इब्रानी नाम का अर्थ है "जुड़वाँ" या दिदुमुस (तुलना यूहन्ना 11:16; 20:24; 21:2)।

▣ **"हलफई का पुत्र याकूब"** यह इब्रानी नाम "जैकब" है। बारह की सूची में याकूब नाम के दो पुरुष हैं। एक यूहन्ना का भाई है (तुलना लूका 6:17) और आंतरिक मण्डली (यानी, पतरस, याकूब और यूहन्ना) का हिस्सा है। इसे एक "याकूब कनिष्ठ" (तुलना मरकुस 3:17) के रूप में जाना जाता है।

▣ **"शमौन जो जेलोतेस कहलाता था"** मरकुस के यूनानी पाठ में "कनानी" (मत्ती 10:4 भी)। मरकुस, जिसका सुसमाचार रोमियों को लिखा गया था, हो सकता है कि वह राजनैतिक "विवादास्पद" शब्द, जेलोतेस का, जो एक यहूदी विरोधी रोमी गुरिल्ला आंदोलन का उल्लेख करता था, प्रयोग नहीं करना चाहता था । लूका उसे इस शब्द से संबोधित करता है (तुलना प्रेरितों के काम 1:13)। कनानी शब्द के कई व्युत्पन्न हैं।

1. गलील के क्षेत्र से जिसे काना कहा जाता है
2. पुराने नियम से व्यापारी के रूप में कनानी का प्रयोग
3. कनान के मूल निवासी के रूप में एक सामान्य पदनाम से।

यदि लूका का पदनाम सही है, तो जेलोतेस "उत्साही" के लिए अरामी शब्द से है (तुलना प्रेरितों के काम 1:17)। यीशु के चुने हुए बारह चेले कई अलग-अलग और प्रतिस्पर्धी समूहों से थे। शमौन एक राष्ट्रवादी समूह का सदस्य था जिसने रोमी सत्ता का बलपूर्वक तख्ता पलट देने की वकालत की। आम तौर पर यह शमौन और लेवी (यानी, मत्ती, महसूल लेनेवाला) एक दूसरे के साथ एक ही कमरे में नहीं होते थे।

▣ **"याकूब का पुत्र यहूदा"** उसे "लेबेबस" (तुलना मत्ती 10:3) या "यहूदा" (यूहन्ना 14:22) भी कहा जाता था। तद्दै और लेबेबस दोनों का अर्थ है "प्रिय बालक।"

▣ **"यहूदा इस्करियोती"** दो शमौन, दो याकूब और दो यहूदा हैं। इस्करियोती नाम के दो संभावित व्युत्पन्न हैं:

1. यहूदा में करिय्योत (एक नगर) का मनुष्य (तुलना यहोशू 15:23, जिसका मतलब है कि वह एकमात्र यहूदावासी था)
2. उसके पिता का नाम (तुलना यूहन्ना 6:71; 13:2,26)
3. "खूनी मनुष्य" या हत्यारा, जिसका मतलब होगा कि वह भी शमौन की तरह एक उत्साही था

▣ **"व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने"** यह इब्रानी सिद्धांत के तीन वर्गों में से एक को संदर्भित करता है: व्यवस्था,

भविष्यद्वक्ता और लेखन (जिसकी 90 ई. में जामिया में चर्चा की गई थी)। यह पूरे पुराने नियम का उल्लेख करने के लिए एक मुहावरा था।

▣ **"यूसुफ का पुत्र, नासरत का यीशु"** इसे यहूदी प्रयोग के प्रकाश में समझा जाना चाहिए। यीशु तब नासरत में रहता था और घर के पिता का नाम यूसुफ था। यह बैतलहम में यीशु के जन्म (तुलना मीका 5:2), और न ही उसके कुंवारी से जन्म (तुलना यशायाह 7:14) से इंकार करता है। निम्नलिखित विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: यीशु नासरी (SPECIAL TOPIC: JESUS THE NAZARENE)

कई अलग-अलग यूनानी शब्द हैं जिनका यीशु की बात करने के लिए नया नियम प्रयोग करता है।

A. नये नियम के शब्द
1. नासरत – गलील का नगर (तुलना लूका 1:26; 2:4,39,51; 4:16; प्रेरितों के काम 10:38)। यह नगर समकालीन स्रोतों में वर्णित नहीं है, लेकिन बाद के शिलालेखों में पाया गया है। यीशु के लिए नासरत से होना एक प्रशंसा नहीं थी (तुलना यूहन्ना 1:46)। यीशु के क्रूस पर चिन्ह जिसमें इस स्थान का नाम शामिल था, यहूदी अवमानना का चिन्ह था।
2. *Nazarēnos* - यह एक भौगोलिक स्थिति को भी संदर्भित करता प्रतीत होता है। (तुलना लूका 4:34; 24:19)
3. *Nazōraios* - एक शहर को संदर्भित कर सकता है, लेकिन इब्रानी मसीहाई शब्द "शाखा" (*netzer*, BDB 666, KB 718 II, तुलना यशायाह 11:1 पर एक शब्द क्रीड़ा भी हो सकता है; पर्यायवाची, BDB 655, यिर्मयाह 23 : 5; 33:15; जकर्याह 3: 8; 6:12; जिसका संकेत प्रकाशितवाक्य 22:16 में दिया गया है। लूका 18:37 और प्रेरितों के काम 2:22; 3:6; 4:10; 6:14; 22:8; 24:5; 26:9 में यीशु के लिए इसका प्रयोग करता है।
4. #3 से संबंधित *nāzir* (BDB 634, KB 684), जिसका अर्थ है "एक प्रतिज्ञा के द्वारा पवित्र किया हुआ।"

B. नये नियम के बाहर शब्द का ऐतिहासिक प्रयोग।
1. इसने एक यहूदी (पूर्व-ईसाई) विधर्मी समूह (अरामी *nāsōrayyā*) को लक्षित किया।
2. इसका प्रयोग यहूदी समुदायों में मसीह में विश्वासियों का वर्णन करने के लिए किया गया (तुलना प्रेरितों के काम 24:5,14; 28:22, *nosri*)।
3. यह सीरियाई (अरामी) कलीसियाओं में विश्वासियों को लक्षित करने वाला नियमित शब्द बन गया। विश्वासियों को लक्षित करने के लिए यूनानी कलीसियाओं में "मसीही" का प्रयोग किया गया।
4. यरुशलेम के पतन के कुछ समय बाद, फरीसियों ने जामनिया में पुनर्गठन किया और आराधनालय और कलीसिया के बीच एक औपचारिक अलगाव को उकसाया। मसीहियों के खिलाफ शाप सूत्रों के प्रकारों का एक उदाहरण बेराकॉथ 28b -29a से "the Eighteen Benedictions" में मिलता है, जो विश्वासियों को "नासरी" कहता है।

   "नासरी और विधर्मी एक पल में गायब हो जाएँ; उन्हें जीवन की पुस्तक से मिटा दिया जाए और विश्वासयोग्य के साथ न लिखा जाए।"
5. इसका प्रयोग जस्टिन मार्टियर, *Dial.* 126:1, द्वारा किया गया, जिसने यशायाह का *netzer* (यशायाह 11:1) यीशु के लिए प्रयोग किया था।

C. लेखक का मत

मैं इस शब्द की कई वर्तनियों से आश्चर्यचकित हूँ, हालांकि मुझे पता है कि यह पुराने नियम में अनसुना नहीं है क्योंकि इब्रानी में "यहोशू" की कई अलग-अलग वर्तनियाँ हैं। निम्नलिखित वस्तुएँ मुझे इसके सटीक अर्थ के बारे में अनिश्चित बनाए रखती हैं:
1. मसीहाई शब्द "शाखा" (netzer) या इसी तरह के शब्द नज़ीर (एक प्रतिज्ञा के द्वारा पवित्र किया हुआ) के साथ घनिष्ठ संबंध
2. अन्यजातियों के विषय में गलील के क्षेत्र का नकारात्मक लक्ष्यार्थ
3. गलील के नासरत शहर में बहुत कम या कोई साहित्यिक समकालीन अनुप्रमाणन नहीं है
4. यह एक युगांत-विषयक अर्थ में एक दुष्टात्मा के मुंह से आ रहा है (यानी, "क्या तू हमें नष्ट करने आया है?")।

इस शब्द समूह के अध्ययन की पूरी ग्रंथ सूची के लिए, Colin Brown (ed.) *New International Dictionary of New Testament Theology*, vol. 2, p.346 या Raymond E. Brown, *Birth of the Messiah*, pp. 209-213, 223-225 देखें।

1:46 "नतनएल ने उस से कहा, 'क्या कोई वस्तु भी अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?'" जाहिर तौर पर फिलिप्पुस और नतनएल पुराने नियम की भविष्यवाणियों को जानते थे; मसीहा यरूशलेम के पास, बैतलहम से आएगा (तुलना मीका 5:2), अन्यजातियों के गलील के नासरत में नहीं, परन्तु यशायाह 9:1-7 इसी बात की ओर संकेत करता है!

1:47
NASB, NKJV,
NRSV "जिसमें कोई कपट नहीं है"
TEV "उसमें कुछ भी गलत नहीं है"
NJB "जिसमें कोई धोखा नहीं है"

इसका मतलब है एक सीधा-सादा इंसान जिसमें कोई छिपी हुई मंशा नहीं है (तुलना भजनसंहिता 32:2), चुने हुए लोगों, इस्राएल का एक सच्चा प्रतिनिधित्व।

1:48 "यीशु ने उसको उत्तर दिया, 'इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने तुझे देखा था'" स्पष्ट रूप से यीशु ने अपने अलौकिक ज्ञान (यानी, यूहन्ना 2: 24-25; 4:17-19,29; 6: 61,64,71; 13:1,11,27,28; 16:19,30; 18:4) का प्रयोग नतनएल को यह संकेत देने के लिए किया कि वह मसीहा है। यह समझना मुश्किल है कि यीशु का देवत्व और मानवता कैसे कार्य करते थे। कुछ ग्रंथों में यह अनिश्चित है कि क्या यीशु "अलौकिक" शक्तियों अथवा मानवीय क्षमताओं का प्रयोग कर रहा था। यहाँ निष्कर्ष "अलौकिक" क्षमता है।

1:49 "नतनएल ने उसको उत्तर दिया, 'हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है...इस्राएल का महाराजा'" दोनों उपाधियों पर ध्यान दें! दोनों के राष्ट्रवादी मसीही निहितार्थ हैं (यानी, भजनसंहिता 2)। इन शुरुआती चेलों ने यीशु को पहली सदी की यहूदी श्रेणियों का समझा। वे पुनरुत्थान तक उसके व्यक्तित्व और एक पीड़ित दास के रूप में उसके कार्य को पूरी तरह से समझ नहीं पाए। (तुलना यशायाह 53)।

1:51
NASB "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ"
NKJV "बहुत विश्वासपूर्वक, मैं तुमसे कहता हूँ,"
NRSV "सचमुच, मैं तुमको बताता हूँ,"
TEV "मैं तुमको सच्चाई बता रहा हूँ"
NJB "पूरी सत्यता से"

अक्षरशः यह है"आमीन! आमीन!" यीशु द्वारा इस पद का दोहराया जाना केवल यूहन्ना के सुसमाचार में पाया जाता है, जहाँ पर यह पच्चीस बार आता है। "आमीन" विश्वास (*emeth*) के लिए इब्रानी शब्द का एक रूप है जिसका अर्थ था "दृढ़ होना" (यूहन्ना 1:14 पर विशेष विषय देखें)। पुराने नियम में इसका इस्तेमाल स्थिरता और विश्वासयोग्यता के लिए एक रूपक के रूप में किया गया था। इसका अनुवाद "विश्वास" या "विश्वसनीयता" किया गया। हालांकि, कुछ समय बाद यह एक पुष्टीकरण के रूप में प्रयुक्त होने लगा। एक वाक्य में इस प्रारंभिक स्थिति में, यह यीशु के महत्वपूर्ण, विश्वसनीय कथनों या YHWH से प्रकटीकरण (तुलना यूहन्ना 1:51; 2: 3,5,11; 5: 19,24,25; 6:26,32,47,53; 8:34,51,58; 10:1,7; 12:24; 13:16,20,21,38; 14:12; 16:20,23; 21:21) की ओर ध्यान आकर्षित करने का एक अनूठा तरीका था। ।
बहुवचन (सर्वनाम और क्रिया) में परिवर्तन की ओर ध्यान करें। यह उन सभी लोगों को संबोधित करके कहा गया होगा जो वहाँ खड़े थे।

विशेष विषय: आमीन (SPECIAL TOPIC: AMEN)

I. पुराना नियम
   A. "आमीन" शब्द निम्नलिखित के लिए एक इब्रानी शब्द से है
      1. "सत्य" (*emeth*, BDB 49)
      2. "सत्यवादिता" (*emun*, *emunah*, BDB 53)
      3. "विश्वास" या "विश्वासयोग्यता"
      4. "भरोसा" (*dmn*, BDB 52)

B. इसकी व्युत्पत्ति एक व्यक्ति के स्थिर शारीरिक स्थिति को दर्शाती है। विपरीत वह होगा जो अस्थिर है, फिसल रहा है (तुलना भजनसंहिता 35:6; 40:2; 73:18; यिर्मयाह 23:12) या लड़खड़ाता है (तुलना भजनसंहिता 73:2)। इस शाब्दिक प्रयोग से विश्वासयोग्य, भरोसेमंद, वफादार और विश्वसनीय के रूपक विस्तार का विकास हुआ।(तुलना हबक्कूक 2:4)

C. विशेष प्रयोग (विशेष विषय : पुराने नियम में आस्था, भरोसा, विश्वास, और विश्वासयोग्यता देखें)
   1. एक खम्भा, 2 राजाओं 18:16 (1 तीमुथियुस 3:15)
   2. आश्वासन, निर्गमन 17:12
   3. स्थिरता, निर्गमन 17:12
   4. आधार, यशायाह 33:6
   5. सच, 1 राजाओं 10:6; 17:24; 22:16; नीतिवचन 12:22
   6. स्थिर, 2 इतिहास 20:20; यशायाह 7:9
   7. विश्वसनीय (तोराह), भजनसंहिता 119:43,142, 151, 160

D. पुराने नियम में दो अन्य इब्रानी शब्दों का प्रयोग सक्रिय विश्वास के लिए किया जाता है।
   1. *bathach* (BDB 105), भरोसा
   2. *yra* (BDB 431), भय, सम्मान, आराधना (तुलना उत्पत्ति 22:12)

E. भरोसा या विश्वसनीयता की भावना से, एक पूजन पद्धति संबंधी प्रयोग विकसित हुआ जो दूसरे के एक सच्चे या भरोसेमंद कथन की पुष्टि करने के लिए प्रयोग किया गया था (तुलना गिनती 5:22; निर्गमन 27:15-26; 1 राजाओं 1:36; 1 इतिहास 16:36; नहेम्याह 5:13; 8:6; भजनसंहिता 41:13; 72:19; 89:52; 106; 48; यिर्मयाह 11:5; 28:6)।

F. इस शब्द की धर्मशास्त्रीय कुंजी मानवजाति की विश्वासयोग्यता नहीं, लेकिन YHWH की है (तुलना निर्गमन 34: 6; व्यवस्थाविवरण 32: 4; भजनसंहिता 108: 4; 115: 1; 117: 2: 138: 2)। पतित मानवता की एकमात्र आशा YHWH की दयालु, विश्वासयोग्य, वाचा की निष्ठा और उसके वादे हैं। जो लोग YHVH को जानते हैं वे उसके समान होंगे (तुलना हबक्कूक 2:4)। बाइबल एक इतिहास और मानव जाति में उसके स्वरूप को पुनःस्थापित करने वाले परमेश्वर का एक लिखित प्रमाण है (तुलना उत्पत्ति 1:26-27)। उद्धार मानवजाति की परमेश्वर के साथ अंतरंग संगति में रहने की क्षमता को पुनर्स्थापित करता है। इसीलिए हम बनाए गए थे।

II. नया नियम

A. किसी कथन की विश्वसनीयता के पूजन पद्धति संबंधी पुष्टिकरण के निष्कर्ष के रूप में "आमीन" शब्द का प्रयोग नये नियम में सामान्य है (तुलना 1 कुरिन्थियों 14:16; प्रकाशितवाक्य 1:7; 5:14; 7:12)।

B. नये नियम में प्रार्थना की समाप्ति के रूप में शब्द का प्रयोग आम है (तुलना रोमियों 1:25; 9:5; 11:36; 16:27; गलातियों 1:5; 6:18; इफिसियों 3:21, फिलिप्पियों 4:20; 2 थिस्सलुनीकियों 3:18; 1 तीमुथियुस 1:17; 6:16; 2 तीमुथियुस 4:18)।

C. यीशु एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसने इस शब्द का प्रयोग (यूहन्ना में 25 बार दोहराया गया यानी यूहन्ना 1:51; 3:3,5,11; आदि) महत्वपूर्ण कथन प्रस्तुत करने के लिए किया (तुलना लूका 4:24; 12:37; 18:17,29; 21:32; 23:43)।

D. इसका प्रयोग प्रकाशितवाक्य 3:14 में यीशु के लिए एक नाम के रूप में किया गया है (2 कुरिन्थियों 1:20 पर भी ध्यान दें, संभवतः यशायाह 65:16 से YHWH का एक नाम)।

E. विश्वास या विश्वासयोग्यता, विश्वसनीयता, या भरोसे की अवधारणा को यूनानी शब्द pistos या pistis में व्यक्त किया गया है, जिसका अंग्रेजी में अनुवाद "भरोसा," "विश्वास," "आस्था" (देखें विशेष विषय: आस्था, भरोसा, या विश्वास)।

▣ **"तुम, तुम"** ये दोनों बहुवचन हैं। यीशु उन सभी को संबोधित कर रहा है जो वहाँ खड़े थे और एक अर्थ में, सारी मानवता को!

▣ **"स्वर्ग को खुला हुआ"** इस वाक्यांश में एक पुराने नियम के ईश्वर-विभव की गूँज है।
1. यहेजकेल, यहेजकेल1:12
2. यीशु, मत्ती 3:16; मरकुस 1:10; लूका 3:21

3. स्तिफनुस, प्रेरितों 7: 56
4. पतरस, प्रेरितों के काम 10:11
5. दूसरा आगमन, प्रकाशितवाक्य 19:11

यह पूर्ण कर्तृवाच्य कृदंत है जिसका तात्पर्य है कि वह खुला रहा। "स्वर्ग" शब्द बहुवचन है क्योंकि इब्रानी में यह बहुवचन है। यह संदर्भित कर सकता है (1) उत्पत्ति 1 के समान पृथ्वी के ऊपर के वातावरण को अथवा (2) परमेश्वर की उपस्थिति को।

विशेष विषय: स्वर्ग और तीसरा स्वर्ग (SPECIAL TOPIC: THE HEAVENS AND THE THIRD HEAVEN)

पुराने नियम में "स्वर्ग" शब्द आम तौर पर बहुवचन (यानी, *shamayim*, BDB 1029, KB 1559) है। इब्रानी शब्द का अर्थ है "ऊंचाई।" परमेश्वर ऊंचे पर विराजमान है। यह अवधारणा परमेश्वर की पवित्रता और उत्कृष्टता को दर्शाती है।

उत्पत्त 1:1 में, बहुवचन, "आकाश और पृथ्वी," को देखा जाता है परमेश्वर को सृजन करते हुए (1) इस ग्रह के ऊपर का वातावरण या (2) सारी वास्तविकता (यानी, आध्यात्मिक और भौतिक) को संदर्भित करने का एक तरीका । इस बुनियादी समझ से अन्य ग्रंथों को स्वर्ग के स्तरों का हवाला देते हुए उद्धृत किया गया था: "सर्वोच्च स्वर्ग" (तुलना भजनसंहिता 68:33) या "स्वर्ग और सर्वोच्च स्वर्ग" (तुलना व्यवस्थाविवरण 10:14; 1 राजाओं 8:27; नहेम्याह 9:6; भजनसंहिता 148:4)। रब्बियों ने अनुमान लगाया है कि हो सकते हैं

1. दो स्वर्ग (यानी, R. Judah, Hagigah 12b)
2. तीन स्वर्ग (Test. Levi 2-3; Ascen. of Isa 6-7; Midrash Tehillim on Ps. 114:1)।
3. पाँच स्वर्ग (III बारूक)
4. सात स्वर्ग (R. Simonb. Lakish; Ascen. of Isa 9:7)
5. दस स्वर्ग (II हनोक 20:3b; 22:1)

ये सभी भौतिक निर्माण से परमेश्वर के अलगाव और / या उसकी उत्कृष्टता से को दर्शाने के लिए थे। रब्बियों के यहूदी धर्म में स्वर्गों की सबसे आम संख्या सात थी। A. Cohen, *Everyman's Talmud* (p. 30), कहता है कि यह खगोलीय क्षेत्रों से जुड़ा था, लेकिन मुझे लगता है कि यह सात को एक सही संख्या के रूप में बताता है (यानी, उत्पत्ति 2:2 में सृजन के दिन जिसमें सातवाँ परमेश्वर के विश्राम को दर्शाता है)।

पौलुस, 2 कुरिन्थियों 12:2 में, परमेश्वर की व्यक्तिगत, तेजस्वी उपस्थिति की पहचान करने के तरीके के रूप में "तीसरे" स्वर्ग (यूनानी *ouranos*) का उल्लेख करता है। पौलु की परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट हुई थी!

▣ **"परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर उतरते और ऊपर जाते"** यह बेतेल में याकूब के अनुभव की ओर एक संकेत है (तुलना उत्पत्ति 28: 10ff)। यीशु इस बात पर जोर दे रहा है कि जैसे परमेश्वर ने याकूब की सभी जरूरतों को पूरा करने का वादा किया था, परमेश्वर उसकी सभी जरूरतों को पूरा कर रहा था!

▣ **"मनुष्य का पुत्र"** यह यीशु का स्व-चयनित पदनाम है। यह एक मानव(तुलना भजनसंहिता 8:4; यहेजकेल 2:1) की ओर संकेत करने वाला एक इब्रानी वाक्यांश था। लेकिन दानिय्येल 7:13 में इसके प्रयोग के कारण, इसने दिव्य गुणों को ग्रहण कर लिया। इस शब्द का कोई राष्ट्रवादी या सैन्यवादी मकसद नहीं था क्योंकि इसका प्रयोग रब्बियों द्वारा नहीं किया गया था। यीशु ने इसे इसलिए चुना क्योंकि इसने उसके स्वभाव के दो पहलुओं (मानव और दैवीय, तुलना 1 यूहन्ना 4:1-3) को संयुक्त किया। यूहन्ना ने इसे यीशु द्वारा स्वयं के लिए तेरह बार उपयोग करने का उल्लेख किया है।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यरूशलेम से आई समिति ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से क्यों पूछा कि क्या वह पुराने नियम के तीन व्यक्तियों में से एक है?
2. मसीह संबंधी विज्ञान के उस कथन को पहचानें जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने 19-30 पदों में यीशु के बारे में बोला है।
3. चेलों के बुलाए जाने पर सिनॉप्टिक्स और यूहन्ना में इतनी भिन्नता क्यों हैं?
4. ये लोग यीशु के बारे में क्या समझते थे? उन नामों पर ध्यान दें जिनके द्वारा वे उसे बुलाते हैं (पद 38)।
5. यीशु ने स्वयं को क्या बताया? क्यों?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 2

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
काना में विवाह	पानी दाखरस में बदल गया	काना में विवाह	काना में विवाह	काना में विवाह
2:1-11	2:1-12	2:1-11	2:1-3	2:1-10
			2:4	
			2:5	
			2:6-10	
			2:11	2:11-12
2:12		2:12	2:12	
मंदिर का शुद्धिकरण	यीशु मंदिर को शुद्ध करता है	मंदिर का शुद्धिकरण		मंदिर का शुद्धिकरण
2:13-22	2:13-22	2:13-22	2:13-17	2:13-22
			2:18	
			2:19	
			2:20	
			2:21-22	
यीशु सब मनुष्यों को जानता है	हृदय को पहचाननेवाला		मनुष्य स्वभाव के बारे में यीशु का ज्ञान	यरूशलेम में यीशु
2:23-25	2:23-25	2:23-25	2:23-25	2:23-25

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

2:1-11 पर प्रासंगिक अंतर्दृष्टि

A. यीशु अपने दिन के अन्य धार्मिक अगुवों से बहुत अलग था। वह आम लोगों के साथ खाता और पीता था। जबकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला रेगिस्तान से एक निजी व्यक्ति था, यीशु आम लोगों के साथ एक सार्वजनिक व्यक्ति था।

B. उसका पहला चिन्ह इतना घरेलू, इतना पारिवारिक था! सामान्य व्यक्ति के लिए देखभाल और चिंता यीशु के चरित्र का वर्णन करती है जबकि पाखंडी धर्मियों के प्रति उसका क्रोध उसके चरित्र के दूसरे पक्ष को दर्शाता है। लोगों की प्राथमिकता,न कि परंपराएँ या अनिवार्य रीति-रिवाज, यीशु की स्वतंत्रता के बावजूद, सांस्कृतिक अपेक्षाओं के लिए श्रद्धा को प्रकट करती है

C. यह उन सात चिन्हों में से पहला है जो यूहन्ना यीशु के चरित्र और सामर्थ्य को प्रकट करने के लिए उपयोग करता है(अध्याय 2-11)
   1. पानी दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1-11)
   2. बालक की चंगाई (यूहन्ना 4:46-54)
   3. लंगड़े मनुष्य की चंगाई (यूहन्ना 5:1-18)
   4. भीड़ को भोजन खिलाना (यूहन्ना 6:1-15)
   5. पानी पर चलना (यूहन्ना 6:16-21)
   6. अंधे मनुष्य की चंगाई (यूहन्ना 9:1-41)
   7. लाज़र का जिलाया जाना (यूहन्ना 11:1-57)

D. यूहन्ना के सुसमाचार की संरचना कालानुक्रमिक नहीं किंतु धर्मशास्त्रीय ढंग से की गई है । अध्याय 2 एक अच्छा उदाहरण है। आरम्भ में यूहन्ना यीशु के यहूदियों (उनके नेताओं और आम लोगों दोनों) तक पहुँचने की कोशिश की चर्चा करता है, लेकिन वे विश्वास/ग्रहण नहीं करते। आरोपित अविश्वास और धार्मिक पाखंड के कारण, यीशु ने यहूदी धर्म को नकार दिया।
   1. मुँहामुँह भरे हुए छः मटके यहूदी धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं जो यीशु बदलता है।
   2. मंदिर का शुद्धिकरण, (जो कालानुक्रमानुसार यीशु के जीवन के अंतिम सप्ताह की शुरुआत में हुआ था) उसकी यहूदी नेतृत्व की अस्वीकृति के प्रारंभिक धर्मशास्त्रीय चिन्हक के रूप में पहले दर्ज किया गया है।

   यूहन्ना के शाब्दिक नमूने का एक और अच्छा उदाहरण है अध्याय 3 का नीकुदेमुस (श्री धर्म) और अध्याय 4 की कुएँ पर आई स्त्री (सुश्री अधर्म)। यहाँ लोगों के लिए "पुस्तक अवलंब" हैं।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 2:1-11
**[1]फिर तीसरे दिन गलील के काना में किसी का विवाह था, और यीशु की माता भी वहाँ थी। [2]यीशु और उसके
चेले भी उस विवाह में निमंत्रित थे। [3]जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उससे कहा, "उन के पास
दाखरस नहीं रहा।" [4]यीशु ने उससे कहा, "हे महिला, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।"
[5]उसकी माता ने सेवकों से कहा, "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।" [6]वहाँ यहूदियों के शुद्ध करने की रीति
के अनुसार पत्थर के छः मटके धरे थे, जिनमें दो-दो, तीन-तीन मन समता था। [7]यीशु ने उनसे कहा, "मटकों में
पानी भर दो।"उन्होंने उन्हें मुँहामुँह भर दिया। [8]तब उसने उनसे कहा, "अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले
जाओ।"और वे ले गए। [9]जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था कि
वह कहाँ से आया है (परंतु जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे), तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर
उससे कहा, [10]"हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता है, और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है,
परन्तु तूने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।" [11]यीश ने गलील के काना में अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर
अपनी महिमा प्रगट की, और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।**

2:1"एक विवाह था" विवाह गाँव के प्रमुख सामाजिक कार्यक्रम थे। वे अक्सर पूरे समुदाय को शामिल करते थे और कई दिनों तक चल सकते थे।

▣ **"काना"** इस शब्द का उल्लेख केवल यूहन्ना के सुसमाचार (यूहन्ना 2:1,11; 4:46; 21:2) में किया गया है। हम इसके बारे

में कुछ बातें जानते हैं।
1. नतनएल का गृह नगर
2. यीशु के पहले चमत्कार का स्थल
3. कफरनहूम के करीब

चार तथाकथित स्थल हैं (AB, vol. 1, p. 827)
1. ऐन काना, नासरत के सिर्फ एक मील उत्तर में
2. कफ्र कन्ना, नासरत से तीन मील उत्तर पूर्व में
3. खिरबत काना, नासरत के उत्तर में साढ़े आठ मील दूर, एक पहाड़ी पर
4. आसोचिस के मैदान पर काना, जोसेफस द्वारा उल्लिखित(*Life*, 86, 206)

एक मैदान पर स्थित होना काना नाम के लिए उपयुक्त प्रतीत होता है, जो कि "ईख" (यानी, बेंत) के लिए इब्रानी है

▣ **"यीशु की माता वहाँ थी"** जाहिर तौर पर मरियम विवाह की व्यवस्था में मदद कर रही थी। इसे देखा जा सकता है (1) उसके नौकरों को आदेश देने में (तुलना यूहन्ना 2:5) और (2) जलपान पर उसकी चिंता में (तुलना यूहन्ना 2:3)। ये शायद रिश्तेदार या पारिवारिक मित्र थे।

2:3 "उनके पास दाखरस नहीं रहा" मेहमानों को दाखरस उपलब्ध कराना एक अनिवार्य इब्रानी प्रथा थी। यह दाखरस स्पष्ट रूप से किण्वित है, जैसा देखा गया (1) समारोह के प्रबंधक की टिप्पणी में , यूहन्ना 2:9-10; (2) यीशु के दिन में यहूदी रीति-रिवाज; या (3) स्वास्थ्यकर प्रक्रियाओं या रासायनिक योजकों की कमी।

विशेष विषय: मदिरा और मदिरा के दुरुपयोग के प्रति बाइबल की अभिवृत्ति (SPECIAL TOPIC: BIBLICAL ATTITUDES TOWARD ALCOHOL AND ALCOHOLISM)

I. बाइबल के शब्द
   A. पुराना नियम
      1. *Yayin* - यह "दाखमधु" के लिए सामान्य शब्द है, जिसका उपयोग 141 बार (BDB 406, KB 409) किया गया है। व्युत्पत्ति अनिश्चित है क्योंकि यह एक इब्रानी मूल से नहीं है। इसका मतलब हमेशा किण्वित फलों का रस होता है, आमतौर पर अंगूर का। कुछ विशिष्ट अनुच्छेद हैं उत्पत्ति 9:21; निर्गमन 29:40; गिनती 15:5,10।
      2. *Tirosh* - यह "नया दाखमधु" (BDB 440, KB 1727) है। हालाँकि, निकट पूर्व की जलवायु संबंधी परिस्थितियों के कारण
         रस निकालने के छह घंटे के अन्दर ही किण्वन शुरू हो जाता है। यह शब्द किण्वन की प्रक्रिया में दाखमधु को संदर्भित करता है। कुछ विशिष्ट अनुच्छेदों के लिए देखें: व्यवस्थाविवरण 12:17; 18:4; यशायाह 62:8-9; होशे 4:11।
      3. *Asis* - यह स्पष्ट रूप से मादक पेय है ("मीठा दाखमधु," BDB 779,KB 860, उदा. योएल 1:5;यशायाह 49:26)
      4. *Sekar* - यह शब्द "मदिरा" (BDB 1016, KB1500) है। । इब्रानी मूल का उपयोग "मदहोश" या "मतवाला" शब्द में किया जाता है। इसे और अधिक नशीला बनाने के लिए इसमें और कुछ मिलाया जाता है। यह yayin (तुलना नीतिवचन 20:1; 31:6; यशायाह 28:7) के समानांतर है।
   B. नया नियम
      1. *Onios* – यूनानी शब्द *yayin* के समतुल्य।
      2. *Neos onios* (नया दाखमधु) – यूनानी शब्द *tirosh* का समतुल्य (तुलना मरकुस 2:22)।
      3. *Gleuchos vinos* (मीठा दाखमधु, asis) - किण्वन के शुरुआती चरणों का दाखमधु (तुलना प्रेरितों के काम 2:13)।

II. बाइबल में उपयोग
   A. पुराना नियम
      1. दाखमधु परमेश्वर का उपहार है (तुलना उत्पत्ति 27:28; भजनसंहिता 104:14-15; सभोपदेशक 9:7; होशे 2:8-9; योएल 2:19,24; आमोस 9:13; जकर्याह 10:7)।

2. दाखमधु एक बलिदान अर्पण का हिस्सा है (तुलना निर्गमन 29:40; लैव्यव्यवस्था 23:13; गिनती 15:7,10; 28:14; न्यायियों 9:13)।
3. दाखमधु का उपयोग दवा के रूप में किया जाता है (तुलना 2 शमूएल 16:2; नीतिवचन 31:6-7)।
4. दाखमधु एक वास्तविक समस्या हो सकती है (नूह - उत्पत्ति 9:21; लूत - उत्पत्ति 19:33,35; शिमशोन - न्यायियों; 16; नाबाल: 1 शमूएल 25:36; ऊरिय्याह - 2 शमूएल 11:13; अम्नोन - 2 शमूएल 13:28; एला- 1 राजा 16:9; बेन्हदद -1 राजा 20:12; शासक -आमोस 6:6; स्त्रियाँ: आमोस 4)।
5. दाखमधु के साथ दुर्व्यवहार के खिलाफ चेतावनी है (तुलना नीतिवचन 20:1; 23:20-21, 29-21; 31:4-5; यशायाह 5:11,22; 19:14; 28:7-8; होशे 4:11)।
6. कुछ समूहों के लिए दाखमधु निषिद्ध था (काम पर याजक, लैव्यव्यवस्था 10:9; यहेजकेल 44:21; नाज़ीर; गिनती 6; शासक, नीतिवचन 31:4-5; यशायाह 56:11-12; होशे 7:5)।
7. दाखमधु का उपयोग एक युगांत विषयक विन्यास में किया गया है (तुलना आमोस 9:13; योएल 3:18; जकर्याह 9:17)।

B. अंतर-बाइबल
1. संयमन में दाखमधु बहुत मददगार है (सभोपदेशक 31:27-30)।
2. रब्बियों का कहना है कि "दाखमधु सभी दवाओं में सबसे बड़ी है, जहाँ दाखमधु की कमी है, फिर औषधियों जरूरत होती है "(BB 58b)।

C. नया नियम
1. यीशु ने बड़ी मात्रा में पानी को दाखरस में बदल दिया (यूहन्ना 2:1-11)।
2. यीशु ने दाखरस पिया(मत्ती 11:16, 18-19; लूका 7:33-34; 22:17ff)
3. पतरस ने पिन्तेकुस्त में "नई मदिरा" पर नशे का आरोप लगाया (प्रेरितों के काम 2:13)।
4. दाखरस दवा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है मरकुस15:23; लूका 10:34; 1तीमुथियुस 5:23)।
5. अगुवों को नशे की लत नहीं होनी चाहिए। इसका मतलब संपूर्ण परहेजगार नहीं है (1 तीमुथियुस 3: 3,8; तीतुस 1:7; 2:3; 1 पतरस 4:3)।
6. दाखरस का उपयोग युगांत विषयक विन्यास में किया गया है (मत्ती 22:1ff; प्रकाशितवाक्य 19:9)।
7. मतवालेपन की निंदा की जाती है (मत्ती 24:49; लूका 11:45; 21:34 1 कुरिन्थियों 5:11-13; 6:10; गलातियों 5:21; 1 पतरस 4:3; रोमियों 13:1-14)

III. धर्मशास्त्रीय अंतर्दृष्टि

A. द्वंद्वात्मक तनाव
1. दाखरस परमेश्वर की भेंट है.
2. मतवालापन एक बड़ी समस्या है
3. कुछ संस्कृतियों में विश्वासियों को सुसमाचार की भलाई के लिए,अपनी स्वतंत्रता को सीमित रखना चाहिए (मत्ती 15:1-20; मरकुस 7:1-23; रोमियों 14; 1 कुरिन्थियों 8-10)।

B. परमेश्वर प्रदत्त सीमाओं से परे जाने की प्रवृत्ति
1. परमेश्वर सभी अच्छी चीजों का स्रोत है।
   a. भोजन- मरकुस 7:19; लूका 11:44; 1 कुरिन्थियों 10:25-26
   b. सभी स्वच्छ वस्तुएँ- रोमियों14:14,20; 1 तीमुथियुस 4:4
   c. सभी न्यायोचित वस्तुएँ -1 कुरिन्थियों 6:12; 10:23
   d. सभी शुद्ध वस्तुएँ -तीतुस 1:15
2. पतित मनुष्य ने परमेश्वर की सभी भेंटों को सीमाओं से परे ले जाकर दुरुपयोग किया है।

C. कुरीति हममें है, वस्तुओं में नहीं। भौतिक सृष्टि में कोई भी दुष्टता नहीं है (ऊपर B.1.देखें)

IV. पहली शताब्दी की यहूदी संस्कृति और किण्वन

A. किण्वन बहुत जल्द शुरू होता है, अक्सर पहले दिन रस निकालने के 6 घंटे बाद।

B. जब सतह पर एक हल्का झाग दिखाई देता है,(किण्वन का संकेत) तो यहूदी परंपरा कहती है कि यह दाखमधु दशमांश के लिए उत्तरदायी है (*Ma aseroth*1:7)।इसे "नया दाखमधु" या "मीठा दाखमधु" कहा जाता था।

C. प्राथमिक किण्वन एक सप्ताह में खत्म हो जाता है।

D. द्वितीयक किण्वन में लगभग 40 दिन लगते हैं। इस स्तर पर इसे “परिपक्व दाखमधु” माना जाता है और वेदी पर चढ़ाया जा सकता है (*Edhuyyoth* 6:1)।
E. दाखमधु जो अपने "लीस" (परिपक्व तलछट) के स्तर पर हो, अच्छा माना जाता है, लेकिन दाखमधु को उपयोग करने से पहले अच्छी तरह से छान लिया जाना चाहिए।
F. किण्वन के एक साल बाद दाखमधु को सही तौर पर परिपक्व माना जाता है। तीन साल सबसे लंबी अवधि है जब तक शराब को संग्रहीत किया जा सकता है। इसे "पुराना दाखमधु" कहा जाता है। और इसे पानी मिला कर पतला किया जाता है।
G. केवल पिछले 100 वर्षों में, जीवाणुरहित परिस्थितियों और रासायनिक योजकों के साथ, किण्वन प्रक्रिया को स्थगित करना संभव हो गया है। प्राचीन संसार किण्वन की प्राकृतिक प्रक्रिया को रोक नहीं सका।

V. समापन कथन
A. सुनिश्चित करें कि आपका अनुभव, धर्मशास्त्र, और बाइबल की व्याख्या यीशु और पहली शताब्दी के यहूदी/ईसाई संस्कृति का अवमूल्यन न करे! वे स्पष्ट रूप से पूर्ण- परहेजगार नहीं थे।
B. मैं शराब के सामाजिक प्रयोग की वकालत नहीं कर रहा हूँ। हालाँकि, कई लोगों ने इस विषय पर बाइबल के दृष्टिकोण को बढ़ा-चढ़ा कर कहा है और अब एक सांस्कृतिक/साम्प्रदायिक पूर्वाग्रह के आधार पर बेहतर धार्मिकता का दावा करते हैं।
C. मेरे लिए, रोमियों 14 और 1 कुरिन्थियों 8-10 ने हमारे साथी विश्वासियों के लिए और हमारी संस्कृति में सुसमाचार के प्रसार के लिए प्रेम और सम्मान के आधार पर अंतर्दृष्टि और दिशानिर्देश प्रदान किए हैं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता या आलोचनात्मक समीक्षा नहीं। अगर विश्वास और अभ्यास के लिए बाइबल एकमात्र स्रोत है, तो शायद हम सभी को इस मुद्दे पर पुनर्विचार करना चाहिए।
D. यदि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पूर्ण संयम का प्रयास करते हैं, तो हम यीशु के बारे में क्या अर्थ निकालते हैं, साथ ही साथ उन आधुनिक संस्कृतियों के बारे में भी जो नियमित रूप से दाखरस का उपयोग करते हैं (उदाहरण, यूरोप, इस्राएल, अर्जेंटीना)

2:4 "हे महिला" हिंदी में यह कठोर लगता है, लेकिन यह एक इब्रानी मुहावरा था, एक सम्मानीय नाम था (तुलना यूहन्ना 4:21; 8:10; 19:26; 20:15) ।

NASB **“हमें उससे क्या करना है?”**
NKJV **"तुम्हारी चिंता का मुझसे क्या संबंध है?"**
NRSV **“उसका तुमसे और मुझसे क्या संबंध है?”**
TEV **“तुम मुझे मत बताओ कि मुझे क्या करना है”**
NJB **"तुम मुझसे क्या चाहती हो?"**

यह एक इब्रानी मुहावरा है, अक्षरशः "मुझे और तुम्हें क्या है" (तुलना न्यायियों 11:12; 2 शमूएल 16:10; 19:22; 1राजा 17:18; 2 राजा 3:13; 2 इतिहास 35:21; मत्ती 8:29; मरकुस 1:24; 5:7; लूका 4:34; 8:28; यूहन्ना 2:4)। यह संभवतः अपने परिवार के साथ यीशु के नए रिश्ते की शुरुआत थी (तुलना मत्ती 12: 46ff; लूका 11:27-28)।

▣ **"अभी मेरा समय नहीं आया"** यह यीशु की उनके नियत उद्देश्य के बारे में आत्म-समझ दिखाता है (तुलना मरकुस 10:45) । यूहन्ना इस शब्द “समय” का उपयोग कई तरीकों से करता है।
1. समय के लिए (तुलना यूहन्ना 1:39; 4: 6,52,53; 11:9; 16:21; 19:14; 19:27)
2. अंत समय के लिए (तुलना यूहन्ना 4:21, 23; 5:25,28)
3. अपने अंतिम दिनों के लिए (गिरफ्तारी, मुकदमा, मृत्यु, तुलना यूहन्ना 2:4; 7:30; 8:20; 12: 23,27; 13:1; 16:32; 17:1)

2:5 "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना" मरियम ने इस स्थिति में उसकी ओर से कार्यवाही करने से पूरी तरह से मना करने वाली यीशु की टिप्पणियों को नहीं समझा।

2:6
NASB **“शुद्धिकरण के यहूदी रीति-रिवाजों के लिए”**

NKJV "शुद्धिकरण के तरीके के अनुसार"
NRSV "शुद्धिकरण के यहूदी संस्कारों के लिए"
TEV "यहूदियों के संस्कारिक स्नान के बारे में नियम हैं"
NJB "उन प्रक्षालनों के लिए जो यहूदियों में प्रथागत हैं"

पानी के इन मटकों का इस्तेमाल पैरों, हाथों, बर्तनों आदि की अनुष्ठानिक धुलाई के लिए किया जाता था। यूहन्ना अन्यजाति लोगों को विन्यास को समझने में मदद करने के लिए यह टिप्पणी करता है।

2:6-7 "छः पत्थर के पानी के मटके" जैसा कि यूहन्ना में अक्सर होता है, यह दोहरे उद्देश्यों वाला एक संकेत प्रतीत होता है।

1. विवाहित युगल की मदद करने के लिए
2. यह अंततः यहूदी धर्म की पूर्ति के रूप में यीशु की ओर इशारा करने वाला चिन्ह था। इस अंतिम कथन के पीछे कारण हो सकते हैं
   a. संख्या "6" मानव प्रयास का प्रतीक है
   b. यीशु का उन्हें मुँहामुँह भरने की विनती का प्रतीकात्मक अर्थ है, न कि केवल अधिक दाखरस प्रदान करना।
   c. दाखरस की भारी मात्रा, जो एक स्थानीय विवाह के भोज के लिए बहुत ज्यादा थी
   d. दाखरस नए युग की बहुतायत का प्रतीक था (तुलना यिर्मयाह 31:12; होशे 2:22; 14:7; योएल 3:18; आमोस 9:12-14)।

▣ **"जिनमें दो-दो, तीन-तीन मन समाता था"** प्रयोग किया जाने वाला माप इब्रानी शब्द *bath* था। यीशु के दिन में *baths* के तीन अलग-अलग आकार थे इसलिए यह मात्रा अनिश्चित है, लेकिन इस चमत्कार में बड़ी मात्रा में दाखरस शामिल था!

विशेष विषय: प्राचीन निकटपूर्वी तौल और माप (मापविद्या) (SPECIAL TOPIC: ANCIENT NEAR EASTERN WEIGHTS AND MEASURES (METROLOGY))

प्राचीन कृषि अर्थव्यवस्था में वाणिज्य में प्रयुक्त तौल और माप महत्वपूर्ण थे। बाइबल यहूदियों से एक दूसरे के साथ व्यवहार में ईमानदार रहने का आग्रह करती है (लैव्यव्यवस्था 19:35-36; निर्गमन 25:13-16; नीतिवचन 11:1; 16:11; 20:10)। वास्तविक समस्याएँ न केवल ईमानदारी थीं, बल्कि पलस्तीन में प्रयोग किए जाने वाले गैर-मानकीकृत नियम और प्रणालियां थीं। ऐसा लगता है कि तौल के दो वर्ग थे; प्रत्येक राशि का एक "हल्का" और एक "भारी" (The Interpreter's Dictionary of the Bible, vol. 4 p. 831 देखें)। इसके अलावा मिस्र की दशमलव प्रणाली (10 का आधार) को मेसोपोटामिया की षष्ठिक प्रणाली (6 का आधार) के साथ जोड़ा गया था।

प्रयोग किए जाने वाले कई "आकार" और "मात्रा" मानव शरीर के अंगों, जानवरों के भार और किसान के पात्रों पर आधारित थे, जिनमें से कोई भी मानकीकृत नहीं था। इसलिए, सारणियाँ केवल अनुमान हैं और अनिश्चित हैं। तौल और माप दिखाने का सबसे आसान तरीका एक संबंधपरक सारणी है।

I. सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाले परिमाण शब्द
   A. सूखे माप
      1. होमेर (BDB 330, संभवतः एक "गधा-भार," BDB 331), उदाहरण, लैव्यव्यवस्था 27:16; होशे 3:2
      2. लेकेह (या lethech, BDB 547, संभवतः होशे 3:2 में इंगित किया गया)
      3. एपा (BDB 35), उदाहरण, निर्गमन 16:36; लैव्यव्यवस्था 19:36; यहेजकेल 45: 10-11,13,24
      4. सआ (BDB 684), उदाहरण उत्पत्ति 18:6; 1 शमूएल 25:18; 1 राजाओं 18:32; 2 राजाओं 7: 1,16,18
      5. ओमेर (BDB 771 II, संभवतः "एक पूला" [गिरी हुई अनाज की एक पंक्ति], BDB 771 I), उदाहरण, निर्गमन 16:16,22,36; लैव्यव्यवस्था 23:10-15
      6. 'इस्सर' (BDB 798, एपा का "दसवाँ अंश"), उदाहरण, निर्गमन 29:40; लैव्यव्यवस्था 14:21; गिनती 15:4; 28:5,13
      7. कव (या कब, BDB 866), तुलना 2 राजाओं 6:25
   B. द्रव्य माप
      1. कुरिन्थियों (BDB 499), उदाहरण, यहेजकेल 45:14 (सूखा माप हो सकता है, 2 इतिहास 2:10; 27:5)
      2. बत (BDB 144 II), उदाहरण, 1 राजाओं 7:26,38; 2 इतिहास 2:10; 4:5; यशायाह 5:10; यहेजकेल 45:10-11,14

3. हीन (BDB 228), उदाहरण, निर्गमन 29:40; लैव्यव्यवस्था 19:36; यहेजकेल 45:24
4. लोज (BDB 528), तुलना लैव्यव्यवस्था 14:10,12,15,21,24

C. सारणी (Roland deVaux, Ancient Israel, vol. 1, p. 201 और Encyclopedia Judaica, vol.16, p. 379 से ली गई)।

होमेर (सूखा) = कुरिन्थियों (द्रव्य या सूखा)	1						
एपा (सूखा) = बत (द्रव्य)	10	1					
सआ (सूखा)	30	3	1				
हीन (द्रव्य))	60	6	2	1			
ओमेर/इस्सर (सूखा)	100	10	-	-	1		
कव/कब (सूखा)	180	18	6	3	-	1	
लोज (द्रव्य)	720	72	24	12	-	4	1

II. सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाले तौल शब्द

A. तीन सबसे सामान्य तौल तोड़ा, शेकेल और गेरा हैं।

1. पुराने नियम में सबसे बड़ा तौल तोड़ा है। निर्गमन 38:25-26 हम सीखते हैं कि एक तोड़ा 3,000 शेकेल (यानी, "गोल वजन," BDB 503) के बराबर होता है।
2. शेकेल (BDB 1053, "तौल") शब्द का प्रयोग इतनी बार किया जाता है कि इसे मान पाठ में लिखा नहीं जाता, लेकिन मान लिया जाता है। पुराने नियम में उल्लिखित शेकेल के कई मूल्य हैं।
   a. "व्यापारिक मापदण्ड" (NASB का उत्पत्ति 23:16)
   b. "पवित्रस्थान का शेकेल" (NASB का निर्गमन 30:13)
   c. "राजा के तौल के अनुसार" (NASB का 2 शमूएल 14:26), जिसे एलीफेन्टाइन श्रीपत्र में "शाही तौल" भी कहा जाता है।
3. गेरा (BDB 176 II) का मूल्य 20 प्रति शेकेल है (तुलना निर्गमन 30:31; लैव्यव्यवस्था 27:25; गिनती 3:47; 18:16; यहेजकेल 45:12)। ये अनुपात मेसोपोटामिया से मिस्र तक भिन्न होते हैं। इस्राएल ने कनान (उगारिट) में सबसे आम मूल्यांकन को अपनाया।
4. माना (BDB 584) का मूल्य 50 या 60 शेकेल है। यह शब्द अधिकतर पुराने नियम की बाद की पुस्तकों (उदाहरण, यहेजकेल 45:12; एज्रा 2:69; नहेम्याह 7:71-72) में पाया जाता है। यहेजकेल ने 60 से 1 अनुपात का प्रयोग किया, जबकि कनान ने 50 से 1 के अनुपात का प्रयोग किया।
5. बेका (BDB 132, "आधा शेकेल," तुलना उत्पत्ति 24:22) का प्रयोग पुराने नियम में केवल दो बार किया जाता है (तुलना उत्पत्ति 24:22; निर्गमन 38:26) और इसका मूल्य एक शेकेल का आधा माना जाता है। इसके नाम का अर्थ है "विभाजित करना।"

B. सारणी

1. पेंटाट्यूच पर आधारित

तोड़ा	1				
माना	60	1			
शेकेल	3,000	50	1		
बेका	6,000	100	2	1	
गेरा	60,000	1,000	20	10	1

2. यहेजकेल पर आधारित

तोड़ा	1				
माना	60	1			
शेकेल	3,600	60	1		
बेका	7,200	120	2	1	
गेरा	72,000	1,200	20	10	1

2:8

NASB **"मुख्य संचालक"**

NKJV **“भोज का प्रधान”**
NRSV **“मुख्य प्रबंधक”**
TEV **“भोज का प्रभारी”**
NJB **“भोज का अध्यक्ष”**

"यह व्यक्ति या तो (1) एक सम्मानित अतिथि हो सकता है जो उत्सव का प्रभारी था या (2) मेहमानों को परोसने के काम का प्रभारी एक गुलाम था।

2:10 मुद्दा यह है कि सामान्य रूप से सबसे अच्छा दाखरस पहले परोसा जाता था। मेहमानों के प्रभावित होने के बाद, एक निम्न स्तर का दाखरस परोसा जाता था। लेकिन यहाँ सबसे अच्छा आखिर में था! यह यहूदी धर्म में पुरानी वाचा (पुराना दाखरस) और यीशु में नई वाचा (नया दाखरस) के बीच एक विरोधाभास प्रतीत होता है (तुलना इब्रानियों की पुस्तक)। यीशु द्वारा मंदिर का शुद्धिकरण (तुलना यूहन्ना 2:13-25, जाहिर तौर पर यूहन्ना द्वारा धर्मशास्त्रीय उद्देश्यों के लिए कालानुक्रम से बाहर रखा गया) इस सत्य का प्रतीक हो सकता है।

2:11 "अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर" यूहन्ना रचित सुसमाचार सात चिन्हों और उनकी व्याख्या के चारों ओर रचा गया है। यह पहला है। विशेष विषय: *Archē* यूहन्ना 1:1 पर देखें

▣ **"और अपनी महिमा प्रगट की, और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया"** यीशु की महिमा का अभिव्यक्ति (यूहन्ना 1:31 पर क्रिया पर ध्यान दें देखें) (यूहन्ना 1:14 पर विशेष विषय देखें) चमत्कार (रों) का उद्देश्य था । यह चमत्कार, कई अन्यों की तरह, मुख्य रूप से उसके चेलों को निर्देशित करता लगता था! यह उनके प्रारंभिक विश्वास के कार्य का नहीं, लेकिन उसके व्यक्तित्व और कार्य के बारे में उनकी निरंतर समझ का उल्लेख करता है। चिन्ह मसीहा के सच्चे व्यक्तित्व और कार्य को प्रगट करते हैं। यह अनिश्चित है कि क्या कभी मेहमानों को पता चला कि क्या हुआ था।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 2:12
[12]इसके बाद वह और उसकी माता और उसके भाई और उसके चेले कफरनहूम को गए और वहाँ कुछ दिन रहे।

2:12 "कफरनहूम" नासरत के अविश्वास के बाद (तुलना लूका 4:16-30) यह गलील में यीशु का मुख्यालय बन गया (तुलना मत्ती 4:13; मरकुस 1:21; 2:1; लूका 4:23,31; यूहन्ना 2:12; 4:46-47)।

▣ काना में इस चमत्कार के प्रकाश में, उनके परिवार के प्रति यीशु की सेवकाई की यह एक अनोखी झलक है।

2:13-25 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. नये नियम के विद्वानों के बीच इस बात पर बहुत चर्चा हुई है कि यीशु ने कितनी बार मंदिर को शुद्ध किया। यूहन्ना यीशु की सेवकाई में शुद्धिकरण को बहुत पहले से दर्ज करता है, जबकि सिनॉप्टिक सुसमाचार (मत्ती 21:12; मरकुस 11:15 और लूका 19:45) यीशु के जीवन के अंतिम सप्ताह के दौरान शुद्धिकरण का वर्णन करते हैं।

हालांकि, यह निश्चित रूप से संभव है कि यूहन्ना धार्मिक उद्देश्यों के लिए यीशु के कार्यों की संरचना करता है (यानी, यूहन्ना अध्याय 1 से यीशु के पूर्ण देवत्व का दावा करता है)। सुसमाचार के प्रत्येक लेखक को यीशु के कार्यों और शिक्षाओं का प्रेरणा के तहत चयन, अनुकूलन, व्यवस्था और संक्षेप करने की स्वतंत्रता थी। मुझे विश्वास नहीं है कि उन्हें यीशु के मुंह में शब्द डालने या घटनाओं को बनाने की स्वतंत्रता थी। यह याद रखना चाहिए कि सुसमाचार आधुनिक आत्मकथाएँ नहीं हैं, लेकिन सुसमाचार प्रचारक पुस्तिकाएँ हैं जो चुनिंदा पाठकों को लक्षित करती हैं। सुसमाचार कालानुक्रमिक नहीं हैं, न ही वे यीशु के शब्दों (बल्कि सारांश) को दर्ज करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे गलत हैं। पूर्वी साहित्य पश्चिमी साहित्य की तुलना में विभिन्न सांस्कृतिक अपेक्षाओं पर आधारित था। Gordon Fee and Douglas Stuart, *How To Read the Bible For All Its Worth,*pp.127-148 देखें।

B. मंदिर का शुद्धिकरण, यीशु के यहूदी राष्ट्र के साथ पहले व्यवहार करने के यूहन्ना के संपूर्ण धार्मिक उद्देश्य में सही बैठता है। इसे अध्याय 3 में नीकुदेमुस के साथ उसकी चर्चा में देखा जा सकता है(रूढ़िवादी यहूदी धर्म)। हालाँकि, अध्याय 4 में एक सामरी स्त्री से शुरूआत करके यीशु एक व्यापक समूह (यहाँ तक कि संप्रदायवादी यहूदी धर्म का एक अप्रमाणिक समूह) के साथ व्यवहार शुरू करता है।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 2:13-22
[13]यहूदियों का फसह का पर्व निकट था, और यीशु यरूशलेम को गया। [14]उसने मंदिर में बैल,भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे हुए पाया। [15]तब उसने रस्सियों का कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मंदिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिखेर दिये और पीढ़ों को उलट दिया, [16]और कबूतर बेचनेवालों कहा, "इन्हें यहाँ से ले जाओ। मेरे पिता के घर को व्यापार का घर मत बनाओ।" [17]तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, "तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी।" [18]इस पर यहूदियों ने उस से कहा, "तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?" [19]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "इस मंदिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।" [20]यहूदियों ने कहा, "इस मंदिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?" [21]परन्तु उसने अपनी देह के मंदिर के विषय में कहा था। [22]अतः जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था; और उन्होंने पवित्रशास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की।

2:13 "फसह का पर्व" इस वार्षिक पर्व का वर्णन निर्गमन 12 और व्यवस्थाविवरण 16:1-6 में किया गया है। यह पर्व ही एकमात्र साधन है जिससे हम यीशु की सेवकाई का काल-निर्धारण कर सकते हैं। सिनॉप्टिक सुसमाचार दर्शाते हैं कि यीशु ने केवल एक वर्ष के लिए सेवा की (अर्थात, एक फसह के पर्व का उल्लेख)। लेकिन यूहन्ना ने तीन फसह के पर्वों का उल्लेख किया: (1) यूहन्ना 2:13,23; (2) यूहन्ना 6:4 और (3) यूहन्ना 11:55; 12:1; 13:1; 18: 28,39; 19:14। यूहन्ना 5:1 में चौथे की भी संभावना है। हमें नहीं पता कि यीशु का सक्रिय सार्वजनिक सेवकाई कब तक चली, लेकिन यूहन्ना रचित सुसमाचार जताता है कि यह कम से कम तीन साल थी और संभवतः चार या पाँच भी।

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को यहूदी पर्वों के आस-पास संरचित किया (फसह का पर्व, झोपड़ियों का पर्व और हनुकाह। Richard N. Longenecker, *Biblical Exegesis in the Apostolic Period,* 2nd ed., pp.135-139) देखें।

विशेष विषय: फसह (SPECIAL TOPIC: THE PASSOVER)

I. प्रारम्भिक कथन
   A. मिस्रियों के न्याय और इस्राएल के छुटकारे का दिव्य कार्य YHWH के प्यार और इस्राएल को एक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए एक कसौटी है (यानी, विशेषतः भविष्यद्वक्ताओं के लिए)
   B. निर्गमन उत्पत्ति 15:12-21 में इब्राहीम के लिए YHWH के वादे की एक विशिष्ट पूर्ति है। फसह निर्गमन का स्मरण दिलाता है।
   C. यह मूसा के माध्यम से मिस्र पर YHWH द्वारा भेजी गई दस विपत्तियों में अंतिम, सबसे व्यापक (भौगोलिक रूप से, अर्थात् मिस्र और गोशेन) और विनाशकारी (मनुष्यों और मवेशियों के पहलौठों का मारा जाना) है।
II. यह शब्द स्वयं (BDB 820, KB 947)
   A. संज्ञा का अर्थ अनिश्चित है
      1. "विपत्ति," इस प्रकार " प्रहार करने" (यानी, निर्गमन 11:1) से संबंधित; YHWH के स्वर्गदूत ने मनुष्यों और मवेशियों के पहलौठों पर प्रहार किया
   B. क्रिया का अर्थ
      1. "लंगड़ाना" या "लड़खड़ाना" (तुलना 2 शमूएल 4:4), "चिह्नित घरों को लांघना" के अर्थ में प्रयोग किया जाता है (यानी, निर्गमन 12:13,23,27, BDB 619, एक लोकप्रिय व्युत्पत्ति)
      2. "लटके रहना" (तुलना 1 राजाओं 18:21)
      3. अक्कादी - "मनाना"
      4. मिस्री - "प्रहार करना"

5. यशायाह 31:5 में समानांतर क्रियाएँ, "रक्षा करना" (तुलना REB में निर्गमन 12:13)
6. इब्रानी pasah और यूनानी *paschō*, " कष्ट भुगतना" के बीच आरंभिक मसीही ध्वनि क्रीड़ा

C. संभावित ऐतिहासिक मिसालें
1. एक नए साल के लिए चरवाहों का बलिदान
2. वसंत चरागाह पर तम्बू ले जाने के समय बुराई को दूर करने के लिए कंजरों का बलिदान और जातीय भोज
3. खानाबदोश लोगों से बुराई को दूर करने के लिए बलिदान

D. कारण यह इतना कठिन है कि न केवल शब्द के अर्थ के बारे में, बल्कि इसकी उत्पत्ति के बारे में निश्चित होने के कारण यह हैं कि फसह की इतनी विविध विशेषताएँ अन्य प्राचीन अनुष्ठानों में भी पाई जाती हैं।
1. वसंत की तारीख
2. संज्ञा की व्युत्पत्ति अनिश्चित
3. रात के पहरों से जुड़ा
4. लहू का प्रयोग
5. स्वर्गदूतों / राक्षसों की कल्पना
6. विशेष भोज
7. कृषि तत्व (अखमीरी रोटी)
8. न याजक, न वेदी, स्थानीय मुद्दा

III. कार्यक्रम

A. कार्यक्रम स्वयं निर्गमन 11-12 में दर्ज है।

B. वार्षिक पर्व को निर्गमन 12 में वर्णित किया गया है और इसे आठ दिनों के उत्सव में अखमीरी रोटी के पर्व के साथ जोड़ा गया है।
1. मूल रूप से यह एक स्थानीय कार्यक्रम था, तुलना निर्गमन 12:21-23; व्यवस्थाविवरण 16: 5 (तुलना गिनती 9)
   a. न याजक
   b. न विशेष वेदी
   c. लहू के विशिष्ट प्रयोग
2. यह मुख्य मंदिर में एक कार्यक्रम बन गया
3. स्थानीय बलिदान (यानी, मृत्यु दूत के द्वारा छोड़ दिये जाने के दिन को मनाने के लिए मेमने का लहू) और मुख्य पवित्रस्थान में एक फसल की कटनी के पर्व का संयोजन अबीब या निसान 14 और 15-21 तारीखों की निकटता से पूरा हुआ

C. मनुष्यों और मवेशियों के सभी पहलौठों का प्रतीकात्मक स्वामित्व और उनका छुटकारा निर्गमन 13 में वर्णित है

IV. इसके पालन के ऐतिहासिक विवरण

A. मिस्र में मनाया गया पहला फसह- पर्व, निर्गमन 12

B. होरेब/सीनै पर्वत पर, गिनती 9

C. कनान (गिलगाल) में मनाया गया पहला फसह-पर्व, यहोशू 5:10-12

D. सुलैमान के मंदिर के समर्पण के समय, 1 राजाओं 9:25 और 2 इतिहास 8:12 (सम्भवतः, लेकिन विशेष रूप से नहीं कहा गया है)

E. हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान, 2 इतिहास 30

F. योशिय्याह के सुधारों के दौरान, 2 राजाओं 23:21-23; 2 इतिहास 35:1-18

G. ध्यान दें कि 2 राजाओं 23:22 और 2 इतिहास 35:18 इस वार्षिक पर्व को मनाने में इस्राएल की अवहेलना का उल्लेख करते हैं

V. महत्व

A. यह तीन आवश्यक वार्षिक पर्वों के दिनों में से एक है (निर्गमन 23:14-17; 34:22-24; निर्गमन; 16:16):
1. फसह / अखमीरी रोटी
2. सप्ताहों का पर्व
3. झोपड़ियों का पर्व

B. व्यवस्थाविवरण में मूसा ने उस दिन का पूर्वाभास दिया जिस दिन उसे मुख्य पवित्रस्थान में (दो अन्य पर्वों के समान) मनाया जाएगा।
C. यीशु ने रोटी और दाखरस के प्रतीक में नई वाचा को प्रकट करने के लिए वार्षिक फसह पर्व (या एक दिन पहले) के अवसर का उपयोग किया, लेकिन मेमने का उपयोग नहीं किया:
   1. जातीय भोज
   2. छुटकारे का बलिदान
   3. बाद की पीढ़ियों के लिए चलता आ रहा महत्व

▣ **"और यीशु यरूशलेम को गया"** यहूदी हमेशा यरूशलेम के बारे में भौगोलिक या स्थलाकृतिक अर्थ की तुलना में धर्मशात्रीय अर्थ में अधिक बात करते थे।

2:14 "मंदिर में" हेरोदेस महान (एक एदोम का निवासी जिसने 37-4 ई.पू. से पलस्तीन पर शासन किया था) के मंदिर को सात अलग-अलग आँगनों में विभाजित किया गया था। बाहरी आँगन अन्यजातियों का न्यायालय था, जहाँ व्यापारियों ने अपनी दुकानों को स्थापित किया था ताकि उन लोगों को समायोजित किया जा सके जो बलिदान देना चाहते थे और विशेष अर्पण लाना चाहते थे।

▣ **"बैल, भेड़ और कबूतर"** लंबी दूरी की यात्रा करने वाले लोगों को बलि के स्वीकार्य जानवरों को खरीदने की आवश्यकता होती थी। हालांकि, महायाजक का परिवार इन दुकानों को नियंत्रण में रखता था और जानवरों के लिए अत्यधिक कीमत वसूल करता था। हम यह भी जानते हैं कि यदि लोग अपने खुद के जानवरों को लाते हैं, तो याजक कहेंगे कि वे कुछ शारीरिक दोष के कारण अयोग्य हैं। इसलिए, उन्हें अपने जानवरों को इन विक्रेताओं से खरीदना पड़ता था।

▣ **"सर्राफ"** इन व्यक्तियों की आवश्यकता के दो स्पष्टीकरण हैं: (1) एकमात्र सिक्का जो मंदिर स्वीकार करता वह था एक शेकेल। चूंकि यहूदी शेकेल लंबे समय से गढ़ा नहीं जा रहा था, इसलिए यीशु के दिन में मंदिर में केवल सोर के शेकेल को स्वीकार किया जाता था या (2) रोमी सम्राट की छवि वाले किसी भी सिक्के की अनुमति नहीं थी। बेशक, एक शुल्क था!

2:15 "उसने रस्सियों का कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मंदिर से निकाल दिया" इस कोड़े का केवल यहाँ उल्लेख किया गया है। इस वृत्तान्त में यीशु के क्रोध को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जिस स्थान पर YHWH जाना जा सकता था, वह अब आराधना और प्रकटीकरण का स्थान नहीं था! क्रोध अपने आप में एक पाप नहीं है! इफिसियों 4:26 में पौलुस का कथन संभवतः इस कार्य से संबंधित है। कुछ चीजें हैं जो हमें क्रोधित करती हैं।

2:16 "इन्हें यहाँ से ले जाओ" यह एक प्रभावी अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है, "इन चीजों को यहाँ से हटाओ!"

▣ **"मेरे के घर को व्यापार का घर मत बनाओ"** "यह एक नकारात्मक प्रत्यय के साथ एक वर्तमान आज्ञार्थक है सामान्यतः जिसका अर्थ है पहले से चल रही एक प्रक्रिया को रोकना। अन्य सुसमाचार (यानी, मत्ती 21:13; मरकुस 11:17; लूका 19:46)इस बिंदु पर यशायाह 56:7 और यिर्मयाह 7:11 को उद्धरित करते हैं, हालांकि, यूहन्ना में इन पुराने नियम की भविष्यवाणियों का उल्लेख नहीं किया गया है। यह जकर्याह 14:21 की मसीहाई भविष्यवाणी का एक संभावित संकेत हो सकता है।

2:17 "उसके चेलों को स्मरण आया" यह कथन का यह अर्थ निकलता है कि यीशु की सेवकाई और आत्मा की मदद के बावजूद भी, इन लोगों ने यीशु के कार्यों का आध्यात्मिक सत्य केवल बाद में देखा (तुलना यूहन्ना 2:22; 12:16; 14:26)।

▣ **"कि लिखा है"** यह एक पूर्ण कर्मवाच्य वर्णनात्मक है जो अक्षरशः है "यह लिखित है"। यह पुराने नियम की प्रेरणा की पुष्टि करने का एक विशिष्ट तरीका था (तुलना यूहन्ना 6: 31,45; 10:34; 12:14; 20:30) । यह LXX में भजनसंहिता 69:9 का एक उद्धरण है। भजनसंहिता 22 की तरह यह भजन यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने को प्रस्तुत करता है। यीशु का परमेश्वर के प्रति धुन और उसकी सच्ची आराधना उसे उसकी मृत्यु की ओर ले जाएगी, जो परमेश्वर की इच्छा थी (तुलना यशायाह 53: 4,10; लूका 22:22; प्रेरितों के काम 2:23; 3:18; 4:28)।

2:18

NASB **"तू यह करने के लिए हमें अपने अधिकार के रूप में कौन सा चिन्ह दिखा सकता है"**
NKJV **“तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है"**
NRSV **"तू यह करने के लिए हमें कौन सा चिन्ह दिखा सकता है"**
TEV **“तू हमें यह दिखाने के लिए क्या चमत्कार कर सकता है कि तुझे यह करने का अधिकार है "**
NJB **"तू हमें कौन सा चिन्ह दे सकता है कि तुझे इस तरह करना चाहिए"**

यीशु के बारे में यहूदियों का यह केंद्रीय प्रश्न था। फरीसियों ने दावा किया कि उसकी शक्ति शैतान से आई थी (तुलना यूहन्ना 8 48-49,52; 10:20)। वे उम्मीद कर रहे थे कि मसीहा कुछ खास चीजें खास तरीकों से करेगा (यानी मूसा की तरह)। जब उसने इन विशिष्ट कृत्यों को नहीं किया, तो वे उसके बारे में आश्चर्य करने लगे (तुलना मरकुस 11:28; लूका 20:2), जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भी किया था।

2:19 "'इस मंदिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा'" यूहन्ना 2:14 और 15 में मंदिर के लिए यूनानी शब्द (*hieron*) मंदिर क्षेत्र को संदर्भित करता है, जबकि यूहन्ना 2:19,20 और 21 में शब्द (*naos*) आंतरिक पवित्र स्थान को संदर्भित करता है। इस कथन को लेकर काफी चर्चा हुई है। जाहिर है मत्ती 26: 60ff; मरकुस 14: 57-59; प्रेरितों के काम 6:14 में यह यीशु के क्रूसित होने और पुनरुत्थान का संदर्भ है। हालाँकि, इस संदर्भ में, यह भी किसी तरह मंदिर से संबंधित होना चाहिए जो तीतुस द्वारा 70 ई.में नष्ट किया जा रहा है (तुलना मत्ती 24:1-2)। ये दोनों कथन इस सत्य से संबंधित हैं कि यीशु एक नई आध्यात्मिक उपासना की स्थापना कर रहा था जो प्राचीन यहूदी धर्म पर नहीं परन्तु स्वयं उस पर केंद्रित थी (तुलना यूहन्ना 4:21-24)। फिर से यूहन्ना एक शब्द का उपयोग दो अर्थों में करता है!

2:20 "इस मंदिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे" हेरोदेस महान ने उसके एदोम निवासी होने पर यहूदियों को तसल्ली देने के प्रयास में दूसरे मंदिर (जरुब्बाबेल के दिनों से, तुलना हाग्गै) का विस्तार किया और फिर से तैयार किया। जोसेफस हमें बताता है कि यह 20 या 19 ईसा पूर्व में शुरू किया गया था। यदि यह सही है, तो इसका मतलब है कि यह विशेष घटना वर्ष 27-28 ई. में हुई थी। हम यह भी जानते हैं कि मंदिर में 64 ई. तक काम जारी रहा। यह मंदिर महान यहूदी आशा (तुलना यिर्मयाह 7) बन गया था। यह स्वयं यीशु, नए मंदिर, द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा। यूहन्ना 1:14 में, उसे झांकी और अब मंदिर के रूप में वर्णित किया गया है! नासरत के बढ़ई के लिए कितने चौंकाने वाले रूपक! परमेश्वर और मानव जाति अब यीशु में मिलते और संगति करते हैं!

2:21 "परन्तु उसने अपनी देह के मंदिर के विषय में कहा था" जब यीशु ने ये शब्द बोले तब चेलों को इस बात का अहसास नहीं था (तुलना यूहन्ना 2:17)। याद रखें कि यूहन्ना दशकों बाद लिख रहा है।

यीशु जानता था कि वह क्यों आया है। इसके कम से कम तीन उद्देश्य लगते हैं।

1. परमेश्वर को प्रकट करने के लिए
2. सच्ची मानवता का नमूना देने के लिए
3. अपने जीवन कई लोगों के लिए फिरौती देने के लिए

यह वो अंतिम उद्देश्य है जिसे यह पद संबोधित करता है (तुलना मरकुस 10:45; यूहन्ना 12: 23,27; 13:1-3; 17: 1)।

2:22 "उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था" अक्सर यीशु के शब्द और कार्य, जिन्हें वह संबोधित करता था, उनसे ज्यादा चेलों के लाभ के लिए थे।1 वे उस समय हमेशा समझ नहीं पाते थे।

▣ **"उन्होंने पवित्रशास्त्र की प्रतीति की"** हालांकि पाठ में यह नहीं बताया गया है कि कौनसा पवित्रशास्त्र, संभवतः भजनसंहिता 16:10 पुनरुत्थान पाठ है जिसकी ओर यीशु इंगित कर रहा है (तुलना प्रेरितों के काम 2:25-32; 13:33-35)। ठीक इसी पाठ (या धर्मशास्त्रीय अवधारणा-पुनरुत्थान) का उल्लेख यूहन्ना 20:9 में है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 2:23-25
23जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। 24परन्तु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था; 25और उसे आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे,क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है?

2:23 "कई लोग उनके नाम पर विश्वास करते हैं" शब्द "विश्वास" ग्रीक शब्द (पिस्ते) से है जिसका अनुवाद "विश्वास," "विश्वास" या "विश्वास" भी हो सकता है। यूहन्ना के सुसमाचार में संज्ञा नहीं होती है, लेकिन क्रिया का उपयोग अक्सर किया जाता है। इस संदर्भ में नासरी के यीशु के मसीहा के रूप में भीड़ की प्रतिबद्धता की वास्तविकता के रूप में अनिश्चितता है। "विश्वास" शब्द के इस सतही उपयोग के अन्य उदाहरण यूहन्ना 8: 31-59 और प्रेरितों के काम 8:13, 18-24 में हैं। सच्चा बाइबिल विश्वास प्रारंभिक प्रतिक्रिया से अधिक है। इसे शिष्यत्व की प्रक्रिया द्वारा फलीभूत किया जाना चाहिए (तुलना मैट। 13: 20-22,31-32)।

जाहिर तौर पर सतही विश्वासी यीशु के चमत्कारों द्वारा उसकी ओर आकर्षित होते थे (तुलना यूहन्ना 2:11; 7:31)। उनका उद्देश्य यीशु के व्यक्तित्व और कार्य की पुष्टि करना था। हालाँकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यीशु के सामर्थी कार्यों में विश्वास कभी भी पर्याप्त, दृढ़ आस्था नहीं था,(तुलना यूहन्ना 4:38; 20:29)। विश्वास का विषय स्वयं यीशु होना चाहिए। चमत्कार स्वतः परमेश्वर के चिन्ह नहीं हैं (तुलना मत्ती 24:24; प्रकाशितवाक्य 13:13; 16:14; 19:20)। यीशु के कार्यों का उद्देश्य लोगों को उस पर विश्वास में लाना था (तुलना यूहन्ना 2:23; 6:14; 7:31; 10:42); अक्सर लोगों ने चिन्ह को देखा, लेकिन विश्वास करने से इनकार कर दिया (तुलना यूहन्ना 6:27; 11:47; 12:37)।

विशेष विषय: यूहन्ना का क्रिया "विश्वास" का प्रयोग (संज्ञा यदा-कदा ही है) (SPECIAL TOPIC: JOHN'S USE OF THE VERB "BELIEVE" (THE NOUN IS RARE))

यूहन्ना मुख्य रूप से "विश्वास" को संबंध सूचक अव्ययों से जोड़ देता है।

A. *eis* का अर्थ है "में।" यह अनोखी संरचना विश्वासियों को यीशु में अपना भरोसा / विश्वास रखने पर जोर देती है
   1. उसके नाम में (यूहन्ना 1:12; 2:23; 3:18; 1 यूहन्ना 5:13)
   2. उसमें (यूहन्ना 2:11; 3:15,18; 4:39; 6:40; 7:5,31,39,39; 8:30; 9:36; 10:42; 11:45 48; 12:37,42)
   3. मुझ पर (यूहन्ना 6:35; 7:38; 11:25,26; 12: 44,46; 14: 1,12; 16: 9; 17:20)।
   4. जिसे उसने भेजा है (यूहन्ना 6:28-29)
   5. पुत्र पर (यूहन्ना 3:36; 9:35; 1 यूहन्ना 5:10)
   6. यीशु पर (यूहन्ना 12:11)
   7. ज्योति पर (यूहन्ना 12:36)
   8. परमेश्वर पर (यूहन्ना 14:1)

B. *ev* का अर्थ "पर" जैसा यूहन्ना 3:15 (मरकुस 1:15) में है

C. संबंध सूचक अव्यय रहित सम्प्रदान कारक (1 यूहन्ना 3:23; 4:50; 5:10)

D. *hoti*, जिसका अर्थ है "विश्वास करो कि," क्या विश्वास करना है, इस बारे में विषयवस्तु देता है
   1. यीशु परमेश्वर का पवित्र जन है (यूहन्ना 6:69)
   2. यीशु मैं हूँ है (यूहन्ना 8:24)
   3. यीशु पिता में है और पिता उस में है (यूहन्ना 10:38)
   4. यीशु मसीह है (यूहन्ना 11:27; 20:31)
   5. यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 11:27; 20:31)
   6. यीशु पिता के द्वारा भेजा गया था (यूहन्ना 11:42; 17: 8,21)
   7. यीशु पिता के साथ एक है (यूहन्ना 14:10-11)
   8. यीशु पिता की ओर से आया (यूहन्ना 16: 27,30)
   9. यीशु ने पिता की वाचा के नाम "मैं हूँ" में खुद को पहचाना, (यूहन्ना 8:24; 13:19)

बाइबल संबंधी विश्वास व्यक्ति और संदेश दोनों में है! आज्ञापालन, प्रेम और धीरज इसका प्रमाण देता है।

2:24-25 यह यूनानी में एक वाक्य है। इस संदर्भ में यीशु के कार्यों और दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए महत्वपूर्ण शब्द "भरोसे" (अक्षरशः "विश्वास" के अपूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशवाचक का खण्डन) का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ प्रारंभिक स्वीकृति या भावनात्मक प्रतिक्रिया से बहुत अधिक है। यह वाक्य यीशु के मानव हृदय की चंचलता और बुराई संबंधी ज्ञान को भी दर्शाता है (परमेश्वर के ज्ञान को प्रतिबिंबित करता है, तुलना उत्पत्ति 6:11-12,13; भजनसंहिता 14:1-3)। अध्याय 3 में अनुच्छेद को नीकुदेमुस द्वारा चित्रित किया गया है। यहाँ तक कि "श्रीमान धार्मिक" अपने स्वयं के प्रयास, ज्ञान,अस्तित्व, या वंश के आधार पर परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने में असमर्थ था। यीशु में विश्वास / आस्था / भरोसे के माध्यम से ही धार्मिकता आती है (तुलना रोमयों 1:16-17; 4)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यीशु ने पानी को दाखरस में क्यों बदल दिया? यह किसका प्रतीक था?
2. यीशु के दिन के विवाह के रीति-रिवाजों का वर्णन करें।
3. क्या आप हेरोदेस के मंदिर का नक्शा बना सकते हैं? क्या आप खरीदारों और विक्रेताओं का संभावित स्थान दिखा सकते हैं?
4. सिनॉप्टिक्स मंदिर के इस प्रारंभिक शुद्धिकरण को दर्ज क्यों नहीं करते हैं?
5. क्या यीशु ने हेरोदेस के मंदिर के विनाश का पूर्वानुमान लगाया था?
6. उस यूनानी शब्द को परिभाषित करें और समझाएं जिसका अनुवाद "विश्वास," "आस्था" और "भरोसा" है।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 3

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु और नीकुदेमुस	नया जन्म	यीशु और अधिकारिक यहूदी धर्म	यीशु और नीकुदेमुस	नीकुदेमुस के साथ वर्तालाप
3:1-15	3:1-21	3:1-10	3:1-2	3:1-8
			3:3	
			3:4	
			3:5-8	
			3:9	3:9-21
			3:10-13	
		3:11-15		
			3:14-17	
3:16-21		3:16		
		3:17-21		
			3:18-21	
यीशु और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु को सराहता है	यूहन्ना की अगली गवाही	यीशु और यूहन्ना	यूहन्ना पहली बार गवाही देता है
3:22-30	3:22-36	3:22-24	3:22-24	3:22-24
		3:25-30	3:25-26	3:25-36
			3:27-30	
जो स्वर्ग से आता है			जो स्वर्ग से आता है	
3:31-36		3:31-36	3:31-36	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद

3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 3:1-3
[1]फरीसियों में नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों के सरदार था [2]उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, "हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता। [3]यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैं तुझसे सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

3:1 "फरीसी" इस राजनीतिक / धार्मिक दल का मूल मैकाबी अवधि से है। उनके नाम का संभवतः अर्थ है "अलग हुए लोग।" वे निष्कपट और मौखिक परंपरा (तल्मूड) में परिभाषित और वर्णित परमेश्वर के नियमों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध थे। जैसे आज वैसे ही उनमें से कुछ वास्तव में वाचा के लोग थे (निकुदेमुस, अरिमतिया का युसुफ), लेकिन कुछ स्वयंभू, विधि- सम्मत, आलोचनात्मक, "प्रत्क्षय" वाचा के लोग थे (तुलना यशायाह 6:9-10; 29:13)। दिल ही कुंजी है! "नई वाचा" (यिर्मयाह 31: 31-34) आंतरिक प्रेरणा (यानी, नया दिल, नया दिमाग, दिल पर लिखे नियम) पर केंद्रित है। मानव प्रदर्शन को अपर्याप्त दिखाया गया है, जैसे कि हमेशा होता है। व्यवस्थाविवरण 10:16; 30:6 में दिल का खतना व्यक्तिगत विश्वास/आस्था के लिए एक रूपक है जिससे आज्ञाकारिता और कृतज्ञता का जीवन आता है!

धार्मिक रूढ़िवाद और/या उदारवाद बदसूरत चीजें हो सकती हैं। प्रेम और विश्वास से धर्मशास्त्र आना चाहिए।
विशेष विषय: फरीसी यूहन्ना 1:24 में देखें

▣ **"निकुदेमुस"** पलस्तीन के एक यहूदी के लिए केवल एक यूनानी नाम (जैसे फिलिप्पुस और अन्द्रियास का था, तुलना यूहन्ना 1:40,43) का होना आश्चर्य की बात है, जिसका अर्थ था "लोगों का विजेता" (तुलना यूहन्ना 7:50; 19:39)।

NASB, NKJV "यहूदियों का एक शासक"
NRSV, NJB "यहूदियों का सरदार"
TEV "एक यहूदी सरदार"

इस संदर्भ में, यह सन्हेद्रयौन, यरूशलेम में यहूदी लोगों का सत्तर सदस्यीय उच्च न्यायालय के सदस्यों के लिए एक तकनीकी वाक्यांश है (अन्य संदर्भों में इसका मतलब एक स्थानिक उपासनागृह का अगुवा हो सकता है)। इसका अधिकार रोमियों द्वारा चुपचाप सीमित कर दिया गया था, लेकिन अभी भी यहूदी लोगों के लिए इसका बहुत प्रतीकात्मक महत्व था। नीचे विशेष विषय देखें।

ऐसा लगता है कि यूहन्ना पहली सदी के रूढ़िवादी यहूदी धर्म के प्रतिनिधि के रूप में नीकुदेमुस का उपयोग करते हैं। जिन लोगों ने सोचा था कि वे आध्यात्मिक रूप से पहुँचे थे उन्हें बताया गया कि उन्हें फिर से शुरू करना होगा। न नियमों का पालन (यहाँ तक कि ईश्वरीय नियम, तुलना 2:16-23) और न ही नस्लीय पृष्ठभूमि (तुलना यूहन्ना 8:31-59),बल्कि यीशु में विश्वास राज्य में किसी की नागरिकता निर्धारित करता है। मसीह में परमेश्वर का उपहार, ना की निष्कपट, आक्रामक मानव धार्मिकता, दैवीय स्वीकृति का द्वार है। नीकुदेमुस की परमेश्वर से एक शिक्षक के रूप में यीशु की स्वीकार्यता, हालांकि सच है, पर्याप्त नहीं थी। व्यक्तिगत विश्वास, विशिष्ट विश्वास, मसीहा के रूप में यीशु पर अंतिम भरोसा, पतित मानव जाति की एकमात्र आशा है (तुलना यूहन्ना 1:12)!

विशेष विषय: महासभा (SPECIAL TOPIC: THE SANHEDRIN)
I. सूचना के स्रोत
   A. नया नियम स्वयं
   B. फ्लेवियस जोसेफस की *Antiquities of the Jews*
   C. तल्मूड का मिश्ना खंड (यानी, पुस्तिका "सन्हेद्रीन")।

दुर्भाग्यवश नया नियम और जोसेफस रब्बियों के लेखन से सहमत नहीं हैं, जो यरूशलेम में दो सन्हेद्रयौनों का दावा करते हैं, एक याजकीय (यानी सदूकीय), महायाजक द्वारा नियंत्रित और नागरिक और आपराधिक न्याय से संबंधित और दूसरा फरीसियों और शास्त्रियों द्वारा नियंत्रित, जो धार्मिक और पारंपरिक मुद्दों से संबंधित है। हालाँकि, रब्बीय लेखन 200 ई. से आरम्भ होता है और 70 ई. में रोमी जनरल, तीतुस के हाथों में आने के बाद की यरूशलेम की सांस्कृतिक स्थिति को दर्शाता है। यहूदियों (यानी, फरीसी नेतृत्व) ने अपने धार्मिक जीवन के लिए जमनिया नामक नगर में एक मुख्यालय की पुनर्स्थापना की (यानी 118 ई.) और बाद में गलील में स्थानांतरित हो गया।

II. शब्दावली

इस न्यायिक समिति की पहचान करने में समस्या में विभिन्न नाम शामिल हैं जिनके द्वारा इसे जाना जाता है। यरूशलेम के यहूदी समुदाय के भीतर न्यायिक समितियों का वर्णन करने के लिए कई शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

A. *Gerousia* - "महासभा" या "पुरनिये" यह सबसे पुराना शब्द है जिसका प्रयोग फ़ारसी काल के अंत में किया गया था (तुलना जोसेफस की *Antiquities* 12.3.3 और II Maccabees 11:27) इसका प्रयोग लूका द्वारा प्रेरितों के काम 5:21 में "सन्हेद्रीन" के साथ किया गया है। यह यूनानी भाषी पाठकों के लिए शब्द समझाने का एक तरीका हो सकता है (तुलना I Maccabees 12:35)।

B. *Synedrion* - "सन्हेद्रीन" यह *syn* (के साथ) और *hedra* (आसन) से एक संयोजन है। हैरानी की बात यह है कि इस शब्द का प्रयोग अरामी में किया गया है, लेकिन यह एक यूनानी शब्द को दर्शाता है। मक्काबी अवधि के अंत तक यह यरूशलेम में यहूदियों के सर्वोच्च न्यायालय को मनोनीत करने के लिए स्वीकृत पद बन गया था (तुलना 26:59; मरकुस 15:1; लूका 22:66; यूहन्ना 11:47; प्रेरितों के काम 5:27)। समस्या तब आती है जब एक ही शब्दावली का प्रयोग यरूशलेम के बाहर स्थानीय न्यायिक पुरनियों के लिए किया जाता है (तुलना मत्ती 5:11; 10:17)।

C. *Presbyterion* - "पुरनिये" (तुलना लूका 22:66)। यह आदिवासी नेताओं के लिए एक पुराने नियम का पदनाम है। हालांकि, यह यरूशलेम में सर्वोच्च न्यायालय का उल्लेख करने के लिए आया था (तुलना प्रेरितों के काम 22:5)।

D. *Boulē* - यह शब्द "महासभा" जोसेफस द्वारा (अर्थात, *Wars* 2.16.2; 5.4.2, लेकिन नया नियम नहीं) कई न्यायिक समितियों का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है:
   1. रोमियों में महासभा
   2. स्थानीय रोमी न्यायालय
   3. यरूशलेम में यहूदी सर्वोच्च न्यायालय
   4. स्थानीय यहूदी न्यायालय

   अरिमतिया के यूसुफ को इस शब्द के एक रूप से महासभा के सदस्य के रूप में वर्णित किया गया है (अर्थात, *bouleutēs*, जिसका अर्थ है "महासभा का सदस्य," तुलना मरकुस 15:43; लूका 23:50)।

III. ऐतिहासिक विकास

कहा जाता है कि आरम्भ में एज्रा ने निर्वासन- पश्चात के काल में महान आराधनालय (तुलना श्रेष्ठगीत 6:1 पर तरगुम) की स्थापना की थी, जो लगता है कि यीशु के दिन का महासभा बन गया है।

A. मिश्नाह (यानी, तलमुद) दर्ज है कि यरूशलेम में दो बड़े न्यायालय थे (तुलना सन्हे. 7:1)।
   1. एक 70 (या 71) सदस्यों से बना (सन्हे.1:6 यहाँ तक कहता है कि मूसा ने गिनती 11, तुलना गिनती 11:16-25) में पहला महासभा स्थापित किया था।
   2. एक 23 सदस्यों से बना (लेकिन यह स्थानीय आराधनालय न्यायालयों का उल्लेख हो सकता है)।
   3. कुछ यहूदी विद्वानों का मानना है कि यरुशलेम में तीन 23 सदस्यीय महासभाएँ थी। जब तीनों एक साथ मिले, दोनों अगुवों के साथ, तो 71 सदस्यों वाले "महान महासभा" का गठन किया (यानी, *Nasi* and *Av Bet Din*)
      a. एक याजकीय (यानी, सदूकी)
      b. एक कानूनी (यानी, फरीसी)
      c. एक कुलीन (यानी, पुरनिये)

B. निर्वासन पश्चात के काल के बाद, वापस लौटने वाला दाऊद का बीज जरुब्बाबेल था और वापस लौटने वाला हारून का बीज यहोशू था। जरुब्बाबेल की मृत्यु के बाद, दाऊद के वंश का कोई चल न सका, इसलिए न्यायिक दायित्व विशेष रूप से याजकों (तुलना I Macc. 12: 6) और स्थानीय पुरनिये (तुलना नहेम्याह 2:16; 5:7) को पारित हो गया।

C. न्यायिक निर्णयों में यह याजकीय भूमिका डियोडोरस 40:3:4-5 द्वारा हेलेनिस्टिक काल के दौरान प्रलेखित है।
D. सरकार में यह याजकीय भूमिका सेल्यूकस के काल के दौरान जारी रही। जोसेफस Antiochus "the Great" III (223-187 ई.पू.) *Antiquities* 12.138-142 में उद्धृत करते हैं।
E. यह याजकीय शक्ति जोसेफस की *Antiquities* 13.10.5-6; 13.15.5 के अनुसार मक्काबी अवधि के दौरान जारी रही।
F. रोमी काल के दौरान सीरिया के गवर्नर (अर्थात, 57-55 ई.पू. से गैबिनियस) ने पाँच क्षेत्रीय "महासभाओं" (तुलना जोसेफस की *Antiquities* 14.5.4; और Wars 1.8.5) की स्थापना की, लेकिन बाद में रोमियों द्वारा इसे रद्द कर दिया गया; (यानी, 47 ई.पू.)।
G. महासभा का हेरोदेस के साथ एक राजनीतिक टकराव था (यानी, *Antiquities* 14.9.3-5), जिन्होंने 37 ई.पू. में, जवाबी कार्रवाई की और उच्च न्यायालय में अधिकांश को मरवा डाला (तुलना जोसेफस की *Antiquities* 14.9.4; 15.1.2)।
H. रोमी वकीलों (यानी, ए। डी। 6-66) के तहत जोसेफस हमें बताता है (तुलना *Antiquities* 20.200,251) कि महासभा को फिर से काफी शक्ति और प्रभाव प्राप्त हुआ (तुलना मरकुस 14:55)। नये नियम में तीन मुकदमे दर्ज किए गए हैं, जहाँ महायाजक के परिवार के नेतृत्व में, महासभा, न्याय निष्पादित करता है।
   1. यीशु का मुकदमा (तुलना मरकुस 14:53-15:1; यूहन्ना 18:12-23,28-32)
   2. पतरस और यूहन्ना (तुलना प्रेरितों के काम 4:3-6)
   3. पौलुस (तुलना प्रेरितों के काम 22:25-30)
I. जब यहूदियों ने 66 ई. में विद्रोह किया, रोमियों ने बाद में यहूदी समाज और यरूशलेम को 70 ई. में नष्ट कर दिया। महासभा को स्थायी रूप से भंग कर दिया गया था, हालांकि जमानिया के फरीसियों ने एक सर्वोच्च न्यायिक अदालत (यानी, *Beth Din*) को यहूदी धार्मिक (लेकिन नागरिक या राजनीतिक नहीं) जीवन में वापस लाने की कोशिश की।

IV. सदस्यता
A. यरूशलेम में एक उच्च न्यायालय का पहला बाइबल का उल्लेख 2 इतिहास 19:8-11 है। यह बना हुआ था
   1. लेवियों
   2. याजकों
   3. घरानों के मुख्य पुरूष (यानी, पुरनिये, तुलना I Macc; 14:20; II Macc; 4:20)
B. मक्काबी अवधि के दौरान (1) सदूकीय याजकीय घरानों और (2) स्थानीय कुलीनों (तुलना I Macc. 7:33; 11:23; 14:28) का प्रभुत्व था। बाद में इस अवधि में "शास्त्रियों" (मूसा के वकील, आमतौर पर फरीसी) को, जाहिरा तौर पर सिकंदर जनियस की पत्नी, सालोमी (76-67 ई.पू.) के द्वारा जोड़ा गया था। यहाँ तक कि कहा जाता है कि उसने फरीसियों को प्रमुख समूह बनाया है (तुलना जोसेफस की *Wars of the Jews* 1.5.2)।
C. यीशु के दिन तक न्यायालय इनसे बना था
   1. महायाजकों के घराने
   2. धनी घरानों के स्थानीय लोग
   3. शास्त्री (तुलना लूका 19:47)

V. परामर्श के स्रोत
A. *Dictionary of Jesus and the Gospels*, IVP, pp. 728-732
B. *The Zondervan Pictorial Encyclopedia of the Bible*, vol. 5, pp. 268-273
C. *The New Schaff-Herzog Encyclopedia of Religious Knowledge*, vol. 10, pp. 203-204
D. *The Interpreter's Dictionary of the Bible*, vol. 4, pp. 214-218
E. *Encyclopedia Judaica*, vol. 14, pp. 836-839

3:2 "रात को" रब्बियों ने कहा कि कानून का अध्ययन करने के लिए रात सबसे अच्छा समय था क्योंकि कोई व्यवधान नहीं थे। संभवतः निकुदेमुस यीशु के साथ नहीं दिखना चाहता था, इसलिए वह (और संभवतः उसके साथ अन्य) रात में उसके पास आए।

यूहन्ना के लेखन में हमेशा इस बात का होता है कि एक अनुवादक को कितनी बार दोहरा अर्थ मान लेना चाहिए। ज्योति और अंधकार के बीच आवर्ती विषमता यूहन्ना की विशेषता है (देखें NET बाइबल, पृष्ठ 1898, #7 sn)।

▣ **"रब्बी"** यूहन्ना में इसका अर्थ है "शिक्षक" (तुलना यूहन्ना 1:38; 4:31; मरकुस 9:5; 11:21)। यहूदी अगुवों को परेशान करने वाली चीजों में से एक यह थी कि यीशु ने एक रब्बियों के धर्मशास्त्रीय स्कूलों में भाग नहीं लिया था। नासरत में स्थानीय आराधनालय के अध्ययन के बाद उनका कोई तल्मूड संबंधी अध्ययन नहीं था।

▣ **"तू परमेश्वर की ओर से आया है"** इस खंड को जोर देने के लिए वाक्य में पहले रखा गया है। संभवतः यह व्यवस्थाविवरण 18:15,18 की भविष्यवाणी की ओर संकेत करता है। नीकुदेमुस ने यीशु के कार्यों और शब्दों की शक्ति को पहचाना, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वह परमेश्वर के साथ आध्यात्मिक रूप से सही था।

▣ **"यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो"** यह एक तृतीय श्रेणी सशर्त वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित वास्तविकता।

3:3,5,11 "सच, सच" यह अक्षरशः "आमीन, आमीन"है। यह पुराने नियम से "विश्वास" के लिए शब्द है। यह "दृढ़ होना" या "निश्चित होना"मूल से है। यीशु ने इसका इस्तेमाल महत्वपूर्ण कथनों की भूमिका प्रस्तुत करने के लिए किया था। बाद में इसका इस्तेमाल सत्य कथन की पुष्टि करने के तरीके के रूप में भी किया गया। प्रारंभिक दोहरीकरण यूहन्ना रचित सुसमाचार में विशिष्ट है। "आमीन" शब्द के बार-बार दोहराए जाने से यीशु और नीकुदेमुस के बीच संवाद के चरणों का पता चलता है।
विशेष विषय: आमीन यूहन्ना 1:51 पर देखें

3:3 "यदि कोई" यह भी एक तीसरी श्रेणी का सशर्त वाक्य है, जैसे यूहन्ना 3:2 में निकुदेमुस का कथन।

NASB, NKJV,
TEV **" नये सिरे से जन्मा"**
NRSV, NJB **"ऊपर से जन्मा"**

यह अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य संशयार्थ-सूचक है। शब्द (*anōthen*) का मतलब हो सकता है

1. "शारीरिक रूप से दूसरी बार जन्म"
2. "शुरुआत से जन्मा हुआ" (तुलना प्रेरितों के काम 26: 4)
3. "ऊपर से जन्मा," जो इस संदर्भ में सही बैठता है (तुलना यूहन्ना 3:7,31;19:11)

यह शायद यूहन्ना के शब्दों के प्रयोग का एक और उदाहरण है जिसके दो अर्थ हैं (द्विअर्थी), ये दोनों सच हैं (तुलना Bauer, Arndt, Gengrich and Danker's *A Greek-English Lexicon of the New Testament,* p. 77)। जैसा कि यूहन्ना 3: 4 से स्पष्ट है, निकुदेमुस ने इसे विकल्प # 1 के रूप में समझा।यूहन्ना और पतरस (तुलना 1 पतरस 1:23) उद्धार के लिए इस पारिवारिक उपमा का प्रयोग करते हैं जबकि पौलुस शब्द अपनाने का प्रयोग करता है। ध्यान केंद्रित करने में पिता के जन्म देने की क्रिया पर ध्यान केंद्रित किया गया है (तुलना 1:13)। उद्धार परमेश्वर का उपहार और कार्य है (तुलना यूहन्ना 1:12-13; रोमियों 3:21-24; 6:11; इफिसियों 2: 8-9)।

▣ **"वह देख नहीं सकता"** यह मुहावरेदार वाक्यांश यूहन्ना 3:5 में "प्रवेश नहीं कर सकता" के समान है।

▣ **"परमेश्वर का राज्य"** इस वाक्यांश का उपयोग केवल दो बार यूहन्ना (तुलना यूहन्ना 3:5) में प्रयोग किया गया है । यह सिनॉप्टिक सुसमाचारों में एक महत्वपूर्ण वाक्यांश है। यीशु के पहले और अंतिम उपदेश और उसके अधिकांश दृष्टांतों में, इस विषय पर चर्चा की गई है। अब यह मानव के दिलों में परमेश्वर के शासन को दर्शाता है! यह आश्चर्य की बात है कि यूहन्ना केवल दो बार इस वाक्यांश का प्रयोग करता है (और यीशु के दृष्टान्तों में बिल्कुल नहीं)। विशेष विषय नीचे देखें। यूहन्ना के लिए "अनन्त जीवन" एक महत्वपूर्ण शब्द और रूपक है।

वाक्यांश यीशु की शिक्षाओं के युगांत विषयक (अंत समय)रूझान से संबंधित है। यह "पहले से ही, लेकिन अभी तक नहीं" धर्मशास्त्रीय विरोधाभास दो युगों की यहूदी अवधारणा से संबंधित है, वर्तमान दुष्ट युग और आने वाला धार्मिक युग जिसका शुभारंभ मसीहा द्वारा किया जाएगा। यहूदियों को आत्मा से सशक्त सैन्य अगुवे (पुराने नियम में न्यायाधीशों की तरह) के केवल एक बार आने की उम्मीद थी। यीशु के दो बार आगमन ने दो युगों की अतिव्याप्ति की। बैतलहम में देहधारण के साथ मानव इतिहास में परमेश्वर का राज्य आ गया है। हालाँकि, यीशु प्रकाशितवाक्य 19 के सैन्य विजेता के रूप में नहीं आया था, लेकिन पीड़ित दास (तुलना यशायाह 53) और विनम्र अगुवे (तुलना जकर्याह 9: 9) के रूप में आया था। इसलिए, राज्य का शुभारंभ हुआ (तुलना मत्ती 3: 2; 4:17; 10: 7; 11:12; 12:28; मरकुस 1:15; लूका 9: 2,11; 11:20; 21: 31-32) लेकिन पूर्णता तक नहीं पहुँचा (तुलना मत्ती 6:10; 16:28; 26:64)।

विश्वासी इन दो युगों के बीच तनाव में रहते हैं। उनके पास पुनरुत्थान जीवन है, लेकिन वे फिर भी शारीरिक रूप से मर रहे हैं।वे पाप की शक्ति से मुक्त हो जाते हैं, फिर भी वे पाप करते हैं। वे जो पहले से ही है और जो अब तक नहीं है,के युगांत विषयक तनाव में रहते हैं!

यूहन्ना में पहले से ही-लेकिन-अभी तक नहीं के तनाव की एक सहायक अभिव्यक्ति Frank Staff's *New Testament Theology* में पाई गई है:

> "यूहन्ना रचित सुसमाचार भविष्य में आगमन के बारे में सुनिश्चित है (14:3,18 f., 28; 16:16,22) और यह पुनरुत्थान और 'अंतिम दिन' में अंतिम न्याय के बारे में स्पष्ट रूप से बोलता है। (5:28 f: 6:39 f; 44,54; 11:24; 12:48); फिर भी इस पूरे चौथे सुसमाचार में, अनंत जीवन, न्याय, और पुनरुत्थान वर्तमान वास्तविकताएं हैं (3:18f.; 4:23; 5:25; 6:54; 11:23ff. 12: 28,31; 13:31f.; 14:17; 17:26)" (पृ. 311)।

विशेष विषय: परमेश्वर का राज्य (SPECIAL TOPIC: THE KINGDOM OF GOD)

पुराने नियम में YHWH को इस्राएल का राजा (तुलना 1 शमूएल 8:7; भजनसंहिता 10:16; 24:7-9; 29:10; 44:4; 89:18; 95:3; यशायाह 43:15; 44:6) और मसीहा को आदर्श राजा के रूप में माना जाता था (तुलना भजनसंहिता 2:6; यशायाह 9:6-7; 11:1-5)। बैतलहम में यीशु के जन्म के साथ(6-4 ई.पू.) परमेश्वर का राज्य ने नई शक्ति और छुटकारे के साथ मानव इतिहास में प्रवेश किया (नई वाचा, तुलना यिर्मयाह 31:31-34; यहेजकेल 36:27-36)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने राज्य के निकट आने की घोषणा की (तुलना मत्ती 3:2; मरकुस 1:15)। यीशु ने स्पष्ट रूप से सिखाया था कि राज्य स्वयं उसमें और उसकी शिक्षाओं में मौजूद था (तुलना मत्ती 4:17,23; 10: 7; 12:28; लूका 10:9,11; 11:20; 17:21; 21:31-32)। फिर भी राज्य भविष्य भी है (तुलना मत्ती 16:28; 24:14; 26:29; मरकुस 9:11-11; 21:31; 22:16,18)।

मरकुस और लूका के सिनॉप्टिक सामानंतरो में हम वाक्यांश पाते हैं, "परमेश्वर का राज्य।" यह यीशु की शिक्षाओं का एक सामान्य विषय था जिसमें मानव के हृदयों में परमेश्वर के वर्तमान राज्य को शामिल किया गया था, जो एक दिन सारी पृथ्वी पर परिपूर्ण होगा। यह मत्ती 6:10 में यीशु की प्रार्थना में परिलक्षित होता है। मत्ती ने, यहूदियों को लिखते हुए, उस वाक्यांश को पसंद किया जिसमें परमेश्वर के नाम का प्रयोग नहीं था (अर्थात, स्वर्ग का राज्य), जबकि मरकुस और लूका ने, अन्यजातियों को लिखते हुए, देवता के नाम का उपयोग करते हुए सामान्य पदनाम का प्रयोग किया।

यह सिनॉप्टिक सुसमाचारों में एक महत्त्वपूर्ण वाक्यांश है। यीशु के पहले और अंतिम उपदेशों और उसके अधिकांश दृष्टांतों में, यह विषय लिया गया। यह मानव हृदयों में इस समय परमेश्वर के राज्य का उल्लेख करता है! यह आश्चर्यजनक है कि यूहन्ना इस वाक्यांश का प्रयोग केवल दो बार करता है (और यीशु के दृष्टान्तों में कभी नहीं)। यूहन्ना के सुसमाचार में "अनन्त जीवन" एक महत्त्वपूर्ण रूपक है।

मसीह के दो आगमनों के कारण इस वाक्यांश के साथ तनाव उत्पन्न होता है। पुराना नियम केवल परमेश्वर के मसीहा - एक सैन्य, न्यायिक, महिमामय आगमन के एक आने पर ध्यान केंद्रित किया - लेकिन नये नियम से पता चलता है कि वह पहली बार यशायाह 53 के पीड़ित दास और जकर्याह 9:9 के दीन राजा के रूप में आया था। दो यहूदी युग, दुष्टता का युग और धार्मिकता का नया युग, अतिव्याप्त होते हैं। यीशु वर्तमान में विश्वासियों के हृदयों में राज करता है, लेकिन एक दिन सारी सृष्टि पर राज करेगा। वह पुराने नियम की भविष्यवाणी के समान आएगा (तुलना प्रकाशितवाक्य 19)! विश्वासी परमेश्वर के राज्य के "पहले से ही" के मुकाबले "अभी तक नहीं" में रहते हैं (तुलना Gordon D. Fee and Douglas Stuart's *How to Read The Bible For All Its Worth*, pp. 131-134)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 3:4-8

4नीकुदेमुस ने उससे कहा,"मनुष्य जब बूढ़ा हो गया,तो कैसे जन्म ले सकता है?क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?" 5यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। 6क्योंकि जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। 7अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। 8हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।''

3:5 "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे" यह एक और तृतीय श्रेणी का सशर्त वाक्य है।यहाँ एक विरोधाभास (यूहन्ना के लेखन की विशिष्टता) हो सकता है इनमें

1. भौतिक बनाम आध्यात्मिक ("आत्मा" के साथ कोई लेख नहीं)
2. सांसारिक बनाम स्वर्गीय।

यह विरोधाभास यूहन्ना 3: 6 में निहित है।
"जल" के अर्थ के सिद्धांत हैं
1. रब्बी इसे पुरुष वीर्य के लिए उपयोग करते हैं।
2. प्रसव का पानी
3. यूहन्ना का बपतिस्मा जो पश्चाताप का प्रतीक है (तुलना यूहन्ना 1:26; 3:23)
4. पुराने नियम की पृष्ठभूमि में अर्थ है आत्मा द्वारा अनुष्ठानिक छिड़काव (तुलना यहेजकेल .36: 25-27)
5. मसीही बपतिस्मा (हालाँकि, नीकुदेमुस इसे इस तरह नहीं समझ सकता था, जिसका उल्लेख पहली बार जस्टिन और इरेनेउस द्वारा किया गया था)

संदर्भ में सिद्धांत #3 - यूहन्ना के पानी के बपतिस्मा और यूहन्ना के मसीहा के पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा देने के बारे में कथन- सबसे स्पष्ट अर्थ होना चाहिए। इस संदर्भ में जन्म, रूपक है और हमें नीकुदेमुस की गलतफहमी को शब्दों की व्याख्या पर हावी नहीं होने देना चाहिए। इसलिए, सिद्धांत #1 अनुचित है। हालाँकि, नीकुदेमुस ने यीशु के शब्दों को बाद के मसीही बपतिस्मा के रूप में नहीं समझा होगा, यूहन्ना प्रेरित अक्सर अपने धर्मशास्त्र को यीशु के ऐतिहासिक शब्दों में उद्धृत करते हैं (तुलना यूहन्ना 3:14-21)। सिद्धांत #2 यूहन्ना के ऊपर और नीचे, परमेश्वर के दायरे और सांसारिक दायरे के द्वैतवाद में सही बैठेगा। इन शब्दों को परिभाषित करने में, हमें यह निर्धारित करना चाहिए कि क्या वे विरोधाभासी हैं (#1 या #2) या पूरक (#4)।

D.A. Carson, *Exegetical Fallacies,* में एक अन्य विकल्प का उल्लेख किया गया है: दोनों शब्द एक जन्म का उल्लेख करते हैं, यह यहेजकेल 36:25-27 के अनुसार एक युगांतरकारी जन्म है, जिसमें यिर्मयाह 31:31-34 (पृष्ठ 42) की "नई वाचा" का वर्णन है।

F.F. Bruce, *Answers to Questions,* भी यहेजकेल को यीशु के शब्दों के पीछे पुराने नियम के संकेत के रूप में देखता है। यह शायद धर्मान्तरित बपतिस्मे के लिए एक संदर्भ रहा होगा, जिसे नीकुदेमुस, एक विख्यात रब्बी शिक्षक को भी करना चाहिए! (पृ. 67)।

▣ **"परमेश्वर का राज्य"** एक प्राचीन यूनानी पांडुलिपि (यानी, MS ℵ) और कई कलीसियाओं के पिताओं में, वाक्यांश "स्वर्ग का राज्य" है, जो मत्ती रचित सुसमाचार में आम है। हालांकि, यूहन्ना 3:3 में "परमेश्वर का राज्य" वाक्यांश आता है (केवल यूहन्ना 3:3 और 5 ही ऐसे स्थान हैं जहाँ यह वाक्यांश यूहन्ना में दिखाई देता है)। यूहन्ना, अन्यजातियों को लिखते समय (जैसा कि मरकुस और लूका करते हैं), परमेश्वर के नाम के लिए यहूदी शब्द-बाहुल्य का उपयोग नहीं करते हैं।

3:6 यह फिर से लंबवत द्वैतवाद है (ऊपर बनाम नीचे) जो यूहन्ना में इतना आम है (तुलना यूहन्ना 3:11)।

3:7 "तुझ. . . तुझे" पहला वाला एकवचन है, नीकुदेमुस का उल्लेख करते हुए, लेकिन दूसरा वाला बहुवचन है,सब मनुष्यों पर लागू होने वाले एक सामान्य सिद्धांत का उल्लेख करते हुए (यूहन्ना 3:11 में एकवचन और बहुवचन पर एक ही क्रीड़ा है)।

कोई भी अपने नस्लीय वंश पर भरोसा करने की यहूदी प्रवृत्ति के प्रकाश में इसकी व्याख्या करने के लिए आकर्षित होता है (तुलना 4:12; 8:53)। यूहन्ना, पहली शताब्दी के अंत की ओर लिखते हुए, स्पष्ट रूप से ज्ञानवाद, और यहूदी नस्लीय अहंकार का सामना करता है।

▣ **"अवश्य"** यूनानी क्रिया *dei* (अक्षरशः "यह आवश्यक है," (BAGD 172), वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक) का 3 बार अध्याय 3 में प्रयोग किया गया है (यूहन्ना 3:7,14,30)। यह उन चीजों को दर्शाता है जो परमेश्वर की योजना को आगे बढ़ने के लिए घटित होनी चाहिए (तुलना यूहन्ना 4:24; 9:4; 10:16; 12:34; 20:9)

3:8 इब्रानी (और अरामी) शब्द (*ruach*) और यूनानी शब्द (*pneuma*) पर एक क्रीड़ा है जिसका अर्थ है "हवा," "साँस" और "आत्मा" दोनों है। मुद्दा यह है कि हवा को स्वतंत्रता है, और आत्मा को भी। मनुष्य हवा को नहीं किंतु उसके प्रभाव को देख सकता है; इसलिए आत्मा को भी मानवजाति का उद्धार उसके नियंत्रण में नहीं है, लेकिन आत्मा के नियंत्रण में है (तुलना यहेजकेल 37)। यह संभव है कि यूहन्ना 3:5-7 भी इसी सच्चाई को प्रतिबिंबित करता है। उद्धार आत्मा के प्रारंभ का एक संयोजन (तुलना यूहन्ना 6: 44,65) और प्रत्येक व्यक्ति का विश्वास / पश्चाताप प्रतिक्रिया (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16,18) है।

यूहन्ना का सुसमाचार विशिष्ट रूप से आत्मा के व्यक्तित्व और कार्य पर केंद्रित है (तुलना यूहन्ना 14:17,25-26; 16:7-7)। वह धार्मिकता के नए युग को परमेश्वर की आत्मा के युग के रूप में देखता है।

पद 8 इस रहस्य पर जोर देता है कि क्यों कुछ लोग विश्वास करते हैं जब वे सुसमाचार सुनते/ देखते हैं और अन्य नहीं करते हैं। यूहन्ना का दावा है कि कोई भी आत्मा के द्वारा छुए जाए बिना विश्वास नहीं कर सकता (तुलना यूहन्ना 1:13; 6:44,65)। यह पद धर्मशास्त्र को पुष्ट करती है। हालाँकि, वाचा की प्रतिक्रिया (यानी, एक दिव्य प्रस्ताव की मानवीय स्वीकृति)

का सवाल मानता है कि आत्मा सभी को स्पर्श करता है। क्यों कुछ लोग विश्वास करने से इनकार करते हैं यह अधर्म का महान रहस्य है (यानी, पतन की आत्म-केंद्रितता)। जितना अधिक मैं वृद्ध होता जाता हूँ, मैं अपनी बाइबल का अधिक अध्ययन करता हूँ, जितना अधिक मैं परमेश्वर के लोगों की सेवा करता हूँ, उतना ही मैं जीवन के "रहस्य" लिखता हूँ। हम मानव विद्रोह के अंधेरे कोहरे (यानी, 1 कुरिन्थियों 13:12) में रहते हैं! समझाने में सक्षम होने अथवा इसे दूसरे तरीके से रखें तो, एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र को विकसित करना परमेश्वर पर भरोसा करने जितना महत्वपूर्ण नहीं है। अय्यूब को कभी "क्यों" नहीं बताया गया था!

विशेष विषय: साँस, हवा, आत्मा (SPECIAL TOPIC: BREATH, WIND, SPIRIT)

इब्रानी शब्द *ruach* (BDB 924) और यूनानी शब्द *pneuma* का अर्थ "आत्मा," "साँस" या "हवा" हो सकता है (विशेष विषय: बाइबल में आत्मा देखें) आत्मा को अक्सर सृजन से जोड़ा जाता है (तुलना उत्पत्ति 1: 2; अय्यूब 26:13; भजनसंहिता 104:30)। पुराना नियम परमेश्वर और उसकी आत्मा के बीच संबंधों को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं करता है (विशेष विषय: त्रिएकत्व देखें)। अय्यूब 28:26-28; भजनसंहिता 104: 24 और नीतिवचन 3:19; 8:22-23 में परमेश्वर ने सभी चीजों को बनाने के लिए "बुद्धि" (BDB 315, एक स्त्रीलिंग संज्ञा, तुलना नीतिवचन 8:12) का प्रयोग किया। नये नियम में यीशु को परमेश्वर का प्रतिनिधि कहा जाता है (तुलना यूहन्ना 1:1-3; 1 कुरिन्थियों 8:6; कुलुस्सियों 1:15-17; इब्रानियों 1:2-3)।जिस प्रकार छुटकारे में, उसी प्रकार, सृजन में, देवत्व के तीनों व्यक्तित्व सम्मिलित हैं। उत्पत्ति 1 स्वयं किसी भी अतिरिक्त कारण पर जोर नहीं देती है (तुलना यशायाह 45:5-7)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 3:9-15

[9]नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया, "ये बातें कैसे हो सकती हैं?" [10]यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, "तू
इस्राएलियों का गुरु होकर भी क्या इन बातों को नहीं समझता? [11]मैं तुझसे सच सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं
वह कहते हैं,और जिसे हमने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते। [12]जब मैं ने
तुम से पृथ्वी की बातें कहीं और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ तो फिर कैसे विश्वास
करोगे? [13]जो कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। [14]और
जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया,उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर
चढ़ाया जाए; [15]ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए।

3:9-10 नीकुदेमुस को यीशु की प्रतीकात्मक शब्दावली को (1) यहूदी धर्म के धर्मान्तरित बपतिस्मे और (2) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के उपदेश के प्रकाश में समझना चाहिए था।

यह हो सकता है कि मानव ज्ञान को जानबूझकर कम माना जा रहा है, यहाँ तक कि नीकुदेमुस जैसा व्यक्ति भी, जो यहूदियों का शासक था, आध्यात्मिक चीजों को नहीं समझ सका। यूहन्ना रचित सुसमाचार आरंभिक ज्ञानवाद, एक मतान्तर जो मानव ज्ञान को उद्धार के साधन के रूप में महत्व देता है, का मुकाबला करने के लिए लिखा गया था। केवल यीशु ही सब के लिए सच्ची ज्योति है (तुलना यूहन्ना 3:19), न कि केवल एक कुलीन समूह के लिए।

3:11 "हम जो जानते हैं, वह कहते हैं" ये बहुवचन सर्वनाम यीशु और यूहन्ना प्रेरित (तुलना यूहन्ना 3:11) या यीशु और पिता का उल्लेख करते हैं, जो संदर्भ में बेहतर ढंग से उपयुक्त है (यूहन्ना 3:12)। सुसमाचार अटकल नहीं है, लेकिन दिव्य प्रकटीकरण है!

▣ **"तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते"** यूहन्ना अक्सर स्वीकार/ग्रहण (*lambanō*) और इसके पूर्वसर्गीय समासों का उपयोग धर्मशास्त्रीय अर्थों में करते हैं।

1. यीशु को ग्रहण करने के लिए
   a. नकारात्मक रूप से (यूहन्ना 1:11; 3:11, 32; 5:43, 47)
   b. सकारात्मक रूप से (यूहन्ना 1:12; 3:11,33; 5:43; 13:20)
2. आत्मा को ग्रहण करने के लिए
   a. नकारात्मक रूप से (यूहन्ना 14:17)
   b. सकारात्मक रूप से (यूहन्ना 7:39)
3. यीशु की बातों को ग्रहण करने के लिए
   a. नकारात्मक (यूहन्ना 12:48)
   b. सकारात्मक रूप से (यूहन्ना 17:8)

विशेष विषय: यीशु के लिए गवाहियाँ यूहन्ना 1:8 में देखें।

3:12 "जब. . .यदि" पहला प्रथम श्रेणी का हेतुमद वाक्य है, जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सत्य माना जाता है। दूसरा एक तृतीय श्रेणी हेतुमद वाक्य है जिसका अर्थ संभावित कार्रवाई है।

▣ **"आप"** सर्वनाम और क्रियाएँ बहुवचन हैं।जब नीकुदेमुस यीशु के पास आया तब उस के साथ छात्र या अन्य फरीसी हो सकते हैं या सभी अविश्वासी यहूदियों के लिए यह एक सामान्य कथन हो सकता है(यानी, एक समूह के प्रतिनिधि के रूप में नीकुदेमुस) जैसे यूहन्ना 3: 7 और 11.

3:13 इस पद का उद्देश्य यीशु के प्रकटीकरण को सत्य, पूर्ण, प्रत्यक्ष, और अद्वितीय के रूप में प्रमाणित करना है (तुलना यूहन्ना 1:1-14)। यह यूहन्ना में ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का एक और उदाहरण है: स्वर्ग बनाम पृथ्वी, भौतिक बनाम आध्यात्मिक, नीकुदेमुस की उत्पत्ति बनाम यीशु की उत्पत्ति (तुलना यूहन्ना 1:51; 6: 33,38,41,50,51,58,62) । यह पद दावा करता है (1)देवता; (2) पूर्व अस्तित्व; और (3) त्रिएकत्व के अनन्त द्वितीय व्यक्ति के देहधारण का (त्रिएकत्व के लिए यूहन्ना 14:26 पर विशेष विषय को देखें)।

▣ **"मनुष्य का पुत्र"** यह यीशु का स्व-पदनाम है; पहली सदी के यहूदी धर्म में इसका कोई राष्ट्रवादी, सैन्यवादी, मसीही प्रभाव नहीं था। यह शब्द यहेजकेल 2:1 और भजनसंहिता 8:4 से आया है, जहाँ इसका मतलब था "मनुष्य" और दानिय्येल 7:13 जहाँ इसका निहितार्थ है देवता। यह शब्द यीशु के व्यक्तित्व के विरोधाभास को जोड़ता है, पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य (तुलना 1 यूहन्ना 4:1-3)।

3:14-21 यह निश्चित रूप से जानना मुश्किल है कि यीशु का नीकुदेमुस के साथ वार्तालाप कहाँ रुकता है और यीशु या यूहन्ना प्रेरित की बाद की टिप्पणियां शुरू होती हैं। यह संभव है कि सिनॉप्टिक सुसमाचार यीशु के सार्वजनिक शिक्षण सेवकाई को दर्ज़ करते हैं, जबकि यूहन्ना अपने शिष्यों के साथ अपने निजी सत्रों को दर्ज़ करता है। 14-21पदों की रूपरेखा निम्न प्रकार से बनाई जा सकती है।

1. पद 14-15 यीशु से संबंधित हैं
2. पद 16-17 पिता से संबंधित हैं
3. पद 18-21 मानव जाति से संबंधित है

याद रखें कि चाहे यह यीशु हो या यूहन्ना कथनों की सच्चाई को प्रभावित नहीं करता है!

3:14 "जिस रीति से मूसा ने साँप को ऊँचे पर चढ़ाया" यह गिनती 21:4-9 का संदर्भ है जो जंगल भटकने की अवधि के दौरान न्याय का अनुभव बताता है। केंद्रीय सत्य यह है कि मनुष्य को परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए, भले ही वे इसे पूरी तरह न समझे हों। परमेश्वर ने इस्राएलियों को साँप के काटने से बचाने का एक तरीका प्रदान किया यदि वे केवल विश्वास करें। यह विश्वास उसके वचन / वचन (तुलना गिनती 21: 8) के लिए उनकी आज्ञाकारिता द्वारा साबित किया गया था।

▣ **"ऊँचे पर चढ़ाया"** इस यूनानी शब्द (तुलना यूहन्ना 8:28; 12:32,34) का अनुवाद अक्सर "अति उच्च" किया गया था (तुलना प्रेरितों के काम 2:33;5:31; फिलिप्पियों 2:9) और एक और शब्द यूहन्ना दो अर्थों में उपयोग करता है (द्विअर्थी तुलना यूहन्ना 1:5; 3: 3,8)। जैसा परमेश्वर ने उन लोगों को साँप के काटने से मृत्यु से बचाने का वादा किया था, जो परमेश्वर के वचन में विश्वास करते और काँसे के साँप को देखते थे, वैसे ही वे भी जो परमेश्वर के वचन में विश्वास (मसीह के बारे में सुसमाचार, वह जो क्रूस पर चढ़ाया गया) और यीशु पर भरोसा करते हैं साँप (शैतान, पाप) के काटने से बचाये (उद्धार) जाएँगे (तुलना यूहन्ना 12: 31-32)।

3:15-18 "जो कोई" (यूहन्ना 3:15) "जो" (यूहन्ना 3:16) "जो" (यूहन्ना 3:18) परमेश्वर का प्रेम सम्पूर्ण मानव जाति के लिए एक निमंत्रण है (तुलना यशायाह 55: 1-3; यहेजकेल 18: 23,32; यूहन्ना 1:29; 3:16; 6: 33,51; 2 कुरिंथियों 5:11; 1 तीमुथियुस 2:4; 4:10; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3: 9; 1 यूहन्ना 2: 2; 4:14)। उद्धार का प्रस्ताव सार्वभौमिक है, लेकिन इसकी स्वीकृति सार्वभौमिक नहीं है!

3:15 "विश्वास करता है" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है। विश्वास एक निरंतर भरोसा है। यूहन्ना 1:12 पर टिप्पणी और यूहन्ना 1:7 और 2:23 में विशेष विषयों पर ध्यान दें।

▣ **"उस पर"** यह न केवल यीशु के बारे में तथ्यों (धर्मशास्त्रीय सत्यों) को, बल्कि उसके साथ व्यक्तिगत संबंध को संदर्भित

करता है। उद्धार है (1) माना जाने वाला एक संदेश; (2) एक व्यक्ति जिसे ग्रहण किया जाए और जिसका आज्ञापालन किया जाए; और (3) उस व्यक्ति के समान जीने के लिए एक जीवन!

यहाँ व्याकरणिक रूप असामान्य है। यह पूर्वसर्ग *en* के साथ सर्वनाम है जो केवल यूहन्ना में यहाँ पाया जाता है; सामान्य तौर पर यह पूर्वसर्ग *eis* है। यह बस संभव है कि यह "अनन्त जीवन पाए" से संबंधित होगा (तुलना *The New Testament in Basic English* by Harold Greenlee)।

3:15,16 "अनन्त जीवन" यह यूनानी शब्द (*zoē*) गुणवत्ता और मात्रा (तुलना यूहन्ना 5:24) को संदर्भित करता है। मत्ती 25:46 में इसी शब्द का प्रयोग अनंत वियोग के लिए किया जाता है। यूहन्ना में *zoē* (33 बार, अधिकतर अध्याय 5 और 6 में प्रयुक्त) सामान्य रूप से (भौतिक जीवन के लिए प्रयुक्त क्रिया, अर्थात 4:50,51,53) पुनरुत्थान, युगांत विषयक जीवन या नए युग का जीवन, स्वयं परमेश्वर के जीवन को संदर्भित करता है।

यूहन्ना उसके अनन्त जीवन पर जोर देने में सुसमाचारों में अद्वितीय है। यह उसके सुसमाचार का एक प्रमुख विषय और लक्ष्य है (तुलना यूहन्ना 3:15; 4:36; 5:39; 6:54,68; 10:28; 12:25; 17:2,3)।

NASB (अद्यतन) पाठ यूहन्ना 3:16-21

[16]"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। [17]क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। [18]जो उस पर विश्वास करता है,उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। [19]और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। [20]क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। [21]परन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।"

3:16 "परमेश्वर ने ऐसा प्रेम किया" यह एक अनिर्दिष्टकालीन कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (जैसा कि क्रिया "दिया"), जो यहाँ पिछले समय में एक पूर्ण किए गए कार्य की बात करता है (परमेश्वर ने यीशु को भेजा)। पद 16-17 मुख्य रूप से पिता के प्यार की चर्चा करते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 4:7-21, विशेषतः यूहन्ना 3:9-10)। "प्रेम किया" शब्द *agapaō* है। प्राचीनकालीन यूनानी में इसका ज्यादा इस्तेमाल नहीं किया गया। आरंभिक कलीसिया ने इसे ले लिया और इसे विशिष्ट अर्थ से भर दिया। कुछ संदर्भों में, यह पिता या पुत्र के प्रेम से संबंधित है, हालांकि, इसका उपयोग मानव प्रेम के लिए नकारात्मक रूप में किया जाता है (तुलना यूहन्ना 3:19; 12:43; 1 यूहन्ना 2:15)। यह पुराने नियम में *hesed* का धर्मशास्त्रीय रूप से पर्यायवाची है, जिसका अर्थ था परमेश्वर की वाचा की विश्वसनीयता। और प्रेम। यूहन्ना के दिन की यूनानी बोली में, शब्द *agapaō* और *phileō* मूलरूप से पर्यायवाची हैं (यूहन्ना 3:35 की तुलना 5:20 से करें)।

दुभाषियों को यह ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त सभी शब्द मानव (मानविकृत) संबंधित हैं। एक अनंत, पवित्र, अद्वितीय आध्यात्मिक व्यक्तित्व (परमेश्वर) का वर्णन करने के प्रयास में हमें उन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो हमारी दुनिया, हमारी भावनाओं, हमारे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का वर्णन करते हैं। सम्पूर्ण मानव शब्दावली कुछ हद तक समरूप या लाक्षणिक है। जो प्रगट हुआ है वह निश्चित रूप से सत्य है, लेकिन अंतिम नहीं। पतित, अस्थायी, परिमित मानव जाति परम वास्तविकता को समझ नहीं सकती है।

विशेष विषय: मनुष्य रूप में वर्णित परमेश्वर (अवतारवाद) (SPECIAL TOPIC: GOD DESCRIBED AS HUMAN (ANTHROPOMORPHISM))

I. इस प्रकार की भाषा (अर्थात, मानवीय शब्दों में वर्णित देवता) पुराने नियम में बहुत आम है (कुछ उदाहरण)
   A. शारीरिक अंग
      1. आँखें - उत्पत्ति 1:4,31; 6:8; निर्गमन 33:17; गिनती 14:14; व्यवस्थाविवरण 11:12; जकर्याह 4:10
      2. हाथ – निर्गमन 15:17; गिनती 11:23; व्यवस्थाविवरण 2:15
      3. भुजा - निर्गमन 6:6; 15:16; व्यवस्थाविवरण 4:34; 5:15
      4. कान – गिनती 11:18; 1 शमूएल 8:21; 2 राजाओं 19:16; भजनसंहिता 5:1; 10:17; 18:6
      5. मुख - निर्गमन 33:11; लैव्यव्यवस्था 20:3,5,6; गिनती 6:25; 12:8; व्यवस्थाविवरण 31:17; 32:20; 34:10

6. उंगली – निर्गमन 8:19; 31:18; व्यवस्थाविवरण 9:10; भजनसंहिता 8:3
7. वाणी - उत्पत्ति 3:9,11,13; निर्गमन 15:26; 19:19; व्यवस्थाविवरण 26:17; 27:10
8. पाँव - निर्गमन 24:10; यहेजकेल 43:7
9. मानव रूप – निर्गमन 24:9-11; भजनसंहिता 47; यशायाह 6:1; यहेजकेल 1:26
10. यहोवा का दूत - उत्पत्ति 16:7-13; 22:11-15; 31:11,13; 48:15-16; निर्गमन 3: 4,13-21; 14:19; न्यायियों 2:1; 6: 22-23; 13: 3-22

B. शारीरिक क्रियाएं (उदाहरण देखें)
1. सृजन की क्रियाविधि के रूप में बोलना - उत्पत्ति 1:3,6,9,11,14,20,24,26
2. चलना (यानी, शब्द) - उत्पत्ति 3:8; लैव्यव्यवस्था 26:12; व्यवस्थाविवरण 23:14; हबक्कूक 23:14
3. नूह के जहाज का द्वार बंद करना - उत्पत्ति 7:16
4. सुखदायक सुगंध - उत्पत्ति 8:21; लैव्यव्यवस्था 26:31; आमोस 5:21
5. उतर आना - उत्पत्ति 11:5; 18:21; निर्गमन 3:8; 19:11,18,20
6. मूसा को दफनाना – व्यवस्थाविवरण 34: 6

C. मानवीय भावनाएँ (कुछ उदाहरण)
1. पछतावा/पश्चाताप - उत्पत्ति 6:6,7; निर्गमन 32:14; न्यायियों 2:18; 1 शमूएल 15:29,35; आमोस 7:3,6
2. कोप – निर्गमन 4:14; 15:7; गिनती 11:10; 12:9; 22:22; 25:3,4; 32:10,13,14; व्यवस्थाविवरण 6:15; 7: 4; 29:20
3. जलन – निर्गमन 20:5; 34:14; व्यवस्थाविवरण 4:24; 5:9; 6:15; 32:16,21; यहोशू 24:19
4. नफरत/घृणा - लैव्यव्यवस्था 20:23; 26:30; व्यवस्थाविवरण 32:19

D. परिवारिक शब्द (कुछ उदाहरण)
1. पिता
   a. इस्राएल का – निर्गमन 4:22; व्यवस्थाविवरण 14:1; यशायाह 1:2; 63:16; 64:8; यिर्मयाह 31:9; होशे 11:1
   b. राजा का - 2 शमूएल 7:11-16; भजनसंहिता 2:7
   c. पिता समान कार्यों के रूपक – व्यवस्थाविवरण 1:31; 8:5; 32: 6-14; भजनसंहिता 27:10; नीतिवचन 3:12, यिर्मयाह 3:4,22; 31:20; होशे 11:1-4; मलाकी 3:17
2. अभिभावक - होशे 11:1-4
3. माता - यशायाह 49:15; 66:9-13 (स्तनपान कराने वाली माता के तुल्य)
4. विश्वसनीय युवा प्रेमी - होशे 1-3

II. इस प्रकार की भाषा के प्रयोग के कारण

A. मनुष्य पर स्वयं को प्रकट करना परमेश्वर की आवश्यकता है। पतित, सांसारिक शब्दों के अलावा कोई दूसरी शब्दावली नहीं है। परमेश्वर की पुरुष के रूप में बहुत व्यापक अवधारणा एक उदाहरण है एक मानवीकरण क्योंकि परमेश्वर आत्मा है!

B. परमेश्वर मानव जीवन के सबसे सार्थक पहलुओं को लेता है और उनका प्रयोग स्वयं को पतित मानवता (पिता, माता, अभिभावक, प्रेमी) पर प्रकट करने के लिए करता है।

C. हालांकि कई बार आवश्यक होने पर भी (यानी, उत्पत्ति 3:8),परमेश्वर किसी भी भौतिक रूप तक सीमित नहीं होना चाहता (तुलना निर्गमन 20; व्यवस्थाविवरण 5)

D. अंतिम मानवीकरण यीशु का अवतरित होना है! परमेश्वर शारीरिक, स्पृश्य बन गया (तुलना 1 यूहन्ना 1:1-3)। परमेश्वर का संदेश परमेश्वर का वचन बन गया (तुलना यूहन्ना 1:1-18)।

III. एक अच्छी संक्षिप्त चर्चा के लिए, G.B. Caird, *The Language and Imagery of the Bible*, chapter 10, “Anthropomorphism,” in *The Standard Bible Encyclopedia*, pp. 152-154 देखें।

▣ **"ऐसा"** यह अक्षरशः "इस तरह से" है (यानी, यूहन्ना 7:46; 11:48; 18:22)। यह पद्धति को व्यक्त करता है, भावना को नहीं! परमेश्वर ने अपने प्रेम का प्रदर्शन (तुलना रोमियों 5: 8) मानव जाति के बदले में उसके पुत्र को (तुलना यशायाह 53; रोमियों 3:25; 2 कुरिंथियों 5:21; 1 यूहन्ना 2:2) देकर (यूहन्ना 3:16) और भेजकर (यूहन्ना 3:17, दोनों अनिर्दिष्टकालीन कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं) किया।

▣ **"जगत"** यूहन्ना ने इस यूनानी शब्द *kosmos* का कई अर्थों में इस्तेमाल किया है (यूहन्ना 1:10 पर टिप्पणी और यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय देखें)।

इस पद ने आत्मा (परमेश्वर) और तत्व के बीच के ज्ञानवादी द्वंद्ववाद का भी खंडन किया। यूनानी बुराई का श्रेय तत्व को देने के लिए प्रवृत्त हुए। उनके लिए तत्व (यानी, मानव शरीर) सब मनुष्यों में दिव्य चिंगारी का कारागार था। यूहन्ना तत्व या देह की बुराई को नहीं मानता। परमेश्वर जगत (ग्रह, तुलना रोमियों 8:18-22) और मनुष्य (देह, तुलना रोमियों 8:23) से प्यार करता है। यह यूहन्ना में एक और इच्छानुरूप अस्पष्टता (द्विअर्थी) हो सकती है (तुलना यूहन्ना 1:5; 3:3,8)।

▣ **"एकलौता पुत्र"** इसका अर्थ है "अनोखा, अपनी तरह का एक।" इसे "एकलौता पुत्र" (1) एक यौन- संबंधी अर्थ में या (2) इस अर्थ में कि कोई अन्य संतान नहीं है, नहीं समझा जाना चाहिए। यीशु की तरह अन्य कोई भी संतान नहीं हैं। पूरी टिप्पणी यूहन्ना 1:14 पर देखें।

▣ **"जो कोई उस पर विश्वास करे"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है, जो प्रारंभिक और निरंतर विश्वास पर जोर देता है। यूहन्ना 1:14 और 2:23 पर विशेष विषय देखें। यह पुष्टि जोर देने के लिए यूहन्ना 3:15 से दोहराई गई है। "जो कोई" के लिए परमेश्वर का शुक्र है! इसे किसी एक विशेष समूह (जातीय, बौद्धिक, या धर्मशास्त्रीय) पर किसी तरह के अत्याधिक जोर को संतुलित करना चाहिए। ऐसा नहीं है कि "परमेश्वर की सार्वभौमिकता" और "मानव स्वतंत्र इच्छा" पारस्परिक रूप से विशिष्ट हैं; वे दोनों सच हैं! परमेश्वर हमेशा प्रतिक्रिया शुरू करते हैं और कार्यसूची नियत करता है (तुलना यूहन्ना 6:44,65), लेकिन उसने वाचा के माध्यम से मनुष्यों के साथ अपने संबंधों को संरचित किया है। उन्हें प्रत्युत्तर देना चाहिए और उसके प्रस्ताव और शर्तों का प्रत्युत्तर देना जारी रखना चाहिए!

विशेष विषय: चुनाव/पूर्वनियति और एक धर्मशास्त्रीय संतुलन की आवश्यकता (SPECIAL TOPIC: ELECTION/PREDESTINATION AND THE NEED FOR A THEOLOGICAL BALANCE)

चुनाव एक अद्‌भुत सिद्धांत है। हालाँकि, यह पक्षपात करने के लिए एक आह्वान नहीं है, बल्कि एक माध्यम, एक उपकरण, या दूसरों के छुटकारे का एक साधन बनने का आह्वान है! पुराने नियम में इस शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से सेवा के लिए किया जाता था; नए नियम में इसका प्रयोग मुख्य रूप से उद्धार के लिए किया गया है जो सेवा में परिणित होता है। बाइबल कभी भी परमेश्वर की संप्रभुता और मानव जाति की स्वतंत्र इच्छा के बीच प्रतीत होने वाले विरोधाभास में सामंजस्य स्थापित नहीं करती है, लेकिन उन दोनों की पुष्टि करती है! बाइबल के तनाव का एक अच्छा उदाहरण होगा परमेश्वर की सार्वभौम पसंद पर रोमियों 9 और मानव जाति की आवश्यक प्रतिक्रिया पर रोमियों 10 (तुलना रोमियों 10:11,13)।

इस धर्मशास्त्रीय तनाव की कुंजी इफिसियों 1:4 में मिल सकती है। यीशु परमेश्वर का चुना हुआ जन है और सभी संभावित रूप से उसमें चुने हुए हैं (कार्ल बर्थ)। यीशु पतित मानवजाति की ज़रूरतके लिए परमेश्वर की "हाँ" है (कार्ल बर्थ)। इफिसियों 1:4 भी इस बात पर जोर देकर मुद्दे को स्पष्ट करने में मदद करता है कि पूर्वनियति का लक्ष्य स्वर्ग नहीं है, बल्कि पवित्रता (मसीह की समानता) है। हम अक्सर सुसमाचार के लाभों की ओर आकर्षित होते हैं और जिम्मेदारियों की अनदेखी करते हैं! परमेश्वर का आह्वान (चुनाव) अभी और साथ-साथ अनंत काल के लिए है!

सिद्धांत अन्य सत्यों के संबंध में आते हैं, न कि एकाकी, असंबंधित सत्यों के रूप में। एक अच्छा रूपक हो सकता है एक एकाकी तारा बनाम एक नक्षत्र। परमेश्वर पूर्वी शैलियों में सत्य प्रस्तुत करते हैं, पश्चिमी में नहीं। हमें द्वंद्वात्मक (मिथ्याभासी) सिद्धांतिक सत्यों के जोड़ों के कारण उत्पन्न तनाव को दूर नहीं करना चाहिए:

1. पूर्वनियति के विरुद्ध मानव स्वतंत्र इच्छा
2. विश्वासियों की सुरक्षा के विरुद्ध धीरज की आवश्यकता
3. मूल पाप के विरुद्ध स्वेच्छिक पाप
4. पापहीनता (पूर्णतावाद) के विरुद्ध कम पाप करना
5. प्रारंभिक तात्कालिक दोषमुक्ति और पवित्रीकरण के विरुद्ध प्रगतिशील पवित्रीकरण
6. मसीही स्वतंत्रता के विरुद्ध मसीही जिम्मेदारी
7. परमेश्वर की उत्कृष्टता के विरुद्ध परमेश्वर की स्थिरता
8. अंततः अज्ञात के रूप में परमेश्वर के विरुद्ध पवित्रशास्त्र में ज्ञेय के रूप में परमेश्वर
9. वर्तमान में परमेश्वर के राज्य के विरुद्ध भविष्य में उसकी परिपूर्णता
10. परमेश्वर के उपहार के रूप में पश्चाताप के विरुद्ध एक आवश्यक मानव वाचा प्रतिक्रिया के रूप में पश्चाताप
11. दिव्य रूप में यीशु के विरुद्ध मानव रूप में यीशु

12. पिता के समान रूप में यीशु के विरुद्ध पिता के अधीन रूप में यीशु
"वाचा" की धर्मशास्त्रीय अवधारणा मानव जाति से अनिवार्य प्रारंभिक और निरंतर पश्चातापी विश्वास प्रतिक्रिया के साथ परमेश्वर की संप्रभुता (जो हमेशा पहल करती है और कार्यसूची निर्धारित करती है) को एकजुट करती है (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 3:16,19; 20:21)। विरोधाभास के एक तरफ प्रूफ़-टेक्स्टिंग और दूसरे को हतोत्साहित करने से सावधान रहें! केवल अपने पसंदीदा सिद्धांत या धर्मशास्त्र की प्रणाली का दावा करने से सावधान रहें!

▣ **"नाश न हो"** इसका मतलब यह है कि कुछ नाश होंगे (अनिर्दिष्टकाल मध्यम संशयार्थ-सूचक) है। उनका नाश (*amollumi*, अनिर्दिष्टकाल मध्यम संशयार्थ-सूचक) का सीधा संबंध उनकी यीशु के प्रति विश्वास की कमी से है (तुलना यूहन्ना 11:25)। परमेश्वर उनके अविश्वास को न तो उत्पन्न करता, न संचालित करता अथवा न ही उसकी इच्छा रखता है । (तुलना यहेजकेल 18:23,32; 1 तीमुथियुस 2: 4; 2 पतरस 3:9)।

कई लोगों ने इस शब्द को वस्तुतः लेने का प्रयास किया है और इस तरह से दुष्टों के सर्वनाश का सुझाव दिया है। यह दानिय्येल 12:2और मत्ती 25:46 के विपरीत होगा। पूर्वी अति आलंकारिक साहित्य को एक पश्चिमी व्याख्यात्मक प्रारूप (शाब्दिक और तार्किक) में मजबूर करने के लिए ईमानदार विश्वासियों का यह एक अच्छा उदाहरण है। इस शब्द की अच्छी चर्चा के लिए Robert B. Girdlestone's *Synonyms of the Old Testament,* pp. 275-277 देखें। विशेष विषय: विनाश (*apolummi*) यूहन्ना 10:10 में देखें

फिर, ध्यान दें कि यूहन्ना कैसे सोचता और द्वैतवादी श्रेणियों में लिखता है (यानी, नाशवान बनाम अनंत जीवन)। सिनॉप्टिक सुसमाचारों और यूहन्ना में यीशु की शिक्षाओं की शब्दावली और धर्मशास्त्रीय संरचना बहुत अलग है।आश्चर्य होता है कि सुसमाचार लेखकों को उनके चुने हुए श्रोताओं के लिए उनकी यीशु की सुसमाचारीय प्रस्तुति तैयार करने में कितनी स्वतंत्रता (दैवीय मार्गदर्शन, यानी, प्रेरणा के तहत)थी। Gordon Fee and Douglas Stuart, *How to Read The Bible For All Its Worth*, pp.127-148।

3:17 "जगत पर दण्ड की आज्ञा दे" यूहन्ना में कई अनुच्छेद हैं जो यह दावा करते हैं कि यीशु उद्धारकर्ता के रूप में आया था, न कि न्यायाधीश के रूप में (तुलना यूहन्ना 3:17-21; 8:15; 12:47)। हालाँकि, यूहन्ना में अन्य ऐसे अनुच्छेद हैं जो इस बात पर जोर देते हैं कि यीशु न्याय करने आया था, न्याय करेगा (तुलना यूहन्ना 5: 23-23,27; 9:39; साथ ही साथ नये नियम के अन्य भाग, प्रेरितों के काम 10:42; 17:31; 2 तीमुथियुस 4:1; 1 पतरस 4:5)।

कई धर्मशास्त्रीय टिप्पणियाँ क्रम में हैं।

1. परमेश्वर ने यीशु को न्याय दिया क्योंकि उसने आदर के चिन्ह के रूप में सृजन और छुटकारा किया था (सीएफ यूहन्ना 5:23)
2. यीशु पहली बार न्याय करने नहीं आया था, लेकिन बचाने के लिए (तुलना यूहन्ना 3:17), लेकिन इस तथ्य से कि लोग उसे अस्वीकार करते हैं, वे खुद का न्याय करते हैं।
3. यीशु राजाओं के राजा और न्यायाधीश के रूप में वापस आएगा (तुलना यूहन्ना 9:39)

3:18 यह पद मसीह के माध्यम से एक मुफ्त उद्धार के विरुद्ध स्व-दण्डित न्याय के विषय को दोहराती है। परमेश्वर लोगों को नरक नहीं भेजता है। वे खुद अपने आप को भेजते हैं। विश्वास के निरंतर परिणाम होते हैं ("विश्वास करना," वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत) और अविश्वास के भी ("न्याय किया गया है," पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक और "विश्वास नहीं किया है," पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक)। यूहन्ना 2:23 और 9:7 में विशेष विषय देखें।

3:19-21 "मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना" कई लोग जिन्होंने सुसमाचार को सुना, उसे नकारते हैं, बौद्धिक या सांस्कृतिक कारणों से नहीं, बल्कि मुख्य रूप से नैतिक कारणों से (तुलना अय्यूब 24:13)। ज्योति का तात्पर्य है मसीह (तुलना यूहन्ना 1: 9; 8:12; 9:5; 12:46) और परमेश्वर के प्रेम, मानव जाति की आवश्यकता, मसीह के प्रावधान और आवश्यक प्रतिक्रिया के उसके संदेश से है। यह यूहन्ना 1:1-18 से एक पुनरावर्ती रूपांकन है।

3:19 "यह दण्ड की आज्ञा है" दण्ड, उद्धार की तरह, एक वर्तमान वास्तविकता (तुलना यूहन्ना 3:19; 9:39) और भविष्य की परिणति दोनों है (तुलना यूहन्ना 5: 27-29; 12:31,48)। विश्वासी पहले से ही (साधित युगांत विषयक ज्ञान) और अभी तक नहीं (परिणत युगांत विषयक ज्ञान) में रहते हैं।मसीही जीवन एक आनंद और एक भयानक संघर्ष है; यह हार की एक श्रृंखला के बाद जीत है; आश्वासन तथापि धीरज के बारे में चेतावनी की एक श्रृंखला!

3:21 "जो सत्य पर चलता है" चूंकि "ज्योति" (तुलना यूहन्ना 3:19,20 [दो बार], 21) यीशु के लिए एक स्पष्ट उल्लेख है, यह संभव है कि "सत्य" को भी बड़े अक्षरों में लिखा जाए। Robert Hanna ने *A Grammatical Aid to the Greek New*

Testament में N. Turner को उनके *Grammatical Insights into the New Testament* में उद्धृत किया, जो इसे " वह मनुष्य जो सत्य का शिष्य है" के रूप में अनुवादित करता है (पृष्ठ 144)।

धर्मशास्त्रीय रूप से यह पद मत्ती 7 के समान उसी सत्य को व्यक्त करता है। अनंत जीवन में अवलोकन योग्य विशेषताएँ हैं। एक व्यक्ति के लिए वास्तव में मसीह में परमेश्वर का सामना करना, पवित्र आत्मा से भरना, और वही बने रहना सम्भव नहीं। भूमि का दृष्टान्त फलदायक होने पर केंद्रित है, अंकुरण पर नहीं (तुलना मत्ती 13; मरकुस 4; लूका 8. यूहन्ना 15:1-11 में यूहन्ना की चर्चा पर भी ध्यान दें)। कार्य उद्धार अर्जित नहीं करते हैं, लेकिन वे उसका प्रमाण हैं (तुलना इफिसियों 2:8-9,10)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. "नये सिरे से जन्म" वाक्यांश का क्या अर्थ है?
2. आपको क्या लगता है पद 5 में "पानी" किसे संदर्भित करता है और क्यों?
3. "विश्वास" (बचाने वाला विश्वास) में क्या शामिल है?
4. क्या यूहन्ना 3:16 मानव जाति के प्रति यीशु के प्रेम या पिता के प्रेम के विषय में एक अनुच्छेद है?
5. कैल्विनवाद यूहन्ना 3:16 से कैसे संबंधित है?
6. क्या "नाश" का अर्थ सर्वनाश है?
7. "ज्योति” को परिभाषित करें।

22-36 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. यीशु मसीह के पूर्ण देवत्व पर यूहन्ना का जोर संवाद और व्यक्तिगत मुठभेड़ों के माध्यम से सुसमाचार की शुरुआत से ही व्यक्त किया गया है। यह प्रारूप इस अध्याय में जारी रहता है।

B. यूहन्ना, अपना सुसमाचार पहली सदी के अंत की ओर लिखते हुए, कुछ ऐसे प्रश्नों से निपटता है जो सिनॉप्टिक सुसमाचारों के लिखे जाने के बाद से विकसित हुए थे। उनमें से एक यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले (तुलना प्रेरितों के काम 18: 24-19: 7) के साथ जुड़े बड़े अनुगामी वर्ग और स्पष्ट शुरुआती मतान्तर से संबंधित है। यह महत्वपूर्ण है कि यूहन्ना 1:6-8, 19-36 और 3: 22-36 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने नासरत के यीशु के साथ अपने तुच्छ संबंध की पुष्टि की और यीशु की मसीहाई भूमिका का दावा किया।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 3:22-24
[22]इसके बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए, और वह वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।
[23]यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था; और लोग आकर बपतिस्मा
लेते थे-[24]यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था।

3:22 "यहूदिया देश में आए" यहूदिया और गलील दोनों में की गई इस प्रारंभिक सेवकाई की चर्चा सिनोप्टिक सुसमाचारों में नहीं की गई है। सुसमाचार मसीह की कालानुक्रमिक जीवनी नहीं हैं। Gordon Fee and Douglas Stuart, *How to Read the Bible For All Its Worth*, pp.127-148 देखें।

▣ **"वह उनके साथ रहकर"** यीशु ने भीड़ को उपदेश दिया लेकिन अपने चेलों के साथ बड़े पैमाने पर संवाद किया।

उसने खुद को उनमें उँड़ेल दिया। यह पद्धति Robert E.Coleman, *The Master Plan of Evangelism and The Master Plan of Discipleship,* दो अद्भुत पुस्तकों का केंद्रबिंदु है, दोनों ही एक छोटे समूह के साथ यीशु की व्यक्तिगत भागीदारी पर जोर देती हैं!

▣ **"और बपतिस्मा देने लगा"** हम 4:2 से सीखते हैं कि यीशु ने खुद बपतिस्मा नहीं दिया, लेकिन उसके चेलों ने दिया। यीशु का संदेश प्रारम्भ में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के संदेश के समान था। यह पश्चाताप और तैयारी का एक पुराने नियम का संदेश था। यहाँ वर्णित बपतिस्मा ईसाई बपतिस्मा नहीं है बल्कि पश्चाताप और आध्यात्मिक ग्रहणशीलता का प्रतीकात्मक बपतिस्मा है।

3:23 "यूहन्ना भी शालेम के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था" इस स्थल की स्थिति अनिश्चित है।

1. कुछ लोगों का मानना है कि यह यरदन के परे क्षेत्र के पेरीया में था
2. कुछ का मानना है कि यह पूर्वोत्तर सामरिया में था
3. कुछ लोगों का मानना है कि यह शेकेम शहर से तीन मील पूर्व में था

क्योंकि "*aenon*" का अर्थ "धारा" लगता है, #3 सबसे उपयुक्त लगता है। जो भी सटीक स्थिति हो, यीशु यहूदिया में सेवकाई कर रहा था और यूहन्ना उसके उत्तर में थोड़ी दूरी पर था।

3:24 "यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था" यह अनिश्चित है कि इस बिंदु पर इस कालानुक्रमिक विषय को क्यों जोड़ा गया है। कुछ लोगों का कहना है कि यह यूहन्ना के कालक्रम को सिनॉप्टिक्स (तुलना मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14-29) के साथ समकालीन बनाने का प्रयास है। यह मसीह के जीवन में इस आकस्मिक भेंट को काल-निर्धारण के साधन के रूप में कार्य करता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 3:25-30
25वहाँ यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ। 26और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उससे कहा, "हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था,और जिसकी तू ने गवाही दी है; देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं।" 27यूहन्ना ने उत्तर दिया, "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता। 28तुम तो आप ही मेरे गवाह हो कि मैंने कहा, 'मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ।' 29"जिसकी दुलहिन है, वह दूल्हा है; परन्तु दूल्हे का मित्र, जो खड़ा हुआ उसकी सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है: अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है। 30 अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ।

3:25 "वहाँ यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ वाद- विवाद हुआ" "वाद-विवाद" (NASB, NRSV, NJB) "विवाद" या "आमना- सामना" के लिए एक मजबूत शब्द है। कुछ यूनानी पांडुलिपियों में बहुवचन "यहूदी" है। प्राचीन यूनानी पांडुलिपियाँ भी समान रूप से विभाजित हैं। क्योंकि एकवचन अधिक असामान्य है (यानी, MSS P25,[2]א , A, B, L, W), यह संभवतः मूलरूप है। UBS[4] इसे "B" दर्जा (लगभग निश्चित) देता है। प्राचीन लेखकों की प्रवृत्ति पाठ को अनुकूल और सुचारू करने की थी। यह भी ध्यान देना दिलचस्प है कि संभवतः यूहन्ना के चेलों ने इस तर्क को उकसाया था।

NASB, NKJV, NRSV, NJB	**"शुद्धि के विषय में"**
TEV	**"आनुष्ठानिक स्नान की बात"**

इस विवादके केंद्र के बारे में कई सिद्धांत रहे हैं। (NKJV)

1. यह संभव है कि यूहन्ना के अनुयायी यूहन्ना और यीशु के बपतिस्मा के बीच संबंधों पर उसी प्रकार वाद-विवाद कर रहे थे जैसा कि यहूदी परंपरा से संबंधित था; यूहन्ना 2:6 में इसी शब्द का प्रयोग किया गया है।
2. कुछ लोगों का मानना है कि यह तात्कालिक संदर्भ से संबंधित है जहाँ यीशु सिखा रहा था कि उसका जीवन और सेवकाई पूरी तरह से यहूदी धर्म को परिपूर्ण करते हैं।
    a. यूहन्ना 2:1-12, काना में विवाह का भोज
    b. यूहन्ना 2:13-22, मंदिर का शुद्धिकरण
    c. यूहन्ना 3:1-21, यहूदियों के शासक नीकुदेमुस के साथ चर्चा
    d. यूहन्ना 3:22-36, यहूदियों के स्नान और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और यीशु के बपतिस्मे।

यह तथ्य कि संदर्भ इस विशेष चर्चा में विशिष्टता से विस्तार नहीं करता है, इस तथ्य को उजागर करता है कि इसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को नासरत के यीशु के वर्चस्व के बारे में गवाही देने का एक और अवसर दिया।

3:26 "और जिसकी तूने गवाही दी है, देख, वह बपतिस्मा देता है और सब उसके पास आते हैं" चेलों ने परमेश्वर के मेम्ने के बारे में यूहन्ना की पहले की गवाही को याद किया (तुलना यूहन्ना 1:19-36), और वे स्पष्ट रूप से यीशु की सफलता (अतिशयोक्ति)के प्रति डाह रखते थे। यीशु किसी भी प्रतिस्पर्धा की भावना के प्रति संवेदनशील था (तुलना यूहन्ना 4:1)।

3:27 "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता" यह एक बहुत ही सीधा पुष्टि है कि आध्यात्मिक मामलों में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है।जो कुछ विश्वासियों के पास है, उन्हें परमेश्वर की कृपा से दिया गया है। हालांकि, "यह" और "वह" के अर्थ के बारे में बहुत चर्चा हुई है।

1. कुछ कहते हैं कि "वह" विश्वासी को संदर्भित करता है और "यह" उद्धार के लिए मसीह के पास आने के लिए संदर्भित करता है (परमेश्वर आरंभ करता है, मनुष्य केवल प्रतिक्रिया दे सकता है, तूल यूहन्ना 6:44,65)
2. अन्य मानते हैं कि "वह" संदर्भित करता है यीशु और "यह" विश्वासियों को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 6:39; 10:29; 17:2,9,11,24)

इन दो विचारों के बीच अंतर यह होगा कि "दिया जाए" शब्द या तो व्यक्तिगत विश्वासी के उद्धार को संदर्भित करता है या यह कि सब विश्वासी स्वयं परमेश्वर की ओर से यीशु के लिए उपहार हैं (तुलना यूहन्ना 17:2)।

3:28 "मैं मसीह नहीं हूँ" यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला विशेष रूप से पुष्टि करता है, जैसा कि उसने यूहन्ना 1:20 में किया था, कि वह मसीहा नहीं है, बल्कि अग्रदूत है। यह मलाकी 3:1, 4:5-6 की भविष्यवाणियों तथा साथ ही यशायाह 40 (तुलना यूहन्ना 1:23) की ओर एक स्पष्ट संकेत है। यूहन्ना 1:20 पर "मसीहा" पर टिप्पणी और यूहन्ना 4:25 पर विशेष विषय देखें।

3:29 "जिसकी दुलहिन है, वह दूल्हा है" यह आश्चर्यजनक है कि इस विवाह रूपक में बहुत सारे पुराने नियम के उल्लेख हैं जो परमेश्वर और इस्राएल के बीच के संबंधों का वर्णन करते हैं (तुलना यशायाह 54:5; 62:4,5; यिर्मयाह 2:2; 3:20; यहेजकेल 16: 8; 23: 4; होशे 2:21)। पौलुस भी इफिसियों 5:22ff में इसका इस्तेमाल करता है। मसीही विवाह एक वाचा के रिश्ते का सबसे अच्छा आधुनिक उदाहरण हो सकता है।

▣ **"अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है"** संज्ञा "हर्ष" और क्रिया "आनन्द" इस पद में तीन बार उपयोग किया गया है। एक प्रतिस्पर्धी भावना रखने के बजाय, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने स्पष्ट रूप से अपने स्थान को पहचाना और यीशु में आनन्दित हुआ।

3:30 "अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ" शब्द "अवश्य है"(*dei*) यहाँ महत्वपूर्ण है। इसका इस्तेमाल पहले ही यूहन्ना 3:14 और 4:4 में किया जा चुका है। यह यीशु की महान और अधिक महत्वपूर्ण सेवकाई के एक अग्रदूत के रूप में यूहन्ना की स्वयं की समझ का एक मजबूत पुष्टिकरण है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 3:31-36

[31]"जो ऊपर से आता है, वह सर्वोत्तम है; जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है, और पृथ्वी ही की बातें कहता है: जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है। [32]जो कुछ उसने देखा और सुना है, उसी की गवाही देता है; और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता। [33]जिसने उसकी गवाही ग्रहण कर ली उसने इस पर छाप लगा दी कि परमेश्वर सच्चा है। [34]क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता। [35]पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं। [36]जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।"

3:31-36 इन पदों के बारे में टिप्पणीकारों के बीच बहुत चर्चा हुई है कि क्या ये पद हैं

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की निरंतर मौखिक पुष्टियाँ
2. यीशु के शब्द (तुलना यूहन्ना 3:11-12)

3. यूहन्ना प्रेरित के

ये पद यूहन्ना 3:16-21 के विषय की ओर लौटते हैं।

3:31 "जो ऊपर से आता है" यह महत्त्वपूर्ण है कि मसीहा के लिए उपयोग किए जाने वाले दो शीर्षक उसके पूर्व-अस्तित्व और पूर्ण देवत्व (यूहन्ना 3:31 में निहित) और उसके देहधारण और परमेश्वर प्रदत्त ध्येय (यूहन्ना 3:34 में निहित) पर जोर देते हैं। यह शब्द "ऊपर से" वही शब्द है जिसका उपयोग यूहन्ना 3:3 में "नये सिरे से जन्मा" या "ऊपर से पैदा हुआ" वाक्यांश में किया गया है।

परमेश्वर के दायरे और मानव जाति के सांसारिक दायरे का ऊपर और नीचे का यह द्वैतवाद, यूहन्ना की विशेषता है। यह मृत सागर चीरकों के युगांत विषयक द्वैतवाद से अलग है। यह आत्मा और तत्व के ज्ञानवादी द्वैतवाद से भी अलग है। यूहन्ना में सृजन स्वयं और मानव शरीर में बुराई या पाप नहीं है।

▣ **"सब के ऊपर. . .सब के ऊपर"** इस पद का पहला भाग स्वर्ग से आते हुए यीशु के देवत्व और पूर्व-अस्तित्व की ओर संकेत कर है (तुलना यूहन्ना 1:1-18; 3:11-12)।पद का दूसरा भाग इस बात की पुष्टि करता है कि वह परमेश्वर की रचना के ऊपर है। यह यूनानी पाठ से अनिश्चित है कि क्या "सब" पुल्लिंग या नपुंसकलिंग है, सारी मानव जाति या सारी चीजों का जिक्र करता है। कुछ यूनानी ग्रंथों में दूसरा "सब के ऊपर" गायब है। UBS[4] उसके समावेश पर निर्णय नहीं ले सकता है, लेकिन पाठ्य आलोचनाएँ पूर्व धारणाएँ (देखें परिशिष्ट दो) इसके समावेश को प्राथमिकता देंगी।

NASB	**"जो पृथ्वी से है और पृथ्वी का है और पृथ्वी की बातें करता है"**
NKJV	**"जो पृथ्वी से है और वह सांसारिक है और संसार की बातें करता है"**
NRSV	**"वह जो पृथ्वी से है, पृथ्वी से संबंधित है और सांसारिक वस्तुओं के बारे में बातें करता है"**
TEV	**"वह जो पृथ्वी का है, पृथ्वी से संबंधित है और सांसारिक वस्तुओं के बारे में बातें करता है"**
NJB	**"वह जो पृथ्वी का है वह स्वयं सांसारिक है और सांसारिक रूप से बोलता है "**

यह यूहन्ना के बारे में नकारात्मक कथन नहीं है। यहाँ पृथ्वी के लिए शब्द (*gē*, यूहन्ना 12:32; 17:4; 1 यूहन्ना 5:8 (लेकिन प्रकटीकरण में 6 बार) "विश्व" (*kosmos*) शब्द के समान नहीं है, जिसे अक्सर यूहन्ना द्वारा नकारात्मक रूप से प्रयोग किया जाता है। । यह केवल एक पुष्टि है कि यीशु ने उसकी बात की जिसे वह जानता है, स्वर्ग, जबकि सब मनुष्य उसके बारे में बोलते हैं जिसे वे जानते हैं, पृथ्वी। इसलिए, यीशु की गवाही किसी भी सांसारिक भविष्यद्वक्ता या उपदेशक की तुलना में कहीं अधिक है। (तुलना इब्रानियों 1:1-4)

3:32 " जो कुछ उसने देखा और सुना है, उसी की गवाही देता है" इस पद में क्रिया काल पर एक क्रीड़ा है: (1) "देखा" पूर्ण काल है; (2) "सुना" अनिर्दिष्टकाल है; और (3) "गवाही देता" वर्तमान काल है। यीशु परमेश्वर का परम प्रकटीकरण है (तुलना 1 कुरिंथियों 8:6; कुलुस्सियों 1:13-20; इब्रानियों 1:2-3)। वह (1) परमेश्वर पिता के साथ उसके व्यक्तिगत अनुभव और (2) उसके अपने देवत्व के बारे में बोलता है।

▣ **"और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता"** यह एक पूर्वी अतिश्योक्तिपूर्ण कथन है क्योंकि यूहन्ना 3:23-26 इंगित करता है कि कई उसके पास आ रहे थे। यह वाक्यांश यहूदी धर्म को एक पूरे संदर्भ के रूप में संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 3:11), न कि केवल तात्कालिक संदर्भ में।

3:33 "जिसने" यह परमेश्वर के सार्वभौमिक, सब मनुष्यों के लिए असीमित प्यार को दर्शाता है। परमेश्वर के सुसमाचार से जुड़े हुए कोई अवरोध नहीं हैं; प्रत्येक को पश्चाताप और विश्वास करना चाहिए (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 20:21), लेकिन यह प्रस्ताव सभी के लिए खुला है (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16-18; 4:42; 1 तीमुथियुस 2:4; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3:9; 1 यूहन्ना 2:1; 4:14)।

▣ **"उसकी गवाही ग्रहण कर ली"** पद 33 एक अनिर्दिष्टकाल कृदंत है, जबकि यूहन्ना 3:36 एक वर्तमानकाल कृदंत है। इससे पता चलता है कि उद्धार के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना न केवल एक प्रारंभिक निर्णय है, बल्कि यह शिष्यत्व का जीवन भी है। स्वीकृति की आवश्यकता की इसी पुष्टि को पहले यूहन्ना 1:12 और 3:16-18 दोनों में कहा गया है। गवाही को स्वीकार करने (यूहन्ना 3:33) और उसमें चलना जारी रखने (यूहन्ना 3:36) के बीच द्विभाजन पर ध्यान दें। शब्द "स्वीकार करना," के शब्द "विश्वास" की तरह, नये नियम में दो संकेतार्थ हैं।

1. व्यक्तिगत रूप से मसीह को ग्रहण करना और उसी में चलना
2. सुसमाचार (तुलना यहूदा, 3,20) में शामिल सत्य और सिद्धांतों को स्वीकार करना

NASB **“इस पर अपनी छाप लगा दी है कि परमेश्वर सच्चा है”**
NKJV, NRSV **“प्रमाणित कर दिया है कि परमेश्वर सच्चा है”**
TEV **"इससे पुष्टि करता है कि परमेश्वर सत्य है "**
NJB **"यह अनुप्रमाणित कर रहा है कि परमेश्वर सच्चा है"**

जब विश्वासी अपने व्यक्तिगत विश्वास को मसीह में रखते हैं, तो वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि स्वयं के विषय में, संसार, मानव जाति और उसके पुत्र के बारे में परमेश्वर का संदेश सत्य है (तुलना रोमियो 3:4)। यह यूहन्ना में एक आवर्तक विषय है (तुलना यूहन्ना 3:33; 7:28; 8:26; 17:3; 1 यूहन्ना 5:20)। यीशु सत्य है क्योंकि वह अंततः एक सच्चे परमेश्वर को प्रकट करता है (तुलना यूहन्ना 3:7,14; 19:11)।

क्रिया "छाप" (अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक) के लिए आगे विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: छाप (SPECIAL TOPIC: SEAL)

एक छाप निम्नलिखित दिखाने का एक प्राचीन तरीका हो सकता है

1. सच्चाई (तुलना यूहन्ना 3:33)
2. स्वामित्व (तुलना यूहन्ना 6:27; 2 तीमुथियुस 2:19; प्रकाशितवाक्य 7:2-3; 9:4;
3. सुरक्षा या रक्षण (तुलना उत्पत्ति 4:15; मत्ती 27:66; रोमियों 4:11; 15:28; 2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 1:13; 4:30; प्रकाशितवाक्य 20: 3)
4. यह परमेश्वर की भेंट के वादे की वास्तविकता का संकेत भी हो सकता है (तुलना रोमियों 4:11 और 1 कुरिन्थियों 9:2)।

प्रकाशितवाक्य 7:2-4; 9:4 में इस मुहर का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों की पहचान करना है ताकि परमेश्वर का क्रोध उन पर असर न करे। शैतान की मुहर उसके लोगों को पहचानती है, जो परमेश्वर के क्रोध का लक्ष्य हैं। प्रकाशितवाक्य में "क्लेश" (यानी, *thilipsis*) हमेशा विश्वासियों को सताने वाले अविश्वासियों को संदर्भित करता है, जबकि कोप/क्रोध (यानी, *orgē* या *thumos*) हमेशा अविश्वासियों पर परमेश्वर का न्याय है ताकि वे पश्चाताप करें और मसीह में विश्वास की ओर मुड़ें। न्याय के इस सकारात्मक उद्देश्य को लैव्यव्यवस्था 26 के वाचा के शाप/आशीष में देखा जा सकता है; व्यवस्थाविवरण 27-28; 30; भजनसंहिता 1।

3:34 “जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है" यूहन्ना 3:34 में दो समानांतर कथन हैं जो बताते हैं कि यीशु का अधिकार परमेश्वर से आता है

1. परमेश्वर ने उसे भेजा है
2. उसके पास आत्मा की परिपूर्णता है

▣ **"वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता"** यह कथन अक्षरशः एक नकारात्मक रूप में है, लेकिन अंग्रेजी पाठकों के लिए सकारात्मक रूप अर्थ को समझाता है। आत्मा की इस परिपूर्णता को समझने के दो अलग-अलग तरीके हैं: कुछ का मानना है कि

1. यीशु विश्वासियों को आत्मा की परिपूर्णता देता है (तुलना यूहन्ना 4:10-14; 7:37-39)
2. कि आत्मा की परिपूर्णता परमेश्वर के मसीहा के उपहार को संदर्भित करती है (तुलना यूहन्ना 3:35)

रब्बियों ने "नाप" शब्द का प्रयोग परमेश्वर द्वारा भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरित करने के वर्णन के लिए किया था। रब्बियों ने यह भी कहा कि किसी भी भविष्यद्वक्ता के पास आत्मा का भरपूर माप नहीं था। इसलिए, यीशु भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ है (तुलना इब्रानियों 1:1-2) और इस प्रकार, परमेश्वर का पूर्ण प्रकाशन है।

3:35 "पिता पुत्र से प्रेम रखता है" यह प्रतिज्ञा यूहन्ना 5:20 और 17: 23-26 में दोहराई गई है। विश्वासियों का परमेश्वर के साथ संबंध मसीहा के लिए उसके प्रेम पर स्थापित है (अद्वितीय पुत्र, तुलना इब्रानियों 1: 2; 3:5-6; 5:8; 7:28)। इस संदर्भ में बताए गए कारणों की संख्या पर ध्यान दें कि मनुष्य को यीशु पर मसीहा के रूप में विश्वास क्यों करना चाहिए।

1. क्योंकि वह ऊपर से है और दूसरों से ऊपर है (यूहन्ना 3:31)
2. क्योंकि वह परमेश्वर के द्वारा छुटकारा देने के विशेष कार्य पर भेजा गया था (यूहन्ना 3:34)

3. क्योंकि परमेश्वर का उसे आत्मा की परिपूर्णता देना जारी है (यूहन्ना 3:34)
4. क्योंकि परमेश्वर उसे प्यार करता है (यूहन्ना 3:35)
5. क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके हाथों में दे दिया है (यूहन्ना 3:35)

"प्रेम" के लिए कई यूनानी शब्द हैं जो विभिन्न मानवीय रिश्तों को दर्शाते हैं। *Agapaō* और *phileō* का अर्थ संबंधी अतिच्छादन है। दोनों का प्रयोग पुत्र के लिए पिता के प्रेम का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

1. यूहन्ना 3:35; 17:23,24,26 - *agapaō*
2. यूहन्ना 5:20 – *phileō*

यूहन्ना 21:15-17 में पतरस के साथ यीशु के संवाद में एक प्रासंगिक अंतर प्रतीत होता है। याद रखें, "संदर्भ, संदर्भ, संदर्भ," न कि शब्दावली / शब्दकोश, शब्द के अर्थ निर्धारित करता है!

▣ **"उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं"** यह एक सही कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह किसी अन्य पर सत्ता या अधिकार के लिए एक इब्रानी मुहावरा है (यानी, यूहन्ना 10:28; 13:3; प्रेरितों के काम 4:28; 13:11)। यह एक बेहद दिलचस्प वाक्यांश है और इसके कई समानांतर हैं (तुलना यूहन्ना 17:2; मत्ती 11:27; 28:18; इफिसियों 1:20-22; कुलुस्सियों 2:10; 1 पतरस 3:22)।

3:36

NASB **"जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा"**

NKJV **"जो पुत्र पर विश्वास करता है उसका जीवन हमेशा के लिए है; और वह जो पुत्र पर विश्वास नहीं करता, जीवन को नहीं देखेगा"**

NRSV **"जो कोई भी पुत्र पर विश्वास करता है अनंत जीवन उसका है; जो कोई भी पुत्र की अवज्ञा करता है जीवन को नहीं देखेगा"**

TEV **"जो कोई भी पुत्र पर विश्वास करता है अनन्त जीवन उसका है; जो कोई भी पुत्र की अवज्ञा करता है जीवन को नहीं पाएगा"**

NJB **"जो कोई पुत्र पर विश्वास करता है उसके पास अनंत जीवन है, लेकिन जो कोई भी पुत्र पर विश्वास करने से इन्कार करता है वह जीवन को कभी नहीं देखेगा"**

ये क्रियाएं वर्तमानकाल में कर्तृवाच्य हैं जो चल रही कार्रवाई की बात करती हैं। विश्वास एक बार के निर्णय से अधिक है चाहे वह कितना भी निष्कपट या भावुक रहा हो (तुलना मत्ती 13:20)। यह पुष्टि करता है कि यीशु को जाने बिना कोई भी पिता को नहीं जान सकता (तुलना यूहन्ना 12: 44-50 और 1 यूहन्ना 5:10)। उद्धार केवल पुत्र यीशु के साथ एक सतत संबंध के माध्यम से आता है (तुलना यूहन्ना 10:1-18; 14:6)।

वर्तमान काल न केवल चल रही कार्रवाई की बात करता है, बल्कि उद्धार की वर्तमान वास्तविकता है। यह ऐसा कुछ है जो अब विश्वासियों के पास है, लेकिन यह पूरी तरह से पूर्णता तक नहीं पहुँचा है। यह दो युगों के "पहले से" बनाम "अभी तक नहीं" का द्वैतवाद है (देखें विशेष विषय: यह युग और आने वाला युग 1यूहन्ना 2:17 पर)। विशेष विषय देखें: यूहन्ना 9:7 में उद्धार के लिए प्रयुक्त क्रिया काल।

इस पद में "विश्वास" और "आज्ञाकारिता" के बीच के विरोधाभास पर ध्यान देना भी दिलचस्प है। सुसमाचार केवल एक व्यक्ति नहीं है जिसे हम ग्रहण करते हैं और एक सच्चाई जिसे हम स्वीकार करते हैं, लेकिन यह एक जीवन भी है जिसे हम जीते हैं (तुलना लूका 6:46; इफिसियों 2: 8-10)।

▣ **"परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है"** यूहन्ना के लेखन में यह एकमात्र स्थान है (प्रकाशितवाक्य में 5 बार को छोड़कर) जहाँ "क्रोध" (*orgē*) शब्द प्रकट होता है। अवधारणा आम है और सामान्य रूप से "न्याय" शब्द से संबंधित है। यह एक वर्तमानकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। "विश्वास," "आज्ञाकारिता," और "क्रोध" वर्तमान में चल रही वास्तविकताएँ हैं जो कि भविष्य में पूर्णता तक पहुँचेंगी। यह वही तनाव है जो परमेश्वर के राज्य के "पहले से ही" और "अभी तक नहीं" के बीच मौजूद है। परमेश्वर के क्रोध पर एक संपूर्ण बाइबल चर्चा के लिए पढ़ें रोमियों 1:18-3:20।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यीशु का प्रारंभिक संदेश यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तरह कैसे है?
2. क्या यह बपतिस्मा मसीही बपतिस्मा के समान है?
3. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के शब्दों पर यूहन्ना के प्रारंभिक अध्यायों में इतना जोर क्यों दिया?
4. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और यीशु के संबंधों का वर्णन करने के लिए उन विरोधाभासों की संख्या और प्रकारों का वर्णन करें जिनका लेखक यूहन्ना प्रयोग करता है?
5. यूहन्ना 3:33 में शब्द “ग्रहण” यूहन्ना "3:36" के शब्द "विश्वास" से किस तरह संबंधित है? यूहन्ना 3:36 में "अवज्ञा" शब्द इस चर्चा से कैसे संबंधित है?
6. बताए गए उन कारणों की सूची बनाइए कि क्यों लोगों को नासरत के यीशु पर उनके उद्धार की एकमात्र आशा के रूप में भरोसा करना चाहिए? (पद 31-36)
7. समझाइए कि पद 36 में "क्रोध" शब्द एक वर्तमान काल क्रिया क्यों है।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 4

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु और सामरिया की स्त्री	एक सामरी स्त्री अपने मसीहा से मिलती है	यीशु और सामरी लोग	यीशु और सामरी लोग	सामरी लोगों के बीच यीशु
4:1-6	4:1-26	4:1-6	4:1-4	4:1-10
			4:5-6	
4:7-15		4:7-15	4:7-8	
			4:9	
			4:10	
			4:11-12	4:11-14
			4:13-14	
			4:15	4:15-24
4:16-26		4:16-26	4:16	
			4:17a	
			4:17b-18	
			4:19-20	
			4:21-24	
			4:25	4:25-26
	पकी फसल		4:26	
4:27-30	4:27-38	4:27-30	4:27	4:27-30
			4:28-30	
4:31-38		4:31-38	4:31	4:31-38
			4:32	
			4:33	
	संसार का उद्धारक		4:34-38	
4:39-42	4:39-42	4:39-42	4:39-40	4:39-42
			4:41-42	
कर्मचारी के पुत्र की चंगाई	गलील में स्वागत	यीशु और गैर-यहूदी	यीशु एक कर्मचारी के पुत्र को चंगा करता है	गलील में यीशु
4:43-45	4:43-45	4:43-45	4:43-45	4:43-45
	एक कुलीन जन का पुत्र चंगाई पाता है			शाही कर्मचारी के पुत्र की चंगाई

4:46-54	4:46-54	4:46-54	4:46-48	4:46-53
			4:49	
			4:50-51	
			4:52-53	
			4:54	4:54

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 1-54 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. अध्याय 3 और 4 में एक उद्देश्यपूर्ण संरचना है।
   1. श्रीमान धार्मिक (नीकुदेमुस) बनाम सुश्री बहिष्कृत (कुँए पर स्त्री)
   2. येरुशलम आधारित यहूदी धर्म (रूढ़िवादी) बनाम सामरी यहूदी धर्म (विधर्मी)

B. यीशु के व्यक्तित्व और कार्य की सच्चाइयों को इनके द्वारा और अधिक विकसित किया गया है
   1. कुँए पर स्त्री के साथ संवाद (यूहन्ना 4:1-26) ;
   2. उसके शिष्यों के साथ संवाद (यूहन्ना 4:27-38);
   3. गाँववालों की गवाही (यूहन्ना 4:39-42);
   4. गलीलियों द्वारा स्वागत (यूहन्ना 4:43-45);
   5. बीमारी पर यीशु की सामर्थ्य का चिन्ह/चमत्कार, यूहन्ना 4: 46-54

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन)पाठ: यूहन्ना 4:1-6
[1]फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें
बपतिस्मा देता है—[2]यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे— [3]तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर
गलील को चला, [4]और उसको सामरिया से होकर जाना अवश्य था। [5]इसलिए वह सूखार नामक सामरिया के एक
नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था; [6]और याकूब का कूआँ भी
वहीं था। अतः यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएँ पर योंही बैठ गया। यह बात छठे घंटे के लगभग हुई।

4:1 "प्रभु" यूहन्ना, अपने दिमाग में इस घटना को याद करते हुए (आत्मा के माध्यम से) सालों बाद, "प्रभु" और "यीशु" का प्रयोग उसी एक वाक्य में एक व्यक्ति के संदर्भ में करता है।

कई यूनानी पांडुलिपियों में यूहन्ना 4:1 में दो बार "यीशु" है (यानी, ℵ, D, NRSV, NJB, REB), लेकिन "प्रभु" MSS P[66,75],A,B,C,L (NASB, NKJV) में है । हालांकि, "प्रभु" के लिए कहीं बेहतर पांडुलिपि सत्यापन के साथ UBS[4] ने पाठ में "यीशु" डाला और इसे "C" दर्जा देता है (निर्णय लेने में कठिनाई)।

▣ **"फरीसी"** यूहन्ना 1:24 पर विशेष विषय को देखें।

▣ **"सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है"** यीशु के अनुयायियों और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बीच फरीसियों द्वारा उत्पन्न संभावित तनाव के कारण यीशु ने इस क्षेत्र को छोड़ दिया। सिनॉप्टिक्स का कहना है कि वह छोड़कर चला गया क्योंकि हेरोदेस अन्तिपास ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को गिरफ्तार कर लिया था (तुलना मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:20)

4:2 "यीशु स्वयं बपतिस्मा नहीं दे रहा था" यह बपतिस्मा पर एक अपमानजनक टिप्पणी नहीं है (तुलना मत्ती 28:19; प्रेरितों के काम 2:38; 8:12; 16:33; 22:16), लेकिन मानवता की आत्मकेंद्रित प्रकृति को एक मान्यता देना है (जैसे, "मैंने यीशु के द्वारा बपतिस्मा लिया गया था" या पौलुस, तुलना 1कुरिन्थियों 1:17)। जाहिर तौर पर यीशु ने अपनी सेवकाई की शुरुआत में बपतिस्मा दिया था (तुलना यूहन्ना 3:22), लेकिन बाद में बंद कर दिया। यूहन्ना फरीसियों के झूठे बयान को सुधार रहा है।

4:3 "वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला" ये दो अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं जिनका उपयोग यीशु की भौगोलिक गतिविधियों पर जोर देने के लिए किया गया है।

4:4 "उसको सामरिया से होकर जाना अवश्य था" "था" यूनानी क्रिया *dei* है, जो इस संदर्भ में कई बार प्रयोग की गई है (तुलना यूहन्ना 3:7,14,30)। आम तौर पर इसका अनुवाद "अवश्य" या "आवश्यक"होता है। यीशु के लिए इस मार्ग में एक दिव्य उद्देश्य है। यह सबसे छोटा मार्ग है; जोसेफस हमें बताता है कि गलील के यहूदी सामान्य रूप से इस मार्ग का उपयोग करते थे। हालाँकि, यहूदिया के यहूदी सामरियों से नफरत करते थे और उनकी भूमि पर से होकर नहीं जायेंगे क्योंकि वे उन्हें धार्मिक अर्द्ध - नस्ल मानते थे।

विशेष विषय: जातिवाद (SPECIAL TOPIC: RACISM)

I. प्रस्तावना
   A. यह श्रेष्ठता की प्रवृत्ति समाज के भीतर पतित मानव जाति द्वारा एक सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है। यह मानव जाति का अहंकार है, दूसरों की पीठ पर खुद को सहारा देना। जातिवाद, कई मायनों में एक आधुनिक घटना है, जबकि राष्ट्रवाद (या आदिवासीवाद) एक अधिक प्राचीन अभिव्यक्ति है।
   B. राष्ट्रवाद बाबुल से शुरू हुआ (उत्पत्ति 11) और मूल रूप से नूह के तीनों बेटों से संबंधित था जिनसे तथाकथित जातियाँ विकसित हुई (उत्पत्ति 10)। हालाँकि, यह पवित्र शास्त्र से स्पष्ट है मानवता एक स्रोत से है (तुलना उत्पत्ति 1-3; प्रेरितों के काम 17:24-26)।
   C. जातिवाद कई पूर्वाग्रहों में से एक है। कुछ अन्य हैं
      1. शैक्षणिक दंभ
      2. सामाजिक आर्थिक अहंकार
      3. स्वधर्म धार्मिक वैधता
      4. हठधर्मी राजनैतिक संबंध

II. बाइबल संबंधी सामग्री
   A. पुराना नियम
      1. उत्पत्ति 1:27- मानव जाति, नर और नारी, परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाए गए थे, जो उन्हें अद्वितीय बनाता है। यह उनके व्यक्तिगत मूल्य और गरिमा को भी दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 3:16)।
      2. उत्पत्ति 1:11-25 - वाक्यांश, "जाति जाति के अनुसार" को दस बार दर्ज करता है। यह जातीय अलगाव का समर्थन करने के लिए उपयोग किया जाता है। हालांकि, यह इस संदर्भ से स्पष्ट है कि यह पशुओं और पौधों को संदर्भित करता है और मानवता को नहीं।

3. उत्पत्ति 9:18-27 - इसका इस्तेमाल जातीय प्रभुत्व का समर्थन करने के लिए किया गया है। इसे याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने कनान को शाप नहीं दिया। नूह, उसके पिता, ने उसे एक पियक्कड़ व्यामोह से जागने के बाद शाप दिया था। बाइबल कभी भी यह दर्ज नहीं करती है कि परमेश्वर ने इस शपथ / शाप की पुष्टि की है। यदि उसने की तौभी यह काली जाति को प्रभावित नहीं करता है। कनान उन लोगों का पिता था, जो पलस्तीन में बसे थे और मिस्र की भित्ति कला से पता चलता है कि वे काले नहीं थे।
4. गिनती 12:1 – मूसा ने एक काली पत्नी से विवाह किया
5. यहोशू 9:23 - इसका इस्तेमाल यह साबित करने के लिए किया गया है कि एक जाति दूसरी की सेवा करेगी। हालाँकि, इस संदर्भ में, गिबोनी यहूदियों के समान एक ही जातीय कुल के हैं।
6. एज्रा 9-10 और नहेम्याह 13 - इनका उपयोग अक्सर जातीय अर्थ में किया जाता है, लेकिन संदर्भ यह दर्शाता है कि विवाह की निंदा की जाती थी, जाति के कारण नहीँ, (वे नूह के उसी बेटे में से थे., उत्पत्ति 10), लेकिन धार्मिक कारणों से।

B. नया नियम
   1. सुसमाचार
      a. यीशु ने यहूदियों और सामरी लोगों के बीच नफरत का इस्तेमाल कई दृष्टान्तों में किया, जो दर्शाता है कि जातीय घृणा अनुचित है।
         (1) अच्छे सामरी का दृष्टान्त (लूका 10:25-37)
         (2) कुएं पर स्त्री (यूहन्ना 4)
         (3) आभारी कोढ़ी (लूका 17:11-19)
      b. सुसमाचार पूरी मानवता के लिए है
         (1) यूहन्ना 3:16
         (2) लूका 24:46-47
         (3) इब्रानियों 2:9
         (4) प्रकाशितवाक्य 14:6
      c. साम्राज्य में सारी मानवता शामिल होगी
         (1) लूका 13:29
         (2) प्रकाशितवाक्य 5
   2. प्रेरितों के काम
      a. प्रेरितों के काम 10 परमेश्वर के सार्वभौमिक प्रेम और सुसमाचार के सार्वभौमिक संदेश पर एक निर्णायक अनुच्छेद है।
      b. प्रेरितों के काम 11 में अपने कार्यों के लिए पतरस पर हमला किया गया था और इस समस्या का समाधान तब तक नहीं किया गया था जब तक कि प्रेरितों के काम 15 में यरूशलेम परिषद ने मिलकर एक समाधान नहीं निकाला। पहली सदी के यहूदी और अन्यजातियों के बीच का तनाव बहुत प्रखर था।
   3. पौलुस
      a. मसीह में कोई अवरोध नहीं हैं
         (1) गलातियों 3:26-28
         (2) इफिसियों 2:11-22
         (3) कुलुस्सियों 3:11
      b. परमेश्वर व्यक्तियों का सम्मान करने वाला नहीं है
         (1) रोमियों 2:11
         (2) इफिसियों 6:9
   4. पतरस और याकूब
      a. परमेश्वर व्यक्तियों का सम्मान करने वाला नहीं है, 1पतरस 1:17
      b. क्योंकि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता है, तो उसके लोगों को भी नहीँ करना चाहिए, याकूब 2:1
   5. यूहन्ना
      a. विश्वासियों की जिम्मेदारी पर सबसे मजबूत बयान 1 यूहन्ना 4:20 में पाया जाता है

III. निष्कर्ष

A. जातिवाद, या उस मामले के लिए, किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह, परमेश्वर के बच्चों के लिए पूरी तरह से अनुचित है। यहाँ हेनली बार्नेट का एक उद्धरण है, जिन्होंने 1964 में ग्लोरिएटा, न्यू मैक्सिको में एक मंच पर मसीही जीवन आयोग के लिए बात की थी।
"जातिवाद विधर्मी है क्योंकि यह गैरबाइबलीय और ग़ैरमसीही है, उल्लेख की आवश्यकता नहीं है कि अवैज्ञानिक है।"

B. यह समस्या मसीहियों को अपना मसीह समान प्रेम, क्षमा और एक खोई हुई दुनिया के प्रति समझ दिखाने का अवसर देती है। इस क्षेत्र में मसीही नकार अपरिपक्वता को दर्शाता है और दुष्ट के लिए यह एक विश्वासी के विश्वास, आश्वासन और विकास को धीमा करने का अवसर है। मसीह में आने वाले खोए हुए लोगों के लिए यह एक बाधा के रूप में भी कार्य करेगा।

C. मैं क्या कर सकता हूँ? (यह खंड एक मसीही जीवन आयोग की पुस्तिका से लिया गया है, जिसका नाम है “Race Relations"

"व्यक्तिगत स्तर पर:
- जाति से जुड़ी समस्याओं को हल करने में अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करें।
- प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, और अन्य जातियों के लोगों के साथ संगति के माध्यम से, अपने जातीय पूर्वाग्रह के जीवन से छुटकारा पाने का प्रयास करें।
- जाति के बारे में अपनी धारणा को व्यक्त करें, विशेष रूप से जहाँ वे लोग जो जातीय नफरत फैलाते हैं, निर्विरोध हैं।

“परिवारिक जीवन में”
- दूसरी जातियों के प्रति दृष्टिकोण के विकास में परिवार के प्रभाव के महत्व को पहचाने।
- बच्चों और माता-पिता से इस बारे में बात करके कि वे घर के बाहर जातीय मुद्दे पर क्या सुनते हैं, मसीही दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास करें।
- माता-पिता को अन्य जातियों के लोगों के संबंध में एक मसीही उदाहरण स्थापित करने के लिए सावधान रहना चाहिए।
- जातीय पद्धतियों के पार पारिवारिक दोस्ती करने के अवसर तलाशें।

“आपकी कलीसिया में”
- जाति से संबंधित बाइबल के सत्य के उपदेश और शिक्षण से, मण्डली को पूरे समुदाय के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- यह निश्चित कर लें कि कलीसिया के माध्यम से आराधना, संगति, और सेवा सभी के लिए खुली हो, यहाँ तक कि नए नियम की कलीसियाओं ने कोई जातीय बाधाओं का पालन नहीं किया (इफिसियों 2:11-22; गलातियों 3:26-29)।

“दैनिक जीवन में”
- काम की दुनिया में सभी जातीय भेदभाव को दूर करने में मदद करें।
- समान अधिकारों और अवसरों को सुरक्षित करने के लिए सभी प्रकार के सामुदायिक संगठनों के माध्यम से काम करें और यह याद रखते हुए कि यह जाति की समस्या है, जिस पर हमला किया जाना चाहिए, लोगों पर नहीं। इसका उद्देश्य समझ को बढ़ावा देना है, न कि कड़वाहट पैदा करना।
- अगर यह उचित लगता है तो आम जनता की शिक्षा के लिए समुदाय में संचार के माध्यम खोलने के उद्देश्य से और जातीय संबंधों को बेहतर बनाने में विशिष्ट कार्यों के लिए संबंधित नागरिकों की एक विशेष समिति का आयोजन करें।
- जातीय न्याय को बढ़ावा देने वाले कानूनों को पारित करने में कानून और विधायकों का समर्थन करें और राजनीतिक लाभ के लिए पूर्वाग्रहों का शोषण करने वालों का विरोध करें।
- बिना किसी भेदभाव के कानूनों को लागू करने के लिए कानून प्रवर्तन अधिकारियों की सराहना करें।
- हिंसा को नकारें, और कानून के लिए सम्मान को बढ़ावा दें, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कानूनी संरचना उन लोगों के हाथों में उपकरण न बनें जो भेदभाव को बढ़ावा देतें हैं,एक मसीही नागरिक के रूप में जो कुछ संभव है,करें।
- सभी मानवीय संबंधों में मसीह की आत्मा और मन का उदाहरण दें।

▣ **"सामरिया से होकर"** सामरियों और यहूदिया के लोगों के बीच आठवीं शताब्दी ई.पू. तक बहुत द्वेष था। 722 ई.पू. में

उत्तरी दस जनजातियों को, उनकी राजधानी सामरिया के साथ, अश्शूर द्वारा बंदी बना लिया गया था और उन्हें मादियों के नगर भेज दिया गया था (तुलना 2 राजा 17: 6)। अन्य पकड़े गए लोगों को उत्तरी पलस्तीन में पुनर्स्थापित किया गया था (तुलना 2 राजा 17:24)। इन वर्षों के दौरान इन मूर्तिपूजकों ने इस्राएलियों की आबादी के बचे हुए लोगों के साथ विवाह किया। यहूदी सामरियों को धार्मिक अर्द्ध- नस्ल और विधर्मी मानते थे (तुलना एज्रा 4:14)। यह यूहन्ना 4: 9 के लिए एक संदर्भ देता है।

4:5 "सूखार नामक सामरिया का एक शहर, जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था" (तुलना उत्पत्ति 33:18, 19; यहोशू 24:32)। कई लोगों का मानना है कि सूखार शकेम है, हालांकि यह नये नियम में नहीं बताया गया है।

4:6 "याकूब के कूआँ भी वहीं था" यह लगभग 100′ गहरा खोदा हुआ गड्ढा था। यह बहता हुआ पानी (एक झरना) नहीं था, लेकिन वर्षा का संचित जल था। पुराने नियम में इसका कभी भी उल्लेख नहीं किया गया है लेकिन यह नाम इस क्षेत्र को पितृसत्तात्मक परंपरा से अवश्य जोड़ता है।

▣ **"यीशु मार्ग का थका हुआ"** हम स्पष्ट रूप से यीशु के मानव स्वभाव को यहाँ देखते हैं (तुलना लूका 2:52), लेकिन वह लोगों को प्यार करने के लिए कभी भी थका नहीं था!

NASB, NKJV,
JB "यह बात छठे घंटे के लगभग हुई"
NRSV, TEV "यह बात दोपहर के लगभग हुई"

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में समय का अनुमान लगाने की किस पद्धति का उपयोग किया है, इस बारे में बहुत चर्चा है। कुछ संदर्भ यहूदी समय के लगते हैं और कुछ रोमी समय के। यहूदी दिन की शुरुआत सुबह 6 बजे करते हैं; रोमी समय आधी रात को शुरू होता है। इसलिए, यीशु कूएँ पर बहुत जल्दी पहुँचे (यानी सुबह 6 बजे)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 4:7-14
[7]इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे पानी पिला।" [8]क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे। [9]उस सामरी स्त्री ने उससे कहा, "तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते।) [10]यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझसे कहता है, 'मुझे पानी पिला,' तो तू उससे माँगती, और वह तुझे जीविन का जल देता।" [11]स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं,और कूआँ गहरा है; तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया? [12]क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिसने हमें यह कूआँ दिया; और आप ही अपनी सन्तान, और अपने पशुओं समेत इसमें से पीया?" [13]यीशु ने उसको उत्तर दिया, "जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा, [14]परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा,वह फिर अनंतकाल तक प्यासा न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनंत जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।"

4:7 "इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने आई" यह स्त्री गाँव में अपनी सामाजिक स्थिति के कारण एक दूर के कूँए पर दिन के असामान्य समय पर अकेली आई थी।

▣ **"'मुझे पानी पिला'"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है जिसमें कुछ तात्कालिकता की भावना निहित है।

4:8 यह पद यहूदी धर्म की विधर्मी संप्रदाय की इस बहिष्कृत स्त्री के साथ यीशु की निजी बातचीत के लिए मंच तैयार करता है। यूहन्ना द्वारा यह एक और प्रारंभिक टिप्पणी है।

4:9 "'तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?" यहूदियों को उसी बाल्टी से जिससे सामरी पीते थे, पीने की आज्ञा नहीं थी (लैव्यव्यवस्था 15 पर आधारित यहूदी परंपराएँ)। यीशु दो सांस्कृतिक बाधाओं को अनदेखा कर रहा था: (1) एक सामरी से बोलना और (२) सार्वजनिक रूप से एक स्त्री से बात करना।

▣ **"(क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)"** कोष्ठक (NASB, NRSV), जो कि यूहन्ना से

एक और व्याख्यात्मक वृद्धि है, MSS ℵ* और D में गायब है, लेकिन P[63,66,75,76], ℵ[1], A, B, C, L में मौजूद है। UBS[4] इसके समावेश को "A" दर्जा (निश्चित) देता है।

4:10 "यदि" यह द्वितीय श्रेणी का नियमबद्ध वाक्य है, जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। एक बयान किया गया है जो किसी निष्कर्ष को उजागर करने के लिए गलत है वह भी गलत है।

यह यूहन्ना के सुसमाचार में "उपहार" शब्द का एकमात्र उपयोग है। यहाँ यह यीशु को परमेश्वर के उपहार के रूप में संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 3:16) जो अनन्त जीवन देता है। यूहन्ना 7:38-39 और प्रेरितों के काम में इसका प्रयोग पवित्र आत्मा के देने के लिए किया गया है (तुलना प्रेरितों के काम 2:38; 8:20; 10:45; 11:17)। परमेश्वर की ऐसी कृपा जिसके हम उपयुक्त और लायक नहीं, जो मसीह और आत्मा में प्रगट होती है, केंद्र है।

▣ **"जीवन का जल"** इस शब्द की एक पुराने नियम की रूपक पृष्ठभूमि है (तुलना भजनसंहिता 36: 9; यशायाह 12:3; 44:3; यिर्मयाह 2:13; 17:13; जकर्याह 14: 8)। यीशु "जीवन का जल" शब्द का उपयोग "आत्मिक जीवन" के पर्याय के रूप में करता है। हालांकि, सामरी स्त्री ने सोचा कि वह घड़े के पानी की बजाय बहते पानी की बात कर रहा है। यह यूहन्ना के सुसमाचार की विशेषता है कि यीशु (जगत की ज्योति) को नियमित रूप से गलत समझा जाता है (यानी, नीकुदेमुस)। सांसारिक, पतित क्षेत्र असली स्वर्गीय क्षेत्र (यानी, यीशु के संदेश) को समझ नहीं पाते हैं।

4:11 "प्रभु" यह यूनानी शब्द *kurious* है, जिसका उच्चारण *kurie* के रूप में होता है। इसका प्रयोग एक विनम्र संबोधन (सर) या एक धर्मशास्त्रीय कथन (प्रभु) के रूप में यीशु को उल्लेखित करते हुए यूहन्ना 4:1 और रोमियों 10:13 में पूर्ण देवता के रूप में किया जा सकता है। यहाँ यह एक विनम्र संबोधन है।

4:12 "क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है" व्याकरण एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है। यह स्पष्ट रूप से विडंबनापूर्ण कथन है। सामरी स्त्री अपने वंश की महानता का दावा कर रही थी, जो कि सामरी लोग एप्रैम और मनश्शे से होकर याकूब तक ले जाते हैं। आश्चर्यजनक बात यह है कि यीशु की श्रेष्ठता वही थी जो वह दावा कर रहा था!

यह बातचीत दो धार्मिक मुद्दों को संबोधित करती है।

1. परमेश्वर/ यीशु का बहिष्कृतों के लिए प्यार (यानी, सामरी, स्त्रियाँ)
2. यहूदी धर्म और जातीय अभिमान पर यीशु की श्रेष्ठता

4:13-14 "परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर अनंतकाल तक प्यासा न होगा" यह संभवतः मसीहाई प्रभाव था (तुलना यशायाह 12:3; 48:21; 49:10)। यह वाक्यांश एक मजबूत दोहरा नकारात्मक है। क्रिया काल पर एक क्रीड़ा है। यूहन्ना 4:13 के वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत का तात्पर्य बार-बार पीना है, जबकि यूहन्ना 4:14 के अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ सूचक का तात्पर्य एक बार पीना है।

4:14 "एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा" यह एक वर्तमान कृदंत है जिसका अर्थ है "निरंतर उछलना" (तुलना यशायाह 58:11 और यूहन्ना 7:38)। रेगिस्तानी लोगों के लिए, पानी जीवन और दैवीय प्रावधान का प्रतीक था।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 4:15-26

**15स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।"
16यीशु ने उससे कहा, "जा, अपने पति को यहाँ बुला ला।" 17स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं बिना पति की हूँ।" यीशु ने
उससे कहा, " तू ठीक कहती है, 'मैं बिना पति की हूँ।' 18क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब
है वह भी तेरा पति नहीं। यह तूने सच ही कहा है।" 19स्त्री ने उससे कहा,"हे प्रभु, मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता
है। 20हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर आराधना की, और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ आराधना करनी
चाहिए यरूशलेम में है।" 21यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम
न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में। 22तुम जिसे नहीं जानते,उसकी आराधना करते
हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी आराधना करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। 23परन्तु वह समय आता**

है, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है। [24]परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।" [25]स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" [26]यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझसे बोल रहा हूँ वही हूँ।"

4:15 स्त्री,नीकुदेमुस के समान यीशु को बहुत भौतिक (शाब्दिक) स्तर पर समझ रही है। यह चेलों के लिए भी असामान्य नहीं था। उन्होंने अक्सर उसकी रूपक भाषा (तुलना यूहन्ना 4: 31-33; 11: 11-13) को न समझ कर यीशु का गलत अर्थ लगाया।

4:16 UBS[4] ने इस संभावना का भी उल्लेख नहीं किया है कि "यीशु" नाम जोड़ा गया था (तुलना NKJV, NRSV, NJB, REB)। NET बाइबल उसके समावेश के लिए पांडुलिपि के प्रमाण देती है (पृष्ठ 1903, यानी, MSS ℵ[*,c], A, C[2], D, L, और W, लेकिन यह MSS P[66,75], B, C) से गायब है। लेखकों का रुख पाठ को स्पष्ट और समझने में आसान बनाने की ओर था।

▣ **"जा, बुला ला"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक के बाद अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है।

4:17 "मैं बिना पति की हूँ" पाप का सामना करना होगा। यीशु माफ़ नहीं करता है और न ही वह निंदा करता है।

4:18 "तू पाँच पति कर चुकी है" यीशु ने शारीरिक क्षेत्र से स्त्री को आध्यात्मिक क्षेत्र में स्थानांतरित करने के लिए अलौकिक ज्ञान का उपयोग किया है (तुलना यूहन्ना 1:48)।

4:19 "मुझे लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता है" स्त्री अभी तक एक मसीहाई समझ में नहीं आई थी। वह एक प्रशंसा के उपयोग द्वारा परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के प्रमुख मुद्दे को टालने की कोशिश कर रही थी (यूहन्ना 3:2 में नीकुदेमुस की तरह)। अन्य टिप्पणीकारों ने इसे व्यवस्थाविवरण 18:15-22 के मसीहाई संदर्भ के रूप में देखा।

विशेष विषय: पुराने नियम की भविष्यवाणी (SPECIAL TOPIC: OLD TESTAMENT PROPHECY)

I. प्रस्तावना
   A. प्रारंभिक कथन
      1. विश्वास करने वाला समुदाय भविष्यवाणी की व्याख्या करने के तरीके पर सहमत नहीं है। अन्य सत्य सदियों से एक रूढ़िवादी स्थिति के रूप में स्थापित हुए हैं, लेकिन एक यह नहीं।
      2. पुराने नियम की भविष्यवाणी के कई अच्छी तरह से परिभाषित चरण हैं
         a. राजशाही से पूर्व
            (1) व्यक्तियों को भविष्यद्वक्ता कहा जाता है
               (a) अब्राहम – उत्पत्ति 20:7
               (b) मूसा - गिनती 12:6-8; व्यवस्थाविवरण 18:15; 34:10
               (c) हारून – निर्गमन 7:1 (मूसा का प्रवक्ता)
               (d) मरियम - निर्गमन 15:20
               (e) मेदाद और एलदाद - गिनती 11:24-30
               (f) दबोरा - न्यायियों 4:4
               (g) अनाम - न्यायियों 6:7-10
               (h) शमूएल – 1 शमूएल 3:20
            (2) एक समूह के रूप में भविष्यद्वक्ताओं के संदर्भ – व्यवस्थाविवरण 13:1-5; 18:20-22
            (3) भविष्यसूचक समूह या समाज - 1 शमूएल 10: 5-13; 19:20; 1 राजाओं 20: 35,41; 22: 6,10-13; 2 राजाओं 2: 3,7; 4: 1,38; 5:22, 6: 1, आदि।
            (4) मसीहा भविष्यद्वक्ता कहलाया– व्यवस्थाविवरण 18:15-18
         b. गैर-लेखन राजशाही (वे राजा को संबोधित करते हैं):
            (1) गाद – 1 शमूएल 22:5; 2 शमूएल 24:11; 1 इतिहास 29:29
            (2) नातान – 2 शमूएल 7:2; 12:25; 1 राजाओं 1:22

(3) अहिय्याह - 1 राजाओं 11:29
(4) येहू - 1 राजाओं 16:1,7,12
(5) अनाम - 1 राजाओं 18:4,13; 20:13,22
(6) एलिय्याह - 1 राजाओं 18 - 2 राजाओं 2
(7) मीकायाह - 1 राजाओं 22
(8) एलीशा - 2 राजाओं 2:9,12-13

c. शास्त्रीय लेखन भविष्यद्वक्ता (वे राष्ट्र के साथ-साथ राजा को भी संबोधित करते हैं): यशायाह - मलाकी (दानिय्येल को छोड़कर)

B. बाइबल के शब्द
1. *Ro'eh* = "द्रष्टा" (BDB 906, KB 1157), 1 शमूएल 9:9। यह संदर्भ स्वयं नबी शब्द की ओर पारगमन को दर्शाता है। Ro'eh सामान्य शब्द "देखने के लिए" से है। इस व्यक्ति ने परमेश्वर के तरीकों और योजनाओं को समझा और एक संदर्भ में परमेश्वर की इच्छा सुनिश्चित करने के लिए उससे सलाह ली जाती थी।
2. *Hozeh* = "द्रष्टा" (BDB 302, KB 3011), 2 शमूएल 24:11। यह मूल रूप से Roeh का पर्याय है। यह एक दुर्लभ शब्द "देखने के लिए" से है। कृदंत रूप का प्रयोग भविष्यद्वक्ताओं (यानी, "निहारने के लिए") को संदर्भित करने के लिए सबसे अधिक किया जाता है।
3. Nabi'= "भविष्यद्वक्ता" (BDB 611, KB 661), अक्कादी क्रिया *Nabu* = " बुलाने के लिए" और अरबी *Naba'a* = "घोषणा करने के लिए" का सजातीय। भविष्यद्वक्ता को मनोनीत करने के लिए पुराने नियम में यह सबसे आम शब्द है। यह 300 से अधिक बार प्रयोग किया गया है। सटीक व्युत्पत्ति अनिश्चित है लेकिन वर्तमान में "बुलाने के लिए" सबसे अच्छा विकल्प है। संभवतः सबसे अच्छी समझ YHWH के द्वारा हारून के माध्यम से मूसा के साथ फिरौन के रिश्ते का वर्णन करने से मिलती है (तुलना निर्गमन 4:10-16; 7:1; व्यवस्थाविवरण 5:5)। एक भविष्यद्वक्ता वह है जो परमेश्वर की ओर से अपने लोगों को बोलता है (आमोस 3:8; यिर्मयाह 1:7,17; यहेजकेल 3:4)।
4. सभी तीन शब्द 1 इतिहास 29:29 में भविष्यद्वक्ता के कामों के लिए प्रयोग किए गए है। शमूएल- *Ro'eh*; नातान - *Nabi'* और गाद - *Hozeh*।
5. वाक्यांश, *'ish ha - 'elohim*, "परमेश्वर का जन," भी परमेश्वर के एक प्रवक्ता के लिए एक व्यापक पदनाम है। यह "भविष्यद्वक्ता" के अर्थ में पुराने नियम में 76 बार प्रयोग किया गया है।
6. "भविष्यद्वक्ता" शब्द मूल में यूनानी है। यह आता है: (1) *pro* = "पहले" या "के लिए" और (2) *phemi* = "बोलने के लिए।"

II. भविष्यवाणी की परिभाषा

A. "भविष्यवाणी" शब्द का अंग्रेजी से अधिक इब्रानी में एक व्यापक शब्दार्थ क्षेत्र था। यहोशू से लेकर राजाओं तक (रूथ को छोड़कर) की इतिहास की पुस्तकों को यहूदियों द्वारा "पूर्व भविष्यद्वक्ता" के रूप में नामांकित किया गया है। अब्राहम (उत्पत्ति 20:7; भजनसंहिता 105:15) और मूसा (व्यवस्थाविवरण 18:18) दोनों को भविष्यद्वक्ताओं के रूप में नामांकित किया गया है (मरियम, निर्गमन 15:20) इसलिए, एक कल्पित अंग्रेजी परिभाषा से सावधान रहें!

B. "भविष्यवाद को तर्कसंगत रूप से इतिहास की उस समझ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो केवल दिव्य सोच, दिव्य उद्देश्य, दिव्य भागीदारी के संदर्भ में अर्थ को स्वीकार करती है," *Interpreter's Dictionary of the Bible*, vol. 3, p. 896।

C. "भविष्यद्वक्ता न तो एक दार्शनिक है और न ही एक पद्धतिबद्ध धर्मशास्त्री, लेकिन एक वाचाधारी मध्यस्थ है जो उनके वर्तमान में सुधार करके उनके भविष्य को आकार देने के लिए परमेश्वर का वचन उसके लोगों तक पहुँचाता है," Prophets and Prophecy, *Encyclopedia Judaica* vol.13 p.1152।

III. भविष्यवाणी का उद्देश्य

A. भविष्यवाणी परमेश्वर का अपने लोगों से उनकी वर्तमान परिस्थिति में मार्गदर्शन और उनके जीवन और संसार की घटनाओं पर उसके नियंत्रण पर आशा प्रदान करते हुए बात करने का एक तरीका है। उनका संदेश मूल रूप से सामूहिक होता था। यह फटकारने, प्रोत्साहित करने, विश्वास उत्पन्न करने और पश्चाताप करने के लिए, और परमेश्वर और उसकी योजनाओं के बारे में उसके लोगों को सूचित करने के लिए है। वे परमेश्वर की वाचाओं

के प्रति निष्ठा रखने के लिए परमेश्वर के लोगों को संभालते हैं। इसमें यह भी जोड़ा जाना चाहिए कि अक्सर इसका इस्तेमाल स्पष्ट रूप से परमेश्वर की एक प्रवक्ता की पसंद को प्रकट करने के लिए किया जाता है (व्यवस्थाविवरण 13:1-3; 18:20-22)। यह, अंत में, मसीहा को संदर्भित करेगा।

B. अक्सर, भविष्यद्वक्ता अपने दिन के ऐतिहासिक या धार्मिक संकट को लेता और इसे एक युगांत विषयक विन्यास में प्रस्तुत करता है। इतिहास का यह अंत-समय का दृष्टिकोण इस्राएल में और इसके दिव्य चुनाव और वाचा के वादों के अर्थ में अद्वितीय है।

C. भविष्यद्वक्ता का कार्य परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए महायाजक के कार्य को संतुलित करना (यिर्मयाह 18:18) और उस पर अधिकार करना है। ऊरीम और तुम्मीम परमेश्वर के प्रवक्ता की ओर से एक मौखिक संदेश के रूप में पहुँचते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस्राएल में भविष्यद्वक्ता का कार्य मलाकी के बाद समाप्त हो गया। यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के साथ 400 साल बाद तक फिर से प्रकट नहीं होता है। यह अनिश्चित है कि नये नियम का "भविष्यवाणी" का दान पुराने नियम से कैसे संबंधित है। नए नियम के भविष्यवक्ता (प्रेरितों के काम 11:27-28; 13:1; 15:32; 1 कुरिन्थियों 12:10,28-29; 14:29,32,37; इफिसियों 4:11) नए प्रकटीकरण या पवित्रशास्त्र को प्रगट करने वाले नहीं, लेकिन वाचा की स्थितियों में परमेश्वर की इच्छा को "पहले से बतानेवाले" और "पूर्वसूचक" हैं।

D. भविष्यवाणी विशेष रूप से या मुख्य रूप से प्रकृति में भविष्यसूचक नहीं है। भविष्यकथन किसी के कार्य और संदेश की पुष्टि करने का एक तरीका है, लेकिन यह ध्यान दिया जाना चाहिए "पुराने नियम की 2% से भी कम भविष्यवाणी मसीहाई है। 5% से कम विशेष रूप से नई वाचा के युग का वर्णन करती है। 1% से भी कम उन घटनाओं से संबंधित हैं जो अभी तक नहीं हुई हैं।" (Fee and Stuart, *How to Read the Bible For All Its Worth* ,p.166)।

E. भविष्यद्वक्ता लोगों के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि याजक परमेश्वर के लिए लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह एक सामान्य कथन है। हबक्कूक जैसे अपवाद हैं, जो परमेश्वर से प्रश्न पूछता है।

F. एक कारण यह है कि भविष्यद्वक्ताओं को समझना मुश्किल है क्योंकि हम नहीं जानते कि उनकी पुस्तकों को कैसे संरचित किया गया था। वे कालानुक्रमिक नहीं हैं। वे विषयगत प्रतीत होते हैं लेकिन हमेशा उस तरह नहीं जिस तरह से उम्मीद की जाती है। अक्सर कोई स्पष्ट ऐतिहासिक विन्यास, समय सीमा या भविष्यद्वाणियों के बीच स्पष्ट विभाजन नहीं होता है। ये पुस्तकें कठिन हैं
   1. एक बैठक में पढ़ने में
   2. विषय के आधार पर रूपरेखा तैयार करने में
   3. प्रत्येक भविष्यवाणी में केंद्रीय सत्य या लेखकीय इरादे का पता लगाने में

IV. भविष्यवाणी की विशेषताएँ

A. पुराने नियम में "भविष्यद्वक्ता" और "भविष्यवाणी" की अवधारणा का विकास प्रतीत होता है। प्रारंभिक इस्राएल में एलिय्याह या एलीशा जैसे एक मजबूत चमत्कारी अगुवे के नेतृत्व में भविष्यद्वक्ताओं की संगति विकसित हुई। कभी-कभी वाक्यांश, "भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र," का प्रयोग इस समूह (2 राजाओं 2) को मनोनीत करने के लिए किया जाता था। भविष्यवक्ताओं को परमानंद के रूपों के आधार पर वर्णित किया जाता था (1 शमूएल 10:10-13; 19:18-24)।

B. हालांकि, यह अवधि व्यक्तिगत भविष्यद्वक्ताओं में तेजी से गुजरी। ऐसे भी भविष्यद्वक्ता (सच्चे और झूठे दोनों) थे जो राजा के साथ पहचाने गए, और महल (गाद, नातान) में रहे। इसके अलावा, ऐसे लोग भी थे जो स्वतंत्र थे, कभी-कभी पूरी तरह से इस्राएली समाज (अमोस) की यथास्थिति से असंबद्ध थे। उनमें पुरुष और स्त्री दोनों शामिल हैं (2 राजाओं 22:14)

C. भविष्यद्वक्ता अक्सर मनुष्य की तात्कालिक प्रतिक्रिया के आधार पर भविष्य के बारे में बताता था। अक्सर भविष्यवक्ता का कार्य परमेश्वर की रचना के लिए उसकी सार्वभौमिक योजना का खुलासा था जो मानव प्रतिक्रिया से प्रभावित नहीं है। यह सार्वभौमिक युगांत विषयक योजना प्राचीन निकट पूर्व के भविष्यद्वक्ताओं के बीच अद्वितीय है। भविष्यकथन और वाचा की निष्ठा भविष्यसूचक संदेशों के जुड़वां केंद्र-बिंदु हैं (तुलना Fee and Stuart, p. 150)। इसका तात्पर्य यह है कि भविष्यद्वक्ताओं का केंद्र-बिंदु मुख्य रूप से सामूहिक है। वे आम तौर पर, लेकिन विशेष रूप से नहीं, राष्ट्र को संबोधित करते हैं।

D. अधिकांश भविष्यसूचक सामग्री मौखिक रूप से प्रस्तुत की गई थी। इसे बाद में विषय, कालक्रम या निकट पूर्वी साहित्य के अन्य नमूनों के माध्यम से संयुक्त किया गया जो हमारे लिए खो गए हैं। क्योंकि यह मौखिक था यह लिखित गद्य के समान संरचित नहीं है। इससे पुस्तकों को लगातार सीधे पढ़ना मुश्किल हो जाता है और एक विशिष्ट ऐतिहासिक विन्यास के बिना समझना मुश्किल हो जाता है।

E. भविष्यद्वक्ता अपने संदेशों को व्यक्त करने के लिए कई नमूनों का प्रयोग करते हैं।
   1. कचहरी का दृश्य - परमेश्वर अपने लोगों को कचहरी में ले जाता है, अक्सर यह एक तलाक का मामला होता है जहाँ YHWH अपनी पत्नी (इस्राएल) को उसकी बेवफाई (होशे 4; मीका 6) के लिए अस्वीकार कर देता है।
   2. अंतिम संस्कार विलापगीत - इस तरह के संदेश का विशेष छंद और इसकी विशेषता "शोक" इसे एक विशेष रूप के रूप में अलग करता है (यशायाह 5; हबक्कूक 2)।
   3. वाचा की आशीष की घोषणा - वाचा की सशर्त प्रकृति पर बल दिया गया है और परिणाम, दोनों सकारात्मक और नकारात्मक रूप से, भविष्य के लिए बताए गए हैं (व्यवस्थाविवरण 27-28)।

V. भविष्यवाणी की व्याख्या करने के लिए सहायक दिशा निर्देश

A. मूल भविष्यद्वक्ता (सम्पादक) का अभिप्राय ऐतिहासिक विन्यास और प्रत्येक आकाशवाणी के साहित्यिक संदर्भ को ध्यान में रखकर खोजें। आमतौर पर इसमें इस्राएल का किसी तरह मूसा की वाचा को तोड़ना शामिल होगा।

B. पूरे आकाशवाणी को पढ़ें और व्याख्या करें, न कि केवल एक हिस्से को; निहित-वस्तु के अनुसार रूपरेखा तैयार करें। देखें कि यह समीप की आकाशवाणियों से कैसे संबंधित है। पूरी पुस्तक की रूपरेखा बनाने की कोशिश करें।

C. जब तक पाठ में स्वयं कुछ आपको आलंकारिक प्रयोग के लिए इंगित न करे तब तक अवतरण की शाब्दिक व्याख्या को मान लें; फिर गद्य में आलंकारिक भाषा डालें।

D. ऐतिहासिक विन्यास और समानांतर अवतरणों के प्रकाश में प्रतीकात्मक कार्य का विश्लेषण करें। यह निश्चित रूप से बयाद रखें कि यह प्राचीन निकट पूर्वी साहित्य पश्चिमी या आधुनिक साहित्य नहीं है।

E. भविष्य कथन के साथ ध्यानपूर्वक व्यवहार करें।
   1. क्या वे विशेष रूप से लेखक के दिन के लिए हैं?
   2. क्या वे बाद में इस्राएल के इतिहास में पूरे हुए थे?
   3. क्या वे अभी तक भविष्य की घटनाएं हैं?
   4. क्या उनकी एक समकालीन पूर्ति है और फिर भी एक भविष्य की पूर्ति है?
   5. बाइबल के लेखकों को, न कि आधुनिक लेखकों को, अपने उत्तरों का मार्गदर्शन करने दें।

F. विशेष चिंताएँ
   1. क्या नियमबद्ध प्रतिक्रिया भविष्यकथन को योग्य साबित करती है?
   2. क्या यह निश्चित है कि भविष्यवाणी किसे सम्बोधित करती है (और क्यों)?
   3. क्या, बाइबल के आधार पर और / या ऐतिहासिक रूप से, दोनों प्रकार से बहुखंडीय पूर्ति की संभावना है?
   4. नये नियम के लेखक, प्रेरणा के तहत, पुराने नियम में कई स्थानों पर मसीहा को देखने में सक्षम थे जो हमारे लिए स्पष्ट नहीं हैं। वे प्रारूप विज्ञान या शब्द क्रीड़ा का प्रयोग करते हुए प्रतीत होते हैं। चूंकि हम प्रेरित नहीं हैं इसलिए बेहतर है कि हम यह दृष्टिकोण उन पर छोड़ दें।

VI. सहायक पुस्तकें

A. *A Guide to Biblical Prophecy* by Carl E. Amending and W. Ward Basque
B. *How to Read the Bible for All Its Worth* by Gordon Fee and Douglas Stuart
C. *My Servants the Prophets* by Edward J. Young
D. *Plowshares and Pruning Hooks: Rethinking the Language of Biblical Prophecy and Apocalyptic* by D. Brent Sandy
E. *New International Dictionary of Old Testament Theology and Exegesis*, vol. 4, pp. 1067-1078
F. *The Language and Imagery of the Bible* by G. B. Caird

विशेष विषय: नये नियम की भविष्यवाणी (SPECIAL TOPIC: NEW TESTAMENT PROPHECY)

I. यह पुराने नियम की भविष्यवाणी (BDB 611, KB 661) के समान नहीं है; विशेष विषय: भविष्यवाणी [पुराना नियम]) देखें, जिसमें YHWH से प्रेरित प्रकटीकरण प्राप्त करने और दर्ज़ करने का रब्बियों का लक्ष्यार्थ है(तुलना से प्रेरितोंके कामके काम के कार्य 3:18,21; रोमियों 16:26)। केवल भविष्यद्वक्ता पवित्रशास्त्र लिख सकते थे।
   A. मूसा को एक भविष्यद्वक्ता कहा जाता था (तुलना व्यवस्थाविवरण 18:15-21)।
   B. इतिहास की किताबें (यहोशू- राजाओं [रूथ को छोड़कर]) को "पूर्व भविष्यद्वक्ता" कहा जाता था (तुलना प्रेरितों के काम 3:24)।
   C. भविष्यद्वक्ता परमेश्वर से सूचना के स्रोत के रूप में महायाजक का स्थान लेते थे (तुलना यशायाह - मलाकी)
   D. इब्रानी साहित्य संग्रह का दूसरा विभाग "भविष्यद्वक्ता" है (तुलना मत्ती 5:17; 22:14; लूका 16:16; 24:25,27; रोमियों 3:21)।

II. नये नियम में अवधारणा कई अलग-अलग तरीकों से प्रयोग की जाती है।
   A. पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और उनके प्रेरित संदेश का उल्लेख करते हुए (तुलना मत्ती 2:23; 5:12; 11:13; 13:14; रोमियों 1:2)।
   B. एक सामाजिक समूह के बजाय एक व्यक्ति के लिए एक संदेश का उल्लेख करते हुए (यानी, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मुख्य रूप से इस्राएल से बात की थी)
   C. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले (तुलना मत्ती 11: 9; 14: 5; 21:27; लूका 1:76) और यीशु दोनों को परमेश्वर के राज्य के प्रचारक के रूप में उल्लेख करते हुए (तुलना मत्ती 13:57; 21:21)। 11,46; लूका 4:24; 7:16; 13:33; 24:19)। यीशु ने भी भविष्यद्वक्ताओं से बड़ा होने का दावा किया (तुलना मत्ती 11:9; 12:41; लूका 7:26)।
   D. पुराने नियम में अन्य भविष्यद्वक्ता
      1. यीशु का प्रारंभिक जीवन जैसा कि लूका के सुसमाचार में दर्ज किया गया (यानी, मरियम की यादें)
         a. इलीशिबा (तुलना लूका 1:41-42)
         b. जकरयाह (तुलना लूका 1:67-79)
         c. शमौन (तुलना लूका 2:25-35)
         d. हन्नाह (तुलना लूका 2:36)
      2. व्यंग्यात्मक भविष्यकथन (तुलना कैफा, यूहन्ना 11:51)
   E. सुसमाचार की घोषणा करनेवाले का उल्लेख करते हुए (1 कुरिन्थियों 12:28-29; इफिसियों 4:11 में घोषित दानों की सूचियों में शामिल)।
   F. कलीसिया में कार्यरत दानों का उल्लेख करते हुए (तुलना मत्ती 23:34; प्रेरितों के काम 13:1; 15:32; रोमियों 12:6; 1 कुरिन्थियों 12:10,28-29; 13:2; इफिसियों 4:11)। कभी-कभी यह स्त्रियों को संदर्भित कर सकता है (तुलना लूका 2:36; प्रेरितों के काम 2:17; 21:9; 1 कुरिन्थियों 11:4-5)।
   G. प्रकाशितवाक्य की भविष्यसूचक पुस्तक के कुछ हिस्सों का उल्लेख करते हुए (तुलना प्रकाशितवाक्य 1:3; 22:7,10,18,19)

III. नये नियम के भविष्यद्वक्ता
   A. वे उसी अर्थ में प्रेरित प्रकटीकरण नहीं देते हैं, जैसा पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता देते थे (यानी, पवित्रशास्त्र)। प्रेरितों के काम 6:7; 13:8; 14:22; गलातियों 1:23; 3:23, 6:10; फिलिप्पियों 1:27; यहूदा 3,20 में वाक्यांश "विश्वास" (यानी, एक पूर्ण सुसमाचार की भावना) के प्रयोग के कारण यह कथन सम्भव है।

यहूदा 3 में प्रयोग किए गए पूर्ण वाक्यांश से यह अवधारणा स्पष्ट है, " पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया विश्वास।" " एक ही बार" विश्वास सत्यों, सिद्धांतों, अवधारणाओं, मसीहत की विश्वदृष्टि शिक्षाओं को संदर्भित करता है। यह एक बार दिया गया पर जोर नये नियम के लेखन के लिए धर्मशास्त्रीय रूप से प्रेरणा को सीमित करने और बाद के या अन्य लेखन को भविष्य सूचक मानने की अनुमति नहीं देने लिए बाइबल का आधार है। (देखें विशेष विषय: प्रेरणा)। NT में कई अस्पष्ट, अनिश्चित और संदेहास्पद विषय हैं (देखें विशेष विषय: पूर्वी साहित्य [बाइबल संबंधी विरोधाभास]), लेकिन विश्वासियों ने विश्वास के साथ विश्वास दिलाया कि विश्वास और अभ्यास के लिए "जरूरत" वाली सभी बातें नये नियम में पर्याप्त स्पष्टता के साथ शामिल हैं। इस अवधारणा की रूपरेखा को उसमें जिसे "भविष्यसूचक त्रिकोण" कहा जाता है, प्रस्तुत की गई है।

1. परमेश्वर ने स्वयं को समय-स्थान के इतिहास में प्रकट किया है (प्रकटीकरण)
2. उसने कुछ मानव लेखकों को उसके कृत्यों को लिखने और समझाने के लिए चुना है।(प्रेरणा)
3. उसने अपनी आत्मा मनुष्यों के मन और दिलों को खोलने के लिए दी है, इन लेखों को समझने के लिए निश्चित रूप से नहीं, लेकिन पर्याप्त रूप से मुक्ति और एक प्रभावी मसीही जीवन के लिए (प्रकाशन, विशेष विषय: प्रकाशन देखें)। इसका मुद्दा यह है कि प्रेरणा पवित्रशास्त्र के लेखकों तक सीमित है। इसके आगे कोई आधिकारिक लेखन, दर्शन या प्रकटीकरण नहीं हैं। साहित्य संग्रह बंद है। हमारे पास वो सभी सत्य हैं जिनकी हमें उचित रूप से परमेश्वर को प्रत्युत्तर देने के लिए आवश्यकता है। बाइबल के लेखकों की सहमति के विरुद्ध ईमानदार, धार्मिक विश्वासियों की असहमति में यह सच्चाई सबसे अच्छी तरह से देखी जाती है। किसी भी आधुनिक लेखक या वक्ता के पास दिव्य नेतृत्व का वह स्तर नहीं है जो कि पवित्रशास्त्र के लेखकों ने किया था।

B. कुछ तरीकों में नये नियम के भविष्यद्वक्ता पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान हैं।
1. भविष्य की घटनाओं का भविष्यकथन (तुलना पौलुस, प्रेरितों के काम 27:22; अगबुस, प्रेरितों के काम 11:27-28; 21:10-11; अन्य अनाम भविष्यद्वक्ता, प्रेरितों के काम20:23)
2. न्याय की घोषणा (तुलना पौलुस, प्रेरितों के काम 13:11; 28:25-28)
3. प्रतीकात्मक कार्य जो एक घटना को स्पष्ट रूप से चित्रित करते हैं (तुलना अगबुस, प्रेरितों के काम 21:11)

C. वे सुसमाचार की सच्चाइयों की घोषणा करते हैं, कभी-कभी भविष्यकथनों के माध्यमों से (तुलना प्रेरितों के काम 11:27-28; 20:23; 21:10-11), लेकिन यह प्राथमिक केंद्रबिंदु नहीं है। 1 कुरिन्थियों में भविष्यवाणी मूल रूप से सुसमाचार का प्रसार कर रही है (तुलना 1 कुरिन्थियों 14: 24,39)।

D. वे प्रत्येक नई स्थिति, संस्कृति या समय अवधि के लिए परमेश्वर के सत्य के समकालीन और व्यावहारिक प्रयोगों को प्रकट करने के लिए आत्मा के समकालीन साधन हैं (तुलना 1 कुरिन्थियों 14:3)।

E. वे शुरुआती पौलुस द्वारा स्थापित कलीसियाओं में सक्रिय थे (तुलना 1 कुरिन्थियों 11: 4-5; 12: 28,29; 13:2,8,9; 14:1,3,4,5,6,22; 24,29,31,32,37,39; इफिसियों 2:20; 3:5; 4:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:20) और *Didache* (पहली शताब्दी के अंत में या दूसरी शताब्दी में लिखा गया है, तारीख अनिश्चित है) और उत्तरी अफ्रीका में दूसरी और तीसरी शताब्दी के मोंटानावाद में वर्णित हैं।

IV. क्या नये नियम के दान रुक गए हैं?

A. इस सवाल का जवाब देना मुश्किल है। यह दानों के उद्देश्य को परिभाषित करके इस मुद्दे को स्पष्ट करने में मदद करता है। क्या वे सुसमाचार के शुरुआती प्रचार की पुष्टि करने के लिए हैं या क्या वे कलीसिया के द्वारा स्वयं के लिए और एक खोए हुए जगत के लिए सेवा करने के चल रहे तरीके हैं?

B. क्या हम इस सवाल का जवाब देने के लिए कलीसिया के इतिहास को देखते हैं या स्वयं नये नियम को ही? नये नियम में कोई संकेत नहीं है कि आत्मिक दान अस्थायी थे। जो इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए 1 कुरिन्थियों 13:8-13 का प्रयोग करने की कोशिश करते हैं, उस अवतरण के लिए लेखक के इरादे का दुरुपयोग करते हैं, जो दावा करता है कि प्रेम के अतिरिक्त सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

C. मैं यह कहने के लिए लालायित होता हूँ कि चूंकि नया नियम, न कि कलीसिया का इतिहास, आधिकारिक है, विश्वासियों को यह पुष्टि कर लेनी चाहिए कि दान जारी रहे। हालांकि, मेरा मानना है कि संस्कृति व्याख्या को प्रभावित करती है। कुछ बहुत स्पष्ट पाठ अब लागू नहीं होते हैं (यानी, पवित्र चुम्बन, स्त्रियों का घूँघट में रहना, कलीसियाओं का घरों में मिलना आदि)। अगर संस्कृति ग्रंथों को प्रभावित करती है, तो कलीसिया के इतिहास को क्यों नहीं?

D. यह केवल एक सवाल है जिसका निश्चित रूप से उत्तर नहीं दिया जा सकता है। कुछ विश्वासी "बंदी" की वकालत करेंगे और दूसरे "गैर-बंदी" की। इस क्षेत्र में, जैसे कई व्याख्यात्मक मुद्दों में, विश्वासी का हृदय महत्त्वपूर्ण है। नया नियम अस्पष्ट और सांस्कृतिक है। कठिनाई यह तय कर पाने में है कि कौन से पाठ संस्कृति/इतिहास से प्रभावित हैं और कौन से हर समय और सभी संस्कृतियों के लिए हैं (तुलना Fee and Stuart's *How to Read the Bible for All Its Worth*, pp. 14-19 and 69-77)। यहाँ स्वतंत्रता और जिम्मेदारी की चर्चाएँ, जो रोमियों 14:1-15:13 और 1 कुरिन्थियों 8-10 में पाई जाती हैं, महत्त्वपूर्ण हैं। कैसे हम सवाल का जवाब देते हैं, यह दो तरह से महत्त्वपूर्ण है।

1. प्रत्येक विश्वासी को अपने प्रकाश के, जो उसके पास है, विश्वास में चलना चाहिए। परमेश्वर हमारे हृदय और उद्देश्यों को देखता है।
2. प्रत्येक विश्वासी को दूसरे विश्वासियों को अपने विश्वास की समझ में चलने देना चाहिए। बाइबल की सीमा के भीतर सहिष्णुता होनी चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि हम एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करें जैसा वह करता है।

E. इस मुद्दे का सारांश प्रस्तुत करने के लिए, मसीहत विश्वास और प्रेम का जीवन है, न कि एक आदर्श धर्मशास्त्र। उसके (परमेश्वर) साथ एक रिश्ता जो दूसरों के साथ हमारे रिश्ते को प्रभावित करता है, निश्चित जानकारी या पंथ पूर्णता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

4:20 "हमारे बापदादों ने" यह अब्राहम और याकूब (तुलना उत्पत्ति 12:7; 33:20) को संदर्भित करता है। वह वाचा के समावेश की अपनी समझ का प्रतिपादन कर रही है (तुलना यूहन्ना 8:31-59)।"

▣ **"इसी पहाड़ पर आराधना की"** यह धर्मशास्त्रीय तर्क को संदर्भित करता है कि परमेश्वर(YHWH) की आराधना कहाँ की जानी चाहिए। यहूदियों ने मोरिय्याह पर्वत (यहूदी मंदिर का स्थान) पर जोर दिया जबकि सामरी लोग गरिज्जीम पर्वत पर जोर देते थे। (यूहन्ना हिरकेनस द्वारा 129 ई.पू. में नष्ट किया गया सामरी मंदिर)।

हमारे दिन में यह उन लोगों द्वारा किया जाने वाला प्रयास होगा जिनके लिए हम एक धर्मशास्त्रीय भुलावा लाकर मसीह के साथ उनके संबंधों के मुद्दे से दूर होने के साक्षी रहे हैं। मनुष्य धर्म और दर्शन का अध्ययन करने का आनंद तब तक लेते हैं जब तक कि यह उन पर व्यक्तिगत प्रभाव नहीं डालता है (तुलना यूहन्ना 3:19-21)।

4:21 "वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे,न यरूशलेम में" यह उस स्त्री और उसके चेलों के लिए भी एक चौंकाने वाला बयान रहा होगा। कहाँ मुद्दा नहीं है, लेकिन कौन!

4:22 "उद्धार यहूदियों में से है" यह मसीहा की उत्पत्ति की पुष्टि है (तुलना उत्पत्ति 12:2-3; 49:8-12; यशायाह 2:3; रोमियों 9:4-5)।

4:23 "परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है" यह यह सार्वभौमिक आराधना के लिए मलाकी 1:11की ओर एक संकेत हो सकता है। यह स्पष्ट है कि यीशु अपने जीवनकाल के दौरान और उसकी मृत्यु के बाद भी अनन्त जीवन का उपहार लाया था। यह कथन उस तनाव को दर्शाता है जो मसीहा के दो आगमनों के बीच मौजूद है। दो यहूदी युगों का (1यूहन्ना 2:17 पर विशेष विषय देखें) अब अधिव्यापन किया गया है। आत्मा का नया युग मौजूद है, फिर भी हम बुराई और पाप की वृद्धावस्था में जीते हैं।

यीशु निश्चित रूप से दावा कर रहा है कि नए युग की शुरुआत उससे हुई थी। आत्मा के युग, मसीहाई युग, का शुभारंभ किया गया था!

▣ **"आत्मा और सच्चाई से"** शब्द "आत्मा" (यूहन्ना 3:8 में विशेष विषय देखें) एक आराधना की बात करता है जो स्थानीय या शारीरिक रूप पर आधारित नहीं है। यूनानी संसार में "सच्चाई" शब्द का इस्तेमाल एक मानसिक अवधारणा को बोलने के लिए किया जाता था, जबकि इब्रानी पृष्ठभूमि विश्वासयोग्यता या भरोसेमंदी थी। यूहन्ना 6:55 और 17:3 में सच्चाई पर विशेष विषय देखें।

▣ **"पिता"** नए नियम में उसके अद्वितीय पुत्र के रूप में यीशु को संदर्भित किए बिना परमेश्वर को "पिता" कहना बहुत असामान्य था।

विशेष विषय: पिता (SPECIAL TOPIC: FATHER)

पुराना नियम परमेश्वर के अंतरंग पारिवारिक रूपक को पिता के रूप में प्रस्तुत करता है (देखें विशेष विषय: परमेश्वर का पितृत्व):

1. इस्राएल राष्ट्र को अक्सर YHWH के "पुत्र" के रूप में वर्णित किया जाता है (तुलना होशे 11:1; मलाकी 3:11)
2. पहले भी व्यवस्थाविवरण में पिता के रूप में परमेश्वर की उपमा का प्रयोग किया गया है (1:31)
3. व्यवस्थाविवरण 32 में इस्राएल को "उसके बच्चे" कहा गया है और परमेश्वर को "तुम्हारा पिता" कहा गया है।

4. इस उपमा को भजनसंहिता 103:13 में कहा गया और भजनसंहिता 68:5 में विकसित किया गया (अनाथों का पिता)
5. यह भविष्यद्वक्ताओं में आम था (तुलना यशायाह 1:2; 63:8; इस्राएल पुत्र के रूप में, परमेश्वर पिता के रूप में, 63:16; 64:8; यिर्मयाह 3:4,19; 31:9)।

यीशु अरामी बोलता था, जिसका अर्थ है कि कई जगह जहाँ "पिता" आता है, यह यूनानी *Pater* है, और अरामी *Abba* (तुलना मरकुस 14:36) को प्रतिबिंबित कर सकता है। यह पारिवारिक शब्द "डैडी" या "पापा", पिता के साथ यीशु की अंतरंगता को दर्शाता है; अपने अनुयायियों को यह बताने से पिता के साथ हमारी स्वयं की अंतरंगता को भी बढ़ावा मिलता है। पुराने नियम में YHWH के लिए "पिता" शब्द का प्रयोग बहुत कम किया गया था, लेकिन यीशु इसका प्रयोग अक्सर और व्यापक रूप से करते हैं। यह मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ विश्वासियों के नए संबंध का एक प्रमुख प्रमाण है (तुलना मत्ती 6:9)।

▣ **"क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है"** परमेश्वर सक्रिय रूप से खोई हुई मानवता की तलाश कर रहे हैं (तुलना यशायाह 55; यहेजकेल 18:23,32; लूका 19:10; यूहन्ना 1:12; 3:16)।

4:24 "परमेश्वर आत्मा है" यूहन्ना के लेखन में कई छोटे खंड हैं जो परमेश्वर के चरित्र का वर्णन करते हैं: (1) परमेश्वर प्रेम है; (2) परमेश्वर ज्योति है; (3) परमेश्वर आत्मा है। इसका मतलब यह हो सकता है (1) शारीरिक नहीं; (2) एक इलाके तक सीमित नहीं; (3) समय क्रम से संबंधित नहीं या (4) स्वर्गीय बनाम सांसारिक।

4:25 "मसीह आनेवाला है" शब्द मसीह केवल दो बार नये नियम में आता है, दोनों यूहन्ना के सुसमाचारों में (तुलना यूहन्ना 1:41; 4:25)।

विशेष विषय: मसीहा (SPECIAL TOPIC: MESSIAH)

इस शब्द की व्याख्या करने में कठिनाई "मसीहा" या "अभिषिक्त जन" (BDB 603, KB 645) शब्द से जुड़े विभिन्न प्रयोगों के कारण है। इस शब्द का प्रयोग परमेश्वर के आह्वान को दर्शाने और एक निर्धारित नेतृत्व कार्य के लिए सुसज्जित करने के लिए एक व्यक्ति पर एक विशेष तेल लगाने के लिए किया जाता था।

1. यहूदी राजाओं के लिए प्रयोग (उदाहरण के लिए, 1 शमूएल 2:10; 12:3; 24:6,10; 2 शमूएल 19:21; 23:1; भजनसंहिता 89:51; 132:10,17; विलापगीत 4:20; हबक्कूक 3:13; दानिय्येल 9:25 में "अभिषिक्त प्रधान")
2. यहूदी याजकों के लिए प्रयोग (यानी, "अभिषिक्त याजक," निर्गमन 29:7; उदाहरण; लैव्यव्यवस्था 4:3,5,16; 6:15; 7:36; 8:12; संभवतः भजनसंहिता 84:9-10; और 133:2)
3. कुलपिताओं और भविष्यद्वक्ताओं के लिए प्रयोग (तुलना उत्पत्ति 26:7; 1 इतिहास 16:25; भजनसंहिता 105:15, जो वाचा के लोगों को सामूहिक रूप से संदर्भित करता है; संभवतः हबक्कूक 3:13)
4. भविष्यद्वक्ताओं के लिए प्रयोग (तुलना 1 राजाओं 19:16; संभवतः 1 इतिहास 29:22)
5. कुस्रू के लिए प्रयोग (तुलना यशायाह 45:1)
6. #1 और #2 भजनसंहिता 110 और जकर्याह 4 में संयुक्त हैं
7. परमेश्वर के विशेष आगमन, धार्मिकता का नया युग लाने के लिए दाऊदी राजाओं के लिए प्रयोग
   a. यहूदा का वंश (तुलना उत्पत्ति 49:10)
   b. यिशै का घराना (तुलना 2 शमूएल 7)
   c. सार्वभौमिक राज्य (तुलना भजनसंहिता 2; यशायाह 9:6; 11:1-5; मीका 5:1-4ff)
   d. जरूरतमंदों की सेवकाई (तुलना यशायाह 61:1-3)

मैं व्यक्तिगत रूप से नासरत के यीशु के साथ "एक अभिषिक्त जन" की पहचान के प्रति आकर्षित हूँ (तुलना यूहन्ना 1:41; 4:25) क्योंकि

1. चौथे साम्राज्य के दौरान दानिय्येल 2 में एक अनंत राज्य की प्रस्तावना
2. दानिय्येल 7:13 में "मनुष्य का पुत्र" को एक अनंत राज्य दिए जाने की प्रस्तावना
3. दानिय्येल 9:24 में छुटकारे के वाक्यांश, जो पतित विश्व इतिहास की एक परिणति की ओर इशारा करते हैं
4. नये नियम में यीशु के द्वारा दानिय्येल की पुस्तक का प्रयोग (तुलना मत्ती 24:15; मरकुस 13:14)

यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि यह पुराने नियम में एक दुर्लभ नाम है, संभवतः केवल दानिय्येल 9:25। यह भी स्वीकार करना होगा कि यीशु पुराने नियम के मसीहा के सामान्य विवरण में उपयुक्त नहीं बैठता है।

1. इस्राएल में अगुवा नहीं
2. एक याजक द्वारा आधिकारिक तौर पर अभिषिक्त नहीं
3. इस्राएल का सिर्फ उद्धारकर्ता नहीं
4. न केवल "मनुष्य का पुत्र," बल्कि आश्चर्यजनक रूप से "परमेश्वर का पुत्र"

▣ **"जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा"** यह दर्शाता है कि सामरी लोग एक मसीहा की उम्मीद कर रहे थे। यह भी दर्शाता है कि उन्होंने मसीहा को परमेश्वर की पूर्णता को प्रकट करने के लिए आते हुए देखा।

4:26 "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ" यह यशायाह 52:6 के लिए एक संकेत हो सकता है। यह उसके देवत्व का एक सादा, खुला प्रतिज्ञान (सिनॉप्टिक सुसमाचारों से कितना अलग) है! यह "मैं वही हूँ" पर एक क्रीड़ा है, जिसमें परमेश्वर, YHWH (तुलना निर्गमन 3:12,14)के पुराने नियम के वाचा के नाम को दर्शाया गया है यीशु ने परमेश्वर के लिए इस पुराने नियम के

नाम का प्रयोग YHWH के आत्म- प्रकटीकरण का प्रत्क्षय और स्पष्ट रूप से यीशु में उल्लेख करने के तरीके के रूप में किया था (तुलना यूहन्ना 8:24, 28, 58; 13:19; 18:5 यशायाह 41: 4; 43:10; 46:4 से तुलना करें)। "मैं हूँ" के इस विशेष उपयोग को यूहन्ना 6:35,51;8:12; 10:7, 9, 11, 14; 11:25; 14: 6; 15:1,5 के प्रसिद्ध "मैं हूँ" कथनों से अलग किया जाना चाहिए जिनके पीछे गुणवाचक संज्ञाएँ हैं।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 4:27-30
[27]इतने में चेले आ गए और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न पूछा, "तू क्या चाहता है?" या, "किस लिए उससे बातें करता है?" [28]तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी, [29]"आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?" [30]अतः वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।

4:27 "वे अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है" सांस्कृतिक रूप से यह रूढ़िवादी यहूदियों द्वारा बिल्कुल नहीं हो सकता।

▣ **"तौभी किसी ने न पूछा, 'तू क्या चाहता है?' या, 'किस लिए उससे बातें करता है?'"** यह यूहन्ना द्वारा एक प्रत्यक्षदर्शी टिप्पणी है। उसे यह चौंकाने वाली घटना अच्छी तरह से याद होगी!

4:28 "स्त्री ने अपना घड़ा छोड़ दिया" यह एक ऐसा खूबसूरत प्रत्यक्षदर्शी, ऐतिहासिक टिप्पणी जिसने इस स्त्री की उत्तेजना को दिखाया है जब वह गवाही देने के लिए गाँव में वापस चली गई (तुलना यूहन्ना 4:29-30)।

4:29 "कहीं यही तो मसीह नहीं है?" व्याकरणिक रूप एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है, लेकिन संदर्भ से पता चलता है कि उसने वास्तव में विश्वास किया था कि वह था! प्रसंग व्याकरण को पछाड़ देता है!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 4: 31-38
[31]इस बीच उसके चेलों ने यीशु से यह विनती की, "हे रब्बी, कुछ खा ले।" [32]परन्तु उसने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।" [33]तब चेलों ने आपस मे कहा, "क्या कोई उसके लिए कुछ खाने को लाया है?" [34]यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ। [35]क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं ?' देखो, मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं। [36]काटनेवाला मजदूरी पाता और अनंत जीवन के लिए फल बटोरता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें। [37]क्योंकि यहाँ पर यह कहावत ठीक बैठती है: बोनेवाला और है और काटनेवाला और।' [38]मैंने तुम्हें वह खेत काटने के लिए भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया: दूसरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।"

4:32 यह स्वर्ग बनाम पृथ्वी, आध्यात्मिक बनाम भौतिक के द्वैतवाद के लिए एक और संकेत है। यीशु एक प्रचारक, भविष्यसूचक मिशन पर था। लोग प्राथमिकता थे/ हैं!

4:34 "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ" यूहन्ना 17 यीशु की इस बात की समझ की स्पष्ट अभिव्यक्ति है कि पिता उससे क्या करना चाहते थे (तुलना मरकुस 10:45; लूका 19:10; यूहन्ना 6:29)।

परमेश्वर पिता की उपस्थिति से, ऊपर से भेजे गए यीशु और पिता को प्रकट करने और पिता के कार्य करने के उसके ध्येय में विरोधाभास है। यह यूहन्ना की विशेषता ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद है (ऊपर बनाम नीचे, आत्मा बनाम शरीर)।

यीशु को भेजे जाने के लिए दो अलग-अलग शब्द हैं।

1. *pempō* (यूहन्ना 4:34; 5: 23,24,30,37; 6: 38,39,40,44; 7: 16,18,28,33; 8:16,18,26,29; 9: 4; 12: 44,45,49; 14:24; 15:21; 16:5)
2. *apostellō* (यूहन्ना 3: 17,24; 5:36,38; 6: 29,57; 7:29; 8:42; 10:36; 11:42; 17:3,18,21,23,25; 20:21)

जैसा 20:21 दिखाता है, ये पर्याय हैं। इससे यह भी पता चलता है कि विश्वासियों को भी छुटकारे के लिए पिता के प्रतिनिधि के रूप में खोई हुई दुनिया में भेजा जाता है(तुलना 2 कुरिन्थियों 5:13-21)।

विशेष विषय: परमेश्वर की इच्छा (*THELĒMA*) (SPECIAL TOPIC: THE WILL *(THELĒMA)* OF GOD)

परमेश्वर की "इच्छा" में कई श्रेणियां शामिल हैं।

यूहन्ना रचित सुसमाचार

- यीशु पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए आया (तुलना यूहन्ना 4:34; 5:30; 6:38)
- उन सभी को अंतिम दिन जिलाने के लिए जिन्हें पिता ने पुत्र को दिया था (तुलना यूहन्ना 6:39)
- कि सब पुत्र पर विश्वास करते हैं (तुलना यूहन्ना 6: 29,40)
- परमेश्वर की इच्छा को करने से संबंधित उत्तर प्राप्त प्रार्थना (तुलना यूहन्ना 9:31 और 1 यूहन्ना 5:14)

सिनॉप्टिक सुसमाचार

- परमेश्वर की इच्छानुसार करना बहुत महत्वपूर्ण है (तुलना मत्ती 7:21)
- परमेश्वर की इच्छानुसार करना यीशु के साथ हमें भाई और बहन बनाती है (तुलना मत्ती 12:50; मरकुस 3:35)
- परमेश्वर की इच्छा यह नहीं है कि किसी का नाश हो (तुलना मत्ती 18:14; 1 तीमुथियुस 2:4; 2 पतरस 3:9)।
- कलवरी यीशु के लिए पिता की इच्छा थी (तुलना मत्ती 26:42; लूका 22:42)

पौलुस के पत्र

- सभी विश्वासियों की परिपक्वता और सेवा (तुलना रोमियों 12:1-2)
- विश्वासियों को इस बुरे युग से छुड़ाया गया (तुलना गलातियों 1: 4)
- परमेश्वर की इच्छा उसकी छुटकारे की योजना थी (तुलना इफिसियों 1:5,9,11)
- आत्मा से भरे जीवन का अनुभव करने और जीनेवाले विश्वासी (तुलना इफिसियों 5:17-18)
- परमेश्वर के ज्ञान से भरे हुए विश्वासी (कुलुस्सियों 1:9)
- सिद्ध और पूर्ण बनाए गए विश्वासी (तुलना कुलुस्सियों 4:12)
- पवित्र किए गए विश्वासी (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 4:3)
- हर बात में धन्यवाद करने वाले विश्वासी (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 5:18)

पतरस का पत्र

- भले काम करने वाले विश्वासी (यानी, नागरिक प्राधिकरण के अधीन होना) और, जिससे निर्बुद्धि लोगों पुरुषों को चुप करके सुसमाचार प्रचार का अवसर मिलता है (तुलना 1 पतरस 2:15)
- विश्वासियों का दुःख (तुलना 1 पतरस 3:17; 4:19)
- आत्म-केंद्रित जीवन नहीं जीनेवाले विश्वासी (तुलना 1 पतरस 4:2)

यूहन्ना के पत्र

- सर्वदा बने रहने वाले विश्वासी (तुलना 1 यूहन्ना 2:17)
- प्रार्थना का उत्तर पाने की विश्वासियों कुंजी (तुलना 1 यूहन्ना 5:14)

4:35 "'कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं'" यह एक रूपक वाक्यांश है जो दिखा रहा है कि आध्यात्मिक प्रतिक्रिया करने का अवसर अब था! पुनरुत्थान के बाद ही नहीं, यीशु के जीवन के दौरान लोगों ने उस पर विश्वास करके बच गए।

4:36-38 "बोनेवाला और है और काटनेवाला और है" ये पद भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई या संभवतः यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का उल्लेख कर रहे हैं। इसका उपयोग 1कुरिन्थियों 3:6-8 में पौलुस और अपुल्लोस की सेवकाई के बीच संबंधों के लिए किया जाता है।

NASB (UPDATED) TEXT: JOHN 4:39-42
[39]उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया; क्योंकि उसने यह गवाही दी थी, "उसने सब कुछ जो मैंने किया है, मुझे बता दिया।" [40]इसलिये जब ये सामरी उसके पास आए, तो उससे विनती करने लगे कि हमारे यहाँ रह। अतः वह वहाँ दो दिन तक रहा। [41]उसके वचन के कारण और भी बहुत से लोगों ने विश्वास किया [42]और उस स्त्री से कहा, "अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हमने आप ही सुन लिया,और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।"

4:39 "बहुत से सामरियों ने यीशु पर विश्वास किया" यूहन्ना क्रिया "विश्वास" का उपयोग कई अन्य शब्दों के संयोजन में करता है: "पर विश्वास" (*en*), "विश्वास कि" (*hoti*), और, सबसे अधिक, "में विश्वास" (*eis*) या पर विश्वास रखा (तुलना यूहन्ना 2:11,23; 3: 16,18,36; 6:29,35,40; 7:5,31,38, 48; 8:30; 9:35,36; 10:42; 11:25,26,45,48; 12:11,37,42,44,46; 14:1,12; 16: 9; 17:20)।आरम्भ में सामरियों ने स्त्री की गवाही के कारण विश्वास किया (यूहन्ना 4:39), लेकिन यीशु को सुनने के बाद उन्होने व्यक्तिगत रूप से उसकी गवाही को स्वीकार किया (यूहन्ना 4:41-42)। यीशु इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास आया, लेकिन उसका सुसमाचार सारी मानव जाति के लिए था: सामरी, सुरूफिनीकी स्त्रियाँ, और रोमन सैनिक (तुलना रोमियों 10:12; 1 कुरिंथियों 12:13; गलातियों 3:28-29; कुलुस्सियों 3:11)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"उस स्त्री के कहने से"** अगर परमेश्वर ने इस विधर्मी और अनैतिक स्त्री की गवाही का इस्तेमाल किया, तो वह मेरी और तुम्हारी भी इस्तेमाल कर सकता है! यह पद एक व्यक्तिगत गवाही के महत्व को दिखाता है। यूहन्ना 1:8 में विशेष विषय: यीशु की गवाहियाँ देखें।

4:40

NASB, NRSV	**"विनती"**
NKJV	**"आग्रह किया"**
TEV, NJB	**"निवेदन किया"**

यह एक मजबूत यूनानी शब्द है और इसका अनुवाद "आग्रह" या "निवेदन" करना चाहिए। इस शब्द की तीव्रता को यूहन्ना 4:47 (तुलना लूका 4:38) में इसके उपयोग में देखा जा सकता है।

4:42 "जगत का उद्धारकर्ता" यही सार्वभौमिक शीर्षक 1 यूहन्ना 4:14 में उपयोग किया गया है। यह मानव जाति के लिए परमेश्वर के प्रेम के सार्वभौमिक अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है (तुलना 1 तीमुथियुस 2:6; इब्रानियों 2:9; 1 यूहन्ना 2:2)। उत्पत्ति 3:15 का वादा पूरा किया गया है! पहली शताब्दी में यह वाक्यांश अक्सर कैसर के लिए प्रयोग किया जाता था। रोमी उत्पीड़न हुआ क्योंकि मसीहियों ने विशेष रूप से यीशु के लिए इस शीर्षक का प्रयोग किया। इस शीर्षक से यह भी पता चलता है कि किस प्रकार लेखकों ने पुत्र को परमेश्वर पिता के खिताब के लिए कैसे जिम्मेदार ठहराया: तीतुस 1:3 – तीतुस 1: 4; तीतुस 2:10 - तीतुस 2:13; तीतुस 3:4 - तीतुस 3:6।

यहूदियों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया था (तुलना यूहन्ना 1:11), लेकिन सामरी लोगों ने जल्दी और आसानी से उसे स्वीकार किया (तुलना यूहन्ना 1:12)!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 4:43-45
[43]**फिर उन दो दिनों के बाद वह वहाँ से निकल कर गलील को गया।** [44]**क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता।** [45]**जब वह गलील में आया, तो गलीली आनंद के साथ उससे मिले; क्योंकि जितने काम उसने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्होंने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे।**

4:43 इस पद से पता चलता है कि यीशु सिनॉप्टिक सुसमाचारों के अनुसार अनुमान लगाने से कहीं अधिक स्वतंत्र रूप से और बहुत बार यहूदिया और गलील के बीच घूमता था।

4:44 यह एक बहुत ही असामान्य पद है क्योंकि यह पूर्ववर्ती संदर्भ से मेल नहीं खाता है। यह गलील की सेवकाई जो शुरू होने वाली थी, को संदर्भित कर सकता है (तुलना यूहन्ना 4:3)। यह कहावत मत्ती 13:57; मरकुस 6: 4; लूका 4:24 भी पाई जाती है। सिनॉप्टिक्स में यह गलील को संदर्भित करता है, लेकिन यहाँ यह यहूदिया को संदर्भित करता है।

4:45 "गलीली उससे मिले" इससे पहले उन्होंने यीशु के यरूशलेम में फसह के दौरे के दौरान उसकी शिक्षाओं और चमत्कारों का अनुभव किया था।

गलीलियों के बारे में यह भी कहा जाता है कि वे यीशु को "मिले", लेकिन उनमें से कईयों ने मिलने के बाद उसका अनुसरण नहीं किया और बाद में उसे छोड़ दिया।"विश्वास करने" (तुलना यूहन्ना 3:16) और "ग्रहण करने" (तुलना यूहन्ना 1:17) में प्रारम्भिक भेंट से कहीं अधिक अन्तर्निहित है (तुलना मत्ती 13:18-23; मरकुस 4:12-20; लूका 8:11-15 में बीज बोनेवाले का दृष्टांत)। विशेष विषय: दृढ़ रहने की आवश्यकता यूहन्ना 8:31 पर देखें.

▣ "क्योंकि वे भी पर्व में गए थे" NET बाइबल लेखक के एक अन्य प्रारंभिक कथन के रूप में इसे चिह्नित करता है, जैसा कि वे पूरे यूहन्ना 4:44 के लिए करते हैं (तुलना NRSV, NIV)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 4:46-54
[46]**तब वह फिर गलील के काना में आया, जहाँ उसने पानी को दाखरस बनाया था। वहाँ राजा का एक कर्मचारी था, जिसका पुत्र कफरनहूम में बीमार था।** [47]**वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास आया और उससे विनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर दे:क्योंकि वह मरने पर था।** [48]**यीशु ने उससे कहा, "जब तक तुम चिन्ह और अद्‌भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे।"** [49]**राजा के कर्मचारी ने उससे कहा, "हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहले चल।"** [50]**यीशु ने उससे कहा, "जा, तेरा पुत्र जीवित है।" उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की और चला गया।** [51]**वह मार्ग में ही था कि उसके दास उससे आ मिले और कहने लगे,"तेरा लड़का जीवित है"।** [52]**उसने उनसे पूछा,"किस घड़ी वह अच्छा होने लगा?" उन्होंने उससे कहा, "कल सातवें घंटे में उसका ज्वर उतर गया।"** [53]**तब पिता जान गया कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उससे कहा, "तेरा पुत्र जीवित है", और उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।**
[54]**यह दूसरा आश्चर्यकर्म था जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।**

4:46
NASB, NRSV,
NJB **"एक शाही कर्मचारी"**
NKJV **"कोई एक कुलीन जन"**
TEV **"एक सरकारी कर्मचारी"**

यह हेरोदेस परिवार की सेवा में एक सरकारी कर्मचारी था।

4:48 "'जब तक तुम चिन्ह और अद्‌भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे'" यह एक मजबूत दोहरे नकारात्मक के साथ एक तृतीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है। यीशु इस व्यक्ति को बहुवचन में संबोधित करते हैं। यहूदी चिन्ह ढूँढते थे (तुलना यूहन्ना 2:18; 6:2, 30; मत्ती 12:38; 16:1)। लेकिन हेरोदेस के इस सेवक ने चिन्ह देने से पहले ही विश्वास किया।

4:49 "बालक" तीन पदों में यूहन्ना तीन अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करता है ।

1. यूहन्ना 4:49 - *paidion* (NASB, "बालक")
2. यूहन्ना 4:50 - *hyiōs* (NASB, "पुत्र")
3. यूहन्ना 4:51 - *pais* (NASB, “लड़का")

स्पष्ट रूप से इन शब्दों का पर्यायवाची रूप में उपयोग किया गया था।

4:50 यह पद यूहन्ना के सुसमाचार के सार को दर्शाता है-यीशु पर विश्वास करें, उसके शब्दों पर विश्वास करें, उसके कृत्यों पर विश्वास करें, उसके व्यक्तित्व पर विश्वास करें! यीशु की प्रतिज्ञाओं को देखे बिना उसके विश्वास में इस व्यक्ति के विश्वास की पुष्टि होती है।

4:53 "उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया" यह कई ऐसे विवरणों में से पहला है जहाँ एक व्यक्ति के विश्वास ने पूरे परिवार को प्रभावित किया।

1. कुरनेलियुस (प्रेरितों के काम 10:44-48)
2. लुदिया (प्रेरितों 16:15)
3. फिलिप्पी दरोगा (प्रेरितों के काम 16:31-34)
4. क्रिस्पुस (प्रेरितों के काम 18:8)
5. स्तिफनास (1 कुरिंथियों 1:16)

इन घरानों के रूपांतरणों के बारे में बहुत चर्चा हुई है, लेकिन यह जोर देना चाहिए कि सभी सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से अपने लिए यीशु को ग्रहण करने की आवश्यकता है। मध्य पूर्व आधुनिक संस्कृतियों की तुलना में बहुत अधिक जनजातीय और परिवार-उन्मुख है। यह भी सच है कि हमारे जीवन के महत्वपूर्ण अन्य हमारे विकल्पों को प्रभावित करते हैं।

4:54 पहला सार्वजनिक चिन्ह काना का विवाह भोज था (तुलना यूहन्ना 2:1-11)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यीशु ने यहूदा के इलाके को क्यों छोड़ा?
2. क्या यूहन्ना रोमी समय या यहूदी समय का उपयोग करता है?
3. यीशु का एक सामरी स्त्री से बात करना इतना ज़रूरी क्यों है?
4. पद 20 आज सम्प्रदायों के बीच के रिश्तों को कैसे प्रभावित करता है?
5. यीशु ने पद 26 में जो चौंका देने वाला बयान दिया है, उसे स्पष्ट कीजिए।
6. क्या गलीलियों ने सच्चे विश्वास का प्रयोग किया?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 5

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
कुण्ड पर चंगाई	बैतहसदा के कुण्ड पर एक मनुष्य का चंगा होना	सब्त के दिन लंगड़े मनुष्य की चंगाई	कुण्ड पर चंगाई	बैतहसदा के कुण्ड पर एक बीमार मनुष्य का ठीक होना
5:1-9a	5:1-15	5:1	5:1-6	5:1-9a
		5:2-9a		
			5:7	
			5:8-9a	
5:9b-18		5:9b-18	5:9b-10	5:9b-18
			5:11	
			5:12	
			5:14	
			5:16	
			5:15-17	
	पिता और पुत्र का गौरव		5:18	
पुत्र का अधिकार	5:16-23	परमेश्वर के साथ यीशु के संबंध	पुत्र का अधिकार	
5:19-29		5:19-24	5:19-23	5:19-47
	जीवन और न्याय पुत्र के द्वारा है			
	5:24-30		5:24-29	
		5:25-29		
		परमेश्वर के साथ यीशु के संबंध का प्रमाण	यीशु की गवाहियाँ	
5:30		5:30	5:30	
यीशु की गवाही	चौगुनी गवाही			
5:31-40	5:31-47	5:31-38	5:31-40	
		यीशु उन्हें झिड़कता है जो उसके प्रस्ताव को नकारते हैं		
		5:39-47		
5:41-47			5:41-47	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 5:1-9क
1इन बातों के पश्चात यहूदियों का एक पर्व हुआ, और यीशु यरूशलेम को गया। 2यरूशलेम में भेड़ -फाटक के
पास एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है; उसके पाँच ओसारे हैं। 3इनमें बहुत से बीमार, अंधे,
लंगड़े और सूखे अंगवाले, [पानी के हिलने की आशा में] पड़े रहते थे। 4[क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के
स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे। पानी के हिलते ही जो कोई पहले उतरता वह चंगा हो जाता
था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।] 5वहाँ एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था। 6यीशु ने
उसे पड़ा हुआ देखकर और यह जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा, "क्या तू चंगा
होना चाहता है?" 7उस बीमार ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं कि जब पानी हिलाया
जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुँचते- पहुँचते दूसरा मुझ से पहले उतर जाता है।" 8यीशु ने उससे कहा,
"उठ, अपनी खाट उठा और चल फिर।" 9वह मनुष्य तुरंत चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने
लगा।

5:1 "एक पर्व" कुछ प्राचीन यूनानी वृहदक्षर पांडुलिपियों, ℵ और C, में "पर्व," हैं, लेकिन अधिकांश पांडुलिपियों में "एक पर्व" (P^{66}, P^{75}, A, B, और D)है। तीन वार्षिक पर्व के दिन थे जिनमें यदि संभव हो तो यहूदी पुरुषों का भाग लेना अनिवार्य था (तुलना लैव्यव्यवस्था 23): (1) फसह; (2) पिन्तेकुस्त; और (3) झोपड़ियों का पर्व। यदि यह एक फसह को संदर्भित करता है, तो यीशु की तीन के बजाय चार वर्ष की सार्वजनिक सेवकाई थी (तुलना यूहन्ना 2:13, 23; 6:4: 12:1)। यह परंपरागत रूप से माना जाता है कि यूहन्ना के बपतिस्मे के बाद यीशु की तीन वर्ष की सार्वजनिक सेवकाई थी। यह केवल यूहन्ना के सुसमाचार में वर्णित फसह पर्वों की संख्या से पता लगाया गया है।

▣ **"यीशु यरूशलेम को गया"** यूहन्ना में कई बार यीशु यरूशलेम में पर्व में गए बताए गए हैं (तुलना यूहन्ना 2:13; 5:1; 7:10; 12:12)।

यरुशलेम को सात पहाड़ियों पर बनाया गया था और यह आसपास की भूमि से ऊँचा था। तो वाक्यांश "को गया" भौगोलिक दृष्टि से सही हो सकता है। हालाँकि, ऐसा लगता है कि यह श्रेष्ठता के मुहावरे का एक रूपक है। यरूशलेम, मंदिर के कारण, पृथ्वी का उच्च स्थान और पृथ्वी का केंद्र (नाभि) था।

5:2 "भेड़-फाटक के पास" यह "झुंड का द्वार" यरूशलेम की दीवार के उत्तर-पूर्व के भाग पर था। इसका उल्लेख नहेम्याह के शहर की दीवारों के पुनःसमर्पण और पुनर्निर्माण में किया गया है (तुलना नहेम्याह 3: 1,32; 12:39)।

NASB, NKJV "एक कुण्ड, जो इब्रानी में बैतहसदा कहलाता है"
NRSV "इब्रानी में बेथ-ज़ाथा कहलाता"

TEV **"इब्रानी में इसे बेथज़ाथा कहते हैं"**
NJB **"इब्रानी में बैतहसदा कहा जाता"**

इस नाम की कई वैकल्पिक वर्तनी हैं। जोसेफस ने इसे इब्रानी नाम "बेथज़ाथा" से भी पुकारा, जो यरूशलेम के इस खंड का नाम था। यूनानी भाषा में इसे "बैतसैदा" भी कहा जाता है। कुमरम तांबा हस्तलिपियों में इसे "बैतहसदा" कहा, जिसका अर्थ है "दया का घर" या "दुगने जलस्रोत का घर।" आज यह संत एनी का कुण्ड (ड़ों) के रूप में जाना जाता है।

यीशु के दिन में पलस्तीन के यहूदी अरामी भाषा बोलते थे, इब्रानी नहीं। यूहन्ना में जब वह कहता है कि "इब्रानी" उसका अर्थ है अरामी(तुलना यूहन्ना 5:2; 19:13,17,20; 20:16; प्रकाशितवाक्य 9:11; 16:16)। यीशु के सभी कथन, जैसे

1. *Talitha kum*, मरकुस 5: 41
2. *Ephphatha*, 7: 34
3. *Eloi*, *Eloi*, *lama sabachthani*, मरकुस 15:34 अरामी में हैं।

5:4 यह पद (यूहन्ना 5:3ख -4) एक बाद की लेखकीय टिप्पणी है, जो समझाने की कोशिश करती है

1. कुण्ड के पास सभी बीमार लोगों की उपस्थिति
2. क्यों यह मनुष्य इतने लंबे समय से वहाँ था
3. क्यों वह चाहता था कि कोई उसे पानी में उतारे, यूहन्ना 5:7

यह स्पष्ट रूप से एक यहूदी लोक कथा है। यह यूहन्ना के मूल सुसमाचार का हिस्सा नहीं था। इस पद को शामिल नहीं करने के सबूत हैं:

1. यह P^{66}, P^{75}, א, B, C*, D की पांडुलिपियों में नहीं है
2. यह 20 से अधिक बाद की यूनानी पांडुलिपियों में एक तारांकन चिह्न द्वारा चिह्नित है, यह दिखाते हुए कि ऐसा सोचा गया कि यह पाठ मूल नहीं है
3. इस संक्षिप्त पद में कई गैर-जोहानिन शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यह कई शुरुआती यूनानी वृहदक्षर पांडुलिपियों में शामिल है, A, C3, K, और L। यह डायटेस्सरॉन (लगभग 180 ई.), और टर्टुलियन (ई. 200),एम्ब्रोस, क्राइसोस्टोम और सिरिल के लेखन में भी शामिल है। यह इसकी प्राचीनता को दर्शाता है लेकिन मूल प्रेरित सुसमाचार में इसका समावेश नहीं है। यह KJV, NASB (1995 अद्यतनीकरण, कोष्ठक के साथ), और NKJV में शामिल है, लेकिन NASB (1970), NRSV, NJB, REB, NET बाइबल, और NIV में से हटा दिया गया है।

एक सुसमाचारीय पाठीय आलोचक द्वारा पांडुलिपि संस्करण की एक अच्छी चर्चा के लिए, देखें Gordon Fee, *To What End Exegesis?,* pp. 17-28.

5:5-6 वास्तव में यीशु ने इस खास मनुष्य को ही क्यों चुना, यह हमारे लिए अज्ञात है। संभवतः वह सबसे अधिक समय से वहाँ था। इस मनुष्य की ओर से बहुत कम विश्वास की आवश्यकता है। स्पष्ट रूप से यीशु यहूदी अगुवों के साथ एक आमना-सामना शुरू करने की कोशिश कर रहा था। इसने उसे अपने मसीहाई दावे को दृढ़ता से कहने का अवसर दिया। यशायाह 35:6 का युगांत विषयक अवतरण इस मसीहाई चंगाई से संबंधित हो सकता है।

यीशु के चमत्कार मुख्य रूप से किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं किए गए थे, बल्कि उन लोगों के लिए थे जो देख रहे थे

1. चेले
2. यहूदी अधिकारी
3. एक भीड़

सुसमाचार स्पष्ट रूप से यह प्रगट करने के लिए कि यीशु कौन था,कुछ विशेष चमत्कारों का चयन करते हैं। ये घटनाएँ उसकी दैनिक क्रियाओं का विवरण प्रस्तुत करती हैं। उन्हें यह दिखाने के लिए चुना गया है

1. उसका व्यक्तित्व
2. उसकी करुणा
3. उसका सामर्थ्य
4. उसका अधिकार
5. उसका पिता का स्पष्ट प्रकटीकरण
6. उसका मसीहाई युग का स्पष्ट प्रकटीकरण

5:8 "उठ, अपनी खाट उठा, और चल फिर" यह आदेशों की एक श्रृंखला है।

1. एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक
2. इसके पश्चात एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक
3. फिर एक और वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक

खाट एक कपड़े की गद्दी थी जिसे गरीब सोने के लिए इस्तेमाल करते थे। इन बीमार, लंगड़े और लकवाग्रस्त लोगों के लिए, यह दिन के दौरान एक बैठेने की गद्दी के रूप में काम आता था (तुलना मरकुस 2: 4,9,11,12; 6:55; प्रेरितों के काम 9:33)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 5:9ख-18
[9ख]वह सब्त का दिन था। [10]इसलिये यहूदी उससे जो चंगा हुआ था, कहने लगे, "आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठाना उचित नहीं।" [11]उसने उन्हें उत्तर दिया, "जिसने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा, 'अपनी खाट उठा और चल फिर'।" [12]"उन्होंने उससे पूछा," वह कौन मनुष्य है जिसने तुझ से कहा,' खाट उठा और चल फिर'?" [13]परन्तु जो चंगा हो गया था वह नहीं जानता था कि वह कौन है, क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहाँ से हट गया था। [14]इन बातों के बाद वह यीशु को मंदिर में मिला। यीशु ने उससे कहा, "देख, तू चंगा हो गया है: फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।" [15]उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया कि जिसने मुझे चंगा किया वह यीशु है। [16]इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे काम सब्त के दिन करता था। [17]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ।" [18]इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, क्योंकि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कहकर अपने आप को परमेश्वर के तुल्य भी ठहराता था।

5:9b "वह सब्त का दिन था" यहूदी अगुवों ने उस मनुष्य के चंगा होने पर खुशी भी नहीं जताई, लेकिन वे यीशु से नाराज हो गए थे, जो सब्त (तुलना यूहन्ना 5:16,18; मत्ती 7:1-23) से जुड़ी मौखिक परंपरा (बाद में तल्मूड में संहिताबद्ध) को तोड़ दिया। 16, 18; मैट 7: 1-23)।

सब्त के दिन यीशु की चंगाइयों को दो तरीकों से समझाया जा सकता है।

1. वह हर दिन चंगा करता था, लेकिन सब्त की चंगाइयों पर विवाद विकसित हुए।
2. उसने विवाद पैदा करने के लिए इस मुद्दे को चुना ताकि धार्मिक अगुवों को धर्मशास्त्रीय वार्ता में शामिल करने का अवसर मिले

यीशु अक्सर सब्त के दिन चंगा करता था (तुलना मत्ती 12:9-14; मरकुस 1:29-31; 3:1-6; लूका 6: 6-11; 14:1-6; यूहन्ना 5:9-18; 9:14)। यीशु ने सब्त के दिन दुष्टात्माओं को बाहर निकाला (तुलना मरकुस 1:21-28); लूका 13:10-17)। यीशु ने सब्त के दिन खाने वाले चेलों का पक्ष लिया (तुलना मरकुस 12:1-8; मरकुस 2:23-28)। यीशु ने सब्त के दिन आराधनालय में विवादास्पद विषयों की शुरुआत की। (लूका 4:16-30; यूहन्ना 7:14-24)।

5:13 "यीशु वहाँ से हट गया था" अक्षरशः यह है "सिर को एक तरफ झुकाने के लिए।" यीशु अपने दिन के एक सामान्य यहूदी की तरह दिखता था। वह बस भीड़ में ओझल हो गया।

5:14
NASB, NRSV,
NJB **"फिर से पाप मत करना"**
NKJV **"फिर पाप न कर"**
TEV **"इसलिए पाप करना बंद कर"**

यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है, जिसका अर्थ अक्सर उस कार्य को रोकना है जो पहले से ही प्रक्रिया में है, लेकिन इस संदर्भ में यह संभावना नहीं लगती है (तुलना NET बाइबल, p. 1907 # 8)। पहली सदी के यहूदी धर्मशास्त्री बीमारी को पाप से संबंधित मानते थे (तुलना याकूब 5:14-15)। यह सब बीमारियों की व्याख्या नहीं करता है, जैसा कि यीशु के उस मनुष्य के साथ व्यवहार में, जो अंधा पैदा हुआ था, (तुलना यूहन्ना 9) और लूका 13: 1-4 में यीशु के शब्दों में देखा जा सकता है।

यीशु अभी भी इस मनुष्य के आध्यात्मिक जीवन के साथ व्यवहार कर रहा था। हमारे कार्य हमारे हृदय और विश्वास को दर्शाते हैं। बाइबल का विश्वास वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक दोनों है, भरोसा और कार्य दोनों है।

आज शारीरिक चंगाई पर कलीसिया में इतना जोर है। परमेश्वर अभी भी जरूर चंगा करता है। लेकिन दिव्य चंगाई के परिणामस्वरूप जीवन शैली और प्राथमिकताओं का आध्यात्मिक परिवर्तन होना चाहिए। एक अच्छा सवाल यह हो सकता है कि "आप चंगा क्यों होना चाहते हैं?"

विशेष विषय: क्या चंगाई हर युग के लिए परमेश्वर की योजना है? (SPECIAL TOPIC: IS HEALING GOD'S PLAN FOR EVERY AGE?)

यह मेरे लिए चौंकाने वाला है कि नये नियम में जो भी चंगे हुए थे, वे उसी के साथ "बचाये" नहीं गए (यानी, मसीह पर भरोसा रखें और अनंत जीवन पाएं)। शारीरिक चंगाई आत्मिक उद्धार के लिए एक तुच्छ विकल्प है। चमत्कार वास्तव में तभी सहायक होते हैं यदि वे हमें परमेश्वर तक पहुँचाते हैं। सभी मनुष्य पतित दुनिया में रहते हैं। बुरी बातें होती हैं। परमेश्वर अक्सर हस्तक्षेप नहीं करना चुनता है, लेकिन यह उसके प्यार और चिंता के बारे में कुछ नहीं कहता है। यह माँग करने से सावधान रहें कि परमेश्वर इस वर्तमान दुष्ट युग में हर आवश्यकता के लिए चमत्कारिक रूप से कार्य करे। वह सार्वभौमिक है और हम किसी भी दी गई स्थिति के पूर्ण तात्पर्य को नहीं जानते हैं।

इस स्थान पर मैं 2 तीमुथियुस 4:20 की अपनी टिप्पणी में पौलुस और शारीरिक चंगाई के बारे में जोड़ना चाहूँगा (www.freebiblecommentary.org देखें):

"बहुत से ऐसे सवाल हैं जो हम नये नियम के लेखकों से पूछना चाहेंगे। एक विषय जिसके बारे में सभी विश्वासी सोचते हैं वह है शारीरिक चंगाई। प्रेरितों के काम में (तुलना 19:12; 28:7-9) पौलुस चंगा करने में सक्षम है, लेकिन यहाँ और 2 कुरिन्थियों 12:7-10 और फिलिप्पियों 2:25-30 में, वह असमर्थ प्रतीत होता है। क्यों कुछ चंगे होते हैं और सभी नहीं, और क्या चंगाई से जुड़ी कोई समय सीमा है जो बंद हो गई है?

मैं निश्चित रूप से एक अलौकिक, दयालु पिता में विश्वास करता हूँ, जिसने शारीरिक और आत्मिक रूप चंगा किया और करता है, लेकिन क्यों यह चंगाई का पहलू विद्यमान प्रतीत होता है और फिर यह स्पष्ट रूप से अनुपस्थित है? मुझे नहीं लगता कि यह मानव विश्वास से जुड़ा है, क्योंकि निश्चित रूप से पौलुस को विश्वास था (तुलना 2 कुरिन्थियों 12)। मुझे लगता है कि चंगाई और चमत्कारों में विश्वास ने सुसमाचार की सत्यता और वैधता की पुष्टि की, जो अभी भी दुनिया के उन क्षेत्रों में करता है जहाँ इसे पहली बार प्रचार किया गया है। हालांकि, मुझे लगता है कि परमेश्वर चाहता है कि हम विश्वास से चलें, न कि दृष्टि से। इसके अलावा, शारीरिक बीमारी को अक्सर विश्वासी के जीवन में आने दी जाती है:

1. पाप के लिए अस्थायी सजा के रूप में
2. पतित दुनिया में जीवन के परिणाम के रूप में
3. विश्वासियों को आत्मिक रूप से परिपक्व करने में मदद करने के लिए

मेरी समस्या यह है कि मैं कभी नहीं जान पाता कि कौन सा कारण शामिल है! प्रत्येक मामले में परमेश्वर की इच्छा पूरी होने के लिए मेरी प्रार्थना विश्वास की कमी नहीं है, लेकिन प्रत्येक जीवन में कृपालु, दयालु परमेश्वर को अपनी इच्छा कार्यरत करने की अनुमति देने का एक ईमानदार प्रयास है। "

यहाँ मेरे निष्कर्ष हैं:

1. चंगाई यीशु और प्रेरितों के काम की सेवकाई का एक महत्त्वपूर्ण पहलू था।
2. यह मुख्य रूप से परमेश्वर और उसके राज्य के बारे में आवश्यक रूप से नए संदेश की पुष्टि करने के लिए था।
3. यह पीड़ित लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता है।
4. परमेश्वर नहीं बदला है (मलाकी 3:6) और वह अभी भी प्रेम में, चंगाई में काम करता है (सभी आत्मिक वरदान जारी हैं, तुलना 1 कुरिन्थियों 12:9,28,30)।
5. ऐसे उदाहरण हैं जहाँ अत्याधिक विश्वास रखने वालों की चंगाई नहीं हुई (एक पुस्तिका जिसने मुझे इस क्षेत्र में मदद की है वह है Gordon Fee, *The Disease of the Health, Wealth Gospel*)।
   a. पौलुस, 2 कुरिन्थियों 12:7-10
   b. त्रुफिमुस, 2 तीमुथियुस 4:20
6. पाप और बीमारी रब्बियों के विचार में जुड़े हुए थे (तुलना यूहन्ना 9:2; याकूब 5:13-18)।
7. चंगाई नई वाचा की गारंटी नहीं है। यह यशायाह 53:4-5 और भजनसंहिता 103:3 में वर्णित प्रायश्चित का हिस्सा नहीं है, जहाँ क्षमा के लिए चंगाई एक अलंकृत भाषा है (यशायाह 1:5-6 देखें, जहाँ बीमारी पाप के लिए एक रूपक है)।

8. कुछ चंगे क्यों हो जाते हैं और कुछ नहीं, इस बारे में सच्चा रहस्य है।
9. यह संभव है कि यद्यपि चंगाई हर युग में मौजूद है, लेकिन यीशु के जीवनकाल में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी; यह वृद्धि उसकी वापसी से ठीक पहले फिर होगी।

आधुनिक लेखक जिन्होंने मुझे यह महसूस करने में मदद की है कि मेरी स्वयं की साम्प्रदायिक परंपरा ने आत्मा के कार्य, विशेष तौर पर चमत्कारिक, का अवमूल्यन किया है, वे गॉर्डन फी है। उनके पास कई पुस्तकें हैं, लेकिन इस क्षेत्र के साथ संबंधित जो दो मुझे पसंद हैं, वे हैं

1. *Paul, the Spirit, and the People of God*
2. *God's Empowering Presence: The Holy Spirit and the Letters of Paul*

बाइबल के अधिकांश मुद्दों के साथ, दो चरम सीमाएँ हैं। हम सभी को उस ज्योति में चलना चाहिए जो प्रेम में है, लेकिन हमेशा बाइबल और आत्मा से अधिक ज्योति पाने के लिए तैयार रहना चाहिए ।

5:15 "उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया" यहूदी अधिकारियों को सूचित करने के पीछे की प्रेरणा अनिश्चित है।
1. यह एक विचारहीन, तुच्छ कार्य है जो दिखाता है कि चंगाई हमेशा न विश्वास के साथ शुरू होती है या न विश्वास के साथ समाप्त होती है।
2. यीशु ने उसे ऐसा करने के लिए कहा (तुलना मत्ती 8: 4; मरकुस 1:44; लूका 5:14, 17:14)

5:16 "क्योंकि वह ऐसे काम सब्त के दिन करता था" क्रिया एक अपूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो पिछले समय में निरंतर कार्य को दर्शाता है। यह यीशु की पहली (या अंतिम) सब्त की चंगाई नहीं थी!

5:17

NASB	**"इस पर उसने उनसे कहा"**
NKJV, REV, NRSV, NIV	**"लेकिन यीशु ने उनसे कहा"**
NJB	**"उन्हें उसका उत्तर था"**

आरंभिक यूनानी पांडुलिपियों की नकल करने वाले लेखकों की प्रवृत्ति थी
1. व्याकरण को सरल बनाना
2. सर्वनाम संबंधी संदर्भों को विशिष्ट बनाएं
3. वाक्यांशों को मानकीकृत करें

यह जानना कठिन है कि यूहन्ना 5:17 का कौन सा रूप मूल था।
1. "लेकिन उसने. . ." - P^{75}, א, B, W
2. "लेकिन यीशु ने. . ." - P^{66}, A, D, L
3. "लेकिन प्रभु ने. . ." या "प्रभु यीशु मसीह ने" – सीरियाई अनुवाद

UBS^4 विकल्प #2 को "C" दर्जा देता है (निर्णय लेने में कठिनाई)।

▣ **"मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ"** ये दोनों वर्तमान मध्यम (मध्य) के निर्देशात्मक हैं। यीशु यह कह रहा था कि पिता सब्त के दिन अच्छा करना बंद नहीं करता है और न ही पुत्र (इस पद की अच्छी चर्चा के लिए Manfred Brauch, *Abusing Scripture,* p. 219) देखें। यह, वास्तविक अर्थों में, पिता के साथ उसके अनूठे संबंधों के बारे में यीशु की समझ का पुष्टिकरण था (तुलना यूहन्ना 5:19-29)।

एकेश्वरवाद की यहूदी अवधारणा (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:4) व्यावहारिक रूप से इस दुनिया की घटनाओं के "एक कारण" स्पष्टीकरण में व्यक्त की गई थी (तुलना न्यायियों 9:23; अय्यूब 2:10; सभोपदेशक 7:14; यशायाह 45:7; 59:16; विलापगीत 3: 33-38; आमोस 3: 6)। सारे कार्य अंततः एक सच्चे परमेश्वर के कार्य थे। जब यीशु ने संसार में परमेश्वर के कार्यों में दोहरे प्रतिनिधित्व का दावा किया, तो उसने दिव्य करणत्व के दोहरेपन का दावा किया। यह त्रिदेवत्व की कठिन समस्या है। एक परमेश्वर, लेकिन तीन व्यक्तिगत अभिव्यक्तियाँ (तुलना मत्ती 3:16-17; 28:19; यूहन्ना 14:26; प्रेरितों के काम 2:33-34; रोमियों 8: 9-10; 1 कुरिंथियों 12:4-6 ; 2 कुरिंथियों 1: 21-22; 13:14; गलातियों 4:4; इफिसियों 1:3-14; 2:18; 4: 4-6; तीतुस 3: 4-6; 1 पतरस 1:2)। देखें विशेष विषय: त्रिएकत्व यूहन्ना 14:26 पर

5:18 "इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे" दो कारण हैं कि यहूदी यीशु को मार डालना चाहते थे।

1. उसने सब्त से संबंधित मौखिक परंपरा (तल्मूड) सार्वजनिक रूप से तोड़ी थी (अक्षरशः "खोला," अपूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक , तुलना मत्ती 5:19)
2. उसके कथन दर्शाते हैं कि उन्होंने समझा कि वह परमेश्वर के साथ समानता का दावा कर रहा है (तुलना यूहन्ना 8: 58,59; 10:33; 19:7)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 5:19-23
[19]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। [20]क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है, और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखता है; और वह इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो। [21]जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। [22]पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है, [23]कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता।

5:19,24,25 "सच, सच" यह अक्षरशः "आमीन, आमीन" है। "आमीन" शब्द इब्रानी से लिप्यंतरण है। मूलतः इसका मतलब विश्वासयोग्यता था। यह एक सच्चाई की पुष्टि करने के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा।केवल यीशु एक कथन की शुरुआत में इस शब्द का प्रयोग करने के लिए जाना जाता है। उसने महत्वपूर्ण कथनों की प्रस्तावना के लिए इसका इस्तेमाल किया। यूहन्ना इस आरम्भिक शब्द के दोहरीकरण को दर्ज़ करने वाला एकमात्र व्यक्ति है। विशेष विषय: आमीन यूहन्ना 1:51 पर देखें

5:19 "पुत्र" अगले कुछ पदों में "पुत्र" शब्द का एक धर्मशास्त्रीय रूप से महत्वपूर्ण दोहराव है। यह इस संक्षिप्त संदर्भ में आठ बार प्रयोग किया गया है। यह पिता के साथ उसके संबंधों की यीशु की अद्वितीय समझ को दर्शाता है और "मनुष्य का पुत्र" और "परमेश्वर का पुत्र" नामों को दर्शाता है।

▣ **"पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता"** जैसा कि अक्सर सही है, नया नियम यीशु को विरोधाभासी अभिव्यक्तियों में प्रस्तुत करता है। कुछ पाठों में

1. वह पिता के साथ एक है (तुलना यूहन्ना 1: 1; 5:18; 10:30,34-38; 14: 9-10; 20:28)
2. वह पिता से अलग है (तुलना यूहन्ना 1:2,14,18; 5:19-23; 8:28; 10: 25,29; 14:10,11,12,13,16; 17:1-2)
3. वह उसके अधीन भी है (तुलना यूहन्ना 5: 20,30; 8:28; 12:49; 14:28; 15 :10,19-24; 17: 8)

यह शायद यह दिखाने के लिए है कि यीशु पूर्णतः दिव्य है, लेकिन देवत्व की एक अलग, विशिष्ट व्यक्तिगत और अनंत अभिव्यक्ति है।

John Raymond E. Brown द्वारा संपादित टिप्पणी, *The Jerome Biblical Commentary* में, एक अच्छा बिंदु यह है:

> "यहाँ अधीनता के निहितार्थ को यीशु के शब्दों को केवल अपने मानव स्वभाव को संदर्भित करने के लिए लागू करके हटाया नहीं जाना चाहिए. . .इससे जोहानिन के मसीही ज्ञान का एक सूक्ष्म बिंदु चूक जाएगा। बल्कि, यीशु पिता और पुत्र के बीच गतिविधि के पूर्ण सामंजस्य पर जोर दे रहा है, जो निस्संदेह मौलिक रूप से, प्रकृति की पहचान की माँग करता है; इसी प्रक्रिया का प्रयोग यूहन्ना 16:12ff में पवित्र आत्मा को पुत्र से जोड़ने के लिए किया है। लेकिन इस पूरे सुसमाचार में हम कहीं भी त्रिएकत्व को निराकार धर्मशास्त्र के शोध के रूप में नहीं पाते हैं, इस तक हमेशा मुक्ति-शास्त्र से इसकी प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से पहुँचा जाता है" (p. 434)।

▣ **"केवल वह जो पिता को करते हुए देखता है"** मानवजाति ने कभी पिता को नहीं देखा है (तुलना यूहन्ना 5:37 और 1:18), लेकिन पुत्र उसके अंतरंग, व्यक्तिगत, वर्तमान ज्ञान का दावा कर रहा है (तुलना यूहन्ना 1:1-3)।

▣ **"जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है"** मनुष्य यीशु के कार्यों और शिक्षाओं में अदृश्य परमेश्वर को स्पष्ट रूप से देखते हैं (तुलना कुलुस्सियों 1:15 इब्रानियों 1:3)।

5:20 "पिता पुत्र से प्रीति रखता है, और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है" ये दोनों वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं जो एक निरंतर कार्य की बात करते हैं। यह प्रीति के लिए यूनानी शब्द है, *phileō* यूहन्ना 3:35 के समान *agapeō* की अपेक्षा की गई होगी। प्रीति के लिए इन दो शब्दों में कोइन यूनानी में एक व्यापक अर्थ-संबंधी अतिच्छादन था (D.A. Carson, *Exegetical Fallacies, 2nd* ed., pp. 32-33 and F.F. Bruce, *Answers to Questions,* p.73 देखें)।

▣ **"बड़े काम"** संदर्भ में यह मृतकों को जिलाने (यूहन्ना 5:21,25-26) और न्याय निष्पादन (यूहन्ना 5:22,27) को संदर्भित करता है।

▣ **"ताकि तुम अचम्भा करो"** यह उद्देश्य खंड स्पष्ट रूप से दिखाता है कि चमत्कारों का उद्देश्य यह है कि यहूदी (बहुवचन आप) अनोखे पुत्र में विश्वास करें (तुलना यूहन्ना 5:23; प्रेरितों के काम 13:41 [हबक्कूक1:5])।

5:21 "पिता मरे हुओं को उठाता. . .वैसा ही पुत्र भी" पुराने नियम में YHWH एकमात्र ऐसा है जो जीवन दे सकता है (तुलना व्यवस्थाविवरण 32:39)। यह तथ्य कि यीशु मृतकों को जिला सकता है YHWH के साथ समानता के एक कथन के तुल्य है (तुलना यूहन्ना 5:26)।

यीशु अब अनंत जीवन देता है (तुलना 2 कुरिंथियों 5:17; कुलुस्सियों 1:13) जो यूहन्ना 5:26 में नए युग में जीवन की एक भौतिक अभिव्यक्ति से जुड़ा हुआ है (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 4: 13-18)। ऐसा लगता है कि यूहन्ना की यीशु के साथ विस्तारित आकस्मिक भेंट एक व्यक्तिगत तौर पर है, जबकि एक भविष्य की सामूहिक घटना (न्याय और उद्धार दोनों) बाकी हैं।

▣ **"वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है"** पुत्र किसे जीवन देने के लिए चुनता है? संदर्भ में, यह कैल्विनवाद के लिए एक प्रमाण-पाठ नहीं है, लेकिन एक दृढ़-वचन है कि यीशु में विश्वास जीवन लाता है (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16)। तनाव यूहन्ना 6: 44,65 से आता है। क्या आत्मा "सब" या "कुछ"को चुनता है? मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि पतित मनुष्य आध्यात्मिक क्षेत्र में पहल नहीं करते हैं, लेकिन मैं इस बात के लिए बाइबल के आधार पर प्रतिबद्ध हूँ कि वे पश्चाताप, विश्वास, आज्ञाकारिता और धीरज के द्वारा आत्मा के प्रणय निवेदन पर प्रतिक्रिया दें (और प्रतिक्रिया देना जारी रखें)! वास्तविक रहस्य यही है कि क्यों कुछ लोग जो सुसमाचार सुनते हैं, वे "नहीं" कहते हैं! मैं इसे "अविश्वास का रहस्य" कहता हूँ। वास्तव में यह सुसमाचारों का "अक्षम्य पाप" और 1 यूहन्ना का "मृत्यु तक पाप" है। 1 यूहन्ना 5:16 पर विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: अक्षम्य पाप (SPECIAL TOPIC: THE UNPARDONABLE SIN)

A. याद रखें कि सुसमाचार एक यहूदी विन्यास को दर्शाते हैं
   1. दो प्रकार के पाप (विशेष विषय: अज्ञानकृत पाप [पुराना नियम], तुलना लैव्यव्यवस्था 4:2,22,27; 5:15,17-19; गिनती 15:27-31; व्यवस्थाविवरण 1:43; 17:12-13);
      a. अज्ञानकृत
      b. साभिप्राय
   2. पिन्तेकुस्त पूर्व यहूदी विन्यास (यानी, सुसमाचार की पूर्ति [यानी, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण] और आत्मा का विशेष दान अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है)

B. मरकुस 3:22-30 के साहित्यिक संदर्भ पर ध्यान दें
   1. यीशु के स्वयं के परिवार का अविश्वास (तुलना मरकुस 3:31-32)
   2. फरीसियों का अविश्वास (तुलना मरकुस 2:24; 3:1,6,22)

C. सुसमाचार सामानंतरों की तुलना करें, जहाँ "मनुष्य का पुत्र" नाम "मनुष्यों की संतान" में बदल जाता है
   1. मत्ती 12:22-37 (यानी, 12:32, "मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात")
   2. लूका 11:14-26; 12:8-12 (यानी, 12:10, "मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात")
   3. मरकुस 3:28 (यानी, "मनुष्यों की संतान के सब पाप क्षमा किए जाएँगे")

महान ज्योति की उपस्थिति में यीशु को लगातार अस्वीकार करना अक्षम्य पाप है। फरीसियों ने स्पष्ट रूप से समझा लेकिन विश्वास करने से इनकार कर दिया। इस अर्थ में यह 1 यूहन्ना के "पाप का फल मृत्यु" से संबंधित है (देखें विशेष विषय: पाप का फल मृत्यु)।

5:22 मजबूत दोहरी नकारात्मक और पूर्ण कालिक क्रिया इस तथ्य पर जोर देती है कि न्याय पुत्र को सौंप दिया गया है (तुलना यूहन्ना 5:27; 9:39; प्रेरितों के काम 10:42; 17:31; 2 तीमुथियुस 4:1; 1 पतरस 4:5)। इस पद और यूहन्ना 13:17 के बीच के स्पष्ट विरोधाभास को इस तथ्य से समझाया गया है कि यीशु, इन "अंतिम दिनों" के दौरान, किसी को भी न्याय नहीं करता है, लेकिन मनुष्य यीशु मसीह के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के द्वारा खुद का न्याय करते हैं। यीशु का युगांत-विषयक न्याय (अविश्वासियों का) उनके उसे ग्रहण करने या उसे अस्वीकार करने पर आधारित है।

अनंत जीवन बनाम न्याय यूहन्ना 3:17-21,36 का मुख्य विषय था। मसीह में परमेश्वर का प्रेम, जब अस्वीकार कर दिया जाता है, परमेश्वर का क्रोध बन जाता है! यहाँ केवल दो विकल्प हैं! अनन्त जीवन प्राप्त करने का केवल एक ही तरीका है- मसीह में विश्वास (तुलना यूहन्ना 10:1-18; 14:6; 1 यूहन्ना 5:9-12)!

5:23 "कि सब लोग पुत्र का आदर करें" समावेशी शब्द "सब" एक युगांत-विषयक न्याय के दृश्य का उल्लेख कर सकता है (तुलना फिलिप्पियों 2: 9-11)।

▣ **"जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता है"** यह कथन 1 यूहन्ना 5:12 के काफी कुछ समान है। कोई भी जो उसके पुत्र को नहीं जानता परमेश्वर को नहीं जान सकता है, और इसके विपरीत, कोई भी जो पुत्र का आदर और प्रशंसा नहीं करता पिता का आदर या प्रशंसा नहीं कर सकता है!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 5:24-29
24"मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। 25"मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, वह समय आता है और अब है, जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएँगे। 26क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है,उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे; 27वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है। 28इससे अचंभा मत करो; क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं, वे उसका शब्द सुनकर निकल आएँगे 29जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे।

5:24 "सच, सच" यूहन्ना का यीशु के शब्दों का अद्वितीय दोहरीकरण (तुलना यूहन्ना 5:25) महत्वपूर्ण कथनों के लिए एक विशिष्ट प्रस्तावना है। विशेष विषय:आमीन यूहन्ना 1:51 पर देखें।

▣ **"जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है"** ये तीन वर्तमान कर्तृवाच्य क्रियाएँ हैं। यहाँ पिता में विश्वास पर भार दिया गया है (यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें) जो कि पुत्र में विश्वास द्वारा प्रयोग में लिया जाता है (तुलना 1 यूहन्ना 5:9-12)। Synoptics में, अनंत जीवन अक्सर एक भविष्य की घटना है जिसकी विश्वास के द्वारा आशा की जाती है, लेकिन यूहन्ना में यह विशेष तौर से एक वर्तमान वास्तविकता है (अर्थात, यूहन्ना 8:51; 11:25)। यह संभव है कि शब्द "सुनकर" इब्रानी शब्द *shema* को दर्शाता है, जिसका अर्थ था "पालन करने के लिए सुनना" (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:4)।

▣ **"मेरे भेजने वाले पर"** क्रिया *apostellō* (अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य कृदंत) "apostle" शब्द का मूल रूप है (तुलना यूहन्ना 5:36)। इसका प्रयोग रब्बियों द्वारा "एक निर्दिष्ट कार्य पर एक आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया" के रूप में किया जाता था। यह शब्द यूहन्ना में अक्सर पिता को पुत्र को उनके प्रतिनिधि के रूप में भेजने के लिए प्रयोग किया गया है। यूहन्ना 4:34 पर टिप्पणी देखें

विशेष विषय: भेजना *(APOSTELLŌ)* (SPECIAL TOPIC: SEND *(APOSTELLŌ)*)

यह "भेजना" (यानी, *apostellō*) के लिए एक सामान्य यूनानी शब्द है। इस शब्द के कई धर्मशास्त्रीय प्रयोग हैं:

1. शास्त्रीय यूनानी और रब्बियों में इस शब्द का प्रयोग एक बुलाए और दूसरे के आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में भेजे जाने के लिए किया जाता है, कुछ हमारे अंग्रेजी "राजदूत" के समान (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:20)
2. सुसमाचार इस क्रिया को अक्सर पिता के द्वारा यीशु के भेजे जाने के लिए प्रयोग करते हैं। यूहन्ना में यह शब्द मसीही संकेतार्थ लेता है (तुलना मत्ती 10:40; 15:24; मरकुस 9:37; लूका 9:48 और विशेष रूप से यूहन्ना 5:36,38; 6:29,57; 7:29; 8:42; 10:36; 11:42; 17:3,8,18,21,23,25; 20:21 [दोनों "प्रेरित" और इसका पर्यायवाची "*pempō*" पद 21 में प्रयुक्त)। इसका प्रयोग यीशु के द्वारा विश्वासियों को भेजने के लिए किया गया है (तुलना 17:18; 20:21 [दोनों "*apostello*" और इसका पर्यायवाची "*pempo*" यूहन्ना 20:21 में])।
3. नये नियम ने चेलों के लिए संज्ञा "प्रेरित" का प्रयोग किया
    a. चेलों के मूल बारह अंतरंग समूह (जैसे, मरकुस 6:30; लूका 6:13; प्रेरितों के काम 1:2,26)
    b. प्रेरितों के काम के सहायकों और सहकर्मियों का एक विशेष समूह

(1) बरनबास (तुलना प्रेरितों के काम 14:4,14)
(2) अन्द्रुनीकुस और यूनियास (KJV, जूनिया, तुलना रोमियों 16:7)
(3) अपुल्लोस (तुलना 1 कुरिन्थियों 4:6-9)
(4) प्रभु का भाई याकूब (तुलना गलातियों 1:19)
(5) सिलवानुस और तीमुथियुस (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 2:6)
(6) संभवतः तीतुस (तुलना 2 कुरिन्थियों 8:23)
(7) संभवत: इपफ्रुदीतुस (तुलना फिलिप्पियों 2:25)

c. कलीसिया में कार्यरत दान (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:28-29; इफिसियों 4:11)

4. पौलुस अपने अधिकांश पत्रों में मसीह के प्रतिनिधि के रूप में अपने ईश्वर-प्रदत्त अधिकार का दावा करने के एक तरीके के रूप में अपने लिए इस नाम का प्रयोग करता है (तुलना रोमियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलातियों 1:1; इफिसियों 1:1; कुलुस्सियों 1:1; 1 तीमुथियुस 1:1; 2 तीमुथियुस 1:1; तीतुस 1:1)।
5. आधुनिक विश्वासियों के रूप में हम जिस समस्या का सामना करते हैं, वह यह है कि नया नियम कभी भी यह परिभाषित नहीं करता है कि इस कार्यरत दान में क्या शामिल है या विश्वासियों में इसकी पहचान कैसे की जाती है। स्पष्ट रूप से हमें को मूल बारह (#3a) और बाद के प्रयोग (#3b) के बीच अंतर करना चाहिए। विशेष विषय: प्रेरणा और विशेष विषय: प्रकाशन देखें। यदि आधुनिक "प्रेरितों के काम" को अधिक पवित्रशास्त्र लिखने के लिए प्रेरणा नहीं मिली है (अर्थात, ग्रंथ संग्रह बंद है, तुलना यहूदा पद 3; विशेष विषय: ग्रंथ संग्रह देखें), फिर वे क्या करते हैं जो नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं या धर्मप्रचारकों से अलग है (तुलना इफिसियों 4:11)? यहाँ मेरी संभावनाएं हैं।
   a. गैर-प्रचार क्षेत्रों में मिशनरी कलीसिया की शुरुआत करनेवाले (*Didache* के समान प्रयुक्त)
   b. किसी दिए गए क्षेत्र या संप्रदाय में पादरियों के अगुवे
   c. कोई नहीं जानता

▣ **"परन्तु मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है"** यह पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है; जो अतीत में हुआ है और अब अस्तित्व आ गया है। परमेश्वर का राज्य वर्तमान, फिर भी भविष्य, इसलिए, अनन्त जीवन भी है (तुलना यूहन्ना 5:25-26, 1 यूहन्ना 3:14)। पद 25 अभी राज्य की उपस्थिति का एक सशक्त कथन है!

5:25 "वह समय आता है और अब है" यह इस प्रकार की भाषा है जो यूहन्ना की रचनाओं की विशेषता बताती है। शब्दों और वाक्यांशों के अक्सर दो अर्थ हैं। इस मामले में, "समय" का अर्थ है

1. उद्धार का समय
2. न्याय का समय

समय सीमा वर्तमान और भविष्य दोनों है (तुलना यूहन्ना 5:29; 6:39,44,54)।कोई यीशु के साथ अभी जो करता है वह यह निर्धारित करता है कि भविष्य में उसके साथ क्या होगा। उद्धार और न्याय दोनों एक वर्तमान वास्तविकता और भविष्य की परिणीति (तुलना यूहन्ना 5:28) हैं।

विशेष विषय: घड़ी (SPECIAL TOPIC: THE HOUR)

शब्द "घड़ी" का प्रयोग कई अलग-अलग तरीकों से सुसमाचारों में किया जाता है, जैसे

1. समय के संदर्भ में (तुलना मत्ती 8:13; 26:40; लूका 7:21; यूहन्ना 11:9)
2. परीक्षा और परीक्षण के समय के लिए एक रूपक (तुलना मत्ती 10:19; मरकुस 13:11; लूका 12:12)
3. यीशु की सेवकाई की शुरुआत के लिए एक रूपक (तुलना यूहन्ना 2:4; 4:23)
4. न्याय के दिन के लिए एक रूपक (यानी, दूसरा आगमन, तुलना मत्ती 24:36,44; 25:13; मरकुस 13:32; यूहन्ना 5:25,28)
5. यीशु के भावावेश के लिए एक रूपक (तुलना मत्ती 26:45; मरकुस 14:35,41; यूहन्ना 7:30; 8:20; 12: 23,27; 13:1; 16:32; 17:1)

▣ **"मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे"** पद 25 आत्मिक मृतकों की बात करता है; यूहन्ना 5:29 सारे शारीरिक मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में बात करता है। बाइबल तीन तरह की मृत्यु की बात करती है।

1. आत्मिक मृत्यु (तुलना उत्पत्ति 3)

2. शारीरिक मृत्यु (तुलना उत्पत्ति 5)
3. अनंत मृत्यु (तुलना इफिसियों 2:2; प्रकाशितवाक्य 2:11; 20:6,14) या आग की झील, नरक (*Gehenna*)।

यह वाक्यांश "परमेश्वर का पुत्र"का एक दुर्लभ प्रयोग है। 1 यूहन्ना 3:8 पर विशेष विषय देखें। एक कारण कि यह वाक्यांश बहुत अधिक प्रयोग नहीं किया गया क्योंकि देवताओं (ओलिम्प पर्वत) के मानव स्त्रियों को पत्नियों अथवा सहचारी के रूप में लेने के यूनानी धार्मिक दृष्टिकोण की वजह से। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु की स्थिति यौन पीढ़ी या समय अनुक्रम को नहीं, लेकिन अंतरंग संबंध को दर्शाती है। यह एक यहूदी पारिवारिक उपमा है। पुराने नियम की श्रेणियों (तुलना यूहन्ना 5:21, 26) का उपयोग करके यीशु इन यहूदी अगुवों के समक्ष अपने देवत्व की बहुत स्पष्ट और विशिष्ट तरीके से पुष्टि कर रहा था।

5:26 "क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है" यह मूलतः निर्गमन 3:14 से YHWH शब्द का अर्थ है। परमेश्वर के लिए वाचा के नाम का यह रूप इब्रानी क्रिया "होना" से आता है। इसका मतलब है हमेशा जीवित, एकमात्र जीवित। विशेष विषय: देवता के लिए नाम यूहन्ना 6:20 पर देखें।

पुराने नियम में केवल YHWH में "जीवन" था (तुलना 1 तीमुथियुस 1:17; 6:16) और केवल वह इसे दूसरों को दे सकता था (यानी, अय्यूब 10:12; 33:4; भजनसंहिता 36:9)। यीशु का दावा है कि YHWH उसे यही अनोखी शक्ति देता है!

▣ **"उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे"** यह यीशु के देवत्व का प्रबल पुष्टिकरण है (तुलना यूहन्ना 1:4; 1 यूहन्ना 5:11)।

5:27 यीशु के उचित रीति से न्याय करने में सक्षम (*exousia,* अधिकार है, तुलना यूहन्ना 10:18; 17:2; 19:11)होने का कारण यह है कि वह पूर्ण रीति से परमेश्वर है, लेकिन साथ ही पूर्ण रीति से मनुष्य भी। "मनुष्य का पुत्र" वाक्यांश के साथ कोई निश्चित शब्द वर्ग नहीं है (तुलना यहेजकेल 2:1 और भजनसंहिता 8: 4)। वह हमें पूर्ण रूप से जानता है (तुलना इब्रानियों 4:15); वह परमेश्वर को पूर्ण रूप से जानता है (तुलना यूहन्ना 1:18; 5:30)।

यह आश्चर्यजनक है कि एक संदर्भ में जहाँ यीशु ने स्वयं को "पुत्र"कहा है (तुलना यूहन्ना 5:19 [दो बार], 20,21,22,23 [दो बार], 25,26) लेकिन यूहन्ना 5:27 शीर्षक "मनुष्य का पुत्र"(लेकिन सामान्य निश्चित शब्द वर्ग के बिना) का प्रयोग किया गया है। हालांकि, एक इसी प्रकार की अदला-बदली है (1) यूहन्ना 3:13,14 बनाम यूहन्ना 3: 16,17,18,35,36; (2) यूहन्ना 6:27,53 बनाम यूहन्ना 6:40; और (3) यूहन्ना 8:28 बनाम यूहन्ना 8: 35,36 में। यीशु ने दोनों शीर्षकों का स्वयं के लिए अदल- बदल कर प्रयोग किया है।

5:28 "इससे अचम्भा मत करो" यह एक नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है जो सामान्य रूप से एक ऐसे कार्य को रोकने के लिए होता जो पहले से ही प्रक्रिया में था। जैसा कि इन यहूदी अगुवों के लिए यीशु के पिछले शब्द चौंकाने वाले थे, उसका अगला कथन भी उन्हें पूरी तरह से स्तब्ध कर देगा।

▣ **"जितने कब्रों में हैं, वे उसका शब्द सुनकर"** यह दूसरे आगमन पर मसीहा की पुकार को दर्शाता है (तुलना 1 थिस्सलुनिकियों 4:16)। लाज़र (तुलना यूहन्ना 11:43) इस घटना का एक प्रतिमान है। यह 2 कुरिन्थियों 5:6,8 की सच्चाई को नकारता नहीं है। यह पुत्र के सार्वभौमिक निर्णय और अधिकार का दावा करता है।

इस संदर्भ का अधिकांश भाग यहाँ और अब आध्यात्मिक जीवन की वास्तविकता से संबंधित है (सिद्ध युगांत विषयक ज्ञान)। लेकिन यह वाक्यांश अंतिम समय की भविष्य की युगांत विषयक घटना का भी दावा करता है। परमेश्वर के राज्य के पहले से ही होने और अभी तक नहीं के बीच का तनाव सिनॉप्टिक्स में यीशु की शिक्षाओं की विशेषता है, लेकिन विशेष रूप से यूहन्ना में।

5:29 बाइबल दुष्ट और धर्मी, दोनों के पुनरुत्थान की बात करती है (तुलना दानिय्येल 12: 2; मत्ती 25:46; प्रेरितों के काम 24:15)। अधिकांश अवतरण केवल धर्मियों के पुनरुत्थान पर जोर देते हैं (अय्यूब 19: 23-29; यशायाह 26:19; यूहन्ना 6: 39-40,44,54; 11: 24-25; 1 कुरिंथियों 15:50-58) ।

यह कामों के आधार पर न्याय नहीं, बल्कि विश्वासियों की जीवनशैली के आधार पर न्याय का उल्लेख करता है (तुलना मत्ती 25:31-46; गलातियों 5:16-21)। परमेश्वर के वचन और संसार में एक सामान्य सिद्धांत है, मनुष्य जो बोते हैं वही काटते हैं (तुलना नीतिवचन 11: 24-25; गलातियों 6: 6)। या इसे पुराने नियम के उद्धरण में इस प्रकार रखा जा सकता है,"परमेश्वर मनुष्यों को उनके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा" (तुलना भजनसंहिता 62:12; 28:4; अय्यूब 34:11; नीतिवचन 24:12; मत्ती 16:27; रोमियों 2:6-8; 1 कुरिन्थियों 3:8; 2 कुरिन्थियों 5:10; इफिसियों 6:8 और कुलुस्सियों 3:25) .

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 5:30
30मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।

5:30 यीशु, परमेश्वर का देहधारी वचन पिता के अधीन और आज्ञाकारी था। आज्ञाकारिता पर यह प्रभावशाली जोर यूहन्ना 5:19 ("पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता") में दिखाई देता है। इसका मतलब यह नहीं है कि पुत्र तुच्छ है, लेकिन यह कि त्रिएक ने तीन अलग-अलग व्यक्तियों, पिता, पुत्र और आत्मा के बीच उद्धार के कार्यों को सौंप दिया है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 5:31-47
31यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। 32एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं
जानता हूँ कि मेरी जो गवाही वह देता है, वह सच्ची है। 33तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उसने सच्चाई की गवाही
दी है। 34परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता; तौभी मैं ये बातें इसलिये कहता हूँ कि तुम्हें उद्धार
मिले। 35वह जो जलता और चमकता हुआ दीपक था, और तुम्हें कुछ देर तक उसकी ज्योति में मगन होना अच्छा
लगा। 36लेकिन मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है; क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को
सौंपा है अर्थात यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। 37और पिता जिसने मुझे भेजा
है, उसी ने मेरी गवाही दी है। तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है; 38और उसके वचन
को मन में स्थिर नहीं रखते, क्योंकि जिसे उसने भेजा तुम उस का विश्वास नहीं करते। 39तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढते
हो, क्योंकि तुम समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है; 40फिर
भी तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। 41मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता। 42परन्तु मैं तुम्हें जानता
हूँ, कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं। 43मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि अन्य
कोई अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे। 44तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो
एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते,किस प्रकार विश्वास कर सकते हो? 45यह न समझो कि मैं पिता के
सामने तुम पर दोष लगाऊँगा; तुम पर दोष लगानेवाला तो मूसा है, जिस पर तुम ने भरोसा रखा है। 46क्योंकि यदि
तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते, इसलिए कि उसने मेरे विषय में लिखा है। 47परन्तु यदि तुम
उसकी लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी बातों पर कैसे विश्वास करोगे?”

5:31 पुराने नियम में किसी भी मामले की पुष्टि के लिए दो गवाहों की आवश्यकता होती थी (तुलना गिनती 35:30; व्यवस्थाविवरण 19:15)। इस संदर्भ में यीशु खुद के लिए पाँच गवाह देता है।

1. पिता (यूहन्ना 5: 32,37)
2. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (यूहन्ना 5:33, तुलना यूहन्ना 1:19-51)
3. यीशु के अपने काम (तुलना यूहन्ना 5:36)
4. धर्मशास्त्र (तुलना यूहन्ना 5:39)
5. मूसा (तुलना यूहन्ना 5:46) जो व्यवस्थाविवरण 18:25-22 को प्रतिबिंबित करता है।

यूहन्ना 1:8 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो संभावित कार्य की बात करता है।

▣ **"मेरी गवाही सच्ची नहीं"** यह 8:14 का विरोधाभास प्रतीत होता है। प्रसंग से पता चलता है कि ये कथन अलग-अलग विन्यास में कहे गए हैं। यहाँ यीशु दिखाते हैं कि यहाँ कितनी अन्य गवाहियाँ हैं, लेकिन यूहन्ना 8:14 में वह दावा करता है कि केवल उसकी होना आवश्यक है!

"सच" के लिए यूहन्ना 6:55 पर विशेष विषय: सच्चाई देखें।

5:32 "एक और है जो मेरी गवाही देता है" यह परमेश्वर पिता को संदर्भित करता है (तुलना 1 यूहन्ना 5: 9) *allos* शब्द के उपयोग के कारण, जिसका अर्थ है,"उस ही तरह का दूसरा", *heteros* के परस्पर विरोध में जिसका अर्थ है "एक अलग तरह का," हालांकि यह अंतर कोइन यूनानी में लुप्त हो रहा था। विशेष विषय: यीशु के लिए गवाहियाँ यूहन्ना 1:8 पर देखें।

5:33 "तुम ने यूहन्ना से पुछवाया" यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 1:19)।

5:34 "मैं ये बातें इसलिए कहता हूँ कि तुम्हें उद्धार मिले" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य संशयार्थ-सूचक है। कर्मवाच्य का अर्थ है परमेश्वर या आत्मा का प्रतिनिधित्व (तुलना यूहन्ना 6:44,65)। याद रखें कि सुसमाचार धर्म-प्रचार संबंधी उद्‌घोषणाएँ हैं (यानी पुस्तिकाएँ), ऐतिहासिक जीवनियाँ नहीं। हर एक बात में, जो दर्ज की गई थी, एक धर्म-प्रचार संबंधी उद्देश्य है (तुलना यूहन्ना 20:30-31)।

5:35 "वह दीपक था" यह प्रकाश पर एक और जोर है, यहाँ यूहन्ना का प्रस्तावना रूप संदेश (तुलना यूहन्ना 1:6-8)।

5:36 "यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं" यीशु के कार्य में मसीहा के बारे में पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति थे। उसके दिन के यहूदियों को इन चमत्कारी चिन्हों को पहचानना चाहिए था - अंधे को चंगा करना, गरीबों को खाना खिलाना, लंगड़ों को सक्षम बनाना (तुलना यशायाह 29:18; 32: 3-4; 35:5-6; 42:7)। यीशु की शिक्षाएँ, जीवनशैली धार्मिकता, करुणा और पराक्रमी चमत्कार (तुलना यूहन्ना 2:23; 10:25,38; 14:11; 15:24) इस बात की स्पष्ट गवाही देते थे कि वह कौन था, वह कहाँ से आया था, और किसने उसे भेजा।

5:37 "उसी ने मेरी गवाही दी है" "उसी" पिता को संदर्भित करता है। संदर्भ में यह वाक्यांश पुराने नियम के पवित्रशास्त्र का संदर्भ देता है (तुलना इब्रानियों 1:1-3)। यह पुराने नियम के सारे मसीहाई संदर्भों को शामिल करेगा (तुलना यूहन्ना 5:39)।

▣ **"तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है"** यीशु इस बात पर जोर दे रहे थे कि यद्यपि यहूदियों को धर्मशास्त्र और आराधना में व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से परमेश्वर को जान लेना चाहिए था, लेकिन वे उसे बिल्कुल भी नहीं जानते थे (तुलना यूहन्ना 8:43; यशायाह 1:1-15; 6:9-10; 29:13; यिर्मयाह 5:21)।

पुराने नियम में, ऐसा सोचा जाता था कि देवता को देखना मौत लाता है। एकमात्र व्यक्ति जिसने YHWH से आमने-सामने बात की थी, वह मूसा था और तब भी मुलाकात बादल के घूँघट के माध्यम से हुई थी। बहुतों ने सोचा है कि निर्गमन 33:23 यूहन्ना 1:18 का विरोधाभास है। हालाँकि, निर्गमन में इब्रानी शब्दों का अर्थ है "महिमा के बाद," भौतिक रूप नहीं।

5:38 "उसके वचन को मन में स्थिर" ये यूहन्ना के लेखन में दो प्रभावशाली रूपक हैं। परमेश्वर का वचन (*logos*) ग्रहण किया जाना चाहिए, एक बार ग्रहण करने के बाद (तुलना यूहन्ना 1:12) वह रहना चाहिए (पालन करना, तुलना यूहन्ना 8:31; 15: 4,5,6,7,10; 1 यूहन्ना 2:6,10,14,17,24,27,28; 3:6,14,15,24)। यीशु परमेश्वर का पूर्ण प्रकटीकरण है (तुलना यूहन्ना 1:1-18; फिलिप्पियों 2: 6-11; कुलुस्सियों 1:15-17; इब्रानियों 1:1-3)। उद्धार निरंतर संबंध ("जानो" का इब्रानी अर्थ तुलना उत्पत्ति 4:1; यिर्मयाह 1:5) और सुसमाचार की सच्चाईयों की पुष्टि ("जानो" का यूनानी अर्थ तुलना 2 यूहन्ना 9) से पक्का होता है।

यह शब्द "स्थिर" का प्रयोग धीरज के साथ अंतरंग, व्यक्तिगत संबंध के अर्थ में किया जाता है।

स्थिरता सच्चे उद्धार की एक शर्त है (तुलना अध्याय 15) इसका यूहन्ना में कई अर्थों में प्रयोग किया गया है।

1. पिता में पुत्र (तुलना यूहन्ना 10:38; 14: 10,11,20,21; 17:21)
2. पिता पुत्र में (तुलना यूहन्ना 10:38; 14: 10,11,21; 17:21,23)
3. पुत्र में विश्वासी (तुलना यूहन्ना 14:20,21; 15: 5; 17:21)
4. पुत्र और पिता में विश्वासी (तुलना यूहन्ना 14:23)
5. वचन में विश्वासी (तुलना यूहन्ना 5:38; 8:31; 15:7; 1 यूहन्ना 2:14)।

1 यूहन्ना 2:10 पर विशेष विषय देखें।

5:39 "तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढते हो" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक या एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक हो सकता है। चूंकि इसमें गवाहों की सूची है जिसको यहूदियों ने अस्वीकार कर दिया था, इसलिए शायद यह एक निर्देशात्मक है।

यहाँ यहूदी अगुवों की त्रासदी है: उनके पास पवित्रशास्त्र थे, उन्होंने पढ़े, उनका अध्ययन किया, उन्हें याद किया, और फिर भी उस व्यक्ति से चूक गए, जिसे वे इंगित करते हैं! आत्मा के बिना, यहाँ तक कि पवित्रशास्त्र भी प्रभावहीन हैं! सच्चा जीवन केवल एक व्यक्तिगत, आज्ञाकारी विश्वास के संबंध के माध्यम से आता है। (यानी,व्यवस्थाविवरण 4:1; 8:13; 30:15-20; 32: 46-47)

▣ **"यह वही है जो मेरी गवाही देता है"** यह पुराने नियम पवित्रशास्त्रों को संदर्भित करता है, जो यीशु पूर्ण करता है(यानी, यूहन्ना 1:45; 2:22; 5:46; 12:16,41; 19:28; 20:9)। प्रेरितों के काम में पतरस (तुलना प्रेरितों के काम 3:18; 10:43) और पौलुस(तुलना प्रेरितों के काम 13: 13:17; 17:2-3; 26:22-23,27) यीशु के मसीहा होने के सबूत के रूप में परिपूर्ण भविष्यवाणी का उपयोग करते हैं। लेकिन एक के अलावा (1 पतरस 3:15-16), जो नये नियम में पाए गए पवित्रशास्त्र के

अधिकार की पुष्टि करता है (तुलना. 1 कुरिंथियों 2: 9-13; 1 थिस्सलुनिकियों 2:13; 2 तीमुथियुस 3:16; 1 पतरस 1:23-25; 2 पतरस 1:20-21), सारे गद्यांश पुराने नियम को उल्लेखित करते हैं। यीशु ने स्पष्ट रूप से स्वयं को पुराने नियम की पूर्ति और लक्ष्य (और उचित दुभाषिया, तुलना मत्ती 5:17-48) के रूप में देखा।

विशेष विषय: आरंभिक कलीसिया का *KERYGMA* (SPECIAL TOPIC: THE *KERYGMA* OF THE EARLY CHURCH)

मसीहत के बारे में बहुत सारे मत हैं। हमारा दिन पहली सदी की तरह ही धार्मिक अनेकवाद का दिन है। व्यक्तिगत रूप से, मैं उन सभी समूहों को पूरी तरह से सम्मिलित और स्वीकार करता हूँ जो यीशु मसीह को जानने और भरोसा करने का दावा करते हैं। हम सभी इससे या उससे असहमत हैं, लेकिन मूल रूप से मसीहत यीशु के बारे में है। हालांकि, ऐसे समूह हैं जो ईसाई होने का दावा करते हैं जो प्रतीत होता है कि "हमशक्ल" या "जॉनी-लेटलतीफ" हैं। मैं अंतर कैसे बताऊँ?

खैर, दो तरीके हैं:

A. यह जानने के लिए कि आधुनिक पंथ समूह क्या विश्वास करते हैं (अपने स्वयं के ग्रंथों से) एक सहायक पुस्तक है *The Kingdom of the Cults* by Walter Martin.
B. प्रारंभिक कलीसिया के उपदेश, विशेषकर प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रेरित पतरस और पौलुस ने, हमें इस बात की बुनियादी रूपरेखा दी कि पहली सदी के प्रेरित लेखकों ने विभिन्न समूहों में मसीहत को कैसे प्रस्तुत किया। यह प्रारंभिक "उद्घोषणा" या "उपदेश" (जिसका प्रेरितों के काम एक सारांश है) यूनानी शब्द *kerygma* पर आधारित है। प्रेरितों के काम में यीशु के बारे में सुसमाचार के मूल सत्य निम्नलिखित हैं:
    1. कई पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा करता है - प्रेरितों के काम 2:17-21,30-31,34; 3:18-19,24; 10:43; 13:17-23,27; 33:33-37,40-41; 26:6-7,22-23
    2. वायदे के अनुसार YHWH के द्वारा भेजा गया – प्रेरितों के काम 2:23; 3:26
    3. अपने संदेश की पुष्टि करने और परमेश्वर की करुणा प्रकट करने के लिए चमत्कार किए – प्रेरितों के काम 2:22; 3:16; 10:38
    4. सौंपा गया, नकारा गया - प्रेरितों के काम 3:13-14; 4:11
    5. क्रूस पर चढ़ाया गया - प्रेरितों के काम 2:23; 3:14-15; 4:10; 10:39; 13:28; 26:23
    6. जिलाया गया - प्रेरितों के काम 2:24,31-32; 3:15,26; 4:10; 10:40; 13:30; 17:31, 26, 23
    7. परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठाया गया - प्रेरितों के काम 2:33-36; 3:13,21
    8. फिर आएगा - प्रेरितों के काम 3:20-21
    9. न्यायी ठहराया गया - प्रेरितों के काम 10:42; 17:31
    10. पवित्र आत्मा द्वारा भेजा गया- प्रेरितों के काम 2:17-18,33,38-39; 10:44-47
    11. उन सभी के लिए उद्धारकर्ता जो विश्वास करते हैं - प्रेरितों के काम 13:38-39
    12. कोई और उद्धारकर्ता नहीं है - प्रेरितों के काम 4:12; 10:34-36

सत्य के इन प्रेरित-संबंधी स्तंभों का प्रत्युत्तर देने के कुछ तरीके यहाँ दिए गए हैं:

1. मन फिराओ - प्रेरितों के काम 2:38; 3:19; 17:30; 26:20
2. विश्वास करो - प्रेरितों के काम 2:21; 10:43; 13:38-39
3. बपतिस्मा लो - प्रेरितों के काम 2:38; 10:47-48
4. पवित्र आत्मा को प्राप्त करो - प्रेरितों के काम 2:38; 10:47
5. सभी आ सकते हैं - प्रेरितों के काम 2:39; 3:25; 26:23

इस योजना ने आरंभिक कलीसिया की आवश्यक उद्‌घोषणा के रूप में कार्य किया, हालाँकि नये नियम के विभिन्न लेखक अपने लेखन में शायद एक हिस्से को छोड़ सकते हैं या अन्य विवरणों पर जोर दे सकते हैं। पूरा मरकुस रचित सुसमाचार पतरस के *kerygma* के पहलू का बारीकी से अनुसरण करता है। मरकुस को पारंपरिक रूप से पतरस के उपदेशों को, जो रोमियों में प्रचारित किए गए, एक लिखित सुसमाचार में संरचित करते हुए देखा गया है। मत्ती और लूका दोनों मरकुस की मूल संरचना का पालन करते हैं।

5:41-44 ये पद इस तथ्य को दर्शाते हैं कि यहूदी धार्मिक अगुवों ने अपने सहयोगियों से वाहवाही लूटी। वे अतीत से रब्बियों को उद्‌धृत करने में गौरवान्वित महसूस करते थे, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिहीनता के कारण वे शिक्षकों में से सबसे महान को

चूक गए, जो उनके बीच में था। यह यीशु की पहली सदी के यहूदी धर्म की कड़ी निंदाओं में से एक है (मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19 में दृष्टान्त पर भी ध्यान दें) ।

5:41
NASB, NRSV "मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता"
NKJV "मैं मनुष्यों से सम्मान नहीं चाहता"
TEV "मैं मानव प्रशंसा की खोज नहीं कर रहा हूँ"
NJB "मानव महिमा का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं"

शब्द "महिमा", *doxa*, का लगातार अनुवाद करना मुश्किल है (यूहन्ना 1:14 पर विशेष विषय देखें)। यह इब्रानी, "महिमा," *kabodh* को दर्शाता है, जिसका प्रयोग परमेश्वर की उज्ज्वल, तेजोमय उपस्थिति (तुलना निर्गमन 16:10; 24:17; 40:34; प्रेरितों 7: 2) को व्यक्त करने और प्रशंसा करने और परमेश्वर को उसके चरित्र और कृत्यों के लिए आदर देने के एक तरीके के रूप में किया जाता था। एक अच्छा पद जो इन संकेतार्थों को जोड़ता है वह 2 पतरस 1:17 है।

परमेश्वर की उपस्थिति और चरित्र का यह तेजोमय पहलू संबंधित है

1. स्वर्गदूत (तुलना लूका 2:9; 2 पतरस2:10)
2. यीशु पर प्रभुत्व (तुलना यूहन्ना 1:14; 8:54; 12: 28; 13:31; 17:1-5,22,24; 1 कुरिंथियों 2:8; फिलिप्पियों 4:21)
3. विश्वासियों के लिए व्युत्पन्न। (रोमियों 8:18,21; 1 कुरिंथियों 2:7; 15:43; 2 कुरिंथियों 4:17; कुलुस्सियों 3:4; 1 थिस्सलुनिकियों 2:12; 2 थिस्सलुनिकियों 2:14; इब्रानियों 2:10; 1 पतरस 5: 1,4)

यह भी ध्यान देने योग्य दिलचस्प बात है कि यूहन्ना ने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने को उसके गौरवान्वित होने के रूप में उल्लेख किया है क्योंकि(तुलना यूहन्ना 7:32; 12:16,23; 13:31)। हालाँकि, इसे "सम्मान" या "धन्यवाद" के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है (तुलना लूका 17:18; प्रेरितों के काम 23: रोमियों 4:20; 1 कुरिंथियों 10:31; 2 कुरिंथियों 4:15; फिलिप्पियों 1:11; 2:11; प्रकाशित वाक्य 11:13; 14:7; 16:9; 19:7)। इस संदर्भ में इस प्रकार इसका प्रयोग किया जाता है।

5:43 "तुम मुझे ग्रहण नहीं करते" यूहन्ना के पूरे सुसमाचार में, यीशु पर विश्वास करने का केंद्रबिंदु एक निर्धारित धर्मशास्त्रीय पंथ नहीं है, बल्कि उसके साथ व्यक्तिगत मुलाकात है (यानी, यूहन्ना 5:39-40)। विश्वास उस पर भरोसा करने के निर्णय के साथ शुरू होता है। इससे शिष्यता का बढ़ता हुआ व्यक्तिगत संबंध शुरू हो जाता है, जिसका समापन सिद्धांतवादी परिपक्वता और मसीह समान जीवन में होता है।

▣ **"यदि अन्य कोई अपने ही नाम से आए"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है।

▣ **"तो उसे ग्रहण कर लोगे"** यह तल्मूड से संबंधित अलग-अलग रब्बी संबंधित मतों से शिक्षकों की तुलना करने के रब्बी के अध्ययन के तरीकों पर एक क्रीड़ा है।

Michael Magill, *New Testament TransLine,* में एक अच्छा उद्धरण है:

"यहूदी अगुवे एक ऐसे मानव शिक्षक या रब्बी ग्रहण करेंगे जो परमेश्वर द्वारा भेजे जाने का दावा नहीं करता है। एक मानव शिक्षक के साथ, वे साथियों के पारस्परिक संबंध में हैं, समान आधार पर महिमा का आदान-प्रदान करते हैं। परमेश्वर की ओर से भेजे गए भविष्यद्वक्ता के साथ, उन्हें अधीनस्थ स्थिति में उसका सुनना और आज्ञापालन करना होगा। यह हमेशा इस बात की मूल में रहा है कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं को अस्वीकार क्यों किया जाता था "(पृ. 318)।

5:44 यूहन्ना 17:3 पर टिप्पणी देखें

5:45-47 यीशु इस बात पर जोर दे रहा है कि मूसा का लेखन उसे प्रगट करता है। यह संभवतः व्यवस्थाविवरण 18:15-22 का संदर्भ है।यूहन्ना 5:45 में पवित्रशास्त्र को एक अभियोगी के रूप में व्यक्त किया गया है। इसका उद्देश्य था एक मार्गदर्शक होना (तुलना लूका 16:31)। मार्गदर्शक अस्वीकारे जाने पर , एक विरोधी बन गया। (तुलना गलातियों 3:8-14, 23-29)।

5:46,47 "यदि. . .यदि" पद 46 एक द्वितीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे" तथ्य के विपरीत "कहा जाता है, जो इस बात का दावा करता है कि यहूदी अगुवे वास्तव में मूसा के लेखन और यीशु (युगांत विषयक मूसा [अर्थात, व्यवस्थाविवरण 18:15 का भविष्यद्वक्ता]) अंतिम दिन उनके न्यायाध्यक्ष होंगे, पर भी विश्वास नहीं करते थे। यूहन्ना 5:47 का "यदि" एक प्रथम श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य का परिचय देता है जिसे सच माना जाता है (NIV में "क्योंकि" है)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. आधुनिक अनुवादों में से पद 4 क्यों हटा दिया गया है?
2. यीशु ने इस विशेष मनुष्य को क्यों चंगा किया?
3. क्या इस मनुष्य की ओर से विश्वास चंगाई में शामिल था? क्या शारीरिक चंगाई का अर्थ आत्मिक चंगाई है?
4. क्या उसकी बीमारी उसके व्यक्तिगत पाप से संबंधित थी? क्या सारी बीमारियाँ व्यक्तिगत पाप से संबंधित हैँ?
5. यहूदी यीशु को क्यों मारना चाहते थे?
6. पुराने नियम में परमेश्वर के उन कार्यों को सूचीबद्ध करें जो यीशु पर लागू होते हैं।
7. क्या अनंत जीवन एक वर्तमान वास्तविकता है या भविष्य की आशा है?
8. क्या अंतिम न्याय कामों या विश्वास पर आधारित है? क्यों?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 6

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पाँच हज़ार को खिलाया जाना	पाँच हज़ार को खिलाना	पाँच हज़ार को खिलाना	यीशु पाँच हजार को खिलाता है	रोटियों का चमत्कार
6:1-15	6:1-14	6:1-15	6:1-6	6:1-4
				6:5-15
			6:7	
			6:8-9	
			6:10-13	
			6:14-15	
पानी पर चलना	यीशु झील पर चलता है	यीशु झील पर चलता है	यीशु पानी पर चलता है	यीशु पानी पर चलते हुए अपने चेलों के पास आता है
6:16-21	6:15-21	6:16-21	6:16-21	6:16-21
यीशु जीवन की रोटी	रोटी जो स्वर्ग से उतरी	यीशु जीवन की रोटी	भीड़ यीशु को ढूँढती है	कफरनहूम के आराधनालय में उपदेश
6:22-33	6:22-40	6:22-24	6:22-24	6:22-27
		6:25-40	यीशु जीवन की रोटी	
			6:25	
			6:26-27	
			6:28	6:28-40
			6:29	
			6:30-31	
			6:32-33	
6:34-40			6:34	
	अपनों द्वारा ठुकराया गया		6:35-40	
6:41-51	6:41-59	6:41-51	6:41-42	6:41-51
			6:43-51	
6:52-59		6:52-59	6:52	6:52-58
			6:53-58	
			6:59	6:59-62
अनंत जीवन की बातें	बहुत से चेले वापस चले गए		अनंत जीवन की बातें	
6:60-65	6:60-71	6:60-65	6:60	6:63

			6:61-65	
				6:64-66 पतरस का विश्वास का स्वीकार
6:66-71		6:66-71	6:66-67	
				6:67-71
			6:68-69	
			6:70-71	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

यूहन्ना 6:1-71 पर प्रासंगिक अन्तर्दष्टि

A. यूहन्ना के सुसमाचार में स्वयं प्रभुभोज को दर्ज नहीं किया गया है, हालांकि अध्याय 13-17 में ऊपरी कक्ष का संवाद और प्रार्थना दर्ज हैं। यह चूक जानबूझकर कर की गई हो सकती है। दूसरी सदी की कलीसिया ने व्यवस्था को एक सांस्कारिक अर्थ में देखना शुरू किया। उन्होंने उन्हें अनुग्रह के माध्यमों के रूप में देखा। सम्भवतः यूहन्ना यीशु के बपतिस्मे या प्रभुभोज को दर्ज न करके सांस्कारिक दृष्टिकोण पर प्रतिक्रिया दे रहा होगा।

B. यूहन्ना 6 पाँच हज़ार को भोजन खिलाने के संदर्भ में है। हालांकि, कई इसका उपयोग पवित्र संस्कार के सांस्कारिक दृश्य को सिखाने के लिए करते हैं। यह रोमन कैथोलिक रूपांतरण के सिद्धांत (यूहन्ना 6:53-56) का स्रोत है।
   अध्याय 6 पवित्र संस्कार से कैसे संबंधित है, यह सवाल सुसमाचारों की दोहरी प्रकृति दर्शाता है। जाहिर है, सुसमाचार यीशु के वचनों और जीवन से संबंधित है, फिर भी उन्हें दशकों बाद लिखा गया और अलग-अलग लेखकों की विश्वास की एकता को प्रगट किया। अतः यहाँ लेखकीय अभिप्राय के तीन स्तर हैं।
   1. आत्मा
   2. यीशु और मूल श्रोता
   3. सुसमाचार के लेखक और उनके पाठक

   कोई व्याख्या कैसे करे? एक ऐतिहासिक विन्यास द्वारा सूचित प्रासंगिक, व्याकरणिक, शाब्दिक पद्धति एकमात्र सत्यापित तरीका होना चाहिए और इसका विपरीत क्रम नहीं।

C. हमें याद रखना चाहिए कि दर्शक यहूदी थे और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मसीहा के महान-मूसा होने की रब्बियों की अपेक्षा की थी (तुलना यूहन्ना 6:30-31), विशेष रूप से "मन्ना" जैसे निर्गमन के अनुभवों के संबंध में। रब्बी एक प्रमाण पाठ के रूप में भजनसंहिता 72:16 का प्रयोग करते थे। यीशु के असाधारण कथनों (तुलना यूहन्ना 6:60-62,66) का उद्देश्य भीड़ की झूठी मसीहाई अपेक्षाओं का विरोध करना था (तुलना यूहन्ना 6:14-15)।

D. प्रारंभिक कलीसिया के पिता इस बात से सहमत नहीं थे कि यह अवतरण प्रभुभोज को संदर्भित करता है। क्लेमेंट ऑफ एलेक्ज़ेंड्रिया, ओरिगेन और यूसेबियस ने कभी भी इस अवतरण पर अपनी चर्चा में प्रभुभोज का उल्लेख नहीं किया।

E. इस अवतरण के रूपक यूहन्ना 4 के "कुँए पर स्त्री" के साथ यीशु के द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्दों से बहुत मिलते-जुलते हैं। सांसारिक पानी और रोटी का उपयोग अनन्त जीवन और आत्मिक वास्तविकताओं के रूपकों के रूप में किया गया है।

F. रोटी का बहुगुणित होना चारों सुसमाचारों (मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:32-44; लूका 9:10-17) में दर्ज एकमात्र चमत्कार है।

G. Michael Magill, *New Testament TransLine* (p. 325) कफरनहूम में विभिन्न समूह और यीशु के चौंकाने वाले शब्दों से उनके संबंध से संबंधित एक दिलचस्प अवलोकन करता है ।
   1. भीड़, यूहन्ना 6:24
   2. यहूदी, यूहन्ना 6: 41,52
   3. चेले, यूहन्ना 6: 60,66
   4. बारह, यूहन्ना 6:67

   यीशु ने प्रभावी रूप से
   1. भीड़ को उसे राजा बनाने की कोशिश करने से रोका क्योंकि उसने उन्हें खिलाया था (यूहन्ना 6:15)
   2. अपने कट्टरपंथी व्यक्तिगत दावों द्वारा यहूदी नेतृत्व को चुनौती दी
   3. कई सतही अनुयायियों को छोड़कर जाने दिया
   4. बारहों की ओर से निरंतर और गहरे विश्वास का एक कथन प्राप्त किया (यूहन्ना 6: 68-69)

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:1-14
[1]इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात तिबिरियास की झील के पार गया। [2]और एक बड़ी भीड़ उसके
पीछे हो ली क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उनको देखते थे। [3]तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर
अपने चेलों के साथ वहाँ बैठ गया। [4]यहूदियों के फसह का पर्व निकट था। [5]जब यीशु ने अपनी आँखें उठाकर एक
बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, तो फिलिप्पुस से कहा, "हम इनके भोजन के लिए कहाँ से रोटी मोल लाएँ ?"
[6]उसने यह बात उसे परखने के लिए कही, क्योंकि वह आप जानता था कि वह क्या करेगा। [7]फिलिप्पुस ने उसको
उत्तर दिया, "दो सौ दीनार की रोटी भी उनके के लिए पूरी न होंगी कि उनमें से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल
जाए।" [8]उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उससे कहा, [9]"यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ
की पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं; परन्तु इतने लोगों के लिए वे क्या हैं?" [10]यीशु ने कहा, "लोगों को बैठा दो।"
उस जगह बहुत घास थी: तब लोग जिनमें पुरुषों की संख्या लगभग पाँच हजार की थी, बैठ गए। [11]तब यीशु ने
रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बाँट दीं; और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बाँट
दिया। [12]जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, "बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ फेंका न
जाए।" [13]अतः उन्होंने बटोरा, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे,बारह टोकरियाँ
भरीं। [14]तब जो आश्चर्यकर्म उसने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे, "वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में
आनेवाला था निश्चय यही है।"

6:1 "गलील की झील (या तिबिरियास)" पानी का यह श्रोत कई अन्य नामों से जाना जाता था। पुराने नियम में यह किन्नेरेत, (तुलना गिनती 34:11) कहा जाता था। लूका 5:1 में इसे गन्नेसरत और यूहन्ना 21:1 में रोमी नाम, तिबिरियास झील के नाम से भी जाना जाता था। कोष्ठक लेखक के द्वारा एक और संपादकीय टिप्पणी है। यह अवश्य दर्शाता है कि यूहन्ना का सुसमाचार पलस्तीन के बाहर के लोगों के लिए था (तुलना यूहन्ना 6:4,6,64,71)।

6:2 भीड़ के द्वारा उसका अनुसरण करने के कारण पर ध्यान दें।

6:3 यीशु ने अपनी वाणी को व्यक्त करने के लिए पानी के प्राकृतिक प्रवर्धन और पहाड़ी की ढलान का उपयोग किया। यह तथ्य कि वह "बैठ गया" से पता चलता है कि यह उनके शिष्यों के साथ एक अधिकृत शिक्षण सत्र था। यह सोचने पर मजबूर होते हैं कि क्या पहाड़ मत्ती 5-7 की तरह एक मूसा के समय के विन्यास की याद दिलाने के लिए था।

इन बड़े शिक्षण सत्रों में, यीशु अक्सर भीड़ में विभिन्न समूहों को संबोधित करता था। उसके पैरों के करीब उसे घेरकर उसके करीबी शिष्य होते होंगे; उसके बाद, जिज्ञासु, अमीर और आम "देश के लोग"; और, छोटे समूहों में, धार्मिक अगुवे (फरीसी, शास्त्री, सदूकी, संभवतः एस्सेन्स)।

6:4 "फसह, यहूदियों का पर्व" यीशु के सार्वजनिक सेवकाई की अवधि निर्धारित करने का एकमात्र तरीका यूहन्ना के सुसमाचार में उल्लेखित फसह है (पहला, 2:13; दूसरा, 6:4; और तीसरा, 11:55 और 13:1)। अगर यूहन्ना 5:1 भी एक फसह की बात कर रहा है तो हमारे पास कम से कम तीन और एक-आधा या चार साल का सार्वजनिक सेवकाई है। यीशु के जीवन के बारे में इतना कुछ है जो हम नहीं जानते हैं (तुलना यूहन्ना 20:30; 21:25)।

6:6 "उसने यह बात उसे परखने के लिए कही" यह यहाँ "परख" (*peirazō*) के लिए यूनानी शब्द में सामान्य रूप से एक दुष्ट संकेतार्थ है (1 यूहन्ना 4:1 पर विशेष विषय देखें, तुलना मत्ती 4:1)। यह एक अच्छा उदाहरण है जो दर्शाता है कि आधुनिक व्याख्याकार नये नियम के शब्दों को एक परिभाषा में जबर्दस्ती बिठाने की कोशिश करते हैं। कोइन यूनानी शास्त्रीय यूनानी के कई व्याकरणिक और भाषाई भेद खो रही थी (तुलना यूहन्ना 5:20 पर टिप्पणी)।

यीशु फिलिप्पुस को परख रहा था, लेकिन कैसे?

1. यीशु पर पोषणकर्ता के रूप में उसके विश्वास पर?
2. पुराने नियम के विषय में उसके ज्ञान पर (तुलना गिनती 11:13, मूसा के परमेश्वर से भोजन उपलब्ध कराने के प्रश्न के बारे में)?
3. भीड़ के लिए उसकी परवाह और चिंता पर?

6:7
NASB, NKJV, "दो सौ दीनार की"
JB "छह महीने की मजदूरी"
NRSV "दो सौ चांदी के सिक्के"
TEV

एक दीनार एक मजदूर (तुलना मत्ती 20:2) और एक सैनिक के लिए एक दिन का वेतन था। यह एक साल की मजदूरी का लगभग दो-तिहाई होता।

विशेष विषय: यीशु के दिवस में पलस्तीन में प्रचलित सिक्के (SPECIAL TOPIC: COINS IN USE IN PALESTINE IN JESUS' DAY)

I. तांबे के सिक्के
   A. *cherma* - अल्प मूल्य (तुलना यूहन्ना 2:15)
   B. *chalchos* - अल्प मूल्य (तुलना मत्ती 10:9; मरकुस 12:41)
   C. *assarion* - एक रोमी तांबे का सिक्का जिसका मूल्य 1/16 एक *dēnarius* (तुलना मत्ती 10:29) है।
   D. *kodrantes* - एक रोमी तांबे का सिक्का जिसकी कीमत 1/64 एक *dēnarius* (तुलना मत्ती 5:26) है।
   E. *lepton* - एक यहूदी तांबे का सिक्का जिसका मूल्य 1/128 एक *dēnarius* है (तुलना मरकुस 12:42; लूका 21:2)
   F. *quadrans/farthing* - एक रोमी तांबे का सिक्का जिसका अल्प मूल्य होता है

II. चांदी के सिक्के
   A. *arguros* ("चांदी का सिक्का") - तांबे या कांस्य के सिक्कों की तुलना में बहुत अधिक मूल्यवान (तुलना मत्ती 10:9; 26:15)

B. *dēnarius* - एक रोमी चांदी का सिक्का जिसका मूल्य एक दिन की मजदूरी होता है (तुलना मत्ती 18:28; मरकुस 6:37)
C. *drachmē* - एक यूनानी चांदी का सिक्का जो एक *dēnarius* के मूल्य के बराबर है (तुलना लूका 15: 9)
D. *di-drachmon* - एक दुगना दिद्राख़्मा एक यहूदी ½ *shekel* (तुलना मत्ती 17:43) के बराबर।
E. *statēr* - एक चाँदी का सिक्का, जिसका मूल्य चार *dēnarii* (तुलना मत्ती 17:27) है।

III. सोने के सिक्के - *chrusos* ("सोने के सिक्के") - सबसे मूल्यवान सिक्के (तुलना मत्ती 10:9)

IV. धातुओं के भार के लिए सामान्य शब्द
A. *mnaa* - लातिनी *mnaa*, धातु का वजन जो 100 *dēnarii* (तुलना लूका 19:13) के बराबर है
B. *talanton* - वजन की एक यूनानी इकाई (तुलना मत्ती 18:24; 25:15,16,20,24,25,28)
1. चाँदी 6,000 *dēnarii* के मूल्य के बराबर
2. सोना 180,000 *dēnarii* के मूल्य के बराबर
C. *sheqel* – यहूदी पुराने नियम का चाँदी का वजन (यानी, .4 oz., तुलना उत्पत्ति 23:15; 37:28; निर्गमन 21:32)।
1. *pīm* - 2/3 *sheqel*
2. *beka* - ½ *sheqel*
3. *gerah* - 1/20 *sheqel*
बड़ी इकाइयाँ
1. *maneh* - 50 *sheqels*
2. *kikkar* - 3,000 *sheqels*

6:8-9 "अन्द्रियास, शमौन पतरस का भाई" यह संदर्भ यीशु की क्षमता और व्यक्तित्व में अन्द्रियास के सरल विश्वास और भरोसे का एक सुंदर चित्र है।

6:9 "जौ की रोटियाँ" यह सबसे सस्ती और सबसे कम वांछनीय रोटी मानी जाती थी। यह गरीबों का भोजन थी। महंगा भोजन प्रदान करने के लिए यीशु ने अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं किया!

6:10 "लोगों को बैठा दो" इस संस्कृति के लोग सामान्य रूप से या तो फर्श पर बैठकर या नीची "U" आकार की मेज पर झुककर भोजन करते हैं।

▣ **"उस जगह बहुत घास थी"** यह एक प्रत्यक्षदर्शी प्रेरितिक (संपादकीय) टिप्पणी है।

▣ **"तब लोग जिनमें पुरुषों की संख्या लगभग पाँच हज़ार की थी, बैठ गए"** वास्तव में "पांच हज़ार को खिलाना" एक मिथ्या नाम है क्योंकि जाहिर तौर पर उस दिन वहाँ और भी लोग थे। पाँच हजार एक पूर्णांक आंकड़ा है और वयस्क पुरुषों (यानी, 13 और ऊपर) को संदर्भित करती है और इसमें महिलाएँ और बच्चे शामिल नहीं हैं (तुलना मत्ती 14:21)। हालाँकि, यह अनिश्चित है कि कितनी महिलाओं और बच्चों ने इसमें भाग लिया था (तुलना मत्ती 14:21)।

6:11 "और धन्यवाद करके बाँट दीं" गुणन का चमत्कार यीशु के हाथों में हुआ होगा। यहूदियों की मसीहाई आशा के संदर्भ में यह घटना एक अपेक्षित चिन्ह होगी कि जिस प्रकार मूसा ने मन्ना प्रदान किया वैसे ही यीशु भोजन प्रदान कर रहा था।

"धन्यवाद देना" (*eucharisteō*) के लिए यूनानी शब्द बाद में अंतिम भोज (तुलना 1कुरिन्थियों 11:23-24) के लिए नाम बन गया। क्या यहाँ यूहन्ना ने इसे इस भविष्य की, तकनीकी परिभाषा को ध्यान में रखते हुए प्रयोग किया है? अन्य सुसमाचार, जिनमेँ प्रभुभोज का उल्लेख नहीं हैं, एक अलग शब्द (*eulogeō*, तुलना मत्ती 14:19; मरकुस 6:41) का प्रयोग करते हैं। वे *eucharisteō* शब्द का प्रयोग करते हैं (तुलना मत्ती 15:36; मरकुस 8:6; लूका 17:16; 18:11) लेकिन लगातार एक अंतिम भोज के परिपेक्ष्य में नहीं। वे ऊपरी कक्ष में यीशु की धन्यवाद प्रार्थना का वर्णन करने के लिए इसी शब्द का प्रयोग करते हैं (तुलना मत्ती 26:20 और मरकुस 14:23; और लूका 22:17-19)। इसलिए, चूंकि प्रयोग एक समान नहीं है, इसलिए यूहन्ना को अपने उल्लेख को और अधिक विशिष्ट बनाने की आवश्यकता पड़ती यदि बाद में पाठकों को एक प्रभुभोज के परिपेक्ष्य में इसकी व्याख्या करनी होती!

6:12 "फेंका" विशेष विषय: *Apollumi* 10:10 पर देखें।

6:13 "अतः उन्होंने बटोरा, और बारह टोकरियाँ भरीं" शब्द "टोकरी" यहाँ एक बड़ी डलिया के समान टोकरी को संदर्भित करता है। यह महत्वपूर्ण है कि यीशु ने ज़रा सा भी गुणित भोजन बर्बाद नहीं किया। न ही उसने रोटी की प्रकृति (या प्रकार) को बदला।

क्या "बारह" शब्द का प्रतीकात्मक महत्व है? निश्चित होना कठिन है। इसे इस्राएल की जनजातियों के संदर्भ के रूप में इसकी व्याख्या की गई है (यीशु पुराने नियम को संतुष्ट करता है) या प्रत्येक चेले के लिए एक टोकरी (यीशु अपने चेलों को संतुष्ट और प्रदान करता है), लेकिन यह सिर्फ एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण हो सकता है (जैसे यूहन्ना 6:19) ।

विशेष विषय: संख्या बारह (SPECIAL TOPIC: THE NUMBER TWELVE)

बारह हमेशा संगठन की एक प्रतीकात्मक संख्या रही है (देखें विशेष विषय: पवित्रशास्त्र में प्रतीकात्मक संख्याएँ)

A. बाइबल के अतिरिक्त
   1. राशि चक्र के बारह चिन्ह
   2. वर्ष के बारह महीने
B. पुराने नियम में (BDB 1040 तथा 797)
   1. याकूब के पुत्र (यहूदी गोत्र)
   2. इनमें परिलक्षित
      a. निर्गमन 24:4 में वेदी के बारह खम्भे
      b. निर्गमन 28:21 में महायाजक के सीनाबन्द पर बारह मणि (जो गोत्रों के प्रतीक हैं)
      c. लैव्यव्यवस्था 24:5 में मिलापवाले तम्बू के पवित्र स्थान में बारह रोटियाँ।
      d. गिनती 13 में कनान में भेजे गए बारह भेदिए (प्रत्येक गोत्र में से एक)
      e. गिनती 17:2 में कुरिन्थियोंह के विद्रोह में बारह छड़ियाँ (आदिवासी मानक)
      f. यहोशू 4:3,9,20 में यहोशू के बारह पत्थर
      g. 1 राजाओं 4:7 में सुलैमान के प्रशासन में बारह प्रशासनिक जिले
      h. 1 राजाओं 18:31 में YHWH के लिए एलिय्याह की वेदी के बारह पत्थर
C. नये नियम में
   1. चुने गए बारह प्रेरित
   2. मत्ती 14:20 में रोटियों की बारह टोकरियाँ (प्रत्येक प्रेरित के लिए एक)
   3. मत्ती 19:28 में बारह सिंहासन जिस पर नये नियम के चेले बैठते हैं (इस्राएल के 12 गोत्रों का जिक्र करते हैं)
   4. मत्ती 26:53 में यीशु को बचाने के लिए स्वर्गदूतों की बारह पलटन
   5. प्रकाशितवाक्य का प्रतीकवाद
      a. 4:4 में 24 सिंहासन पर 24 बुजुर्ग
      b. 7:4; 14:1,3 में 144,000 (12x12,000)
      c. 12:1 में स्त्री के मुकुट पर बारह तारे
      d. 21:12 में बारह गोत्रों को दर्शाते हुए बारह द्वार, बारह स्वर्गदूत
      e. 21:14 में नए यरूशलेम के बारह नींव के पत्थर और उन पर बारह प्रेरितों के नाम
      f. 21:16 में बारह हजार स्टेडिया (नए नगर का नाप, नया यरुशलेम)
      g. 21:17 में शहरपनाह 144 हाथ है
      h. 21:21 में मोती के बारह फाटक
      i. 22:2 में नए यरूशलेम में बारह प्रकार के फलों वाले पेड़ (प्रत्येक महीने के लिए एक)

6:14 "भविष्यद्वक्ता" यह व्यवस्थाविवरण 18: 15-22 के मसीहाई संदर्भ के लिए एक संकेत है(तुलना प्रेरितों के काम 3:22; 7:37)। भीड़ ने यीशु की शक्ति को पहचाना लेकिन उसके धेय्य और चिन्हों की प्रकृति को गलत समझा।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:15

[15]यीशु, यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिए पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया।

6:15 भीड़ भोजन प्रदान करने के यीशु के मसीहाई चमत्कार से उत्साहित थी। यह पद मत्ती 4:3 के शैतान की परीक्षा से संबंधित हो सकता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:16-21
[16]जब संध्या हुई, तो उसके चेले झील के किनारे गए, [17]और नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहूम को जाने लगे। उस समय अंधेरा हो गया था, और यीशु अभी तक उनके पास नहीं आया था। [18]आँधी के कारण झील में लहरें उठने लगीं। [19]जब वे खेते खेते तीन- चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्होंने यीशु को झील पर चलते और नाव के निकट आते देखा, और डर गए। [20]परन्तु उसने उनसे कहा, "मैं हूँ; डरो मत।" [21]अतः वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिए तैयार हुए, और तुरंत वह नाव उस स्थान पर जा पहुँची जहाँ वे जा रहे थे।

6:17 "कफरनहूम" उसकी गलील की सेवकाई के दौरान उसके गृहनगर नासरत में अविश्वास के कारण यह यीशु का मुख्यालय था (तुलना लूका 4:28-29)।

6:19 "वे खेते खेते तीन-चार मील के लगभग निकल गए" वे झील के पार लगभग आधे रास्ते पर थे जब यीशु पानी पर चलकर उनके पास आया। मत्ती ने पतरस को पानी पर चलकर उसके पास आता हुए शामिल करके इस वर्णन का विस्तार किया है।

▣ **"वे डर गए"** ये चेले अभी भी सांसारिक मानकों द्वारा यीशु का मूल्यांकन कर रहे थे। मरकुस 6:49 में चेलों का डर व्यक्त किया गया है। इन "चिन्हों" के सामूहिक भार ने उन्हें पुनर्मूल्यांकन करने के लिए मजबूर किया कि वह कौन था।

6:20 "मैं हूँ" यह अक्षरशः (*egō eimi*) "मैं हूँ" (तुलना यूहन्ना 4:26; 8: 24,28,54-59; 13:19; 18:5-6) जो पुराने नियम में निर्गमन 3:12-15 में दिए गए परमेश्वर के वाचा के नाम YHWH को प्रतिबिंबित करता है। यीशु प्रत्यक्ष "मैं हूँ," परमेश्वर का पूर्ण आत्म प्रकटीकरण, परमेश्वर का अवतरित लोगोस (वचन), सच्चा और एकमात्र पुत्र है। आगे विशेष विषय में D देखें।

विशेष विषय: देवता के लिए नाम (SPECIAL TOPIC: THE NAMES FOR DEITY)

A. *El* (BDB 42, KB 48)
   1. ईश्वर के लिए सामान्य प्राचीन शब्द का मूल अर्थ अनिश्चित है, हालांकि कई विद्वानों का मानना है कि यह अक्काडिनी मूल से आता है,"मजबूत होना" या "शक्तिशाली होना" (तुलना उत्पत्ति 17:1; गिनती 23:19; व्यवस्थाविवरण 7:21; भजनसंहिता 50:1)।
   2. कनानी देवगण में *El* उच्च देवता है (Ras Shamra texts), "ईश्वरों का पिता" और "स्वर्ग का परमेश्वर" कहलाता है
   3. बाइबल में, *El* को आमतौर पर अन्य शब्दों के साथ मिश्रित किया गया है। ये संयोजन परमेश्वर का चरित्र चित्रण करने का एक तरीका बन गए।
      a. *El-Elyon* ("परमेश्वर सबसे ऊंचा",BDB 42& 751 II),उत्पत्ति 14:18-22; व्यवस्थाविवरण 32:8; यशायाह 14:14
      b. *El-Roi* ("परमेश्वर जो देखता है" या "परमेश्वर जो स्वयं को प्रकट करता है"BDB 42 & 909), उत्पत्ति 16:13
      c. *El-Shaddai* ("परमेश्वर सर्वशक्तिमान" या "परमेश्वर संपूर्ण करुणा" या "पर्वतों का परमेश्वर" BDB 42 & 994), उत्पत्ति 17:1; 35:11; 43:14; 49:25; निर्गमन 6:3
      d. *El-Olam* ("अनन्तकालीन परमेश्वर," BDB 42 &761), उत्पत्ति 21:33। यह शब्द धर्मशास्त्रीय रूप से दाऊद के साथ परमेश्वर के वायदे से संबंधित है, 2 शमूएल 7:13,16
      e. *El-Berit* ("वाचा का परमेश्वर," BDB 46 & 136), न्यायियों 9:46
   4. *El* को समान माना गया है
      a. YHWH गिनती 23:8; भजनसंहिता 16:1-2; 85:8; यशायाह 42:5 में

b. *Elohim* उत्पत्ति 46:3; अय्यूब 5:8 में, "मैं *El*, तुम्हारे पिता का *Elohim* हूँ"
c. *Shaddai* उत्पत्ति 49:25; गिनती 24:4,16 में
d. "ईर्ष्या" निर्गमन 34:14; व्यवस्थाविवरण 4:24; 5:9; 6:15 में
e. "करुणा" व्यवस्थाविवरण 4:31; नहेम्याह 9:31; में
f. "महान और अदभुत"व्यवस्थाविवरण 7:21; 10:17; नहेम्याह 1:5; 9:32; दानिय्यल 9:4 में
g. "ज्ञान" 1 शमूएल 2:3 में
h. "मेरा मजबूत आश्रय" 2 शमूएल 22:33 में
i. "मेरा बदला लेने वाला" 2 शमूएल 22:48 में
j. "पवित्र" यशायाह 5:16 में
k. "पराक्रम" यशायाह 10:21में
l. "मेरा उद्धार" यशायाह 12:2 में
m. "महान और पराक्रमी" यिर्मयाह 32:18 में
n. "बदला" यिर्मयाह 51:56 में

5. परमेश्वर के लिए सभी प्रमुख पुराने नियम के नामों का एक संयोजन यहोशू 22:22 (*El, Elohim, YHWH*, श्रृंखला दोहराई गई) में पाया जाता है।

B. *Elyon* (BDB 751, KB 832)

1. इसका मूल अर्थ है "उच्च", "गौरवान्वित" या "आल्हादित" (तुलना उत्पत्ति 40:17; 1 राजा 9:8; 2 राजा 18:17; नहेम्याह 3:25; यिर्मयाह 20:2; 36:10; भजनसंहिता 18:13)।
2. यह परमेश्वर के कई अन्य नामों / शीर्षकों के समानांतर अर्थ में प्रयोग किया जाता है।
   a. *Elohim* - भजनसंहिता 47: 1-2; 73:11; 107:11
   b. *YHWH* - उत्पत्ति 14:22; 2 शमूएल 22:14
   c. *El-Shaddai* – भजनसंहिता 91:1,9
   d. *El* - गिनती 24:16
   e. *Elah* - दानिय्येल 2-6 और एज्रा 4-7 में अक्सर इस्तेमाल किया जाता है, दानिय्येल 3:26; 4:2; 5:18,21 में illair ("अधि देवता" के लिए अरामी शब्द) से जुड़ा हुआ है।
3. इसका उपयोग अक्सर गैर-इस्राएलियों द्वारा किया जाता है।
   a. मलिकिसिदक, उत्पत्ति 14:18-22
   b. बालाम, गिनती 24:16
   c. मूसा, व्यवस्थाविवरण 32:8 में राष्ट्रों की बात कर रहा है।
   d. नए नियम में लूका का सुसमाचार, अन्यजातियों को लिखते हुए, यूनानी समतुल्य *Hupsistos* का भी उपयोग करता है। (तुलना 1: 32,35,76; 6:35; 8:28; प्रेरितों के काम 7:48; 16:17)

C. *Elohim* (बहुवचन), *Eloah* (एकवचन), मुख्य रूप से कविता में प्रयुक्त(BDB 43, KB 52)

1. यह शब्द पुराने नियम के बाहर नहीं पाया जाता है।
2. यह शब्द इस्राएल के परमेश्वर या राष्ट्रों के देवों को नामित कर सकता है (तुलना निर्गमन 3:6; 20:3)। अब्राहम का परिवार बहुदेववादी था (तुलना यहोशू 24:2)।
3. यह इस्राएली न्यायाधीशों का उल्लेख कर सकता है (तुलना निर्गमन 21:6; भजनसंहिता 82:6)
4. *Elohim* शब्द का प्रयोग अन्य आध्यात्मिक प्राणियों (देवदूत, राक्षसी) के लिए भी किया जाता है। व्यवस्थाविवरण 32:8 (LXX); भजनसंहिता 8:5; अय्यूब 1:6; 38:7।
5. बाइबल में यह देवता के लिए पहला शीर्षक/नाम है (तुलना उत्पत्ति 1:1)। यह विशेष रूप से उत्पत्ति 2:4 तक प्रयोग किया गया है, जहाँ यह YHWH के साथ संयुक्त होता है। यह मूल रूप से (धर्मशास्त्रीय रूप से) परमेश्वर को इस ग्रह पर सारे जीवन के निर्माता, निर्वाहक और पोषणकर्ता के रूप में दर्शाता है (तुलना भजनसंहिता 104)।

यह *El* का पर्यायवाची है (तुलना व्यवस्थाविवरण 32:15-19)। भजनसंहिता 14 (*Elohim,* vv. 1,2,5; YHWH, vv. 2,6; और Adon, v. 4) के समान यह YHWH का समानांतर भी हो सकता है।

6. यद्यपि यह एक बहुवचन और अन्य देवता के लिए उपयोग किया जाता है, यह शब्द अक्सर इस्राएल के परमेश्वर को नामित करता है, लेकिन आमतौर पर एकेश्वरवादी उपयोग को निरूपित करने के लिए इसमें एकवचन क्रिया है(विशेष विषय: एकेश्वरवाद देखें)
7. यह अजीब है कि इस्राएल के एकेश्वरवादी परमेश्वर के लिए एक आम नाम बहुवचन है (उत्त्पति 1:26; 3:22; 11:7 में "हम" पर ध्यान दें)! हालांकि कोई निश्चितता नहीं है, यहाँ सिद्धांत प्रस्तुत हैं।
   a. इब्रानी में कई बहुवचन हैं, जिन्हें अक्सर जोर देने के लिए उपयोग किया जाता है। इससे निकटता से संबंधित बाद की इब्रानी व्याकरण संबंधी विशेषता जिसे "महिमा का बहुवचन" कहा जाता है, जहाँ बहुवचन का उपयोग एक अवधारणा को बढ़ा-चढ़ा कर बताने के लिए किया जाता है।
   b. यह स्वर्गदूतों की महासभा का उल्लेख कर सकता है, जिसे परमेश्वर स्वर्ग में मिलता है और उसकी आज्ञा देता है। (तुलना 1 राजा 22:19-23; अय्यूब 1:6; भजनसंहिता 82:1; 89:5,7)।
   c. यह भी संभव है कि यह तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर के नए नियम के प्रकटीकरण को दर्शाता है। उत्पत्ति 1:1 में परमेश्वर सृष्टि करता है; उत्पत्ति 1:2 में आत्मा चिंतित होकर सोचता है और नए नियम से यीशु है, सृष्टि में पिता परमेश्वर का प्रतिनिधि (तुलना यूहन्ना 1: 3,10; रोमियों 11:36; 1कुरिन्थियों 8:6; कुलुसियों 1:15; इब्रानियों 1:2; 2:10)

D. YHWH (BDB 217, KB 394)

1. यह वह नाम है जो देवता को वाचा बनाने वाले परमेश्वर के रूप में दर्शाता है; परमेश्वर उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता के रूप में! मनुष्य वाचा तोड़ते हैं, परंतु परमेश्वर अपने वचन, वादे,वाचा के प्रति निष्ठावान है (तुलना भजन 103)।

   यह नाम सर्वप्रथम उत्पत्ति 2:4 में *Elohim* के साथ संयोजन में वर्णित है। उत्पत्ति 1-2 में दो सृजन विवरण नहीं हैं, लेकिन दो अवधारणाएं हैं:
   a. परमेश्वर ब्रह्मांड के सृष्टिकर्त्ता के रूप में (भौतिक; भजनसंहिता 104)
   b. परमेश्वर मानवता के विशेष निर्माता के रूप में(भजनसंहिता 103)

   उत्पत्ति 2:4-3:24 मानव जाति के विशेषाधिकृत स्थान और उद्देश्य के बारे में विशेष प्रकटीकरण शुरू करता है, साथ ही साथ पाप और विद्रोह की समस्या अद्वितीय स्थिति से जुड़ी है।
2. उत्पत्ति 4:26 में कहा गया है कि "*लोग* यहोवा से प्रार्थना करने लगे" (YHWH)। हालाँकि, निर्गमन 6: 3 का तात्पर्य है कि प्रारंभिक वाचा के लोग (पितृसत्तात्मक लोग और उनके परिवार)। परमेश्वर को केवल *El-Shaddai* के नाम से जानते थे। नाम YHWH निर्गमन 3:13-16, विशेष रूप से वचन 14 में केवल एक बार समझाया गया है। हालाँकि, मूसा के लेखन में अक्सर शब्दों की व्याख्या लोकप्रिय शब्द क्रीड़ा से होती है, शब्द व्युत्पत्तियों से नहीं (तुलना उत्पत्ति 17:5; 27:36; 29:13-35)। इस नाम के अर्थ के लिए कई सिद्धांत रहे हैं (IDB, vol. 2, pp. 409-11 से लिया गया)।
   a. एक अरबी मूल से, "उत्कट प्रेम दिखाने के लिए"
   b. एक अरबी मूल से "उड़ाने के लिए" (YHWH तूफान के परमेश्वर के रूप में)
   c. युगैरिटिक (कनानी) मूल से "बोलने के लिए"
   d. फिनिसियाई शिलालेख के बाद, एक कारणवाचक कृदंत,जिसका अर्थ है, "वह जो निर्वाह करता है", या "वह जो स्थापित करता है"
   e. इब्रानी के *Qal* रूप से "वह जो है", या "वह जो उपस्थित है" (भविष्यकाल के अर्थ में "वह जो होगा")
   f. इब्रानी के *Hiphil* रूप से "वह जो होने देता है"
   g. इब्रानी मूल से "जीने के लिए" (उदाहरण उत्पत्ति 3:21), जिसका अर्थ है "सदैव जीवित, एकमात्र जीवित"
   h. निर्गमन 3:13-16 के संदर्भ से अपूर्ण रूप का प्रयोग एक पूर्ण अर्थ में हुआ है, "मैं वही रहूंगा जो मैं था" या "मैं वही बना रहूंगा जो मैं हमेशा से रहा हूँ (cf. J. Wash Watts, *A Survey of Syntax in the Old Testament*, p. 67)

   पूरा नाम YHWH अक्सर संक्षिप्त रूप में या संभवतः एक मूल रूप में व्यक्त किया जाता है।

(1) *Yah* (उदा., Hallelu -yah, BDB 219, तुलना निर्गमन 15:2; 17:16;भजनसंहिता 89:8; 104:35)
(2) *Yahu* (" iah" नामों के अंत, उदाहरण यशायाह)
(3) *Yo* ("Jo" नामों का आरंभ, उदाहरण यहोशू या योएल)

3. बाद के यहूदी धर्म में यह वाचा नाम इतना पवित्र (चतुराक्षर) हो गया कि यहूदी इसे कहने से डरते थे कि ऐसा न हो कि वे निर्गमन 20:7; व्यवस्थाविवरण 5:11; 6:13 की आज्ञा तोड़ दें। इसलिए उन्होंने "मालिक," "स्वामी," "पति," "प्रभु" से--- इब्रानी शब्द *adon* या *adonai* (मेरे प्रभु) को प्रतिस्थापित किया। जब वे अपने पुराने नियम के पाठ के पढ़ने में YHWH पर आए तो उन्होंने"प्रभु" उच्चारण किया। यही कारण है कि अंग्रेजी अनुवादों में YHWH को यहोवा लिखा गया है।
4. जैसा *El* के साथ, अक्सर YHWH को अन्य शब्दों के साथ जोड़कर इस्राएल के वाचा के परमेश्वर की कुछ विशेषताओं पर जोर दिया जाता है। कई संभव संयोजक शब्दों में से, यहाँ कुछ हैं।
   a. YHWH - *Yireh* (YHWH उपाय करेगा,BDB 217 & 906), उत्पत्ति 22:14.
   b. YHWH - *Rophekha* (YHWH आपका चंगा करने वाला है, BDB 217 & 950, *Qal* कृदंत), निर्गमन 15:26
   c. YHWH - *Nissi* (YHWH सहाय है, BDB 217 & 651), निर्गमन 17:15
   d. YHWH - *Meqaddishkem* (YHWH वह जो आपको पवित्र करता है, BDB 217 & 872, Piel कृदंत), निर्गमन 31:13
   e. YHWH - *Shalom* (YHWH शांति है, BDB 217 & 1022), न्यायियों 6:24
   f. YHWH – *Sabbaoth* (सेनाओं का YHWH, BDB 217 & 878), 1 शमूएल 1:3, 11; 4:4; 15:2; भविष्यवक्ताओं में अक्सर)
   g. YHWH – *Ro'I* (YHWH मेरा चरवाहा है, BDB 217 & 944, *Qal* कृदंत), भजनसंहिता 23:1
   h. YHWH - *Sidqenu* (YHWH हमारी धार्मिकता है, BDB 217 & 841), यिर्मयाह 23:6
   i. YHWH - *Shammah* (YHWH यहाँ है, BDB 217 &1027), यहेजकेल 48:35

6:21 "तुरंत वह नाव उस स्थान पर जा पहुँची, जहाँ वे जा रहे थे" जाहिर तौर पर यह एक और चमत्कारी घटना थी (तुलना यूहन्ना 22-25) क्योंकि मरकुस के सुसमाचार से संकेत मिलता है कि वे झील के आर लगभग आधा रास्ता पार कर चुके थे (तुलना मरकुस 6:47) हालाँकि यह अन्य सुसमाचारों (अर्थात, मत्ती 14:32 या मरकुस 6:51) में इसका उल्लेख नहीं है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:22-25
[22]दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी थी, यह देखा कि यहाँ एक को छोड़ और कोई नाव न थी; और यीशु अपने चेलों के साथ उस नाव पर नहीं चढ़ा था, परन्तु केवल उसके चेले ही गए थे। [23]तब अन्य नावें तिबिरियास से उस जगह के निकट आईं, जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई थी। [24]इसलिये जब भीड़ ने देखा कि यहाँ न यीशु है और न उसके चेले, तो वे भी नावों पर चढ़ के यीशु को ढूँढते हुए कफरनहूम पहुँचे। [25]झील के पार जब वे उससे मिले तो कहा, "हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?"

6:23 "तिबिरियास" इस शहर को 22 ई. में हेरोदेस अन्तिपास द्वारा बनाया गया था और उसकी राजधानी बन गया।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:26-34
[26]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूँढते हो कि तुम ने आश्चर्यकर्म देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए। [27]नाशवान भोजन के लिए परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिए, जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा; क्योंकि पिता अर्थात परमेश्वर ने उसी पर छाप लगाई है। [28]उन्होंने उससे कहा, "परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें?" [29]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, " परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो।" [30]तब उन्होंने उससे कहा, " फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है, कि हम उसे देखकर तेरा विश्वास करें?तू कौन सा काम दिखाता है? [31]हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है, 'उसने उन्हें खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी।" [32]यीशु ने उनसे कहा,"मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। [33]क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।" [34]तब उन्होंने उससे कहा,"हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर। "

6:26,32,53 "मैं तुम से सच सच कहता हूँ" "आमीन," "आमीन।" यह एक इब्रानी वाक्यांश है जिसमें तीन विशिष्ट प्रयोग हैं।

1. पुराने नियम में इस शब्द का प्रयोग "विश्वास" के लिए किया गया है। इसका लाक्षणिक अर्थ "दृढ़ होना" था और YHWH में अपने विश्वास का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त होता था।
2. यीशु का प्रयोग विशिष्ट और महत्वपूर्ण कथनों की शुरूआत को दर्शाता है। हमारे पास इस तरह से "आमीन" का कोई अन्य समकालीन प्रयोग नहीं है।
3. प्रारंभिक कलीसिया में, पुराने नियम की तरह, यह पुष्टिकरण अथवा सहमति का शब्द बन गया।

विशेष विषय: आमीन यूहन्ना 1:51 पर देखें।

▣ **"तुम रोटियाँ खाकर"** उनके मकसद शारीरिक और तात्कालिक थे, आध्यात्मिक और धार्मिक नहीं।

▣ **"और तृप्त हुए"** इस पद का अर्थ था "कण्ठ तक भरना" यह अक्सर जानवरों (विशेष रूप से गायों) के लिए उपयोग किया जाता था।

6:27 "परिश्रम न करो" यह नकारात्मक प्रत्यय के साथ एक वर्तमान मध्यम आज्ञार्थक है जिसका सामान्य रूप से अर्थ पहले से ही चल रहे एक कार्य को रोकने से है। इस अवतरण की पुराने नियम की पृष्ठभूमि यशायाह 5 है। इस वार्तालाप की यूहन्ना 4 में कुँए पर स्त्री के साथ वार्तालाप से कई समानताएँ हैं।

▣ **"नाशवान"** विशेष विषय: *Apollumi* यूहन्ना 10: 10 पर देखें।

▣ **"छाप लगाई है"** यह अक्षरशः "मुहरबंद" है। यह प्रामाणिकता, स्वामित्व, अधिकार और सुरक्षा का संकेत था (तुलना NEB और मत्ती 28:18; यूहन्ना 17:2)। TEV और NIV इसे "अनुमोदन" के रूप में अनुवादित करते हैं क्योंकि इसका प्रयोग पिता परमेश्वर के यीशु की सेवकाई को स्वीकृति देने का दावा करने के लिए किया जाता है। विशेष विषय: छाप यूहन्ना 3:33 पर देखें, जहाँ यह पवित्र आत्मा को संदर्भित कर सकता है।

6:28 "परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें" यह पहली सदी के यहूदी धर्म का केंद्रीय धार्मिक प्रश्न था (तुलना लूका 18:18)। धार्मिक यहूदी को परमेश्वर के साथ इस आधार पर सही माना जाता था (1) उसके वंश और (2) मूसा के कानून का उसका पालन जैसी कि मौखिक परंपरा (तल्मूड) द्वारा व्याख्या की गई थी।

6:29 "कि तुम उस पर जिसे उसने भेजा है, विश्वास करो" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक के बाद अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। शब्द "विश्वास" उद्धार के बारे में नये नियम की शिक्षाओं को समझने में महत्वपूर्ण है। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें। शब्द का प्राथमिक उन्मुखीकरण स्वेच्छिक विश्वास था। यूनानी शब्द समूह *pistis* का अनुवाद "विश्वास," "भरोसा" या "आस्था" के रूप में किया जा सकता है। मानवीय विश्वास का केंद्र-बिंदु "उसी में" होना चाहिए (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16), न कि मानवीय ईमानदारी, प्रतिबद्धता और न ही उत्साह में। इस अवतरण का तत्काल उन्मुखीकरण यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत संबंध है, न कि उसके बारे में रूढ़िवादी धर्मशास्त्र, अपेक्षित धार्मिक अनुष्ठान और न ही नैतिक जीवन। ये सभी बातें सहायक हैं, लेकिन प्राथमिक नहीं। ध्यान दें कि यीशु ने उनके प्रश्न के बहुवचन "कार्यों" को एकवचन "कार्य" में बदल दिया।

"भेजा" के लिए यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना (*Apostellō*) देखें।

6:30-33 यह याद रखना चाहिए कि इस समूह ने अभी-अभी पाँच हज़ार को चमत्कारिक भोजन कराने में भाग लिया था। उन्हें पहले से ही उनका चिन्ह मिल गया था! रब्बियों के यहूदीवाद ने सोचा कि मसीहा पुराने नियम के कुछ कृत्यों को दोहराएगा, जैसे कि मन्ना भेजना (तुलना II बारूक 29:8)। रब्बियों ने मसीहा के "महान-मूसा" प्रकार के इस दृष्टिकोण के लिए भजनसंहिता 72:16 का एक प्रमाण-पाठ के रूप में प्रयोग किया। (तुलना कुरिन्थियों 1:22)।

यूहन्ना 6:29 के "उस पर विश्वास" और यूहन्ना 6:30 के "तेरा विश्वास" के बीच एक महत्वपूर्ण व्याकरणिक विशेषता है। पहला यूहन्ना के यीशु में / पर विश्वास करने की सामान्य रचना पर केंद्रित है। यह एक व्यक्तिगत मुद्दा है। दूसरा यीशु के शब्दों या दावों पर विश्वास करने पर केंद्रित है जो एक विषय वस्तु का मुद्दा है। याद रखें, सुसमाचार एक व्यक्ति और एक संदेश दोनों है। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

6:31 "जैसा लिखा है" यह एक वर्णनात्मक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है। यह पुराने नियम से पवित्रशास्त्र के उद्धरण पेश करने के लिए मानक व्याकरणिक रूप था। यह पुराने नियम की प्रेरणा और अधिकार की पुष्टि करने वाला एक मुहावरा था। यह उद्धरण पुराने नियम के पाठों में से एक या एक संयोजन को संदर्भित कर सकता है: भजनसंहिता 8:24; 105: 40; निर्गमन 16:4,15, या नहेम्याह 9:15।

6:32 यीशु यहूदियों के पारंपरिक धर्मशास्त्र को संबोधित करता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि व्यवस्थाविवरण 18:15,18 की वजह से मसीह को मूसा की तरह आश्चर्यचकारक काम करने चाहिए। यीशु ने कई बिंदुओं पर उनकी धारणा को सुधारा।

1. परमेश्वर ने मन्ना को दिया, मूसा ने नहीं।
2. मन्ना स्वर्गीय मूल का नहीं था, हालांकि लोगों को लगा कि वह था (तुलना भजनसंहिता 78: 23-25)
3. स्वर्ग की सच्ची रोटी यीशु था, जो अतीत का कार्य नहीं था, लेकिन एक वर्तमान वास्तविकता था।

6:33 "वही है जो स्वर्ग से उतरती है" यह यूहन्ना में एक आवर्तक विषय है (तुलना यूहन्ना 3:13)। यह यूहन्ना का ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद है। इस संदर्भ में यीशु का वंश सात बार बताया गया है (तुलना यूहन्ना 6:33,38,41,42,50,51,58)। यह यीशु के पूर्व-अस्तित्व, दिव्य उत्पत्ति (तुलना यूहन्ना 6: 33,38,41,42,50,51,58, और 62) को दर्शाता है। यह एक क्रीड़ा है "मन्ना" पर जो स्वर्ग से आया था जैसा कि यीशु सच्ची रोटी, जीवन की रोटी।

यह अक्षरशः है "परमेश्वर की रोटी वही है जो स्वर्ग से उतरती है।" यहाँ पुल्लिंग वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत (1) "रोटी" या (2) एक मनुष्य, यीशु को संदर्भित करता है। यूहन्ना में अक्सर ये अस्पष्टताएँ उद्देश्यपूर्ण होती हैं (द्विअर्थी)।

▣ **"जगत को जीवन देती है"** यह वह उद्देश्य है जिसके लिए यीशु आया था (तुलना यूहन्ना 3:16; मरकुस 10:19; 2 कुरिंथियों 5:21)। लक्ष्य है "नया जीवन," "अनन्त जीवन," "नये युग का जीवन," "परमेश्वर का जीवन" एक खोये हुए और विद्रोही जगत के लिए, न कि कुछ विशेष समूह (यहूदी / अन्यजातियों, चयनित / गैर-चयनित, रूढ़िवादी/ उदार), लेकिन सब के लिए!

6:34
NASB, NKJV "प्रभु"
NRSV, TEV,
NJB, NET,
NIV, REB "श्रीमान"

ये दोनों ही शब्द *kurios* के अलग-अलग अर्थ-संबंधी प्रयोगों को दर्शाते हैं। इस संदर्भ में दूसरा विकल्प सबसे अच्छा लगता है। भीड़ ने यीशु या उसके शब्दों को नहीं समझा। उन्होंने उसे मसीहा के रूप में अनुभव नहीं किया (4:11; 5:7 पर भी ध्यान दें)।

▣ **"यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर"** यह यूहन्ना 4:15 कुँए पर स्त्री के कथन के समान है। इन यहूदियों ने यीशु के आत्मिक रूपकों को भी नहीं समझा। यह यूहन्ना में एक आवर्ती विषय है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:35-40
35यीशु ने उनसे कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर
विश्वास करता है वह कभी प्यासा न होगा। 36परन्तु मैं ने तुम से कहा था कि तुम ने मुझे देख भी लिया है, तौभी भी
विश्वास नहीं करते। 37जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा,और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं
कभी न निकालूँगा। 38क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से
नीचे उतरा हूँ; 39और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ,
परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ। 40क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस
पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।"

6:35 "जीवन की रोटी मैं हूँ" यह "मैं हूँ" कथनों में से एक है जो यूहन्ना में इतना विशेष है (तुलना यूहन्ना 6:35,41,48,51; 8:12; 10: 7,9,11,14; 11:25; 14:6; 15:1,5)। यूहन्ना का सुसमाचार मसीह के व्यक्तित्व पर केंद्रित है। यह मन्ना और नए कानून देने वाले के जो एक नया निर्गमन (पाप से) लाएगा बारे में यहूदियों की मसीहाई उम्मीदों से संबंधित है। यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी प्यासा न होगा"** ये यूनानी में दो प्रबल दोहरे नकारात्मक हैं, "नहीं होगा कभी नहीं " (यूहन्ना 6:37)।

"आए" और "विश्वास" के बीच एक समानान्तर संबंध है (तुलना यूहन्ना 7:37-38, "देखता है" और "सुनता है" के समान)। वे दोनों वर्तमान कृदंत हैं। विश्वासियों का आना और विश्वास करना एक बार का निर्णय नहीं है, बल्कि सहभागिता, मित्रता और अनुसरण करने की जीवनशैली की शुरुआत है।

▣ **"भूखा. . .प्यासा"** भूख और प्यास का इस्तेमाल अक्सर आत्मिक वास्तविकता का वर्णन करने के लिए किया जाता था (तुलना भजन 42:1; यशायाह 55:1; आमोस 8:11-12; मत्ती 5:6)।

6:36 "तुम ने मुझे देख भी लिया है" कुछ प्राचीन गवाह (MSS א, A, और कई पुराने लातिनी , वुल्गेट और सीरियाई संस्करण) "मुझे" को हटा कर, "यीशु के कथन को उसके चिन्हों (यानी, भीड़ को खिलाने) के लिए संदर्भित करते हैं" । सर्वनाम इतनी सारी यूनानी पांडुलिपियों और संस्करणों में शामिल है कि UBS[4] तय नहीं कर सका कि मूलरूप कौन सा था।

6:37 "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा" इस अवतरण का प्राथमिक भार परमेश्वर की सार्वभौमिकता पर है। इस आध्यात्मिक सत्य पर दो निश्चित अवतरण हैं रोमियों 9 और इफिसियों 1:3-14। यह दिलचस्प है कि दोनों संदर्भों में मानव जाति की प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। रोमियों 10 में सात समावेशी वाक्यांश हैं। इफिसियों 2 में भी यही बात है, जहाँ यूहन्ना 6:1-7 में परमेश्वर के अनुग्रह की चर्चा यूहन्ना 6:8,9 में विश्वास के लिए बुलाहट को लाती है। पूर्वनियती छुड़ाए जाने के लिए एक सिद्धांत है, न कि किसी पापी के लिए रुकावट। इस सिद्धांत को खोलने की कुंजी परमेश्वर का प्रेम और अनुग्रह है, न कि अनंत आज्ञा। ध्यान दें कि परमेश्वर जो कोई यीशु को देता है,वह उसके पास भी "आता" है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (तुलना यूहन्ना 6:44,65), लेकिन मनुष्यों को प्रत्युत्तर देना चाहिए (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16)। यूहन्ना 3:16 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा"** यह एक और प्रबल दोहरा नकारात्मक है। यह इस सत्य पर जोर देता है कि परमेश्वर यीशु मसीह के माध्यम से सभी को बुलाता और उनका स्वागत करता है (तुलना यहेजकेल 18:21-23; 30-32; 1 तीमुथियुस 2: 4; 2 पतरस 3:9)। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (तुलना यूहन्ना 6:44,65), लेकिन मनुष्यों को प्रत्युत्तर देना चाहिए (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 3:16,19; 20:21)। सुरक्षा पर कितना अद्भुत अवतरण है (तुलना रोमियों 8:31-39)!

विशेष विषय: मसीही आश्वासन (SPECIAL TOPIC: CHRISTIAN ASSURANCE)

आश्वासन (1) एक बाइबल का सत्य, (2) एक विश्वासी का विश्वास अनुभव, और (3) और जीवन शैली प्रमाण है।

A. आश्वासन का बाइबल आधार है
   1. परमपिता परमेश्वर का चरित्र और उद्देश्य
      a. निर्गमन 34: 6-7 (विशेष विषय: इस्राएल के परमेश्वर की विशेषताएँ देखें)
      b. नहेम्याह 9:17
      c. यूहन्ना 3:6; 10:28-29 (विशेष विषय: YHWH की अनन्त छुटकारे की योजना देखें)
      d. रोमियों 8:38-39
      e. इफिसियों 1:3-14; 2:5,8-9
      f. फिलिप्पियों 1:6
      g. 2 तीमुथियुस 1:12
      h. 1 पतरस 1:3-5
   2. परमेश्वर पुत्र का कार्य
      a. उसकी याजकीय प्रार्थना, यूहन्ना 17:9-24, विशेष रूप से पद 12; इब्रानियों 7-9
      b. उसका प्रतिस्थापित बलिदान (तुलना यशायाह 52:13-53:12)
         1) मरकुस 10:45
         2) 2 कुरिन्थियों 5:21
         3) 1 यूहन्ना 2:2; 4:9-10
      c. उसकी निरंतर मध्यस्थता
         1) रोमियों 8:34
         2) इब्रानियों 7:25
         3) 1 यूहन्ना 2:1
   3. परमेश्वर की आत्मा द्वारा सक्षम बनाना
      a. उसकी बुलाहट, यूहन्ना 6:44,65
      b. उसकी छाप लगना

1) 2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5
2) इफिसियों 1:13-14; 4:30

c. उसका व्यक्तिगत आश्वासन
1) रोमियों 8:16-17
2) 1 यूहन्ना 5:7-13

B. विश्वासी की वाचा की आवश्यक प्रतिक्रिया है (विशेष विषय: वाचा देखें)
1. प्रारंभिक और निरंतर पश्चाताप और विश्वास (विशेष विषय: "विश्वास करने," "ग्रहण करने," "कबूल करने / दावा करने," और "बुलाने" का क्या अर्थ है?)
a. मरकुस 1:15
b. यूहन्ना 1:12
c. प्रेरितों के काम 3:16; 20:21
d. रोमियों 10:9-13
2. यह स्मरण रखना कि उद्धार का लक्ष्य मसीह के समान होना है
a. रोमियों 8:28-29
b. 2 कुरिन्थियों 3:18
c. गलातियों 4:19
d. इफिसियों 1:4; 2:10; 4:13
e. 1 थिस्सलुनीकियों
f. 2 थिस्सलुनीकियों 3:13; 4:3; 5:23
g. तीतुस 2:14
h. 1 पतरस 1:15
3. यह याद रखना कि जीवनशैली द्वारा आश्वासन की पुष्टि होती है
a. याकूब
b. 1 यूहन्ना
4. यह याद रखना कि सक्रिय विश्वास और धीरज से आश्वासन की पुष्टि होती है (विशेष विषय: धीरज) देखें)
a. मरकुस 13:13
b. 1 कुरिन्थियों 15:2
c. इब्रानियों 3:14; 4:14
d. 2 पतरस 1:10
e. यहूदा 1:20-21

6:38 "मैं स्वर्ग से उतरा हूँ" यह एक पूर्ण काल है जो अवतार को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 1:1ff; इफिसियों 4:8-10), और इसका प्रभाव बना रहता है। यह यीशु की स्वर्गीय उत्पत्ति को भी दर्शाता है (तुलना पद 41,62)।

▣ **"मैं अपनी इच्छा नहीं वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए"** नये नियम ने त्रिएकत्व की एकता (यूहन्ना 14:26 पर विशेष विषय देखें), उदाहरण 14:8-9 और तीन व्यक्तियों के व्यक्तित्व का दावा किया है । यह पद यूहन्ना के पिता के प्रति यीशु की विनम्रता पर चल रहे जोर का हिस्सा है। यूहन्ना 5:19 पर पूर्ण टिप्पणी देखें। यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना (*Apostellō*) देखें।

6:39 "कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ" यूहन्ना 6:37 के नपुंसक लिंग एकवचन और यूहन्ना 6:39 के नपुंसक लिंग एकवचन के बीच एक स्पष्ट संबंध है। यूहन्ना कई बार इस असामान्य रूप का प्रयोग करता है (तुलना यूहन्ना 17:2,24)। यह स्पष्ट रूप से सामूहिक समस्त पर जोर देता है (तुलना यूहन्ना 6:40,45)।

यह परमेश्वर की संभाले रखने की शक्ति का एक बड़ा वादा है, जो मसीही आश्वासन का एक स्रोत है (तुलना यूहन्ना 10:28-29; 17: 2,24, 1 यूहन्ना 5:13 पर विशेष विषय देखें)। ध्यान दें कि यूहन्ना 6:37 का क्रिया काल वर्तमान काल है, जबकि यूहन्ना 6:39 में यह पूर्ण काल है। परमेश्वर का वरदान बना रहता है! इसके अलावा यूहन्ना 6:39 की अंतिम दो पुष्टियाँ दोनों अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य हैं; यीशु, जो पिता ने उसे दिया है कुछ नहीं खोता है (यूहन्ना 6:37 और 39) और जो उसे दिए गए हैं उन्हें वह अंतिम दिन जिला उठाता है (तुलना यूहन्ना 6:44)। यहाँ (1) चुनाव और (2) दृढ़ता के दिव्य वादे हैं!

समाप्ति के दिन की अवधारणा (सकारात्मक और नकारात्मक दोनों) को कई शीर्षकों से बुलाया जाता है।

1. अंतिम दिन, यूहन्ना 6: 39,40,44,54; 11:24; 12:48; 2 तीमुथियुस 3:1; 1 पतरस 1:5; 2 पतरस 3:3
2. अंतिम समय, 1 यूहन्ना 2:18; यहूदा 1:18
3. उस दिन, मत्ती 7:22; 2 तीमुथियुस 1:12,18; 4:8
4. एक दिन, प्रेरितों के काम 17:31
5. भीषण दिन, यहूदा 1:6
6. वह दिन, लूका 17:30; 1 कुरिन्थियों 3:13, 1 थिस्सलुनीकियों 5:4; इब्रानियों 10:25
7. अपने दिन, लूका 17:24
8. प्रभु का दिन, 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:2
9. मसीह का दिन फिलिप्पियों 1:10; 2:16
10. प्रभु यीशु मसीह का दिन, 1 कुरिन्थियों 1:8; 5:5
11. प्रभु यीशु का दिन, 2 कुरिंथियों 1:14
12. यीशु मसीह का दिन, फिलिप्पियों 1:6
13. मनुष्य के पुत्र का दिन, लूका 17:24 (#7 भी देखें)
14. न्याय का दिन, मत्ती 10:15; 11: 22,24; 12:36; 2 पतरस 2:9; 3:7, 1 यूहन्ना 4:17
15. प्रकोप का दिन, प्रकाशितवाक्य 6:17
16. परमेश्वर का बड़ा दिन - प्रकाशितवाक्य 16:14

▣ **"उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ"** यह विश्वासियों के लिए पुनरुत्थान दिन को लेकिन अविश्वासियों के लिए न्याय के दिन को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 6:40,44,54; 5:25,28; 11:24 और 1 कुरिंथियों 15)। फ्रैंक स्टैग ने अपनी *A New Testament Theology* में इस बिंदु पर एक सहायक कथन दिया है:

"यूहन्ना का सुसमाचार भविष्य में आगमन के बारे में दृढ़ है (14:3,18 f., 28; 16; 16,22) और यह स्पष्ट रूप से 'अंतिम दिन में' पुनरुत्थान और अंतिम न्याय के बारे में बोलता है (5:28 f., 6:39 f., 44,54; 11:24; 12:48), इस चौथे सुसमाचार में शुरू से अंत तक, अनन्त जीवन, न्याय और पुनरुत्थान वर्तमान वास्तविकताएँ हैं (3:18 f.; 4:23; 5:25; 6:54; 11:23 ff.; 12:28,31; 13:31 f.; 14:17; 17:26)" (p. 311)।

6:40 "मेरे पिता की इच्छा यह है" यह यीशु का यूहन्ना 6:28 के प्रश्न का उत्तर है, "परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें?" विशेष विषय: परमेश्वर की इच्छा यूहन्ना 4:34 पर देखें।

▣ **"कि जो कोई पुत्र को देखे"** "देखना" और "विश्वास करना" के वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत समानांतर हैं (जैसे यूहन्ना 6:35 में "आता है" और "विश्वास करता है", जैसे "देखता है" और "सुनता है")। ये निरंतर चल रही क्रियाएँ हैं, एक बार की घटना नहीं। शब्द "देखना" का अर्थ किसी पर "जानबूझकर टकटकी लगाना" है, ताकि उसे समझा या जाना जा सके।

मुझे निश्चित रूप से शब्द "जो कोई" पसंद है (*pas*), ध्यान दें

1. ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ, यूहन्ना 1: 7
2. हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, यूहन्ना 1:9
3. जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए, यूहन्ना 3:15
4. ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए, यूहन्ना 3:16
5. सब पुत्र का भी आदर करें, यूहन्ना 5:23

6.-9. यूहन्ना 6:37,39,40,45

10. जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनंतकाल तक न मरेगा, यूहन्ना 11:26
11. मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खीचूँगा, यूहन्ना 12:32
12. जो कोई मुझ पर विश्वास करे वह अंधकार में न रहे, यूहन्ना 12:46

यह सार्वभौमिकता का रहस्य है (तुलना यूहन्ना 6:38-39; 17: 2,24 बनाम स्वतंत्र इच्छा)। दोनों किसी तरह सच हैं। मेरे अनुसार "वाचा" की धर्मशास्त्रीय अवधारणा उन्हें उत्तम प्रकार से जोड़ती है!

▣ **"उस पर विश्वास करे"** याद रखें कि उद्धार मुख्य रूप से एक व्यक्तिगत संबंध है, न कि एक पंथ, सही धर्मशास्त्र, या एक नैतिक जीवन शैली (तुलना यूहन्ना 3:16; 11:25-26)। किसी की आस्था के उद्देश्य पर जोर दिया गया है, तीव्रता पर नहीं। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

यूहन्ना 6:37a,39,44,65 में परमेश्वर की सार्वभौमिक पसंद पर जोर देने और यूहन्ना 6:37b,40 में मानव जाति के विश्वास की प्रतिक्रिया के संतुलन पर ध्यान दें। इन बाइबल तनावों को संभालना चाहिए। परमेश्वर की सार्वभौमिकता और मानवजाति की स्वतंत्र इच्छा बाइबल की वाचा के दोहरे पहलुओं का निर्माण करती है।

▣ **"अनन्त जीवन पाए"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक रूप है; एक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है (तुलना 1 यूहन्ना 5:11)। यह भी ध्यान दें कि यूहन्ना 6:39 सार्वजनिक है, जबकि यूहन्ना 6:40 व्यक्तिगत है। यह उद्धार का विरोधाभास है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:41-51

41इसलिये यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, क्योंकि उसने कहा था, "जो रोटी स्वर्ग से उतरी, वह मैं हूँ।" 42और
उन्होंने कहा, "क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो वह कैसे कहता है कि
मैं स्वर्ग से उतरा हूँ?" 43यीशु ने उनको उत्तर दिया, "आपस में मत कुड़कुड़ाओ। 44कोई मेरे पास नहीं आ सकता
जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।
45भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है: ' वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।' जिस किसी ने पिता से
सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है। 46यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है, परन्तु जो परमेश्वर की ओर से
है, केवल उसी ने पिता को देखा है। 47मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि कोई विश्वास करता है अनंत जीवन उसी का
है। 48जीवन की रोटी मैं हूँ। 49तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। 50यह वह रोटी है जो स्वर्ग से
उतरती है, ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे। 51जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी, मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी
में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दूँगा, वह मेरा मांस है।"

6:41 "इसलिए यहूदी कुड़कुड़ाने लगे" यह एक अपूर्ण काल है, जिसका अर्थ है कि उन्होंने कुड़कुड़ाना शुरू किया या बार बार कुड़कुड़ाने लगे। जंगल में भटकने वाले काल का (तुलना निर्गमन और गिनती) समानान्तर आश्चर्यजनक है। उस दिन के इस्राएलियों ने भी परमेश्वर के प्रतिनिधि मूसा को अस्वीकार कर दिया, उसने भी उन्हें भोजन प्रदान किया था।

6:42 यह दर्शाता है कि यहूदी यीशु के स्वयं के बारे में कहे गए शब्दों को समझ गए। वह पूर्व-अस्तित्व और दिव्य होने का दावा करने के लिए स्पष्ट रूप से यहूदी मुहावरों का उपयोग कर रहा था! यीशु के शब्द गलीली बढ़ई से आ रहे अभी भी चौंकाने वाले हैं! यीशु ने खुद के बारे में इस तरह के प्रबल बयान दिए। तो वह है

1. परमेश्वर का अवतरित पुत्र है जो अपने वचनों और कर्मों द्वारा अनन्त जीवन लाता है या
2. एक पूर्व चिंतनशील असत्यवादी या
3. एक पागल (Josh McDowell, *Evidence That Demands a Verdict* से लिया गया)

यीशु के दावों की सत्यता ही मसीहत का मुद्दा है।

6:43 "आपस में मत कुड़कुड़ाओ" यह नकारात्मक प्रत्यय के साथ एक वर्तमान आज्ञार्थक है जिसका सामान्य रूप से अर्थ पहले से ही प्रगति में एक कार्य को रोकने से है।

6:44 "कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले" परमेश्वर हमेशा पहल करता है (तुलना यूहन्ना 6:65 और 15:16)। एक आत्मिक निर्णय आत्मा के लुभाने का परिणाम है, न कि मानव जाति की धार्मिक कट्टरता (तुलना यशायाह 53: 6)। परमेश्वर की सार्वभौमिकता और एक अनिवार्य मानवीय प्रतिक्रिया परमेश्वर की इच्छा और दया से अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई हैं। यह पुराने नियम की वाचा की अवधारणा है।

इस "परमेश्वर द्वारा खींचने" का संतुलन यूहन्ना 12:32 में पाया गया है जहाँ यीशु "सब मनुष्यों को खुद की ओर खींचता है।" यह खींचना परमेश्वर के लोगों के द्वारा उसके भविष्यसूचक वचन पर प्रतिक्रिया न करने के पुराने नियम के तरीके को उलट देता है (उदाहरण: यशायाह 6: 9 और 29:13; यिर्मयाह)। अब परमेश्वर, इस्राएल से भविष्यद्वक्ता द्वारा नहीं, बल्कि उसके पुत्र के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति से बोलता है (तुलना इब्रानियों 1:1-3) यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना (*Apostellō*) देखें।

6:45 "भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है" यह यशायाह 54:13 या यिर्मयाह 31:34 का एक उद्धरण है जो "नई वाचा" के आंतरिक (नया दिल, नया दिमाग) पहलू का वर्णन करता है।

▣ **"जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है"** परमेश्वर को जानने और यीशु को अस्वीकार करने का दावा करना असंभव है (तुलना 1 यूहन्ना 5:1-12)।

6:46 "यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है" यीशु की पुष्टि यह है कि केवल उसी के माध्यम से परमेश्वर को वास्तव में समझा और जाना सकता है (तुलना यूहन्ना 1:18; 14: 6,9)। यहाँ तक कि मूसा ने भी कभी YHWH को नहीं देखा (तुलना यूहन्ना 5:32 पर टिप्पणी)।

6:47 यह पद मनुष्यों के लिए यीशु की एक मुफ्त उद्धार की पेशकश का सारांश है ("जो कोई विश्वास करता है," वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत; "अनन्त जीवन" तुलना यूहन्ना 6: 51,58; 3: 15,16,36; 5:24; 11:26; 20:31)। यीशु परमेश्वर का एकमात्र सच्चा प्रकटीकरण है, परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र सच्चा द्वार (सुसमाचार की विशिष्टता, तुलना यूहन्ना 10:1-6,7-9; 14: 6), लेकिन यह आदम के सभी बेटे और बेटियों के लिए उपलब्ध है। (सुसमाचार की समग्रता पूर्ण करती है 1:4,7,12; 3:16; उत्पत्ति 3:15; 12:3)।

6:50 यह पद, 31-35 के समान, रोटी के अर्थ, भौतिक रोटी (मन्ना) और स्वर्गीय रोटी (यीशु) के अर्थ पर एक क्रीड़ा है। एक भौतिक जीवन देती और उसका निर्वाह करती है, लेकिन उसे दोहराया जाना चाहिए और अंततः मृत्यु को रोक नहीं सकती। दूसरी अनन्त जीवन देती और उसका निर्वाह करती है, लेकिन उसे स्वीकार किया जाना और उसका पालन-पोषण करना चाहिए और आत्मिक मृत्यु का तत्काल अंत करती है (परमेश्वर के साथ टूटी संगति, पाप और स्वयं के साथ अंतरंग संगति)।

6:51 "जीवन की रोटी मैं हूँ" यह यूहन्ना के सुसमाचार के प्रसिद्ध "मैं हूँ” कथनों में से एक है(तुलना यूहन्ना 6:35,48,51)। यह यीशु की अपने व्यक्तित्व पर ध्यान केंद्रित करने की साहित्यिक तकनीक थी। उद्धार, प्रकटीकरण के समान, अंततः एक व्यक्ति है।

▣ "**जगत के जीवन के लिए दूँगा, वह मेरा मांस है"** यह एक रूपक है जो इस बात पर जोर देता है कि यीशु स्वयं, कोई खाद्य आपूर्ति नहीं, हमारी केंद्रीय आवश्यकता है। यह वाक्यांश स्पष्ट रूप से 1:14 से जुड़ा हुआ है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:52-59
[52]इस पर यहूदी यह कह कर आपस में झगड़ने लगे, “यह मनुष्य कैसे हमें अपना मांस खाने को दे सकता है?”
[53]यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं । [54]जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनंत जीवन उसी का है; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।" [55]क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है, और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है। [56]जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में।
[57]जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा। [58]जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है, उस रोटी के समान नहीं जिसे बापदादों ने खाया और मर गए; जो कोई यह रोटी खाएगा वह सर्वदा जीवित रहेगा।" [59]ये बातें उसने कफरनहूम के एक आराधनालय में उपदेश देते समय कहीं।

6:52

NASB	**"तर्क"**
NKJV	**"झगड़ने लगे"**
NRSV	**"विवाद करने लगे"**
TEV	**"एक क्रोधित तर्क"**
NJB	**"तर्क करना"**

अपूर्ण काल का अर्थ था किसी चीज़ की शुरुआत या पिछले समय में किसी चीज़ को जारी रखना। यह झगड़ने के लिए एक प्रबल यूनानी शब्द है (तुलना प्रेरितों के काम 7:26; 2 तीमुथियुस 2:23-24; तीतुस 3:9) और 2 कुरिन्थियों 7:5 और याकूब 4:1-2 में रूपक के समान प्रयोग किया गया है।

▣ **"यह मनुष्य कैसे हमें अपना मांस खाने को कैसे दे सकता है"** यूहन्ना में यीशु रूपक भाषा में बोलते हैं जो नियमित

रूप से शाब्दिक अर्थ में गलत समझा जाता है: (1) नीकुदेमुस, यूहन्ना 3:4, (2) सामरी स्त्री, यूहन्ना 4:11; (3) यहूदी भीड़, यूहन्ना 6:52, और (4) चेले, यूहन्ना 11:11।

6:53-57 यूहन्ना 6:53 और 54 में क्रियाएँ बहुत दिलचस्प हैं। यूहन्ना 6:53 में, "खाओ" और "पियो" एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ सूचक है, जो एक स्वेच्छा से संभावित प्रारम्भिक कार्य है। यूहन्ना 6:54 की क्रियाएँ "खाओ" और "पियो" वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत हैं जो निरंतर कार्य करने पर जोर देते हैं (तुलना यूहन्ना 6:56,57,58)। ऐसा लगता है कि यह इस तथ्य की पुष्टि करता है कि किसी को आरम्भ में यीशु को प्रत्युत्तर देना चाहिए और प्रत्युत्तर देना जारी रखना चाहिए (तुलना यूहन्ना 6:44)।

यह याद रखना चाहिए कि इस अवतरण को अक्षरशः लेना खून पीने पर यहूदी दहशत को समझना है (तुलना लैव्यव्यवस्था 17:10-14)। जंगल में मन्ना के लिए यीशु के स्पष्ट संकेतों को लेना (तुलना यूहन्ना 6:58), और उन्हें प्रभुभोज के साथ जुड़े शाब्दिक वाक्यांशों के रूप में प्रयोग करना मरणोत्तर उद्देश्यों के लिए ऐतिहासिक विन्यास और साहित्यिक संदर्भ का छल कपट है।

6:54 "मांस. . .लहू" यह पूरे व्यक्ति को संदर्भित करने का एक यहूदी लाक्षणिक तरीका है, जैसे "दिल"

6:55 "वास्तव में खाने की. . .वास्तव में पीने की" यह यूहन्ना के सच/सत्य शब्द का विशिष्ट उपयोग है (नीचे विशेष विषय देखें)। यूहन्ना ने, अन्य नये नियम लेखकों की तुलना में बाद में लिखते हुए, कई मतान्तरों के विकास को देखा था (यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले पर अत्यधिक महत्व, संस्कारवाद पर अत्यधिक महत्व, मानव ज्ञान-ज्ञानवाद पर अत्यधिक महत्व)।

विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "सत्य" (अवधारणा) (SPECIAL TOPIC: "TRUTH" (THE CONCEPT) IN JOHN'S WRITINGS)

एक अर्थ में यूहन्ना *alētheia* "सत्य" की इब्रानी पृष्ठभूमि और यूनानी पृष्ठभूमि को जोड़ता है जिस प्रकार उसने *logos* को किया था (तुलना 1:1-14)। इब्रानी (विशेष विषय: पुराने नियम में आस्था, भरोसा, विश्वास और विश्वासयोग्यता) यह दर्शाता है कि जो सच है, या भरोसेमंद है (अक्सर सेप्टुआजिंट में *pisteuō* के साथ जुड़ा हुआ है)। यूनानी में यह प्लेटो की वास्तविकता के मुकाबले अवास्तविकता; स्वर्गीय के मुकाबले सांसारिक से जुड़ा था। यह यूहन्ना के द्वैतवाद में सही बैठता है।परमेश्वर ने स्वयं को स्पष्ट रूप से प्रकट किया है (*alētheia* की व्युत्पत्ति है उजागर करना, जाहिर करना, स्पष्ट रूप से प्रकट करना) अपने पुत्र में। यह कई तरह से व्यक्त किया गया है।

1. संज्ञा, *alētheia*, सत्य
   a. यीशु अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है (तुलना यूहन्ना 1:14,17 – पुराने नियम के वाचा के शब्द)
   b. यीशु, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही का केंद्र हैं (तुलना यूहन्ना 1:32-34; 18:37 – पुराने नियम के अंतिम भविष्यद्वक्ता)
   c. यीशु सच बोलता है (तुलना यूहन्ना 8:40,44,45,46 – प्रकटीकरण प्रतिज्ञप्तिक और व्यक्तिगत है)
   d. यीशु मार्ग, सत्य और जीवन है (तुलना यूहन्ना 14:6)
   e. यीशु उन्हें सत्य के द्वारा पवित्र करता है (तुलना यूहन्ना 17:17)
   f. यीशु (the Logos, 1:1-3) सत्य है (तुलना यूहन्ना 17:17)
2. विशेषण, *alēthēs*, सत्य, भरोसेमंद
   a. यीशु के गवाह (तुलना यूहन्ना 5:31-32; 7:18; 8:13-14)
   b. यीशु का न्याय (तुलना यूहन्ना 8:16)
3. विशेषण, *alēthinus*, सच्चा
   a. यीशु सच्ची ज्योति है (तुलना यूहन्ना 1:9)
   b. यीशु सच्ची रोटी है (तुलना यूहन्ना 6:32)
   c. यीशु सच्ची दाखलता है (तुलना यूहन्ना 15:1)
   d. यीशु सच्ची गवाही है (तुलना यूहन्ना 19:35)
4. क्रिया विशेषण, *alēthōs*, सच
   a. सामरी स्त्री की संसार के उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की गवाही (तुलना यूहन्ना 4:42)
   b. मूसा के दिन के मन्ना के विपरीत यीशु सच्चा खाना और पीना है (तुलना यूहन्ना 6:55)

सत्य और इसके व्युत्पन्न शब्द भी यीशु के लिए दूसरों की गवाही को व्यक्त करते हैं, *alēthēs*

   a. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही सच है (तुलना यूहन्ना 10:41)

b. यूहन्ना (सुसमाचार के लेखक) की गवाही सच है (तुलना यूहन्ना 19:35; 21:24)
c. यीशु को सच्चे भविष्यद्वक्ता के रूप में देखा गया (तुलना यूहन्ना 6:14; 7:40)

पुराने नियम और नये नियम में सत्य की एक अच्छी चर्चा के लिए George E. Ladd's *A Theology of the New Testament*, pp. 263-269 देखें।

6:56 "मुझ में स्थिर बना रहता है और मैं उस में" यही सच यूहन्ना 15:4-7; 1 यूहन्ना 2:6,27,28; 3:6,24 में कहा गया है, विशेष विषय: बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें। यह संतों की दृढ़ता पर निरंतर चलने वाला नये नियम का जोर है (तुलना गलातियों 6: 9; प्रकाशितवाक्य 2: 7,11,17,26; 3: 5,12,21, यूहन्ना 8:31 पर विशेष विषय देखें)। सच्ची प्रतिक्रिया एक निरंतर प्रतिक्रिया से मान्य होती है। दृढ़ता पर यह जोर अमेरिकी इंजीलवाद में लापता तत्व है। किसी को न केवल विश्वास में शुरू करना चाहिए, बल्कि विश्वास में समाप्त करना चाहिए (इब्रानियों 11)। जोनाथन एडवर्ड्स ने कहा, "चुनाव का निश्चित प्रमाण यह है कि एक अंत तक पकड़ रखता है।" डब्ल्यू. टी.कॉनर ने कहा, "उद्धार के लिए चुने गए एक व्यक्ति का उद्धार अनंत काल से अनंत काल तक परमेश्वर के मन और उद्देश्य में निश्चित है, फिर भी यह विश्वास पर आधारित है, और एक विश्वास जो दृढ़ रहता और विजय प्राप्त करता है।"

6:57 "जीवते पिता" यह वाक्यांश अद्वितीय है, लेकिन अवधारणा का उपयोग अक्सर बाइबल में किया जाता है। परमेश्वर के लिए इस नाम की उत्पत्ति की व्याख्या करने के कई अलग-अलग तरीके हैं।

1. वाचा के परमेश्वर का मूल नाम (तुलना निर्गमन 3:12,14-16; 6:2-3, यूहन्ना 6:20 में विशेष विषय देखें)
2. परमेश्वर के द्वारा शपथ, "जैसा मैं जीवित हूँ" या परमेश्वर के नाम में, "जैसा कि प्रभु जीवित है" (तुलना गिनती 14:21,28; यशायाह 49:18; यिर्मयाह 4: 2)
3. परमेश्वर एक विवरण के रूप में (तुलना भजनसंहिता 42: 2; 84: 2; यहोशू 3:10; यिर्मयाह 10:10; दानिय्येल 6: 20,26; होशे 1:10; मत्ती 16:16; 26:26; ; प्रेरितों के काम 14:15; रोमियों 9:26; 2 कुरिंथियों 3: 3; 6:16; 1 थिस्सलुनीकियों। 1: 9; 1 तीमुथियुस 3:15; 4:10; इब्रानियों 3:12; 9:12। ; 10:31; 12:22; प्रकाशितवाक्य 7: 2)
4. यूहन्ना 5:26 में दिए गए कथन कि पिता का स्वयं में जीवन है और उसने इसे पुत्र को दिया और 5:21 जहाँ पिता मृतकों को जिलाता है और पुत्र भी।

6:58 यह पुराने नियम और नये नियम, मूसा और यीशु की तुलना है। (इब्रानियों की पुस्तक, विशेषतः अध्याय 3, 4 देखें)।

▣ **"बापदादों ने खाया और मर गए"** इससे वंशावली (तुलना यूहन्ना 8:33-39) या मूसा के कानून (तोराह) के माध्यम से उद्धार से इंकार करने का धर्मशास्त्रीय कार्य भी हुआ होगा।

▣ **"सदैव"** नीचे दिए गए विशेष विषय को देखें।

विशेष विषय: सर्वदा *('OLAM)* (SPECIAL TOPIC: FOREVER *('OLAM)*)

इब्रानी शब्द '*olam,* עולם (BDB 761, KB 798) की व्युत्पत्ति अनिश्चित है (NIDOTTE, vol. 3, p. 345)। इसका उपयोग कई अर्थों में किया जाता है (आमतौर पर संदर्भ द्वारा निर्धारित)। निम्नलिखित केवल चयनित उदाहरण हैं।

1. प्राचीन वस्तुएँ
   a. लोग, उत्पत्ति 6:4; 1 शमूएल 27: 8; यिर्मयाह 5:15; 28:8
   b. स्थान, यशायाह 58:12; 61:4
   c. परमेश्वर, भजनसंहिता 93: 2; नीतिवचन 8:23; यशायाह 63:16
   d. वस्तुएँ, उत्पत्ति 49:26; अय्यूब 22:15; भजनसंहिता 24:7,9, यशायाह 46:9
   e. समय, व्यवस्थाविवरण 32:7; यशायाह 51:9; 63:9,11
2. भविष्य का समय
   a. एक का जीवन, निर्गमन 21:6; व्यवस्थाविवरण 15:17; 1 शमूएल 1:22; 27:12
   b. एक राजा के लिए सम्मान की अतिशयोक्ति, 1 राजा 1:31; भजनसंहिता 61:7; नहेम्याह 2:3
   c. निरंतर अस्तित्व
      (1) पृथ्वी, भजनसंहिता 78:69; 104:5; सभोपदेशक 1:4
      (2) स्वर्ग, भजनसंहिता 148:5

d. परमेश्वर का अस्तित्व
    (1) उत्पति 21:33
    (2) निर्गमन 15:18
    (3) व्यवस्थाविवरण 32:40
    (4) भजनसंहिता 93:2
    (5) यशायाह 40:28
    (6) यिर्मयाह 10:10
    (7) दानिय्येल 12:7
e. वाचा
    (1) उत्पत्ति 9:12,16; 17: 7,13,19
    (2) निर्गमन 31:16
    (3) लैव्यव्यवस्था 24:8
    (4) गिनती 18:19
    (5) 2 शमूएल 23:5
    (6) भजनसंहिता 105:10
    (7) यशायाह 24:5; 55:3; 61:8
    (8) यिर्मयाह 32:40; 50:5
f. दाऊद के साथ विशेष वाचा
    (1) 2 शमूएल 7:13,16,25,29; 22:51; 23:5
    (2) 1 राजा 2:33,45; 9:5
    (3) 2 इतिहास 13:5
    (4) भजनसंहिता 18:50; 89:4,28,36,37
    (5) यशायाह 9:7; 55:3
g. परमेश्वर का मसीहा
    (1) भजनसंहिता 45:2; 72:17; 89: 35-36; 110:4
    (2) यशायाह 9:6
h. परमेश्वर के नियम
    (1) निर्गमन 29:28; 30:21
    (2) लैव्यव्यवस्था 6:18,22; 7:34; 10:15; 24:9
    (3) गिनती 18:8,11,19
    (4) भजनसंहिता 119: 89,160
i. परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ
    (1) 2 शमूएल 7:13,16,25; 22:51
    (2) 1 राजा 9:5
    (3) भजनसंहिता 18:50
    (4) यशायाह 40:8
j. अब्राहम के वंशज और प्रतिज्ञा किया हुआ देश
    (1) उत्पत्ति 13:15; 17:19; 48:4
    (2) निर्गमन 32:13
    (3) 1 इतिहास 16:17
k. वाचा के पर्व
    (1) निर्गमन 12:14,17,24
    (2) लैव्यव्यवस्था 23:14,21,41
    (3) गिनती 10:8
l. अनंत काल, चिरस्थायी
    (1) 1 राजा 8:13

(2) भजनसंहिता 61:7-8; 77: 8; 90:2; 103:17; 145:13
(3) यशायाह 26:4; 45:17
(4) दानिय्येल 9:24

m. जो भजनसंहिता कहता है विश्वासी उसे हमेशा के लिए करेंगे
(1) धन्यवाद दें, भजनसंहिता 30:12; 79:13
(2) उसकी उपस्थिति में रहें, भजनसंहिता 41:12; 61: 4,7
(3) उसकी दया पर भरोसा करें, भजनसंहिता 52:8
(4) प्रभु की स्तुति करें, भजनसंहिता 52:9
(5) भजन गाएँ, भजनसंहिता 61:8; 89:1
(6) उसके न्याय को घोषित करें, भजनसंहिता 75:7-9
(7) उसके नाम को गौरवान्वित करें, भजनसंहिता 86:12; 145: 2
(8) उसके नाम को आशीषित करें, भजनसंहिता 145:1

n. नए युग का वर्णन करने के लिए यशायाह में प्रयुक्
(1) चिरस्थायी वाचा, यशायाह 24:5; 55:3; 61:8
(2) YHWH एक चिरस्थायी चट्टान, यशायाह 26:4
(3) चिरस्थायी आनन्द, यशायाह 35:10; 51:11; 61:7
(4) चिरस्थायी परमेश्वर, यशायाह 40:28
(5) एक चिरकालिक उद्धार, यशायाह 45:17
(6) चिरस्थायी प्रेमी करुणा (Hesed), यशायाह 54:8
(7) चिरस्थायी संकेत, यशायाह 55:13
(8) एक चिरस्थायी नाम, यशायाह 56:5; 63:12,16
(9) चिरस्थायी प्रकाश, यशायाह 60:19,20

दुष्टों के शाश्वत दंड से संबंधित एक नकारात्मक-उन्मुख उपयोग यशायाह 33:14 में पाया जाता है "एक चिरस्थायी जलन।" यशायाह अक्सर परमेश्वर के क्रोध का वर्णन करने के लिए "आग" का उपयोग करता है (तुलना यशायाह 9:18,19; 10:16; 47:14), लेकिन केवल यशायाह 33:14 में यह "अनन्त" इस प्रकार वर्णित है।

3. समय में पिछड़े और आगे दोनों ("चिरस्थायी से चिरस्थायी के लिए")
a. भजनसंहिता 41:13 (परमेश्वर की स्तुति)
b. भजनसंहिता 90:2 (स्वयं परमेश्वर)
c. भजनसंहिता 103:17 (प्रभु की प्रेमी करुणा)

याद रखें, संदर्भ शब्द के अर्थ की सीमा को निर्धारित करता है। चिरस्थायी वाचाएं और प्रतिज्ञाएँ सशर्त हैं (यानी, यिर्मयाह 7, विशेष विषय: वाचा देखें)। समय के अपने आधुनिक दृष्टिकोण या अपने नए नियम व्यवस्थित धर्मशास्त्र को इस बहुत ही तरल शब्द के प्रत्येक पुराने नियम उपयोग में पढ़ने से सावधान रहें।नए नियम के द्वारा, सार्वभौमिक पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं को भी याद रखें (देखें विशेष विषय: पुराने नियम की भविष्य की भविष्यवाणियाँ बनाम नए नियम की भविष्यवाणियाँ)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:60-65

60उसके चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, "यह कठोर बात है; इसे कौन सुन सकता है?" 61यीशु ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उनसे पूछा, "क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है? 62यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा? 63आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं। 64परन्तु तुम में से कुछ ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।" क्योंकि यीशु पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं; और कौन मुझे पकड़वाएगा। 65और उसने कहा, "इसीलिए मैंने तुमसे कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।

6:60 "उनके चेलों में से बहुतों ने" शब्द "चेलों" के इस प्रयोग का व्यापक लक्ष्यार्थ है। यूहन्ना में यह शब्द और "विश्वास" दोनों (1) सच्चे अनुयायियों (यूहन्ना 6:68) और (2) अस्थायी अनुयायियों (यूहन्ना 6:64, तुलना यूहन्ना 8:31-47) दोनों का प्रयोग किया गया है।

▣ **"सुनकर. . .सुन"** शब्द "सुन" (*akouō*) पर एक क्रीड़ा है। उन्होंने यीशु के शब्द सुने, लेकिन उन्होंने उन्हें समझा नहीं और उन पर कार्रवाई नहीं की। इस अर्थ में यह यूनानी शब्द इब्रानी शब्द *shema* की तरह कार्य करता है (तुलना व्यवस्था विवरण 4:1; 5:1; 6:3,4; 27:9-10)।

6:62 यह एक अधूरा प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका कोई निष्कर्ष नहीं है। निहितार्थ यह है कि वे इसे देखेंगे (तुलना प्रेरितों के काम 1)। यीशु की मृत्यु / पुनरुत्थान / स्वर्गारोहण और आत्मा के आने के बाद, यीशु की बहुत सारी शिक्षाएँ और कार्य उनके लिए मायने रखेंगे।

▣ **"जहाँ वह पहले था वहाँ ऊपर जाते"** यह यीशु के स्वर्ग से नीचे उतरने के बारे में निरंतर भार है।" यह स्वर्ग में पिता के साथ उसके पूर्व-अस्तित्व और स्वर्ग में पिता के साथ उसकी अंतरंग संगति की बात करता है (तुलना यूहन्ना 17:5,24)।

विशेष विषय: स्वर्गारोहण (SPECIAL TOPIC: THE ASCENSION)

यीशु स्वर्ग से उतरा (तुलना फिलिप्पियों 2:6-7; 2 कुरिन्थियों 8:9)। अब उसकी पूर्ववर्ती महिमा पुनःस्थापित हो गई (तुलना यूहन्ना 1:1-3; 17:5; इफिसियों 4:01; 1 तीमुथियुस 3:16; 1 यूहन्ना 1:2)। वह अब परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है (भजनसंहिता 110:1; लूका 22:69; प्रेरितों के काम 2:33; रोमियों 8:34; इफिसियों 1:20; कुलुस्सियों 3:1; इब्रानियों 1:3; 8:1; 10:12; 12:2; 1 पतरस 3:22)। यह पिता के द्वारा उसके जीवन और मृत्यु की स्वीकृति की पुष्टि है! यीशु के स्वर्गारोहण का वर्णन करने के लिए कई अलग-अलग यूनानी शब्द प्रयोग किए गए हैं:

1. प्रेरितों के काम 1:2,11,22; *analambanō*, उठा लिया गया (तुलना 1 तीमुथियुस 3:16)
2. प्रेरितों के काम 1:9, *epairō*, ऊपर उठाना, ऊँचा उठाना, उठाना
3. लूका 9:51, *analēpsis* (#1 का रूप)
4. लूका 24:51, *diistēmi*, अलग होना

   यूहन्ना के सुसमाचार में स्वर्ग में यीशु की वापसी के कई संकेत हैं (यूहन्ना 7:33; 8:14,21; 12:33-34; 13:3,33,36; 14:4,5,12,28; 16:5,10,17,28; 26:7)
5. यूहन्ना 3:13; 20:17, *ana BeBēken*, ऊपर गया है
6. यूहन्ना 6:62, *anabainō*, ऊपर जाना

   यह घटना मत्ती या मरकुस रचित सुसमाचार में दर्ज नहीं है। मरकुस रचित सुसमाचार 16:8 पर समाप्त होता है, लेकिन तीन में से एक लेखकीय परिवर्धन मरकुस 16:19 में घटना का वर्णन करता है। (यानी, *analambanō*)

प्रेरितों के काम में स्वर्ग में यीशु के कई संकेत हैं।

1. पतरस - प्रेरितों के काम 2:33; 3:21
2. स्तिफनुस - प्रेरितों के काम 7:55-56
3. पौलुस - प्रेरितों के काम 9:3,5; 22:6-8; 26:13-15

6:63 अध्याय 6 के बड़े संदर्भ के कारण, यह पद, पुरानी वाचा बनाम नई वाचा, मूसा बनाम यीशु के बीच एक विरोधाभास से संबंधित हो सकता है (तुलना यूहन्ना 6:58; 2 कुरिंथियों 3:6, इब्रानियों की पुस्तक में दो वाचाओं की तुलना देखें)।

▣ **"आत्मा तो जीवनदायक है"** यह कई वाक्यांशों में से एक है जो यीशु और आत्मा दोनों के लिए प्रयोग किया जाता है।

1. आत्मा जीवन देने वाला जल है (7:38-39)
2. यीशु जीवित जल है (4:10-14)
3. पवित्र आत्मा सत्य की आत्मा है (14:17; 15:27; 16:13)
4. यीशु सत्य है (14:6)
5. आत्मा तसल्ली देनेवाला है (14:16,26; 15:26; 16:7)
6. और यीशु तसल्ली देनेवाला है (1 यूहन्ना 2:1)

14:16 पर विशेष विषय देखें।

इस पद में ध्यान दें कि "आत्मा" (*pneuma*) का प्रयोग दो विशेष अर्थों में किया गया है।

1. पवित्र आत्मा (तुलना यूहन्ना 1:32,33; 3:34; 7:39; 14:17; 15:26; 16:13)
2. आत्मिक (तुलना यूहन्ना 4:24; 11:33; 13:21)

यूहन्ना 3:5,6,8 में यह जानना मुश्किल है कि किस अर्थ को लिया गया है। यूहन्ना होने के नाते, संभवतः दोनों।

विशेष विषय: आत्मा *(PNEUMA)* नये नियम में (SPECIAL TOPIC: SPIRIT *(PNEUMA)* IN THE NEW TESTAMENT)

"आत्मा" के लिए यूनानी शब्द का प्रयोग नये नियम में कई तरह से किया जाता है। यहाँ पर नमूने के तौर पर कुछ वर्गीकरण और उदाहरण दिए गए हैं।

A. त्रिएक परमेश्वर का (विशेष विषय: त्रिएकत्व देखें)
   1. पिता का (तुलना यूहन्ना 4:24)
   2. पुत्र का (तुलना रोमियों 8:9-10; 2 कुरिन्थियों 3:17; गलातियों 4:6; 1 पतरस 1:17)।
   3. पवित्र आत्मा का (तुलना मरकुस 1:11; मत्ती 3:16; 10:20; यूहन्ना 3:5,6-17; 7:39; 14:17; प्रेरितों के काम 2:4; 5:9; 8:29,35; रोमियों 1:4; 8:11,16; 1 कुरिन्थियों 2:4,10,11,13,14; 12:7)।
B. मानव जीवन शक्ति का
   1. यीशु का (तुलना मरकुस 8:12; यूहन्ना 11:33,38; 13:21)
   2. मानव जाति का (तुलना मत्ती 22:43; प्रेरितों के काम 7:59; 17:16; 20:22; रोमियों 1:9; 8:16; 1 कुरिन्थियों 2:11; 5:3-5; 7:34; 15:45; 16:18; 2 कुरिन्थियों 2:13; 7:13; फिलिप्पियों 4:23; कुलुस्सियों 2:5)
   3. ऐसी चीजें जो आत्मा मानव आत्माओं में और उनके माध्यम से उत्पन्न करती है
      a. दासत्व की आत्मा नहीं किंतु लेपालकपन की आत्मा - रोमियों 8:15
      b. नम्रता की आत्मा - 1 कुरिन्थियों 4:21
      c. विश्वास की आत्मा - 2 कुरिन्थियों 4:13
      d. उसकी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा इफिसियों 1:17
      e. भय की नहीं किंतु सामर्थ्य, प्रेम और संयम की आत्मा - 2 तीमुथियुस 1: 7
      f. भ्रम की आत्मा के मुकाबले सत्य की आत्मा - 1 यूहन्ना 4:6
C. आत्मिक क्षेत्र की
   1. आत्मिक प्राणी
      a. अच्छे (यानी, स्वर्गदूत, तुलना प्रेरितों के काम 23:8-9; इब्रानियों 1:14;
      b. बुरे (यानी, अशुद्ध आत्मा, तुलना मत्ती 8:16; 10:1; 12:43,24; प्रेरितों के काम 5:16; 8:7; 16:16; 19: 12-21; इफिसियों 6:12)
      c. भूत (तुलना लूका 24:37)
   2. आत्मिक विवेक (तुलना मत्ती 5:3; 26:41; यूहन्ना 3:6; 4:23; प्रेरितों के काम 18:25; 19:21; रोमियों 2:29; 7:6; 8:4,10; 12:11; 1 कुरिन्थियों 14:37)
   3. आत्मिक बातें (तुलना यूहन्ना 6:63; रोमियों 2:29; 8:2,5,9,15; 15:27; 1 कुरिन्थियों 9:11; 14:12)।
   4. आत्मिक वरदान (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:1; 14:1)
   5. आत्मा की प्रेरणा (तुलना मत्ती 22:43; लूका 2:27; इफिसियों 1:17)
   6. आत्मिक देह (तुलना 1 कुरिन्थियों 15:44-45)
D. विशेषता बताता है
   1. संसार के व्यवहार की (तुलना रोमियों 8:15; 11:8; 1 कुरिन्थियों 2:12)
   2. मनुष्यों की सोच प्रक्रिया की (तुलना प्रेरितों के काम 6:10; रोमियों 8:6; 1 कुरिन्थियों 4:2)।
E. भौतिक क्षेत्र की
   1. आँधी (तुलना मत्ती 7:25,27; यूहन्ना 3:8; प्रेरितों के काम 2:2)
   2. श्वास (तुलना प्रेरितों के काम 17:25; 2 थिस्सलुनीकियों 2:8)

जाहिर है कि इस शब्द की व्याख्या इसके तात्कालिक संदर्भ के प्रकाश में की जानी चाहिए। अर्थ के विभिन्न प्रकार हैं जो संदर्भित कर सकते हैं (1) भौतिक संसार (2) अनदेखा संसार; (3) साथ ही साथ इस भौतिक संसार के व्यक्ति या आत्मिक क्षेत्र के व्यक्तियों को।

पवित्र आत्मा त्रिएक परमेश्वर का वह हिस्सा है जो इतिहास के इस चरण में सर्वोच्च रूप से सक्रिय है। आत्मा का नया युग आ गया है। जो कुछ अच्छा, पवित्र, सही और सत्य है, उससे संबंध रखता है। उसकी उपस्थिति, वरदान और सेवकाई सुसमाचार के प्रसार और परमेश्वर के राज्य की सफलता में महत्त्वपूर्ण हैं (तुलना यूहन्ना 14 और 16)। वह स्वयं की ओर ध्यान आकर्षित नहीं करता है, लेकिन मसीह की ओर (तुलना यूहन्ना 16:13-14)। वह सभी विश्वासियों को दोषी ठहराता है, निश्चय कराता है, प्रेम से जीतता है, बपतिस्मा देता है, और परिपक्व करता है (तुलना यूहन्ना 16:8-11)।

6:64 प्रत्यक्ष लेकिन झूठे अनुयायियों का यह समूह घटकर एक झूठे अनुयायी पर आ जाता है- यहूदा (तुलना यूहन्ना 6:70-71; 13:11; विश्वास के स्तरों में रहस्य अवश्य निहित है।

विशेष विषय: स्वधर्मत्याग (*APHISTĒMI*) (SPECIAL TOPIC: APOSTASY *(APHISTĒMI)*)

यूनानी शब्द *aphistēmi* का एक विस्तृत शब्दार्थ क्षेत्र है। हालांकि, अंग्रेजी शब्द "एपोस्टैसी" इस शब्द से लिया गया है और आधुनिक पाठकों के लिए इसके प्रयोग को पूर्वाग्रहित करता है। संदर्भ, हमेशा की तरह,एक कुंजी है, एक पूर्व निर्धारित परिभाषा नहीं।

यह पूर्वसर्ग *apo* से एक संयुक्त शब्द है, जिसका अर्थ है "से" या "से दूर" और *histēmi*, "बैठने के लिए," "खड़े होने के लिए," या "ठीक करने के लिए"। निम्नलिखित (गैर-धर्मशास्त्रीय) प्रयोगों पर ध्यान दें:

1. शारीरिक रूप से दूर करने के लिए
   a. मंदिर से, लूका 2:37
   b. एक घर से, मरकुस 13:34
   c. एक व्यक्ति से, मरकुस 12:12; 14:50; प्रेरितों के काम 5:38
   d. सभी चीजों से, मत्ती 19:27,29
2. राजनीतिक रूप से हटाने के लिए, प्रेरितों के काम 5:37
3. तर्कशक्ति से हटाने के लिए, प्रेरितों के काम 5:38; 15:38; 19: 9; 22:29
4. कानूनी रूप से (तलाक) को हटाने के लिए, व्यवस्थाविवरण 24:1,3 (LXX) और नया नियम, मत्ती 5:31; 19:7; मरकुस 10: 4; 1 कुरिन्थियों 7:11
5. एक क़र्ज को हटाने के लिए, मत्ती 18:24
6. छोड़ने के द्वारा अलगाव दिखाने के लिए, मत्ती 4:20; यूहन्ना 4:28; 16:32
7. नहीं छोड़ने के द्वारा लगाव दिखाने के लिए, यूहन्ना 8:29; 14:18
8. स्वीकृति या अनुमति देने के लिए, मत्ती 13:30; 19:14; मरकुस 14: 6; लूका 13: 8

धर्मशास्त्रीय अर्थ में क्रिया का भी व्यापक प्रयोग है:

1. रद्द, क्षमा, पाप के अपराधबोध को क्षमा करने के लिए, निर्गमन 32:32 (LXX); गिनती 14:19; अय्यूब 42:10 और नया नियम, मत्ती 6:12,14-15; मरकुस 11:25-26
2. अधर्म से बचने के लिए, 2 तीमुथियुस 2:19
3. इनसे दूर हटकर उपेक्षा करना
   a. व्यवस्था, मत्ती 23:23; प्रेरितों के काम 21:21
   b. विश्वास, यहेजकेल 20:8 (LXX); लूका 8:13; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3; 1 तीमुथियुस 4:1; इब्रानियों 3:12

आधुनिक विश्वासियों ने कई धर्मशास्त्रीय प्रश्न पूछे हैं जिनके बारे में नये नियम के लेखकों ने कभी नहीं सोचा होगा। इनमें से एक विश्वासयोग्यता (पवित्रीकरण) से विश्वास (दोषमुक्ति) को अलग करने की आधुनिक प्रवृत्ति से संबंधित होगा। बाइबल में ऐसे व्यक्ति हैं जो परमेश्वर के लोगों में शामिल हैं और कुछ ऐसा होता है जिसके कारण उन्हें छोड़ना पड़ता है।

I. पुराना नियम
   A. जिन लोगों ने बारह (दस) भेदियों का वर्णन सुना, गिनती 14 (तुलना इब्रानियों 3:16-19)।
   B. कोरह, गिनती 16
   C. एली के पुत्र, 1 शमूएल 2, 4
   D. शाऊल, 1 शमूएल 11-31
   E. झूठे भविष्यद्वक्ता (उदाहरण)
      1. व्यवस्थाविवरण 13:1-5 18:19-22 (झूठे भविष्यद्वक्ता को जानने के तरीके)
      2. यिर्मयाह 28
      3. यहेजकेल 13:1-7
   F. झूठी नबियाएँ
      1. यहेजकेल 13:17
      2. नहेम्याह 6:14
   G. इस्राएल के दुष्ट अगुवे (उदाहरण)
      1. यिर्मयाह 5:30-31; 8:1-2; 23:1-4

2. यहेजकेल 22: 23-31
3. मीका 3: 5-12

II. नया नियम

A. शब्द का शाब्दिक अर्थ है "धर्मत्याग करना" पुराने और नए नियम दोनों ही दूसरे आगमन से पहले बुराई और झूठे शिक्षण की गहनता की पुष्टि करते हैं (तुलना मत्ती 24:24; मरकुस 13:22;
प्रेरितों के काम 20: 29,30; 2 थिस्सलुनीकियों 2:9-12; 2 तीमुथियुस 4: 4)। यह यूनानी शब्द, मत्ती 13; मरकुस 4; और लूका 8 में पाए जाने वाले बीज के दृष्टांत में यीशु के शब्दों को दर्शा सकता है। ये झूठे शिक्षक स्पष्ट रूप से मसीही नहीं हैं, लेकिन वे उन में से आए (तुलना प्रेरितों के काम 20: 29-30; 1यूहन्ना 2:19) हालाँकि, वे अपरिपक्व विश्वासियों को बहकाने और कब्ज़ा करने में सक्षम हैं (तुलना इब्रानियों 3:12)।
धर्मशास्त्रीय प्रश्न यह है कि क्या झूठे शिक्षक कभी विश्वासी थे? इसका जवाब देना मुश्किल है क्योंकि स्थानीय कलीसियाओं में झूठे शिक्षक थे (तुलना 1 यूहन्ना 2:18-19)। अक्सर हमारी धर्मशास्त्रीय या संप्रदाय संबंधी परंपराएँ विशिष्ट बाइबल पाठों के संदर्भ के बिना इस प्रश्न का उत्तर देती हैं (संदर्भ से बाहर पद को उद्धृत करने की पाठ-प्रमाण विधि को छोड़कर, कदाचित किसी के पूर्वाग्रह को साबित करने के लिए)।

B. स्पष्ट विश्वास
1. यहूदा, यूहन्ना 17:12
2. शमौन मैग्नस, प्रेरितों के काम 8
3. मत्ती 7:13-23 में जिनके बारे में बोला गया है
4. मत्ती 13; मरकुस 4; लूका 8 में जिनके बारे में बोला गया है
5. यूहन्ना 8: 31-59 के यहूदी
6. सिकन्दर और हुमिनयुस, 1 तीमुथियुस 1:19-20
7. जो 1 तीमुथियुस 6:21में हैं
8. हुमिनयुस और फिलेतुस, 2 तीमुथियुस 2:16-18
9. देमास, 2 तीमुथियुस 4:10
10. झूठे शिक्षक, 2 पतरस 2:19-22; यहूदा 1:12-19
11. मसीह- विरोधी, 1 यूहन्ना 2:18-19

C. निष्फल विश्वास
1. 1 कुरिन्थियों 3:10-15
2. 2 पतरस 1: 8-11

हम शायद ही कभी इन पाठों के बारे में सोचते हैं क्योंकि हमारे पद्धतिबद्ध धर्मशास्त्र (केल्विनवाद, आर्मिनियाईवाद, आदि) अनिवार्य प्रतिक्रिया को निर्धारित करते हैं। कृपया मेरा पूर्व न्याय न करें क्योंकि मैं इस विषय को लाया हूँ। मेरी चिंता है उचित व्याख्या से सम्बंधित प्रक्रिया। हमें बाइबल को हमसे बोलने देना चाहिए और इसे एक पूर्व निर्धारित धर्मशास्त्र में ढालने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यह अक्सर दर्दनाक और चौंकाने वाला होता है क्योंकि हमारे धर्मशास्त्र का अधिकांश भाग साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक, या संबंधपरक है (माता-पिता, मित्र, पादरी) है, बाइबल-संबंधी नहीं (विशेष विषय: " विश्वास करने," "ग्रहण करने," "कबूल करने/दावा करने," और "बुलाने" का क्या अर्थ है?)। कुछ लोग जो परमेश्वर के लोगों में हैं, वे परमेश्वर के लोगों में नहीं बन जाते हैं (जैसे, रोमियों 9:6)।

6:65 यह यूहन्ना 6:44 के समान उसी सत्य को व्यक्त करता है। पतित मानव जाति अपनी पहल पर परमेश्वर की तलाश नहीं करती है। (तुलना रोमियों 3:9-18 पुराने नियम के उल्लेखों की एक श्रृंखला के लिए जो मानवजाति के पाप और विद्रोह पर जोर देते हैं)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 6:66-71
[66]इस पर उसके चेलों में से बहुत से उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले। [67]तब यीशु ने उन बारहों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" [68]शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनंत जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। [69]और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।" [70]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है?" [71]यह उसने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा था, क्योंकि वही जो बारहों में से एक था, उसे पकड़वाने को था।

6:67 "बारहों" यह प्रेरितों के लिए इस समूहवाचक शब्द का यूहन्ना में पहला प्रयोग है (तुलना यूहन्ना 6:70,71; 20:24)। यूहन्ना 6:13 पर विशेष विषय देखें।

6:68 "शमौन पतरस ने उत्तर दिया" पतरस बारहों के लिए प्रवक्ता है (तुलना मत्ती 16:16)। इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने उसे अपना अगुवा माना (तुलना मरकुस 9:34; लूका 9:46; 22:24)।

▣ **"अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं"** मसीहत दोनों है (1) एक संदेश में निहित सत्य, "अनन्त जीवन की बातें," और (2) एक व्यक्ति, यीशु में व्यक्त सत्य। फिर, सुसमाचार एक संदेश और एक व्यक्ति दोनों है। *pistis* शब्द दोनों से संबंधित हो सकता है(1) एक संदेश (तुलना यहूदा 3,20) और (2) एक व्यक्ति (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:15-16)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

6:69 "हम ने विश्वास किया और जान गए हैं" ये दोनों पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं। यहाँ उद्धार पूर्ण काल में है, जिसका अर्थ है एक भूतकालीन, समाप्त किया हुआ कार्य होना एक स्थिर अस्तित्व बन गया है। सच्चे उद्धार में सारे यूनानी क्रिया काल शामिल है। विशेष विषय: उद्धार के लिए प्रयुक्त यूनानी क्रिया काल यूहन्ना 9:7 पर देखें।

NASB, NRSV,
NJB "परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है"
NKJV "तू मसीह, जीविते परमेश्वर के पुत्र है"
TEV "तू पवित्र जन है जो परमेश्वर से आया है"

इस बिंदु पर एक पांडुलिपि समस्या है। छोटे पाठ (NASB, NRSV, NJB) प्राचीन यूनानी पांडुलिपियों P^{75}, א, B, C*, D, L, और W द्वारा समर्थित हैं। बाद के शास्त्रियों ने स्पष्ट रूप से मार्था द्वारा यूहन्ना 11:27 या पतरस द्वारा मत्ती 16:16 की स्वीकारोक्ति से अतिरिक्त शब्द डाले। UBS^4 छोटे पाठ को "A" दर्जा (निश्चित) देता है।

"परमेश्वर का पवित्र जन" का वाक्यांश पुराने नियम का एक मसीहाई नाम है। लूका 1:35 और प्रेरितों के काम 3:14 में इसका उल्लेख किया गया है। यह वह नाम है जिससे मरकुस 1:24; लूका 4:34 में अशुद्ध आत्मा ने यीशु को संबोधित किया था। विशेष विषय:1यूहन्ना 2:20 पर देखें। यह मत्ती 16 के समान बारहों के द्वारा विश्वास की एक और स्वीकारोक्ति है।

6:70 "क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना?" यह चेलों के दिव्य चुनाव पर एक और बार जोर दिया गया है (तुलना यूहन्ना 6:44 और 65)। यीशु के यूहन्ना 6:67 के प्रश्न पर ध्यान दें। दिव्य चुनाव और मानवीय इच्छा बाइबल के फैलाव में रहना चाहिए। वे एक वाचा के रिश्ते के दो पहलू हैं।

▣ **"तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है"** कितना चौंकाने वाला कथन! यह उन दरकिनार चेलों में से किसी एक को संदर्भित नहीं करता है जो वापस लौट गए (तुलना यूहन्ना 6:66), लेकिन उन बारह चुने हुए प्रेरितों में से एक को जिसने उस पर विश्वास का दावा किया। कई लोगों ने इसे 13:2 या 27 से जोड़ा है। इस पद की हमारी समझ से कई सवाल जुड़े हैं: (1) यीशु ने शैतान को क्यों चुना? और (2) इस संदर्भ में इस शब्द का क्या अर्थ है?

पहला सवाल भविष्यसूचक भविष्यवाणी से संबंध रखता है (तुलना यूहन्ना 17:12; भजन 41:9)। यीशु जानता था कि यहूदा क्या करेगा। यहूदा अक्षम्य पाप का सर्वोच्च उदाहरण है। उसने कई वर्षों तक यीशु को सुनने, देखने और उसके साथ रहने के बाद उसे अस्वीकार कर दिया।

दूसरे प्रश्न के दो संभावित अर्थ हैं।

1. कुछ लोग इसे यहूदा (तुलना यूहन्ना 13:2,27) में प्रवेश करने वाले शैतान (प्रेरितों के काम 10:10 और प्रकाशितवाक्य 20:2 में बिना शब्द वर्ग के शैतान के लिए प्रयुक्त) से संबंधित कहते हैं।
2. संभवतः इस शब्द का प्रयोग जातिगत रूप से किया जा रहा है (1 तीमुथियुस 3:11; 2 तीमुथियुस 3:3; और तीतुस 2:3 के समान कोई शब्द वर्ग नहीं)

यहूदा पुराने नियम के अर्थों में एक अभियुक्त था, जैसा कि शैतान था (यूहन्ना 12:31 में विशेष विषय देखें)। यूनानी शब्द का अर्थ एक निंदक या कथाकार से है। यूनानी शब्द एक यौगिक है, "फेंकने के लिए।"

6:71 "शमौन इस्करियोती" इस शब्द से संबंधित कई सिद्धांत हैं (यह शब्द विभिन्न यूनानी पांडुलिपियों में अलग-अलग तरीके से लिखा गया है)। यह इनका उल्लेख कर सकता है

1. यहूदा का एक शहर, करिय्योत, से एक मनुष्य
2. गलील का एक शहर, कार्तिन से मनुष्य
3. पैसे ले जाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला चमड़े का थैला
4. "गला घोंटने" के लिए इब्रानी शब्द
5. हत्यारे के चाकू के लिए यूनानी शब्द

अगर #1 सच है, वह बारह में वह एकमात्र यहूदावासी था। अगर #5 सच है तो वह शमौन की तरह एक अति उत्साही था।

हाल ही में एक किताब लिखी गई है जो यहूदा को एक सकारात्मक प्रकाश में व्याख्यायित करती है। पुस्तक का शीर्षक है, *Judas, Betrayer or Friend of Jesus?* by William Klassen, Fortress Press, 1996। इसके साथ मेरी समस्या यह है कि यह यूहन्ना के सुसमाचार की टिप्पणियों को गंभीरता से नहीं लेता है।

▣ **"विश्वासघात/ पकड़वाने"** यह यूनानी शब्द व्यापक रूप से अनुवादित है और अधिकांश संदर्भों में निष्पक्ष है। हालाँकि, यहूदा के यीशु को अधिकारियों को सौंपने के संबंध में, यह कुटिल लक्ष्यार्थ ले लेता है। यूहन्ना 18:2 पर टिप्पणी देखें।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. क्या यूहन्ना 6 प्रभुभोज की चर्चा है? क्यों या क्यों नहीं?
2. जब उसने कहा, "मैं जीवन की रोटी हूँ" तो यीशु का दावा क्या था?
3. यीशु ने इस भीड़ को ऐसे चौंका देने वाले बयान क्यों दिए?

यूहन्ना 7

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु के भाइयों का अविश्वास	यीशु के भाइयों का अविश्वास	यीशु, जीवन का जल	यीशु और उसके भाई	यीशु पर्व के लिए यरूशलेम तक जाता है और वहाँ उपदेश देता है
7:1-9	7:1-9	7:1-9	7:1-9	7:1
यीशु झोपड़ियों के पर्व में	स्वर्गीय विद्वान		यीशु आश्रयस्थान के त्यौहार में	7:2-9
7:10-13	7:10-24	7:10-13	7:10-11	7:10-13
			7:12-13	
7:14-24		7:14-18	7:14-15	7:14-24
			7:16-19	
		7:19-24		
			7:20	
			7:21-24	
क्या यही मसीह है?	क्या यह मसीह हो सकता है?		क्या यह मसीहा है?	लोग मसीहा की उत्पत्ति की चर्चा करते हैं
7:25-31	7:25-31	7:25-31	7:25-27	7:25-27
			7:28-29	7:28-29
			7:30-31	7:30
यीशु को पकड़ने के लिए सिपाही भेजे गए	यीशु और धार्मिक अगुवे		यीशु को पकड़ने के लिए अंगरक्षक भेजे गए	यीशु ने अपने प्रस्थान के बारे में पहले से बता दिया
				7:31-34
7:32-36	7:32-36	7:32-36	7:32-34	
			7:35-36	7:35-36
जीवन के जल की नदियाँ	पवित्र आत्मा का वादा		जीवन के जल की धाराएँ	जीवन जल का वादा
7:37-39	7:37-39	7:37-39	7:37-39	7:37-38
				7:39
लोगों के बीच में विभाजन	यह कौन है?		लोगों के बीच में विभाजन	मसीहा की उत्पत्ति पर ताज़ा खोज
7:40-44	7:40-44	7:40-44	7:40-44	7:40-44
आधिकारिक लोगों का अविश्वास	अधिकारियों द्वारा अस्वीकार		यहूदी अधिकारियों का अविश्वास	
7:45-52	7:45-52	7:45-52	7:45	7:45-52

	7:46
	7:47-49
	7:50-51
	7:52

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 1-52 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. अध्याय 5 और 6 का विन्यास फसह का पर्व है। यूहन्ना 10:21 के माध्यम से यूहन्ना 7:1 का विन्यास झोपड़ियों का पर्व है (यूहन्ना 7: 2ff)।

B. झोपड़ियों का पर्व मुख्य रूप से कटनी के लिए एक धन्यवाद प्रदान करना था (बटोरन का पर्व, तुलना निर्गमन 23:16; 34:22)। यह निर्वासन के अनुभव को याद करने का समय भी था (झोपड़ियों का पर्व, तुलना लैव्यव्यवस्था 23:29-44 और व्यवस्थाविवरण 16:13-15)। यह तिशरी (एतानीम) के 15 वें दिन हुआ था, जो हमारे सितंबर के अंत या अक्टूबर की शुरुआत में आता है।

C. अध्याय 7 और 8 में यीशु के सब्त-विच्छेद (यूहन्ना 5:16) के खिलाफ यहूदी प्रतिष्ठान की शत्रुता और YHWH (यूहन्ना 5:18) के साथ एक होने का उसका दावा दिखाया गया है। ध्यान दें कि ग्रंथों ने कितनी बार उनके प्रयासों का उल्लेख किया है
   1. उसे गिरफ्तार करने के लिए, यूहन्ना 7:30,32,44; 10:39
   2. उसे मार डालने के लिए, यूहन्ना 7:1,19,25; 8:37,40 (यूहन्ना 11:53 भी)

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:1-9
[1]इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा; क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिये वह
यहूदिया में फिरना न चाहता था। [2]यहूदियों का झोपड़ियों का पर्व निकट था। [3]इसलिये उसके भाइयों ने उससे
कहा, "यहाँ से यहूदिया को जा, कि जो काम तू करता है उन्हें तेरे चेले वहाँ भी देखें। [4]क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो
प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे। यदि तू यह काम करता है, तो अपने आप को जगत पर प्रकट कर।"
[5]क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे। [6]तब यीशु ने उनसे कहा, "मेरा समय अभी तक नहीं आया,
परन्तु तुम्हारे लिए सब समय है। [7]संसार तुमसे बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है क्योंकि मैं
उसके विरोध में गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। [8]तुम पर्व में जाओ; मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि
अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।" [9]वह उनसे ये बातें कहकर गलील ही में रह गया।

7:1 "इन बातों के बाद" यह कथा को गतिशील रखने का एक साहित्यिक तरीका है, न कि एक अस्थायी चिन्हक (तुलना यूहन्ना 5:1; 6: 1; 7:1; 21:1)।

▣ **"यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे"** यूहन्ना में "यहूदी" का अक्सर एक कुटिल लक्ष्यार्थ है (तुलना यूहन्ना 1:19; 2:18,20; 5:10,15,16; 6:41,52; 7:1,11,13,35; 8: 22,52,57; 9:18,22; 10:24,31,33; 11:8; 19:7,12; 20:19)। उनकी घृणा और हत्या का इरादा कई बार दर्ज किया गया है (तुलना यूहन्ना 5:16-18; 7:19,30,44; 8:37,40,59; 10:31,33,39; 11:8,53)।

7:2 "यहूदियों का झोपड़ियों का पर्व" यह झोपड़ियों का पर्व भी कहलाता था (तुलना लैव्यव्यवस्था 23:34-44; व्यवस्थाविवरण 16:13-17) क्योंकि फसल काटने के दौरान खेतों में छोटी झोपड़ियों में ग्रामीण रहते थे, जो यहूदियों को उनके निर्गमन के अनुभव की याद दिलाते थे। इस पर्व का अनुष्ठान और पूजन पद्धति यूहन्ना 7:1-10:21 में यीशु की शिक्षाओं के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान करती है, जैसा कि फसह पर्व ने अध्याय 5-6 में किया था।

7:3 "उसके भाइयों ने" 2:12 के बाद से यीशु के परिवार का यह पहला उल्लेख है। यह स्पष्ट है कि वे उसके अभिप्राय, विधि या उद्देश्य को नहीं समझे।

▣ **"यहाँ से यहूदिया को जा"** यह तीर्थयात्रियों के वार्षिक कारवां को संदर्भित करता है (तुलना लूका 2:41-44) जिन्होंने गलील को छोड़ दिया और यरूशलेम के लिए अपना मार्ग लिया। याद रखें कि यूहन्ना का सुसमाचार यरूशलेम में यीशु की सेवकाई पर केंद्रित है।

7:4 "प्रसिद्ध" आगे विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: निर्भीकता *(PARRHĒSIA)* (SPECIAL TOPIC: BOLDNESS *(PARRHĒSIA)*)

यह यूनानी शब्द "सारी" (*pan*) और "वाणी" (*rhēsis*) का एक संयुक्त शब्द है। वाणी की स्वतंत्रता या साहस में अक्सर विरोध या अस्वीकृति के बीच निर्भीकता का भाव होता था (तुलना यूहन्ना 7:13; 1 थिस्सलुनीकियों 2:2)।

यूहन्ना के लेखन में (13 बार प्रयुक्त) यह अक्सर एक सार्वजनिक उद्घोषणा को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 18:20, पौलुस के लेखन में भी, कुलुस्सियों 2:15)। हालाँकि, कभी-कभी इसका अर्थ "स्पष्ट रूप से" होता है (तुलना यूहन्ना 10:24; 11:14; 16: 25,29)।

प्रेरितों के काम में प्रेरितों ने यीशु के बारे में उसी तरह (निर्भीकता के साथ) संदेश दिया है जैसा कि यीशु ने पिता और उसकी योजनाओं और वादों के बारे में कहा था (तुलना प्रेरितों के काम 2:29; 4:13,29,31; 9: 27-28; 13:46; 14:3; 18:26; 19:8; 26:26; 28:31)। पौलुस ने प्रार्थना करने के लिए भी कहा कि वह साहसपूर्वक सुसमाचार का प्रचार कर सके (तुलना इफिसियों 6:19; 1 थिस्सलुनीकियों 2:2) और सुसमाचार को जी भी सके (तुलना फिलिप्पियों 1:20)।

मसीह में पौलुस की युगांतविषयक आशा ने उसे इस वर्तमान बुरे युग में सुसमाचार प्रचार करने के लिए साहस और आत्मविश्वास दिया (तुलना 2 कुरिन्थियों 3:11-12)। उसे यह भी विश्वास था कि यीशु के अनुयायी उचित रूप से कार्य करेंगे (तुलना 2 कुरिन्थियों 7:4)।

इस शब्द का एक और पहलू है। इब्रानियों की पुस्तक, मसीह में, विश्वासी की निर्भीकता के अनूठे अर्थ में, परमेश्वर के समीप आने और उससे बात करने के लिए इसका प्रयोग करती है (तुलना इब्रानियों 3:6; 4:16; 10:19,35)। विश्वासियों को पुत्र के माध्यम से पूरी तरह से स्वीकार किया जाता और पिता के साथ अंतरंगता में आने दिया जाता है (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:21)।

यह नये नियम में कई तरह से इसका प्रयोग किया जाता है।

1. एक आत्मविश्वास, निर्भीकता, या आश्वासन जो संबंधित है
   a. मनुष्य (तुलना प्रेरितों के काम 2:29; 4:13,31; 2 कुरिन्थियों 3:12; इफिसियों 6:19)
   b. परमेश्वर (तुलना 1 यूहन्ना 2:28; 3:21; 4:12; 5:14; इब्रानियों 3: 6; 4:16; 10:13)
2. खुलकर, स्पष्ट रूप से, या स्पष्ट रीति से बोलने के लिए (तुलना मरकुस 8:32; यूहन्ना 7: 4,27; 10:24; 11:14; 16:25; प्रेरितों के काम 28:31)
3. सार्वजनिक रूप से बोलने के लिए (तुलना यूहन्ना 7:26; 11:54; 18:20)
4. संबंधित रूप (*parrhēsiazomai*) का प्रयोग कठिन परिस्थितियों के बीच साहसपूर्वक प्रचार करने के लिए किया जाता है (तुलना प्रेरितों के काम 18:26; 19:8; इफिसियों 6:20; 1 थिस्सलुनीकियों 2:2)।

▣ **"यदि"** यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे लेखक के दृष्टिकोण से सही माना जाता है।

▣ **"अपने आप को जगत पर प्रगट कर"** यीशु ने यूहन्ना 7: 4 में उनके "जगत" शब्द के प्रयोग को लिया और यूहन्ना 7:7 में इस पर टिप्पणी की। संसार उसे स्वीकार नहीं कर रहा था और उसके प्रति सहानुभूति भी नहीं थी, लेकिन शत्रुतापूर्ण (तुलना यूहन्ना 15:18-19; 17:14; 1 यूहन्ना 3:13) था क्योंकि उसने उसके विद्रोह और पाप का खुलासा कर दिया था (तुलना यूहन्ना 3:19-20)।

यीशु के भाइयों का यीशु को स्वयं प्रकट करने का तरीका (अर्थात, चमत्कार) यीशु के तरीके (क्रूस) से बहुत अलग था। यह वह जगह है जहाँ यशायाह 55: 8-11 की भविष्यवाणी स्पष्ट दिखाई देती है!

7:5 "क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे" यह लेखक की एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है। जब आप उसी घर में पले बढ़े हों तो यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करना बहुत कठिन रहा होगा (तुलना मरकुस 3:20-21)। यीशु अपने सौतेले भाई-बहनों की चिंता करता था। पुनरुत्थान के बाद उसके प्रगट होने का एक उद्देश्य स्वयं को उनपर प्रकट करना था। उन्हें विश्वास हो गया (तुलना प्रेरितों के काम 1:14)! याकूब यरूशलेम कलीसिया का अगुवा बन गया। और याकूब और यहूदा दोनों ने नये नियम के सिद्धांत में शामिल पुस्तकों को लिखा।

7:6 "मेरा समय अभी तक नहीं आया" शब्द "समय" (*kairos*) केवल यहीं (दो बार) और यूहन्ना 7: 8 में यूहन्ना के सुसमाचार और पत्रों में पाया जाता है। BAGD तीन मूल लक्ष्यार्थ देता है।

1. - एक प्रसन्नता का समय (यानी, 2 कुरिन्थियों 6: 2)
   - उपयुक्त समय (यानी, लूका 4:13)
   - एक नियत समय (यानी, मरकुस 13:33; प्रेरितों के काम 3:20; 1 पतरस 1:11)
2. - एक उचित या अनुकूल समय
   - उचित समय (यानी मत्ती 24:45; लूका 1:20)
   - निश्चित समय (यानी, यूहन्ना 7:8; 2 तीमुथियुस 4:6)
3. - एक युगांत विषयक समय (यानी, लूका 21:8; रोमियों 13:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1; 2 थिस्सलुनीकियों 2:6)

क्रमांक 2 और 3 में एक अर्थ-संबंधी अधिव्यापन है।

यीशु ने अपने ध्येय को समझा (तुलना 12:23; 13:1; 17:1-5)। इन सुसमाचार की घटनाओं को प्रकट करने के लिए एक दिव्य समय सारिणी थी (तुलना लूका 22:22; यूहन्ना 7:30; 8:20; प्रेरितों के काम 2:23; 3:18; 4:28)।

7:7 "संसार" विशेष विषय: *Kosmos* यूहन्ना 14:17 पर देखें।

7:8

NASB	**"स्वयं पर्व में जाओ; मैं पर्व में नहीं जाता हूँ"**
NKJV	**"तुम पर्व में जाओ; मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता"**
NRSV, NJB	**"स्वयं इस त्यौहार में जाओ। मैं इस त्यौहार में नहीँ जा रहा हूँ"**
TEV	**"तुम त्यौहार में जाओ। मैं इस त्यौहार में नहीं जा रहा हूँ"**

कई प्राचीन यूनानी पांडुलिपियाँ (א, D,और K) में "अभी" क्रिया विशेषण नहीं है। ऐसा लगता है कि यूहन्ना 7: 8 और 10 के बीच स्पष्ट विरोधाभास को दूर करने के लिए प्रारंभिक लेखकीय प्रयास किया गया है। यह क्रिया विशेषण MSS P^{66}, P^{75}, B, L, T और W (NKJV, बीसवीं सदी के नए नियम, NIV) में शामिल है।

इस संक्षिप्त विवरण को इस प्रकार समझा जा सकता है

1. मैं आपके साथ नहीं जा रहा हूँ (न ही आपके उद्देश्यों के लिए)
2. मैं आठ दिवसीय पर्व के बीच में जा रहा हूँ (पर्व के प्रतीकों के माध्यम से प्रकट करने के लिए)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:10-13

10परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए तो वह स्वयं भी, प्रगट में नहीं, परन्तु मानो, गुप्त रूप से गया। 11यहूदी
पर्व में उसे यह कहकर ढूँढने लगे, "वह कहाँ है?" 12और लोगों में उसके विषय में चुपके चुपके बहुत सी बातें हुईं:
कुछ कहते थे, "वह भला मनुष्य है।" और कुछ कहते थे, "नहीं, वह लोगों को भरमाता है।" 13तौभी यहूदियों के
डर के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर नहीं बोलता था।

7:11 "यहूदी" इस अध्याय में चार अलग-अलग समूह हैं जो यीशु के साथ बातचीत करते हैं।
1. उसके भाई
2. "यहूदी," जो धार्मिक अगुवों को संदर्भित करता है
3. "लोग," जो झोपड़ियों के पर्व में जाने वाले तीर्थयात्रियों को संदर्भित करता है
4. "यरूशलेम के लोग," जो स्थानीय लोग थे जो सन्हेद्रयौन और यीशु को मार डालने की उनकी योजनाओं को जानते थे

7:12 "और लोगों के बीच में उसके विषय में चुपके चुपके बहुत सी बातें हुईं" यह वही है जो सुसमाचार हर भीड़ में करता है। यह मानव जाति के भीतर मौजूद अलग-अलग आत्मिक क्षमताओं और समझ के स्तरों को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 7:40-44)।

▣ **"वह लोगों को भरमाता है"** क्रिया *planaō* का प्रयोग इनके लिए किया गया है
1. झूठे शिक्षकों (यानी, मत्ती 24:11; 2 तीमुथियुस 3:13; 1 यूहन्ना 1:8; 2:26; 3:7)।
2. झूठे मसीहा (यानी, मत्ती 24:4-5,24; यूहन्ना में यीशु कौन है यहूदी इसके के बारे में क्या सोचते थे। (यूहन्ना 7:12,47; मत्ती 27:63)
3. खुद को धोखा देने वाले लोग (तुलना 1 कुरिन्थियों 3:18; 1 यूहन्ना 1:8) या
4. धोखा दिया जा रहा है (तुलना 1 कुरिंथियों 6: 9; 15:33; गलातियों 6: 7; यूहन्ना 1:16)

इस शब्द का प्रयोग उन ग्रहों के लिए किया गया था जो नक्षत्रों की नियमित कक्षाओं में परिक्रमा नहीं करते हैं। उन्हें "पथिक" कहा जाता था।

7:13 "यहूदी" यह पूरी भीड़ यहूदी थी। यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि यूहन्ना के इस शब्द का विशेष प्रयोग यरूशलेम में धार्मिक अगुवों को संदर्भित करता है। यूहन्ना 7:1पर टिप्पणी देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:14-18

[14]जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मंदिर में जाकर उपदेश करने लगा। [15]तब यहूदियों ने चकित होकर कहा, "इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?" [16]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है। [17]यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है या मैं अपनी ओर से कहता हूँ। [18]जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उस में अधर्म नहीं।

7:14 "जब पर्व के आधे दिन बीत गए" यीशु का इस क्षण तक इंतजार करने का सटीक कारण अनिश्चित है, लेकिन कोई यह अनुमान लगा सकता है कि इससे तीर्थयात्रियों और कस्बों के लोगों को उसके और उसकी सेवकाई पर चर्चा करने का समय मिल गया।इसने यहूदी अगुवों को अपनी शत्रुता खुलेआम प्रकट करने के लिए समय मिल गया (तुलना यूहन्ना 7:13)।

▣ **"उपदेश"** यीशु के बोलने की घटनाओं की विशेषता है
1. शिक्षण, मत्ती 4:23; 5: 2,19; 7:29, आदि यूहन्ना 6:59; 7:14,28,35; 8:20,28
2. उपदेश, लूका 4:18; 7:22; 9:6; 20:1

ऐसा प्रतीत होता है कि यह समानार्थी रूप से यीशु को परमेश्वर की सच्चाइयाँ उसकी मानवीय सृष्टि को बताते हुए संदर्भित करता है। प्रकटीकरण हमेशा सूचित करने और सुधारने के लिए होता था।इसने जीवनशैली की प्राथमिकताओं को बदलने के साथ एक निर्णय की माँग की। सत्य सब कुछ बदल देता है!

7:15 "इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?" इसका सीधा मतलब यह है कि वह आधिकारिक रब्बियों के विद्यालय में से किसी एक में भी नहीं गया था, और न ही वह किसी एक प्रसिद्ध रब्बी का चेला था। शब्द "इसे" के प्रयोग में अनादर का संकेतार्थ है (तुलना यूहन्ना 18: 17,29)।

यीशु के शिक्षण ने अक्सर उसके श्रोताओं को आश्चर्यचकित किया (तुलना मरकुस 1:21-22; लूका 4:22) इनके कारण (1) विषय वस्तु और (2) रूप। अन्य रब्बियों ने एक दूसरे को उद्‌धृत किया; यीशु ने परमेश्वर को उद्‌धृत करने का दावा किया!

7:16 यीशु ने फिर से न केवल पिता के प्रति अपनी अधीनता की ओर ध्यान खींचा (यूहन्ना 5:19 पर टिप्पणी देखें), बल्कि अपने पिता के विषय में उसके अनूठे ज्ञान की ओर भी। उनके पास सांसारिक शिक्षक थे; उसके पास स्वर्गीय शिक्षक था।

7:17 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावना या संभावित कार्य। यह सुसमाचार के सार्वभौमिक प्रस्ताव (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16) और परमेश्वर की संप्रभुता (तुलना यूहन्ना 6: 44,65) का विरोधाभास है। आत्मा द्वारा दिल खोला जाना चाहिए (तुलना यूहन्ना 16: 8-13)।

7:18 यीशु ने पतित मानव जाति के विपरीत अपनी विशिष्टता का दावा किया है: (1) वह अपनी महिमा नहीं चाहता है; (2) वह पिता की महिमा चाहता है; (3) वह सत्य है; और (4) वह पाप रहित है।

▣ **"उसकी बड़ाई"** यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"उसमें अधर्म नहीं"** यीशु हमारी जगह मर सकता था क्योंकि उसे अपने पाप के लिए मरने की आवश्यकता नहीं थी (2 कुरिंथियों 5:21)। यीशु की पापहीनता एक महत्वपूर्ण धर्मशास्त्रीय मुद्दा है। यह मुद्दा अक्सर और अलग-अलग तरीकों से व्यक्त किया जाता है।

1. लूका 23:41
2. यूहन्ना 6:69; 7:18; 8:46; 14:30
3. 2 कुरिन्थियों 5:21
4. इब्रानियों 4:15; 7:26; 9:14
5. 1 पतरस 1:19, 2:22 (यशायाह 53:9)
6. 1 यूहन्ना 2:29; 3:5,7

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:19-24
[19]"क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?" [20]लोगों ने उत्तर दिया, "तुझ में दुष्टात्मा है! कौन तुझे मार डालना चाहता है?" [21]यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैंने एक काम किया, और तुम सब आश्चर्य करते हो। [22]इसी कारण से मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है (यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है,परन्तु बापदादों से चली आई है), और तुम सब्त के दिन तुम मनुष्य का खतना करते हो। [23]जब सब्त के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा की व्यवस्था की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों इसलिये क्रोध करते हो कि मैंने सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया? [24]मुँह देखा न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो।"

7:19 व्याकरणिक संरचना "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करती है।

▣ **"तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता"** यह इन यहूदियों के लिए एक चौंकाने वाला कथन रहा होगा, जो यरूशलेम में एक अपेक्षित पर्व में भाग ले रहे थे।

मूसा के कानून ने पूर्व-निर्धारित हत्या पर स्पष्ट रूप से प्रतिबंध लगा दिया था, फिर भी यह वही है जिसकी योजना अगुवे कर रहे थे। स्थानीय लोग यह जानते थे परन्तु उनकी योजनाओं को रोकने या शिकायत करने के लिए तैयार नहीं थे।

▣ **"तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?"** यूहन्ना 7:20 का सवाल धार्मिक अगुवों की ओर से नहीं आता है, लेकिन उन तीर्थयात्रियों की भीड़ से जो उसे मार डालने के षड्यंत्र के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी। बाद में, यूहन्ना 7:25 में, यरूशलेम के लोगों ने यीशु को मारने की साजिश के बारे में जाना।

धार्मिक अगुवों ने भी यीशु की शक्ति और अंतर्दृष्टि को समझाने के लिए उसमेँ दुष्टात्मा होने का आरोप लगाया (तुलना मत्ती 9:34; 11:18; 12:24; मरकुस 3:22-30; यूहन्ना 8:48-52; 10: 20-21) .

7:20 "तुझ में दुष्टात्मा है" यह उन सभी के लिए स्पष्ट है, जो यीशु के संपर्क में आए थे कि उसके पास आध्यात्मिक शक्ति थी। सवाल यह था कि यह शक्ति कहाँ से आई थी? यहूदी अगुवे यीशु के "चिन्हों/चमत्कारों" से इनकार नहीं कर सकते थे, इसलिए उन्होंने शैतान और दुष्टात्मा को इस शक्ति का श्रेय दिया (तुलना यूहन्ना 8: 48-49,52; 10:20)।

इस संदर्भ में झोपड़ियों के पर्व में सम्मिलित होने वाले तीर्थयात्रियों की भीड़ उसी वाक्यांश का प्रयोग करती है, लेकिन एक भिन्न अर्थ में। वे दावा कर रहे हैं कि यीशु एक गैर-तर्कसंगत, विक्षिप्त रूप में काम कर रहा है।

विशेष विषय: दुष्टात्माएँ (अशुद्ध आत्माएँ) (SPECIAL TOPIC: THE DEMONIC (UNCLEAN SPIRITS))

A. प्राचीन लोग जीववादी थे। उन्होंने मानव व्यक्तित्व के लक्षणों का श्रेय प्रकृति के बलों, प्राणियों और प्राकृतिक वस्तुओं को दिया। मानव जाति के साथ इन आत्मिक अस्तित्वों की पारस्परिक क्रिया के माध्यम से जीवन की व्याख्या की गई।

B. समय के साथ यह मानवीकरण बहुदेववाद (कई ईश्वर) बन गया। आमतौर पर दुष्टात्मा (*genii*) गौण देवता या गंधर्व (अच्छे या बुरे) थे जो व्यक्तिगत मानव जीवन को प्रभावित करते थे।
   1. मेसोपोटामिया, अराजकता और संघर्ष
   2. मिस्र, आदेश और कार्य
   3. कनान, W. F. Albright's *Archeology and the Religion of Israel*, Fifth Edition, pp. 67-92 देखें।

C. पुराना नियम गौण देवताओं, स्वर्गदूतों, या दुष्टात्माओं के विषय को खींचता या विकसित नहीं करता है, शायद इसकी कठोर एकेश्वरवाद के कारण (विशेष विषय: एकेश्वरवाद देखें, तुलना निर्गमन 8:10; 9:14; 15:11; व्यवस्थाविवरण 4: 35,39; 6:4; 33:26; भजनसंहिता 35:10; 71:19; 86: 8; यशायाह 46:9; यिर्मयाह 10: 6-7; मीका। 7:18। । यह मूर्तिपूजक राष्ट्रों के झूठे ईश्वरों का उल्लेख करता है (*Shedim*, BDB 993, तुलना व्यवस्थाविवरण 32:17; भजनसंहिता 106: 37) और यह उनमें से कुछ का नामकरण या मानवीकरण करता है।
   1. *Se'im* (व्यभिचारी या रोंआर दुष्टात्मा, BDB 972 III, KB 1341 III, तुलना लैव्यव्यवस्था 17:7; 2 इतिहास 11:15; यशायाह; 13:21; 34:14)
   2. *Lilith* (स्त्री, रात्रि की एक लुभावनेवाली डायन, BDB 539, KB 528, तुलना यशायाह 34:14।
   3. *Mavet* (मृत्यु के लिए इब्रानी शब्द अधोलोक के कनानी देवता, Mot के लिए प्रयुक्त, BDB 560, KB560, तुलना यशायाह 28:15,18; यिर्मयाह 9:21; और संभवतः व्यवस्थाविवरण 28:22।
   4. *Resheph* (प्लेग, आग या ओलावृष्टि, BDB 958, KB 958, तुलना व्यवस्थाविवरण 32:24; भजनसंहिता 78:48; हबक्कूक 3:5)
   5. *Dever* (महामारी, BDB 184, तुलना भजनसंहिता 91:5-6; हबक्कूक 3:5)
   6. *Az'azel* (नाम अनिश्चित, लेकिन संभवतः एक रेगिस्तानी दुष्टात्मा या स्थान का नाम, BDB 736, KB 736, तुलना लैव्यव्यवस्था 16:8,10,26)।

   (ये उदाहरण *Encyclopaedia Judaica*, vol 5, p. 1523 से लिए गए हैं।)

   हालांकि, पुराने नियम में YHWH की ओर से कोई द्वैतवाद या स्वर्गदूत संबंधी स्वतंत्रता नहीं है। शैतान YHWH (तुलना Job 1-2; Zechariah 3) का सेवक है, स्वतंत्र, स्व-निर्देशित शत्रु नहीं (तुलना A. B. Davidson, *A Theology of the Old Testament*, pp. 300-306)।

D. यहूदी धर्म बेबीलोनियाई निर्वासन (586-538 ईसा पूर्व) के दौरान विकसित हुआ। यह धर्मशास्त्रीय रूप से पारसी मत के मानवीकृत द्वैतवाद से प्रभावित था, एक अच्छा उच्च देवता जिसे *Mazda* या *Ormazd* कहा जाता था और एक दुष्ट विरोधी जिसे *Ahriman* कहा जाता था। इसने निर्वासन पश्चात के यहूदी धर्म के भीतर YHWH और उसके स्वर्गदूतों और शैतान और उनके स्वर्गदूतों या दुष्टात्माओं के बीच द्वैतवाद की अनुमति दी।

   यहूदी धर्म का अवतरित दुष्टता का धर्मशास्त्र Alfred Edersheim's *The Life and Times of Jesus the Messiah*, vol. 2, appendix XIII (pp. 749-863) और XVI (pp. 770-776) में समझाया गया और अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। यहूदी धर्म ने तीन तरीकों से दुष्टता का मानवीकरण किया है।
   1. शैतान या *Sammael*
   2. मानव जाति के भीतर बुरी मंशा (*yetzer hara*)
   3. मृत्यु दूत

   एडर्सहाइम इस प्रकार इनकी विशेषता बताते हैं
      1. अभियोगी
      2. प्रलोभक
      3. दण्ड देनेवाला (vol. 2, p. 756)

   निर्वासन पश्चात के यहूदी धर्म और नये नियम की प्रस्तुति और बुराई की व्याख्या के बीच एक स्पष्ट धर्मशास्त्रीय अंतर है।

E. नया नियम, विशेष रूप से सुसमाचार, दुष्ट आत्मिक जीवों के अस्तित्व और मानवता और YHWH (यहूदी धर्म में, शैतान मानवजाति का शत्रु था, परमेश्वर का नहीं) के विरोध का दावा करता है। वे परमेश्वर की इच्छा, शासन और राज्य का विरोध करते हैं।

यीशु ने इन राक्षसी जीवों का सामना किया और उन्हें, जिन्हें (1) अशुद्ध आत्माएँ (तुलना लूका 4:36; 6:18) या (2) बुरी आत्माएँ (तुलना लूका 7:21; 8: 2), मनुष्यों में से निष्कासित किया । यीशु ने स्पष्ट रूप से बीमारी (शारीरिक और मानसिक) और दुष्टात्माग्रस्त के बीच अंतर किया। उसने इन दुष्ट आत्माओं को पहचानने और निकलने के द्वारा अपनी सामर्थ्य और आत्मिक अंतर्दृष्टि का प्रदर्शन किया। उन्होंने अक्सर उसे पहचान लिया और उसे संबोधित करने का प्रयास किया, लेकिन यीशु ने उनकी गवाही को अस्वीकार कर दिया, उन्हें चुप्प किया और उन्हें निष्कासित कर दिया। जादू-टोना शैतान के राज्य की हार का प्रतीक हैं।

इस विषय पर नये नियम के प्रेरितों के पत्रों में जानकारी का आश्चर्यजनक अभाव है। जादू-टोना को कभी भी आध्यात्मिक वरदान के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है, और न ही भविष्य की सेवकों की पीढ़ियों या विश्वासियों के लिए इसकी कोई कार्यपद्धति या प्रक्रिया दी जाती है।

F. दुष्ट असली है; दुष्ट व्यक्तिगत है; दुष्ट मौजूद है। न तो इसकी उत्पत्ति और न ही इसके उद्देश्य का पता चलता है। बाइबल इसकी वास्तविकता का उल्लेख करती है और आक्रामक रूप से इसके प्रभाव का विरोध करती है। वास्तविकता में कोई सर्वश्रेष्ठ द्वैतवाद नहीं है।परमेश्वर का पूर्ण नियंत्रण है; दुष्ट को पराजित किया गया है और उसका न्याय किया गया है और उसे सृष्टि से हटा दिया जाएगा।

G. परमेश्वर के लोगों को दुष्ट का विरोध करना चाहिए (तुलना याकूब 4:7)। उन्हें इसके द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता (तुलना 1 यूहन्ना 5:18), लेकिन उन्हें लुभाया जा सकता है और उनकी गवाही और प्रभाव को नुकसान पहुँचाया जा सकता है (तुलना इफिसियों 6:10-18)। दुष्टता मसीही के विश्वदृष्टिकोण का एक प्रकट हिस्सा है। आधुनिके मसीहियों को दुष्टता को पुनर्परिभाषित करने (रुडोल्फ बाल्टमैन का गैर-पुराणिक करना); दुष्टता का अमानवीकरण करने (पॉल टिलिच की सामाजिक संरचनाएँ), न ही इसे मनोवैज्ञानिक रूप से पूरी तरह समझाने की कोशिश करने का कोई अधिकार है (सिगमंड फ्रायड)। इसका प्रभाव व्यापक, लेकिन पराजित है। विश्वासियों को मसीह की विजय में चलने की आवश्यकता है!

7:22

NASB, NKJV	**"(यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है, परन्तु बापदादों से चली है"**
NRSV	**"(यह, निःसंदेह, मूसा से नहीं, बल्कि कुलपिताओं से है)"**
TEV	**"(हालाँकि यह मूसा नहीं परन्तु तुम्हारे पूर्वज थे जिन्होंने इसे शुरू किया)"**
NJB	**"-ऐसा नहीं कि यह उससे शुरू हुआ, यह कुलपिता तक जाता है-"**

खतने का संस्कार मूसा के नियम से शुरू नहीं हुआ था (तुलना निर्गमन 12:48; लैव्यव्यवस्था 12: 3), लेकिन अब्राहम को YHWH के साथ विशेष वाचा के चिन्ह के रूप में दिया गया था (तुलना उत्पत्ति 17: 9-14; 21: 4; 34; 34:22)।

▣ **"और तुम सब्त के दिन मनुष्य का खतना करते हो"** यीशु के तर्क का सार यह था कि वे अपने सब्त संबंधी नियमों को एक तरफ रख देने के इच्छुक थे ताकि एक बालक का खतना किया जा सके (तुलना *Shab* 132a; *Sabh.* 18:3; 19: 1-6), लेकिन अपने सब्त संबंधी नियमों को एक तरफ रखने के इच्छुक नहीं थे ताकि एक मनुष्य को चंगा किया जा सके। यह अहसास करना महत्वपूर्ण है कि इस पूरे भाग में यीशु रब्बियों के यहूदी धर्म के तर्क और विचार शैली का प्रयोग कर रहे थे।

7:23 "यदि" यह एक प्रथम श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य जो लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है।

▣ **"तो तुम मुझ पर क्यों इसलिये क्रोध करते हो कि मैं ने सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया"** यह या तो यूहन्ना 5:1-9 में दर्ज यीशु की चंगाई को अथवा पर्व के दौरान एक ऐसी चंगाई को संदर्भित करता है जो दर्ज नहीं की गई है।

यूनानी शब्द "क्रोधित" (*cholaō*) एक दुर्लभ शब्द है जो केवल यहाँ नये नियम में पाया जाता है। यह यूनानी साहित्य (BAGD, p. 883 और MM, p. 689) में बहुत कम पाया जाता है। यह "पित्त" (*cholē*, तुलना मत्ती 27:34) शब्द से संबंधित है। यीशु के द्वारा इस शब्द (यानी, इसका अर्थ) का प्रयोग अनिश्चित है। यह इस अर्थ में एक "दिव्य क्रोध" को दर्शाता है जो उन्हें लगता था कि वे परमेश्वर की इच्छा और परमेश्वर के नियमों का बचाव कर रहे हैं, जिनका यीशु उल्लंघन कर रहा था।

7:24 "मुँह देखा न्याय न करो, परन्तु ठीक ठीक न्याय करो" यह नकारात्मक प्रत्यय के साथ वर्तमान आज्ञार्थक है, जिसका अर्थ है प्रक्रिया में एक कार्य को रोकना। इसके बाद अनिर्दिष्टकाल आज्ञार्थक है, जिसका तात्पर्य अत्यावश्यकता से है। यह यशायाह 11:3 की ओर एक संकेत हो सकता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:25-31
[25]तब कुछ यरूशलेमवासी कहने लगे, "क्या यह वही नहीं जिसे मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है?
26परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उससे कुछ नहीं कहता। क्या सरदारों ने सच सच
जान लिया है कि यही मसीह है? [27]इसको तो हम जानते हैं कि यह कहाँ का है;परन्तु मसीह जब आएगा तो कोई न
जानेगा कि वह कहाँ का है।" [28]तब यीशु ने मंदिर में उपदेश देते हुए पुकार के कहा, "तुम मुझे जानते हो, और यह
भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं तो आप से नहीं आया, परन्तु मेरा भेजने वाला सच्चा है, उसको तुम नहीं
जानते। [29]मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसकी ओर से हूँ, और उसी ने मुझे भेजा है।" [30]इस पर उन्होंने उसे
पकड़ना चाहा, तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला क्योंकि उसका समय अभी तक न आया था। [31]फिर भी भीड़
में से बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे, "मसीह जब आएगा तो क्या इससे अधिक
आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इसने दिखाए?"

7:25 "क्या यह वही नहीं जिसे मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है?" इस सवाल की व्याकरणिक संरचना एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करती है (तुलना यूहन्ना 5:47; 7:19)। यूहन्ना 7:36 के माध्यम से सवालों की एक श्रृंखला में यह पहला है।

7:26

NASB, REV,	
NET	**"वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है"**
NKJV	**"वह निर्भीकता से बातें करता है"**
NRSV, NJB	**"वह खुलकर बातें कर रहा है"**

यूहन्ना 7: 4 के लिए विशेष विषय: निर्भीकता (*parrhēsia*) देखें।

NASB	**"शासक वास्तव में नहीं जानते हैं कि यह मसीह है, क्या वे जानते हैं"**
NKJV	**"क्या शासक वास्तव में जानते हैं कि यही सच में मसीह है"**
NRSV	**"क्या सरदारों ने सच सच जान लिया है कि यही मसीह है"**
TEV	**"क्या वे वास्तव में जानते हैं कि यह मसीह है"**
NJB	**"क्या सरदारों ने पहचान लिया है कि वह ख्रिस्त है"**

यह व्याकरणिक संरचना एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करती है। हालाँकि, यह एक संभावना व्यक्त करती है (तुलना यूहन्ना 1:31; 4:29)।

7:27 "हम जानते हैं कि यह कहाँ का है, परन्तु मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है" यह मलाकी 3:1 पर आधारित एक रब्बियों के मसीहाई परंपरा को संदर्भित करता है कि मसीहा अचानक मंदिर में प्रकट होगा। यह I हनोक 48:6 और IV एज्रा 13: 51-52 में पाया जाता है।

7:28 इस पद में यीशु ने दो कथन दिए हैं।

1. कि परमेश्वर ने उसे भेजा (तुलना यूहन्ना 3:17,34; 5: 36,38; 6:29; 7:29; 8:42; 10:36; 11:42; 17: 3,18,21,23,25; 20:21)
2. कि वे परमेश्वर को नहीं जानते (तुलना यूहन्ना 5:37,42; 8:19,27,54-55; 16:3)

यूहन्ना रिकॉर्ड करता है कि यीशु ने "पुकारकर कहा" (तुलना यूहन्ना 7:37; 12:44; मत्ती 8:29)। यीशु ने अपनी आवाज को ऊँचा उठाया ताकि वह सुनी जा सके। एक अर्थ में, यह यीशु के प्रारंभिक "आमीन" या "आमीन, आमीन" जैसे साहित्यिक अर्थ में कार्य करता है। वह चाहता था कि इन विडंबनापूर्ण कथनों पर जोर दिया जाए! पद 29 समस्या को दर्शाता है! वे सोचते हैं कि वह गलील से है (तुलना यूहन्ना 7:41), लेकिन वास्तव में, वह स्वर्ग से है!

▣ **"मेरा भेजनेवाला सच्चा है"** पिता सत्य है (तुलना यूहन्ना 3:33; 8:26; 1 यूहन्ना 5:20) और वैसे ही पुत्र भी (तुलना यूहन्ना 7:18; 8:16)। यूहन्ना 6:55 पर विशेष विषय देखें।

7:29 "मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उसकी ओर से हूँ, और उसी ने मुझे भेजा है" यह यूहन्ना में ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का एक और उदाहरण है। इस कथन को यहूदी अगुवों ने ईश निंदा माना और यीशु को मार डालने की आवश्यकता की पुष्टि की। यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना (*Apostellō*) देखें।

7:30 "उन्होंने उसे पकड़ना चाहा" यह एक अपूर्ण काल क्रिया है जिसका तात्पर्य है (1) उन्होंने उसे पकड़ने का प्रयास करना शुरू किया या (2) उन्होंने बार-बार उसे गिरफ्तार करने की कोशिश की लेकिन वे उन तीर्थयात्रियों के बीच में मारपीट नहीं करना चाहते थे जो उसे मसीहा मानते थे।

▣ **"क्योंकि उसका समय अब तक न आया था"** यह एक बार-बार आने वाला भविष्य-सूचक मुहावरा है जो एक दिव्य समय सारिणी का करता है (तुलना यूहन्ना 2:4; 7: 6,30; 8:20; 12: 23,27; 13:1; 17:1)।

7:31 "फिर भी भीड़ में से बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया" यह यीशु पर सच्चा विश्वास था, भले ही यह उसके मसीहाई कार्य के बारे में गलत धारणाओं से भरा हुआ था। किसी को भी "संपूर्ण" विश्वास नहीं है (तुलना नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद, बारह)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

ऐसा हमेशा होता है जब सुसमाचार प्रस्तुत किया जाता है। कुछ विश्वास करते हैं, कुछ संदेह करते हैं, और कुछ गुस्सा करते हैं। यहाँ इस रहस्य का प्रतिच्छेदन है

1. दिव्य चुनाव
2. मानवीय पापमयता

यहाँ एक रहस्य है। मैं हमेशा इतने प्रकाश की उपस्थिति में भी अविश्वास से हैरान हूँ। यह संभवतः परिवार के सदस्यों को के दूसरे के विरोध में करने के बारे में यीशु के शब्दों की उत्पत्ति है। सुसमाचार कुछ के लिए शांति और दूसरों के लिए संघर्ष लाता है!

▣ **"जब मसीह आएगा तो क्या इससे अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इसने दिखाए?"** यूनानी व्याकरणिक संरचना से "नहीं" उत्तर की अपेक्षा है।

A Theology of the New Testament, George E. Ladd में यीशु में विश्वास को प्रोत्साहित करने के लिए "चिन्ह" के प्रयोग पर एक दिलचस्प टिप्पणी है:

"चिन्हों का विश्वास से संबंध का प्रश्न आसान नहीं है, क्योंकि आँकड़े दो अलग-अलग दिशाओं में देखने लगते हैं। कभी-कभी चिन्हों को यीशु में विश्वास की ओर ले जाने के लिए रचा जाता है (2:23; 6:14; 7:31; 10:42)। दूसरी तरफ, ऐसे लोग भी थे जिन्होंने चिन्हों को देखा था और विश्वास नहीं करते थे (6:27; 11:47; 12:37)। इसके अलावा, इस अवसर पर यीशु ने यहूदियों को फटकार लगाई क्योंकि जब तक वे चिन्ह नहीं देख लेते, वे विश्वास नहीं करते हैं (4:48; 6:30)। इसका उत्तर चिन्हों और विश्वास के बीच एक प्रकार के तनाव में मिलना चाहिए। चिन्हों और यीशु के लिए उनकी गवाही के वास्तविक अर्थ को पहचानने के लिए विश्वास की आवश्यकता है; जिन लोगों को कोई विश्वास नहीं था, चिन्ह उनके लिए केवल निरर्थक कौतुक हैं। जो लोग प्रतिक्रियाशील हैं, उनके लिए चिन्ह विश्वास की पुष्टि और उसके गहरे होने के साधन हैं। यह स्पष्ट है कि यीशु के चिन्ह विश्वास करने के लिए मजबूर करने के लिए नहीं बनाए गए थे। दूसरी ओर, यीशु के कार्य उन लोगों के लिए पर्याप्त गवाही हैं जो यह देखने में सक्षम हैं कि उसके ध्येय में क्या हो रहा है। यीशु के काम अपने पापाचार में अंधे लोगों की निंदा और पुष्टि करने के साधन के रूप में कार्य करते हैं "(पृ. 274)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:32-36

32फरीसियों ने लोगों को उसके विषय में ये बातें चुपके चुपके करते सुना; और प्रधान याजकों और फरीसियों ने उसे पकड़ने को सिपाही भेजे। 33इस पर यीशु ने कहा, "मैं थोड़ी देर तक तुम्हारे साथ हूँ, तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा। 34तुम मुझे ढूँढोगे, परन्तु नहीं पाओगे; और जहाँ मैं हूं, वहाँ तुम नहीं आ सकते।" 35इस पर यहूदियों ने आपस में कहा,"यह कहां जाएगा कि हम इसे न पाएँगे?क्या वह उनके पास जाएगा जो यूनानियों में तितर बितर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा? 36यह क्या बात है कि उसने कही, कि 'तुम मुझे ढूँढोगे, परन्तु न पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते'?"

7:32 "प्रधान याजक और फरीसी" यह सन्हेद्रयौन के सदस्यों को संदर्भित करता है (यूहन्ना 3:1 पर विशेष विषय देखें)। वहाँ केवल एक महायाजक था, लेकिन रोमी कब्जे के समय, कार्यालय कई अमीर, यहूदी परिवारों द्वारा सौदेबाजी के लिए एक राजनीतिक ओहदा बन गया था और परिवार के एक सदस्य से दूसरे सदस्य को पारित किया जाता था।

▣ **"उसे पकड़ने को सिपाही भेजे"** यह "मंदिर पुलिस" को संदर्भित करता है जो लेवी होंगे। उन्हें मंदिर क्षेत्र के बाहर ही सीमित अधिकार था (तुलना यूहन्ना 7:45,46; 18:3,12,18,22)।

7:33 "मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ" यह यूहन्ना में एक आम वाक्यांश है (तुलना यूहन्ना 12:35; 13:33; 14:19; 16:16-19)। यीशु जानता था कि वह कौन था, उसका क्या होगा, और कब (तुलना यूहन्ना 12:23; 13:1; 17:1-5)।

▣ **"तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा"** यह यीशु के छुटकारे के ध्येय के समापन की घटनाओं को संदर्भित करता है: क्रूस पर चढ़ाया जाना, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, और पूर्व-विद्यमान महिमा में पुनःस्थापन (तुलना यूहन्ना 17:1-5; प्रेरितों के काम 1)।

7:34 यह शब्द ऊपरी कक्ष में चेलों के साथ हुई यीशु की चर्चा के काफी समान है (13:33; तुलना यूहन्ना 7:36 और 8:21)। हालांकि, यहाँ यह अविश्वासियों (यानी, लोगों, यरुशलेमवासियों और यहूदी नेतृत्व) को संदर्भित करता है।

7:35-36 "क्या वह उनके पास जाएगा जो यूनानियों में तितर बितर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा" यूनानी व्याकरण संरचना एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करती है। यह विडंबना का एक और प्रयोग है। यह हमेशा से परमेश्वर की इच्छा रही है (तुलना उत्पत्ति 3:15; 12:3; यशायाह 2:2-4)। झोपड़ियों के पर्व के दौरान, संसार के देशों के लिए सत्तर बैल अर्पण किये गए थे। यहूदियों को अन्यजातियों के लिए प्रार्थना करने और प्रकाश लाने के लिए बाध्य किया गया था। यह इस कथन के सांस्कृतिक विन्यास को दर्शाता है। "यूनानियों" शब्द का उपयोग "अन्यजातियों" के अर्थ में किया गया था। शब्द *disperia* अन्यजाति भूमि में रहने वाले यहूदी लोगों को संदर्भित करता है (तुलना याकूब 1:1; 1पतरस 1:1)। यह लोगों द्वारा यीशु की रूपक भाषा को गलत समझने का एक और उदाहरण है।

यह यीशु के ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का एक और उदाहरण है। लोगों ने उसे गलत समझा क्योंकि उन्होंने उसके कथनों की व्याख्या उसकी शिक्षाओं की "ऊपर" और "नीचे" श्रेणियों के बजाय अक्षरशः की। वह पिता की ओर से था और पिता के पास वापस जाएगा।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:37-39
[37]पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे आए और पीए। [38]जो मुझ पर विश्वास करेगा,जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी'।" [39]उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था।

7:37 "पर्व के अंतिम दिन जो मुख्य दिन है" यहाँ कुछ सवाल है कि क्या यह सात-दिवसीय पर्व था (तुलना व्यवस्थाविवरण 16:13), या आठ-दिवसीय पर्व (तुलना लैव्यव्यवस्था 23:36; नहेम्याह 8:17; II मैकाबीस 10:60, और जोसेफस)। स्पष्ट रूप से यीशु के दिन में यह आठ दिनों का पर्व था, हालांकि, अन्य सात दिनों के समान अंतिम दिन सिलोअम के पूल से पानी लेकर वेदी के आधार पर नहीं डाला गया था। हम तल्मूड की पुस्तिका सुकाह से इस संस्कार के बारे में सीखते हैं, जो यशायाह 12:3 को उद्धृत करता है। यह फसलों के लिए बारिश के लिए एक कल्पित प्रार्थना हो सकती है।

▣ **"यदि"** यह तृतीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"कोई प्यासा हो"** यीशु में विश्वास करने का सर्वव्यापी निमंत्रण! यूहन्ना 7:17 पर टिप्पणी देखें

▣ **"तो मेरे पास आए और पीए"** यीशु यूहन्ना 4:13-15 में इसी रूपक का प्रयोग करता है। यह संभवतः यीशु को मसीहाई चट्टान के रूप में संदर्भित करता है जिसने जल दिया(तुलना 1कुरिन्थियों 10:4)। यह स्पष्ट रूप से यशायाह 55:1-3 के पुराने नियम के निमंत्रण से और पर्व के दौरान जल के प्रतीकात्मक उंडेलने के सांस्कृतिक अवसर से संबंधित है।

कुछ शुरुआती प्राचीन यूनानी पांडुलिपियाँ "मेरे पास" (तुलना MSS P[66], ℵ*,और D) को हटा देती हैं। इसे P[66c], P[75],ℵ[c], L, T, W, में शामिल किया गया है, और यह संदर्भ द्वारा निहित है। UBS4 इसके समावेश को "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है। यूहन्ना में लोगों को उस परभरोसा करने का आग्रह किया गया है। सुसमाचार का व्यक्तिगत केन्द्रबिन्दु है।

7:38 "जो मुझ पर विश्वास करेगा" ध्यान दें यह वर्तमान काल है। यह यूहन्ना 15 के "बने रहने" के समान विश्वास करने में निहित निरंतर व्यक्तिगत संबंध पर जोर दिखाता है। विशेष विषय: उद्धार के लिए प्रयुक्त यूनानी क्रिया काल यूहन्ना 9:7 पर देखें।

▣ **"जैस पवित्रशास्त्र में आया है"** इस उद्धरण के लिए एक विशिष्ट वचन की पहचान करना कठिन है। यह यशायाह 12:3; 43:19-20; 44:3; 58:11; यहेजकेल 47:1; योएल 3:18; जकर्याह 13:1; या 14:8 हो सकता है, जो युगांत विषयक जल को लाक्षणिक रूप से दिव्य (व्यक्ति) की उपस्थिति के प्रतीक के रूप में उल्लेखित करता है। इस मामले में कृषि आशीर्वाद के नए युग का वादा किया गया जल नई वाचा की आंतरिक प्रकृति के रूपक में बदल जाता है। आत्मा दिल और दिमाग में सक्रिय रहेगा (तुलना यहेजकेल 36:27-38)

▣ **"उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी"** सर्वनाम पूर्व पद के लिए कई सिद्धांत हुए हैं।

1. यीशु स्वयं (प्रारंभिक कलीसिया पिता)
2. अलग अलग विश्वासी जिन्होंने मसीह पर भरोसा किया है
3. यरूशलेम। अरामी में, "उसके(पुल्लिंग)" का अर्थ "उसके(स्त्रीलिंग)" हो सकता है और शहर को भी संदर्भित कर सकता है (यह रब्बियों की स्थिति है, तुलना यहेजकेल 47:1-12 और जकर्याह 14:8)

एक अच्छी संक्षिप्त, सरलीकृत चर्चा दो सिद्धांतों पर आधारित है कि कैसे NIDOTTE, vol.1,p.683 में यूहन्ना 7:37 b और 38a में विराम चिन्ह लगाए गए हैं।

यीशु ने स्वयं को जीवन का जल कहा है(तुलना यूहन्ना 4:10)। अब इस संदर्भ में यह पवित्र आत्मा है (तुलना यूहन्ना 7:39) जो यीशु के अनुयायियों में जीवन का जल प्रदान करता और उत्पन्न करता है। यह विश्वासी में मसीह की रचना करने में आत्मा के कार्य के लिए समानांतर है (तुलना रोमियों 8:29; गलातियों 4:19; इफिसियों 4:13)।

7:39 "क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था" जाहिर तौर पर यह इस कथन के महत्त्व पर यूहन्ना के बाद की सोच को दर्शाता है (अर्थात, एक संपादकीय टिप्पणी) (तुलना यूहन्ना 16:7)। यह कलवरी और पिन्तेकुस्त दोनों के महत्व को एक "महिमा" के रूप में देखे जाने को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 3:14; 12:16,23; 17:1,5)। यूहन्ना के इस संक्षिप्त कथन का अर्थ बताने की कोशिश करने के लिए कई लेखकीय संस्करण हैं।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:40-44

40तब भीड़ में से किसी किसी ने यह बातें सुन कर कहा, "सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है।" 41दूसरों ने कहा, "यह मसीह है।" परन्तु कुछ ने कहा, "क्यों? क्या मसीह गलील से आएगा? 42क्या पवित्रशास्त्र में यह नहीं आया कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गाँव से आएगा, जहाँ दाऊद रहता था ?" 43अतः उसके कारण लोगों में फूट पड़ी। 44उनमें से कुछ उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला।

7:40 "सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है" यह मूसा के मसीहाई वादे का एक संकेत है जो कि व्यवस्थाविवरण 18:15,18 में पाया जाता है। कई लोगों ने यीशु को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में मान्यता दी (तुलना यूहन्ना 4:19; 6:14; 9:17; मत्ती 21:11)। उन्होंने यीशु के सामर्थ्य को पहचाना, लेकिन उसके व्यक्तित्व और कार्य को गलत समझा। इस्लाम भी इस नाम का प्रयोग यीशु के लिए करता है, लेकिन उसके संदेश को गलत समझता है।

7:41 "दूसरों ने कहा, 'यह मसीह है'" यह दर्शाता है कि "मसीह" शब्द इब्रानी शब्द "मसीहा" के समान है, जिसका अर्थ है "अभिषिक्त जन" पुराने नियम में राजाओं, पुजारियों और भविष्यद्वक्ताओं का परमेश्वर की बुलाहट और तैयार होने के संकेत के रूप में अभिषेक किया जाता था। बाइबल में यूहन्ना 11:2 पर विशेष विषय: बाइबल में अभिषेक (BDB 603) देखें।

▣ **"परन्तु कुछ ने कहा, "क्यों? क्या मसीह गलील से आएगा?""** यूनानी व्याकरणिक संरचना इस प्रश्न के लिए एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करती है। लेकिन यशायाह 9:1 के विषय में क्या?

7:42 इस प्रश्न की व्याकरणिक संरचना एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करती है।

▣ **"दाऊद के वंश से"** (तुलना 2 शमूएल 7; मत्ती 21:9; 22:42)।

▣ **"और बैतलहम गाँव से, जहाँ दाऊद रहता था"** यह विडंबना का एक और प्रयोग है (तुलना मीका 5:2-3 और मत्ती 2:5-6)।

7:43 अतः उसके कारण लोगों में फूट पड़ी (तुलना यूहन्ना 7:48-52; 9:16; 10:21; मत्ती 10:34-39; लूका 12:51-53)। यह भूमि के दृष्टान्त का रहस्य है (तुलना मत्ती 13)। कुछ के आत्मिक कान हैं और कुछ के नहीं (तुलना मत्ती 10:27; 11:15; 13: 9,15 (दो बार), 16,43; मरकुस 4: 9,23; 7:16; 8:18; लूका; 8:8; 14:35)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 7:45-52
[45]तब सिपाही प्रधान याजकों और फरीसियों के पास लौट आए; उन्होंने उनसे कहा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए?" [46]सिपाहियों ने उत्तर दिया, "किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं।" [47]फरीसियों ने उनको उत्तर दिया,"क्या तुम भी भरमाए गए हो? [48]क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है? [49]परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, शापित हैं।" [50]नीकुदेमुस ने जो पहले उसके पास आया था, और उनमें से एक था, उनसे कहा, [51]"क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को, जब तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वह क्या करता है, दोषी ठहराती है?" [52]उन्होंने उसे उत्तर दिया, "क्या तू भी गलील का है? ढूँढ और देख कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का।"

7:46" सिपाहियों ने उत्तर दिया, 'किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं'" फिर से यूहन्ना की विडंबना! यह एक बहुत ही चौंकाने वाली गवाही है।

1. उन्होंने भीड़ के विषय में उनके डर का उल्लेख नहीं किया जो उनके लिए एक अच्छा बहाना हो सकता था।
2. ये मंदिर के सिपाही यीशु के बारे में अपनी राय में एकमत थे, जबकि लोगों में फूट थी
3. ये लोग अपनी राय न देते हुए आदेशों को मानने के आदी थे।

7:48 "क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है" यूहन्ना 7:47 और 48 दोनों में यूनानी व्याकरणिक संरचना एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करती है। "सिपाहियों" शब्द का तात्पर्य सन्हेद्रयौन से है। यहाँ सदूकी और फरीसी (संपूर्ण सन्हेद्रयौन), जो सामान्य रूप से एक-दूसरे के प्रति बहुत शत्रुतापूर्ण थे, यीशु के खिलाफ उसके विरोध में एकजुट हो गए थे (तुलना यूहन्ना 11:47,57; 18:3)।

7:49 "परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, शापित हैं" यह "देश के लोगों" (*'am hā'āres*) को संदर्भित करता है, जिन्हें धार्मिक अगुवों द्वारा नीचा देखा जाता था, क्योंकि वे मौखिक परंपराओं को नहीं निभाते थे (तुलना व्यवस्थाविवरण 27:26)। यूहन्ना 7:51 में यूहन्ना की विडंबना देखाई देना जारी है, जहाँ नीकुदेमुस उन्हें बताता है कि वे भी यीशु के साथ उनके व्यवहार द्वारा कानून तोड़ रहे हैं।

ओह, धार्मिकता की त्रासदी। वही लोग जो आम लोगों को शाप देते(*eparatos*, नये नियम में केवल यहाँ पाया जाता है)हैं खुद शापित हैं! अगर प्रकाश अंधकार हो गया है, तो अंधकार कितना महान है! सचेत, आधुनिक, रूढ़िवादी, शिक्षित धर्मनिष्ठ बनो!

7:51 "हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को, जब तक पहले उसकी सुनकर जान न कि वह क्या करता है, दोषी ठहराती है" यूनानी व्याकरणिक संरचना एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करती है (तुलना निर्गमन 23:1; व्यवस्थाविवरण 1:16)।

7:52 "क्या तू भी गलील का है" यह यीशु के खिलाफ सन्हेद्रयौन के भावनात्मक विरोध को दर्शाता है।

▣ **"ढूँढ और देख"** खोज का यहूदी धर्म में शास्त्रों के अध्ययन का संकेतार्थ था (तुलना यूहन्ना 5:39)। यह फिर से यूहन्ना का विडंबना का उपयोग दिखाता है। एलिय्याह (तुलना 1 राजा 17: 1) और योना (तुलना 2 राजा 14:25), होशे और नहूम के बारे में क्या? उनका मतलब व्यवस्थाविवरण18: 15,19; उत्पत्ति 49:10; 2 शमूएल 7 के "उस" भविष्यद्वक्ता से होगा।

7:53-8:11 अध्याय 8 के आरंभ में टिप्पणी देखें।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. अध्याय 7 में यीशु के शब्दों की त्योहार की पृष्ठभूमि क्या है?
2. "झोपड़ियों के पर्व" के उद्देश्य का वर्णन और व्याख्या करें।
3. धार्मिक अगुवे यीशु के इतने विरोधी क्यों थे?
4. इस अध्याय में यीशु के बारे में टिप्पणी करने वाले विभिन्न समूहों की सूची बनाएँ।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 8

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री	व्यभिचारिणी जगत की ज्योति का सामना करती है	व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री	व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री	व्यभिचारिणी स्त्री
7:53-8:11	7:53-8:12	7:53-8:11	7:53-8:11	7:53-8:11
यीशु, जगत की ज्योति	यीशु अपनी गवाही का पक्ष लेता है	यीशु, जगत की ज्योति	यीशु, जगत की ज्योति	यीशु, जगत की ज्योति
8:12-20		8:12-20	8:12	8:12
				यीशु के अपनी गवाही आप देने के बारे में चर्चा
	8:13-20		8:13	8:13-18
			8:14-18	
			8:19a	8:19a
			8:19b	8:19b
			8:20	8:20
जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते	यीशु अपने प्रस्थान का पूर्वानुमान करता है		जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते	
8:21-30	8:21-29	8:21-30	8:21	8:21
			8:22	8:22-24
			8:23-24	
			8:25a	8:25a
			8:25b-26	8:25b-26
	सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा		8:27-29	8:27-29
	8:30-36		8:30	8:30
सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा			सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा	यीशु और अब्राहम
8:31-38		8:31-33	8:31-32	8:31-32
			8:33	8:33-38
	अब्राहम की संतान और शैतान	8:34-38	8:34-38	
तुम्हारा पिता शैतान	8:37-47			
8:39-47		8:39-47	8:39a	8:39-41a

			8:39b-41a	
			8:41b	8:41b-47
			8:42-47	
पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ	पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ		यीशु और अब्राहम	
8:48-59	8:48-59	8:48-59	8:48	8:48-51
			8:49-51	
			8:52-53	8:52-56
			8:54-56	
			8:57	8:57-58
			8:58	
			8:59	8:59

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

7:53-8:11 की पाठीय पृष्ठभूमि

A. यूहन्ना 7:53-8:11 यूहन्ना के मूल सुसमाचार का हिस्सा नहीं था।

B. इस अवतरण के (ग्रीक में एक वाक्य) सुसमाचार से हटाए जाने के प्रमाण हैं
   1. बाह्य प्रमाण
      a. सबसे पुरानी यूनानी पांडुलिपियों में से अनुपस्थित
         1) papyrus - P^{65} (प्रारंभिक तीसरी शताब्दी), P^{75} (तीसरी शताब्दी)
         2) uncials - א (चौथी शताब्दी), B(चौथी शताब्दी), शायद Aऔर C से अनुपस्थित। इस स्थान पर यूहन्ना में ये नष्ट हो गए हैं, लेकिन जब पांडुलिपि के बचे हुए पन्ने मापे जाते हैं तो इस अवतरण के लिए कोई जगह नहीं है।
      b. बाद की कई यूनानी पांडुलिपियों ने जिन्होंने इसे शामिल किया, इसे एक विशेष चिह्न या प्रतीक, जैसे एक तारक चिन्ह के साथ चिह्नित किया, यह दिखाने के लिए कि यह मूलरूप नहीं था।
      c. यह बाद की विभिन्न पांडुलिपियों में कई अलग-अलग स्थानों में पाया जाता है
         1) यूहन्ना 7:36 के बाद
         2) यूहन्ना 7:44 के बाद

3) यूहन्ना 7:25 के बाद
4) लूका में 21:38 के बाद
5) लूका में 24:53 के बाद

d. प्राचीन अनुवादों से अनुपस्थित
1) पुरानी लातिनी
2) पुरानी सीरियाई
3) पेशेटा (बाद में सीरियाई) की प्रारंभिक प्रतियाँ

e. इस पाठ पर किसी भी यूनानी पिता (बारहवीं शताब्दी तक) की कोई टिप्पणी नहीं है।

f. यह कोडेक्स D (Bezae), छठी शताब्दी की एक पश्चिमी पांडुलिपि, लातिनी वुल्गेट और पेशेटा के बाद के संस्करणों में मौजूद है।

2. आंतरिक प्रमाण
a. शब्दावली और शैली यूहन्ना की बजाय लूका की तरह अधिक है। यह कुछ यूनानी पांडुलिपियों में लूका 21:38 के बाद और अन्य में 24:53 के बाद रखा गया था।
b. यह झोपड़ियों के पर्व के बाद यहूदी अगुवों के साथ यीशु की चर्चा के संदर्भ को तोड़ता है, 7:1-52; 8:12-59.
c. सिनॉप्टिक सुसमाचारों में कोई समानांतर नहीं हैं।

3. एक पूर्ण तकनीकी चर्चा के लिए Bruce M Metzger's *A Textual Commentary on the Greek New Testament,* pp. 219-221 देखें।

C. यह विवरण यीशु के जीवन से वास्तविक मौखिक परंपरा हो सकती है। हालाँकि, यीशु के जीवन के कई वृत्तांत हैं जिन्हें सुसमाचार के लेखकों ने दर्ज नहीं करने के लिए चुना (यूहन्ना 20:30-31)। यह स्वयं सुसमाचार लेखक हैं जो प्रेरित थे। बाद के लेखकों को यीशु के जीवन के एक वृत्तान्त को शामिल करने का कोई अधिकार नहीं था, भले ही वह प्रेरित मूल लेखक द्वारा शामिल न किया गया हो। यीशु के कार्यों और शब्दों के चयन, व्यवस्था और अनुकूलन के लिए सिर्फ मूल लेखकों के पास पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में अंतर्दृष्टि थी। यह अवतरण मूल नहीं है और इसलिए, प्रेरित नहीं है और इसे हमारी बाइबलों में शामिल नहीं किया जाना चाहिए!

D. मैंने इस अवतरण पर टिप्पणी नहीं करना चुना है क्योंकि मुझे यह विश्वास नहीं है कि यह यूहन्ना की कलम से है और इसलिए, एक प्रेरित पाठ का हिस्सा नहीं है (भले ही ऐतिहासिक हो)।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 8:12-20
12यीशु ने फिर लोगों से कहा, "जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" 13फरीसियों ने उससे कहा, "तू अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही ठीक नहीं।" 14यीशु ने उनको उत्तर दिया, "भले ही मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, फिर भी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जाता हूँ? परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूं या कहाँ को जाता हूँ। 15तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता। 16और यदि मैं न्याय करूँ भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूँ और पिता है जिसने मुझे भेजा। 17तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है; 18एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिसने मुझे भेजा।" 19उन्होंने उससे कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को,यदि मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते।" 20ये बातें उसने मंदिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कहीं, और किसी ने उसे न पकड़ा, क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।

8:12 "फिर यीशु ने फिर लोगों से कहा" इस अध्याय में "भीड़" का उल्लेख नहीं है। यह हो सकता है कि झोपड़ियों का पर्व समाप्त हो गया है और यीशु यहूदी अगुवों के साथ तर्क करने और गवाही देने की कोशिश में मंदिर क्षेत्र में बने रहे।

हालाँकि, जैसा कि यीशु ने स्वयं को प्रकट करने के लिए पर्व के जल समारोह का प्रयोग किया, इस खंड में वह स्वयं को प्रकट करने के लिए पर्व के ज्योति समारोह का प्रयोग करता है। यह निश्चित रूप से संभव है कि 8:12-10:21 झोपड़ियों (झोपड़ियों) के पर्व के अंतिम दिन पर आधारित है।

▣ **"मैं ज्योति हूँ"** अध्याय 6, 7, और 8 इस्राएल के इतिहास, उन उपमाओं का स्रोत जो यीशु स्वयं के लिए प्रयोग करता है, की "जंगल में भटकने" की अवधि से संबंधित प्रतीत होते हैं।

1. अध्याय 6 में "मन्ना" और "जीवन की रोटी" प्रयोग किया गया है।
2. अध्याय 7 में "जल" और "जीवन का जल" का प्रयोग किया गया है।
3. अध्याय 8 में "ज्योति" और "*Shekinah* महिमा" का प्रयोग किया गया है।

ज्योति का यह रूपक पूरे यूहन्ना (तुलना 1:4-5, 8-9; 3:19-21 9:5; 12:46) में दोहराया जाता है।

यह किसे संदर्भित करता है, इस विषय में कुछ बहसें हुई हैं।

1. अंधकार का प्राचीन डर
2. पुराने नियम में परमेश्वर के लिए एक नाम (तुलना भजनसंहिता 27:1; यशायाह 60:20; 1 यूहन्ना 1: 5)
3. झोपड़ियों के पर्व की पृष्ठभूमि, स्त्रियों के आँगन में दीपाधार का प्रज्जवलित किया जाना
4. जंगल में भटकने की अवधि में महिमा के *Shekinah* बादल का, जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक था, एक संकेत
5. पुराने नियम में मसीहा के लिए नाम (तुलना यशायाह 42: 6, 49: 6; लूका 2:32)।

रब्बियों ने भी मसीहा के लिए नाम के रूप में "ज्योति" का प्रयोग किया। झोपड़ियों के पर्व के दौरान स्त्रियों के आँगन में विशाल दीपों की रोशनी यीशु के कथन की स्पष्ट रूपरेखा है। यूहन्ना 1:4,8 में ज्योति के मसीहाई निहितार्थ और विशेष संदर्भ यीशु के लिए मंदिर में समारोह के साथ मेल खाते हैं ताकि वह अपने वास्तविक मूल को प्रकट करना जारी रख सके।

यह यूहन्ना में सात "मैं हूं" कथनों में से एक है (जिसके बाद एक विधेय है)

1. जीवन की रोटी मैं हूँ(यूहन्ना 6:35,41,48,51)
2. जगत की ज्योति मैं हूँ (यूहन्ना 8:12; 9:5; तुलना यूहन्ना 1:4,9; 12:46)
3. भेड़ों का द्वार मैं हूँ (यूहन्ना 10:7,9)
4. अच्छा चरवाहा मैं हूँ (यूहन्ना 10:11,14)
5. पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ (यूहन्ना 11:25)
6. मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ (यूहन्ना 14:6)
7. सच्ची दाखलता मैं हूँ (यूहन्ना 15:1,5)

यूहन्ना में पाए जाने वाले ये अनोखे कथन, यीशु के व्यक्तित्व की ओर इशारा करते हैं। यूहन्ना उद्धार के इन व्यक्तिगत पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। हमें उस पर भरोसा करना चाहिए!

▣ **"जगत की"** यह शब्द (*kosmos*, यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय को देखें) यीशु मसीह के सुसमाचार के सर्वव्यापी दायरे को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 3:16)।

▣ **"जो मेरे पीछे हो लेगा"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है। यह याद रखना चाहिए कि मसीहत मुख्य रूप से एक पंथ या धर्मशास्त्र नहीं है, बल्कि, यह एक व्यक्तिगत संबंध है जिसके बाद एक शिष्यत्व की जीवनशैली आती है (तुलना मत्ती 28:18-20; 1 यूहन्ना 1:7)।

▣ **"वह अंधकार में न चलेगा"** यह शैतान की "छुटकारा न पाए हुओं की आँखों को अंधा करने" की धर्मशास्त्रीय अवधारणा के लिए एक भ्रम है (तुलना 2 कुरिन्थियों 4:4)।पुराने नियम के अवतरणों के लिए एक और भ्रम है जो परमेश्वर के शब्द जैसे कि "मेरे पाँव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है" (तुलना भजनसंहिता 119:105)।

जो लोग "ज्योति" स्वीकार करते हैं, उन्हें अलग जीवन जीना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 1:7)!

▣ **"जीवन की ज्योति"** परमेश्वर का जीवन यीशु के पास है और इसे अपने अनुयायियों को देता है (तुलना मत्ती 5:14), उन लोगों को जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिया है।

8:13 "फरीसी" यूहन्ना 1:24 पर विशेष विषय को देखें।

▣ **"तेरी गवाही ठीक नहीं"** यहूदी प्रमाण की कानूनी बारीकियों का दावा कर रहे थे (यानी, दो गवाहों की आवश्यकता, तुलना गिनती 35:30; निर्गमन 17:6; 19:15-21)। यीशु ने इसी आपत्ति से पहले बात की थी (तुलना यूहन्ना 5:31ff) और उसने कई गवाहियाँ दीं थी। इस संदर्भ में उसका गवाह पिता है!

8:14,16 "भले ही. . .यदि" ये दोनों तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं जिनका अर्थ है संभावित कार्रवाई। अध्याय 8 में अधिकांश प्रतिबंध इस प्रकार के हैं।

▣ **"मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जाता हूँ"** यह फिर से "ऊपर और नीचे" का द्वैतवाद है। यीशु की पिता के साथ उसके पूर्व-अस्तित्व की एक सचेत स्मृति, उसके ध्येय की समझ और भविष्यवाणी-संबंधी समय सारिणी का ज्ञान था (तुलना यूहन्ना 1:1-4, 14-18; 7:28-29; 13:1; 17:5)।

▣ **"परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ"** यह अध्याय 7 से संबंधित होना चाहिए। वे यीशु के जन्म स्थान को नहीं जानते थे (तुलना यूहन्ना 8:41-42) और न ही वे जानते थे कि वह कहाँ जा रहा है (तुलना यूहन्ना 7:34-36; 8:21)। यूहन्ना 1:8 पर विशेष विषय: यीशु की गवाहियाँ देखें।

8:15 "तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो" यह भी अध्याय 7 के लिए एक भ्रम है (तुलना यूहन्ना 8:24)। यूहन्ना 1:14 में विशेष विषय: शरीर (*sarx*) देखें।

▣ **"मैं किसी का न्याय नहीं करता"** कुछ लोग यूहन्ना 3:17 और 9:39 के बीच एक विरोधाभास देखते हैं। यीशु न्याय करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन देने के लिए आया था। उसके आने के तथ्य से, जो लोग उसे अस्वीकार करते हैं उनका न्याय किया जाता है (तुलना यूहन्ना 3:18-21)।

8:16-18 फिर से एक अदालत के मामले में दो गवाहों की जरूरत का मामला था (तुलना गिनती 35:30; व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15)। यीशु, बिना किसी अनिश्चित शब्दों के, पिता के साथ अपनी एकता की पुष्टि करता है (तुलना यूहन्ना 7:29; 14:9)। यूहन्ना 1:8 पर विशेष विषय: यीशु की गवाहियाँ देखें।

8:16
NASB (1970),
NJB, REB **"जिसने मुझे भेजा"**
NASB (1995),
NKJV, NRSV,
NIV **"पिता जिसने मुझे भेजा"**

जिस प्रकार NASB के दो संस्करणों के बीच असहमति है, USB^{3,4} के बीच भी असहमति है।

1. UBS^{3} "पिता" को "C" दर्जा देता है (MS P^{39,66,75}, ℵ^{2}, B, L, T, W,
2. UBS^{4} "पिता" को "A" दर्जा देता है (MSS ℵ*, D, और कुछ पुराने बाद के और सीरियाई संस्करण इसे छोड़ देते हैं)

यीशु कभी अकेला नहीं है! पिता हमेशा उसके साथ है (तुलना यूहन्ना 8:16,29; 16:32), संभवतः क्रूस पर छोड़कर (तुलना मरकुस 15:34)।

संगति का आनंद और पूर्णता उद्धार का सार है। सृष्टि का उद्देश्य परमेश्वर के साथ संगति करने के लिए किसी का होना, इसलिए उसने (यानी, मसीह, तुलना यूहन्ना 1:3; 1 कुरिन्थियों 8: 6; ; कुलुस्सियों 1:16; इब्रानियों 1: 2) उन्हें YHWH के स्वरूप और समानता (तुलना उत्पत्ति 1:26,27) में बनाया। इस संगति को खोना पाप का दंड है। इसकी बहाली यीशु के मिशन का लक्ष्य है!

8:19 "तेरा पिता कहाँ है?" वे अभी तक यीशु को शारीरिक, शाब्दिक स्तर पर समझ रहे थे। उनके पूर्वाग्रही और गर्व से भरे मन को सच्चाई के लिए बंद थे (तुलना यूहन्ना 8:27)। यह गलतफहमी यूहन्ना की सुसमाचार की एक साहित्यिक विशेषता है।

▣ **"यदि मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते"** यह द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है। इसे अक्सर "तथ्य के

विपरीत" कहा जाता है। "यदि तुम मुझे जानते, जो तुम नहीं जानते हो, तो मेरे पिता को जानते, जो तुम नहीं जानते हो।" यह विषय यूहन्ना 5:37 से दोहराया गया है, यूहन्ना 7:28 पर पूर्ण टिप्पणी देखें। यूहन्ना के सुसमाचार की रूपरेखा बनाना मुश्किल है क्योंकि यह आवर्ती नमूनों की चित्रयवनिका या दोहराई गई धुनों की वाद्य-वृंद रचना की तरह है।

8:20 "ये बातें उसने भण्डार घर में कहीं" यह पद स्पष्टतया एक प्रत्यक्षदर्शी की एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है। भण्डार घर एक अलग इमारत नहीं थी। रब्बियों की परंपरा (*Shekalim* 6) कहती है कि तेरह तुरही के आकार के पात्र थे, जिनमें से प्रत्येक को एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए चिह्नित किया गया था, जो स्त्रियों के आँगन में स्थित थे (तुलना मरकुस 12:41), जहाँ झोपड़ियों के पर्व के दौरान विशाल दीप जलाए जाते थे।

▣ **"उसका समय अब तक नहीं आया था"** यूहन्ना 2:4 पर टिप्पणी देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 8:21-30
[21]उसने फिर उनसे कहा, "मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँढोगे, और अपने पाप में मरोगे; जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।" [22]इस पर यहूदियों ने कहा, "क्या वह अपने आप को मार डालेगा, जो कहता है, 'जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते'?" [23]उसने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं। [24]इसलिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो अपने पापों में मरोगे।" [25]उन्होंने उससे कहा, "तू कौन है?" यीशु ने उनसे कहा, "वही हूँ जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ। [26]तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है, परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो मैंने उससे सुना है वही जगत से कहता हूँ।" [27]वे यह न समझ सके कि हम से पिता के विषय में कहता है। [28]तब यीशु ने कहा, "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ; मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूँ। [29]मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है।" [30]वह ये बातें कह ही रहा कि बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

8:21-22 "जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते. . .क्या वह अपने आप को मार डालेगा" यूहन्ना 8:22 का प्रश्न एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है। यह इस संदर्भ से स्पष्ट है कि यद्यपि उन्होंने उसके कथन को गलत समझा (तुलना यूहन्ना 7: 34-36), उन्होंने इसे उसकी मृत्यु से जोड़ा। जोसेफस से हमें पता चलता है कि आत्महत्या किसी को अधोलोक के सबसे निचले हिस्सों तक दण्डित करती है। उनका सवाल स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि यह वह जगह है जहाँ उन्होंने सोचा कि यीशु होना चाहिए।

8:21 "और अपने पाप में मरोगे" यह अक्षरशः "अपने पाप में, तुम मरोगे।" शब्द "पाप" यूहन्ना 8:21 में एकवचन है और यूहन्ना 8:24 में बहुवचन है। यह मुख्य रूप से यीशु की मसीह के रूप में उनकी अस्वीकृति को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 8:24)। यह सिनॉप्टिक सुसमाचारों का अक्षम्य पाप है। उनके अगुवे यीशु को उसके शब्दों और चिन्हों से महान प्रकाश की उपस्थिति में अस्वीकार कर रहे हैं।

मरकुस पर मेरी टिप्पणी में निम्नलिखित टिप्पणी देखें।

> **मरकुस 3:29 "जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करे"** यह उसकी पिन्तेकुस्त से पूर्व ऐतिहासिक विन्यास में समझा जाना चाहिए। इसका प्रयोग परमेश्वर के सत्य को अस्वीकार करने के अर्थ में किया गया था। इस पद के शिक्षण को आमतौर पर "अक्षम्य पाप" कहा गया है। इसे निम्न मानदंड के प्रकाश में व्याख्यायित किया जाना चाहिए:
>
> 1. "जानबूझकर" और "अनजाने में किए गए पापों" के बीच पुराने नियम में अंतर (तुलना गिनती 15: 27-31)
> 2. यीशु के अपने परिवार के अविश्वास का इस संदर्भ में फरीसियों के अविश्वास के साथ विरोधाभास
> 3. मरकुस 3:28 में क्षमा के कथन
> 4. सुसमाचारों के समानंतरों के बीच अंतर, विशेष रूप से "मनुष्य का पुत्र,"(तुलना मत्ती 12:32; लूका 12:10) का "मनुष्यों के पुत्रों," (तुलना मत्ती 12:31; मरकुस 3:28)में परिवर्तन।
>
> उपरोक्त के प्रकाश में, यह पाप उन लोगों द्वारा किया जाता है, जो महान प्रकाश और समझ की उपस्थिति में, यीशु को परमेश्वर के प्रकटीकरण और उद्धार के साधन के रूप में अभी भी अस्वीकार करते हैं। वे सुसमाचार की ज्योति को शैतान के अंधकार में बदल देते हैं (तुलना मरकुस 3:30)। वे आत्मा की बुलाहट और दोषसिद्धि को नकार

देते हैं (तुलना यूहन्ना 6:44,65)। अक्षम्य पाप किसी एक कार्य या शब्द के कारण परमेश्वर की ओर से नकारा जाना नहीं है, लेकिन सुविचारित अविश्वास के द्वारा मसीह में परमेश्वर की निरंतर, जारी रहने वाली अस्वीकृति है (यानी शास्त्री और फरीसी)।

यह पाप केवल उन लोगों द्वारा किया जा सकता है जो सुसमाचार के संपर्क में आए हैं। जिन लोगों ने यीशु के बारे में स्पष्ट रूप से संदेश सुना है, वे इसकी अस्वीकृति के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हैं। यह आधुनिक संस्कृतियों का विशिष्ट रूप से सच है, जिनकी सुसमाचार तक निरंतर पहुँच है, लेकिन यीशु को अस्वीकार करते हैं(अर्थात, अमेरिका, पश्चिमी संस्कृति)।

8:23 "तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ" यह यूहन्ना के ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का एक और उदाहरण है (अर्थात, नीचे बनाम ऊपर, तुलना यूहन्ना 7:35-36; 18:36)।
यूहन्ना का यीशु जो ऊपर से है और यहूदी जो नीचे से हैं, के बीच का विरोधाभास एक द्वैतवाद बनाते हैं जो सुसमाचारों के बीच अद्वितीय है। सिनॉप्टिक सुसमाचार (मत्ती, मरकुस, लूका) दो यहूदी युगों, वर्तमान दुष्ट युग और भविष्य के धार्मिकता के युग

के बीच विषमता दर्शाते हैं। यह अंतर क्षैतिज द्वैतवाद बनाम ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद शब्दों द्वारा वर्णित किया गया है। क्या यीशु ने दोनों को अलग-अलग विन्यासों में उपदेश दिया था? संभवतः सिनॉप्टिक्स ने यीशु की सार्वजनिक उपदेशों को दर्ज किया, जबकि यूहन्ना ने यीशु के चेलों को दिए गए निजी उपदेशों को दर्ज किया।

▣ **"तुम संसार के हो"** संसार दुष्ट की सत्ता में निहित है (तुलना 2 कुरिन्थियों 4:4; इफिसियों 2:2; और 1 यूहन्ना 5:19)। संसार शब्द (*kosmos)* के लिए यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय देखें।

8:24 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

NASB, NKJV "तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ"
NRSV, JB "विश्वास करोगे कि मैं वही हूँ"
TEV "विश्वास करोगे कि 'मैं जो हूँ सो हूँ"
NJB "विश्वास करोगे कि मैं वही हूँ"

यह यीशु की स्वयं की दिव्य प्रकृति की आत्म-समझ के लिए प्रबल कथनों में से एक है(या यह संभव है कि इस संदर्भ में "मसीहा" दिग्दर्शक है)। वह YHWH के लिए पुराने नियम के नाम (तुलना निर्गमन 3:14 का "मैं हूँ") का प्रयोग करता है। यह यूहन्ना में प्रसिद्ध "मैं हूँ" कथनों से अलग है। इसमें कोई विधेय नहीं है (तुलना यूहन्ना 4:26; 6:20; 8: 24,25,58; 13:19; 18; 5,6,8)। विशेष विषय: यूहन्ना का "विश्वास" का प्रयोग यूहन्ना 2:23 पर देखें।

8:25 "तू कौन है" यहूदी अधिकारी ईश निंदा के आरोप के लिए कानूनी आधार की तलाश कर रहे हैं (तुलना मत्ती 26:57-68; मरकुस 14:53-65)! वे चाहते हैं कि उसे मार डाला जाए। वे जानकारी पाने का नहीं बल्कि दोष लगाने का मौका देख रहे हैं।

यीशु स्पष्ट रूप से खुद को यूहन्ना (सिनॉप्टिक्स के विपरीत) में प्रकट करता है! उसके शब्द (यानी, यूहन्ना 8:24) और उसके कार्य (यानी, सब्त के दिन चंगाई) स्पष्ट रूप से उसकी सत्ता दिखाते हैं।

NASB "जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ"
NKJV "वही जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ"
NRSV "मैं तुम से बोलता ही क्यों हूँ"
TEV "जो प्रारम्भ ही से मैंने तुम्हें बताया है"
NJB "जो शुरुआत से ही मैंने तुमको बताया है"

आरम्भ में यूनानी पांडुलिपि में शब्दों के बीच में कोई दूरी नहीं थी। इसलिए, यूनानी अक्षरों को संदर्भ में ठीक बैठने वाले शब्दों को बनाने के लिए विभिन्न स्थानों में विभाजित किया जा सकता है। अनुवादों की भिन्नता एक पांडुलिपि विविधता से नहीं, लेकिन शब्द विभाजन से संबंधित है। यहाँ विकल्प हैं।

1. *hote* – प्रारम्भ से मैंने तुम से कहा है (NASB, NKJV, TEV, NJB, NIV)
2. *ho ti* विस्मयादिबोधक के एक सामी मुहावरे के रूप में - कि मैं बिल्कुल तुमसे बात करता हूँ (NRSV, TEV पादटिप्पणी)

सम्भवतः यह यूहन्ना की एक शब्दक्रीड़ा है कि "प्रारंभ" शब्द का प्रयोग उत्पत्ति 1:1 (सृजन) के सेप्टुआजिंट के अनुवाद और यूहन्ना 1:1(उसकी सेवकाई)। में किया गया है। यीशु "प्रारम्भ" से है और उन्हें शब्दों और कार्यों के द्वारा कहता आ रहा है!

8:26-27 ये विषय जोर देने के लिए यूहन्ना में दोहराए गए हैं।

1. पिता ने मुझे भेजा है (तुलना यूहन्ना 3:17,34; 4:34; 5:36,38; 6:29: 44,57; 7:28-29; 8:16,26,42; 10:36; 11:42; 12:49; 14:24; 15:21; 17:3,18,21,23,25; 20:21)
2. पिता सच्चा है (तुलना यूहन्ना 3:33; 7:28)
3. यीशु के उपदेश पिता से हैं (तुलना यूहन्ना 3:11; 7:16-17; 8:26,28,40; 12:49; 14:24; 15:15)
4. यीशु पिता को प्रकट करता है (तुलना यूहन्ना 1:18; 8:26-29; 12:49-50; 14:7,9)

▣ **"संसार"** यूहन्ना 1:10 पर टिप्पणी देखें।

8:27 लेखक की एक और संपादकीय टिप्पणी। अगर वे उसकी स्पष्ट रूपक और प्रतीकात्मक भाषा को समझ गए होते, तो उन्होंने, अन्य यहूदियों की तरह, उसे मारने की कोशिश की होती। (तुलना यूहन्ना 5:18; 8:59; 10:33)। उसके दावे इतने छिपे नहीं थे!

8:28 "जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे" तो यह गिनती 21:4-9 के लिए एक पुराने नियम का भ्रम है, जिसकी चर्चा यूहन्ना 3:14 में की गई है। इस शब्द का, यूहन्ना में इतने सारे शब्दों के समान,दोहरा अर्थ था। इसका अर्थ क्रूस पर "ऊपर उठाया" हो सकता है (तुलना यूहन्ना 3:14; 12:32,34), लेकिन इसका प्रयोग अक्सर "गौरवान्वित" के अर्थ में किया जाता है, जैसा कि प्रेरितों के काम 2:33, 5:31; फिलिप्पियों 2:9 में किया गया है। यीशु जानता था कि वह मरने के लिए आया था (तुलना मरकुस 10:45)।

▣ **"मनुष्य का पुत्र"** यह यीशु का स्व-चयनित नाम, है क्योंकि इसमें रब्बियों के यहूदी धर्म के भीतर कोई सैन्यवादी या राष्ट्रवादी निहितार्थ नहीं था। यीशु ने इस उपनाम को चुना क्योंकि यह मानवता (तुलना यहेजकेल 2:1; भजनसंहिता 8: 4) और देवता (तुलना दानिय्येल 7:13)की दोनों अवधारणाओं को जोड़ता है।

▣ **"तो जानोगे कि मैं वही हूँ"** पिन्तेकुस्त के बाद तक चेलों (और उसके परिवार) को पूरी तरह से समझ में नहीं आया (तुलना यूहन्ना 7:39)! जिसके पास आत्मिक आँखें और कान थे, उन पर आत्मा आँखे खोलने वाली सामर्थ्य के साथ आया!

अद्वितीय व्याकरणिक पुष्टिकरण "मैं वही हूँ" के लिए यूहन्ना 8:24 पर टिप्पणी देखें। वे जानेंगे

1. वह कौन है (यानी, मसीहा)
2. वह पिता को प्रगट करता है (तुलना यूहन्ना 5:19-20)
3. कि वह और पिता एक हैं (यूहन्ना 8:29)

8:29 "उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा" पिता के साथ यीशु की संगति ने उसे बनाए रखा (तुलना यूहन्ना 8:16; 16:32)। यही कारण है कि क्रूस पर टूटी हुई संगति उसके लिए इतनी मुश्किल थी (तुलना मरकुस 15:34)।

8:30 "बहुतों ने उस पर विश्वास किया" इस अवतरण में "विश्वास" शब्द के उपयोग में बहुत अक्षांश है। ऐसा लगता है कि यह कुछ श्रोताओं के छिछले विश्वास का उल्लेख करता है (तुलना मत्ती 13; मरकुस 4)। वे उनकी मसीहा संबंधी समझ के आधार पर यह स्वीकार करने के लिए इच्छुक थे कि वह मसीहा था। यूहन्ना 8:30- 58 का संदर्भ स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वे सच्चे विश्वासी नहीं थे (तुलना यूहन्ना 2:23-25)। यूहन्ना में विश्वास करने के लिए कई स्तर हैं, सभी उद्धार की ओर नहीं ले जाते हैं। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 8:31-33

[31]तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा,"यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। [32]तुम सत्य को जानोगे,और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" [33]उन्होंने उसको उत्तर दिया, "हम तो अब्राहम के वंश से हैं, और कभी किसी के दास नहीं हुए। फिर तू कैसे कहता है कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?"

8:31 "यदि तुम बने रहोगे" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। यह विश्वास जारी रखने पर दिया गया जोर यूहन्ना 15 में भी स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। यह सुसमाचार प्रचार की घोषणा में लापता तत्व है। वचन पर विश्वास किया जाना चाहिए(तुलना यूहन्ना 5:24), उसका पालन किया जाना चाहिए और उसमें बने रहना चाहिए। विशेष विषय: बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

विशेष विषय: धीरज धरने की आवश्यकता (SPECIAL TOPIC: THE NEED TO PERSEVERE)

मसीही जीवन से संबंधित बाइबिल सिद्धांत स्पष्ट करना मुश्किल है क्योंकि वे आम तौर पर पूर्वी द्वंद्वात्मक जोड़ियों में प्रस्तुत किए गए हैं (विशेष विषय: पूर्वी साहित्य [बाइबल के विरोधाभास] देखें)। ये जोड़े विरोधाभासी लगते हैं, फिर भी दोनों बाइबल-आधारित हैं। पश्चिम मसीहियों ने एक सत्य को चुना और विपरीत सत्य की उपेक्षा या अवमूल्यन किया है। मैं समझाता हूँ।

A. क्या उद्धार मसीह पर विश्वास करने का प्रारंभिक निर्णय या शिष्यत्व के लिए जीवन भर की प्रतिबद्धता है?
B. क्या उद्धार एक सार्वभौमिक परमेश्वर की ओर से अनुग्रह या मानव जाति का एक दैवीय प्रस्ताव के प्रति विश्वास और पश्चातापपूर्ण प्रतिक्रिया के माध्यम से एक चुनाव है?
C. क्या उद्धार, एक बार प्राप्त करने के बाद, खोना असंभव है, या क्या लगातार परिश्रम की आवश्यकता है?

धीरज का मुद्दा कलीसिया के पूरे इतिहास में विवादास्पद रहा है। समस्या नये नियम के स्पष्ट रूप से परस्पर विरोधी अवतरणों से शुरू होती है:

A. आश्वासन पर पाठ
   1. यीशु के कथन (यूहन्ना 6:37; 10:28-29)
   2. पौलुस के कथन (रोमियों 8:35-39; इफिसियों 1:13; 2:5,8-9; फिलिप्पियों 1:6; 2:13; 2 थिस्सलुनीकियों 3:3; 2 तीमुथियुस 1:12; 4:18)
   3. पतरस के कथन (1 पतरस 1:4-5)
B. धीरज की आवश्यकता पर पाठ
   1. यीशु के कथन (मत्ती 10:22; 13:1-9,24-30; 24:13; मरकुस 13:13; यूहन्ना 8:31; 15:4-10; प्रकाशितवाक्य 2:7,17; 26; 3:5,12,21)
   2. पौलुस के कथन (रोमियों 11:22; 1 कुरिन्थियों 15: 2; 2 कुरिन्थियों 13:5; गलातियों 1:6; 3:4; 5:4; 6:9; फिलिप्पियों 2:12; 3:18-20; कुलुस्सियों 1:23; 2 तीमुथियुस 3:2)
   3. इब्रानियों के लेखक के कथन (2:1; 3: 6,14; 4:14; 6:11)
   4. यूहन्ना के कथन (1 यूहन्ना 2:6; 2 यूहन्ना 9)
   5. पिता का कथन (प्रकाशितवाक्य 21: 7)

बाइबल का उद्धार प्रेम, दया, और एक सार्वभौमिक त्रिएक परमेश्वर की कृपा से आता है। आत्मा की पहल के बिना किसी भी मनुष्य को बचाया नहीं जा सकता (तुलना यूहन्ना 6:44,65)। देवता पहले आते हैं और कार्य-सूची निर्धारित करते हैं, लेकिन माँग करते हैं कि मनुष्य दोनों आरम्भ में और लगातार विश्वास और पश्चाताप में प्रत्युत्तर दें। परमेश्वर एक वाचा के रिश्ते में मानव जाति के साथ काम करता है।यहाँ विशेषाधिकार और जिम्मेदारियाँ हैं!

उद्धार सभी मनुष्यों को प्रदान किया जाता है। यीशु की मृत्यु, पतित सृष्टि की पाप की समस्या से निपटी। परमेश्वर ने एक रास्ता प्रदान किया है और वह चाहता है कि जो उसकी छवि में बनाये गए हैं यीशु में उसके प्यार और प्रावधान का प्रत्युत्तर दें।

यदि आप इस विषय पर गैर-कैल्विनवाद के दृष्टिकोण से अधिक पढ़ना चाहते हैं, तो देखें

1. Dale Moody, *The Word of Truth, Eerdmans*, 1981 (pp. 348-365)
2. Howard Marshall, *Kept by the Power of God*, Bethany Fellowship, 1969
3. Robert Shank, *Life in the Son*, Westcott, 1961

बाइबल इस क्षेत्र में दो अलग-अलग समस्याओं को संबोधित कर रही है: (1) फलहीन, स्वार्थी जीवन जीने के लाइसेंस के रूप में आश्वासन लेना और (2) उन लोगों को प्रोत्साहित करना जो सेवकाई और व्यक्तिगत पाप के साथ संघर्ष करते हैं। समस्या यह है कि गलत समूह गलत संदेश ले रहे हैं और सीमित बाइबल अवतरणों पर धर्मशास्त्रीय प्रणालियों का निर्माण कर रहे हैं। कुछ मसीहियों को आश्वासन के संदेश की आवश्यकता होती है, जबकि दूसरों को कड़ी चेतावनी की आवश्यकता होती है! आप किस समूह में हैं?

▣ **"मेरे वचन में, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे"** यीशु ने जीवनशैली की आज्ञाकारिता पर बल दिया (उसकी आज्ञाओं के लिए, तुलना यूहन्ना 8:51,52,55; 14:,21,23,24;15:10,20; 17:6; लूका 6:46; 2 यूहन्ना 9)। एक अर्थ में यह पद *shema*, एक इब्रानी शब्द जिसका अर्थ है "ऐसा करने के लिए सुनना" (यानी, व्यवस्थाविवरण 6:4-6)।

8:32 "तुम जानोगे" इसका प्रयोग पुराने नियम के "जानो," अर्थ में किया गया है, जिसका अर्थ है "व्यक्तिगत संबंध," "ज्ञानात्मक सत्य" के अर्थ में नहीं (तुलना उत्पत्ति 4: 1; यिर्मयाह1: 5)। सत्य एक व्यक्ति है! यह पद, जो शिक्षण संस्थानों पर अक्सर पाया जाता है, संचित मानव ज्ञान को संदर्भित नहीं करता है। इसने मनुष्यों को विभाजित करना और बाँधना साबित किया है, स्वतंत्र करना नहीं। यहाँ पर बोला गया "सत्य" यीशु मसीह का सुसमाचार और व्यक्तित्व है। उसके अलावा कोई सत्य, शांति या आशा नहीं है!

8:32,40,44,45,46 "सत्य" यह संदर्भ की प्रमुख अवधारणा है। इस शब्द के दो लक्ष्यार्थ हैं।

1. विश्वासयोग्यता
2. असत्यता बनाम सत्य

दोनों लक्ष्यार्थ यीशु के जीवन और सेवकाई के लिए सच हैं। वह सुसमाचार की विषयवस्तु और लक्ष्य दोनों है। सत्य मुख्य रूप से एक व्यक्ति है! यीशु व्यक्तिगत पिता को प्रगट करता है। इस पद को अक्सर संदर्भ से बाहर ले जाया जाता है और शैक्षिक विन्यास में प्र.योग किया जाता है। तथ्य, यहाँ तक कि सच्चे तथ्य, यहाँ तक कि बहुत सारे सच्चे तथ्य, किसी को मुक्त नहीं करते हैं (तुलना सभोपदेशक 1:18)। यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर सत्य पर विशेष विषय देखें।

8:32 "तुम्हें स्वतंत्र करेगा" विश्वासी वैधता, कर्मकांड, और प्रदर्शन उन्मुख, मानव धार्मिकता से स्वतंत्र हैं। फिर भी स्वतंत्र विश्वासी सुसमाचार के खातिर खुद को बाँधते हैं (तुलना रोमियों 14:1-15: 6; 1 कुरिंथियों 8-10)।

8:33 "हम तो अब्राहम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए" यह आश्चर्यजनक है कि जातीय अभिमान कितना अंधा हो सकता है। मिस्र, सीरिया, बाबुल, फारस, यूनान, सीरिया और रोम के बारे में क्या?

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 8:34-38
[34]यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है। [35]दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है। [36]इसलिये यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे। [37]मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंश से हो; तौभी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो। [38]मैं वही कहता हूँ, जो अपने पिता के यहाँ देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुम ने अपने पिता से सुना है।"

8:34 "जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है" यीशु उन्हें यूहन्ना 8:32 के अपने पिछले वाक्यांश "तुम्हें स्वतंत्र करेगा" के पीछे की आत्मिक वास्तविकता में ले जाने की कोशिश कर रहे थे, जो यूहन्ना 8:33 में दिए गए कथन से पता चलता है कि उन्होंने गलत समझा । यह कथन यूहन्ना 8:21और 24 में यीशु के जोरदार आरोपों से संबंधित है। इन परिधीय अनुयायियों संबंधी उसकी निंदा यूहन्ना 8:44-47 में पूर्णता तक पहुँचती है।

जैसा कि Frank Stagg, *New Testament Theology* में कहते हैं, "मनुष्य की दुर्दशा की विडंबना यह है कि बंधन उसके मुक्त होने के प्रयास का परिणाम है" (पृष्ठ 32)।

यहाँ क्रिया एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है, "करता", जो चल रहे पाप को दर्शाता है। निरंतर पाप एक प्रमाण है कि कोई सत्य (यीशु) को नहीं "जानता" है। यही सच्चाई 1 यूहन्ना 3: 6,9 में वर्तमान काल क्रियाओं "पाप करता" का प्रयोग करते हुए व्यक्त की गई है!

सवाल यह है, "क्या विश्वासी अभी भी पाप करते हैं?" इसका उत्तर "हाँ" होना चाहिए (तुलना रोमियों 7; 1 यूहन्ना)। ईसाई पाप के साथ संघर्ष करते हैं, लेकिन खोए हुए इसमें मौज मनाते हैं और इसे नहीं पहचानते!

NET बाइबल (पृष्ठ 1921 #21) एक अच्छी टिप्पणी जोड़ती है कि यूहन्ना में प्रासंगिक पाप "अविश्वास" (अक्षम्य पाप) है। यह एक नैतिक संदर्भ नहीं है, लेकिन "उद्धार पाने तक विश्वास संदर्भ है।" 1 यूहन्ना में "पाप" भी अविश्वास (मृत्यु तक का पाप) है!

8:35 यह पद यूहन्ना 8:34 से सीधा संबंधित नहीं है, लेकिन यूहन्ना 8:36 से है। यीशु, रब्बियों के यहूदी धर्म का मूसा नहीं, सच्चा पुत्र है (तुलना इब्रानियों 1: 3; 3:6; 5:8; 7:28)। केवल उस पर विश्वास, न कि अंतहीन नियमों और अनुष्ठानों के प्रदर्शन, किसी को मुक्त कर सकता है (तुलना यूहन्ना 8:32)।

▣ **"हमेशा के लिए"** यूहन्ना 6:58 पर विशेष विषय देखें।

8:36 "यदि" यह एक तीसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो संभावित कार्य की बात करता है।

8:37 "इसलिये मुझे मार डालना चाहते हो" (तुलना यूहन्ना 5:18; 7:1,19; 8:37,40; 11:53)।

▣ **"तौभी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता"** इस वाक्यांश को कई अर्थों में समझा जा सकता है। एक मददगार अध्ययन सहायता है *The Bible in Twenty Six Translations*।

1. "क्योंकि मेरा वचन तुम में मुक्त रूप से नहीं बहता" – American Standard Version
2. "तुम में आधार नहीं पाता" – *The New Testament* by Henry Alford
3. "तुम्हारे बीच कोई प्रगति नहीं करता" – *New Testament:A New Translation* by James Moffatt
4. "तुम्हारे में कोई जगह नहीं पाता" – *The Emphasized New Testament: A New Translation* by J.B.Rotherham
5. "क्योंकि मेरे वचन तुम्हारे हृदय में कोई जगह नहीं पाते" – *The Four Gospels* by E. John 8: Rieu

फिर से समस्या सुसमाचार को ग्रहण करने या न ग्रहण करने की है। यह एक उद्धार का मुद्दा है, नैतिक प्रगति का नहीं।

8:38 "जो मैंने देखा है" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो यीशु के पूर्व-अस्तित्व और पिता के साथ वर्तमान संगति से संबंधित है (तुलना यूहन्ना 8: 40,42)।

▣ **"तुम वही करते रहते हो जो तुम ने अपने पिता से सुना है"** "पिता" का पहला उल्लेख यहूदी परंपरा का संदर्भ हो सकता है (तुलना यशायाह 29:13)। हालाँकि, यूहन्ना 8:41-44 में कर्त्ता शैतान/दुष्ट के योग्य है। उनके कार्य, उद्देश्य और शब्द,माना जाता है कि "मूसा" का समर्थन करते हुए, स्पष्ट रूप से उनके आत्मिक अभिविन्यास को दर्शाते हैं। मनुष्य आत्मिक क्षेत्र में पहल नहीं करते/कर सकते। प्रभाव के दो स्रोत हैं (द्वैतवाद नहीं) - परमेश्वर/मसीह/आत्मा या शैतान/और उसका! कोई सुसमाचार पर कैसी प्रतिक्रिया करता है (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16; 10:1-18; 14:6) उसके आत्मिक अभिविन्यास को प्रगट करता है!

इस वाक्यांश से संबंधित कुछ पाठ्य विकल्प है।

1. "पिता" के लिए दोनों संदर्भ YHWH ("अपने"सर्वनाम नहीं) का उल्लेख कर सकते हैं।
2. क्रिया एक आज्ञार्थक है, न कि एक निर्देशात्मक

(देखें Bruce M Metzger, *A Textual Commentary on the Greek New Testament,* p.225) ।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 8:39-47

39उन्होंने उसको उत्तर दिया, "हमारा पिता तो अब्राहम है।" यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अब्राहम की संतान होते, तो अब्राहम के समान काम करते। 40परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो,जिसने तुम्हें वह सत्य वचन बताता जो परमेश्वर से सुना; ऐसा तो अब्राहम ने नहीं किया था। 41तुम अपने पिता के समान काम करते हो।" उन्होंने उससे कहा, "हम व्यभिचार से नहीं जन्मे; हमारा एक पिता है अर्थात परमेश्वर।" 42यीशु ने उनसे कहा, "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूँ। मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा। 43तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम मेरा वचन नहीं सुन सकते। 44तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि उसमें सत्य है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव से ही बोलता है; क्योंकि वह झूठा है वरन झूठ का पिता है। 45परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिये तुम मेरा विश्वास नहीं करते। 46तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते? 47जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।"

8:39 " हमारा पिता तो अब्राहम है" यीशु ने अब्राहम से उनकी भौतिक उत्पत्ति की पुष्टि की, लेकिन इस ओर संकेत किया कि उनमें शैतान की पारिवारिक विशेषताएँ हैं (तुलना यूहन्ना 8:38,44)। एक व्यक्तिगत विश्वास संबंध ने, न कि जातीय पहचान ने, यहूदियों को परमेश्वर के साथ सही बनाया (तुलना व्यवस्थाविवरण 6: 5,13; रोमियों 2:28-29; 9:6)।

▣ **"यदि"** यह रचना में प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है (वाक्यांश में *-ei* के साथ वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक),

लेकिन यह द्वितीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक के रूप में कार्य कर सकता है (तुलना यूहन्ना 8:19 और 42)। यूनानी पांडुलिपि रूपांतर ने पहली क्रिया को अपूर्ण में बदलकर इस मिश्रित प्रतिबंधात्मक रूप को हटाने का प्रयास किया। यदि ऐसा हो, तो इसे ऐसे पढ़ा जाएगा, "यदि तुम अब्राहम की संतान होते, तो तुम वही कर रहे होते जो अब्राहम ने किया था, लेकिन तुम नहीं हो।" UBS[4] मिश्रित प्रतिबंधात्मक रूप को "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है।

8:40 "मनुष्य" यीशु ने न केवल खुद को YHWH के प्रतिनिधि के रूप में, YHWH के साथ दैवीय सार में समान, बल्कि एक सच्चे मानव के रूप में भी समझा। इस दावे ने आत्मा और भौतिक चीजों के बीच अनन्त द्वैतवाद के ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के दावे का खंडन किया (तुलना 1 यूहन्ना 1:1-4; 4:1-4)।

विशेष विषय: ज्ञानवाद (SPECIAL TOPIC: GNOSTICISM)

I. पहली शताब्दी की व्यवस्था

पहली शताब्दी का रोमी जगत पूर्वी और पश्चिमी धर्मों के बीच चयनशीलता का समय था। यूनानी और रोमी देवालयों के देवताओं की प्रतिष्ठा गिरी हुई थी। देवता के साथ व्यक्तिगत संबंध और गुप्त ज्ञान पर उनके जोर देने के कारण रहस्यमय धर्म बहुत लोकप्रिय थे। धर्मनिरपेक्ष यूनानी दर्शन लोकप्रिय था और अन्य विश्वदृष्टिकोणों के साथ विलय हो रहा था। चयनशील धर्म की इस दुनिया में मसीही धर्म की विशिष्टता आ गई (यीशु परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है, तुलना यूहन्ना 14:6)। विधर्मियों की सटीक पृष्ठभूमि जो भी हो, यह मसीही धर्म के बहिष्करण (यानी, यूहन्ना 14:6; 1 यूहन्ना 5:12) को व्यापक यूनानी-रोमी दर्शकों के लिए प्रशंसनीय और बौद्धिक रूप से स्वीकार्य बनाने का एक प्रयास था। यह संभव है कि ज्ञानवादी विचार की उत्पत्ति सीमांत यहूदी संप्रदायों में हुई (यानी, एक उदाहरण: DSS संप्रदाय)। यह नये नियम की ज्ञानवाद से संबंधित पुस्तकों के कुछ यहूदी तत्वों की व्याख्या कर सकता है।

II. 1 यूहन्ना से आंतरिक प्रमाण द्वारा मतान्तर के कुछ मूल सिद्धांत।
   - A. यीशु मसीह के देहधारण का खंडन
   - B. उद्धार में यीशु मसीह की केंद्रीयता का खंडन
   - C. एक उपयुक्त मसीही जीवन शैली की कमी
   - D. ज्ञान पर जोर (अक्सर गुप्त)
   - E. बहिष्कार और अभिजात्यवाद की ओर एक प्रवृत्ति

III. पहली शताब्दी का प्रारंभिक ज्ञानवाद
   - A. पहली शताब्दी के प्रारंभिक ज्ञानवाद की बुनियादी शिक्षाओं में आत्मा और तत्त्व के बीच के सत्तामूलक (अनंत) द्वैतवाद पर जोर दिया गया प्रतीत होता है। आत्मा (उच्च देवता) को अच्छा माना जाता था, जबकि तत्त्व सहज रूप से बुरा था। यह द्विभाजन निम्नलिखित के समान है
     1. प्लैटोवाद के आदर्श के विरुद्ध भौतिक
     2. स्वर्गीय के विरुद्ध सांसारिक
     3. अदृश्य के विरुद्ध दृश्यमान। उद्धार के लिए आवश्यक गुप्त ज्ञान (पासवर्ड या गुप्त कोड जो एक आत्मा को उच्च देवता तक पहुँचने के लिए दिव्य क्षेत्रों [*aeons*] से गुजरने की अनुमति देती है) के महत्व पर एक अत्यधिक जोर था
     4. संभवत: पारसी धर्म से एक प्रभाव
   - B. प्रारंभिक ज्ञानवाद के दो रूप हैं जो स्पष्ट रूप से 1 यूहन्ना की पृष्ठभूमि में हो सकते हैं
     1. डॉकैटिक ज्ञानवाद, जो यीशु की सच्ची मानवता को नकारता है क्योंकि तत्त्व बुरा है
     2. सेरिन्थियन ज्ञानवाद, जो अच्छे उच्च ईश्वर और बुरे तत्त्व के बीच मसीह की पहचान कई *aeons* या दिव्य स्तरों में से एक के साथ करता है। इस "मसीह आत्मा" ने यीशु के बपतिस्मे पर उसमें वास किया और उसके क्रूसित किए जाने से पहले उसे छोड़ दिया।
     3. इन दो समूहों में से कुछ ने तपस्या (यदि शरीर चाहता है, तो वह दुष्ट है),औरों ने विधिमुक्तिवाद (यदि शरीर यह चाहता है, वह करें) का पालन किया।
   - C. पहली शताब्दी में ज्ञानविज्ञान की विकसित प्रणाली का कोई लिखित प्रमाण नहीं है। यह दूसरी शताब्दी के मध्य तक नहीं है जब प्रलेखित साक्ष्य मौजूद थे (नाग हम्दी ग्रंथों को देखें)। "ज्ञानवाद" के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें

1. *The Gnostic Religion* by Hans Jonas, published by Beacon Press
2. *The Gnostic Gospels* by Elaine Pagels, published by Random House
3. *The Nag Hammadi Gnostic Texts and the Bible* by Andrew Helmbold

IV. आज मतान्तर
A. यह मतान्तर की भावना आज हमारे पास मौजूद है जब लोग विचार की अन्य प्रणालियों के साथ मसीही सत्य को संयोजित करने का प्रयास करते हैं।
B. यह मतान्तर की भावना आज हमारे साथ मौजूद है जब लोग व्यक्तिगत संबंधों और जीवन शैली के विश्वास के बहिष्कार के लिए "सही" सिद्धांत पर जोर देते हैं।
C. यह मतान्तर की भावना आज हमारे पास मौजूद है जब लोग मसीहत को एक विशेष बौद्धिक अभिजात्य में बदल देते हैं।
D. यह मतान्तर की भावना आज हमारे पास मौजूद है जब धार्मिक लोग परमेश्वर का पक्ष पाने के लिए तपस्या या विधिमुक्तिवाद को सबसे अच्छा तरीका मानते हैं।

8:41
NASB, NKJV "'हम व्यभिचार से नहीं जन्मे'"
NRSV "'हम अवैध संतान नहीं हैं'"
TEV "'हम सच्ची सन्तान हैं'"
NJB "'हम अवैध नहीं जन्मे'"
यह यूहन्ना 8:48 के आरोप के साथ जुड़ा हो सकता है ("तू सामरी है")। ऐसा लगता है कि यहूदी इस बात पर जोर दे रहे थे कि यीशु एक अवैध पुत्र था, न कि पूरी तरह से एक यहूदी खून। बाद के रब्बियों के सूत्रों का कहना है कि यीशु एक रोमी सैनिक द्वारा जन्मा था।

▣ **"हमारा एक पिता है अर्थात परमेश्वर"** यह कथन पुराने नियम के पैतृक शब्दों में व्यक्त कठोर एकेश्वरवाद को दर्शाता है (तुलना व्यवस्थाविवरण 4:35,39; 6:4-5) (तुलना व्यवस्थाविवरण 32:6; यशायाह 1:2; 63:16; 64:8)। यहाँ यह दुविधा थी: इन यहूदी अगुवों ने परमेश्वर के एकत्व की पुष्टि की (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:4-5) और यह कि मूसा के नियमों का पालन परमेश्वर के साथ एक सही संबंध बनाता है (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:1-3:17,24-25)। यीशु परमेश्वर के साथ एक होने का दावा करते हुए आया! यीशु ने दावा किया कि परमेश्वर के साथ उचित स्थायित्व नियमों के पालन पर नहीं, बल्कि उसमें व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित था। उनका भ्रम और अनिच्छा समझ में आती है, लेकिन यह वह स्थान है जहाँ यीशु की आत्मा और पराक्रमी कार्यों की अंतर्दृष्टि विश्वास को लाती है!

8:42 "यदि" यह द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। "यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, जो वह नहीं है, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; जो तुम नहीं रखते" (सीएफ यूहन्ना 8:47)।

8:43 "इसलिये कि तुम मेरा वचन नहीं सुन सकते" यह आत्मिक ग्रहणशीलता और समझ को दर्शाता है। उनके कोई आत्मिक कान नहीं थे (तुलना यशायाह 6:9-10; मत्ती 11:15; 13:9,15-16,43; मरकुस 4:9,23; 7:16; 8:18; लूका 8:8; 14:35; प्रेरितों के काम 7:51; 28:26-27)।

8:44 "तुम अपने पिता शैतान से हो" उसके दिन के धार्मिक अगुवों के लिए कितना चौंकाने वाला कथन (तुलना यूहन्ना 8:43)। पारिवारिक विशेषताओं में सहभागी होने की यह अवधारणा एक इब्रानी मुहावरे में व्यक्त की गई है, ". . .के पुत्र" (तुलना मत्ती 13:38; प्रेरितों के काम 13:10; 1 यूहन्ना 3:8,10)।
"शैतान" के लिए यूहन्ना 12:31 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"आरम्भ से हत्यारा है"** इसका अर्थ यह नहीं कि इसका तात्पर्य बुराई की अनंतता है (जैसे कि, पारसी धर्म में द्वैतवाद), लेकिन यह सर्प के अंदर झूठ बोलने वाली आत्मा के प्रतिनिधि द्वारा आदम और हव्वा के आत्मिक प्रलोभन की अवधारणा को दर्शाता है (तुलना उत्पत्ति 3)। परमेश्वर जो सच्चा, सत्य है और शैतान के बीच उद्देश्यपूर्ण विरोधाभास पर ध्यान दें!

8:46 "तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है" संदर्भ में यह झूठी गवाही को संदर्भित करता है। शैतान झूठ बोलता है, लेकिन यीशु सच बोलता है। यीशु ने अपने कथनों या उपदेशों का खंडन करने, उसे झूठा साबित करने के लिए इन यहूदी अगुवों को आमंत्रित किया! इस संदर्भ में यह कथन एक धर्मशास्त्रीय सिद्धांत के रूप में यीशु की पापहीनता से संबंधित नहीं है।

यूहन्ना में "पाप" पाप के एक विशिष्ट कार्य की बजाय परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह में पतित संसार में बुराई का एक सिद्धांत ज्यादा है। पाप सब कुछ है यीशु नहीं है! परम "पाप" अविश्वास है (तुलना यूहन्ना 16:9)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 8:48-59
[48]यह सुन यहूदियों ने उससे कहा, "क्या हम ठीक नहीं कहते हैं कि तू सामरी है और तुझ में दुष्टात्मा है?"
[49]यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते
हो। [50]परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता; हाँ, एक है जो चाहता है और न्याय करता है। [51]मैं तुम से सच सच
कहता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा,तो वह अनंत काल तक मृत्यु को न देखेगा।" [52]यहूदियों ने उस
से कहा, "अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है। अब्राहम मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं; और तू
कहता है, 'यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनंतकाल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा।' [53]हमारा पिता
अब्राहम तो मर गया। क्या तू उस से बड़ा है? और भविष्यद्वक्ता भी मर गए। तू अपने आप को क्या ठहराता है?"
[54]यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं आप अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं; परन्तु मेरी महिमा करनेवाला
मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। [55]तुमने तो उसे नहीं जाना परन्तु मैं उसे जानता हूँ।
यदि मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी तरह झूठा ठहरूँगा;परन्तु मैं उसे जानता और उसके वचन पर
चलता हूँ। [56]तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था;और उसने देखा और आनंद
किया।" [57]यहूदियों ने उससे कहा,"अब तक तू पचास वर्ष का नहीं, फिर भी तू ने अब्राहम को देखा है?" [58]यीशु ने
उनसे कहा,"मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि इससे पहले कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ। [59]तब उन्होंने उसे मारने
के लिए पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मंदिर से निकल गया।

8:48 "तू सामरी है और तुझ में दुष्टात्मा है" एक संभावना है कि इसका वास्तविक संदर्भिक अर्थ यूनानी शब्द "सामरी" से अनुवादित अरामी शब्द में परिलक्षित होता है, जिसका अर्थ था "दुष्टात्माओं का सरदार।" यीशु ने अरामी भाषा बोली। यदि यह सत्य है तो यह धर्मगुरुओं द्वारा निरंतर आरोप में सही बैठता है कि यीशु की सामर्थ्य एक दुष्टअलौकिक स्रोत से आई थी। यह भी संभव है कि किसी को यह कहना कि किसी में दुष्टात्मा है का मतलब हो सकता है कि वे झूठ बोल रहे थे (तुलना यूहन्ना 8:52)। यह कहना कि यीशु एक सामरी था (तुलना यूहन्ना 4:9) या उसमें दुष्टात्मा था (तुलना यूहन्ना 7:20; 8:48,49,52; 10:20,21, यूहन्ना 12:31 पर विशेष विषय देखें) यह कहने का एक तरीका था कि किसी को उसकी बात नहीं सुननी चाहिए या उसके संदेश का जवाब नहीं देना चाहिए। यह फिर, जैसे "हमारा पिता तो अब्राहम है," यीशु या उसके संदेश का जवाब नहीं देने के लिए एक और बहाना था।

8:49 पिता पर विश्वास नहीं किया जा सकता और न पुत्र पर (तुलना 1 यूहन्ना 5:9-12); कोई पिता को जान नहीं सकता और पुत्र का आदर नहीं कर सकता (तुलना यूहन्ना 5:23)। हालाँकि दो अलग-अलग बाहरी व्यक्ति हैं, वे एक हैं (तुलना यूहन्ना 10:30; 17: 21-23)।

8:50 "अपनी प्रतिष्ठा" यूहन्ना 1:14 पर ध्यान दें।

8:51,52 "यदि. . .यदि" ये दोनों तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं, जिसका अर्थ है संभावित कार्य। ध्यान दें आज्ञापालन विश्वास से जुड़ा हुआ है (यूहन्ना 8:48 में पाठों की सूची देखें)। ॥

▣ **"वह मृत्यु का स्वाद न चखेगा"** यह एक प्रबल दोहरा नकारात्मक है। यह स्पष्ट रूप से आत्मिक मृत्यु (तुलना यूहन्ना 8: 21,24) को संदर्भित करता है, न कि शारीरिक मृत्यु को (तुलना यूहन्ना 5:24; 6:40, 47; 11: 25-26)। यह मृत्यु के भय का उल्लेख कर सकता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 15: 54-57)।

बाइबल में "मृत्यु" (*thanatos*) की अवधारणा को तीन चरणों में व्यक्त किया गया है।

1. आत्मिक मृत्यु, उत्पत्ति 2:17; 3:1-24; यशायाह 59: 2; रोमियों 7:10-11याकूब 1:15 (परमेश्वर के साथ संबंध टूट गया है)
2. शारीरिक मृत्यु, उत्पत्ति 3:4-5; 5 (ग्रह के साथ संबंध टूट गया है)

3. अनन्त मृत्यु, "दूसरी मृत्यु," प्रकाशितवाक्य 2:11; 20:6,14; 21:8 (परमेश्वर के साथ टूटे हुए संबंध को स्थायी बनाया गया है)

मृत्यु उसकी सर्वोच्च रचना के लिए परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है (तुलना उत्पत्ति 1:26-27)।

8:52 यह दिखाता है कि उन्होंने यीशु के कथन को गलत समझा। (यूहन्ना 8:51)। इन्होंने इसे अब्राहम और भविष्यद्वक्ताओं के भौतिक जीवन से संबंधित समझा।

8:53 यह प्रश्न "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है। क्या चौंकाने वाला बयान है! लेकिन यह वही था जो यीशु दावा कर रहा था।

1. वह अब्राहम से बड़ा था, यूहन्ना 8:53
2. वह याकूब से बड़ा था, 4:12
3. वह योना से बड़ा था, मत्ती 12:41; लूका 11:32
4. वह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा था,लूका 7:28
5. वह सुलैमान से बड़ा था, मत्ती 12:42; लूका 11:31

इब्रियों की पूरी किताब मूसा पर यीशु की, पुरानी वाचा पर नई वाचा की श्रेष्ठता को दर्शाती है। (www.freebiblecommentary.mobi पर इब्रानियों पर मेरी टिप्पणी मुफ्त ऑनलाइन देखें)

▣ **"तू अपने आप को क्या ठहराता है"** यही सही बात थी! यीशु ने यूहन्ना 8:54 और 58 में स्पष्ट रूप से निष्कर्ष बताया है और वे उसे ईशनिंदा के लिए पत्थर मारने की कोशिश करते हैं (तुलना यूहन्ना 8:59)।

8:54 "यदि" एक और तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका मतलब संभावित कार्य है।

▣ **"महिमा"** यह यहाँ आदर के अर्थ में प्रयोग किया गया है (तुलना रोमियों 1:21; 1कुरिन्थियों 12:26)।

8:55 "जाना. . .जानता" अंग्रेजी शब्द इस पद में दो यूनानी शब्दों का अनुवाद करता है, *ginōsko*, और *oida*, जो इस संदर्भ में समानार्थी शब्द प्रतीत होते हैं (तुलना यूहन्ना 7: 28-29)। यीशु पिता को जानता है और उसे अपने अनुयायियों पर प्रगट करता है। संसार (यहूदी भी) पिता को नहीं जानता (तुलना यूहन्ना 1:10; 8:19,55; 15:21; 16:3; 17:25)।

8:56 "तुम्हारा पिता अब्राहम" यह एक चौंकाने वाला बयान है। यीशु ने अपने आप को "यहूदियों," "कानून" (तुलना यूहन्ना 8:17), "मंदिर," और यहाँ तक कि कुलपिता अब्राहम से दूर कर दिया। पुरानी वाचा से स्पष्ट विच्छेद है!

▣ **"मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था"** यह एक अनिर्दिष्टकाल मध्यम निर्देशात्मक है। अब्राहम ने मसीहा के बारे में कितना समझा? कई अनुवाद भविष्यकाल में इसका अनुवाद करते हैं। ये विकल्प *The Bible in Twenty-Six Translations* से लिए गए हैं।

1. "आल्हादित हुआ कि उसे यह देखना चाहिए" – *The Emphasized New Testament: A New Translation* by J.B Rotherham
2. "आनंद करो कि वह मेरा दिन देखने वाला था" – New Standard Version
3. "देखने की संभावना में बहुत खुश था"- *The Berkeley Version of the New Testament* by Gerrit Verkuyl
4. "मेरे आने को देखकर" – *The New Testament:An American Translation* by Edgar J. Goodspeed
5. "मेरे दिन के बारे में जानकर हर्षित हुआ" – *The New Testament in the Language of Today* by William F. Beck

अलावा, *The Analytical Greek Lexicon Revised* edited by Harold K. Moulton को सेप्टुआजिंट के प्रयोग (पृष्ठ 2) से "प्रबल रूप से कामना करना" के अर्थ में क्रिया को सूचीबद्ध किया गया है।

▣ **"उसने देखा और आनंद किया"** यह दो बातों में से एक को संदर्भित करता है

1. कि अब्राहम ने अपने जीवनकाल में, मसीहा का दर्शन किया था(तुलना II Esdras 3:14)
2. कि अब्राहम जीवित था (स्वर्ग में) और पृथ्वी पर मसीहा के काम के प्रति सचेत था (तुलना इब्रानियों 11:13)

यीशु के कथन का मुख्य बिंदु यह है कि यहूदी राष्ट्र के पिता बहुत खुशी के साथ मसीहाई युग का इंतजार कर रहे थे, लेकिन वर्तमान "बीज" (पीढ़ी) ने विश्वास और आनन्द करने से इनकार कर दिया! अब्राहम विश्वासियों का पिता है (तुलना रोमियों 2:28-29), अविश्वासियों का नहीं!

8:57 फिर से यीशु के श्रोताओं ने उसके शब्दों को उनकी साहित्यिकता के कारण गलत समझा! यह भ्रम उद्देश्यपूर्ण रहा होगा! उन्होंने नहीं देखा क्योंकि वे देखना नहीं चाहते थे या संभवतः देख नहीं सकते थे!

8:58 "पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ" यह यहूदियों के लिए ईश निंदा थी और उन्होंने यीशु को पत्थर मारने की कोशिश की (निर्गमन 3:12, 14)। वे पूरी तरह से समझ गए थे कि वह क्या कह रहा था, जो यह था कि वह पहले से मौजूद देवता था (तुलना यूहन्ना 4:26; 6:20; 8:24,28,54-59; 13:19; 18:5,6,8;)।

8:59 "तब उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठाए" यीशु के शब्द बहुत सादे थे। वह मसीहा था और वह पिता के साथ एक था। ये यहूदी, जिनके बारे में यूहन्ना 8:31 में कहा जाता है कि "उसका विश्वास किया," अब उसे ईशनिंदा के लिए पत्थर मारने को तैयार हैं (तुलना लैव्यव्यवस्था 24:16)। इन यहूदियों के लिए यीशु के उग्र नए संदेश को स्वीकार करना बहुत कठिन था।

1. उसने उस तरीके से काम नहीं किया जिस तरह से उन्होंने मसीहा से काम करने की अपेक्षा की थी।
2. उसने उनकी पवित्र मौखिक परंपराओं को चुनौती दी
3. उसने उनके सख्त एकेश्वरवाद को भ्रम में डाल दिया
4. उन्होंने कहा कि YHWH नहीं, शैतान उनका "पिता" था

उसे "पत्थरवाह"करना चाहिए या उसे “ग्रहण” करना चाहिए! कोई बीच का आधार नही है!

▣ **"यीशु छिपकर मंदिर से निकल गया"** यह उन पदों में से एक है, जिसने व्याख्याकारों को अनुमान लगाने (और यूनानी पाठ में वाक्यांश जोड़ने) पर विवश किया है कि क्या

1. यह एक चमत्कार था (तुलना लूका 4:30 और पाठ परिवर्धन हैं)
2. यीशु भीड़ में खो गया क्योंकि वह अन्य उपस्थित यहूदियों की तरह लग रहा था।

एक दिव्य समय सारिणी थी। यीशु जानता था कि वह मरने के लिए आया था और वह जानता है कि कैसे, कब और कहाँ। उसका "समय अब तक नहीं आया था"!

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. क्या यूहन्ना 7:53-8:11 यूहन्ना के सुसमाचार का एक मूल हिस्सा है?
   क्यों या क्यों नहीं?
2. यीशु के कथन "मैं जगत की ज्योति हूँ" की पृष्ठभूमि क्या है?
3. फरीसी क्यों यीशु के इतने विरोधी थे?
4. यूहन्ना 8:30 में आगे दिए गए संदर्भ के प्रकाश में "विश्वास" शब्द के प्रयोग की व्याख्या करें।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 9

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
जन्म से अंधे मनुष्य की चंगाई	एक जन्म से अंधा मनुष्य दृष्टि पाता है	यीशु अपने आप को जीवन की ज्योति के रूप में प्रगट करता है	यीशु जन्म से अंधे मनुष्य को चंगा करता है	जन्म से अंधे मनुष्य की चंगाई
9:1-12	9:1-12	9:1-12	9:1-2	9:1-5
			9:3-5	
			9:6-7	9:6-7
			9:8	9:8-12
			0:9a	
			9:9b	
			9:10	
			9:11	
			9:12a	
			9:12b	
फरीसी चंगाई की जाँच करते हैं	फरीसी चंगे हुए मनुष्य को समाज से बहिष्कृत करते हैं		फरीसी चंगाई की जाँच करते हैं	
9:13-17	9:13-34	9:13-17	9:13-15	9:13-17
			9:16a	
			9:16b	
			9:17a	
			9:17b	
9:18-23		9:18-23	9:18-19	9:18-23
			9:20-23	
9:24-34		9:24-34	9:24	9:24-34
			9:25	
			9:26	
			9:27	
			9:28-29	
			9:30-33	
			9:34	
आत्मिक अंधापन	सही दृष्टि और सही अंधापन		आत्मिक अंधापन	

9:35-39	9:35-41	9:35-41	9:35	9:35-39
			9:36	
			9:37	
			9:37	
			9:39	
9:40-41			9:40	9:40-41
			9:41	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 1-41 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. अंधों की चंगाई, यीशु की सेवकाई में, बहुधा होने वाला चमत्कार, आश्चर्यजनक रूप से कई अलग-अलग तकनीकों द्वारा पूरा किया गया है।

B. अंधों की चंगाई एक मसीहाई संकेत था (तुलना यशायाह 29:18; 35:5; 42:7; मत्ती 11: 5)। इन चंगाइयों के महत्व को यीशु के कथन के तात्कालिक संदर्भ में देखा जाता है कि वह जगत की ज्योति था (तुलना यूहन्ना 8:12 और 9: 5)। यहूदी एक चिन्ह चाहते थे; उनके पास कई थे! केवल YHWH ही आँखें खोल सकता है!

C. यह अध्याय एक मनुष्य की शारीरिक अंधता और फरीसियों की आध्यात्मिक अंधता (तुलना यूहन्ना 9:39-41; मत्ती 6:23) का एक अभिनित दृष्टान्त है।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 9:1-12
[1]जाते हुए उसने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा था। [2]उसके चेलों ने उससे पूछा, "हे रब्बी, किसने पाप
किया था कि यह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने या इसके माता-पिता ने ?" [3]यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इसने पाप
किया था, न इसके माता-पिता ने; परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य उसमें प्रगट हों। [4]जिसने मुझे भेजा
है,हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।
[5]जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ।" [6]यह कहकर उसने भूमि पर थूका, और उस थूक से मिट्टी
सानी, और वह मिट्टी उस अंधे की आँखों पर लगाकर [7]उससे कहा, "जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले" (शीलोह का

अर्थ 'भेजा हुआ' है)। उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया। 8तब पड़ोसी और जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था, कहने लगे, "क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख माँगा करता था?" 9कुछ लोगों ने कहा, "यह वही है," दूसरों ने कहा, "नहीं, परन्तु उसके समान है।" उसने कहा, "मैं वही हूँ।" 10तब वे उससे पूछने लगे, "तेरी आँखें कैसे खुल गईं?" 11उसने उत्तर दिया, "यीशु नामक एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आँखों पर लगाकर मुझसे कहा, 'शीलोह में जाकर धो ले', अतः मैं गया और धोया, और देखने लगा।" 12उन्होंने उससे पूछा, "वह कहाँ है?" उन्होंने कहा, "मैं नहीं जानता।"

9:1 "जन्म से अंधा" यह इस प्रकार की चंगाई का एकमात्र उदाहरण है। इसमें धोखाधड़ी की कोई संभावना नहीं थी।

9:2 "उसके चेलों" अध्याय 6 के बाद से उसके चेलों का यह पहला उल्लेख है। इसका संदर्भ हो सकता है (1) अध्याय 7:3 में वर्णित यहूदिया के चेले या (2) बारह।

▣ **"किसने पाप कियाथा कि यह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने या इसके माता-पिता ने"** इस सवाल ने बहुत धार्मिक चर्चा उत्पन्न की है। हमें प्राचीन यहूदी धर्म के संदर्भ में इसकी व्याख्या करनी चाहिए, पूर्वी धर्मों के संदर्भ में नहीं। कई संभावनाएं हैं।

1. यह जन्मपूर्व पापों को संदर्भित करता है, जो कि रब्बियों ने उत्पत्ति 25:22 से सिद्धांत बनाया है।
2. यह माता-पिता या तत्काल पूर्वजों के पापों को संदर्भित करता है, जो अजन्मे बच्चे को प्रभावित करता है (तुलना निर्गमन 20:5; व्यवस्थाविवरण 5: 9)
3. यह पाप और बीमारी के बीच संबंध को संदर्भित करता है, जो रब्बियों के धर्मशास्त्रीय ज्ञान में आम है (तुलना याकूब 5:15-16; यूहन्ना 5:14)

इसका पुनर्जन्म या कर्म के चक्र के पूर्वी चक्रीय धर्मशास्त्रीय ज्ञान से कोई लेना-देना नहीं है। यह एक यहूदी विन्यास है। इस मुद्दे की एक अच्छी चर्चा के लिए James W. Site's *Scripture Twisting,* pp. 127-144 देखें।

9:3 यह पद यूहन्ना 9:2 में चेलों के सवाल का यीशु का जवाब देती है। कई सत्य निहित हैं: (1) पाप और बीमारी अपने आप नहीं जुड़े हैं और (2) समस्याएँ अक्सर परमेश्वर की आशीष के लिए अवसर प्रदान करती हैं।

9:4 "हमें. . .मैं" ये सर्वनाम स्पष्ट रूप से मेल नहीं खाते हैं। कई यूनानी पांडुलिपियों ने व्याकरणिक समानता को लाने के लिए एक या दूसरे को बदल दिया है। वे निश्चित रूप से धर्मशास्त्रीय स्थिति को प्रतिबिंबित करते हुए प्रतीत होते हैं कि जैसे यीशु जगत की ज्योति था, हम अपने स्वयं के दिन में उस ज्योति को प्रतिबिंबित करना है (तुलना मत्ती 5:14)। :

▣ **"रात आनेवाली है"** यूहन्ना 9:5 के साथ एक तुलना बताती है कि यह स्पष्ट रूप से रूपक है। रात इनका प्रतीक हो सकती है

1. आने वाले न्याय
2. एक बंद अवसर की अवधि
3. यीशु को अस्वीकृत और क्रूसित किया जाना

9:5 "जब तक मैं जगत में हूँ" यह देहधारण की अवधि, बेतलहम से कलवरी / जैतून के पहाड़ तक के समय का उल्लेख करता हुआ प्रतीत होता है। यीशु यहाँ केवल एक सीमित समय के लिए था। उसके श्रोताओं को अब उसके संदेश का प्रत्युत्तर देना चाहिए। यह वाक्यांश यूहन्ना 9: 4 के लिए धर्मशास्त्रीय रूप से समानांतर है।

आश्चर्य होता है कि "मैं हूँ" इस तरह के संदर्भ में किस प्रकार लागू होता है!

▣ **"मैं जगत की ज्योति हूँ"** यूहन्ना अक्सर आत्मिक वास्तविकताओं के रूपकों के रूप में "ज्योति" और "अंधकार" का प्रयोग करता है। यीशु "जगत की ज्योति" के रूप में (तुलना यूहन्ना 1:4-5, 8-9; 3:17-21; 8:12; 9:5; 12:46) पुराने नियम के मसीहाई निहितार्थों को प्रतिबिंबित कर सकता है (तुलना यशायाह 42:6; 49:6; 51:4; 60:1,3)। यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणी देखें।

9:6 "थूक से सनी मिट्टी" लार एक यहूदी चिकित्सा का घरेलू उपचार थी। इसका इस्तेमाल सब्त के दिन करने की अनुमति नहीं थी (तुलना यूहन्ना 9:14)। सुसमाचारों में यीशु के थूक के प्रयोग के तीन उदाहरणों को दर्ज़ किया गया है (तुलना मरकुस 7:33; 8:23; और यहाँ)।इस स्वीकार किए गए, यहाँ तक कि अपेक्षित, चंगाई की पद्धति का प्रयोग करके, यीशु शारीरिक रूप से इस मनुष्य के विश्वास को प्रोत्साहित कर रहा था, लेकिन जानबूझकर फरीसियों की परंपराओं और नियमों को चुनौती भी दे रहा था!

9:7 "शीलोह के कुण्ड" शीलोह का अर्थ है "भेजा हुआ" इस कुण्ड का प्रयोग झोपड़ियों के पर्व के अनुष्ठान में किया गया था।

▣ **"(जिसका अर्थ, भेजा हुआ है)"** शब्द "भेजा हुआ" इस तथ्य से संबंधित था कि कुण्ड का पानी गीहोन नामक सोते से लिया जाता था, जो यरूशलेम शहर की दीवारों के बाहर था। रब्बियों ने "भेजा हुआ" शब्द को मसीहाई निहितार्थ के साथ जोड़ा। यह लेखक की एक और संपादकीय टिप्पणी है।

▣ **"धोया"** यह उसके विश्वास का कार्य था। उसने यीशु के शब्दों पर काम किया!फिर भी यह "बचानेवाला विश्वास" नहीं था (तुलना यूहन्ना 9:11,17,36,38)। यह विश्वास प्रक्रिया मेंथा। सभी सुसमाचारों में से, यूहन्ना ने विश्वास के "स्तरों" को प्रकट किया। अध्याय 8 समूह को दिखाता है, जो "विश्वास करता था," लेकिन उद्धार के लिए नहीं (तुलना मत्ती 13; मरकुस 4, भूमि का दृष्टान्त)।

विशेष विषय: उद्धार (यूनानी क्रिया काल) (SPECIAL TOPIC: SALVATION (GREEK VERB TENSES))

उद्धार कोई उत्पाद नहीं है, बल्कि मसीह में परमेश्वर के साथ एक दैनिक संबंध है। यह तब समाप्त नहीं होता जब कोई मसीह पर भरोसा करता है; यह केवल शुरू हुआ है (एक फाटक और फिर एक मार्ग, तुलना मत्ती 7:13-14)! यह अग्नि बीमा पॉलिसी नहीं है, न ही स्वर्ग का टिकट है, लेकिन बढ़ती हुई मसीह सदृशता का जीवन (तुलना रोमियों 8: 28-29; 2 कुरिन्थियों 3:18; 7:1; गलातियों 4:19; इफिसियों 1: 4; 4:13; 1 थिस्सलुनीकियों 3:13; 4: 3,7; 5:23; 1 पतरस 1:15)। हमारे पास अमेरिका में एक कहावत है जो कहती है कि एक जोड़ा जितने अधिक समय एक साथ रहता है, उतना अधिक वे एक जैसे दिखना शुरू करते हैं। यही उद्धार का लक्ष्य है!

उद्धार एक सम्पन्न कार्य के रूप में (अनिर्दिष्टकाल)

- प्रेरितों के काम 15:11
- रोमियों 8:24
- 2 तीमुथियुस 1:9
- तीतुस 3:5
- रोमियों 13:11 (अनिर्दिष्टकाल को भविष्य के उन्मुखीकरण के साथ जोड़ता है)

उद्धार होने की एक स्थिति के रूप में (पूर्ण)

- इफिसियों 2: 5,8

उद्धार एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में (वर्तमान)

- 1 कुरिन्थियों 1:18; 15:2
- 2 कुरिन्थियों 2:15
- 1 पतरस 3:21

उद्धार भविष्य में परिपूर्ण होने के रूप में (क्रिया काल या संदर्भ में भविष्यकाल)

- रोमियों 5:9,10; 10:9,13
- 1 कुरिन्थियों 3:15; 5:5
- फिलिप्पियों 1:28
- 1 थिस्सलुनीकियों 5: 8-9
- इब्रानियों 1:14; 9:28
- 1 पतरस 1:5

इसलिए, उद्धार एक प्रारंभिक विश्वास के निर्णय के साथ शुरू होता है (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमियों 10:9-13), लेकिन इसे जीवनशैली का विश्वास हो जाना चाहिए (तुलना रोमियों 8:29; गलातियों 2:19-20; इफिसियों 1:4; 2:10), जो एक दिन दृष्टि में परिपूर्ण हो जाएगा (तुलना 1 यूहन्ना 3:2)। इस अंतिम स्थिति को महिमा देना कहा जाता है (तुलना रोमियों 8:28-30)। इसका वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है

1. प्रारंभिक उद्धार - दोषमुक्ति (पाप के दंड से बचाया गया)
2. प्रगतिशील उद्धार - पवित्रीकरण (पाप की सामर्थ्य से बचाया गया)
3. अंतिम उद्धार – महिमा देना (पाप की उपस्थिति से बचाया गया)

9:8 "पड़ोसी" इस अध्याय में तीन समूहों का उल्लेख किया गया है कि इस चमत्कार के गवाह हैं: (1) उसके पड़ोसी (यूहन्ना 9:8); (2) स्वयं वह मनुष्य (यूहन्ना 9:11); और (3) उसके माता-पिता (यूहन्ना 9:18)। पड़ोसियों के बीच और फरीसियों में भी इस चंगाई को लेकर असहमति थी।

▣ **"क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख माँगा करता था"** यह यूनानी प्रश्न एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है।

9:9 "मैं वही हूँ" यह वही यूनानी मुहावरा है जिसका यीशु यूहन्ना 4:26; 6:20; 8:24,28,58; 13:19, 18:5,6,8 में प्रयोग करता है। यह संदर्भ बताता है कि इस रूप में अपने आप दैवीय संकेतार्थ नहीं थे। इस अध्याय के पद 36(प्रभु) और 38(प्रभु) में प्रयुक्त *kurios* शब्द में काफी कुछ उसी प्रकार की अस्पष्टता है।

9:11-12 इस बातचीत से पता चलता है कि इस मनुष्य की चंगाई में तुरंत आत्मिक उद्धार शामिल नहीं है। इस मनुष्य का विश्वास यीशु के साथ उसकी मुलाकातों के माध्यम से विकसित हुआ (तुलना यूहन्ना 9:35)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 9:13-17
[13]लोग उसे जो पहले अंधा था फरीसियों के पास ले गए। [14]जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आँखें खोली थीं वह सब्त का दिन था। [15]फिर फरीसियों ने भी उससे पूछा कि उसकी आँखें किस रीति से खुल गईं।उसने उनसे कहा, "उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैंने धो लिया, और अब देखता हूँ। [16]इस पर कुछ फरीसी कहने लगे," यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता।" दूसरों ने कहा,"पापी मनुष्य ऐसे चिन्ह कैसे दिखा सकता है?" अतः उनमें फूट पड़ गई। [17]उन्होंने उस अंधे से फिर कहा, "उसने तेरी आँखें खोली हैं। तू उसके विषय में क्या कहता है ?" उसने कहा, "वह भविष्यद्वक्ता है।"

9:13 "वे" यह पड़ोसियों को संदर्भित करना चाहिए।

▣ **"फरीसी"** यहूदी अगुवे यूहन्ना में दो अलग-अलग शब्दों से चलते हैं। उन्हें आमतौर पर "यहूदी" के रूप में संदर्भित किया जाता है।(तुलना यूहन्ना 9:18, 22)। हालाँकि, इस अध्याय में यूहन्ना 9:13, 15, 16, और 40 में उन्हें फरीसी कहा गया है। यूहन्ना 1:24 पर विशेष विषय देखें।

9:14 "जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आँखें खोली थीं, वह सब्त का दिन था" यहूदी अगुवों की परंपराओं (तल्मूड में संहिताबद्ध की गईं मौखिक परंपराएँ) ने इस व्यक्ति की आवश्यकता पर मिसाल दी (तुलना यूहन्ना 5:9; 9:16; मत्ती 23:24)। यह लगभग वैसा ही है जैसा कि यीशु ने जानबूझकर सब्त के दिन इन अगुवों के साथ एक धर्मशास्त्रीय संवाद में जाने के उद्देश्य से ऐसा किया हो। यूहन्ना 5:9 पर टिप्पणी देखें

9:16 फरीसी शायद व्यवस्थाविवरण 13:1-5 के आधार पर यीशु को जाँच रहे थे।

▣ **"उनमें फूट पड़ गई"** यीशु हमेशा इस का कारण बनता है (तुलना यूहन्ना 6:52; 7:43; 10:19; मत्ती 10:34-39)

9:17 "वह भविष्यद्वक्ता है" यह अध्याय इस मनुष्य के विश्वास के विकास को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 9:36, 38)। "भविष्यद्वक्ता" के लिए यूहन्ना 4:19 पर विशेष विषय देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 9:18-23
[18]परन्तु यहूदियों को विश्वास न हुआ, कि वह अंधा था और अब देखता है, जब तक उन्होंने उसके, जिसकी आँखें खुल गई थीं, माता-पिता को बुलाकर [19]उनसे न पूछा, "क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अंधा जन्मा था? फिर अब वह कैसे देखता है?" [20]उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, "हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अंधा जन्मा था; [21]परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब कैसे देखता है, और न ये जानते हैं कि किसने उसकी आँखें खोलीं। वह सयाना है, उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा।" [22]ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे, क्योंकि यहूदी एकमत हो चुके थे कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए। [23]इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा, "वह सयाना है,उसी से पूछ लो।"

9:22-23 "यदि कोई कहे कि वह मसीह है" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो संभावित कार्य दर्शाता है। माता-पिता इन यहूदी अगुवों से डरते थे। कई गवाह हैं जिन्होंने इस चंगाई को मान्य किया: (1) पड़ोसी (यूहन्ना 9: 8-10); (2)स्वयं वह मनुष्य (यूहन्ना 9:11-17,24-33); और (3) उसके माता-पिता (यूहन्ना 9:18-23) ।

विशेष विषय: अंगीकार (SPECIAL TOPIC: CONFESSION)

A. "अंगीकार" या "स्वीकार", *homologeō/exomologō* के लिए प्रयोग किए जाने वाले एक ही यूनानी मूल के दो रूप हैं। संयुक्त शब्द *homo*, समान; *legō*, बोलने के लिए; या *ex*, में से है। मूल अर्थ है वही बात कहना, सहमत होना। यूनानी पूर्वसर्ग, *ex*, जोड़े जाने का अर्थ एक सार्वजनिक घोषणा है।

B. इस शब्द समूह के अंग्रेजी अनुवाद हैं
   1. स्तुति करना
   2. सहमत होना
   3. घोषित करना (तुलना मत्ती 7:23)
   4. स्वीकार करना
   5. अंगीकार (तुलना इब्रानियों 4:14; 10:23)

C. इस शब्द समूह के दो विपरीत प्रयोग प्रतीत होते थे
   1. स्तुति करना (परमेश्वर)
   2. पाप को स्वीकार करना

   यह परमेश्वर की पवित्रता और स्वयं के पाप की मानव जाति की भावना से विकसित हुआ होगा। एक सत्य को स्वीकार करना दोनों को स्वीकार करना है।

D. शब्द समूह के नये नियम के प्रयोग हैं
   1. प्रतिज्ञा के लिए (तुलना मत्ती 14:7; प्रेरितों के काम 7:17)
   2. किसी चीज़ के लिए सहमत होना या सहमति देना (तुलना यूहन्ना 1:20; लूका 22:6; प्रेरितों के काम 24:14; इब्रानियों 11:19)।
   3. स्तुति के लिए (तुलना मत्ती 11:25; लूका 10:21; रोमियों; 14:11; 15:9; इब्रानियों 13:15)।
   4. सहमति के लिए
      a. एक व्यक्ति (तुलना मत्ती 10:32; लूका 12:8; यूहन्ना 9:22; 12:42; रोमियों 10:9; फिलिप्पियों। 2:11; 1 यूहन्ना 2:23; प्रकाशितवाक्य 3:5)
      b. एक सच्चाई (तुलना प्रेरितों के काम 23:8; 1 यूहन्ना 4:2)
   5. एक सार्वजनिक घोषणा करने के लिए (धार्मिक पुष्टिकरण में विकसित कानूनी अर्थ, तुलना प्रेरितों के काम 24:14; 1 तीमुथियुस 6:14)।
      a. पाप का अंगीकार किए बिना (तुलना 1 तीमुथियुस। 6:12; इब्रानियों 10:23)
      b. पाप के अंगीकार के साथ (तुलना मत्ती 3:6; प्रेरितों के काम 19:18; इब्रानियों 4:14; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9)

9:22 "तो आराधनालय से निकाला जाए" जाहिर है कि माता-पिता बहिष्कृत किए जाने से भयभीत थे (तुलना यूहन्ना 12:42; 16:2)। यह प्रक्रिया एज्रा (तुलना यूहन्ना 10:8) के समय की है। रब्बियों के साहित्य से हमें पता चलता है कि तीन प्रकार के बहिष्करण थे: (1) एक सप्ताह के लिए; (2) एक महीने के लिए; या (3) आजीवन।

यूहन्ना, पहली शताब्दी के समापन वर्षों में लिखते हुए, यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार करने के कारण आराधनालय से बहिष्कृत होने को अच्छी तरह से जानता था। ये ऐतिहासिक "शाप सूत्र" 70 ई. के बाद फरीसियों द्वारा विकसित किए गए थे। जामिया से यहूदी पुनर्जीवन।

▣ **"उसे आराधनालय से निकाल दिया जाना चाहिए"** यह संगति से अलग करने का एक गंभीर कार्य था (तुलना यूहन्ना 12: 42; 16:2) .

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 9:24-34

[24]तब उन्होंने उस मनुष्य को जो अंधा था, दूसरी बार बुलाकर उससे कहा, "परमेश्वर की स्तुति कर। हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।" [25]उसने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं;मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ।" [26]उन्होंने उससे फिर कहा, "उसने तेरे साथ क्या किया?और किस तरह तेरी आँखें खोलीं?" [27]उसने उनसे कहा, "मैं तो तुम से कह चुका और तुम ने नहीं सुना;अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो?क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो?" [28]तब वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, "तू ही उसका चेला है,

हम तो मूसा के चेले हैं। [29]हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं;परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते कि कहाँ का है।" [30]उसने उनको उत्तर दिया, "यह तो आश्चर्य की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का है, तौभी उसने मेरी आँखें खोल दीं। [31]हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता; परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है। [32]जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म के अंधे की आँखें खोलीं हों। [33]यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।" [34]उन्होंने उसको उत्तर दिया, "तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है?" और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

9:24 "परमेश्वर की स्तुति कर" यह सत्यता को निश्चित करने के लिए की शपथ लेने का एक सूत्र था (तुलना यहोशू 7:19)

9:25 यह उत्तर यूहन्ना 9:16 को संदर्भित करना चाहिए। मनुष्य धर्मशास्त्र पर बहस नहीं करना चाहता है, लेकिन वह यीशु से मिलने के परिणाम पर जोर देता है।

9:27 "तुम भी उसके चेले होना चाहते हो" यूनानी व्याकरणिक रूप "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है, लेकिन सवाल का पूछना ही तीक्ष्ण विडंबना थी और इस अंधे भिखारी के चातुर्य को दर्शाता है।

9:28a "तू ही उसका चेला है" एक वास्तविक सवाल है कि इस अध्याय में यह मनुष्य किस बिंदु पर विश्वासी बन गया। ऐसा लगता है कि आरम्भ में यीशु की चंगाई को इस व्यक्ति के एक मसीहा के रूप में यीशु में विश्वास के साथ नहीं जोड़ा गया था; यीशु ने बाद में उसके मसीहाई दावे उसके सामने रखे (तुलना यूहन्ना 9:36-38)। यह प्रकरण दर्शाता है कि शारीरिक चंगाई आवश्यक रूप से उद्धार नहीं लाती है।

9:28b-29 यह उन कठिनाईयों को दर्शाता है, जिनका सामना धार्मिक अगुवों ने किया। उन्होंने मूसा के प्रेरित प्रकटीकरण के साथ मौखिक परंपरा (तल्मूड) की विस्तृत, विशिष्ट व्याख्याओं की बराबरी करने की कोशिश की। उनकी आंखों को उनके धार्मिक पूर्वाग्रहों (तुलना मत्ती 6:23) ने अंधा कर दिया था। वे मानव परंपराओं के चेले थे (तुलना यशायाह 29:13)।

9:29 "इस मनुष्य को नहीं जानते कि कहाँ का है" यह यूहन्ना की विडंबना का एक और उदाहरण है (तुलना यूहन्ना: 27-28; 8:14)। यीशु पिता से आया था (तुलना यूहन्ना 8:42; 13:3; 16:28) लेकिन उनके अंधेपन में चेले नहीं जानते थे

1. उसका मूल
2. उसका जन्म स्थान

9:30 "यह तो आश्चर्य की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का है, तौभी उसने मेरी आँखें खोल दीं" यह अंधे भिखारी की तीक्ष्ण बुद्धि और कटु विडंबना का एक और उदाहरण है जब वह फरीसियों के तर्क का खंडन करता है।

9:31-33 इस अशिक्षित अंधे मनुष्य के पास धार्मिक अगुवों से बेहतर, अधिक सुसंगत धर्मशास्त्र था!

9:33 "यदि" यह एक द्वितीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। इसे इस तरह समझा जाना चाहिए, "अगर यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, जो की वह था, तो वह ऐसा कुछ नहीं कर सकता था, लेकिन उसने किया।"

9:34 "तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है" यह ध्यान देना दिलचस्प है कि रब्बियों के यहूदी धर्म में "मूल पाप" की कोई अवधारणा नहीं है (तुलना अय्यूब 14:1,4; भजनसंहिता 51:5)। उत्पत्ति 3 के पतन पर रब्बियों के यहूदी धर्म में जोर नहीं दिया गया था। यहूदियों ने दावा किया कि हर मनुष्य में एक अच्छा और बुरा मनोरथ (*yetzer*) होता है। ये फरीसी दावा कर रहे थे कि इस चंगे हुए मनुष्य की गवाही और तर्क अवैध थे क्योंकि जाहिर है कि वह एक पापी था जिसका प्रमाण है कि वह अंधा जन्मा।

▣ **"उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया"** यह अक्षरशः "उन्होंने उसे बाहर फेंक दिया" है। इसका संदर्भ है (1) सदस्यता और स्थानीय आराधनालय में उपस्थिति या (2) बैठक से खारिज करना। संदर्भ में #2 सबसे उचित लगता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 9:35-41
35यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है, और जब उससे भेंट हुई तो कहा, "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?" 36उसने उत्तर दिया, "हे प्रभु, वह कौन है, कि मैं उस पर विश्वास करूँ?" 37यीशु ने उससे कहा, "तू ने उसे देखा भी है, और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वह वही है।" 38उसने कहा, "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।" और उसे दण्डवत किया। 39तब यीशु ने कहा, "मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ।" 40जो फरीसी उसके साथ थे, उन्होंने ये बातें सुनकर उससे कहा, "क्या हम भी अंधे हैं?" 41यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अंधे होते तो पापी न ठहरते; परन्तु अब कहते हो कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है।"

9:35
NASB, NRSV,
TEV, NJB "क्या तू मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करता है?"
NKJV "क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है?"

प्राचीन यूनानी बृहदक्षर पांडुलिपियों A और L में "परमेश्वर का पुत्र" है, लेकिन P^{66}, P^{75}, א, B, D, और W में "मनुष्य का पुत्र" है। यूहन्ना के प्रयोग और पांडुलिपि प्रमाण से "मनुष्य का पुत्र" कहीं अधिक उपयुक्त है, और शायद मूल है। UBS^4 "मनुष्य" को "A" दर्ज़ा (निश्चित) देता है। प्रश्न व्याकर्णिक तौर पर एक "हां" उत्तर की अपेक्षा करता है।

9:36
NASB, NKJV, "प्रभु"
NRSV, TEV,
NJV "महोदय"

हम अध्याय के अंतर्गत इस मनुष्य के विश्वास के धार्मिक विकास को देख सकते हैं, जिस प्रकार वह मनुष्य यीशु को संबोधित करता है

1. एक व्यक्ति (यूहन्ना 9:11))
2. से एक भविष्यद्वक्ता (यूहन्ना 9:17)
3. से एक सम्मानजनक नाम "प्रभु" (यूहन्ना 9:36)
4. से "प्रभु," इस शब्द के पूर्ण धर्मशास्त्रीय प्रयोग में (यूहन्ना 9:38)

यूहन्ना 9:36 और 38 दोनों में एक ही यूनानी शब्द है। केवल संदर्भ ही लक्ष्यार्थ को निर्धारित कर सकता है। विशेष विषय: देवता के नाम यूहन्ना 6:20 पर देखें। यूनानी *Kurios* इब्रानी *Adon* को प्रतिबिंबित कर सकता है, जो YHWH के लिए एक मौखिक विकल्प बन गया।

9:38 जहाँ तक चंगाई पाए मनुष्य के उद्धार का संबंध है, यह विवरण का चरमोत्कर्ष है। यह आश्चर्य की बात है कि यह पद कुछ प्राचीन यूनानी पांडुलिपियों (P75, ,אW) और डायटेस्सरॉन (चार सुसमाचारों का प्रारंभिक संयोजन) से गायब है। इसमें दो दुर्लभ शब्द अवश्य शामिल हैं: (1) वाक्यांश "उसने कहा" केवल यहाँ और 1:23 में आता है और (2) "दण्डवत किया" शब्द केवल यहाँ यूहन्ना में आता है। यह अधिकांश आधुनिक अनुवादों में शामिल है।

9:39 "मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूँ" यह 5:22,27 के अनुरूप प्रतीत होता है, जो अंतिम समय (युगांत-विषयक) के न्याय की बात करता है। हालाँकि, यह 3:17-21 और 12:47, 48 का विरोधाभास प्रतीत होता है। यह इस तथ्य से सामंजस्य स्थापित कर सकता है कि यीशु छुटकारे के उद्देश्य से आया था, लेकिन जो मनुष्य उसके प्रस्ताव को अस्वीकार करते हैं, वे स्वयं अपना न्याय करते हैं।

▣ **"ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ"** यह विशेष रूप से यशायाह की भविष्यवाणी की एक दोहरी पूर्ति थी।

1. गर्वित इस्राएली परमेश्वर के संदेश को नहीं समझेंगे (तुलना यशायाह 6:10, 42:18-19; 43; 8; यिर्मयाह 5:21; यहेजकेल 12:2)

2. गरीब, बहिष्कृत, शारीरिक रूप से प्रभावित जो पश्चाताप करते हैं और विनम्र हैं समझेंगे (तुलना यशायाह 29:18; 32:3-4; 35:5; 42:7,16)

उन सभी के लिए यीशु जगत की ज्योति है जो देखना चाहते हैं (तुलना यूहन्ना 1:4-5, 8-9)।

9:40 "क्या हम भी अंधे हैं" यूनानी वाक्यविन्यास एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है (तुलना मत्ती 15:14; 23-24)। ये अंतिम कुछ पद दिखाते हैं कि यह अध्याय एक ऐसे आत्मिक अंधेपन का अभिनीत दृष्टांत था, जो चंगा नहीं किया जा सकता (अविश्वास का अक्षम्य पाप, यूहन्ना 5:21 पर विशेष विषय देखें), और शारीरिक अंधापन, जो किया जा सकता है!

9:41 यह पद एक सामान्य सत्य को व्यक्त करता है (तुलना यूहन्ना 15:22,24; रोमियों 3:20; 4:20; 5:13; 7:7,9)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. क्या यह अध्याय मुख्य रूप से शारीरिक चंगाई या आत्मिक चंगाई से संबंधित है? शारीरिक अंधापन या आत्मिक अंधापन?
2. पैदा होने से पहले यह मनुष्य कैसे पाप कर सकता है?
3. इस अध्याय में किस बिंदु पर मनुष्य को उद्धार प्राप्त होता है?
4. क्या यीशु जगत का न्याय करने या जगत को बचाने के लिए जगत में आया था?
5. "मनुष्य का पुत्र" शब्द की पृष्ठभूमि का वर्णन करें।
6. यहूदी अगुवों के प्रति अंधे मनुष्य की प्रतिक्रियाओं में विडंबना के बिंदुओं को सूचीबद्ध करें।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 10

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	JB
भेड़ों का दृष्टांत	यीशु सच्चा चरवाहा	यीशु, वो चरवाहा जो अपना प्राण देता है	चरवाहे का दृष्टांत	अच्छा चरवाहा
10:1-6	10:1-6	10:1-6	10:1-5	10:1-5
			10:6	10:6
यीशु अच्छा चरवाहा	यीशु अच्छा चरवाहा		यीशु अच्छा चरवाह	
10:7-18	10:7-21	10:7-10	10:7-10	10:7-18
		10:11-18	10:11-16	
			10:17-18	
10:19-21		10:19-21	10:19-20	10:19-21
			10:21	
यीशु यहूदियों द्वारा अस्वीकृत	चरवाहा अपनी भेड़ों को पहचानता है		यीशु को अस्वीकारा जाता है	यीशु परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है
10:22-30	10:22-30	10:22-30	10:22-24	10:22-30
	यीशु पर पथराव करने का नया प्रयास		10:25-30	
10:31-39	10:31-39	10:31-39	10:31-32	10:31-38
			10:33	
			10:34-38	
			10:39	10:39
	यरदन के पार के विश्वासी			यीशु यरदन के पार चला जाता है
10:40-42	10:40-42	10:40-42	10:40-42	10:40-42

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 10:1-6
[1]"मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। [2]परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है। [3]उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। [4]जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। [5]परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएँगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचनतीं।" [6]यीशु ने उनसे यह दृष्टांत कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है।

10:1 "सच सच" यूहन्ना 1:51 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है"** ध्यान दें भेड़शाला में कुछ ऐसे हैं जो अच्छे चरवाहे के नहीं हैं (तुलना मत्ती 7:21-23 और "गेहूँ और जंगली बीज का दृष्टान्त," मत्ती 13:24-30)। यहाँ समस्या यह है कि कुछ लोग व्यक्तिगत प्रयास के माध्यम से वो प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं जो परमेश्वर मसीह के माध्यम से स्वतंत्र रूप से प्रदान करता है (तुलना रोमियों 3:19-31; 9:30-33; 10:2-4; गलातियों 2:16; 5:4)। अध्याय 9 के फरीसी एक अच्छा उदाहरण हैं।

10:2 "परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है" इस अध्याय में रूपकों का बहुत स्पष्ट मिश्रण है। भेड़शाला के द्वार के रूप में यीशु, यूहन्ना 10:7, और भेड़ों के चरवाहे के रूप में भी (यूहन्ना 10:11 और 14)। हालांकि, रूपकों का यह मिश्रण यूहन्ना और नये नियम में असामान्य नहीं है।
1. यीशु रोटी और रोटी देने वाला है (तुलना यूहन्ना 6:35,51)
2. यीशु सत्य और सत्य बोलनेवाला है (तुलना यूहन्ना 10:8: 45-46 और 14:6)
3. यीशु मार्ग है और वह मार्ग दिखाता है (तुलना यूहन्ना 14:6)
4. यीशु बलिदान है और वह जो बलिदान देता है (तुलना इब्रानियों की पुस्तक)

"चरवाहा" नाम परमेश्वर और मसीहा दोनों के लिए पुराने नियम का एक आम नाम था (तुलना भजनसंहिता 23; भजनसंहिता 80: 1; यशायाह 40:10-11; 1 पतरस 5:1-4)। यहूदी अगुवों को यिर्मयाह 23; यहेजकेल 34 और यशायाह 56:9-12 में "झूठे चरवाहे" कहा जाता है। शब्द "चरवाहा" शब्द "पादरी" से संबंधित है (तुलना इफिसियों 4:11; तीतुस 1:5,7)।

10:3 "भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं" मान्यता और आज्ञाकारिता संबंधों पर आधारित हैं। यूहन्ना में "सुनना" (तुलना यूहन्ना 4:42; 5:24,25,28-29; 8:47; 10:16,27; 18:37) और "देखना" (तुलना यूहन्ना 3:3; 12:40; 20:8) यीशु को. मसीह के रूप में विश्वास / भरोसा करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

▣ **"वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है"** यीशु अपनों को व्यक्तिगत रूप से और अलग-अलग जानता है (जैसा कि YHWH जानता है, तुलना यूहन्ना 10:29-31)। चरवाहों के अक्सर अपने जानवरों के उपनाम होते थे, यहाँ तक कि बड़े झुंडों में भी।

यह धर्मशास्त्रीय रूप से चौंकाने वाला है कि यीशु अपनी सच्ची भेड़ों को यहूदा देश की झूठी भेड़ों में से बाहर बुलाता है। वाचा के लोग परमेश्वर के सच्चे लोग नहीं थे। यह नई वाचा का मौलिक घोटाला है। किसी का विश्वास, वंश नहीं, उसका भविष्य निर्धारित करता है! विश्वास व्यक्तिगत है, राष्ट्रीय नहीं।

यीशु का विरोध करने वाले यहूदी अगुवे परमेश्वर के लोगों का हिस्सा नहीं थे (तुलना यूहन्ना 10:26)!

▣ **"और बाहर ले जाता है"** यह न केवल उद्धार को संदर्भित करता है, बल्कि दैनिक मार्गदर्शन को भी (तुलना यूहन्ना 10:4,9)।

10:4 यह रात में एक बाड़े में कई अलग-अलग झुंडों को रखने के रिवाज का संदर्भ हो सकता है। सुबह चरवाहा बुलाता है और उसकी भेड़ें उसके पास आतीं हैं।

10:5 कलीसिया को हमेशा झूठे चरवाहों से निपटना पड़ा है (तुलना 1 तीमुथियुस 4:1-3; 2 तीमुथियुस 4:3-4; 1 यूहन्ना 4:5-6; 2 पतरस 2)।

10:6 "यीशु ने उनसे यह दृष्टांत कहा" यह सामान्य शब्द "दृष्टांत" (*parabolē*) का अनुवाद नहीं है, लेकिन यह उसी एक मूल (*paroimian*) से आता है। यह रूप केवल यहीं और यूहन्ना 16: 25,29 और 2 पतरस 2:22 में पाया जाता है। यद्यपि यह एक अलग रूप है, यह अधिक सामान्य शब्द "दृष्टांत" (सिनॉप्टिक सुसमाचारों में प्रयुक्त) का पर्याय लगता है। शब्द "दृष्टान्त" का अर्थ सामान्य रूप से एक आत्मिक सत्य के साथ एक सामान्य सांस्कृतिक घटना को रखने से है ताकि समझने में मदद मिल सके। हालाँकि, यह आत्मिक रूप से अंधी आँखों से सच्चाई को छिपाने का उल्लेख है (तुलना यूहन्ना 16:29; मरकुस 4:11-12)।

▣ **"परन्तु वे न समझे"** यदि अध्याय 10 अध्याय 9 के समय से संबंधित है, तो "वे" फरीसियों को संदर्भित करता है। उन्होंने देखने का दावा किया (तुलना यूहन्ना 9:41), लेकिन उन्होंने नहीं देखा (तुलना यूहन्ना 10:20)। धर्म एक अवरोध हो सकता है, सेतु नहीं।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 10:7-10
7तब यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, भेड़ों का द्वार मैं हूँ। 8जितने मुझसे पहले आए वे सब चोर और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी। 9द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा, और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा। 10चोर किसी और काम के लिए नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।"

10:7 "भेड़ों का द्वार मैं हूँ" यह यूहन्ना के सात प्रसिद्ध "मैं हूँ" कथनों में से एक है। यह रूपक इस सच्चाई को उजागर करता है कि यीशु एकमात्र सच्चा मार्ग है (तुलना यूहन्ना 8,10; 14:6)। इसे अक्सर सुसमाचार के बहिष्कार का घोटाला कहा जाता है। यदि बाइबल परमेश्वर का स्व-प्रकाशन है, तो मसीह में परमेश्वर-विश्वास के साथ सही होने का एक ही तरीका है (तुलना प्रेरितों के काम 4:12; 1 तीमुथियुस 2:5)। यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणी देखें।

10:8 "जितने मुझ से पहले आए वे सब चोर और डाकू हैं" अध्याय 9 और 10 के संदर्भ के कारण, स्थापन पर्व, हनुक्काह (तुलना यूहन्ना 10:22), यह संभव है कि यह नियमों के बीच की अवधि के दौरान मैकाबियों और उनके वंशजों के मिथ्याभिमान को संदर्भित करता है । हालांकि, यह संभवतः झूठे चरवाहों के बारे में पुराने नियम के अवतरणों से संबंधित है (तुलना यशायाह 56:9-12; यिर्मयाह 23; यहेजकेल 34; और जकर्याह 11)।

इस अत्यधिक आलंकारिक भाषा और अस्पष्ट पूर्व पद के कारण आरंभिक लेखकों को अर्थ को समझाने के प्रयास में पाठ को संशोधित या विस्तारित करना पड़ा। एक पांडुलिपि (MS D) ने समावेशी शब्द "सब" को छोड़ दिया और कई प्रारंभिक पांडुलिपियों (P^{45}, P^{75}, א*) वाक्यांश "मुझ से पहले" को छोड़ दिया।

10:9 "यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा" यह भविष्यकाल की कर्मवाच्य क्रिया के साथ एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है। यीशु ही परमेश्वर की ओर जानेवाला एकमात्र मार्ग है (तुलना यूहन्ना 14:6)। इस संदर्भ में क्रिया "उद्धार पाएगा" संभवतः पुराने नियम के शारीरिक छुटकारे के लक्ष्यार्थ से संबंधित है (यानी, भेड़ें सुरक्षित हैं)। हालांकि यूहन्ना अक्सर ऐसे शब्दों का चयन करता है जिनके दो अतिव्यापी अर्थ होते हैं। आत्मिक उद्धार की अवधारणा की इस संदर्भ में भी कमी नहीं है (तुलना यूहन्ना 10:42)।

10:10 "चोर" यह झूठे चरवाहों के गुप्त अभिप्रायों को दर्शाता है। यह दुष्ट के उद्देश्य को भी दर्शाता है! काम पर रखे गए श्रमिकों की लापरवाही का यह रवैया यूहन्ना 10:12-13 में देखा जा सकता है।

▣ **"नष्ट"** निम्नलिखित विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: विनाश *(APOLLUMI)* (SPECIAL TOPIC: DESTRUCTION *(APOLLUMI)*)

इस शब्द का एक विस्तृत शब्दार्थ क्षेत्र है, जिसने अनंत न्याय की धर्मशास्त्रीय अवधारणाओं के विरुद्ध सर्वनाश के संबंध में बहुत भ्रम पैदा किया है। मूल शाब्दिक अर्थ *apo* और *ollumi* से है, बर्बाद करना, नष्ट करना।

समस्या इस शब्द के आलंकारिक प्रयोगों में आती है। यह Louw and Nida's *Greek-English Lexicon of the New Testament, Based on Semantic Domains*, vol. 2, p. 30 में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह इस शब्द के कई अर्थों को सूचीबद्ध करता है।

1. नष्ट (जैसे, मत्ती 10:28; लूका 5:37; यूहन्ना 10:10; 17:12; प्रेरितों के काम 5:37; रोमियों 9:22 vol1, p. 232 से।)
2. पाने में विफल (जैसे, मत्ती 10:42, vol 1, p. 566)
3. खोना (जैसे, लूका 15:8, vol 1, p. 566)
4. स्थान से अनजान (जैसे, लूका 15:4, vol 1, p. 330।)
5. प्राण खोना (जैसे, मत्ती 10:39, vol 1, p. 266)

Gerhard Kutte, *Theological Dictionary of the New Testament*, vol. 1, p. 394, चार अर्थों को सूचीबद्ध करके अलग-अलग प्रयोगों की रूपरेखा प्रस्तुत करने की कोशिश करता है:

1. नाश करना या मारना के (जैसे, मत्ती 2:13; 27:20; मरकुस 3:6; 9:22; लूका 6:9; 1 कुरिन्थियों 1:19)।
2. हारन या उससे नुकसान उठाना (जैसे, मरकुस 9:41; लूका 15:4,8)
3. नष्ट करना (जैसे, मत्ती 26:52; मरकुस 4:38; लूका 11:51; 13:3,5,33; 15:17; यूहन्ना 6:12,27; 1 कुरिन्थियों 10:9-10।)
4. खो जाना (जैसे, मत्ती 5:29-30; मरकुस 2:22; लूका 15:4,6,24,32; 21:18; प्रेरितों के काम 27:34)

इसके बाद किट्टेल कहते हैं, "सामान्य तौर पर हम यह कह सकते हैं कि #2 और #4 इस दुनिया से संबंधित कथनों के आधार हैं, जैसे सिनॉप्टिक्स में, जबकि #1 और #3 आने वाली दुनिया से संबंधित के आधार हैं, जैसे कि पौलुस और यूहन्ना में" (पृ. 394)।

यहाँ भ्रम की स्थिति है। इस शब्द का इतना व्यापक प्रयोग है कि नये नियम के विभिन्न लेखक इसे विभिन्न तरीकों से प्रयोग करते हैं। मुझे Robert B. Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament*, pp. 275-277। वे इस शब्द को उन मनुष्यों, जो नैतिक रूप से नष्ट हो चुके हैं और परमेश्वर से अनन्त अलगाव की प्रतीक्षा कर रहे हैं, के मुकाबले जो मसीह को जानते हैं और उनके पास उसमें अनन्त जीवन है, से जोड़ते हैं। बाद वाला समूह "बचाया गया" है, जबकि पूर्व समूह "नष्ट किया गया" है।

Robert B. Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament*, p.276, बताते हैं कि ऐसे कई स्थान हैं जहाँ इस शब्द का अनुवाद सर्वनाश नहीं किया जा सकता है, "लेकिन ऐसी चोट जो वस्तु को उसके मूल उद्देश्य के लिए व्यावहारिक रूप से बेकार बना देती है।"

1. इत्र का सत्यानाश, मत्ती 26:8
2. पुरानी मशकों का नष्ट होना, मत्ती 9:17
3. बाल बाँका होना, लूका 21:18
4. भोजन का नाश, यूहन्ना 6:27
5. सोने का नाश, 1 पतरस 1:7
6. जगत का नाश, 2 पतरस 3:6
7. भौतिक शरीर का नाश, मत्ती 2:13; 8:25; 12:14; 21:41; 22:7; 26:52; 27:20; रोमियों 2:12; 14:15; और 1 कुरिन्थियों 8:11

यह शब्द कभी भी व्यक्ति के सर्वनाश को नहीं, बल्कि शारीरिक अस्तित्व के अंत को संदर्भित करता है। यह आमतौर पर एक नैतिक अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। "सभी मनुष्यों को नैतिक रूप से नष्ट माना जाता है, यानी वे उस इरादे को पूरा करने में विफल रहे हैं जिसके लिए जाति को बुलाया गया था" (पृष्ठ 276)। इस पाप की समस्या के लिए परमेश्वर की प्रतिक्रिया थी यीशु मसीह (तुलना यूहन्ना 3:15-16 और 2 पतरस 3:9)। जो लोग सुसमाचार को अस्वीकार करते हैं, वे अब एक और विनाश के अधीन हैं, जिसमें शरीर और आत्मा शामिल हैं (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:18; 2 कुरिन्थियों 2:15; 4:3; 2 थिस्सलुनीकियों 2:10)। विपरीत राय के लिए, Fudge, *The Fire That Consumes* देखें।

मैं व्यक्तिगत रूप से (तुलना R. B. Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament*, p. 276) यह नहीं सोचता कि यह शब्द सर्वनाश को दर्शाता है (तुलना E. Fudge, *The Fire That Consumes*)। "अनन्त" शब्द का प्रयोग मत्ती 25:46 में अनंत दण्ड और अनन्त जीवन दोनों के लिए किया जाता है। एक का अवमूल्यन करना दोनों का अवमूल्यन करना है!

▣ **"मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ"** इस वाक्यांश को अक्सर भौतिक चीजों के वादे के रूप में उद्धृत किया जाता है, लेकिन संदर्भ में यह यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानने और आत्मिक आशीर्वादों से संबंधित है, न कि भौतिक समृद्धि से, वह लाता है (यह 4:14 और 7:38 के समानांतर है)। यह इस जीवन में बहुत अधिक पाना नहीं है, लेकिन सच्चे जीवन को जानना और प्राप्त करना है!

जैसा कि सिनॉप्टिक्स में यीशु के द्वारा परमेश्वर के राज्य पर ज़ोर को दर्ज़ किया गया है, यूहन्ना ने अनंत जीवन पर यीशु के जोर को दर्ज किया है। कोई भी उसे अभी प्राप्त कर सकता है! राज्य का शुभारंभ किया गया है!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 10:11-18

[11]"अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। [12]मजदूर जो न चरवाहा है और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तितर-बितर कर देता है। [13]वह इसलिये भाग जाता है कि वह एक मजदूर है और उसको भेड़ों की चिंता नहीं। [14]अच्छा चरवाहा मैं हूँ; मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं। [15]जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ -और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ। [16]मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं। मुझे उनका भी लाना अवश्य है। वे मेरा शब्द सुनेंगी, तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा। [17]पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है कि मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ। [18]कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर ले लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।"

10:11,14 "अच्छा चरवाहा मैं हूँ" यह मसीहा (तुलना यहेजकेल 34:23; जकर्याह 11; 1 पतरस 5: 4) और YHWH (तुलना भजनसंहिता 23:1; 28:9; 77:20; 78:52; 80:1; 95:7; 100:3; यशायाह 40:11; यिर्मयाह 23:1; 31:10; यहेजकेल 34:11-16) के लिए एक पुराने नियम का नाम था।

दो यूनानी शब्द हैं, जिनका अनुवाद "अच्छा" किया जा सकता है: (1) *agathos*, जो सामान्य रूप से यूहन्ना के लिए चीजों के लिए प्रयुक्त किया गया है, और (2) *kalos*, जिसका इस्तेमाल सेप्टुआजिंट में बुराई के विरोध में अच्छाई के रूप में किया गया था। नये नियम में इसका अर्थ "सुंदर," "कुलीन," "नैतिक," और "योग्य" है। इन दो शब्दों को लूका 8:15 में एक साथ प्रयोग किया गया है। यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणी देखें।

10:11 "अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है" यह मसीह के प्रतिनिधिक प्रतिस्थापित प्रायश्चित्त (तुलना यूहन्ना 10: 11,15,17,18) को दर्शाता है। उसने स्वेच्छा से पापी मानव जाति के लिए अपना प्राण दे दिया (तुलना यशायाह 52:13-53:12; मरकुस 10:45; 2 कुरिंथियों 5:21)। सच्चा जीवन, बहुतायत का जीवन केवल उसकी मृत्यु के माध्यम से आता है।

Bruce M. Metzger's *A Textual Commentary on the Greek New Testament* में इस पद पर एक दिलचस्प बात है:

"'अपना प्राण देना' इस अभिव्यक्ति की बजाय जो कि जोहानिन की विशेषता है (10:15,17; 13; 37,38; 15:13; 1 यूहन्ना 3:16), कई गवाहों (P^{45}, א*, D) ने अभिव्यक्ति 'अपना जीवन देना' का विकल्प दिया, जो कि सिनॉप्टिक गोस्पेल्स में आता है (मत्ती. 20:28; मरकुस 10:45) "(पृष्ठ 230)।

10:14 "मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं" यह शब्द "पहिचाना" का इब्रानी अर्थ है (यूहन्ना 1:10 पर विशेष विषय देखें)। जैसे पुत्र पिता और पिता पुत्र को जानता है, वैसे ही, यीशु भी उन लोगों को जानता है जो उस पर भरोसा करते और वे उसे जानते हैं। उन्होंने "देखा" और "सुना" (तुलना यूहन्ना 10: 4) और जवाब दिया (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16)। मसीहत एक व्यक्तिगत संबंध है (तुलना यूहन्ना 17:20-26)।

10:15 "जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ" यह यूहन्ना में एक बार-बार आने वाला विषय है। यीशु पिता के साथ अपने घनिष्ठ संबंध के कारण कार्य करता और बोलता है।

यूहन्ना 10:14-15 में आश्चर्यजनक समानता यह है कि पिता और पुत्र के बीच अंतरंगता की तुलना पुत्र और अनुयायियों के बीच अंतरंगता से की जाती है (तुलना यूहन्ना 14:23)। यूहन्ना अंतरंग संगति के रूप में "पहिचाना" के इब्रानी लक्ष्यार्थ पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि ज्ञानात्मक तथ्यों पर। यीशु पिता को जानता है; जो यीशु को जानते हैं, वे परमेश्वर को जानते हैं!

10:16 "मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं" यह यशायाह 56:6-8 के लिए एक संकेत है।संदर्भ यह माँग करता हुआ प्रतीत होता है कि यह (1)सामरियों (तुलना यूहन्ना 4:1-42) या (2) अन्यजाति कलीसिया (तुलना यूहन्ना 4:43-54) को संदर्भित करता है। यह उन सब की एकता की बात करता है जो मसीह में विश्वास करते हैं। नई वाचा यहूदियों और अन्यजातियों को एक करती है (तुलना इफिसियों 2:11-3:13; इन पर भी ध्यान दें 1 कुरिंथियों 12:13; गलातियों 3:28; कुलुस्सियों 3:11)। उत्पत्ति 3:15 और यूहन्ना 3:16 का विलय होता है!

▣ **"तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा"** यह हमेशा परमेश्वर का लक्ष्य रहा है (तुलना उत्पत्ति 3:15; 12:3; निर्गमन 19:5-6)। इस एकता के आध्यात्मिक पहलुओं की चर्चा इफिसियों 2:11-3:13 और 4:1-6 में कई है।

10:17 "पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है" जिस प्रकार पुत्र को अपना प्राण देने के लिए मजबूर नहीं किया गया था, पिता को अपना पुत्र देने के लिए मजबूर नहीं किया गया था। इसका यह अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए कि परमेश्वर ने मनुष्य को उसकी आज्ञाकारिता के लिए यीशु पुरस्कार स्वरूप दे दिया (इस मतान्तर को अक्सर अभिग्रहणवाद कहा जाता है, शब्दावली देखें)।

▣ **"मैं अपना प्राण देता हूँ कि उसे फिर ले लूँ"** इसका अर्थ है पुनरुत्थान। नये नियम में आमतौर पर पिता है जो अपने बलिदान की स्वीकृति दिखाने के लिए पुत्र (तुलना यूहन्ना 18b) को जिलाता है। लेकिन यहाँ पुनरुत्थान में स्वयं यीशु की सामर्थ्य का दावा किया गया है।

यह वाक्यांश यह दिखाने का एक शानदार अवसर है कि नया नियम अक्सर देवत्व के तीन व्यक्तियों को छुटकारे के कार्यों का श्रेय देता है।

1. परमेश्वर पिता ने यीशु को जिलाया (तुलना प्रेरितों के काम 2:24; 3:15; 4:10; 5:30; 10:40; 13: 30,33,34,37; 17:31; रोमियों 6:4,9; 10:9; 1 कुरिंथियों 6:14; 2 कुरिंथियों 4:14; गलातियों 1:1; इफिसियों 1:20; कुलुस्सियों 2:12; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10)
2. परमेश्वर पुत्र ने स्वयं को जिलाया (तुलना यूहन्ना 2:19-22; 10:17-18)
3. परमेश्वर आत्मा ने यीशु को जिलाया (तुलना रोमियों 8:11)

10:18 "मुझे अधिकार है" यह वही शब्द है जिसका प्रयोग यूहन्ना 1:12 में भी किया जाता है। इसका अनुवाद "अधिकार," "कानूनी अधिकार," या "सामर्थ्य" हो सकता है। यह पद यीशु की सामर्थ्य और अधिकार को दर्शाता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 10:19-21
[19]इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी। [20]उनमें से बहुत से कहने लगे, "उसमें दुष्टात्मा है; और वह पागल है; उसकी क्यों सुनते हो?" [21]अन्य लोगों ने कहा, "ये बातें ऐसे मनुष्य की नहीं जिसमें दुष्टात्मा हो। क्या दुष्टात्मा अंधों की आँखें खोल सकती है?"

10:19 जैसा कि यूहन्ना 6:52; 7:12,25,43; 9:16; 10:19-21; 11:36-37 में यीशु के बारे में विभाजित मत थे; यूहन्ना में यह विषय जारी रहता है। कुछ के द्वारा सुसमाचार ग्रहण करने और अन्य द्वारा इसे अस्वीकार करने का रहस्य पूर्वनियति और मानव की स्वतंत्र इच्छा के बीच का तनाव है!

10:20 "उसमें दुष्टात्मा है और वह पागल है" यह दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से यीशु के खिलाफ लगाया गया एक सामान्य आरोप था।

1. इस पद में, जिस प्रकार यूहन्ना 7:20 में, यीशु को एक मानसिक रोग था, यह कहने के लिए प्रयुक्त किया गया।
2. इसी आरोप का प्रयोग फरीसियों द्वारा यीशु की सामर्थ्य के स्रोत को समझाने की कोशिश करने के लिए किया गया (तुलना यूहन्ना 8 : 48,52)

10:21 यूहन्ना 10:21 में दो प्रश्न हैं।

1. पद 21a में *ouk* है, जो एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है
2. पद 21b में *mē* है, जो एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है

James Hewett, *New Testament Greek,* p. 171 देखें। इस पद से, हालांकि, पता चलता है कि कोइन यूनानी में कितने कठिन और सख्त नियम हैं। संदर्भ, व्याकरणिक रूप नहीं, अंतिम निर्धारणकर्ता है।

अंधे की चंगाई एक मसीहाई चिन्ह था (तुलना निर्गमन 4:11; भजनसंहिता 146: 8; यशायाह 29:18; 35: 5; 42:7)। एक ऐसा अर्थ है जिसमें इस्राएल का अंधापन (तुलना यशायाह 42:19) यहाँ दिखाया जा रहा है जैसा अध्याय 9 में था।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 10:22-30
22यरूशलेम में समर्पण का पर्व मनाया जा रहा था; और जाड़े की ऋतु थी। 23यीशु मंदिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था। 24तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा,"तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है तो हम से साफ साफ कह दे।" 25यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैंने तुम से कह दिया, पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ, वे ही मेरे गवाह हैं। 26परन्तु तुम इसलिये विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। 27मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं; 28और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। 29मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। 30मैं और पिता एक हैं।"

10:22 "समर्पण पर्व" जोसेफस इसे "ज्योतियों का त्यौहार" कहता है। यह हमारे दिन में हनुक्काह के नाम से जाना जाता है। यह आठ दिवसीय पर्व था, जो दिसंबर के मध्य में आता था। यह 164 ईसा पूर्व यहूदा मक्काबी की सैन्य जीत के बाद यरूशलेम में मंदिर के पुनः समर्पण का जश्न मनाता है। 168 ईसा पूर्व एंटियोकस IV एपिफेनेस ने, जो एक सेल्यूकस अगुवा था, यहूदियों को यूनानी मत की प्रथाओं का पालन करने के लिए मजबूर करने की कोशिश की।(तुलना दानिय्येल 8:9-14)। उसने यरुशलेम के मंदिर को पवित्र स्थान में जीउस की एक वेदी के साथ एक बुतपरस्त मंदिर में बदल दिया। मोडिन के याजक के कई बेटों में से एक, यहूदा मक्काबी ने इस सीरियाई अधिपति को हराया और मंदिर को साफ किया और फिर से समर्पित किया। तुलना I Macc. 4:36-59; II Macc. 1:18)।

यूहन्ना यहूदी धर्म के पर्वों को यीशु को स्वयं को यहूदी नेतृत्व, यरूशलेम के नागरिकों और तीर्थयात्रियों की भीड़ पर प्रकट करने के लिए उनके प्रतीकवाद का उपयोग करने के अवसर के रूप में प्रयोग करता है (तुलना अध्याय 7-11)।

▣ **"सुलैमान के ओसारे"** यह स्त्रियों के आँगन के पूर्वी हिस्से के किनारे एक ढका हुआ क्षेत्र था जहाँ यीशु उपदेश देता था। जोसेफस ने कहा कि यह 586 ईसा पूर्व के बेबीलोन के विनाश के बाद बच गया था।

10:23 "यह जाड़े की ऋतु थी" यह एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण है।

10:24 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जो लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है। इस संदर्भ में कई प्रथम श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं (तुलना यूहन्ना 10:24, 35, 37 और 38)। यूहन्ना 10:24 में यह उपयोग बताता है कि इस संरचना का प्रयोग साहित्यिक अर्थों में कैसे किया जा सकता है। ये फरीसी वास्तव में विश्वास नहीं करते थे कि यीशु मसीहा था; वे उसे प्रलोभन दे रहे थे।

▣ **"हम से साफ साफ कह दे"** इस पद में चर्चा करने के लिए कई बातें हैं। सबसे पहले, यीशु ने दृष्टान्तों, आलंकारिक भाषा और अस्पष्ट द्विअर्थी कथनों में उपदेश दिया। मंदिर की यह भीड़ चाहती थी कि वह खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त करे। विशेष विषय: *Parrhesia* यूहन्ना 7:4 पर देखें।

दूसरा, यीशु के दिन के यहूदियों को उम्मीद नहीं थी कि मसीहा अवतारित देवता होंगे।कदाचित यीशु ने कई मौकों पर परमेश्वर के साथ अपनी एकता का उल्लेख किया था (तुलना यूहन्ना 8: 56-59), लेकिन इस संदर्भ में वे मसीहा के बारे में विशिष्ट रूप से पूछ रहे हैं। यहूदियों को उम्मीद थी कि यह अभिषिक्त जन मूसा की तरह काम करेगा (तुलना व्यवस्थाविवरण 18: 15,19)। यीशु ने ठीक ऐसा ही अध्याय छह में किया था। उसके कामों ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूर्ण किया, विशेष रूप से अंधे की चंगाई (अध्याय 9)। उनके पास सारे आवश्यक प्रमाण थे। समस्या यह थी कि यीशु, मसीहा के बारे में उनकी पारंपरिक सैन्य, राष्ट्रवादी अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं था।

10:25 "जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं" यीशु ने दावे से कहा कि उसके कार्यों ने उसके दावों को सत्यापित किया है (तुलना यूहन्ना 2:23; 5:36; 10: 25,38; 14:11; 15:24)।

10:26 कितना चौंकाने वाला बयान!

10:28 "मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ" मात्रा और गुणवत्ता दोनों अनंत जीवन की विशेषता है। यह नए युग का जीवन है। यह अब मसीह में विश्वास द्वारा उपलब्ध है (तुलना यूहन्ना 3:36; 11:24-26)।

▣ **"वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा"** यह एक अनिर्दिष्टकाल मध्यम संशयार्थ-सूचक के साथ एक दोहरा नकारात्मक है। यह नये नियम (तुलना यूहन्ना 6:39) में कहीं भी एक विश्वासी की सुरक्षा पर सबसे प्रबल अवतरणों में से एक है। यह स्पष्ट है कि एकमात्र जो हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकता है वह हम स्वयं हैं (तुलना रोमियों 8:38-39; गलातियों 5:2-4)। आश्वासन (1 यूहन्ना 5:13 पर विशेष विषय देखें) का दृढ़ता के साथ संतुलन होना चाहिए (यूहन्ना 8:31 पर विशेष विषय देखें)। आश्वासन त्रिएक परमेश्वर के चरित्र और कार्यों आधारित होना चाहिए।

यूहन्ना के सुसमाचार में उन लोगों के आश्वासन का उल्लेख है जो मसीह में अपना विश्वास रखना जारी रखते हैं। यह पश्चाताप और विश्वास के प्रारंभिक निर्णय के साथ शुरू होता है और विश्वास की जीवन शैली को ले आता है। धर्मवैज्ञानिक समस्या तब है जब यह व्यक्तिगत संबंध एक ऐसे उत्पाद के रूप में विकृत हो जाता है जो हमारे कब्जे में है ("एक बार उद्धार पाया हुआ, हमेशा उद्धार पाया हुआ")। निरंतर विश्वास एक सच्चे उद्धार का प्रमाण है (तुलना इब्रानियों, याकूब और 1 यूहन्ना)।

10:29

NASB, NKJV "मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है"
NSRV "जो मेरे पिता ने मुझे दिया है अन्य सभी से बड़ा है"
TEV "जो मेरे पिता ने जो मुझे दिया है सब से बड़ा है"
NJB "पिता, जो उसने मुझे दिया है, उसके लिए किसी से भी बड़ा है"

सवाल यह है कि वाक्यांश, "से बड़ा" का विषय क्या है: (1) वे लोगों जिन्हें परमेश्वर ने यीशु को दिया है (NRSV, TEV) या (2) स्वयं परमेश्वर (NASB, NKJV, NJB)। इस पद के दूसरे भाग का तात्पर्य है कि कोई यीशु के अनुयायियों को छीनने की कोशिश कर सकता है। धर्मशास्त्रीय रूप से दूसरा विकल्प सबसे उचित लगता है। यूहन्ना 6:37 पर आश्वासन पर विशेष विषय देखें।

पिता की सामर्थ्य के आधार पर विश्वासी के आश्वासन पर यह एक अद्भुत अवतरण है! विश्वासी की सुरक्षा बाइबल की सारी सच्चाइयों की तरह, एक तनावपूर्ण, वाचा आधारित स्वरूप में प्रस्तुत की गई है। विश्वासियों की आशा और उद्धार का आश्वासन त्रिएक परमेश्वर के चरित्र उसकी दया और अनुग्रह में है। हालाँकि, विश्वासी को विश्वास में बने रहना चाहिए। उद्धार पश्चाताप और विश्वास के एक प्रारंभिक आत्मा द्वारा प्रेरित फैसले से शुरू होता है। इस के द्वारा निरंतर पश्चाताप, विश्वास, आज्ञाकारिता और दृढ़ता भी आनी चाहिए! उद्धार कोई उत्पाद नहीं है (जीवन बीमा, स्वर्ग का टिकट), लेकिन मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ एक बढ़ता हुआ व्यक्तिगत संबंध है।

परमेश्वर के साथ एक सही रिश्ते का निर्णायक प्रमाण विश्वास और सेवा का एक परिवर्तित और परिवर्तनशील जीवन है (तुलना मत्ती 7)। सांसारिक ईसाई लोगों के लिए बाइबल में बहुत कम प्रमाण हैं (तुलना 1 कुरिन्थियों 2-3)। मानदण्ड यह है कि अभी मसीह समान होना है मर जाने पर मात्र स्वर्ग में नहीं। पाप में बढ़ रहे, सेवा कर रहे, यहाँ तक कि जूझ रहे लोगों के लिए बाइबल की सुरक्षा और आश्वासन की कोई कमी नहीं है। लेकिन, कोई फल नहीं, कोई जड़ नहीं! उद्धार केवल अनुग्रह के द्वारा होता है, केवल विश्वास के माध्यम से, लेकिन सच्चा उद्धार "अच्छे कार्यों" को लाएगा (तुलना इफिसियों 2:10; याकूब 2:14-26)।

10:30-33 "मैं और पिता एक हैं. . .यहूदियों ने उस पर पथराव करने को फिर पत्थर उठाए" यह यीशु के मसीहपन और देवत्व के प्रबल कथनों में से एक है (तुलना यूहन्ना 1:1-14; 8:58; 14:8-10, विशेषतः 17: 21-26, जो "एक" शब्द का भी उपयोग करता है)। यहूदी पूरी तरह से समझ गए कि वह क्या कह रहा था और इसे ईशनिंदा माना गया (तुलना. यूहन्ना 10:33; 8:59)। वे लैव्यव्यवस्था 24:16 के आधार पर उस पर पथराव करने जा रहे थे।

मसीह के व्यक्तित्व के शुरुआती विवाद में (जैसे, *Arius* - पहलौठा; *Athanasius* – पूर्णतः परमेश्वर) यूहन्ना 10:30 और 14:9 का प्रायः अथानासियस द्वारा प्रयोग किया गया था (*The Cambridge History of the Bible,* vol. 1, p.444 देखें) है। "एरियसवाद" के लिए शब्दावली देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 10:31-39
[31]यहूदियों ने उस पर पथराव करने को फिर पत्थर उठाए। [32]इस पर यीशु ने उन्हें जवाब दिया, "मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं; उन में से किस काम के लिए तुम मुझ पर पथराव करते हो?"
[33]यहूदियों ने उसको उत्तर दिया, "भले काम के लिए हम तुझ पर पथराव नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा करने के कारण; और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है।" [34]यीशु ने उन्हें उत्तर दिया,
"क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है, 'मैंने कहा, तुम ईश्वर हो?' [35]यदि उसने उन्हें ईश्वर कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुँचा (और पवित्रशास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती), [36]तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उससे कहते हो,'तू निन्दा करता है,' इसलिये कि मैं ने कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'? [37]यदि मैं
अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो। [38]परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे मेरा विश्वास भी न करो, परन्तु उन कामों का तो विश्वास करो, ताकि तुम जानो और समझो कि पिता मुझ में है और मैं पिता में हूँ।"
[39]तब उन्होंने फिर से उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया।

10:31 यह पद यूहन्ना 10:30 में यीशु के कथन से संबंधित है। यीशु उनके आरोपों का बहुत ही असामान्य रब्बियों से संबंधित तर्क में उत्तर देता है। यह मूलतः *Elohim*, जो परमेश्वर के लिए एक पुराने नियम का शब्द है, पर एक शब्द क्रीड़ा है (तुलना उत्पत्ति 1), लेकिन रूप में बहुवचन है और अक्सर स्वर्गदूतों और मानव अगुवों (न्यायियों) दोनों के लिए प्रयोग किया जाता है। यूहन्ना 6:20 में विशेष विषय: देवता के लिए नाम देखें।

10:32 अच्छा (*kalos*) चरवाहा पिता की ओर से अच्छे (*kalos*) काम करता है।

10:33 "निन्दा करने के कारण" यीशु जानता था कि वे पिता के साथ उसकी एकता के दावे को सही ढंग से समझ गए हैं।

10:34 "तुम्हारी व्यवस्था में" यीशु भजनसंहिता से उद्धरण देता है, लेकिन इसे "व्यवस्था" (यानी, तोराह का अर्थ है "उपदेश," तुलना यूहन्ना 12:34; 15:25; रोमियो 3:9-19) कहता है। व्यवस्था शब्द सामान्य तौर पर मूसा के लेखन (तोराह), उत्पत्ति-व्यवस्थाविवरण को संदर्भित करता है। यह पूरे पुराने नियम को समाविष्ट करने के लिए शब्द का व्यापक प्रयोग दिखाता है।

▣ **"तुम ईश्वर हो"** यीशु ने भजनसंहिता 82:6 के एक उद्धरण का प्रयोग किया। इसने मानव न्यायियों को संदर्भित करने के लिए *elohim* का प्रयोग किया (यूहन्ना 6:20 में *Elohim* को विशेष विषय में देखें)। इन न्यायियों (हालांकि दुष्ट) को "अति महान के पुत्र" कहा जाता है। ये यहूदी यीशु पर हमला कर रहे थे क्योंकि यद्यपि वह एक मनुष्य था उसने वह होने का दावा किया: (1) परमेश्वर का पुत्र और (2) परमेश्वर के साथ एक। फिर भी अन्य मनुष्यों (तुलना निर्गमन 4:16; 7:1; 22:8,9; भजनसंहिता 82:6; 138:1) को "परमेश्वर" कहा गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु के रब्बी संबंधित तर्क इस पंक्ति का अनुसरण करते हैं: पवित्रशास्त्र सत्य हैं, पुरुषों को *elohim* कहा जाता है, इसलिए, तुम मुझे यह दावा करने के लिए कि मैं ईश्वर का पुत्र हूँ, ईशनिन्दक क्यों कहते हो? *Elohim* शब्द इब्रानी में बहुवचन है लेकिन एकवचन में अनुवादित है और पुराने नियम के देवता का उल्लेख करते हुए एक एकवचन क्रिया का प्रयोग किया है। यूहन्ना 6:20 पर विशेष विषय: देवता के लिए नाम देखें। यह एक विशिष्ट जोहानिन शब्द क्रीड़ा हो सकती है: (1) एक शब्द जिसमें दो लक्ष्यार्थ होते हैं और (2) एक यूनानी प्रश्न जो "हां" उत्तर की अपेक्षा करता है।

10:35 "(और पवित्रशास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती)" यूहन्ना अक्सर यीशु के संवादों पर टिप्पणी करता है। यह अनिश्चित है कि यह कथन यीशु का है या यूहन्ना का। हालांकि, चूंकि दोनों समान रूप से प्रेरित हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उद्धरण का जोर पवित्र शास्त्र की विश्वसनीयता है। यीशु और प्रेरितों ने पुराने नियम और उनकी व्याख्याओं को परमेश्वर के शब्दों के रूप में देखा (तुलना मत्ती 5: 17-19; 1 कुरिंथियों 2:9-13; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13; 2 तीमुथियुस 3:16; 1 पतरस 1:23-25; 2 पतरस 1:20-21; 3:15-16)।

> Bishop H. C. G. Moule *The Life of Bishop Mouke* में कहते हैं,
>
> "उसने [मसीह] बाइबल पर पूर्णतः भरोसा किया, और, हालांकि इसमें ऐसी बातें हैं जो अकथनीय और पेचीदा हैं, जिन्होंने मुझे बहुत हैरान कर दिया है, मैं,उसके कारण, एक अंधे अर्थ में नहीं, लेकिन श्रद्धापूर्वक पुस्तक पर विश्वास करने जा रहा हूँ "(पृष्ठ 138)।

10:36 इस पद में यीशु का दावा है कि पिता ने (या "पवित्र किया" या "शुद्ध किया") उसे चुना और उसे (मसीहा के रूप में) भेजा। उसे निश्चित रूप से "परमेश्वर का पुत्र" कहलाने का अधिकार है। जिस प्रकार इस्राएल के न्यायी परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं (तुलना भजनसंहिता 82:6), वह शब्द और कर्म में पिता का प्रतिनिधित्व करता है। यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना (*Apostello*) देखें।

10:37 यह बिलकुल वही है जो यूहन्ना 10:19-21 कह रहा है। यीशु के चमत्कार परमेश्वर की गतिविधि को दर्शाते हैं।

10:37,38 "यदि. . .यदि" ये प्रथम श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं। यीशु ने पिता के कार्य किए। यदि ऐसा है, तो उन्हें उस पर विश्वास करना चाहिए, यह विश्वास करते हुए कि वह और पिता एक हैं (तुलना यूहन्ना 10:30,38)। विशेष विषय: बने रहना: 1 यूहन्ना 2:10 में देखें।

10:39 यह कई बार में से एक है कि यीशु उन से बच निकला जिन्होंने उसे चोट पहुँचाने का प्रयत्न किया (तुलना लूका 4:29-30; यूहन्ना 19:59)। यह अनिश्चित है कि इस बच निकलने का कारण था (1) एक चमत्कारी घटना या (2)अन्य सभी के साथ यीशु की शारीरिक समानता, जिससे उसे भीड़ में लुप्त हो जाने में मदद मिली ।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 10:40-42
[40]फिर वह यरदन के पार उस स्थान पर चला गया, जहाँ यूहन्ना पहले बपतिस्मा दिया करता था, और वहीं रहा।
[41]बहुत से लोग उसके पास आकर कहते थे, "यूहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इसके विषय में कहा था, वह सब सच था।" [42]और वहाँ बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया।

10:40 यह यरीहो से यरदन के पार बैतनिय्याह नामक शहर के पास के क्षेत्र को संदर्भित करता है।

10:41 यूहन्ना फिर से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की यीशु के बारे में पुष्टि के बारे में बताता है (तुलना यूहन्ना 1: 6-8,19-42; 3:22-30; 5:33)। यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के आसपास विकसित हुए कुछ मतान्तरों का प्रतिकार करने के लिए हो सकता है।

10:42 जब यहूदी अगुवों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया, इतने सारे आम लोगों (भूमि के लोगों) ने विश्वास में उसे प्रत्युत्तर दिया (तुलना यूहन्ना 2:23; 7:31; 8:30)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यूहन्ना अपने रूपकों को इतनी बार मिश्रित क्यों करता है (उदाहरण: "यीशु भेड़शाला का द्वार और अच्छा चरवाहा दोनों है")?
2. यूहन्ना 10 की पुराने नियम की पृष्ठभूमि क्या है?
3. यीशु के “अपना प्राण देने” का क्या महत्व है?
4. यहूदियों ने यीशु में दुष्टात्मा होने का आरोप क्यों लगाया?
5. यीशु के काम इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं?
6. हम "विश्वासियों की सुरक्षा" का "संतों की दृढ़ता" से कैसे संबंध जोड़ सकते हैं?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 11

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
लाज़र की मृत्यु	लाज़र की मृत्यु	लाज़र का जिलाना	लाज़र की मृत्यु	लाज़र का पुनरुत्थान
11:1-16	11:1-16	11:1-6	11:1-4	11:1-4
			11:5-7	11:5-10
		11:7-16		
			11:8	
			11:9-11	
				11:11-16
			11:12	
			11:13-15	
			11:16	
यीशु, पुनरुत्थान और जीवन	पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ		यीशु, पुनरुत्थान और जीवन	
11:17-27	11:17-27	11:17-27	11:17-19	11:17-27
			11:20-22	
			11:23	
			11:24	
			11:25-26	
			11:27	
यीशु रोया	यीशु और मृत्यु,अंतिम शत्रु		यीशु रोया	
11:28-37	11:28-37	11:28-37	11:28-31	11:28-31
			11:32	11:32-42
			11:33-34a	
			11:34b	
			11:35-36	
			11:37	
लाज़र का जिलाया जाना	लाज़र का मुर्दों में से जिलाना		लाज़र का जिंदा होना	
11:38-44	11:38-44	11:38-44	11:38-39a	

			11:39b	
			11:40-44	
				11:43-44
यीशु को मार डालने का षडयंत्र	यीशु को मार डालने का षडयंत्र		यीशु के खिलाफ षडयंत्र	यहूदी अगुवे यीशु की मृत्यु के विषय में निर्णय लेते हैं
11:45-53	11:45-57	11:45-53	11:45-48 11:49-52 11:53-54	11:45-54
11:54		11:54		फसह का पर्व निकट आता है
11:55-57		11:55-57	11:55-57	11:55-57

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

धर्मशास्त्रीय सारांश

अध्याय 11 का धर्मशास्त्रीय महत्व इस प्रकार है:

1. यीशु की सामर्थ्य और अधिकार का प्रदर्शन जारी है।
2. लाज़र की मृत्यु यीशु की महिमा का एक अवसर प्रदान करने के लिए परमेश्वर की योजना में है (तुलना यूहन्ना 9:3)
3. यीशु के साथ मार्था का संवाद उसकी महान स्वीकारोक्ति के लिए और यीशु के स्वयं को और प्रकट करने का अवसर प्रदान करता है (यानी, पुनरुत्थान और जीवन, यूहन्ना 11:25)।
4. यीशु अभी अनंत जीवन देता है (सिद्ध युगांत-विषयक विद्या)। यह लाजर के जिलाए जाने का प्रतीक है। यीशु का मृत्यु पर अधिकार था!
5. यहां तक कि इस शक्तिशाली चमत्कार के सामने, अविश्वास जारी है (यानी कि अक्षम्य पाप, यूहन्ना 5:21 पर विशेष विषय देखें)!

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 11:1-16

[1]मरियम और उसकी बहिन मार्था के गाँव बैतनिय्याह का लाज़र नामक एक मनुष्य बीमार था। [2]यह वही मरियम
थी जिसने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा था, इसी का भाई लाज़र बीमार था। [3]अतः
उसकी बहनों ने उसे कहला भेजा, "हे प्रभु, देख, जिससे तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।" [4]यह सुनकर यीशु ने
कहा, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं; परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा
हो।" [5]यीशु मार्था और उसकी बहिन और लाज़र से प्रेम रखता था। [6]फिर भी जब उसने सुना कि वह बीमार है, तो
जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया। [7]इसके बाद उसने चेलों से कहा, "आओ हम फिर यहूदिया
को चलें।" [8]चेलों ने उस से कहा, "हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझ पर पथराव करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी
वहीं जाता है?" [9]यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले तो ठोकर नहीं
खाता, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है। [10]परन्तु यदि कोई रात में चले तो ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें
प्रकाश नहीं।" [11]उसने ये बातें कहीं, और इसके बाद उनसे कहने लगा, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है,परन्तु मैं
उसे जगाने जाता हूँ।" [12]तब चेलों ने उस से कहा, "हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो स्वस्थ हो जाएगा।" [13]यीशु ने तो
उसकी मृत्यु के विषय में कहा था, परन्तु वे समझे कि उसने नींद से सो जाने के विषय में कहा। [14]तब यीशु ने उनसे
साफ साफ कह दिया, "लाज़र मर गया है; [15]और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तुम
विश्वास करो। परन्तु अब आओ, हमें उसके पास चलें।" [16]तब थोमा ने जो दिदमुस कहलाता है, अपने साथी चेलों से
कहा,"आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें।"

11:1 "एक मनुष्य बीमार था" यह अपूर्ण काल है। इसका मतलब है कि वह लंबे समय से बीमार था। हालांकि, अपूर्ण काल की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है "बीमार होने लगा।"

▣ **"लाज़र"** यह इब्रानी नाम "एलाजार" है, जिसका अर्थ है "परमेश्वर मदद करता है" या "परमेश्वर सहायक है।" यूहन्ना का मानना है कि पाठकों को मरियम, मार्था और लाजर के साथ यीशु की मित्रता के बारे में पता था (तुलना लूका 10: 38-42, जो कि सिनॉप्टिक सुसमाचारों में केवल उनका एकमात्र उल्लेख है)।"

▣ **"बैतनिय्याह"** यह यूहन्ना 1:28 और 10:40 में उल्लेखित बैतनिय्याह, जो यरदन नदी के किनारे यरीहो के पास था, से एक अलग स्थान है। यह बैतनिय्याह यरूशलेम के दक्षिण पूर्व में लगभग दो मील की दूरी पर जैतून पहाड़ के समान उसी पर्वत श्रेणी में है। यह यीशु के ठहरने की पसंदीदा जगह थी जब वह यरूशलेम में था।

▣ **"मरियम"** यह इब्रानी नाम "मिरियम" है।

▣ **"मार्था"** यह "स्वामिनी" के लिए अरामी शब्द है। यह असामान्य है कि मार्था,सबसे बड़ी, जिसका उल्लेख पहले नहीं किया गया है; लूका 10: 38-42 से संबंधित हो सकती है"

11:2 "यह वही मरियम थी जिसने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा था" पद 2 यूहन्ना का एक और संपादकीय परिवर्धन है (अर्थात, TEV, NET)। मरियम की भक्ति का यह विवरण (तुलना यूहन्ना 12:2-8) मत्ती (तुलना यूहन्ना 26:6-13) और मरकुस (तुलना यूहन्ना 14:3-9) दोनों में समरूप है। लूका 7:36ff में एक इसी प्रकार के अभिषेक में उल्लेखित स्त्री अलग स्त्री है।

यह पद एक ऐसी घटना का वर्णन करता है जो अभी तक सुसमाचार में दर्ज नहीं की गई है। इसे अध्याय 12 में दर्ज किया गया है।बहुत से ऐसा मानते हैं कि इसका अर्थ यह है कि यूहन्ना ने अपने पाठकों से यह अपेक्षा की कि वे अन्य स्रोतों से इस परिवार के बारे में जाने।

विशेष विषय: बाइबल में अभिषेक (BDB 603) (SPECIAL TOPIC: ANOINTING IN THE BIBLE (BDB 603))

A. सौंदर्यीकरण के लिए प्रयुक्त (BDB 691 I. तुलना व्यवस्थाविवरण 28:40; रूत 3:3; 2 शमूएल 12:20; 14:2; 2 इतिहास 28:15; दानिय्येल10:3; मीका 6:15)
B. मेहमानों के लिए प्रयुक्त (BDB 206, तुलना भजनसंहिता 23:5; लूका 7:38,46; यूहन्ना 11: 2

C. चंगाई के लिए प्रयुक्त (BDB 602, तुलना यशायाह 61:1; मरकुस 6:13; लूका 10:34; याकूब 5:14) [यहेजकेल 16:9 में स्वच्छता के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है]
D. दफनाने की तैयारी में प्रयुक्त (तुलना मरकुस 16:1; यूहन्ना 12:3,7; 19:39-40; 2 इतिहास 16:14 पर ध्यान दें, लेकिन क्रिया "अभिषेक" के बिना)
E. एक धार्मिक अर्थ में प्रयुक्त (एक वस्तु का, BDB 602, तुलना उत्पत्ति 28:18; 31:13 [एक खम्भा]; निर्गमन 29:36 [वेदी]; निर्गमन 30:26; 40:9-16; लैव्यव्यवस्था 8:10-13; गिनती 7:1 [निवासस्थान])
F. अगुवों को नियुक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है
  1. याजक
    a. हारून (निर्गमन 28:40; 29:7; 30:30)
    b. हारून के पुत्र (निर्गमन 40:15; लैव्यव्यवस्था 7:36)
    c. मानक वाक्यांश या नाम (गिनती 3:3; लैव्यव्यवस्था 16:32)
  2. राजा
    a. परमेश्वर के द्वारा (तुलना 1 शमूएल 2:10; 2 शमूएल 12:7; 2 राजाओं 9:3,6,12; भजनसंहिता 45:7; 89:20)
    b. भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा (तुलना 1 शमूएल 9:16; 10:1; 15:1,17; 16: 3,12-13; 1 राजाओं 1:45; 19:15-16)
    c. याजकों के द्वारा (तुलना 1 राजाओं 1:34,39; 2 राजाओं 11:12)
    d. पुरनियों के द्वारा (तुलना न्यायियों 9:8,15; 2 शमूएल 2:7; 5:3; 2 राजाओं 23:30)।
    e. मसीहाई राजा के रूप में यीशु का (तुलना भजनसंहिता 2:2; लूका 4:18 [यशायाह 61:1], प्रेरितों के काम 4:27; 10:38; इब्रानियों 1:9 [भजनसंहिता 45:7])।
    f. यीशु के अनुयायी (तुलना 2 कुरिन्थियों 1:21; 1 यूहन्ना 2:20,27 [आकर्षण])
  3. संभवतः भविष्यद्वक्ताओं का (तुलना 1 राजाओं 19:16; यशायाह 61:1)
  4. दिव्य छुटकारे के अविश्वासी साधन
    a. कुस्रू (तुलना यशायाह 45:1)
    b. सोर का राजा (तुलना यहेजकेल 28:14, जहाँ वह अदन की वाटिका के रूपकों का प्रयोग करता है)
  5. शब्द या नाम "मसीहा" का अर्थ है "एक अभिषिक्त एक" (BDB 603), तुलना भजनसंहिता 2:2; 89:38; 132:10

प्रेरितों के काम 10:38 एक ऐसा पद है जिसमें परमेश्वर के तीनों व्यक्तित्व अभिषेक में शामिल होते हैं। यीशु का अभिषेक किया गया था (लूका 4:18; प्रेरितों के काम 4:27; 10:38)। सभी विश्वासियों को शामिल करने के लिए अवधारणा को विस्तृत किया गया है (तुलना 1 यूहन्ना 2:27)। अभिषिक्त जन को अभिषिक्त जन (बहुवचन) बनना है! यह मसीह-विरोधी और मसीह- विरोधियों (तुलना 1 यूहन्ना 2:18) के समानांतर हो सकता है।पुराने नियम का तेल के साथ शारीरिक अभिषेक करने का प्रतीकात्मक कार्य (तुलना निर्गमन 29:7; 30:25; 37:29) उन लोगों से संबंधित है जिन्हें परमेश्वर द्वारा एक विशेष कार्य (यानी, भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा) के लिए बुलाया और सुसज्जित किया गया था। शब्द "मसीह" इब्रानी शब्द "अभिषिक्त जन" या मसीहा का एक अनुवाद है।

11:3 "बहनों ने उसे कहला भेजा" उन्होंने यीशु को संदेश भेजा, जो यरदन के पार, पेरिया में था।

▣ **"जिससे तू प्रीति रखता है, वह बीमार है"** यह इस परिवार के साथ यीशु के अनोखे रिश्ते को दर्शाता है। यह यूनानी शब्द, phileō है। हालाँकि, कोइन यूनानी में, शब्द *phileo* और *agapao* अन्तर्निमेय हैं (तुलना यूहन्ना 11:5; 3:35; 5:20).

11:4 "यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है" इसका अर्थ है कि यीशु जानता था कि लाजर बीमार था। उसने उसे मरने दिया ताकि पिता उसे मृतकों में से जिलाकर अपनी सामर्थ्य दिखा सके। बीमारी और पीड़ा कभी-कभी परमेश्वर की इच्छा में होती है (तुलना यूहन्ना 9:3; अय्यूब की पुस्तक; 2 कुरिन्थियों 12:7-10)।

▣ **"परमेश्वर की महिमा"** यीशु के कार्य "परमेश्वर की महिमा" को प्रगट करते हैं। यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो"** परमेश्वर का "संबंधकारक वाक्यांश" प्राचीन यूनानी पपीरस पांडुलिपियों P^{45} या P^{66} में नहीं है। यह बीमारी पिता और पुत्र दोनों को महिमा दिलाएगी। इस विन्यास में यीशु की महिमा अपेक्षा से बहुत भिन्न है।यूहन्ना के पूरे सुसमाचार में यह शब्द यीशु के क्रूसित होने और उसके गौरवांवित होने का उल्लेख करता है। लाज़र का पुनरुत्थान यहूदी नेतृत्व को यीशु की मृत्यु के लिए प्रेरित करेगा।

11:5 यूहन्ना द्वारा एक अन्य संपादकीय टिप्पणी (तुलना यूहन्ना 11:36)।

11:6 "जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया" यीशु ने लाजर के मरने तक देरी की! यीशु ने पक्षपात नहीं किया। इस बीमारी में एक दिव्य उद्देश्य था (तुलना यूहन्ना 11:15; 9:3)।

11:7 "इसके बाद उसने चेलों से कहा, 'आओ, हम फिर से यहूदिया को चलें'" इसके बाद जो चर्चा हुई, उस से पता चलता है कि चेले इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि यहूदी यीशु पर पथराव करना चाहते थे (तुलना यूहन्ना 11: 8; 8:54;10: 31,39)। चेलों ने विश्वास और भय दोनों का एक अजीब मिश्रण दिखाया (तुलना यूहन्ना 11:16)। थोमा को अक्सर एक संदिग्ध चेले के रूप में माना जाता है, लेकिन यहाँ वह यीशु के साथ मरने के लिए व्याकुल था (तुलना यूहन्ना 11:16)।

Michael Magill, *NT Transline* (p. 345 #43) एक अच्छा अवलोकन करता है कि यूहन्ना 11:7 का "आओ हम चलें" यूहन्ना 11:11 में "परन्तु मैं जाता हूँ" में संशोधित हो जाता है।चेलों को डर और संदेह था, लेकिन यीशु आश्वस्त था। यह थोमा है जो यूहन्ना 11:16 में यीशु के साथ हो लेता है (चलो चलें)!

11:9-10 यह अध्याय 8:12 और 9: 4-5 के अध्याय को वापस जोड़ने का एक तरीका हो सकता है (तुलना यूहन्ना 12:35)। पद 9a एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है।

उन लोगों के बीच एक स्पष्ट विरोधाभास है जो परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण कर रहे हैं (यानी, यीशु) और जो नहीं कर रहे हैं (यूहन्ना 11:10, यहूदी)। जहाँ परमेश्वर अगुवाई करता है, वहाँ जाने में यीशु गलती नहीं कर रहा, क्योंकि वह जगत की ज्योति है!

ज्योति और अंधकार के बीच यह विरोधाभास यहूदी बुद्धि साहित्य और कुमरान के लेखन की विशेषता थी (यानी, "अंधकार के पुत्रों के विरुद्ध ज्योति के पुत्रों की सूची" या "अंधकार के पुत्रों के विरुद्ध ज्योति के पुत्रों का युद्ध")।

▣ **"यदि. . .यदि"** ये दोनों तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं जिनका अर्थ है संभावित कार्य।

11:11 "हमारा मित्र लाज़र सो गया है" क्रिया पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है।चेलों ने अक्सर यीशु को गलत समझा, क्योंकि वे उसे बहुत अक्षरशः (तुलना यूहन्ना 11:13) लेते थे। मृत्यु के लिए यीशु द्वारा इस रूपक का उपयोग इसके पुराने नियम के प्रयोग को दर्शाता है (तुलना व्यवस्थाविवरण 31:16; 2 शमूएल 7:12; 1राजा 1:21; 2:10; 11:21,43; 14:20, आदि) I)। अंग्रेजी शब्द "कब्रिस्तान" यूनानी शब्द "नींद" के समान मूल से आता है।

11:12 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना गया था।

▣ **"स्वस्थ हो जाएगा"** यह पुराने नियम के"शारीरिक छुटकारे" (तुलना याकूब 5:15) के प्रयोग के रूप में अक्षरशः शब्द "छुड़ाया हुआ" है। फिर से चेलों ने यीशु को गलत समझा क्योंकि उन्होंने उसकी रूपक भाषा (यानी, नींद) को अक्षरशः लिया। यीशु के श्रोताओं की यह गलतफहमी यूहन्ना के सुसमाचार की विशेषता है (अर्थात, यूहन्ना 11:23-24)। वह ऊपर का है - वे नीचे के हैं। आत्मा की सहायता के बिना (अर्थात पिन्तेकुस्त), वे समझ नहीं सकते हैं!

11:13 यह यूहन्ना की एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है।

11:14 "यीशु ने उनसे साफ साफ कह दिया" विशेष विषय: *Parrhesia* यूहन्ना 7: 4 पर देखें।

11:15 "और मैं तुम्हारे कारण आनंदित हूँ कि मैं वहाँ न था, जिससे तुम विश्वास करो" यीशु का दावा है कि लाज़र का जिलाया जाना लाजर के साथ उसकी मित्रता के कारण या मरियम और मार्था के शोक के कारण नहीं था, लेकिन (1) चेलों के विश्वास (v.14) को बढ़ाने और (2) यहूदी भीड़ के विश्वास को प्रोत्साहित करने (यूहन्ना11:42), दोनों के लिए था। यूहन्ना में विश्वास एक प्रक्रिया है। कभी-कभी यह विकसित होता है (यानी, चेले, तुलना यूहन्ना 2:11), कभी-कभी नहीं (यानी, देखने वाले, तुलना यूहन्ना 8:31-59)।

11:16 यह पद स्पष्ट रूप से थोमा के विश्वास को दर्शाता है। वह यीशु के साथ मरने के लिए इच्छुक था। चेलों को मृत्यु पर यीशु की सामर्थ्य दिखाने की ज़रूरत थी, जो मानव जाति का बहुत बड़ा डर है।

थोमा नाम "जुड़वाँ" के लिए अरामी शब्द को दर्शाता है(एक अन्य संपादकीय टिप्पणी) जैसा किदिदमुस यूनानी में करता है। सिनॉप्टिक्स ने उसे एक प्रेरित के रूप में सूचीबद्ध किया है (तुलना मत्ती 10:3; मरकुस 3:18; लूका 6:15); यूहन्ना का सुसमाचार अक्सर उसके बारे में कहता है (तुलना यूहन्ना 11:16; 14:5; 20: 24-29; 21: 2)। विशेष विषय: प्रेरितों के नामों की सूची यूहन्ना 1:45 पर देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ 11:17-27
[17]वहाँ पहुँचने पर यीशु को यह मालूम हुआ कि लाज़र को कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं। [18]बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था। [19]बहुत से यहूदी मार्था और मरियम के पास उनके भाई की मृत्यु पर शांति देने के लिए आए थे। [20]जब मार्था ने यीशु के आने का समाचार सुना तो उससे भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही। [21]मार्था ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता,तो मेरा भाई कदापि न मरता। [22]और अब भी मैं जानती हूँ कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।" [23]यीशु ने उससे कहा, "तेरा भाई फिर से जी उठेगा।" [24]मार्था ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि अंतिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।" [25]यीशु ने उससे कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा, [26]और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनंतकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?" [27]उसने उससे कहा, "हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।"

11:17 "लाज़र को कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं" रब्बियों ने कहा है कि मानव आत्मा तीन दिनों तक भौतिक शरीर के करीब रहता है। यीशु यह बताने के लिए चार दिनों तक ठहरा था कि लाज़र वास्तव में मर चुका था और रब्बियों की सारी आशा से परे था।

11:18 "दो मील की दूरी पर था" पद 18 यूहन्ना की एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है। अक्षरशः यह "पंद्रह फर्लांग" है।

11:19 "बहुत से यहूदी मार्था और मरियम के पास आए थे" यह "यहूदी" शब्द का एक असामान्य निष्पक्ष प्रयोग है, जो यूहन्ना में सामान्य रूप से यीशु के शत्रुओं को संदर्भित करता है। हालांकि, इस संदर्भ में, यह केवल यरूशलेम के निवासियों को संदर्भित करता है जो इस परिवार को जानते थे (तुलना यूहन्ना 11: 31,33,45)। यीशु यरूशलेम के लोगों से प्रेम करता था और लाज़र के फिर से जीवित होने के ज़रिए उन तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था।

11:20 "मरियम घर में बैठी रही" यहूदी शोक के लिए सामान्य स्थिति फर्श पर बैठना थी।

विशेष विषय: शोक संस्कार (SPECIAL TOPIC: GRIEVING RITES)

इस्राएली किसी प्रियजन की मृत्यु और व्यक्तिगत पश्चाताप के साथ-साथ सामूहिक अपराधों के लिए कई तरह से दुख व्यक्त करते थे:

1. बाहरी वस्त्र फाड़ना, उत्पत्ति 37:29,34; 44:13; न्यायियों 11:35; 2 शमूएल 1:11, 3:31; 1 राजाओं 21:27; अय्यूब 1:20
2. टाट लपेटना, उत्पत्ति 37:34; 2 शमूएल 3:31; 1 राजाओं 21:27; यिर्मयाह 48:37
3. जूतियाँ उतारना, 2 शमूएल 15:30; यशायाह 20: 3
4. सिर पर हाथ रखना, 2 शमूएल 13:19; यिर्मयाह 2:37
5. सिर पर धूल डालना, यहोशू 7:6; 1 शमूएल 4:12; नहेम्याह 9:1
6. भूमि पर बैठना, विलापगीत 2:10; यहेजकेल 26:16 (भूमि पर पड़े रहना, 2 शमूएल 12:16); यशायाह 47:1
7. छाती पीटना, 1 शमूएल 25:1; 2 शमूएल 11:26; नहेम्याह 2:7
8. विलाप करना, 1 शमूएल 25:1; 2 शमूएल 11:26
9. शरीर को चीरना , व्यवस्थाविवरण 14:1; यिर्मयाह 16:6; 48:37
10. उपवास करना, 2 शमूएल 1:12; 12:16,21; 1 राजाओं 21:27; 1 इतिहास 10:12; नहेम्याह 1: 4
11. एक विलापगीत गाना, 2 शमूएल 1:17; 3:31; 2 इतिहास 35:25
12. गंजापन (बाल नुचे या मुड़े हुए), यिर्मयाह 48:37

13. दाढ़ी छोटी काटना, यिर्मयाह 48:37
14. सिर या चेहरा ढाँकना, 2 शमूएल 15:30; 19:4
ये आंतरिक भावनाओं के बाहरी लक्षण थे।

11:21,32 "मार्था ने कहा. . .यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता" यह द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। इसलिए यह इस प्रकार समझा जाएगा, "यदि तू हमारे साथ यहाँ होता, जो तू नहीं था, तो मेरा भाई न मरता, जो वह मर गया।" यीशु को कहे गए मार्था और मरियम के कथन (तुलना यूहन्ना 11:32) बिल्कुल एक जैसे हैं। इन चार दिनों के शोक के दौरान उन्होंने अक्सर इस विषय पर चर्चा की होगी। इन दोनों स्त्रियों ने यीशु के साथ काफी सहज महसूस किया कि वह पहले नहीं आया, इस छिपी हुई निराशा को वे व्यक्त कर सकीं।

11:22 "और अब भी मैं जानती हूँ कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा, परमेश्वर तुझे देगा" यह अनिश्चित है कि वास्तव में मार्था यीशु को क्या करने के लिए कह रही थी, क्योंकि यूहन्ना 11:39 में वह लाज़र के पुनर्जीवित होने पर आश्चर्यचकित थी।

11:23-24 "आपका भाई फिर जी उठेगा" मार्था का भी बाद के जीवन के बारे में फरीसियों के समान धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण था, जो अंतिम दिन पर एक शारीरिक पुनरुत्थान पर विश्वास करते थे। इस दृष्टिकोण के लिए कुछ सीमित पुराने नियमशास्त्र के प्रमाण हैं (तुलना दानिय्येल 12:2; अय्यूब 14:14; 19:25-27)। यीशु इस यहूदी समझ को अपनी सामर्थ्य और अधिकार की पुष्टि में बदल देता है (तुलना यूहन्ना 11:25; 14:6)।

11:24 "अंतिम दिन" हालांकि यह सच है कि यूहन्ना उद्धार की तात्कालिकता पर जोर देता है (साधित युगांत विषयक ज्ञान), फिर भी वह एक अंत समय की संपूर्णता की उम्मीद करता है। यह कई तरह से व्यक्त किया गया है।

1. एक न्याय / पुनरुत्थान दिवस (तुलना यूहन्ना 5:28-29; 6:39-40,44,54; 11:24; 12:48)
2. "समय" (तुलना यूहन्ना 4:23; 5:25,28; 16:32)
3. मसीह का दूसरा आगमन (तुलना यूहन्ना 14:3; यह संभव है कि 14:18-19,28 और 16:16,22 यीशु के पुनरूत्थान के बाद दिखाई देने का उल्लेख करते हैं और एक युगांत विषयक आगमन का नहीं)

11:25 "यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ'" यह यीशु के सात "मैं हूँ" कथनों में से और एक है। लाज़र की मौत के सामने, मार्था को यह विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वह जीवित रहेगा। यह आशा पिता और यीशु के व्यक्तित्व और सामर्थ्य में निहित है (तुलना यूहन्ना 5:21)। यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणी देखें।

आश्चर्यजनक रूप से एक प्रारंभिक पपीरस पांडुलिपि (यानी, P45) और कुछ पुराने लातिनी, सीरियाई संस्करण और डायटेस्सरॉन शब्द "और जीवन" को छोड़ देते हैं। UBS 3 उनके समावेश को "बी" दर्ज़ा देता है, लेकिन UBS4 उनके समावेश को "ए" दर्ज़ा (निश्चित) देता है।

11:26 "जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनंतकाल तक न मरेगा" इस पाठ की कई महत्वपूर्ण वाक्य रचना संबंधी विशेषताएँ हैं।

1. सार्वभौमिक सर्वनाम "सब"
2. वर्तमान कृदंत, जो चल रहे विश्वास की आवश्यकता को दर्शाता है (यूहन्ना 11:25, 26)
3. मृत्यु के साथ जुड़ा प्रबल दोहरा नकारात्मक, "कभी नहीं, नहीं कभी नहीं मरेगा," जो स्पष्ट रूप से आत्मिक मृत्यु को संदर्भित करता है।

यूहन्ना में अनंत जीवन विश्वासियों के लिए एक वर्तमान वास्तविकता है, न केवल कोई भविष्य की घटना। लाज़र यीशु के शब्दों की सचित्र व्याख्या करने के लिए था! यूहन्ना के लिए, अनंत जीवन एक वर्तमान वास्तविकता है।

11:27 "हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है" यह पूर्ण काल में कहा गया है। यह वादा किए गए मसीहा के रूप में यीशु में उसके व्यक्तिगत विश्वास की एक शक्तिशाली स्वीकारोक्ति है। यह धर्मशास्त्रीय रूप से कैसरिया में पतरस की स्वीकारोक्ति के समतुल्य है (तुलना मत्ती 16)।

वह अपने विश्वास को व्यक्त करने के लिए कई अलग-अलग नामों का प्रयोग करती है।

1. मसीह (जो मसीहा, अभिषिक्त जन का यूनानी अनुवाद था)
2. परमेश्वर का पुत्र (मसीहा का एक पुराने नियम का नाम)
3. वह जो आता है (धार्मिकता के नए युग को लानेवाले,परमेश्वर की वाचा के जन के लिए एक और पुराने नियम का नाम तुलना यूहन्ना 6:14)

यूहन्ना सत्य को व्यक्त करने के लिए एक साहित्यिक तकनीक के रूप में संवाद का प्रयोग करता है। यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के विश्वास के कई इकबालिया बयान हैं (तुलना यूहन्ना 1:29,34,41,41; 4:42; 6:14,69; 9:35-38; 11:27)। विशेष विषय: यूहन्ना का विश्वास करो का प्रयोग यूहन्ना 2:23 पर देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 11:28-29
28यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहिन मरियम को बुलाकर चुपके से कहा, "गुरु यहीं है और तुझे बुलाता है।" 29यह सुनते ही वह तुरंत उठकर उसके पास आई।

11:28 "गुरु" NASB अध्ययन बाइबल (पृष्ठ 1540) में एक महान टिप्पणी है, "एक स्त्री द्वारा दिया जाने वाला एक महत्वपूर्ण विवरण। रब्बी स्त्रियों को नहीं सिखाते थे (तुलना यूहन्ना 4:27), लेकिन यीशु ने उन्हें अक्सर सिखाया।"

विशेष विषय: बाइबल में स्त्रियाँ (SPECIAL TOPIC: WOMEN IN THE BIBLE)

I. पुराना नियम
   A. सांस्कृतिक रूप से महिलाओं को संपत्ति माना जाता था
      1. संपत्ति की सूची में शामिल (निर्गमन 20:17)
      2. गुलाम स्त्रियों के साथ व्यवहार (निर्गमन 21:7-11)
      3. सामाजिक रूप से जिम्मेदार पुरुष द्वारा स्त्रियों की मन्नतों को निरस्त करना (गिनती 30)
      4. युद्ध की लूट के रूप में स्त्रियाँ (व्यवस्थाविवरण 20:10-14; 21:10-14)
   B. व्यावहारिक रूप से एक पारस्परिकता थी
      1. परमेश्वर के स्वरूप में बने नर और नारी (उत्पत्ति 1:26-27)
      2. पिता और माता का आदर करें (निर्गमन 20:12 [व्यवस्थाविवरण 5:16])
      3. माता और पिता का आदर (लैव्यव्यवस्था 19:3; 20:9)
      4. पुरुष और स्त्री नाज़ीर हो सकते हैं (गिनती 6:1-2)
      5. बेटियों का विरासत में भाग है (गिनती 27:1-11)
      6. वाचा के लोगों का हिस्सा (व्यवस्थाविवरण 29:10-12)
      7. पिता और माता की शिक्षा का पालन करें (नीतिवचन 1:8; 6:20)
      8. हेमान (लेवी परिवार) के पुत्र और पुत्रियों ने यहोवा के भवन में संगीत की सेवा की (1 इतिहास 25:5-6)
      9. बेटे और बेटियाँ नए युग में भविष्यद्वाणी करेंगे (योएल 2:28-29)
   C. स्त्रियाँ नेतृत्व वाली भूमिकाओं में थीं
      1. मूसा की बहन, मरियम, एक नबिया कहलाती है (निर्गमन 15: 20-21 मीका 6: 4 पर भी ध्यान दें)
      2. स्त्रियों को तम्बू के लिए सामग्री बुनने के लिए परमेश्वर ने दान दिया (निर्गमन 35: 25-26)
      3. एक विवाहित स्त्री, दबोरा, एक नबिया ने (तुलना न्यायियों 4: 4), सभी जनजातियों का नेतृत्व किया (न्यायियों 4:4-5; 5:7)
      4. हुल्दा, जिसे राजा योशिय्याह ने नव-प्रकाशित “व्यवस्था की पुस्तक" को पढ़ने और व्याख्या करने के लिए आमंत्रित किया था (2 राजाओं 22:14; 2 इतिहास 34:22-27)।
      5. एक धार्मिक स्त्री, रानी एस्तेर ने फारस के यहूदियों को बचाया

II. नया नियम
   A. यहूदी धर्म और यहूदी-रोमी जगत दोनों में स्त्रियाँ सांस्कृतिक रूप से कुछ अधिकारों या विशेषाधिकारों के साथ दूसरी श्रेणी की नागरिक थीं (मकदूनिया एक अपवाद था)
   B. नेतृत्व की भूमिकाओं में स्त्रियाँ

1. इलीशिबा और मरियम, परमेश्वर के लिए उपलब्ध स्त्रियाँ (लूका 1-2)
2. हन्नाह, एक भविष्यवक्तिन जो मंदिर में सेवा करती थी (लूका 2:36)
3. लुदिया, विश्वासी और एक घर कलीसिया की अगुवा (प्रेरितों के काम 16:14,40)
4. फिलिप्पुस की चार कुँवारी पुत्रियाँ भविष्यवक्ता थीं (प्रेरितों के काम 21:8-9)
5. फीबे, किंख्रिया में कलीसिया की सेविका (रोमियों 16:1)
6. प्रिस्का (प्रिस्किल्ला), पौलुस के सहकर्मी और अपुल्लोस की शिक्षक (प्रेरितों के काम 18:26; रोमियो 16:3)।
7. मरियम, त्रूफेना, त्रूफोसा, पिरसिस, यूलिया, नेर्युस की बहन,पौलुस की महिला सहकर्मी।
8. यूनियास (KJV), संभवतः एक महिला प्रेरित (रोमियों 16:7)
9. यूआदिया और सुन्तुखे, पौलुस के साथ सहकर्मी (फिलिप्पियों 4:2-3)

III. एक आधुनिक विश्वासी कैसे अलग-अलग बाइबल के उदाहरणों को संतुलित करता है?
   A. सभी कलीसियाओं, सभी युगों के सभी विश्वासियों के लिए मान्य अनंत सत्यों से कोई कैसे ऐतिहासिक या सांस्कृतिक सत्य को, जो केवल मूल संदर्भ पर लागू होता है, निर्धारित करता है?
      1. हमें मूल प्रेरित लेखक के अभिप्राय को बहुत गंभीरता से लेना चाहिए। बाइबल परमेश्वर का वचन और विश्वास और अभ्यास का एकमात्र स्रोत है।
      2. हमें स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक रूप से अनुकूल प्रेरित पाठों पर चर्चा करनी चाहिए।
         a. इस्राएल के आराध्य (यानी, अनुष्ठान और पूजन पद्धति) (तुलना प्रेरितों के काम 15; गलतियों 3)
         b. पहली सदी का यहूदी धर्म
         c. 1 कुरिन्थियों में पौलुस के स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक रूप से अनुकूल कथन
            (1) मूर्तिपूजक रोम की कानूनी प्रणाली (1 कुरिन्थियों 6)
            (2) एक दास बने रहना (1 कुरिन्थियों 7:20-24)
            (3) ब्रह्मचर्य (1 कुरिन्थियों 7:1-35)
            (4) कुँवारियाँ (1 कुरिन्थियों 7:36-38)
            (5) एक मूर्ति को चढ़ाया गया भोजन (1 कुरिन्थियों 8; 10:23-33)
            (6) प्रभुभोज में अनुचित व्यवहार (1 कुरिन्थियों 11)
      3. परमेश्वर ने पूरी तरह से और स्पष्ट रूप से खुद को एक विशेष संस्कृति, एक विशेष दिन पर प्रकट किया। हमें प्रकटीकरण को गंभीरता से लेना चाहिए, लेकिन इसके ऐतिहासिक अनुकूलन के हर पहलू को नहीं। परमेश्वर का वचन,एक विशेष समय में एक विशेष संस्कृति को संबोधित करते हुए मानवीय शब्दों में लिखा गया था।
   B. बाइबल की व्याख्या के लिए मूल लेखक के अभिप्राय को खोजना चाहिए। वह अपने दिन के लिए क्या कह रहा था? यह उचित व्याख्या के लिए मूलभूत और महत्वपूर्ण है। लेकिन फिर हमें इसे अपने दिन पर लागू करना चाहिए। वास्तविक व्याख्यात्मक समस्या शब्द को परिभाषित करने में हो सकती है। क्या उन पादरियों के मुकाबले, जिन्हें नेतृत्व के रूप में देखा गया था, और भी सेवकाइयाँ थीं? क्या सेविकाएँ या भविष्यवक्तिनें अगुवों के रूप में देखीं गईं? यह स्पष्ट है कि पौलुस, 1 कुरिन्थियों 14:34-35 और 1 तीमुथियुस 2:9-15, इस बात पर जोर दे रहा है कि स्त्रियों को सार्वजनिक आराधना में हिस्सा नहीं लेना चाहिए! लेकिन आज मैं इसे कैसे लागू करूँ? मैं नहीं चाहता कि पौलुस की संस्कृति या मेरी संस्कृति परमेश्वर के वचन और इच्छा को चुप कर दे। संभवतः पौलुस का दिन बहुत सीमित था, लेकिन मेरा दिन अति मुक्त हो सकता है। मैं यह कहते हुए असहज महसूस करता हूँ कि पौलुस के वचन और उपदेश नियमबद्ध हैं, पहली शताब्दी के, स्थानीय स्थितिजन्य सत्य। मैं कौन हूँ कि मैं अपने मन या अपनी संस्कृति को एक प्रेरित लेखक को नकारने दूँ?

हालाँकि, मैं क्या करूँ जब महिला अगुवों के बाइबल उदाहरण हैं (पौलुस के लेखन में भी, तुलना रोमियों 16)? इसका एक अच्छा उदाहरण 1 कुरिन्थियों 11-14 में पौलुस की सार्वजनिक आराधना की चर्चा है। 1 कुरिन्थियों 11:5 वह सार्वजनिक आराधना में स्त्रियों को उनके सिर ढक कर उपदेश और प्रार्थना की अनुमति देता दिखाई दे रहा है, फिर भी 14:34-35 में वह उनसे चुप रहने की माँग करता है! वहाँ सेविकाएँ (तुलना रोमियों 16:1) और भविष्यद्वक्तिने थीं (तुलना प्रेरितों के काम 21:9)। यह वह विविधता है जो मुझे पहली सदी के कुरिन्थ और इफिसुस तक सीमित पौलुस की टिप्पणियों (स्त्रियों पर प्रतिबंध से संबंधित) की पहचान करने की स्वतंत्रता देती है। दोनों कलीसियाओं में स्त्रियों को अपनी नई-नवेली आजादी (तुलना Bruce Winter, *After Paul Left*

Corinth), का इस्तेमाल करने में समस्या थी, जिससे कलीसिया को मसीह के लिए अपने समाज तक पहुँचने में कठिनाई हो सकती थी। उनकी स्वतंत्रता को सीमित करना था ताकि सुसमाचार अधिक प्रभावी हो सके।

मेरा दिन पौलुस के दिन के विपरीत है। मेरे दिन में सुसमाचार सीमित हो सकता है यदि स्पष्ट, प्रशिक्षित स्त्रियों को सुसमाचार बाँटने, नेतृत्व करने की अनुमति न हो! सार्वजनिक आराधना का सर्वोच्च लक्ष्य क्या है? क्या प्रचार और शिष्यत्व नहीं है? क्या परमेश्वर को स्त्री अगुवों के द्वारा सम्मानित और प्रसन्न किया जा सकता है? बाइबल सम्पूर्ण रूप से "हाँ" कहती प्रतीत होती है!

मैं पौलुस के अधीन होना चाहता हूँ; मेरा धर्मशास्त्र मुख्य रूप से पौलुस आधारित है। मैं आधुनिक नारीवाद से अधिक प्रभावित होना या हेरफेर करना नहीं चाहता हूँ! हालाँकि, मुझे लगता है कि बाइबल की स्पष्ट सच्चाइयों जैसे दासत्व, जातिवाद, कट्टरता और लैंगिकवाद की अनुपयुक्तता का प्रत्युत्तर देने के लिए कलीसिया धीमा हो गई है। आधुनिक दुनिया में स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार के लिए उचित रूप से प्रतिक्रिया देने में भी धीमी हो गई है। मसीह में परमेश्वर ने दास और स्त्री को मुक्त कर दिया। मैं एक संस्कृति-बद्ध पाठ को फिर से उन्हें बेड़ियों में बाँधने देने की हिम्मत भी नहीं कर सकता।

एक और बात: एक व्याख्याकार के रूप में मुझे पता है कि कुरिन्थ एक बहुत ही विच्छेदित कलीसिया थी चमत्कारिक दानों को महत्व दिया जाता था और उन्हें घमण्ड से दिखाया जाता था। हो सकता है कि स्त्रियाँ इसमें फँस गई हों। मेरा यह भी मानना है कि इफिसुस झूठे शिक्षकों से प्रभावित हो रहा था जो स्त्रियों का फायदा उठा रहे थे और इफिसुस की घर कलीसियाओं में स्थानापन्न वक्ता के रूप में उनका प्रयोग कर रहे थे।

C. आगे पढ़ने के लिए सुझाव
   1. *How to Read the Bible For All Its Worth* by Gordon Fee and Doug Stuart (pp. 61-77)
   2. *Gospel and Spirit: Issues in New Testament Hermeneutics* by Gordon Fee
   3. *Hard Sayings of the Bible* by Walter C. Kaiser, Peter H. Davids, F. F. Bruce, and Manfred T. Branch (pp. 613-616; 665-667)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 11:30-37

**30यीशु अभी गाँव में नहीं पहुँचा था परंतु उसी स्थान में था जहाँ मार्था ने उस से भेंट की थी। 31तब जो यहूदी
उसके साथ घर में थे और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम तुरंत उठ के बाहर गई है यह समझे कि
वह कब्र पर रोने को जाती है, तो उसके पीछे हो लिए। 32जब मरियम वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था,तो उसे देखते ही
उसके पाँवों पर गिर पड़ी और कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।" 33जब यीशु ने उसको और
उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे, रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ, 34और
कहा, "तुम ने उसे कहाँ रखा है?" उन्होंने उससे कहा, "हे प्रभु, चलकर देख ले।" 35यीशु रोया। 36तब यहूदी कहने
लगे, "देखो, वह उससे कितना प्रेम रखता था!" 37परन्तु उनमें से कुछ ने कहा, "क्या यह जिसने अंधे की आँखें
नहीं खोलीं, यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न मरता?"**

11:30 यह प्रेरितिक लेखक का एक और प्रत्यक्षदर्शी विवरण है।

11:33

NASB	**"वह आत्मा में बहुत ही व्याकुल और उदास हुआ"**
NKJV	**"वह आत्मा में कराहया और उदास हुआ"**
NRSV	**"वह आत्मा में बहुत परेशान और अत्यंत प्रभावित हुआ"**
TEV	**"उसका हृदय स्पर्श हुआ था, और वह अत्यंत प्रभावित हुआ"**
NJB	**"यीशु बहुत व्यथित था, और एक गहरी आह के साथ"**

यह अक्षरशः "आत्मा में फुफकारना है"। यह मुहावरा आमतौर पर क्रोध के लिए इस्तेमाल होता था (तुलना दानिय्येल 11:30 [LXX]; मरकुस 1:43; 14:5)। लेकिन इस संदर्भ में गहरी भावना दिखाने वाले एक अनुवाद को प्राथमिकता दी जाती है (तुलना यूहन्ना 11:38)। हालाँकि कुछ टिप्पणीकार इस प्रबल भावना, संभवतः क्रोध, को मृत्यु की ओर निर्देशित देखते हैं, यीशु की सच में मानवीय भावनाएँ थीं (तुलना यूहन्ना 11:33, 35 ,36,38) और वह उन्हें अपने मित्रों के लिए यहाँ दिखाता है।

11:35 "यीशु रोया" यह बाइबल में सबसे छोटा पद है। मृत्यु इस ग्रह के लिए परमेश्वर की इच्छा नहीं थी। यह मानव विद्रोह का परिणाम है। यीशु एक प्रियजन के नुकसान का दर्द महसूस करता है। वह अपने सभी अनुयायियों के जीवनकाल के अनुभवों को महसूस करता है! यीशु का रोना एक शांत, व्यक्तिगत प्रकार था, न कि यूहन्ना 11:33 में उल्लिखित सार्वजनिक क्रंदन।

11:37 यह प्रश्न एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है। यूहन्ना 11:21 में मार्था और यूहन्ना 11:32 में मरियम की यही राय थी।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 11:38-44
38यीशु मन में फिर बहुत उदास होकर क़ब्र पर आया। वह एक गुफा थी और एक पत्थर उस पर रखा था।
39यीशु ने कहा, "पत्थर हटाओ।" उस मरे हुए की बहिन मार्था ने उससे कहने लगी, "हे प्रभु, उसमें से अब तो दुर्गंध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।" 40यीशु ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझ से नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी?" 41तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया।यीशु ने आँखें उठाकर कहा," हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। 42मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उनके कारण मैंने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।" 43यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा," हे लाज़र, निकल आ।" 44जो मर गया था वह कफन से हाथ पाँव बँधे हुए निकल आया, और उसका मुँह अँगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "उसे खोल दो, और जाने दो।"

11:38 "एक गुफा" इस अवधि के दौरान पलस्तीन की कब्रें थीं या तो
1. प्राकृतिक गुफाएँ (*Baba Bathra* 6:8)
2. चट्टानों में खोदी गयीं गुफाएँ और खाई में लुढ़के हुए गोलाकार पत्थरों से सील की गयीं।
3. जमीन में खोदे गए गड्ढे और बड़े पत्थरों से ढंके हुए।

यरुशलेम क्षेत्र में किये गए पुरातत्व संबंधी अध्ययन से विकल्प # 1 सबसे उपयुक्त बैठता है।

11:39 "पत्थर हटाओ" एक बड़े पत्थर को खांचे में फिसला देना, यह विधि लुटेरों और जानवरों से कब्रों को सील करने के लिए इस्तेमाल की जाती थी।

▣ **"उसे मरे चार दिन हो चुके हैं"** यह एक ग्रीक मुहावरा है, अक्षरशः "एक चार दिन का मनुष्य।"

11:40 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसका अर्थ है कि कार्य संभव है। यह पद एक प्रश्न है जो एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है।

▣ **"परमेश्वर की महिमा"** परमेश्वर की महिमा यीशु के कार्यों में प्रकट हुई थी (तुलना यूहन्ना 11: 4)। यूहन्ना 1:14 पर पूर्ण टिप्पणी देखें।

11:41 "यीशु ने आँखें उठाकर" यहूदी प्रार्थना की सामान्य मुद्रा स्वर्ग की ओर उठी हुए हाथ और आँखें(खुली) थीं। यह प्रार्थना के लिए एक मुहावरा है (तुलना यूहन्ना 17:1)।

▣ **"कि तू ने मेरी सुन ली है"** यीशु पिता की "सुनता" है (तुलना यूहन्ना 8:26,40; 15:15) और पिता उसकी "सुनता है"। जो यीशु को "सुनते हैं" उनका अनन्त जीवन है। यह "देखते" और "सुनते" पर समानांतर के रूप में "ग्रहण" (यूहन्ना 1:12) और "विश्वास" (यूहन्ना 3:16) पर जारी शब्द क्रीड़ा है। लाज़र ने यीशु की आवाज़ को "सुना" और वापस जीवित हो गया।

11:42 यह यीशु की प्रार्थना और चमत्कार के उद्देश्य को बताता है। यीशु अक्सर चेलों के विश्वास को प्रोत्साहित करने के लिए चमत्कार करता था, और इस मामले में यरूशलेम के यहूदियों में विश्वास की शुरुआत करता है।

धर्मशास्त्रीय रूप से यीशु फिर से अपने कामों में पिता के अधिकार और प्राथमिकता को बढ़ाकर बताता है (तुलना यूहन्ना 5:19,30; 8:28; 12:49; 14:10)। यह चमत्कार यीशु के पिता के साथ अंतरंग संबंध को प्रकट करता है। यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना (*Apostello*) देखें।

11:43 "उसने बड़े शब्द से पुकारा, 'हे लाज़र, निकल आ'" यह कहा गया है कि अगर यीशु ने स्पष्ट रूप से लाजर का उल्लेख नहीं किया होता, तो पूरा कब्रिस्तान सामने आ जाता!

11:44 शरीरों को पानी से धोकर फिर सन के कपड़े की पट्टियों में मसाले लगाकर जो गंध को रोकने में मदद करते थे, लपेटकर दफनाने के लिए तैयार किया जाता था। चौबीस घंटों के भीतर मृत शरीर को दफनाया जाता था क्योंकि यहूदियों ने अपने मृतकों का संलेपन नहीं करते थे।

विशेष विषय: दफ़नाने की परम्पराएँ (SPECIAL TOPIC: BURIAL PRACTICES)

I. मेसोपोटामिया
   A. उचित दफ़्न क्रिया एक खुशहाल मरणोत्तर जीवन, जिसे अक्सर इस जीवन के विस्तार के रूप में देखा जाता था, के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी (विशेष विषय: मृत कहाँ हैं? देखें)।
   B. मेसोपोटामियाई अभिशाप का एक उदाहरण है, "पृथ्वी को आपकी लाशें नहीं मिलेंगी।"
II. पुराना नियम
   A. उचित अंतिम क्रिया बहुत महत्वपूर्ण थी (तुलना सभोपदेशक 6:3)।
   B. यह बहुत जल्दी की गई थी (तुलना उत्पत्ति 23 में सारा और उत्पत्ति 35:19 में राहेल और व्यवस्थाविवरण 21:23 पर ध्यान दें)।
   C. अनुचित अंतिम क्रिया अस्वीकृति और पाप का संकेत थी।
      1. व्यवस्थाविवरण 28:26
      2. यशायाह 14:20
      3. यिर्मयाह 8:2; 22:19
   D. दफ़्न क्रिया, यदि संभव हो तो, घर के क्षेत्र में पारिवारिक शव-कक्षों में की जाती थी (यानी, "अपने पिता के साथ सो गया")।
   E. वहाँ कोई शव संलेपन नहीं था, जैसा कि मिस्र में होता था। मानवजाति मिट्टी से आई और उसे मिट्टी में फिर मिल जाना चाहिए (उदा, उत्पत्ति 3:19; भजनसंहिता 103:14; 104: 29)। विशेष विषय: दाह-संस्कार पर भी ध्यान दें
   F. रब्बियों के यहूदी धर्म में शव के उचित सम्मान और संभाल का शवों से जुड़ी अनुष्ठानिक अशुद्धता की अवधारणा के साथ संतुलन करना मुश्किल था।
III. नया नियम
   A. मृत्यु के बाद जल्दी दफ़्न किया जाता था, आमतौर पर चौबीस घंटे के भीतर। यहूदी अक्सर तीन दिनों तक कब्र पर नज़र रखते थे, यह विश्वास करते हुए कि उस समय सीमा के भीतर आत्मा शरीर में वापस आ सकती है (तुलना यूहन्ना 11:39)।
   B. दफन क्रिया में शव को साफ करना और मसालों के साथ लपेटना शामिल था (तुलना यूहन्ना 11:44; 19:39-40)।
   C. पहली शताब्दी के पलस्तीन में कोई विशिष्ट यहूदी या ईसाई दफन प्रक्रियाएँ (या कब्र में रखी गई वस्तुएं) नहीं थीं।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 11:45-46

45तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे और उसका यह काम देखा था, उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास
किया। 46परन्तु उनमें से कुछ ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया।

11:45 "उनमें से बहुतों ने. . .विश्वास किया" यह सुसमाचार (तुलना यूहन्ना 20: 30-31) की कथित विषयवस्तु है। यह वाक्यांश एक नमूना बन जाता है (तुलना यूहन्ना 2:23; 7:31; 8:30; 10:42; 11:45; 12:11,42)। हालाँकि, यह फिर से दोहराया जाना चाहिए कि यूहन्ना के सुसमाचार में विश्वास के कई स्तर हैं और हमेशा बचानेवाला विश्वास नहीं है (तुलना यूहन्ना: 23-25: 8: 30ff)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

11:46 "उनमें से कुछ ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया" ऐसे अद्‌भुत शिक्षण और शक्तिशाली चमत्कारों के सामने आत्मिक अंधापन का अद्‌भुत परिमाण है। हालाँकि, यीशु सभी समूहों को जो उस पर भरोसा करते हैं और जो उसके बारे में सच्चाई को अस्वीकार करते हैं, में विभाजित करता है। इस तरह का एक सामर्थ्यशाली चमत्कार भी विश्वास नहीं ला पाता (तुलना लूका 16:30-31)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 11:47-53

[47]इस पर प्रधान याजकों और फरीसियों ने महासभा बुलाई, और कहा, "हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है। [48]यदि हम उसे यों ही छोड़ दें तो सब उस पर विश्वास ले आएँगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे। [49]तब उनमें से काइफा नामक एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महायाजक था, उनसे कहा," तुम कुछ भी नहीं जानते; [50]और न यह समझते हो कि तुम्हारे यह भला है कि हमारे लोगों के लिए एक मनुष्य मरे, और सारी जाति नष्ट न हो।" [51]यह बात उसने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिए मरेगा; [52]और न केवल उस जाति के लिए, वरन इसलिये भी कि परमेश्वर की तितर-बितर संतानों को एक कर दे। [53]अतः उसी दिन से वे उसे मार डालने का षड्यंत्र रचने लगे।

11:47 "इस पर प्रधान याजकों और फरीसियों ने महासभा बुलाई" यह यरूशलेम में यहूदियों के सर्वोच्च न्यायालय, सन्हेद्रयौन को संदर्भित करता है। इसमें 70 स्थानीय सदस्य थे। महायाजक राजनीतिक, धार्मिक अनुनयी थे जो सदूकी के रूप में जाने जाते थे, जो केवल मूसा के लेखन को ग्रहण करते थे और पुनरुत्थान से इनकार करते थे। फरीसी अधिक लोकप्रिय, कानूनी धार्मिक समूह थे जिन्होंने पुष्टि की (1)सम्पूर्ण पुराना नियम;(2) स्वर्गदूतों की सेवकाई; (3) और उसके बाद का जीवन। यह आश्चर्यजनक है कि ये दोनों विरोधी समूह किसी भी उद्देश्य के लिए गठबंधन करेंगे। विशेष विषय: फरीसी यूहन्ना 1:24 पर देखें। देखें विशेष विषय:सन्हेद्रयौन यूहन्ना 3:1 पर।

▣ **"यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है"** यीशु को "यह आदमी" के रूप में संदर्भित करना उसका नाम न बताने का अपमानजनक तरीका है। यह भी आश्चर्यजनक है कि लाज़र को जिलाए जाने जैसे महान चमत्कारों की उपस्थिति में, उनके पूर्वाग्रह ने उनकी आँखों को पूरी तरह से अंधा कर दिया था (तुलना 2 कुरिन्थियों 4:4)।

11:48 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"तो सब उस पर विश्वास ले आएँगे"** ईर्ष्या और साथ ही साथ धार्मिक असहमति उनके अविश्वास और यीशु के डर का स्रोत थी। "सब" सामरियों और अन्य जातियों (तुलना यूहन्ना 10:16) को भी संदर्भित करता होगा। उनके डर (यानी, रोमी नियंत्रण) का एक राजनीतिक पहलू भी था।

▣ **"रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे"** यह यूहन्ना के सुसमाचार की उन पुष्ट भविष्यवाणियों में से एक है, क्योंकि यह 70 ई. में अक्षरशः रोमी जनरल (बाद में सम्राट) तीतुस के नेतृत्व में किया गया था।

रोमी वर्चस्व की राजनीतिक वास्तविकता यहूदी अंत समय (युगांत विषयक) की आशा का एक अभिन्न अंग थी। उनका विश्वास था कि परमेश्वर पुराने नियम के न्यायियों की तरह उन्हें शारीरिक रूप से रोम से छुड़ाने के लिए धार्मिक / फौजी व्यक्ति भेजेगा। कई मसीहाई ढोंगियों ने इसी उम्मीद को पूरा करने के लिए पलस्तीन में विद्रोह शुरू कर दिया।

यीशु ने दावा किया कि उसका राज्य एक अस्थाई / राजनीतिक शासन नहीं है (तुलना यूहन्ना 18:36), लेकिन एक आत्मिक शासन है जो भविष्य में विश्वभर में पूर्णता तक पहुँचेगा (यानी प्रकटीकरण)। उसने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा करने का दावा किया, लेकिन शाब्दिक, यहूदी, राष्ट्रवादी अर्थों में नहीं। इसके लिए वह अपने दिन के अधिकांश यहूदियों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया।

11:49 "काइफा, जो उस वर्ष का महायाजक था" महायाजकपन अपने बच्चों को सौपा जानेवाला आजीवन स्थान था (तुलना निर्गमन 28), लेकिन रोमियों के विजेता बनने के बाद, इसे जैतून के पहाड़ पर और मंदिर के क्षेत्र में उपलब्ध लाभदायक व्यापार के कारण सबसे ऊँची बोली लगाने वाले को बेचा जाने लगा। काइफा 18-36 ई. से महायाजक था (हन्ना का दामाद, 6-15 ई. से महायाजक)।

11:50-52 यह यूहन्ना की विडंबना का एक और उदाहरण है। काइफा ने सुसमाचार का प्रचार किया!

11:50 "लोगों के लिए एक मनुष्य मरे" इसके लिए पुराने नियम की पृष्ठभूमि है "भौतिकता" का यहूदी दृष्टिकोण । एक व्यक्ति (अच्छा या बुरा) पूरे (यानी, आदम / हव्वा; आकान) को प्रभावित कर सकता है। यह अवधारणा बलिदान प्रणाली, विशेष रूप से प्रायश्चित के दिन (लैव्यव्यवस्था 16) को आधार देने के रूप में सामने आई, जहाँ एक निर्दोष जानवर राष्ट्र के

पाप को अपने ऊपर लेता है। यह यशायाह 53 के पीछे मसीहाई अवधारणा बन जाता है। नये नियम में रोमियों 5:12-21 का आदम / मसीह प्रारूपविज्ञान इस अवधारणा को दर्शाता है।

11:51

NASB, REV,
NET **"कि यीशु मर जाएगा"**
NKJV, NIV,
REB **"कि यीशु मरेगा"**
NRSV **"कि यीशु मरने वाला था"**
NJB **"कि यीशु को मरना था"**

NIDOTTE, vol. 1, p. 326, में मसीह के छुटकारे के काम में परमेश्वर की इच्छा के लिए प्रयोग की जाने वाली क्रिया *mello* के धर्मशास्त्रीय प्रयोग के बारे में एक अच्छी टिप्पणी है "("अवश्य, ","करना है "," निश्चित होना ")।

1. मरकुस 10:32
2. मत्ती 17: 22
3. लूका 9: 31,44; 24:21; प्रेरितों के काम 26:23
4. यूहन्ना 7:39; 11:51; 12:33; 14:22; 18:32

यह यहूदा के विश्वासघात की आवश्यकता के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

1. लूका 22:23
2. यूहन्ना 6:71; 12: 4

लूका, प्रेरितों के काम में, इसे भविष्यद्वाणी की पूर्ति के लिए प्रयोग करता है (यानी, प्रेरितों के काम 11:28; 24:15; 26:22)। छुटकारे संबंधी सारी घटनाएँ परमेश्वर के हाथों में थीं (तुलना प्रेरितों 2:23; 3:18; 4:28; 13:01))।

11:52 "परमेश्वर की तितर-बितर संतानों को एक कर दे" यह यूहन्ना की एक संपादकीय टिप्पणी प्रतीत होती है जो 10:16 के समानांतर हो सकती है। यह संदर्भित कर सकती है

1. पलस्तीन के बाहर रहने वाले यहूदी
2. आधे यहूदी जैसे सामरी
3. गैर-यहूदी

विकल्प #3 सबसे श्रेष्ठ लगता है। जो भी हो, यीशु की मृत्यु "विश्वास करनेवाली"मानवता में एक एकता लाएगी (तुलना यूहन्ना 1:29; 3:16; 4:42; 10:16)।

11:53 "अतः उसी दिन से वे उसे मार डालने का षड्यंत्र रचने लगे" यह यूहन्ना में एक आवर्तक विषयवस्तु है (तुलना यूहन्ना 5:18; 7:19; 8:59; 10:39; 11:8)।

NASB (अद्यतन) पाठ 11:54
[54]इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा, परन्तु वहाँ से जंगल के निकटवर्ती प्रदेश के इफ्राईम नामक एक नगर को चला गया; और अपने चेलों के साथ वहीं रहने लगा।

11:54 " इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा" यूहन्ना 12 यीशु का धार्मिक अगुवों से निपटने का आखिरी प्रयास है।

यूहन्ना में अनुवादित शब्द "प्रगट होकर" (तुलना यूहन्ना 7:26; 11:54; 18:20) का सामान्य रूप से अर्थ है "साहसपूर्वक"। यूहन्ना 7: 4 में विशेष विषय देखें।

▣ **"इफ्राईम नामक एक नगर"** यह शहर सामरिया में बेतेल के करीब स्थित हो सकता है (तुलना 2 इतिहास 13:19)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 11:55-57
[55]यहूदियों का फसह निकट था, और बहुत से लोग फसह से पहले देहात से यरूशलेम को गए कि अपने आप को शुद्ध करें। [56]अतः वे यीशु को ढूँढने लगे, और मंदिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, "तुम क्या सोचते हो? क्या वह पर्व में नहीं आएगा?" [57]प्रधान याजकों और फरीसियों ने यह आदेश दे रखा था कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहाँ है तो बताए, ताकि वे उसे पकड़ सकें।

11:55-57 ये पद अध्याय 11 और 12 को एक साथ जोड़ते हैं।

11:55 "अपने आप को शुद्ध करें" यह फसह की तैयारी में शुद्धिकरण के अनुष्ठान संस्कारों को संदर्भित करता है। पलस्तीन में यीशु ने कितने समय तक सिखाया, उपदेश दिया और सेवकाई की, इस बात पर अभी भी वाद-विवाद होता है। सिनॉप्टिक्स को इस तरह संरचित किया गया है कि सम्भव है एक या दो साल। हालांकि, यूहन्ना में कई फसह (एक वार्षिक पर्व) हैं। वहाँ निश्चित रूप से तीन का उल्लेख किया गया है (तुलना यूहन्ना 2:13; 6: 4; और 11:55) कम से कम यूहन्ना 5:1 में एक चौथा "एक पर्व" अंतर्निहित है।

11:57 यह यूहन्ना की एक और संपादकीय टिप्पणी है।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यीशु ने लाज़र को क्यों मरने दिया?
2. चमत्कार किसकी ओर निर्देशित था?
3. पुनरुत्थान और पुनर्जीवन के बीच क्या अंतर है?
4. लाज़र के जिलाए जाने से यहूदी अगुवे इतने स्तम्भित क्यों हुए?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 12

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
बैतनिय्याह में अभिषेक	बैतनिय्याह में अभिषेक	बैतनिय्याह में अभिषेक	यीशु का बैतनिय्याह में अभिषेक	बैतनिय्याह में अभिषेक
12:1-8	12:1-8	12:1-8	12:1-6	12:1-8
			12:7-8	
लाज़र के खिलाफ षड्यंत्र	लाज़र को मारने का षड्यंत्र		लाज़र के खिलाफ षड्यंत्र	
12:9-11	12:9-11	12:9-11	12:9-11	12:9-11
यरूशलेम में विजय - प्रवेश	विजय – प्रवेश	खजूर का रविवार	यरूशलेम में विजय - प्रवेश	मसीह के यरूशलेम में प्रवेश
12:12-19	12:12-19	12:12-19	12:12-13	12:12-19
			12:14	
			12:15	
			12:16	
			12:17	
			12:18-19	
कुछ यूनानी यीशु को खोजते हैं	गेहूँ का फलवंत दाना	यीशु की सार्वजनिक सेवकाई की समाप्ति	कुछ यूनानी यीशु को खोजते हैं	यीशु अपनी मृत्यु और उसके पश्चात गौरवान्वित होने की भविष्यद्वाणी करता है
12:20-26	12:20-26	12:20-26	12:20-21	12:20-28a
			12:22-26	
मनुष्य का पुत्र ऊँचे पर चढ़ाया जाना चाहिए	यीशु क्रूस पर अपनी मृत्यु की भविष्यद्वाणीकरता है		यीशु अपनी मृत्यु के बारे में कहता है	
12:27-36a	12:27-36	12:27-36a	12:27-28a	
			12:28b	12:28b
			12:29	12:29-32
			12:30-33	
				12:33-36a
			12:34	
			12:35-36a	
यहूदियों का अविश्वास	किसने हमारी सूचना पर विश्वास किया?		लोगों का अविश्वास	

12:36b-43		12:36b-43	12:36b-38	12:36b
				निष्कर्ष: यहूदियों का अविश्वास
	12:37-41			12:37-38
			12:39-40	12:39-40
			12:41	12:41
	ज्योति में चलो		12:42-43	12:42-50
यीशु के वचनों से न्याय	12:42-50		यीशु के वचनों से न्याय	
12:44-50		12:44-50	12:44-50	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 1-50 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. चारों सुसमाचार एक स्त्री द्वारा यीशु के अभिषेक को दर्ज़ करते हैं। इसलिए, यह घटना सुसमाचार लेखकों को महत्त्वपूर्ण लगी होगी। हालाँकि, मरकुस 14:3-9, मत्ती 26: 6-13, और यूहन्ना 12: 2-8 ने उसे लाज़र की बहिन बैतनिय्याह की मरियम के रूप में पहचाना, जबकि लूका 7: 36-50 उसे गलील में पापी स्त्री के रूप में पहचानता है।

B. अध्याय 12 यीशु की सार्वजनिक सेवकाई को समाप्त कर देता है (तुलना यूहन्ना 12:29)। उसने यहूदी अगुवों को विश्वास में लाने के लिए बार-बार कोशिश की थी। अध्याय 11 यरूशलेम के नगरवासियों को विश्वास में लाने का उसका प्रयास था।

C. इस अध्याय में लोगों के पाँच समूह उल्लेखित हैं।
   1. भीड़ जिसने लाज़र का जिलाया जाना देखा था, यूहन्ना 12:17
   2. यरूशलेम की एक भीड़, यूहन्ना 12: 9
   3. फसह पर आने वाले तीर्थयात्रियों की भीड़, यूहन्ना 12:12,18,29,34
   4. संभवतः एक अन्यजातियों की भीड़, यूहन्ना 12:20
   5. संभवतः यहूदी अगुवों की एक भीड़ जो उस पर विश्वास करती थी, यूहन्ना 12:42

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 12:1-8
[1]यीशु फसह से छः दिन पहले ,बैतनिय्याह में आया, जहाँ लाज़र था, जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया था।
[2]वहाँ उन्होंने उसके लिए भोजन तैयार किया; और मार्था सेवा कर रही थी, और लाज़र उनमें से एक था जो उसके
साथ भोजन करने के लिए बैठे थे। [3]तब मरियम ने जटामासी का आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पाँवों पर
डाला, और अपने बालों से उसके पाँव पोंछे; और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया। [4]परन्तु उसके चेलों में से
यहूदा इस्करियोती नामक एक चेला (जो उसे पकड़वाने पर था) कहने लगा, [5]"यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर
कंगालों को क्यों न दिया गया?" [6]उसने यह बात इसलिये नहीं कही कि उसे कंगालों की चिंता थी परन्तु इसलिये
कि वह चोर था, और उसके पास उनकी थैली रहती थी और उसमें जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था।
[7]यीशु ने कहा, "उस रहने दो उसे। यह मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए रखने दो। [8]क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ
सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूँगा।"

12:1 "फसह के छः दिन पहले" यह मत्ती 26:2 से एक अलग कालानुक्रमिक अनुक्रम है। यह याद रखना चाहिए कि सुसमाचारों का प्राथमिक केन्द्रबिन्दु कालक्रम नहीं है, लेकिन यीशु की प्रतिनिधि क्रियाएँ हैं जो उनके व्यक्तित्व और काम के बारे में सच्चाई को दर्शाती हैं।सुसमाचार जीवनी नहीं हैं लेकिन समूहों को लक्षित करने के लिए धर्मप्रचार संबंधी पुस्तिकाएँ हैं।

12:2 "उन्होंने" यह बैतनिय्याह के नगरवासियों को संदर्भित करता है, जिन्होंने यीशु और उसके चेलों को लाज़र को जिलाने के सम्मान में भोजन तैयार किया था। हालांकि, मत्ती 26: 6, यह शमौन कोढ़ी के घर में होता है।

12:3 "आधा सेर" यह एक लातिनी शब्द था जिसे रोमी पाउंड के रूप में संदर्भित किया गया है, जो 12 औंस के बराबर था। यह महंगा मसाला रियम के विवाह का दहेज हो सकता है। कई अविवाहित स्त्रियाँ अपनी गर्दन के चारों ओर पात्रों में इस तरह का इत्र पहना करती थीं।

NASB	**"आधा सेर शुद्ध जटामांसी का बहुमूल्य इत्र"**
NKJV	**"आधा सेर जटामांसी का बहुमूल्य तेल"**
NRSV	**"आधा सेर शुद्ध जटामांसी से बना मूल्यवान इत्र"**
TEV	**"एक पूरा माप शुद्ध जटामांसी से बना अति मूल्यवान इत्र"**
NJB	**"आधा सेर अति बहुमूल्य मरहम, शुद्ध जटामांसी"**

विशेषण के अर्थ पर बहुत अटकलबाज़ी हुई है: (1) शुद्ध; (२) तरल; या (3) एक स्थान का नाम। इत्र खुद एक सुगंधित-हिमालयी मूल से था जो बहुमूल्य था। James M Freeman, *Manners and Customs of the Bible, pp.*379-380 देखें।

▣ **"यीशु के पाँवों पर डाला"** इसी घटना के अन्य सुसमाचार विवरण (संभवतः लाज़र को जिलाने के लिए मरियम की कृतज्ञता, यूहन्ना 12:2) स्त्री के द्वारा उसके सिर का अभिषेक करने की बात करते हैं। जाहिर तौर पर मरियम ने उसके पूरे शरीर का अभिषेक किया, उसके सिर के साथ शुरुआत की और ठीक उसके पाँवों तक गई। यीशु के पाँव खुले होने का कारण यह था कि वह एक नीची मेज पर अपनी बाईं कोहनी पर झुका हुआ था।

यह यूहन्ना के दोहरे अर्थों में से एक है। यह मसाला दफनाने के लिए एक शरीर को तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था (तुलना यूहन्ना 19:40)। मरियम ने चेलों की तुलना में उसकी सन्निकट मृत्यु के बारे में यीशु के संदेश को अधिक समझा होगा (तुलना यूहन्ना 12:7)। विशेष विषय: बाइबल में अभिषेक (BDB 603) 11:2 पर देखें।

▣ **"और इत्र की सुगंध घर सुगन्धित हो गया"** क्या चित्रात्मक प्रत्यक्षदर्शी (संपादकीय)वृत्तान्त।यूहन्ना स्पष्ट रूप से उस क्षण को याद करता है!

12:4 "यहूदा इस्करियोती" शब्द "इस्करियोती" में दो संभव व्युत्पत्ति हैं: (1) यहूदा का एक शहर (करिय्योथेस्रोन तुलना यहोशू 15:25) या (2) "हत्यारे के चाकू" के लिए शब्द। सुसमाचार के लेखकों में से, यूहन्ना में यहूदा के बारे में सबसे कठोर कथन हैं (तुलना यूहन्ना 12:6)। यूहन्ना 6:70-71पर पूर्ण टिप्पणी देखें।

▣ **"विश्वासघात (उसे पकड़वाने पर था)"** यह एक और संपादकीय टिप्पणी है। सामान्य रूप से यह शब्द इस अर्थ में नहीं है। इसका अक्षरशः अर्थ है "सौंपना" या "पहुँचाना" न्यायिक अर्थों में या किसी चीज़ को दूसरे को सौंपना। यूहन्ना 18:2 पर टिप्पणी देखें।

12:5 "तीन सौ दीनार" एक दीनार एक सैनिक और एक मजदूर के लिए एक दिन की मजदूरी थी, इसलिए, यह लगभग एक साल का वेतन था।

12:6 यह पद एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है। यूहन्ना, किसी भी अन्य सुसमाचार से अधिक, यहूदा की निंदा करता है।

NASB, NKJV "पैसों का बक्सा"
NRSV "आम बटुआ"
TEV "पैसों की थैली"
NJB "आम पूँजी"

इस शब्द का अर्थ है "एक छोटा बक्सा।" यह मूल रूप से संगीतकारों द्वारा उनके मुख वाद्ययंत्रों को ले जाने के लिए उपयोग किया जाता था।

▣ **"उसमें जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था"** यूनानी शब्द है "उठाना।" इसका प्रयोग दो अलग-अलग अर्थों में किया जाता है: (1) वह बक्से को उठाता था लेकिन (2) वह बक्से की सामग्री को भी उठा लेता था। यह कथन यह दिखाने के लिए कि यूहन्ना 12: 5 में कंगालों के लिए यहूदा की चिंता वास्तव में खुद के लिए चोरी करने का एक बहाना है।

12:7 यह एक अजीब पद है। यह स्पष्ट रूप से उदारता और भक्ति के इस कृत्य को किसी के दफन पर की जानेवाली एक समान प्रक्रिया से जोड़ता है (तुलना यूहन्ना 19:40)। यह यूहन्ना के भविष्यद्वाणी के कथन का एक और उदाहरण है।

12:8 "क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं" यह व्यवस्थाविवरण 15:4,11से संबंधित है। यह कंगालों के बारे में अपमानजनक टिप्पणी नहीं है लेकिन यीशु के मसीहा की उपस्थिति पर जोर दिया गया है (तुलना यूहन्ना 12:35; 7:33; 9: 4)। पुराना नियम प्राचीन निकट पूर्वी साहित्य में कंगालों के अधिकार और आज्ञापित देखभाल के लिए अद्वितीय है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 12:9-11
[9]जब यहूदियों की बड़ी भीड़ जान गई कि वह वहाँ है, तो वे न केवल यीशु के कारण आए, परन्तु इसलिये भी कि लाज़र को देखें, जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया था। [10]तब प्रधान याजकों ने लाज़र को मार डालने का षड्यंत्र रचा। [11]क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए और यीशु पर विश्वास किया।

12:9 "जब यहूदियों की बड़ी भीड़ जान गई कि वह वहाँ है" यूहन्ना में यह "यहूदियों" का एक असामान्य प्रयोग है। आमतौर पर यह यीशु के विरोध में धार्मिक अगुवों को संदर्भित करता है। हालाँकि, यूहन्ना 11:19, 45; 12:17 में, यह यरूशलेम के उन नगरवासियों को संदर्भित करता है जो लाज़र के दोस्त थे और उसके दफ़न पर आए थे।

12:10 "प्रधान याजकों ने लाज़र को भी मार डालने का षड्यंत्र रचा" वे सबूत मिटाना चाहते थे! उनके इरादे डर (तुलना यूहन्ना 11:48) और ईर्ष्या (तुलना यूहन्ना 11:48; 12:11) थे।
उन्होंने सोचा होगा कि यीशु का जिलाए जाने का कार्य एक अकेली , दुर्लभ घटना थी। इन यहूदी अगुवों का अंधापन और पक्षपात पतित मानवता के अंधकार को प्रतिबिंबित करते हैं ।

12:11 यह 11:45 तक संबंधित है। विशेष विषय:यूहन्ना का क्रिया "विश्वास" का प्रयोग यूहन्ना 2:23 पर देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 12:12-19
[12]दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे, यह सुना कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है। [13]इसलिये उन्होंने खजूर की डालियाँ लीं और उससे भेंट करने को निकले, और पुकारने लगे, "होशाना! धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।" [14]जब यीशु को गदहे का एक बच्चा मिला; तो वह उस पर बैठ गया, जैसा कि लिखा है,

[15]"हे सिय्योन की बेटी,मत डर; देख तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है।" [16]यह बातें उसके चेले पहले न समझे थे, परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तो उनको स्मरण आया कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं, और लोगों ने उससे इसी प्रकार व्यवहार किया था। [17]तब भीड़ के उन लोगों ने गवाही दी, जो उस समय उसके साथ थे जब उसने लाज़र को कब्र में से बुलाकर मरे हुओं में से जिलाया था। [18]इसी कारण लोग उससे भेंट करने को आए थे क्योंकि उन्होंने सुना कि उसने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है। [19]तब फरीसियों ने आपस में कहा, "सोचो तो सही कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ता। देखो, संसार उसके पीछे हो चला है।"

12:12-19 यह यरूशलेम में यीशु के विजय-प्रवेश का संस्करण है (तुलना मत्ती 21: 1-11; मरकुस 11: 1-11; लूका 19: 29-38)।

12:12 "बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे" यहूदी पुरुषों के लिए तीन पर्व के दिन अपेक्षित थे (तुलना निर्गमन 23:14-17; लैव्यव्यवस्था 23; व्यवस्थाविवरण 16:16)। पलस्तीन (यहूदियों के बिखराव) के बाहर रहने वाले यहूदियों की जीवन भर की इच्छा यरूशलेम में एक पर्व में भाग लेने की थी। इन निश्चित पर्वों के दौरान, यरूशलेम की आबादी अपनी सामान्य आबादी से तीन से पाँच गुना तक बढ़ जाती थी। यह वाक्यांश इस विशाल संख्या में जिज्ञासु तीर्थयात्रियों को संदर्भित करता है जिन्होंने यीशु के बारे में सुना और उसे देखना चाहते थे (तुलना यूहन्ना 11:56)।

12:13 "खजूर की डालियाँ" यह खजूर की डालियों के लिए एक असामान्य यूनानी वाक्यांश है। कुछ का मानना है कि एक समय में खजूर जैतून के पहाड़ (यानी, जोसेफस) की ढलान पर उगते थे, जबकि अन्य मानते हैं कि वे यरीहो से आयात किए जाते थे। वे विजय या विजयोल्लास के प्रतीक प्रतीत होते हैं (तुलना प्रकाशितवाक्य 7:9)। उनका उपयोग हर वर्ष झोपड़ियों के पर्व (तुलना लैव्यव्यवस्था 23:40) और फसह (मैकाबिया अवधि की परंपरा) के अनुष्ठान में किया जाता था।

▣ **"पुकारने लगे"** यह एक अपूर्ण काल है जो प्रतिनिधित्व करता है (1) पिछले समय में दोहराये गए कार्य का या (2) पिछले समय में एक कार्य की शुरुआत का।

▣ **"होशाना"** इस शब्द का अर्थ था "अभी बचाओ" या "कृपया बचाओ" (तुलना भजनसंहिता 118:25-26)। फसह के अनुष्ठान के दौरान हिलेल भजनों (तुलना भजनसंहिता 113-118) का पाठ होता था, जब तीर्थयात्री मंदिर की ओर बढ़ते थे। फसह के पर्व के दौरान इनमें से कई क्रियाएं और वाक्यांश हर साल दोहराए जाते थे। लेकिन इस विशेष वर्ष में उन्होंने अपना अंतिम अर्थ यीशु में पाया! भीड़ ने इसे जान लिया। फरीसियों ने इसे पहचान लिया।

▣ **"जो प्रभु के नाम से आता है"** यह ठीक वही है जो यीशु दावा करता रहा है। वह एक भेजा हुआ था! वह YHWH का प्रतिनिधित्व करता था।

NASB **"इस्राएल का राजा भी"**
NKJV, NRSV,
TEV, NJB **"इस्राएल का राजा"**

यह वाक्यांश भजन का हिस्सा नहीं था, लेकिन भीड़ द्वारा जोड़ दिया गया। यह 2 शमूएल 7 में किए गए वादे के अनुसार यीशु के लिए एक मसीहाई राजा रूप में एक प्रत्यक्ष संदर्भ प्रतीत होता है (तुलना यूहन्ना 1:49; 19:19)।

12:14 " गदहे का एक बच्चा" गदहे इस्राएल के शाही सैन्य की सवारी थे (तुलना 1 राजा 1: 33,38,44)। केवल राजा अपने गदहे पर सवारी करते थे, इसलिए, यह बहुत महत्वपूर्ण था कि यीशु एक ऐसे गदहे पर सवार हो जिसपर पहले कभी कोई भी सवार न हुआ हो (तुलना मरकुस 11: 2)।

12:14-15 "जैसा लिखा है" यह जकर्याह 9:9 का एक उद्धरण है। गदहे का बच्चा न केवल मसीहाई शासन की बल्कि विनम्रता की भी बात करता है। यीशु यहूदी उम्मीद के अनुरूप विजयी सैन्य व्यक्ति के रूप में नहीं आया था, लेकिन यशायाह 53 का पीड़ित सेवक गदहे के बच्चे पर सवार होकर।

12:16 "उसके चेले ये बातें पहले न समझे थे" यह यूहन्ना की एक और प्रत्यक्षदर्शी, दर्दनाक स्मृति है। यह एक आवर्तक विषय है (तुलना यूहन्ना 2:22; 10: 6; 16:18; मरकुस 9:32; लूका 2:50; 9:45; 18:34)। स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त के बाद ही उनकी आत्मिक आँखें पूर्ण रूप से खुल गईं।

▣ **"परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तो उनको स्मरण आया"** यह पवित्र आत्मा की सेवकाइयों में से एक था (तुलना यूहन्ना 14:26 और 2:22)।

इस पद से यह भी पता चलता है कि सुसमाचार के लेखकों ने अपने सुसमाचार को पुनर्उत्थित मसीह के व्यक्तिगत अनुभव से संरचित किया था। सिनॉप्टिक्स ऐतिहासिक विकास में यीशु को प्रस्तुत करते हैं और उनकी प्रस्तुतियों के चरमोत्कर्ष तक उसकी महिमा को छिपाते हैं, लेकिन यूहन्ना गौरवान्वित मसीहा के प्रकाश में अपना पूरा सुसमाचार लिखता है। सुसमाचार इन प्रेरित पुरुषों की बाद की यादों और विश्वास समुदाय की जरूरतों को दर्शाते हैं। इसलिए, दो ऐतिहासिक विन्यास (यीशु का और सुसमाचार लेखकों का) हैं, जो दोनों ही प्रेरित हैं।

▣ **"गौरवान्वित"** यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

12:17 विशेष विषय: यीशु के गवाह यूहन्ना 1:8 पर देखें। प्रासंगिक अंतर्दृष्टि, C देखें

12:19 "फरीसियों ने आपस में कहा" यह एक और भविष्यसूचक पूर्वाभास है। यह संबंधित है (1) यहूदियों से, यूहन्ना 11:48; 12:11 और (2) अन्यजातियों से, यूहन्ना 12:20-23। यह दो ऐतिहासिक विन्यासों को दर्शाता है: यीशु का जीवन और प्रारंभिक कलीसिया।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 12:20-26
[20]जो लोग उस पर्व में आराधना करने आए थे उनमें से कुछ यूनानी थे [21]उन्होंने गलील के बैतसैदा के रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उससे विनती की, "श्रीमान, हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।" [22]फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास से कहा, तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने जाकर यीशु से कहा। [23]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। [24]मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु यदि मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। [25]जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उसकी रक्षा करेगा। [26]यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा। "

12:20 "कुछ यूनानी" यह अन्यजातियों के अर्थ में इस्तेमाल किया गया था, न कि विशिष्ट जातीय यूनानियों के।

▣ **"जो लोग उस पर्व में आराधना करने आए थे उनमें से"** वर्तमान काल का तात्पर्य यह है कि वे पर्व में जाने के आदी थे। वे या तो (1) परमेश्वर से डरने वाले थे या (2) धर्मान्तरित व्यक्ति थे। पहले आराधनालय में नियमित उपासक थे और दूसरे आधिकारिक रूप से यहूदी विश्वास में धर्मान्तरित हो गए थे।

12:21 "उससे विनती की" यह अपूर्ण काल है जिसका अर्थ है (1) उन्होंने बार-बार पूछा या (2) वे पूछने लगे। वे यीशु के साथ एक निजी साक्षात्कार चाहते थे। जाहिर तौर पर यह यीशु की मृत्यु से पहले भविष्यसूचक घड़ी की आखिरी टिकटिक थी (तुलना यूहन्ना 12:23)।

12:22 फिलिप्पुस (घोड़ों का प्रेमी) और अन्द्रियास (मर्दाना) केवल दो ही ऐसे प्रेरित हैं जिनके यूनानी नाम हैं। शायद इसने इन यूनानियों (यानी, अन्यजातियों) को ऐसा महसूस कराया कि वे उन तक पहुँच सकते हैं।

12:23 "वह समय आ गया है" यह पूर्ण काल है। यूहन्ना ने अक्सर "समय" शब्द का प्रयोग क्रूस पर चढ़ाये जाने और पुनरुत्थान का यीशु के विशेष कार्य की चरमावस्था की घटनाओं का उल्लेख करने के लिए किया है (तुलना यूहन्ना 12:27; 13:1, 32; 17:1)। यीशु ने कहा कि वह इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास आया है (तुलना मत्ती 15:24)। अब उसका संदेश अन्यजातियों तक पहुँच रहा था!

▣ **"मनुष्य का पुत्र"** यह एक अरामी वाक्यांश है जिसका सीधा अर्थ है "इंसान" (तुलना भजनसंहिता 8: 4;यहेजकेल 2: 1)।

हालांकि, दानिय्येल 7:13 में यह देवता के अतिरिक्त लक्ष्यार्थ के साथ प्रयोग किया जाता है । यह यीशु का स्व-निर्दिष्ट नाम है जो उसके दो स्वभावों, मानवीय और दैवीय, को मिलाता है (तुलना 1 यूहन्ना 4:1-3)।

▣ **"महिमा हो"** यीशु की मृत्यु को हमेशा "उसकी महिमा" कहा जाता है। शब्द "महिमा" का प्रयोग इस संदर्भ में कई बार किया गया है (तुलना यूहन्ना 12:28 [दो बार]; 32, और 33)। इसका प्रयोग अक्सर यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता है (तुलना यूहन्ना 13:1,32; 17: 1)। यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

12:24 "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता" यह घटनात्मक भाषा या वर्णनात्मक भाषा है, चीजें जैसी पाँच इंद्रियों को दिखाई देती हैं। एक बीज कई बीज पैदा कर सकता है (तुलना यूहन्ना 15:2,4,5,8,16; 1 कुरिंथियों 15:36)। उसकी मृत्यु कई लोगों को सच्चे जीवन में ले आई (तुलना मरकुस 10:45)।

▣ **"यदि"** इस संदर्भ में तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्यों की एक श्रृंखला है जिसका अर्थ है संभावित कार्य (तुलना यूहन्ना 12:24,26,32,47)।

12:25 "जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है" यह यूनानी शब्द *psychē*, पर एक क्रीड़ा है, जो एक मानव व्यक्तित्व या जीवन शक्ति के सार को संदर्भित करता है (तुलना मत्ती 10:39; 16:24-25; मरकुस 8:34-35; लूका 9:23-24)। एक बार जब कोई मसीह पर भरोसा करता है, तो उसे नया जीवन दिया जाता है। यह नया जीवन सेवा के लिए परमेश्वर का एक उपहार है, न कि व्यक्तिगत उपयोग के लिए।विश्वासी इस नए जीवन के भण्डारी हैं। हम परमेश्वर के दास बनने के लिए पाप की गुलामी से मुक्त हो गए हैं (तुलना रोमियों 6:1-7: 6)।

अध्याय 10 के झूठे चरवाहों ने भागकर अपने जीवनों को "बचाने" का प्रयास किया। लेकिन यीशु अपना प्राण देता है, इसलिए विश्वासियों को भी ऐसा ही करना चाहिए (तुलना 2 कुरिंथियों 5:12-15; गलातियों 2:20)।

▣ **"उसे खो देता है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। शब्द (यूहन्ना 10:10 पर विशेष विषय देखें) का अर्थ है "नष्ट करना," दो लक्ष्यार्थों के साथ एक और शब्द। यह "अनंत जीवन" का विलोम है। यदि किसी को मसीह में विश्वास नहीं है, तो यह एकमात्र विकल्प है। यह विनाश सर्वनाश नहीं है, लेकिन परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध की हानि है (जो कि नरक का सार है)।

▣ **"अप्रिय जानता है"** यह तुलना का एक इब्रानी मुहावरा है। परमेश्वर प्राथमिकता होनी चाहिए (तुलना याकूब की पत्नियाँ, उत्पत्ति 29: 30,31; निर्गमन 21:36; एसाव और याकूब, मलाकी 1: 2-3; रोमियों 10-13; किसी का परिवार, लूका 14:26)।

▣ **"जीवन"** यह यूनानी शब्द *zoē* है। इसे यूहन्ना में लगातार प्रयोग किया गया है (1) आत्मिक जीवन; (2) अनन्त जीवन; (3) नए युग का जीवन; और (4) पुनरुत्थान के जीवन को संदर्भित करने के लिए। सच्चा जीवन "स्व" के अत्याचार से मुक्ति है, जो कि पतन का सार है।

12:26 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"मेरे पीछे हो ले"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है जो एक चल रहे संबंध (तुलना यूहन्ना 15) की बात करता है। यह दृढ़ता का उपेक्षित बाइबल का मुद्दा है (विशेष विषय: दृढ़ता की आवश्यकता यूहन्ना 8:31पर देखें) यह मुद्दा अक्सर एक सार्वभौमिक परमेश्वर और मानव इच्छाशक्ति के बीच धार्मिक तनाव के कारण भ्रमित होता है। हालांकि, उद्धार को एक वाचा के अनुभव के रूप में देखना सबसे अच्छा है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (तुलना यूहन्ना 6: 44,65) और कार्यसूची निश्चित है, लेकिन वह यह भी माँग करता है कि मानव जाति पश्चाताप और विश्वास के रूप में उसकी पेशकश का प्रत्युत्तर दे (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 20:21), एक प्रारंभिक निर्णय और एक आजीवन शिष्यत्व दोनों के रूप में। दृढ़ता इस बात का प्रमाण है कि हम उसे जानते हैं (तुलना मत्ती 10:22; 13: 20-21; गलातियों 6: 9; 1 यूहन्ना 2:19; प्रकाशितवाक्य 2: 7,11,17,26; 3:5,12,21)।

मसीही सिद्धांत, बाइबल आधारित होने के नाते, अक्सर लोक-विरुद्ध, तनावयुक्त जोड़े में आता है। यह आलंकारिक, विरोधाभासी विचार स्वरूप पूर्वी साहित्य की विशेषता है। अक्सर आधुनिक पाश्चात्य पाठक विरुद्ध मतों को एक/या विकल्प में स्वीकार करवाते हैं जबकि उनका अर्थ दोनों / और सत्य होना चाहिए।

अपनी टिप्पणियों की सचित्र व्याख्या करने के लिए, मैंने अपनी बाइबल व्याख्या सेमिनार का Biblical Paradoxes नामक एक भाग शामिल किया है।

बाइबल-संबंधी विरोधाभास

1. यह अंतर्दृष्टि मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से उसके समान सबसे अधिक सहायक रही है जो बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में प्यार करता और उस पर भरोसा करता है। बाइबल को गंभीरता से लेने की कोशिश में यह स्पष्ट हो गया कि अलग-अलग पाठ सत्य को व्यवस्थित तरीके से नहीं, चयनित तरीके से प्रगट करते हैं। एक प्रेरित पाठ किसी अन्य प्रेरित पाठ को रद्द या उसका अवमूल्यन नहीं कर सकता है! सत्य सम्पूर्ण शास्त्र से आता है (सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र, मात्र थोड़ा नहीं, प्रेरित है, तुलना 2 तीमुथियुस 3:16-17), एक गद्यांश (प्रूफ-टेक्सटिंग) को उद्धृत करने के द्वारा नहीं!
2. अधिकांश बाइबल सत्य (पूर्वी साहित्य) द्वंद्वात्मक या विरोधाभासी जोड़ों में प्रस्तुत किए गए हैं (याद रखें, नये नियम के लेखक, लूका के अलावा, सामान्य यूनानी में लिखनेवाले इब्रानी विचारक हैं)। बुद्धि साहित्य और काव्य साहित्य, सत्य को समानांतर रूप से प्रस्तुत करते हैं। प्रतिपक्षी समानांतरता विरोधाभास की तरह काम करती है। यह कृत्रिम समानांतरता समानांतर गद्यांशों की तरह काम करती है। किसी न किसी तरह दोनों समान रूप से सत्य हैं! ये विरोधाभास हमारी पोषित, सरल परंपराओं के लिए दर्दनाक हैं!
   a. पूर्वनियति बनाम मानव की स्वतंत्र इच्छा
   b. विश्वासी की सुरक्षा बनाम दृढ़ता की आवश्यकता
   c. मूल पाप बनाम स्वेच्छिक पाप
   d. यीशु परमेश्वर के रूप में बनाम यीशु मनुष्य के रूप में
   e. यीशु पिता की समानता में बनाम यीशु पिता की अधीनता में
   f. बाइबल परमेश्वर के वचन के रूप में बनाम मानव लेखकत्व के रूप में
   g. निष्कलंकता (पूर्णतावाद, तुलना रोमियों 6) बनाम कम पाप करना
   h. प्रारंभिक तात्कालिक दोषमुक्ति और पवित्रीकरण बनाम प्रगतिशील पवित्रीकरण
   i. विश्वास द्वारा दोषमुक्ति (रोमियों 4) बनाम कार्यों के द्वारा दोषमुक्ति की पुष्टि (तुलना याकूब 2:14-26)
   j. मसीही स्वतंत्रता (तुलना रोमियों 14:1-23; 1 कुरिंथियों 8:1-13; 10: 23-33) बनाम मसीही ज़िम्मेदारी (तुलना गलातियों 5:16-21; इफिसियों 4:1)
   k. परमेश्वर की श्रेष्ठता बनाम उसकी स्थिरता
   l. परमेश्वर अंततः अज्ञात के रूप में बनाम शास्त्र और मसीह में ज्ञेय के रूप में। उद्धार के लिए पौलुस के अनेक रूपक
      (1) अंगीकार
      (2) पवित्रीकरण
      (3) दोषमुक्ति
      (4) छुटकारा
      (5) महिमामंडन
      (5) पूर्व नियति
      (6) मेल-मिलाप
   m. परमेश्वर का राज्य वर्तमान में बनाम भविष्य में संपूर्णता
   n. पश्चाताप परमेश्वर के उपहार के रूप में बनाम पश्चाताप उद्धार के लिए एक अनिवार्य प्रतिक्रिया के रूप में (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 20:21)
   o. पुराना नियम स्थायी है बनाम पुराना नियम बीत चुका है और अमान्य है (तुलना मत्ती 5:17-19 बनाम मत्ती 5: 21-48; रोमियों 7 बनाम गलातियों 3)
   p. विश्वासी सेवक / दास या बच्चे / उत्तराधिकारी" हैं

▣ **"जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा"** यह विषयवस्तु यूहन्ना 14:3; 17:24; 2 कुरिंथियों 5:8; फिलिप्पियों 1:23; 1थिस्सलुनीकियों में दोहराई गई है! मसीहयत मुख्य रूप से परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध है! लक्ष्य संबंधपरक है: उसकी उपस्थिति, उसकी संगति!

हम परमेश्वर के साथ संगति के लिए बनाए गए थे (तुलना उत्पत्ति 1:26-27)। उद्धार अदन की वाटिका की टूटी हुई संगति की बहाली है। यूहन्ना ने जोर देकर कहा कि इस संगति को अब बहाल कर दिया गया है!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 12:27-36a

[27]"अब मेरा जी व्याकुल है। इसलिये अब मैं क्या कहूँ? 'हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा'? नहीं, क्योंकि मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ। [28]हे पिता,अपने नाम की महिमा कर।" तब यह आकाशवाणी हुई:" मैंने उसकी महिमा की है, और फ भी करूँगा।" [29]तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे उन्होंने कहा कि बादल गरजा।दूसरों ने कहा, "कोई स्वर्गदूत उससे बोला।" [30]इस पर यीशु ने कहा, "यह शब्द मेरे लिए नहीं, परन्तु तुम्हारे लिए आया है। [31]अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा। [32]और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास को अपने आप खीचूँगा।" [33]ऐसा कहकर उसने यह प्रगट कर दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा। [34]इस पर लोगों ने उससे कहा," हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है कि मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है'? यह मनुष्य का पुत्र कौन है?" [35]यीशु ने उनसे कहा,"ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है। जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो, ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अंधकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है। [36]जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो ताकि तुम ज्योति की संतान बनो।"

12:27 "मेरा जी व्याकुल है" यह एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है। अभिकर्ता (पिता, शैतान, परिस्थितियाँ, आदि) ।) व्यक्त नहीं किया गया है। यह नये नियम में कई प्रकारों से इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रबल शब्द है।

a. हेरोदेस का डर (मत्ती 2:3)
b. चेलों का डर (मत्ती 14:26)
c. यीशु की अशांत व्याकुलता (यूहन्ना 12:27; 13:21; मत्ती 26:38; मरकुस 14:34 पर भी ध्यान दें)
d. यरूशलेम की कलीसिया (प्रेरितों के काम 15:24)
e. गलातिया की कलीसियाओं में झूठे उपदेशकों का व्यवधान (गलातियों 1: 7)

यीशु के मानव संघर्ष को उसके क्रूसित किए जाने के आनेवाले मानसिक आघात से जोड़ने का यह यूहन्ना का तरीका था (तुलना मरकुस 14:32ff)। यूहन्ना गतसमनी में यीशु की पीड़ा को दर्ज नहीं करता है, लेकिन यह वही अवसर है।

▣ **"मुझे इस घड़ी से बचा"** इस कथन के सटीक अर्थ के बारे में बहुत चर्चा है। क्या यह प्रार्थना है (यानी, मत्ती 26:39)? क्या जो नहीं किया जाना चाहिए था उस पर यह एक आश्चर्य की प्रतिक्रिया है (NET बाइबल)?

▣ **"क्योंकि मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ"** यीशु का जीवन एक दिव्य योजना (तुलना लूका 22:22; प्रेरितों के काम 2:23; 3:18; 4:28) के अनुसार सामने आया, जिसे यीशु ने पूर्ण रूप से समझ लिया (तुलना मत्ती 20:28; मरकुस 10:45)।

12:28 "अपने नाम की महिमा कर" यूहन्ना 12:28b में पिता ने उत्तर दिया। यह शब्द "महिमा" बहुत अस्थिर है। यह इंगित कर सकता है

1. पूर्व-विद्यमान महिमा को (तुलना यूहन्ना 17:5)
2. यीशु द्वारा पिता के प्रकटीकरण को (तुलना यूहन्ना 17:4)
3. यीशु का क्रूस और पुनरुत्थान को (तुलना यूहन्ना 17:1)

यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"यह आकाशवाणी हुई"** रब्बियों ने इसे *bath-kol* कहा।मलाकी के समय के बाद से इस्राएल में कोई भविष्यवाणी नहीं की गई थी। यदि परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि की जानी होती थी, तो वह आकाशवाणी द्वारा की जाती थी। सुसमाचारों में दर्ज किया गया है कि यीशु के जीवनकाल के दौरान परमेश्वर ने तीन बार बात की थी।

1. यीशु के बपतिस्मे पर, मत्ती 3:17
2. रूपांतरण पर, मत्ती 17:5
3. यहाँ इस पद में

12:29 "तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे उन्होंने कहा कि बादल गरजा" जो हुआ उसकी दो व्याख्याएँ हैं: (1) यह गड़गड़ाहट थी। यह पुराने नियम में परमेश्वर के बोलने के लिए प्रयोग किया गया है (तुलना 2 शमूएल 22:14; अय्यूब 37:4; भजनसंहिता 29:3; 18:13; 104:7) या (2) एक स्वर्गदूत ने उससे बात की। यह प्रेरितों के काम 9:7;22:9 में शाऊल के अनुभव के बारे में भ्रम के समान है।

12:30 "इस पर यीशु ने कहा, 'यह शब्द मेरे लिए नहीं, परन्तु तुम्हारे लिए आया है'" यह वाक्यांश एक सामी तुलना है। इसका मतलब है कि यह केवल उनके लिए नहीं था बल्कि मुख्य रूप से उनके लिए था (तुलना यूहन्ना 11:42)।

12:31 "अब इस संसार का न्याय होता है" यह आगे आने वाले वाक्यांश के साथ एक समानांतर संरचना है ("अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा ")। जिस समय यह हुआ है वह निर्दिष्ट नहीं है (आगामी विशेष विषय को देखें)।

मैं निश्चित रूप से F.F. Bruce, *Answers to Questions* (p. 198) से सहमत हूँ कि यूहन्ना 12:31 इस बात का एक और उदाहरण है जिसे C. H. Dodd ने "सिद्ध युगांत विषयक ज्ञान"कहा है। यूहन्ना के लिए, यीशु पहले ही विश्वासियों के लिए उद्धार और अविश्वासियों के लिए न्याय दोनों लाया है। एक अर्थ में यह एक व्याकरणिक रूप के समान है जिसे "भविष्यवाणी परिपूर्ण" कहा जाता है। एक भविष्य कुछ इतना निश्चित है कि यह पहले से ही होने के रूप में व्यक्त किया गया है!

▣ **"इस संसार का सरदार"** यह इब्रानी में "शैतान" या "विरोधी" कहलाने वाली एक व्यक्तिगत दुष्ट शक्ति (तुलना यूहन्ना 14:30; 16:11 (तुलना अय्यूब 1-2) या यूनानी में "शैतान" या "निंदक" (तुलना मत्ती 4:1,5,8,11; 13:25; 25:41; यूहन्ना 6:70; 8:44; 13:2; 2 कुरिंथियों 4: 4 ; इफिसियों 2: 2) को संदर्भित करता है। ये दो नाम यूहन्ना 4:1-11 और यूहन्ना 13: 2,27 में पर्यायवाची हैं। उसे स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया है ताकि वह यीशु के अनुयायियों पर आरोप / उनकी निंदा न कर सके।

विशेष विषय: व्यक्तिगत दुष्टता (SPECIAL TOPIC: PERSONAL EVIL)

I. शैतान एक बहुत ही कठिन विषय है:
   A. पुराना नियम अच्छाई (परमेश्वर) के लिए एक कुटिल दुश्मन को प्रकट नहीं करता है, लेकिन YHWH का एक दास जो मानव जाति को एक विकल्प प्रदान करता है और मानव जाति पर अधार्मिकता का आरोप लगाता है (A.B.Davidson, *A Theology of the OT*, pp. 300-306)।
   B. अंतर-बाइबल (गैर-धर्मवैधानिक) साहित्य मे एक व्यक्तिगत कुटिल दुश्मन की अवधारणा फ़ारसी धर्म (*Zoroastrianism*) के प्रभाव में विकसित हुई। यह, बदले में, रब्बियों के यहूदी धर्म (यानी फारस,बेबीलोन में इस्राएल के निर्वासन) को बहुत प्रभावित करता है।
   C. नया नियम आश्चर्यजनक,लेकिन चयनात्मक,श्रेणियों में पुराने नियम के विषयों को विकसित करता है।

अगर कोई दुष्टता का अध्ययन बाइबल के धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण (प्रत्येक पुस्तक या लेखक या शैली का अध्ययन और अलग से रेखांकित किया गया) के माध्यम से करता है फिर दुष्टता के बहुत अलग विचार सामने आते हैं।

यदि, हालांकि, यदि कोई एक गैर-बाइबल या दुनिया या पूर्वी धर्मों के अतिरिक्त-बाइबल दृष्टिकोण के माध्यम से दुष्टता का अध्ययन करता है तो नए नियम का अधिकांश विकास फारसी द्वैतवाद और ग्रीको-रोमन आध्यात्मवाद में पूर्वभासित होता है।

यदि कोई पूर्वधारणा द्वारा पवित्रशास्त्र के दैवीय अधिकार के लिए प्रतिबद्ध है, तो नए नियम का विकास प्रगतिशील प्रकटीकरण के रूप में देखा जाना चाहिए। मसीहियों को यहूदी लोक विद्या या अंग्रेजी साहित्य (डेंटे, मिल्टन) को अवधारणा को और स्पष्ट करने के लिए अनुमति देने से रोकना चाहिए। निश्चित रूप से प्रकटीकरण के इस क्षेत्र में रहस्य और अस्पष्टता है। परमेश्वर ने दुष्टता के सभी पहलुओं, उसकी उत्पत्ति, उसके उद्देश्य को प्रकट करने को नहीं चुना है, लेकिन उसने उसकी हार को प्रकट किया है

II. पुराने नियम में शैतान

पुराने नियम में शब्द "शैतान" (BDB 966, KB 1317) या "अभियुक्त" तीन अलग-अलग समूहों से संबंधित प्रतीत होता है:
   A. मानव अभियुक्त – (1 शमूएल 29:4; 2 शमूएल 19:22; 1 राजा 5:4; 11:14,23,25; भजनसंहिता 109:6,20,29)
   B. स्वर्गदूतीय अभियुक्त – (गिनती 22:22-23; जकर्याह 3:1)
      1. परमेश्वर का स्वर्गदूत- गिनती 22:22-23
      2. शैतान - 1इतिहास 21:1; अय्यूब 1- 2; जकर्याह 3:1
   C. राक्षसी अभियुक्त (संभवतः शैतान) (1 राजा 22:21; जकर्याह 13:2)

केवल बाद के अंतर-परीक्षण काल मे उत्पत्ति 3 के सर्प को शैतान के रूप में पहचाना जाता है (cf. Book of Wisdom 2:23-24; 2 Enoch 31:3), और बाद में भी यह एक रब्बियों का विकल्प बन जाता है (तुलना *Sot* 9b और *Sanh.* 29a)। उत्पत्ति 6 के "परमेश्वर के पुत्र" 1 हनोक 54:6 में स्वर्गदूत बन गए।वे रब्बियों के धर्मशास्त्र में दुष्टता का मूल स्रोत बन गए। मैं इसका उल्लेख इसकी धार्मिक सटीकता पर जोर देने के लिए नहीं, लेकिन इसके विकास को दिखाने के

लिए करता हूँ। नए नियम में इन पुराने नियम की गतिविधियों का जिम्मेदार स्वर्गदूतों की साक्षात दुष्टता(यानी शैतान) को ठहराया जाता है। (तुलना 2 कुरिन्थियों 11:3; प्रकाशितवाक्य 12: 9)।

पुराने नियम से साक्षात दुष्टता की उत्पत्ति (आपके दृष्टिकोण के आधार पर) निर्धारित करना कठिन या असंभव है । इसका एक कारण इस्राएल का मजबूत एकेश्वरवाद है (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:4 -6; 1 राजा 22:20-22; सभोपदेशक 7:14; यशायाह 45:7; आमोस 3:6)। सभी कारणकार्य-संबंधों को उसकी विशिष्टता और प्रधानता प्रदर्शित करने के लिए YHWH को जिम्मेदार ठहराया गया था।(तुलना यशायाह 43:11; 44:6,8,24; 45:5-6,14,18,21,22)।

संभावित जानकारी का एक मार्ग ध्यान केंद्रित करता है (1) अय्यूब 1-2 जहाँ शैतान "परमेश्वर के पुत्रों" (अर्थात स्वर्गदूत) में से एक है। या (2) यशायाह 14; यहेजकेल 28 जहाँ गर्विष्ठ निकटपूर्वी राजाओं (बाबुल और सोर) का उपयोग शैतान के गर्व का वर्णन करने के लिए किया जाता है (तुलना 1 तीमुथियुस 3:6)।

इस दृष्टिकोण के बारे में मेरी मिश्रित भावनाएँ हैं। यहेजकेल न केवल सोर के राजा के लिए अदन की वाटिका के रूपकों का उपयोग शैतान के रूप में करता है(तुलना यहेजकेल 28:12-16), लेकिन मिस्र के राजा के लिए भी भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ के रुप में करता है।(यहेजकेल 31) हालांकि यशायाह 14, विशेष रूप से वचन 12-14, गर्व के माध्यम से एक स्वर्गदूतों के विद्रोह का वर्णन करता हुआ दिखाई देता है। यदि परमेश्वर ने हमें शैतान की विशिष्ट प्रकृति और उत्पत्ति को प्रकट करना चाहता था तो ऐसा करने के लिए यह एक बहुत ही टेढ़ा तरीका और स्थान है।(विशेष विषय : लुसिफर देखें) हमें विभिन्न नियमों, लेखकों, पुस्तकों और शैलियों के छोटे, अस्पष्ट भागों को लेने और उन्हें एक दिव्य पहेली के टुकड़ों के रूप में संयोजित करने की सुव्यवस्थित धर्मशास्त्रीय प्रवृत्ति के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए।

III. नए नियम में शैतान

Alfred Edersheim अपनी *The Life and Times of Jesus the Messiah*, vol.2, appendices XIII(pp.748-763) and XVI (pp.770-776) में कहते है कि रब्बियों का यहूदी धर्म फारसी द्वैतवाद और राक्षसी अटकलों से अत्यधिक प्रभावित है। रब्बी इस क्षेत्र में सच्चाई के लिए एक अच्छा स्रोत नहीं हैं। यीशु मूलतः
इस क्षेत्र में आराधनालय की शिक्षाओं से भिन्नता रखतें हैं। मुझे लगता है कि स्वर्गदूतों की मध्यस्थता (तुलना प्रेरितों के काम 7:53) की रब्बियों की अवधारणा और सीनै पर्वत पर मूसा को कानून देने के विरोध ने YHWH के साथ-साथ मानव जाति के विरोध में एक प्रधान देवदूत की अवधारणा का दरवाजा खोला।
ईरानी द्वैतवाद (पारसी धर्म) के दो उच्च देवता हैं

1. *Ahura Mazda*, बाद में *Ohrmazd* कहलाया, जो सृष्टिकर्ता परमेश्वर था, एक अच्छा परमेश्वर
2. *Angra Mainyu*, बाद में *Ahriman* कहलाया, नष्ट करने वाली आत्मा, एक दुष्ट परमेश्वर

पृथ्वी को युद्ध का मैदान बनाये वर्चस्व के लिए जूझ रहे थे। इस संघर्ष से यहूदी धर्म के भीतर YHWH और शैतान के बीच एक द्वैतवाद विकसित हो गया होगा।

नए नियम के पास निश्चित रूप से प्रगतिशील प्रकटीकरण है जैसा कि दुष्टता का व्यक्तीकरण है, लेकिन रब्बियों के जैसा विस्तृत नहीं। इस अंतर का एक अच्छा उदाहरण है "स्वर्ग में युद्ध।" शैतान (राक्षस) का पतन एक तार्किक आवश्यकता है, लेकिन सुनिश्चित वर्णन नहीं दिया गया है।(विशेष विषय: शैतान और उसके स्वर्गदूतों का पतन, देखें) यहाँ तक कि जो दिया गया है, वह भविष्यसूचक शैली में छिपा हुआ है (तुलना प्रकाशितवाक्य 12:4,7,12-13)। हालाँकि शैतान को पराजित किया गया और धरती पर निर्वासित किया गया, फिर भी वह YHWH के एक सेवक के रूप में काम करता है। (तुलना मत्ती 4:1; लूका 22:31-32 1 कुरिन्थियों 5:5; 1 तीमुथियुस 1:20)।

हमें इस क्षेत्र में अपनी जिज्ञासा पर अंकुश लगाना चाहिए। प्रलोभन और दुष्टता का एक व्यक्तिगत बल है, लेकिन वहाँ अभी भी केवल एक ही परमेश्वर है और मानव जाति अभी भी उसके चुनावों के लिए जिम्मेदार है। उद्धार से पहले और बाद, दोनों में एक आध्यात्मिक लड़ाई है, विजय केवल एक त्रिएक परमेश्वर के द्वारा ही आकर रह सकती है। दुष्टता को हरा दिया गया है और हटा दिया जाएगा (तुलना प्रकाशितवाक्य 20:10)!

▣ **"निकाल दिया जाएगा"** यह एक भविष्यकालिक कर्मवाच्य निर्देशात्मक है।पवित्रशास्त्र स्वर्ग से शैतान के गिराए जाने के सही समय का संकेत नहीं देता है। यशायाह 14 और यहेजकेल 28 में शैतान की चर्चा एक गौण अर्थ में की जा सकती है। भविष्यवाणी संबंधी अवतरण बाबुल और सोर के अहंकारी राजाओं के विषय में बताते हैं। उनकी पापपूर्ण उदंडता शैतान के स्वभाव को प्रतिबिंबित करती है (तुलना यशायाह 14: 12,15; यहेजकेल 28:16)। हालाँकि, यीशु ने कहा कि उसने सत्तर की मिशन यात्रा के दौरान शैतान के पतन को देखा (तुलना लूका 10:18)।

सम्पूर्ण पुराने नियम के दौरान शैतान का विकास होता है। मूलतः वह एक सेवक स्वर्गदूत था, लेकिन गर्व के माध्यम से, परमेश्वर का शत्रु बन गया। इस विवादास्पद विषय की सबसे अच्छी चर्चा A. B. Davidson's *Old Testament Theology* pp. 300-306 में है।

विशेष विषय: स्वर्ग में लड़ाई (SPECIAL TOPIC: WAR IN HEAVEN)

इस टकराव की तारीख के विषय में बहुत चर्चा हुई है। यीशु ने लूका 10:18 और यूहन्ना 12:31 में इसका उल्लेख किया है। लेकिन घटना के लिए कालानुक्रमिक तिथि निर्धारण की कोशिश करना अत्यधिक कठिन है:

1. उत्पत्ति 1:1 से पहले (सृजन से पहले)
2. उत्पत्ति 1:1 और 1:2 के बीच (अंतर सिद्धांत)
3. पुराने नियम में अय्यूब 1-2 के बाद (स्वर्ग में शैतान)
4. पुराने नियम में 1 राजाओं 22:21 (स्वर्गीय महासभा में शैतान)
5. पुराने नियम में जकर्याह 3 के बाद (स्वर्ग में शैतान)
6. पुराने नियम में जैसा कि यशायाह 14:12; यहेजकेल 28:15 और II हनोक 29:4-5 (पूर्व के राजाओं ने निंदा की)
7. नये नियम में यीशु की परीक्षा के बाद (तुलना मत्ती 4)
8. नये नियम में सत्तर के मिशन के दौरान (स्वर्ग से शैतान को गिरा हुआ देखा, तुलना लूका 10:18)
9. नये नियम में यरूशलेम में विजयी प्रवेश के बाद (इस संसार के सरदार को निकाल दिया, तुलना यूहन्ना 12:31)
10. नये नियम में यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद (तुलना इफिसियों 4:8; कुलुस्सियों 2:15)
11. अंत समय पर (तुलना प्रकाशितवाक्य 12:7, संभवत: जैसे शैतान ने बच्चे की तलाश में स्वर्ग पर धावा बोल दिया)

हमें बस इसे परमेश्वर और बुराई की सेना के बीच की अनन्त लड़ाई के रूप में देखना चाहिए; यह संघर्ष अजगर और उसकी सेना की पूर्ण पराजय में समाप्त होने वाला है। प्रकाशितवाक्य 20 में उन्हें हटाया और अलग कर दिया गया! विशेष विषय: शैतान और उसके स्वर्गदूतों का पतन (प्रकाशितवाक्य 12:4) देखें।

12:32 "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा" तो यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ संभावित कार्य है। इस शब्द का अर्थ हो सकता है

1. ऊँचे पर चढ़ाया जाना (तुलना यूहन्ना 3:14)
2. क्रूस पर चढ़ाया जाना (तुलना यूहन्ना 8:28)
3. गौरवान्वित किया जाना (तुलना प्रेरितों के काम 2:33; 5:31)
4. अति महान किया जाना (तुलना फिलिप्पियों 2: 9)

यह शब्दों के अनेक लक्ष्यार्थ(दोहरे अर्थ) यूहन्ना के सुसमाचार की विशेषता है।

▣ **"तो सब को अपने पास खीचूँगा"** यह यिर्मयाह 31:3 में इस्राएल के लिए YHWH के वाचा के प्रेम के लिए एक संकेत हो सकता है,जो निश्चित रूप से, "नई वाचा" पर अवतरण है (तुलना यिर्मयाह 31:31-34)। परमेश्वर लोगों को उनके प्रति प्रेम और उनके प्रति कार्यों द्वारा लुभाता है। इस शब्द का वही रूपक उपयोग यूहन्ना 6:44 में है और यूहन्ना 6:65 में समझाया गया है।

यहाँ "सब को" छुटकारे का सार्वभौमिक निमंत्रण और वादा है (तुलना उत्पत्ति 3:15; 12:1; निर्गमन 19: 5; यशायाह 2:2-4; यूहन्ना 1: 9,12,29; 3:16; 4:42; 10:16; 1 तीमुथियुस 2: 4; 4:10; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3: 9; 1 यूहन्ना 2:2; 4:14)!

इस वाक्यांश में एक महत्वपूर्ण प्रकार है। "सब" पुल्लिंग हो सकता है, जिसका अनुवाद "सब पुरुष" होगा और यह प्राचीन यूनानी पांडुलिपियों $P^{75\ (VID)}$, $\aleph^2$, B, L, और W में पाया जाता है, जबकि नपुंसकलिंग, जिसका अनुवाद "सब वस्तुएँ" किया जाएगा, "P^{66} और ℵ में पाया जाता है। यदि यह नपुंसकलिंग है तो यह कुलुस्सियों 1:16-17 के समान मसीह के लौकिक छुटकारे की बात करेगा, जो संभवतः 1यूहन्ना में ज्ञानवादी मतान्तर को दर्शाएगा। UBS^4 पुल्लिंग को "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है।

12:33 "ऐसा कहकर उसने यह प्रगट कर दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा" यह यूहन्ना द्वारा एक और संपादकीय टिप्पणी है। यह व्यवस्थाविवरण 21:23 से संबंधित है जहाँ एक पेड़ पर लटकाना "परमेश्वर द्वारा शापित" करार दिया जाता था। यही कारण था कि धर्मगुरु चाहते थे कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए, न कि उसे पत्थरवाह किया जाए। यीशु ने हमारे लिए नियम के अभिशाप को सह लिया (तुलना गलातियों 3:13)।

12:34 "इस पर लोगों ने उससे कहा. . .मसीह सर्वदा रहेगा" यह भजनसंहिता 89:4,29,35-37 के लिए एक संकेत हो सकता है। पुराने नियम को मसीहा के केवल एक बार आने और विश्व शांति के एक फिलिस्तीनी शासन की स्थापना की उम्मीद थी (तुलना भजनसंहिता 110: 4; यशायाह 9: 7; यहेजकेल 37:25 और दानिय्येल 7:14)। "सर्वदा" के लिए यूहन्ना 6:58 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"मनुष्य का पुत्र"** भीड़ (प्रासंगिक अंतर्दृष्टि, C देखें) ने यीशु को सिखाते / उपदेश देते (संभवतः यूहन्ना 12:23-24 में नाम के लिए और यूहन्ना 12: 30-32 में क्रिया "ऊँचा चढ़ाना") सुना होगा क्योंकि वे उसके अद्वितीय स्व-पदनाम का प्रयोग करते हैं। यह एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ इसका प्रयोग दूसरों द्वारा किया गया है। यह यहूदी धर्म के भीतर एक मानक नाम या मसीहाई पदनाम नहीं था।

12:35 "जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो" यीशु अपने श्रोताओं से उसके शब्दों का तुरंत जवाब देने का आग्रह कर रहा है। पृथ्वी पर उसका समय सीमित था। वह पृथ्वी पर अपने अंतिम सप्ताह में प्रवेश करने वाला था। उसका पूर्वनियत समय आ गया था (यूहन्ना 12:23)।

एक अर्थ में इस वाक्यांश (इतना ही यूहन्ना में)का एक ऐतिहासिक प्रसंगार्थ और एक अस्तित्वगत प्रसंगार्थ है। यीशु ने जो कहा वह उन सभी के लिए सच है जो सुसमाचार सुनते हैं (यानी, भूमि का दृष्टांत)।

यह "चलना" जीवन शैली के लिए एक उपमा के रूप में प्रयोग है। (तुलना इफिसियों 4:1,17; 5:2,15)। यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है, जो यीशु के एक निरंतर रिश्ते और शिष्यत्व के रूप में विश्वास पर जोर देता है, न कि केवल एक प्रारंभिक निर्णय पर (तुलना यूहन्ना 12:44-46)।

12:36 जगत की ज्योति के रूप में यीशु यह विषयवस्तु यूहन्ना में एक प्रमुख आवर्तक ज़ोर था (तुलना यूहन्ना 1:4,7,7,8,9; 3:19,20,21; 5:35; 8:12; 9:5; 11:9,10; 12:35,36,46)। अंधकार और ज्योति भी यहूदी बुद्धि साहित्य और मृत सागर चीरकों में विरोधाभासी आत्मिक वास्तविकताएँ थे।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 12:36b-43
[36b]ये बातें कहकर यीशु चला गया और उनसे छिपा रहा। [37]उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। [38]ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उसने कहा: "हे प्रभु, हमारे समाचार का किसने विश्वास किया है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ है?" [39]इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है, [40]"उसने उनकी आँखें अंधी और उनका मन कठोर कर दिया है; कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।" [41]यशायाह ने ये बातें इसलिए कहीं कि उसने उसकी महिमा देखी, और उसने उसके विषय में बातें की। [42]तौभी अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, कहीं ऐसा न हो कि वे आराधनालय में से निकले जाएँ; [43]क्योंकि मनुष्यों की ओर से प्रशंसा उनको परमेश्वर की ओर से प्रशंसा की अपेक्षा अधिक प्रिय लगती थी।

12:37 क्या दुखद टिप्पणी है। आत्मिक अंधापन भयानक है (तुलना 2 कुरिन्थियों 4:4)। यह पद अक्षम्य पाप की विशेषता बताता है (यूहन्ना 5:21 पर विशेष विषय को देखें)।

12:38 "यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन" यह यशायाह 53:1 के पीड़ित दास के अवतरण से है।

12:39-40 ये कठिन पद हैं। क्या परमेश्वर लोगों को कठोर बनाता है ताकि वे प्रतिक्रिया न दे सकें? मैंने यशायाह 6:9-10 और रोमियों 11:7 से अपनी टिप्पणियाँ सम्मिलित की हैं (www.freebiblecommentary.mobi देखें)।

> **यशायाह 6:9-10** जैसा कि YHWH ने यशायाह की सेवकाई के लिए अपने उद्देश्य को प्रकट किया है, वह यशायाह को यहूदा पर उसके संदेश की प्रतिक्रिया भी बताता है।
>
> 1. जा, यशायाह 6: 9, BDB 229, KB, *Qal* आज्ञार्थक
> 2. कह, यशायाह 6:9, BDB 55, KB, *Qal* पूर्ण
> 3. सुनते ही रहो, यशायाह 6:9, *Qal* आज्ञार्थक और *Qal* पूर्ण क्रियार्थक BDB 1033, KB 1570 का

4. परन्तु न समझो, यशायाह 6:9, BDB 106, KB 122, *Qal* अपूर्ण का प्रयोग एक निर्देशवाचक अर्थ में किया गया है, तुलना यशायाह 1: 3; 5:21; 10:13,29:14
5. देखते ही रहो, BDB 906, KB 1157 का *Qal* आज्ञार्थक और *Qal* पूर्ण क्रियार्थक
6. परन्तु न बूझो, यशायाह 6:9, BDB 393, KB 380,एक निर्देशवाचक अर्थ में प्रयोग किया गया *Qal* अपूर्ण
7. तू इन लोगों के मन को असंवेदनशील कर (अक्षरशः"मोटा"), यशायाह 6:10,BDB 1031, KB 1566, *Hiphil* आज्ञार्थक
8. उनके कानों को भारी कर, यशायाह 6:10, BDB 457, KB 455, *Hiphil* आज्ञार्थक
9. और उनकी आँखों को बंद कर , यशायाह 6:10, BDB 1044, KB 1612, *Hiphil* आज्ञार्थक

ये आज्ञार्थकों के पश्चात परिणाम आते हैं (पहले प्रयुक्त की गई क्रियाओं के तीन अपूर्ण, "देखो," "सुनो," और "समझो")। परमेश्वर जानता है (या तो उसके पूर्वज्ञान या उसके द्वारा उनके पहले से ही भटके हुए दिलों / दिमागों को कठोर करने के द्वारा) कि वे प्रत्युत्तर नहीं देंगे और बचाए नहीं जाएँगे।

1. ऐसा न होने पर वे पश्चाताप करें, BDB 996, KB 1427, *Qal* पूर्ण नकारात्मक
2. ऐसा न हो कि वे चंगाई पाएँ, BDB 950, KB 1272, *Qal* पूर्ण नकारात्मक

यशायाह उपदेश देगा और हालांकि कुछ प्रत्युत्तर देंगे, उसके लोगों का विशाल बहुमत / उसका समाज नहीं देगा (तुलना रोमियों 1: 24,26,28; इफिसियों 4:19) या प्रत्युत्तर नहीं दे सकता (तुलना यशायाह 29: 9,10; व्यवस्थाविवरण 29: 4; मत्ती 13:13; रोमियों 11: 8)! यशायाह यहाँ एक प्रचारक नहीं, लेकिन वाचा की अनाज्ञाकारिता/परिणामों के एक भविष्यद्वक्ता हैं(तुलना मत्ती 13:13; मरकुस 4:12; लूका 8:10)। आशा का उसका संदेश भविष्य के एक दिन के लिए है, उसके दिन के लिए नहीं!

रोमियों 11:7 "शेष लोग कठोर किए गए" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य निर्देशात्मक है (तुलना 2 कुरिन्थियों 3:14)। इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर ने उन्हें कठोर बना दिया (तुलना रोमियों 11: 8-10)। कठोर बनाने का प्रतिनिधि एक दुष्ट है (तुलना 2 कुरिन्थियों 4: 4)। "कठोर" (*pōroō*) अशिष्टता या अंधेपन के लिए एक चिकित्सकीय शब्द है (तुलना रोमियों 11:25; 2 कुरिंथियों 3:14; इफिसियों 4:18)। मरकुस 6:52 में इसी शब्द का प्रयोग प्रेरितों के लिए किया गया है। यह रोमियों 9:18 (*sklērunō*) का एक अलग यूनानी शब्द है जो दया का विलोम है (तुलना इब्रानियों 3: 8,15; 4:7)।

यह पद बहुत स्पष्ट है और रोमियों 11:1-6 का सारांश है। जिन लोगों को चुना गया, उनमें से कुछ ने विश्वास किया, कुछ जिन्हें नहीं चुना गया था, वे कठोर हो गए। हालाँकि, यह पद एक धार्मिक नारे के रूप में अलग से नहीं लिखा गया। यह एक अनवरत धर्मशास्त्रीय तर्क का हिस्सा था। इस पद में स्पष्ट रूप से बताए गए सत्य और रोमियों 10 के सार्वभौमिक निमंत्रण के बीच एक तनाव है। यहाँ एक रहस्य है। लेकिन समाधान दुविधा के किसी एक भाग, विरोधाभासी ध्रुवों को नकारना या कम करना नहीं है।

12:39 "इस कारण वे विश्वास न कर सके" यह एक अपूर्ण मध्य (प्रतिपादक) निर्देशात्मक और एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। वे यीशु के साथ विश्वास के संबंध को जारी रखने में असमर्थ थे। उसके चमत्कारों ने उन्हें आकर्षित किया, लेकिन उन्हें यीशु में मसीहा के रूप में विश्वास / भरोसे तक नहीं ला पाए । यूहन्ना में "विश्वास" के स्तर हैं। सब उद्धार प्राप्त नहीं करते हैं। यूहन्ना 8:31-59 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है"** यशायाह 6:10; 43:8 यशायाह के माध्यम से परमेश्वर के संदेश के बारे में यहूदियों के दिलों की कठोरता को संदर्भित करता है (तुलना यिर्मयाह 5:29; यहेजकेल 12:2; निर्गमन 29:2-4)।

12:40 "मन" नीचे विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: हृदय (SPECIAL TOPIC: THE HEART)

यूनानी शब्द *kardia* का प्रयोग सेप्टुआजिंट और नये नियम में इब्रानी शब्द *lēb* (BDB 523, KB 513) को प्रतिबिंबित करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग कई तरीकों से किया जाता है (तुलना Bauer, Arndt, Gingrich and Danker, *A Greek-English Lexicon*, 2nd ed. pp. 403-404)।

1. भौतिक जीवन का केंद्र, व्यक्ति के लिए एक रूपक (तुलना प्रेरितों के काम 14:17; 2 कुरिन्थियों 3:2-3; याकूब 5:5)
2. आत्मिक जीवन का केंद्र (यानी, नैतिक)
   a. परमेश्वर हृदय को जानता है (तुलना लूका 16:15; रोमियों 8:27; 1 कुरिन्थियों 14:25; 1 थिस्सलुनीकियों 2:4; प्रकाशितवाक्य 2:23)
   b. मानव जाति के आत्मिक जीवन के लिए प्रयुक्त (तुलना मत्ती 15:18-19; 18:35; रोमियों 6:17; 1 तीमुथियुस 1:5; 2 तीमुथियुस 2:22; 1 पतरस 1:22)
3. विचार जीवन का केंद्र (यानी, बुद्धि, तुलना मत्ती 13:15; 24:48; प्रेरितों के काम 7:23; 16:14; 28:27; रोमियों 1:21; 10:6; 16:18; 2 कुरिन्थियों 4:6; इफिसियों 1:18; 4:18; याकूब 1:26; 2 पतरस 1:42; प्रकाशितवाक्य 18:7; हृदय 2 कुरिन्थियों 3:14-15 और फिलिप्पियों 4:7 में मन का पर्यायवाची है)
4. इच्छाशक्ति का केंद्र (यानी, इच्छा, तुलना प्रेरितों के काम 5:4; 11:23; 1 कुरिन्थियों 4:5; 7:37; 2 कुरिन्थियों 9:7)
5. भावनाओं का केंद्र (तुलना मत्ती 5:28; प्रेरितों के काम 2:26,37; 7:54; 21:13; रोमियों; 1:24; 2 कुरिन्थियों 2:4; 7:3; इफिसियों 6:22, फिलिप्पियों 1:7)
6. आत्मा की गतिविधि का अनोखा स्थान (तुलना रोमियों 5:5; 2 कुरिन्थियों 1:22; गलातियों 4:6 [यानी, हमारे हृदयों में मसीह, इफिसियों 3:17])
7. हृदय पूरे व्यक्ति का उल्लेख करने का एक रूपक तरीका है (तुलना मत्ती 22:37, व्यवस्थाविवरण 6:5 का हवाला देते हुए)। हृदय से संबंधित विचार, उद्देश्य और कार्य व्यक्ति के प्रकार को पूरी तरह से प्रकट करते हैं। पुराने नियम में शब्दों के कुछ आश्चर्यजनक प्रयोग हैं।
   a. उत्पत्ति 6:6; 8:21, "यहोवा मन में अति खेदित हुआ," होशे 11:8-9 पर भी ध्यान दें
   b. व्यवस्थाविवरण 4:29; 6:5; 10:12, "अपने पूरे मन और अपने पूरे प्राण से"
   c. व्यवस्थाविवरण 10:16; यिर्मयाह 9:26, "खतना रहित हृदय" और रोमियों 2:29
   d. यहेजकेल 18:31-32, "एक नया मन"
   e. यहेजकेल 36:26, "एक नया मन" बनाम "एक पत्थर का हृदय" (तुलना यहेजकेल 11:19; जकर्याह 7:41)

12:41 "यशायाह ने ये बातें इसलिये कहीं कि उसने उसकी महिमा देखी" यह एक दावा है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को मसीहा के बारे में सूचित किया गया था (तुलना लूका 24:27)। यूहन्ना 1:14 में "महिमा" पर टिप्पणी देखें।

12:42 "तौभी अधिकारियों में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया" यीशु के संदेश फल अवश्य लाए (तुलना यूहन्ना 12:11; प्रेरितों के काम 6:7)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"वे प्रगट में नहीं मानते थे"** विशेष विषय: अंगीकार यूहन्ना 9:22-23 पर देखें।

▣ **"कहीं ऐसा न हो कि वे आराधनालय में से निकाले जाएँ"** (तुलना यूहन्ना 9:22; 16:2)।

12:43 इसका मतलब यह है कि सच्चा विश्वास कमजोर और भयभीत हो सकता है, यहाँ तक कि अघोषित भी! यूहन्ना के सुसमाचार में प्रारंभिक आकर्षण से लेकर भावनात्मक प्रत्युत्तर उससे लेकर सच्चे मुक्ति दिलानेवाले विश्वास तक, कई अर्थों में विश्वास (*pisteuō*) का प्रयोग किया गया है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 12:44-50

[44]यीशु ने पुकारकर कहा, "जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। [45]और जो मुझे देखता है वह मेरे भेजनेवाले को देखता है [46]मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ, ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे वह अंधकार में न रहे। [47]यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता; क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिए नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूँ। [48]जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है, उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा। [49]क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं; परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि क्या क्या कहूँ और क्या क्या बोलूँ? [50]और मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनंत जीवन है।इसलिए मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूँ।

12:44 "जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है" विश्वास का लक्ष्य अंततः पिता में है (तुलना 1 कुरिंथियों 15:25-27)। यह एक आवर्तक विषय है (तुलना मत्ती 10:40; यूहन्ना 5:24)। पुत्र को जानना पिता को जानना है (तुलना 1 यूहन्ना 5:10-12)।

12:45 परमेश्वर कैसा है? यीशु को देखना परमेश्वर को देखना है (तुलना यूहन्ना 14:7-10)!

12:46 उत्पत्ति 3 से जगत अंधकार में है (तुलना उत्पत्ति 6: 5,11-12; 8:21; भजनसंहिता 14:3; यशायाह 53:6; रोमियों 3:9-23)।

12:47 "यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहरता" यह एक तृतीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो संभावित कार्य की बात करता है। निरंतर आज्ञाकारिता विश्वास द्वारा हमारे निरंतर व्यक्तिगत संबंधों में एक संकेत है! आश्वासन (1 यूहन्ना 5:13 पर विशेष विषय देखें) आज्ञाकारिता और धीरज के एक बदले हुए और बदलते हुए जीवन पर आधारित है (यूहन्ना 8:31 पर विशेष विषय, तुलना याकूब और 1 यूहन्ना की पुस्तकें देखें)।

12:47-48 "क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिए नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिए आया हूँ" यीशु मुख्य रूप से जगत को मुक्ति दिलाने के लिए आया था, लेकिन उनके आने का तथ्य मनुष्य को तय करने के लिए मजबूर करता है। यदि वे उसे अस्वीकार करते हैं, तो वे स्वयं का न्याय करते हैं (यूहन्ना 8:31 पर विशेष विषय देखें। तुलना यूहन्ना 3:17-21)।

12:49-50 यीशु ने परमेश्वर के अधिकार से बात की, न कि अपने।

12:50

NASB, NKJV	**"उसकी आज्ञा अनंत जीवन है"**
NRSV, TEV,	
NET	**"उसकी आज्ञा अनंत जीवन लाती है"**
NJB	**"उसकी आज्ञाओं का अर्थ है अनंत जीवन"**
REB	**"उसकी आज्ञाएँ अनंत जीवन है"**
NIV	**"उसकी आज्ञा अनंत जीवन की ओर ले जाती है"**
नेट (पादटिप्पणी)	**"उसकी आज्ञा अनंत जीवन में परिणत होती है"**

पहला विकल्प शाब्दिक यूनानी पाठ है। दूसरे लोग इसके अर्थ की व्याख्या करने की कोशिश कर रहे हैं।

NASB में समानांतर अवतरण के रूप में यूहन्ना 6:68 है, जबकि Michael Magill's *NT TransLine* में यूहन्ना 17: 8 है। The Jerome Biblical Commentary (p. 451) में यूहन्ना 10:18 समानांतर है। जाहिर है कि वाक्यांश अस्पष्ट है।

यूहन्ना में "आज्ञा" के एकवचन और बहुवचन के बीच उतार-चढ़ाव है, जिसका कोई टीका-संबंधी महत्व नहीं है।

विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "आज्ञा" का प्रयोग (SPECIAL TOPIC: USE OF "COMMANDMENT" IN JOHN'S WRITINGS)

1. एक बार मूसा के कानून के लिए प्रयुक्त, यूहन्ना 8:5
2. पिता से यीशु को आज्ञाएँ
   a. अपने स्वयं के छुटकारे के बलिदान पर अधिकार, यूहन्ना 10:18; 12:49-50; 14:31
   b. संसार पिता से यीशु के प्रेम को जाने, यूहन्ना 14:31
   c. यीशु ने पिता की आज्ञा का पालन किया, यूहन्ना 15:10
3. विश्वासियों के लिए यीशु से आज्ञाएँ
   a. उसके प्रेम में बने रहो, यूहन्ना 14:15; 15:10
   b. एक दूसरे से प्रेम रखो, जैसा उसने उनसे रहा, यूहन्ना 13:34; 15:12,17; 1 यूहन्ना 2:7-8; 3:11,23; 4: 7,21; 2 यूहन्ना 5
   c. उसकी आज्ञा मानो (यानी, b.), यूहन्ना 14:15; 15:10,14; 1 यूहन्ना 2:3,4; 3:22,24; 5:1-3; 2 यूहन्ना 6

4. विश्वासियों के लिए पिता से आज्ञाएँ
    a. यीशु पर विश्वास करो, 1 यूहन्ना 3:23 (तुलना यूहन्ना 6:29)
    b. आपस में प्रेम रखें, 1 यूहन्ना 3:23

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. मरियम, लाज़र की बहन ने यीशु के पैरों का अभिषेक क्यों किया?
2. मत्ती, मरकुस और यूहन्ना इस घटना के अपने विवरणों में थोड़ा अलग क्यों हैं?
3. हाथों में खजूर की शाखाएँ लिए यीशु से मिलने वाली भीड़ और भजनसंहिता 118 के उद्धरण का क्या महत्व था?
4. यीशु यूनानियों के उसके साथ बात करने के अनुरोध से विचलित क्यों हुआ?
5. यीशु की आत्मा इतनी अधिक व्याकुल क्यों थी? (तुलना यूहन्ना 12:27)
6. स्पष्ट कीजिए कि यूहन्ना "विश्वास" का प्रयोग कई अर्थों में क्यों करता है।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 13

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
चेलों के पैर धोना	स्वामी दास बनता है	अंतिम भोज	यीशु चेलों के पैर धोता है	पैरों का धोया जाना
13:1-11	13:1-11	13:1-11	13:1	13:1
			13:2-6	13:2-5
				13:6-11
			13:7	
			13:8a	
			13:8b	
			13:9	
	हमें भी सेवा करनी चाहिए		13:10-11	
13:12-20	13:12-30	13:12-20	13:12-17	13:12-16
				13:17-20
			13:18-20	
यीशु ने अपने विश्वासघात के बारे में भविष्यवाणी की			यीशु अपने विश्वासघात की पूर्व-सूचना देता है	यहूदा के विश्वासघात की भविष्यवाणी
13:21-30		13:21-30	13:21	13:21-30
			13:22-24	
			13:25	
			13:26-29	
			13:30	
नई आज्ञा	नई आज्ञा		नई आज्ञा	विदाई उपदेश
13:31-35	13:31-35	13:31-35	13:31-35	13:31-35
पतरस के इन्कार की भविष्यवाणी	यीशु पतरस के इन्कार की पूर्व-सूचना देता है		यीशु पतरस के इन्कार की पूर्व-सूचना देता है	
13:36-38	13:36-38	13:36-38	13:36a	13:36-38
			13:36b	
			13:37	
			13:38	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 13:1-38 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. यूहन्ना रचित सुसमाचार अध्याय 12 में यीशु के चिन्हों का समापन करता है। अध्याय 13 से अंतिम व्यथा सप्ताह शुरू होता है।

B. NASB अध्ययन बाइबल की पाद टिप्पणी दिलचस्प टिप्पणी करती है "यूनानी संज्ञा *agapē* ('प्रेम') और क्रिया *agapaō* ('प्रेम') अध्याय 1-12 में केवल आठ बार आता है लेकिन अध्याय 13-17 में 31 बार।"

C. यूहन्ना प्रभुभोज (यूचरिस्ट) को सिनॉप्टिक्स के समान दर्ज नहीं करता। वह उस रात अटारी में संवाद का एकमात्र लेखा देता है (अध्याय 13-17, जो यूहन्ना के सुसमाचार का एक महत्त्वपूर्ण प्रतिशत है। इसलिए, इसे यीशु के व्यक्तित्व और कार्य को शक्तिशाली नए तरीकों से प्रकट करना चाहिए)। कुछ लोग इस लोप को प्रारंभिक कलीसिया के संस्कारवाद के बढ़ते जोर को कम करने के एक जानबूझकर किये गए प्रयास के रूप में देखते हैं। यूहन्ना कभी भी यीशु के बपतिस्मे या प्रभु भोज को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत नहीं करता है।

D. यूहन्ना 13 का ऐतिहासिक संदर्भ लूका 22:24 में देखा जा सकता है। चेलों में अभी भी यह बहस हो रही थी कि कौन सबसे बड़ा है।

E. अध्याय 13-17 का भौतिक विन्यास यरूशलेम में एक अटारी है (या संभवतः अध्याय 15-17 गतसमनी के रास्ते में, तुलना यूहन्ना 14:31), संभवतः यूहन्ना मरकुस का घर, जिस रात यीशु यहूदा के हाथ पकड़वाया गया।

F. यीशु के द्वारा पाँव धोने की क्रिया में दो अलग-अलग उद्देश्य प्रतीत होते हैं।
   1. पद 6-11 हमारे बदले में क्रूस पर उसके काम पूर्वाभास देना।
   2. पद 12-20 दीनता से संबंधित एक उद्देश्य पाठ है (लूका 22:24 के प्रकाश में)।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 13:1-11
**[1]फसह के पर्व से पहले, जब यीशु ने यह जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुँची कि जगत छोड़कर पिता के
पास जाऊँ, तो अपने लोगों से जो जगत में थे जैसा प्रेम वह रखता था, अंत तक वैसा ही प्रेम रखता रहा। [2]जब
शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए, तो भोजन के समय
[3]यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है, और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ और
परमेश्वर के पास जाता हूँ, [4]भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिये; और अँगोछा लेकर अपनी कमर बाँधी
[5]तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पाँव धोने और जिस अँगोछे से उसकी कमर बन्धी थी उसी से पोंछने लगा।
[6]जब वह शमौन पतरस के पास आया, तब पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धोता है?" [7]यीशु ने**

उसको उत्तर दिया, "जो मैं करता हूँ, तू उसे अभी नहीं जानता, परन्तु इसके बाद समझेगा।" [8]पतरस ने उससे कहा, "तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा!" यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।" [9]शमौन पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, तो मेरे पाँव ही नहीं, वरन हाथ और सिर भी धो दे।" [10]यीशु ने उससे कहा, "जो नहा चुका है उसे पाँव के सिवाय और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं, परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है; और तुम शुद्ध हो, परन्तु सब के सब नहीं।" [11]वह तो अपने पकड़वानेवाले को जानता था इसी लिये उसने कहा, "तुम सब के सब शुद्ध नहीं।"

13:1 "फसह के पर्व से पहले" यूहन्ना और सिनॉप्टिक सुसमाचार इस बात पर असहमत हैं कि क्या यह फसह के भोज से पहले का दिन था या स्वयं फसह का भोज। इन दोनों ने भोज गुरुवार को और क्रूसित किया जाना शुक्रवार को लिखा है(तुलना यूहन्ना 19:31; मरकुस 15:43; लूका 23:54)। यह फसह का भोज मिस्र से इस्राएल की रिहाई का स्मरण दिलाता है (तुलना निर्गमन 12)। यूहन्ना का दावा है कि यह नियमित फसह के भोज से पहले का दिन था (तुलना यूहन्ना 18:28; 19:14,31,42)।

यह संभव है कि इस्सैन समुदाय ने एक अलग कैलेंडर (यानी जुबली और हनोक की किताबों से सौर कैलेंडर, वर्तमान याजकपन के प्रति उनकी अस्वीकृति को दिखाने के लिए एक तरीके के रूप में) का प्रयोग किया, जिसमें फसह को एक दिन पहले रखा गया है।

जेरोम बाइबल कमेंटरी में वर्तमान विद्वत्ता (पृष्ठ 451) का सारांश दिया गया है और माना जाता है कि यूहन्ना का "एक दिन पहले" सही है और यह कि सिनॉप्टिक सुसमाचार भोजन के फसह प्रतीकवाद का दावा करते हैं। हमें हमेशा याद दिलाना चाहिए कि सुसमाचार पश्चिमी, कारण और प्रभाव, कालानुक्रमिक इतिहास नहीं हैं। इतिहास कई तरह से लिखा जाता है, सही या गलत नहीं, सच या झूठ नहीं। इतिहास वर्तमान मुद्दों/जरूरतों/दृष्टिकोणों के काम में आने के लिए अतीत की व्याख्या है। असली मुद्दा यह है कि किसने / क्यों इतिहास लिखा। ऐतिहासिक कथा और सुसमाचारों की शैली की सबसे अच्छी चर्चा है Gordon Fee and Douglas Stuart, *How to Read the Bible For All Its Worth,* pp. 89-126.

▣ **"जब यीशु ने यह जान लिया कि मेरी वह घड़ी आ पहुँची है"** "जान लिया" एक पूर्ण कर्तृवाच्य कृदंत है (जैसे यूहन्ना 13:3)। यीशु ने कम से कम बारह साल की उम्र से पिता के प्रति अपने अनूठे संबंध को समझा (लूका 2:41-51)। यूहन्ना 12:20-23 में उसे देखने के लिए यूनानियों के आने से यीशु को पता चला कि उसकी मृत्यु और महिमा का समय आ गया था (तुलना यूहन्ना 2:4; 7:6,8,30; 8:20; 12:23,27;17:1)।

▣ **"कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊँ"** यूहन्ना का सुसमाचार नीचे के विरुद्ध ऊपर एक ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद पर जोर देता है (तुलना यूहन्ना 13:3)। यीशु को पिता द्वारा भेजा गया था (तुलना यूहन्ना 8:42) और अब वह वापस जाता है। सिनॉप्टिक सुसमाचार यीशु को दो यहूदी युगों के क्षैतिज द्वैतवाद, परमेश्वर के राज्य का पहले से और अभी तक नहीं का तनाव सिखाते हुए चित्रित करते हैं।

सुसमाचारों के बारे में कई सवाल हैं जो आधुनिक पाठकों को संबोधित करना चाहिए, लेकिन जब सबकुछ कहा और किया जा चुका है तो ये पवित्र लेखन एक सुसंगत बाइबल के विश्व-दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं।

1. एक पवित्र परमेश्वर है।
2. उसकी विशेष रचना, मानव जाति, पाप और विद्रोह में गिर गई है।
3. परमेश्वर ने एक देहधारी उद्धारक को भेजा है (यानी, मसीहा)।
4. मानवजाति को विश्वास, पश्चाताप, आज्ञाकारिता और धीरज से प्रत्युत्तर देना चाहिए।
5. परमेश्वर और उसकी इच्छा के विरोध में दुष्टता का एक व्यक्तिगत बल है।
6. सम्पूर्ण सचेत सृष्टि अपने जीवनों का लेखा-जोखा परमेश्वर को देगी।

क्रिया "छोड़कर" (*metabainō*) यूहन्ना की रचनाओं में पतित भौतिक अस्तित्व (यानी, पाप और विद्रोह के पुराने युग) से अस्तित्व आत्मा और अनन्त जीवन के नए युग में परिवर्तन का बोधक है।(तुलना यूहन्ना 5:24; 13:1; 1 यूहन्ना 3:14; यूहन्ना 7:3 में इसके प्रयोग को छोड़कर)

▣ **"अपने लोगों से जैसा प्रेम वह रखता था"** यह यूनानी वाक्यांश "निकट परिजनों" (तुलना लूका 8:19-21) के लिए मिस्र के पपीरस (Moulton, Milligan, *The Vocabulary of the Greek New Testament*) में प्रयोग किया गया था।

▣ **"जो जगत में थे"** यूहन्ना कई अलग-अलग अर्थों में जगत शब्द (*kosmos*) का प्रयोग करता है।

1. यह ग्रह (तुलना यूहन्ना 1:10; 11:9; 16:21; 17:5,11,24; 21:25)
2. मानवजाति (तुलना यूहन्ना 3:16; 7:4; 11:27; 12:19; 14:22; 18:20,37
3. विद्रोही मानवजाति (तुलना यूहन्ना 1:10,29; 3:16-21; 4:42; 6:33; 7:7; 9:39; 12:31; 15:18; 17:25)

विशेष विषय: पौलुस का *kosmos* का प्रयोग यूहन्ना 17:17 में देखें।

▣ **"अंत तक वैसा ही प्रेम रखता रहा"** यह यूनानी शब्द "*telos*" है, जिसका अर्थ है एक संपादित उद्देश्य। यह यीशु के क्रूस पर मानवता के लिए छुटकारे के कार्य को संदर्भित करता है। इसी शब्द का एक रूप क्रूस से यीशु का अंतिम वचन था (तुलना यूहन्ना 19:30), "पूरा हुआ," जिसका अर्थ हम मिस्र के पपीरस से सीखते हैं, "पूर्ण भुगतान!

13:2 "भोजन के समय" इस बिंदु पर एक यूनानी पांडुलिपि विभिन्नता है। इस प्रकार में एक यूनानी शब्द में सिर्फ एक अक्षर की भिन्नता है।

1. *ginomenou*, वर्तमान कृदंत (यानी भोजन के समय), MSS א, B, L, W
2. *genomenou*, अनिर्दिष्टकाल कृदंत (यानी भोजन के पश्चात), MSS P^{66}, $א^{2}$, A, D

UBS[4] #1 विकल्प को एक "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है।

इसका संभावित अर्थ है

1. रात के भोजन के बाद
2. आशीर्वाद के पहले प्याले के बाद, जब प्रक्रिया में हाथों को धोया जाता है
3. आशीर्वाद के तीसरे प्याले के बाद

विशेष विषय: फसह (सेवा का क्रम) (SPECIAL TOPIC: PASSOVER (ORDER OF SERVICE))

A. प्रार्थना
B. दाखरस का प्याला
C. मेज़बान द्वारा हाथ धुलवाना और सभी के सामने से पात्र को गुजारना
D. कड़वे सागपात और चटनी का सालन
E. मेम्ना और मुख्य भोजन
F. प्रार्थना और कड़वे सागपात और चटनी का दूसरा सालन
G. बच्चों के लिए प्रश्न-उत्तर समय के साथ दाखरस का दूसरा प्याला (तुलना निर्गमन 12:26-27)
H. हलेल्ल(स्तुति) भजन 113-114 का गायन और प्रार्थना
I. समारोह का संयोजक अपने हाथ धोने के बाद हर एक के लिए तर निवाला बनाता है
J. सब पेटभर खाते हैं; मेम्ने के एक टुकड़े के साथ समाप्त करते हैं
K. हाथ धोने के बाद दाखरस का तीसरा प्याला
L. हलेल्ल(स्तुति) भजन 115-118 का गायन
M. दाखरस का चौथा प्याला, जो राज्य के आने को सूचित करता है

कई लोगों का मानना है कि प्रभुभोज "K" पर प्रारंभ हुआ

▣ **"जब शैतान यहूदा इस्करियोती के में यह डाल चुका"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य कृदंत है। यीशु शुरू से ही यहूदा के बारे में जानता था (तुलना यूहन्ना 6:70)। दुष्ट जन (यूहन्ना 12:31 पर विशेष विषय को देखें) लंबे समय से यहूदा की परीक्षा ले रहा था, लेकिन यूहन्ना 13:27 में शैतान ने उस पर पूर्ण नियंत्रण कर लिया। विशेष विषय: हृदय यूहन्ना 12:40 में देखें। यहूदा पर यूहन्ना 18:2 में पूर्ण टिप्पणी देखें।

13:3 "यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने सबकुछ मेरे हाथ में कर दिया है" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य कृदंत है, जैसे यूहन्ना 13:1, जिसके बाद एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक आता है। यह यीशु की आत्म-समझ और सत्ता पर उसके आश्चर्यजनक कथनों में से एक है। (यूहन्ना 3:35; 17:2; मत्ती 28:18)। अनिर्दिष्टकाल महत्वपूर्ण है। पिता ने क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले यीशु को "सब कुछ" दे दिया। सब कुछ उसकी आज्ञाकारिता के लिए पुरस्कार के रूप में नहीं दिया गया था, लेकिन इसलिए कि जो वह था! वह जानता था कि वह कौन है और उनके पाँव धोए जो बहस कर रहे थे कि उनमें से कौन सबसे बड़ा है!

▣ **"मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ"** यह यूहन्ना 13:3 में उल्लिखित तीन विषयों में से दूसरा है जिसे यीशु जानता था
1. पिता ने सब कुछ उसके हाथ में कर दिया
2. वह परमेश्वर के पास से आया है
3. वह परमेश्वर के पास वापस जा रहा है (तुलना यूहन्ना 7:33; 14:12,28; 16:5, 10,17,28; 20:17)

अंतिम दो यूहन्ना में ऊपर के मुकाबले नीचे के इतने आम द्वंद्ववाद का हिस्सा हैं।

विषय #2 यूहन्ना में एक अनूठा वाक्यांश है (तुलना यूहन्ना 8:42; 13:3; 16:28,30; 17:8)। इसमें उत्पत्ति और स्थान (यानी, स्वर्ग से देवता) दोनों का निष्कर्ष है।

13:4 "भोजन पर से उठकर" याद रखें कि वे अपने पाँव अपने पीछे किये हुए बायीं कोहनी के सहारे लेटे हुए थे, कुर्सियों में नहीं बैठे थे।

▣ **"अपने ऊपरी कपड़े उतार दिये"** बहुवचन यीशु के ऊपरी कपड़ों को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 19:23)। यह दिलचस्प है कि इसी क्रिया का प्रयोग यूहन्ना 10:11,15,17,18 में यीशु के प्राण देने के लिए किया गया है (तुलना यूहन्ना 13:37)। यह यूहन्ना का एक और द्विअर्थी हो सकता है। इस बात की संभावना लगती है कि पाँव धोना दीनता पर सिर्फ एक उद्देश्य पाठ से अधिक था (तुलना यूहन्ना 13:6-10)।

13:5 "चेलों के पाँव धोने लगा" यह यूनानी शब्द "शरीर के केवल कुछ भाग को धोने" के लिए प्रयोग किया गया था। यूहन्ना 13:10 में इस शब्द का प्रयोग पूरे नहाने के लिए किया गया था। पाँव धोना दास का कर्तव्य था। यहाँ तक कि रब्बी भी अपने चेलों से यह उम्मीद नहीं करते थे। यीशु, अपने स्वयं के देवत्व को जानते हुए, इन ईर्ष्यालु और महत्त्वाकांक्षी चेलों के पैर धोने के लिए तैयार था (यहूदा के भी)!

13:6 पतरस का सवाल यीशु के भाव- प्रदर्शन को नकारने का एक आडंबरपूर्ण तरीका था। पतरस अक्सर सोचता था कि वह जानता है कि यीशु को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए (तुलना मत्ती 16:22)।

13:7 प्रेरितों, जो यीशु के साथ रहते थे, हमेशा उसके कार्यों और उपदेशों को नहीं समझते थे (तुलना यूहन्ना 2:22; 10:6; 12:16; 14:26; 16:18)। यह गलतफहमी ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद को व्यक्त करने का एक तरीका है।

13:8 "तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा" यह एक प्रबल दोहरा नकारात्मक है जिसका अर्थ था "कभी भी किसी भी परिस्थिति में नहीं।"

▣ **"यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है। इस पद का तात्पर्य यह है कि यहाँ केवल एक व्यावहारिक उद्देश्य पाठ से ज्यादा कुछ हो रहा था। पद 6-10 पापों को क्षमा करने में क्रूस पर यीशु के कार्य से संबंधित हैं।

दूसरा वाक्यांश उत्तराधिकार से संबंधित पुराने नियम के मुहावरे को प्रतिबिंबित कर सकता है (तुलना व्यवस्था विवरण 12:12; 2 शमूएल 20: 1; 1 राजाओं 12:16)। यह बहिष्कार का एक बहुत प्रबल मुहावरा है।

13:9 यूनानी नकारात्मक सामान्य प्रत्यय "नहीं" (mē) एक निहित आज्ञार्थक, "धोऊँ" को इंगित करता है।

13:10 "जो नहा चुका है" यीशु छुटकारे के लिए रूपक में बोल रहा है। पतरस को धोया (बचाया, तुलना यूहन्ना 15:3; तीतुस 3:5) गया है, लेकिन अंतरंग संगति को बनाए रखने के लिए पश्चाताप करते रहना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 1:9)।

दूसरी प्रासंगिक संभावना यह है कि यीशु यहूदा के विश्वासघात की बात कर रहे हैं (तुलना यूहन्ना 13:11 और 18)। तो नहाने का रूपक संदर्भित करता है या तो (1) पतरस के शरीर या (2) प्रेरितों के समूह को।

▣ **"तुम शुद्ध हो, परंतु सब के सब नहीं"** "तुम" बहुवचन है, चेलों के गोपनीय दल का उल्लेख करते हुए, यहूदा को छोड़कर (तुलना यूहन्ना 13:11,18; 6:70)।

"शुद्ध" यीशु के संदेश को संदर्भित करता है जो उन्होंने ग्रहण किया है (तुलना यूहन्ना 15:3)। वे "शुद्ध" हैं क्योंकि उन्होंने विश्वास/भरोसा/आस्था रखी/उसे ग्रहण किया है जो शुद्ध है, यीशु।

"सब के सब नहीं" वाक्यांश के लिए, विशेष विषय: स्वधर्मत्याग यूहन्ना 6:64 में देखें।

13:11 TEV और NET बाइबलों ने इस पद को, लेखक की कई संपादकीय टिप्पणियों में से एक के रूप में व्याख्यायित करते हुए कोष्ठक में रखा है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 13:12-20
[12]जब वह उनके पाँव धो चुका, और अपने कपड़े पहिनकर फिर बैठ गया, तो उनसे कहने लगा, "क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया? [13]तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक ही कहते हो, क्योंकि मैं वही हूँ [14]यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोने चाहिए। [15]क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। [16]मैं तुम से सच सच कहता हूँ, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं, और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से। [17]तुम ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो तो धन्य हो। [18]मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता; जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ परन्तु यह इसलिये है कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो, 'जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर लात उठाई।' [19]अब मैं इसके होने से पहले तुम्हें जताए देता हूँ कि जब यह हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ। [20]मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।

13:12-20 यूहन्ना 13:6-10 के विपरीत, यहाँ यीशु ने अपने कार्य को दीनता के उदाहरण के रूप में वर्णित किया है। प्रेरित इस बात पर बहस कर रहे थे कि सबसे बड़ा कौन था (तुलना लूका 22:24)। इस संदर्भ में यीशु एक दास का कार्य अभिनीत करता है और फिर समझाता है कि इसका क्या अर्थ है और इसे कैसे लागू किया जाए।

13:14 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है।

▣ **"प्रभु और गुरु"** यूहन्ना 13:13 और 14 में निश्चित शब्द वर्ग पर ध्यान दें। नाम भी उलटे है। यह वह है जो अधिकार के साथ बोलता है। वह पिता को प्रकट करता है और आज्ञाकारिता और अधीनता की अपेक्षा करता है! वह जो कुछ भी करता है, उन्हें उसका अनुसरण करना चाहिए (यूहन्ना 13:15)।

13:14-15 "तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए" क्या इस कथन का मतलब यह है कि विनम्रता का यह कार्य तीसरी कलीसिया का विधान है? अधिकांश ईसाई समूहों ने कहा है, नहीं, क्योंकि

1. प्रेरितों के कामों में किसी भी कलीसिया द्वारा ऐसा किया गया यह दर्ज़ नहीं है।
2. नये नियम पत्रों में इसका समर्थन नहीं किया जाता है।
3. इसे विशिष्ट रूप से कभी भी बपतिस्मा (तुलना मत्ती 28:19) और प्रभुभोज (तुलना 1 कुरिन्थियों 11:17-34) के समान एक क्रियाशील विधान नहीं कहा गया है।

इसका मतलब यह नहीं है कि यह आराधना का एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग नहीं हो सकता।

यीशु ने उन्हें जो "उदाहरण" दिया वह सिर्फ दीनता नहीं थी, बल्कि बलिदान-संबंधी सेवा थी (तुलना यूहन्ना 15:12-13)। 1 यूहन्ना 3:16 इसे भली भांति कहता है! यीशु अंत तक प्रेम करता है (तुलना यूहन्ना 13:1), उन्हें भी पूर्ण रूप से भी प्यार करना चाहिए (यानी, आत्म-बलिदान का जीवन, पतन का विपरीत)।

13:16 "मैं तुम से सच सच कहता हूँ" यह अक्षरशः है "आमीन, आमीन" (जैसा कि यूहन्ना 13:20 है)। यह "विश्वास" के लिए पुराने नियम के शब्द का एक रूप है (तुलना हबक्कूक 2:4)। यीशु एकमात्र ऐसा था (किसी भी यूनानी साहित्य में) जिसने इस प्रारंभ में इसका प्रयोग किया। यह सामान्य रूप से अंत में कहा जाता है (1) सहमत होने (या) एक कथन या कार्य की पुष्टि करने के लिए। जब एक वाक्य की प्रारंभ में प्रयोग किया जाता और दोहराया जाता है, तो यह एक आधिकारिक, ध्यान केंद्रित करने वाला प्रयोग है। विशेष विषय: आमीन यूहन्ना 1:51 पर देखें

▣ **"एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं"** यह सत्यों को व्यक्त करने के लिए एक प्रारंभिक वाक्यांश है।

1. यूहन्ना 13:16, न ही भेजा हुआ अपने भेजने वाले से बड़ा है
2. यूहन्ना 15:20
   a. यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे।
   b. यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।

3. लूका 6:40 (समान), परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा (तुलना मत्ती 10:24)
4. लूका 22:27 (समान), परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ

13:17 "तुम ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो तो धन्य हो" पहला "यदि" प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे लेखक के दृष्टिकोण से सत्य माना जाता है। इस पद में दूसरा "यदि" एक तीसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। अगर हम जानते हैं, तो हमें करना चाहिए (तुलना मत्ती 7:24-27; लूका 6:46-49; रोमियों 2:13; याकूब 1:22-25; 4:11)! ज्ञान लक्ष्य नहीं है, बल्कि मसीह जैसा जीवन है। यह इब्रानी क्रिया *shema*, "सुन और ऐसा ही कर" को दर्शाता है (तुलना व्यवस्था विवरण 6: 4)।

13:18 "पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो" यह यहूदा को उल्लेखित करता है। यह पूर्वनियति और मानव की स्वतंत्र इच्छा के प्रतिच्छेदन का रहस्य है।

यीशु और उसके चेलों ने पवित्रशास्त्र की सत्यता पर विश्वास किया! जब वह कहता है तो उस पर भरोसा किया जाना चाहिए (तुलना मत्ती 5:17-19)। कई बार यूहन्ना यह टिप्पणी करते हैं कि "पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हो" (तुलना यूहन्ना 12:14; 13:18; 15:25; 17:12; 19:24,36)। अक्सर या तो पुराने नियम का पाठ मसीह के जीवन की एक घटना तक समझ में नहीं आता है (यानी, सांस्थिति, यानी, होशे 11:1) अथवा नये नियम की घटना एक बहुगुणित पूर्ति है (यानी, यशायाह 7:14 या दानिय्येल 9:27; 11:31; 12:11)।

▣ **"मुझ पर लात उठाई"** यह भजनसंहिता 41:9 का एक उद्धरण है। मित्रता और वाचा की निशानी के रूप में एक साथ खाने का पूर्व का रिवाज यहूदा के अपराध को बढ़ाता है। निकट पूर्व में अपने पाँव के तलवे को दूसरे को दिखाना अवमानना का संकेत था।

3:19 यह पद यीशु के चिन्ह-चमत्कारों और भविष्यवाणियों के उद्देश्य को दिखाता है (तुलना यूहन्ना 20:31)। यूहन्ना में, विश्वास एक बढ़ता हुआ और निरंतर होनेवाला अनुभव है। यीशु लगातार प्रेरितों के भरोसे / विश्वास / आस्था को विकसित कर रहा है। यूहन्ना 9:7 में विशेष विषय देखें।

यीशु उनके विश्वास को इनके द्वारा विकसित करता है

1. उसके वचनों
2. उसके कार्यों
3. उसके पूर्वज्ञान

यीशु परमेश्वर के साथ सही होने के लिए एक कट्टरपंथी "नया" तरीका लाया। इसने इन यहूदी पुरुषों की परंपराओं और मान्यताओं को तय किया।

1. वह, न कि मूसा, केंद्रबिंदु था
2. अनुग्रह, न कि व्यवहार

▣ **"कि मैं वही हूँ"** यह परमेश्वर के नाम "YHWH" का एक संदर्भ है, जो इब्रानी क्रिया "होना" से है (तुलना निर्गमन 3:14 का "मैं हूँ")। यीशु स्पष्ट रूप से यहाँ दिव्य अर्थों के साथ वादा किया गया मसीहा होने का दावा कर रहा है (तुलना यूहन्ना 4:26; 8:24,28,58; 13:19 और 18:5,6,8; मत्ती 24:5 और मरकुस 13:6; लूका 21:8 पर ध्यान दें)।

विशेष विषय: देवता के नाम यूहन्ना 6:20 पर देखें।

13:20 सामान्य तौर पर यूहन्ना ने "विश्वास" (*pisteuō*), "में विश्वास" (*pisteuō eis)* या "विश्वास कि" (*pisteuō hoti)* का प्रयोग मसीहियों का वर्णन करने के लिए किया, (विशेष विषय: यूहन्ना का "विश्वास" का प्रयोग यूहन्ना 2:23 पर देखें), लेकिन वह अन्य शब्दों जैसे "ग्रहण" या "स्वीकार" का भी प्रयोग करता है (तुलना यूहन्ना 1:12; 5:43; 13:20)। सुसमाचार किसी व्यक्ति का स्वीकार करना और उस व्यक्ति के बारे में बाइबल की सच्चाइयों को स्वीकार करना, और साथ ही उस व्यक्ति का अनुकरण करने वाला जीवन जीना, दोनों है।

▣ **"जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है"** यीशु के चेलों के प्रत्यायोजित अधिकार का कितना शक्तिशाली कथन। यह कई स्तरों पर कार्य कर सकता है।

1. बारहों (मत्ती 10:40) और सत्तर (लूका 10:16) की मिशन यात्राएँ
2. कलीसिया के गवाह (तुलना यूहन्ना 17:20)

यीशु के बारे में संदेश में जीवन को बदलने वाली शक्ति है जिसका इससे संबंधित नहीं है कि इसको कौन प्रकट करता है। अधिकार संदेश (अर्थात, सुसमाचार) में है, न कि सांसारिक संदेश में।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 13:21-30
21ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।" 22चेले संदेह से, कि वह किसके विषय में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे। 23उसके चेलों में से एक जिससे यीशु प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था। 24शिमौन पतरस ने उसकी ओर संकेत करके उससे पूछा, "बता तो, वह किसके विषय में कहता है।" 25तब उसने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुके हुए उससे पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है?" 26यीशु ने उत्तर दिया, "जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबाकर दूँगा वही है।" और उसने टुकड़ा डुबाकर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। 27टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया। तब यीशु ने उससे कहा, "जो तू करता है, तुरंत कर।" 28परन्तु बैठनेवालों में से किसी ने न जाना कि उसने यह बात उससे किस लिये कही। 29यहूदा के पास थैली रहती थी, इसलिये किसी किसी ने समझा कि यीशु उससे कह रहा है कि जो कुछ हमें पर्व के लिए चाहिए वह मोल ले, या यह कि कंगालों को कुछ दे। 30अतः वह टुकड़ा लेकर तुरंत बाहर चला गया; और यह रात्रि का समय था।

13:21 "वह आत्मा में व्याकुल हुआ" यहूदा के विश्वासघात ने यीशु को परेशान कर दिया (यूहन्ना 12:27 में यीशु के लिए वही शब्द)। यीशु ने यहूदा की आत्मिक क्षमता के कारण उसे चुना, लेकिन यह कभी फलवंत नहीं हुआ (तुलना यूहन्ना 13:18)।

▣ **"सच, सच"** यूहन्ना 1:51 पर टिप्पणी देखें।

13:22 यह एक आश्चर्यजनक पद है। गोपनीय दल के चेलों को डर था कि एक पूर्व निर्धारित योजना उन्हें विश्वासघाती बना सकती है (तुलना मरकुस 14:19)। निश्चयवाद के साथ यह समस्या है। परमेश्वर के कार्य मानव की स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन नहीं करते हैं, लेकिन इसके परिणामों को सुस्पष्ट करते और अंतिम रूप देते हैं!

13:23 "जिससे यीशु प्रेम रखता था" यह स्वयं यूहन्ना को संदर्भित करता प्रतीत होता है (तुलना यूहन्ना 13:23,25; 19:26-27,34-35; 20:2-5,8; 21:7,20-24)। अध्याय 19, यूहन्ना 13:26 इसकी पुष्टि करता है। इस सुसमाचार में यूहन्ना का नाम कभी नहीं आया है। क्या यीशु के पसंदीदा थे? अच्छा, उनका एक गोपनीय दल (पतरस, याकूब और यूहन्ना) और एक विशेष परिवार (लाजर, मरियम, मार्था) अवश्य था।

13:25 यह संदर्भ पहली सदी के पलस्तीन की खाने की विशिष्ट व्यवस्था को दर्शाता है। चेले एक नीची, घोड़े की नाल के आकार की मेज पर लेटकर, उनके पाँव पीछे की ओर, वे उनकी बायीं कोहनी पर झुकते हुए, उनके दाहिने हाथों से खाना खाएँगे। यूहन्ना यीशु के दाहिने ओर, यहूदा उसकी बाईं ओर (सम्मान का स्थान) था। बैठने के क्रम का कारण पवित्रशास्त्र में नहीं दिया गया है। यूहन्ना झुक गया और यीशु से एक सवाल पूछा।

13:26 "जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबाकर दूँगा वही है" यह सम्मान का एक संकेत था (तुलना रूत 2:14)। यहूदा यीशु की बायीं ओर, जो सम्मान का स्थान भी था, झुक रहा था। यीशु यहूदा तक पहुँचने की कोशिश कर रहा था!

निवाला कड़वे साग-पात और चटनी का एक व्यंजन था (यूहन्ना 13:2 पर विशेष विषय देखें)। मरकुस का समानांतर (14:20) कहता है "मेरे साथ।" यह एक प्रत्यक्षदर्शी विस्तार भ्रम है।

▣ **"इस्करियोती"** नीचे विशेष विषय और यूहन्ना 6:71 और 18:2 पर टिप्पणी देखें।

विशेष विषय: इस्करियोती (SPECIAL TOPIC: ISCARIOT)
यहूदा ने कई वर्षों तक बहुत करीब से प्रभु यीशु को सुना था, ध्यान से देखा था और उसके साथ संगति की थी, लेकिन जाहिर है कि विश्वास के द्वारा उसका उसके साथ फिर भी कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं था (तुलना मत्ती 7:21-23)। पतरस प्रलोभन की उसी तीव्रता से गुजरता है जैसा कि यहूदा गुजरा, लेकिन बेहद अलग परिणामों के साथ (तुलना मत्ती 26:75)। यहूदा के विश्वासघात के उद्देश्यों पर बहुत चर्चा हुई है:

1. यह मुख्य रूप से धन-संबंधी था (तुलना यूहन्ना 12:6)
2. यह मुख्य रूप से राजनीतिक था (तुलना William Klassen, *Judas Betrayer or Friend of Jesus?*)
3. यह आत्मिक था (तुलना लूका 22:3; यूहन्ना 6:70; 13:2,27)

शैतानी प्रभाव या दुष्टात्माग्रस्त के विषय पर (विशेष विषय:नये नियम में दुष्टात्माग्रस्त देखें) कई अच्छे संसाधन हैं (मेरे उन पर भरोसा करने के क्रम में सूचीबद्ध)।

1. Merrill F. Unger, *Biblical Demonology, Demons in the World Today*
2. Clinton E. Arnold, *Three Crucial Questions About Spiritual Warfare*
3. Kurt Koch, *Christian Counseling and Occultism, Demonology Past and Presen*t
4. C. Fred Dickason, *Demon Possession and the Christian*
5. John P. Newport, *Demons, Demons, Demons*
6. John Warwick Montgomery, *Principalities and Powers*

सांस्कृतिक मिथकों और अंधविश्वासों से सावधान रहें। शैतान मत्ती 16:23 में पतरस को उसी तरह से यीशु को लुभाने - उसकी प्रतिस्थापन मृत्यु के लिए प्रभावित करता है। शैतान अटल है। वह हमारी ओर से यीशु के छुटकारे के काम को रोकने के लिए हर सम्भव कोशिश कर रहा है।

1. यीशु की परीक्षा, लूका 4
2. पतरस का उपयोग करता है
3. यहूदा और सन्हेद्रयौन का उपयोग करता है

यीशु ने यूहन्ना 6:70 में यहूदा को एक शैतान के रूप में वर्णित किया है। बाइबल दुष्टात्माग्रस्त और विश्वासियों से संबंधित उसके प्रभाव के विषय पर चर्चा नहीं करती। लेकिन, विश्वासी व्यक्तिगत पसंद और व्यक्तिगत दुष्टता से प्रभावित होते हैं (देखें विशेष विषय: व्यक्तिगत दुष्टता)!

"इस्करियोती" की व्युत्पत्ति कुछ अस्पष्ट है; हालाँकि, कई संभावनाएँ हैं:

1. *Kerioth*, यहूदा का एक नगर (तुलना यहोशू 15:25)
2. *Kartan*, गलील का एक नगर (तुलना यहोशू 21:32)
3. *Karōides*, यरुशलेम या यरीहो में एक खजूर के पेड़ों का झुण्ड
4. *scortea*, तहबंद या चमड़े की थैली (तुलना यूहन्ना 13:29)
5. *ascara*, फाँसी लगाना (इब्रानी) मत्ती 27:5 से
6. एक हत्यारे का चाकू (यूनानी), जिसका अर्थ है कि वह शमौन की तरह एक उत्साही व्यक्ति था (तुलना लूका 6:15)

13:27 "शैतान उसमें समा गया" यह यूहन्ना के सुसमाचार में "शैतान" शब्द का एकमात्र प्रयोग है। इसका अर्थ इब्रानी में "विरोधी" (तुलना लूका 22:3 और यूहन्ना 13:2)। यूहन्ना 12:31 पर विशेष विषय देखें। क्या यहूदा ज़िम्मेदार नहीं है क्योंकि शैतान उसके अंदर समा गया? आत्मिक क्षेत्र की क्रियाओं (परमेश्वर का फिरौन के हृदय को कठोर करना) और भौतिक क्षेत्र में मानवीय जिम्मेदारी के बीच बाइबल में एक तनाव है। मनुष्य निश्चित रूप से अपने चुनावों में उतने स्वतंत्र नहीं हैं जितना वे सोचते हैं। हम सब ऐतिहासिक, अनुभवात्मक और आनुवांशिक रूप से प्रतिबंधित हैं। इन भौतिक निर्धारकों में जोड़ा गया है आत्मिक क्षेत्र (परमेश्वर, आत्मा, स्वर्गदूत, शैतान और दुष्टात्माएँ)। यही रहस्य है! हालांकि, मनुष्य रोबोट नहीं हैं; हम अपने कार्यों, चुनावों और उनके परिणामों के लिए जिम्मेदार हैं। यहूदा ने कार्य किया! उसने अकेले कार्य नहीं किया! लेकिन वह अपने कार्यों के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार है। यहूदा के विश्वासघात की भविष्यवाणी की गई थी (यूहन्ना 13:18)। शैतान उकसाने वाला था (विशेष विषय: व्यक्तिगत दुष्टता यूहन्ना 12:31 पर देखें)। यह दुखद है कि यहूदा कभी भी यीशु को "जानने" या उस पर विश्वास कर नहीं पाया।

13:29 "यहूदा के पास थैली रहती थी" यहूदा समूह के पैसे का प्रभारी था (तुलना यूहन्ना 12:6)। यूहन्ना 18:2 पर पूर्ण टिप्पणी देखें।

13:30 "यह रात्रि का समय था" क्या यह एक समय तत्व है या आत्मिक मूल्यांकन? यूहन्ना अक्सर इन अस्पष्ट वाक्यांशों का प्रयोग करता है जिन्हें कई तरीकों से समझा जा सकता है (यानी, नीकुदेमुस, तुलना यूहन्ना 3:2; 19:39)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 13:31-35

[31]जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, "अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई है; [32][यदि उसमें परमेश्वर की महिमा हुई है,] तो परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा और तुरंत करेगा। [33]हे बालकों, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ: फिर तुम मुझे ढूँढोगे, और जैसा मैंने यहूदियों से कहा, ' जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते,' वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूँ। [34]मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। [35]यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।"

13:31-38 ये पद प्रभुभोज की रात्रि को अटारी के संवाद में चेलों द्वारा किये गए प्रश्नों की एक श्रृंखला के एक बड़े संदर्भ का हिस्सा बनते हैं (तुलना यूहन्ना 13:36; 14:5,8,22; 16:17-19)। यह स्पष्ट है कि यीशु के दूर जाने के कथनों के कारण प्रेरितों ने यीशु के शब्दों को न समझ पाने की वजह से कई प्रश्न करे।

1. पतरस (यूहन्ना 13:36)
2. थोमा (यूहन्ना 14:5)
3. फिलिप्पुस (यूहन्ना 14:8)
4. यहूदा (इस्करियोती नहीं) (यूहन्ना 14:22)
5. उसके कुछ चेले (यूहन्ना 16:17-19)

13:31 "मनुष्य के पुत्र की" यह यीशु का चुना हुआ स्व-पदनाम था। यहेजकेल 2:1 और दानिय्येल 7:13 की पृष्ठभूमि है। इसका तात्पर्य मानवीय और दिव्य विशेषताओं से है। यीशु ने इसका प्रयोग किया क्योंकि यह शब्द रब्बियों के यहूदी धर्म में अप्रयुक्त था, इसलिए, इसका कोई राष्ट्रीय या सैन्य प्रभाव नहीं था और यह उसके दो स्वभावों का मेल करता था (तुलना 1 यूहन्ना 4:1-3)।

13:32 इस पद में एक यूनानी पांडुलिपि का प्रकार है। लंबा पाठ NASB, NKJV, NRSV, TEV और NJB में पाया जाता है। यह $\aleph^c$, A, C^2, K, की पांडुलिपियों और टेक्स्टस रिसेप्टस द्वारा समर्थित है। यह ("यदि उसमें परमेश्वर की महिमा हुई है") को MSS P^{66}, $\aleph^*$, B, C^*, D, L, W, और X में छोड़ दिया गया है। ये पांडुलिपियों का बेहतर समूह प्रतीत होता है। लेकिन यह संभव है कि समानांतरवाद के कारण शास्त्री भ्रमित हो गये और पहले वाक्यांश को छोड़ दिया।

▣ **"महिमा हुई है"** इस शब्द का प्रयोग यूहन्ना 13:31और 32 में चार या पाँच बार किया गया है- दो या तीन बार अनिर्दिष्टकाल में और दो बार भविष्य काल में। यह यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से परमेश्वर की छुटकारे की योजना को संदर्भित करता है। (यूहन्ना 7:39; 12:16,23; 17:1,5)। यहाँ यह यीशु के जीवन में आने वाली घटनाओं को संदर्भित करता है। उनका होना इतना निश्चित है कि उन्हें इस प्रकार व्यक्त किया जाता है जैसे कि वे पिछली घटनाएँ हो (अनिर्दिष्टकाल)। यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

13:33 "हे बालको" यूहन्ना, इफिसुस के शहर या क्षेत्र के एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में लिखते हुए, 1 यूहन्ना 2: 1,12,28 3:7,18; 4:4; 5:21 में अपने श्रोताओं/पाठकों को संबोधित करने के लिए इसी शीर्षक का प्रयोग करता है; यहाँ, यीशु का रूपक पिता के साथ उसकी पहचान करने का एक और तरीका है। वह पिता, भाई, उद्धारकर्ता, मित्र और प्रभु है। या इसे दूसरे तरीके से कहें, तो वह उत्कृष्ट देवता और अंतनिर्हित साथी है।

▣ **"मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ और जैसा मैंने यहूदियों से कहा"** यीशु ने यह बात यहूदी अगुवों से कई महीने पहले कही थी (तुलना यूहन्ना 7:33); अब वह इसे अपने प्रेरितों से कहता है (तुलना यूहन्ना 12:35; 14:19; 16:16-19)। इसलिए, यह स्पष्ट है कि समय तत्व कुछ अस्पष्ट है।

▣ **"जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते"** यहूदी अगुवे बिल्कुल नहीं आ सकते (तुलना यूहन्ना 7:34,36; 8:21)। चेले तब तक उसके साथ नहीं रह सकते जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो जाती। मृत्यु, या आकाश में उठाया जाना, उसके अनुयायियों को उसके साथ एक कर देगा (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:8; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)।

13:34 " मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो" "एक दूसरे से प्रेम रखना" एक नई आज्ञा नहीं थी (तुलना लैव्यव्यवस्था 19:18; "आज्ञा" के लिए यूहन्ना 12:50 पर विशेष विषय देखें) । नया क्या था कि विश्वासी एक दूसरे से प्रेम करें जैसा यीशु ने उनसे प्रेम किया (तुलना यूहन्ना 15:12,17; 1 यूहन्ना 2:7-8; 3: 11,16,23; 4:7-8,10-12,19-20; 2 यूहन्ना 5)।

सुसमाचार का स्वीकार किया जाने वाला व्यक्ति, विश्वास किए जानेवाले सत्यों का समूह और जीने के योग्य जीवन है (तुलना यूहन्ना 14:15,21,23; 15:10,12; 1 यूहन्ना 5:3; 2 यूहन्ना 5, 6; लूका 6:46)। सुसमाचार को ग्रहण किया जाता है, उस पर विश्वास किया जाता है, और जिया जाता है! इसे प्रेम से जिया जाता है या जिया नहीं जाता है!

मुझे ब्रूस कॉर्ले की हेर्मेनेयुटिक्स की पुस्तक *Foundations For Biblical Interpretation* में उनके लेख "Biblical Theology of the New Testament" में उनका कथन पसंद है: " प्रेम की नैतिकता मसीही लोगों की विशेषता है, जबकि अनुग्रह का 'होना' आत्मा के काम के माध्यम से प्रेम के 'होना चाहिए' से जुड़ा हुआ है (तुलना गलातियों 5: 6,25; 6:2; याकूब 3:17-18; यूहन्ना 13:34-35; 1 यूहन्ना 4:7)" (पृ.562)।

13:35 "इसी से सब जानेगें कि तुम मेरे चेले हो" प्रेम एक ऐसी विशेषता है जिसमें शैतान जालसाजी नहीं कर सकता। प्रेम विश्वासियों की विशेषता होनी चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 3:14; 4:7-21)।

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। अन्य मसीहियों के प्रति हमारा व्यवहार यीशु के साथ हमारे संबंधों की पुष्टि करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:9-11; 4:20-21)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 13:36-38
36शमौन पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, तू कहाँ जाता है?" यीशु ने उत्तर दिया, "जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तू अभी
मेरे पीछे आ नहीं सकता; परन्तु इसके बाद मेरे पीछे आएगा।" 37पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे
क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दे दूँगा।" 38यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू मेरे लिए अपना प्राण
देगा? मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि मुर्ग़ा बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा।

13:36 "शमौन पतरस ने उससे कहा" यह यूहन्ना 13:31-35 में यीशु के कथनों के बारे में चेलों के सवालों की एक श्रृंखला में पहला है: (तुलना यूहन्ना 13:36; 14:5,8,22; 16:17-19)। मुझे खुशी है कि इन चेलों ने ये सवाल पूछे और यूहन्ना ने उन्हें याद करके और उन्हें दर्ज़ किया!

13:37 "मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दे दूँगा" पतरस का यही अर्थ था! लेकिन यह दर्शाता है कि मानव जाति कितनी कमजोर है और हमारा प्रभु, जिसने वास्तव में ऐसा किया, कितना प्रतिबद्ध है।

13:38 "सच, सच" यूहन्ना 1:51 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"मुर्ग़ा बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इंकार न कर लेगा"** यह रोमी मुर्ग़ा होगा। यहूदी नगर में जानवरों की अनुमति नहीं देते थे क्योंकि वह पवित्र भूमि थी। यही कारण है कि अधिकांश धनाढ्य लोगों के शहरपनाह के बाहर जैतून के पहाड़ पर बाग (जिनमें उर्वरक की जरूरत होती है) थे। गतसमनी का बगीचा ऐसा ही एक बाग था।

यीशु स्वयं में विश्वास को प्रोत्साहित करने के लिए भविष्यवाणी का प्रयोग कर रहा है। यहाँ तक कि इतना नकारात्मक कथन उसके ज्ञान और भविष्य की घटनाओं पर उसके नियंत्रण को प्रगट करता है (तुलना यूहन्ना 18: 17-18, 25-27; मत्ती 26:31-35 मरकुस 14:27-31; लूका 22:31-34) ।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यूहन्ना ने प्रभुभोज के वास्तविक अनुष्ठान को क्यों दर्ज नहीं किया है?
2. यीशु ने चेलों के पाँव क्यों धोए? क्या हमें एक दूसरे के पाँव धोने चाहिए?
3. यीशु ने यहूदा को अपने चेले के रूप क्यों चुना?
4. कोई कैसे यह जान सकता है कि वह एक मसीही है?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 14

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु, पिता तक पहुँचने का मार्ग	मार्ग, सत्य, और जीवन	महिमामंडित मसीह के साथ विश्वासी का संबंध	यीशु, पिता तक पहुँचने का मार्ग	विदाई संदेश (13:31-14:31)
14:1-14	14:1-6	14:1-7	14:1-4	14:1-4
			14:5	14:5-7
	पिता का प्रकट किया जाना		14:6-7	
	14:7-11			
		14:8-14	14:8	14:8-21
	उत्तरित प्रार्थना		14:9-14	
	14:12-14			
आत्मा की प्रतिज्ञा	यीशु एक और सहायक की प्रतिज्ञा करता है		पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा	
14:15-24	14:15-18	14:15-17	14:15-17	
	पिता और पुत्र का वास करना	14:18-24	14:18-20	
	14:19-24			
			14:21	
			14:22	14:22-31
	उसकी शांति का उपहार		14:23-24	
14:25-31	14:25-31	14:25-31	14:25-26	
			14:27-31a	
			14:31b	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

यूहन्ना 14:1-31 की पृष्ठभूमि

A. यूहन्ना 13 से 17 तक कोई अध्याय विभाजन नहीं होना चाहिए क्योंकि यह एक साहित्यिक इकाई है, जो प्रभुभोज की रात अटारी का संवाद है। यह स्पष्ट है कि यीशु के दूर जाने के कथनों के कारण चेलों के पास कई प्रश्न थे। यह संदर्भ प्रेरितों के यीशु के शब्दों की गलतफहमी पर आधारित इन प्रश्नों की एक श्रृंखला पर बनाया गया है।
   1. पतरस (यूहन्ना 13:36)
   2. थोमा (यूहन्ना 14:5)
   3. फिलिप्पुस (यूहन्ना 14:8)
   4. यहूदा (इस्करियोती नहीं) (यूहन्ना 14:22)
   5. उसके कुछ शिष्य (यूहन्ना 16:17-19)

   याद रखें, यूहन्ना सत्य को प्रकट करने के लिए संवाद का प्रयोग करता है!

B. ये प्रश्न अभी भी विश्वासियों के सहायक हैं।
   1. वे दिखाते हैं कि प्रेरित भी, जो शारीरिक रूप से यीशु के साथ रहते थे, उसे हमेशा समझ नहीं पाते थे।
   2. गलतफहमी के इन उचित सवालों के जवाब में यीशु के द्वारा कुछ सबसे अनमोल और गहन शब्द कहे गए हैं।

C. अध्याय 14 यीशु की आने वाले "सहायक" की चर्चा शुरू करता है।
   1. इस अटारी के संदेश में पवित्र आत्मा के बारे में यीशु के संदर्भ चेलों के यीशु के छोड़ने से संबंधित डर और चिंता से सीधे संबंधित (और सीमित) हैं (तुलना यूहन्ना 13:33,36)।
      Michael Magill, *New Testament TransLine* (p. 355) में इन आशंकाओं के बारे में यीशु के प्रासंगिक उत्तर की एक व्यावहारिक रूपरेखा है।
      a. "जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ तुम भी एक दिन मेरे साथ होगे," यूहन्ना 14:1-11
      b. "यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि मैं जाऊँ," यूहन्ना 14:12-17
      c. “में तुम्हारे पास आऊँगा जहाँ तुम हो और अपने आप को तुम पर प्रकट करूँगा,” यूहन्ना 14:18-26
      d. "अब मैं तुम्हें अपनी शांति दिए जाता हूँ," यूहन्ना 14:27-31
   2. पवित्र आत्मा की सेवकाई की यह चर्चा सीमित दायरे में है। उसकी सेवकाई के कई ऐसे महत्त्वपूर्ण पहलू हैं जिनकी इस संदर्भ में बिल्कुल भी चर्चा नहीं की गई है
   3. आत्मा के कार्य का
      a. सत्य को प्रकट करनेवाले और
      b. व्यक्तिगत दिलासा देनेवाले के रूप में जोर दिया गया है

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 14:1-7

[1]"तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। [2]मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए एक जगह तैयार करने जाता

हूँ। [3]और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो। [4]जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो" [5]थोमा ने उससे कहा, "हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जा रहा है, तो मार्ग कैसे जाने?" [6]यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता। [7]यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते; और अब उसे जानते हो और उसे देखा भी है।"

14:1 "न हो" यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्मवाच्य आज्ञार्थक है जिसे रोकने के लिए सामान्य तौर पर इसका अर्थ है उस कार्य को रोकना जो पहले से ही प्रक्रिया में है। "अपने मनों को व्याकुल न होने दो" यीशु की छोड़ने के बारे में की गई टिप्पणियों ने बड़ी चिंता उत्पन्न की।

▣ **"तुम्हारा मन"** बहुवचन की ओर ध्यान दें। यीशु सभी ग्यारहों से बोल रहा था। "मन" का इब्रानी प्रयोग पूरे व्यक्ति को दर्शाता है: मन,इच्छा, और भावनाएँ (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:5; मत्ती 22:37)। यूहन्ना 12:40 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो"** ये या तो दो वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक हैं (NASB, REB) या दो वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं या दोनों का एक संयोजन है (NKJV, NJB और NET बाइबल का कहना है कि पहला निर्देशात्मक है और दूसरा आज्ञार्थक है) । भरोसा अविरत और स्वाभाविक है। इस पद की व्याकरणिक रूप से संतुलित संरचना से पता चलता है कि यीशु परमेश्वर के साथ समानता का दावा कर रहा है। यह भी याद रखें कि कई यहूदी थे जो एकेश्वरवाद के लिए प्रतिबद्ध थे (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:4-6) और फिर भी उन्होंने यीशु के कथन के निहितार्थ को मान्यता दी (विशेष विषय: त्रिएकत्व यूहन्ना 14:26 पर देखें)। सर्वोच्च जन में विश्वास करना एक बात है और एक मसीही होना बिलकुल दूसरी बात है। यह वाक्यांश एक सैद्धांतिक पंथ पर नहीं, बल्कि यीशु मसीह के व्यक्ति पर केंद्रित है।

14:2 "मेरे पिता के घर में" "घर" का प्रयोग पुराने नियम के तम्बू या मंदिर के लिए किया गया है (तुलना 2 शमूएल 7), हालांकि, इस संदर्भ में स्पष्ट रूप से इसका अर्थ स्वर्ग में परमेश्वर का पारिवारिक आवास या उसके साथ उसके मंदिर में रहना है (तुलना भजनसंहिता 23:6; 27:4-6)।

NASB, NRSV "रहने के स्थान"
NKJV "भवन"
TEV "कमरे"
NJB "कई स्थान"

KJV अनुवाद, "भवन", बहकाने वाला है। यूनानी शब्द का अर्थ था "स्थायी निवास स्थान" (तुलना यूहन्ना 14:23) बिना किसी प्रचुरता के विचार के। कल्पना यह है कि विश्वासियों के पिता के घर में सभी के अपने कमरे होंगे (तुलना TEV, NJB), एक बोर्डिंग हाउस की तरह, जहाँ प्रतिदिन सब एक साथ भोजन करते हैं।

यह भी दिलचस्प है कि यह उसी यूनानी मूल "बने रहना" से है जो यूहन्ना में एक प्रमुख अवधारणा है (तुलना अध्याय 15)। पिता के साथ हमारा वास पुत्र में बने रहने के साथ पूर्ण होता है।

▣ **"यदि"** यह एक आंशिक द्वितीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। वहाँ कई कमरे उपलब्ध हैं। इस वाक्यांश का अनुवाद करना कठिन है।

NASB, REB,
NIV "यदि न होते तो मैं तुम से कह देता"
NKJV "यदि न होते तो मैं तुम से कह देता"
TEV "यदि न होते तो मैं तुम से नहीं कहता"
NJB, NET "नहीं तो मैं तुम से कह देता"
Young's literal
translation "और यदि नहीं, तो मैं तुम से कह देता"
New Berkeley
Version "यदि ऐसा न होता, तो मैं तुम से कह देता"

Williams Translation **"यदि वहाँ न होते, तो मैं तुम से कह देता"**

▣ **"मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ"** इसका मतलब यह नहीं है कि स्वर्ग, भौतिक अर्थ में, इससे पहले तैयार नहीं था, लेकिन यह कि यीशु का जीवन, शिक्षाएँ, और मृत्यु पापी मानवजाति को एक पवित्र परमेश्वर तक पहुँचने और उसके साथ वास करने देती है।" यीशु विश्वासियों से आगे उनका मार्गदर्शक और अग्रदूत के रूप में जाता है (तुलना इब्रानियों 6:20)।

14:3 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। यीशु ने उन्हें बताया कि वह जल्द ही पिता के पास लौट रहा है (यानी, यूहन्ना 7:33;16:5,10,17,28) और वह उनके लिए जगह तैयार करेगा।

The *Help for Translators* from United Bible Societies on John by Newman and Wider कहती है कि इस वाक्य खंड को "मेरे जाने के बाद" या "जब मैं जाता हूँ" या "क्योंकि मैं जाता हूँ" (p. 456) के एक सामयिक अर्थ में समझा जाना चाहिए।

▣ **"तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा"** यह दूसरे आगमन या मृत्यु (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:8; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18) को संदर्भित करता है। यीशु के साथ आमने-सामने होने वाली संगति, यीशु की और पिता की संगति को दर्शाती है (तुलना यूहन्ना 1:1,2)। मसीही यीशु और पिता के बीच अंतरंगता में भाग लेंगे (यूहन्ना 14:23; 17:1ff)।

यहाँ इस्तेमाल की जाने वाली क्रिया, ले जाऊँगा (*paralambanō*), जिसका अर्थ है "किसी व्यक्ति का स्वागत करना"। स्वर्ग परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संगति है। यह यूहन्ना 1:12 (*lambanō*) से अलग है। इन दो शब्दों के सटीक अर्थसम्बन्धी अतिव्याप्ति का पता लगाना कठिन है; ये अक्सर पर्यायवाची हैं।

▣ **"जहाँ मैं रहूँ, वहाँ तुम भी रहो"** स्वर्ग वह स्थान है जहाँ यीशु है (तुलना यूहन्ना 17:24)! स्वर्ग वास्तव में त्रिएक परमेश्वर के साथ आमने-सामने संगति है! नया नियम इस विषय में अस्पष्ट है कि वास्तव में पूर्ण संगति कब होती है।

1. मृत्यु के समय, 2 कुरिन्थियों 5: 8
2. दूसरे आगमन पर, 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18

बाइबल मरणोत्तर जीवन के बारे में आश्चर्यजनक रूप से मौन है। एक अच्छी संक्षिप्त पुस्तक है William Hendrickson's, *The Bible On the Life Hereafter.*

विशेष विषय: मृतक, कहाँ हैं वे? (*SHEOL/HADES, GEHENNA, TARTARUS*) (SPECIAL TOPIC: THE DEAD, WHERE ARE THEY? *(SHEOL/HADES, GEHENNA, TARTARUS)*)

I. पुराना नियम
   A. सभी मनुष्य *Sheol* (कोई सजाति मूल नहीं हैं और व्युत्पत्ति अनिश्चित है, BDB 982, KB 1368) में जाते हैं, जो अधिकतर ज्ञान साहित्य और यशायाह में उस जगह का जिक्र करने का एक तरीका था जहाँ मृतक जीवित रहते हैं या कब्र, पुराने नियम में यह एक अस्पष्ट, सचेत, लेकिन आनंदविहीन अस्तित्व था (तुलना अय्यूब 10:21-22; 38:17)
   B. *Sheol* की विशेषता है
      1. परमेश्वर के न्याय (अग्नि) से जुड़ा, व्यवस्थाविवरण 32:22
      2. एक कारावास जिसके फाटक हों , अय्यूब 38:17; भजनसंहिता 9:13; 107:18
      3. ऐसा देश जहाँ से लौटा न जा सके, अय्यूब 7:9 (मृत्यु के लिए एक अक्कादी शीर्षक)
      4. अन्धकार का देश / क्षेत्र, अय्यूब 10:21-22; 17:13; 18:18
      5. मौन का स्थान, भजनसंहिता 28:1; 31:17; 94:17; 115:17; यशायाह 47: 5
      6. न्याय के दिन से पहले ही सजा से संबंधित, 18:4-5
      7. *abaddon* (विनाश; विशेष विषय: *ABADDON. . .APOLLYON* देखें) से संबंधित जिसमें परमेश्वर भी उपस्थित है, अय्यूब 26:6; भजनसंहिता 139:8; आमोस 9:2
      8. "अधोलोक" (कब्र) से संबंधित, भजनसंहिता.16:10; 88:3-4; यशायाह 14:15; यहेजकेल 31:15-17
      9. दुष्ट जीवित ही *Sheol* में उतरते हैं, गिनती 16:30,33; अय्यूब 7: 9; भजनसंहिता 55:15

10. अक्सर एक मुँह पसारे हुए जानवर के रूप में मानवीकरण, गिनती 16:30; नीतिवचन 1:12; यशायाह 5:14; हबक्कूक 2:5
11. वहाँ के लोग *Repha'im* (अर्थात्, "मृतकों की आत्माएँ") कहलाते हैं, अय्यूब 26:5; नीतिवचन 2:18; 21:16; 26:14 यशायाह 14: 9-11)
12. हालाँकि, YHWH यहाँ भी मौजूद है, अय्यूब 26: 6; भजनसंहिता 139: 8; नीतिवचन 15:11

II. नया नियम
   A. इब्रानी *Sheol* का अनुवाद यूनानी *Hades* (अनदेखी दुनिया) द्वारा किया गया है।
   B. Hades की विशेषता है (काफी कुछ *Sheol* की तरह)
      1. मृत्यु को संदर्भित करता है, मत्ती 16:18
      2. मृत्यु से संबंधित प्रकाशितवाक्य 1:18; 6: 8; 20:13-14
      3. अक्सर स्थायी सजा के स्थान (*Gehenna*) के सदृश, मत्ती 11:23 पुराने नियम का उद्धरण); लूका 10:15; 16: 23-24
      4. अक्सर कब्र के सदृश, लूका 16:23
   C. संभवतः विभाजित (रब्बी)
      1. धर्मी भाग जिसे Paradise कहा जाता है (स्वर्ग का दूसरा नाम, तुलना 2 कुरिन्थियों 12: 4; प्रकाशितवाक्य 2:7), लूका 4: 43
      2. दुष्ट भाग जिसे Tartarus कहा जाता है, Hades से नीचे एक ठहरने का स्थान, 2 पतरस 2: 4, जहाँ यह दुष्ट स्वर्गदूतों के लिए एक ठहरने का स्थान है (तुलना उत्पत्ति 6; I हनोक)। यह "अथाह कुण्ड" के साथ जुड़ा हुआ है, लूका 8:31; रोमियों 10:7; प्रकाशितवाक्य 9: 1-2,11; 11:7; 17:18; 20:1,3
   D. Gehenna
      1. पुराने नियम के वाक्यांश को प्रतिबिंबित करता है, "हिन्नोम के बेटे की तराई," (यरूशलेम के दक्षिण में)। यह वह स्थान था जहाँ फोनीशियाई अग्नि देवता, *Molech* (BDB 574, KB 591) की, बाल बलिदान द्वारा आराधना की जाती थी (तुलना 2 Kgs 16: 3; 21: 6; 2 Chr I 28: 3; 33: 6), जो लैव्यव्यवस्था 18:21; 20:2-5 में निषिद्ध था।
      2. यिर्मयाह ने इसे मूर्तिपूजा के स्थान से YHWH के न्याय के स्थल में बदल दिया (तुलना यिर्मयाह 7: 32; 19: 6-7)। यह I Enoch 90: 26-27 और सिब. 1:103 में उग्र, अनंत न्याय का स्थान बन गया।
      3. यीशु के दिन के यहूदी उनके पूर्वजों के द्वारा बाल बलिदान के माध्यम से मूर्तिपूजा में भाग लेने से इतने स्तम्भित हुए, कि उन्होंने इस क्षेत्र को यरूशलेम के लिए कचरे के मैदान में बदल दिया। अनंत न्याय के लिए यीशु के कई रूपक इस अपशिष्ट भराव क्षेत्र (आग, धुआँ, कीड़े, बदबू, तुलना मरकुस 9:44,46) से आए थे। *Gehenna* शब्द का प्रयोग केवल यीशु (याकूब 3: 6 को छोड़कर) द्वारा किया गया है।
      4. यीशु के द्वारा *Gehenna* का प्रयोग
         a. आग, मत्ती 5:22, 18:9; मरकुस 9:43
         b. स्थायी, मरकुस 9:48 (मत्ती 25:46)
         c. विनाश का स्थान (आत्मा और शरीर दोनों), मत्ती 10:28
         d. *Sheol* के समानांतर, मत्ती 5:29-30; 18:9
         e. दुष्टों को "नरक का पुत्र" के रूप में चित्रित करता है, मत्ती 23:15
         f. न्यायिक दंडाज्ञा का परिणाम, मत्ती 23:33, लूका 12:5
         g. *Gehenna* की अवधारणा दूसरी मृत्यु के समानांतर है (तुलना प्रकाशितवाक्य 2:11; 20: 6,14) या आग की झील (तुलना मत्ती 13: 42,50; प्रकाशितवाक्य 19:20; 20: 14-15; 21:8)। यह संभव है कि आग की झील मनुष्यों (*Sheol* से) और दुष्ट स्वर्गदूतों (*Tartarus* से, 2 पतरस 2:4; यहूदा 1:6 या अथाह कुण्ड, तुलना लूका 8:31; प्रकाशितवाक्य 9:1-11; 20:1,3) का स्थायी निवासस्थान बन जाती है।
         h. यह मनुष्यों के लिए नहीं, बल्कि शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए बनाया गया था, मत्ती 25:41
   E. *Sheol, Hades* और *Gehenna* की अतिव्याप्ति के कारण यह संभव है कि

1. मूल रूप से सभी मनुष्य *Sheol/Hades* में गए थे
2. वहाँ उनका अनुभव (अच्छा / बुरा) न्याय के दिन के बाद और तीक्ष्ण हो गया है, लेकिन दुष्टों का स्थान वही बना रहा (यही कारण है कि KJV ने *hades* (कब्र) को *gehenna* (नरक) के रूप में अनुवादित किया है
3. न्याय से पहले पीड़ा का उल्लेख करने वाला एकमात्र नये नियम का पाठ लूका 16:19-31 में (लाजर और धनी मनुष्य) का दृष्टांत है। *Sheol* को अब दण्ड का स्थान भी कहा जाता है (तुलना व्यवस्थाविवरण 32:22; भजनसंहिता 18: 1-5)। हालाँकि, कोई दृष्टान्त पर एक सिद्धांत स्थापित नहीं कर सकता है।

III. मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच मध्यवर्ती स्थिति

A. नया नियम "आत्मा की अमरता" नहीं सिखाता है, जो कि मरणोत्तर जीवन के कई प्राचीन विचारों में से एक है, जो यह दावे के साथ कहता है कि
   1. मानव आत्माएँ उनके भौतिक जीवन से पहले मौजूद हैं
   2. शारीरिक मृत्यु के पहले और बाद में मानव आत्माएँ अनन्त हैं
   3. अक्सर भौतिक शरीर को कारागार और मृत्यु को पूर्व-अस्तित्व अवस्था में वापस छोड़ने के रूप में देखा जाता है

B. नया नियम मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच एक देहमुक्त अवस्था की ओर संकेत करता है
   1. यीशु शरीर और आत्मा के बीच एक विभाजन की बात करता है, मत्ती 10:28
   2. अब्राहमक के पास पहले से ही एक शरीर हो सकता है, मरकुस 12:26-27; लूका 16:23
   3. मूसा और एलिय्याह रूपान्तर के समय एक भौतिक शरीर में हैं, मत्ती 17
   4. पौलुस का दावा है कि मसीह के दूसरे आगमन के पर विश्वासियों को उनके नए शरीर पहले मिलेंगे, 1 थिस्सलुनीकियों 4: 13-18
   5. पौलुस का दावा है कि विश्वासियों को पुनरुत्थान के दिन पर अपने नए आत्मिक शरीर मिलते हैं, 1 कुरिन्थियों 15:23,52
   6. पौलुस का दावा है कि विश्वासी लोग Hades नहीं जाते हैं, लेकिन मृत्यु के समय यीशु के साथ होते हैं, 2 कुरिन्थियों 5: 6,8; फिलिप्पियों 1:23। यीशु ने मौत को मात दी और धर्मी को अपने साथ स्वर्ग ले गया, 1 पतरस 3:18-22।

IV. स्वर्ग

A. यह शब्द बाइबल में तीन अर्थों में प्रयोग किया गया है।
   1. पृथ्वी के ऊपर का वातावरण, 1:1,8; यशायाह 42:5; 45:18
   2. ज्योतियों का आकाश, उत्पत्ति 1:14; व्यवस्थाविवरण 10:14; भजनसंहिता 148: 4; इब्रानियों 4:14; 7:26
   3. परमेश्वर के सिंहासन का स्थान, व्यवस्थाविवरण 10:14; 1 राजाओं 8:27; भजनसंहिता 148: 4; इफिसियों 4:10; इब्रानियों 9:24 (तीसरा स्वर्ग, 2 कुरिन्थियों 12:2)

B. बाइबल में मरणोत्तर जीवन के बारे में बहुत कुछ नहीं बताया गया है, शायद इसलिए कि पतित मनुष्यों के पास समझने का कोई तरीका या क्षमता नहीं है (तुलना 1 कुरिन्थियों 2:9)।

C. स्वर्ग एक स्थान (तुलना यूहन्ना 14:2-3) और एक व्यक्ति (तुलना 2 कुरिन्थियों 5: 6,8) दोनों है। स्वर्ग एक पुनर्स्थापित अदन की वाटिका हो सकता है (उत्पत्ति 1-2; प्रकाशितवाक्य 21-22)। पृथ्वी को स्वच्छ और पुनर्स्थापित किया जाएगा (तुलना प्रेरितों के काम 3:21; रोमियों 8:21; 2 पतरस 3:10)। परमेश्वर का स्वरूप (उत्पत्ति 1:26-27) मसीह में पुनर्स्थापित किया गया है। अब अदन की वाटिका की अंतरंग संगति फिर से संभव है।

   हालांकि, यह रूपक हो सकता है (प्रकाशितवाक्य 21:9-27 के विशाल, वर्गाकार शहर के रूप में स्वर्ग) शाब्दिक नहीं। 1 कुरिन्थियों 15 भौतिक शरीर और आत्मिक शरीर के बीच अंतर को बीज और परिपक्व पौधे के रूप में वर्णित करता है। फिर से, 1 कुरिन्थियों 2:9 (यशायाह 64:4 और 65:17 का एक उद्धरण) एक महान वादा और आशा है! मुझे पता है कि जब हम उसे देखेंगे तो हम उसके समान होंगे (तुलना 1 यूहन्ना 3:2)।

V. सहायक संसाधन
   A. William Hendriksen, *The Bible On the Life Hereafter*
   B. Maurice Rawlings, *Beyond Death's Door*

14:4 "तुम वहाँ का मार्ग जानते हो" यीशु का कथन थोमा के मार्ग जानने के बारे में संदेह व्यक्त करने का कारण बनता है। पुराने नियम में अक्सर प्रयोग किए जाने वाले तीन शब्दों में यीशु का उत्तर व्यक्त किया गया है।

14:6 "मार्ग मैं हूँ" पुराने नियम में, बाइबल के विश्वास को एक जीवन शैली पथ के रूप में कहा जाता था (तुलना व्यवस्थाविवरण 5:32-33; 31:29; भजनसंहिता 27:11; यशायाह 35:8)। प्रारंभिक कलीसिया का नाम "मार्ग" था (तुलना प्रेरितों के काम 9:2; 19:9,23; 24:14,22)। यीशु इस बात पर जोर दे रहा था कि वह परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है। यह यूहन्ना के सुसमाचार का धर्मशास्त्रीय सार है! जीवनशैली के अच्छे कार्य व्यक्तिगत विश्वास का प्रमाण है (तुलना इफिसियों 2:8-9,10), धार्मिकता का एक साधन नहीं। यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"सत्य"** यूनानी दर्शन में शब्द "सत्य" का लक्ष्यार्थ था "सत्य" बनाम "असत्य" या "वास्तविकता" बनाम "भ्रांति"। हालाँकि, ये अरामी भाषी चेले हैं जिन्होंने यीशु को सत्य के पुराने नियम के अर्थ में बोले जाने को समझ लिया होगा जो कि "विश्वासयोग्यता" या "निष्ठा" था (तुलना भजनसंहिता 26: 3; 86:11; 119: 30)। "सत्य" और "जीवन" दोनों "मार्ग" की विशेषता बताते हैं। "सत्य" शब्द का प्रयोग अक्सर यूहन्ना में दिव्य गतिविधि का वर्णन करने के लिए किया गया है (तुलना यूहन्ना 1:14; 4:23-24; 8:32; 14:17; 15:26; 16:13; 17: 17,19) । यूहन्ना 6:55 और 17:3 में सत्य पर विशेष विषय देखें।

▣ **"जीवन"** "जीवन" *zoā* है, जिसका प्रयोग यूहन्ना ने नए युग के जीवन का वर्णन करने के लिए किया है। पुराने नियम में, एक विश्वासी के जीवन शैली के विश्वास को जीवन की ओर ले जाने वाले मार्ग के रूप में बोला जाता है (तुलना भजनसंहिता 16:11; नीतिवचन 6:23; 10:17)।ये सभी तीन शब्द जीवनशैली के विश्वास से संबंधित हैं जो केवल यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंध में पाया जाता है।

▣ **"बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता"** कितना चौंकाने वाला दावा है! यह बहुत ही प्रतिबंधात्मक है लेकिन यह भी स्पष्ट है कि यीशु का मानना था कि केवल स्वयं के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के माध्यम से कोई परमेश्वर को जान सकता है (तुलना 1 यूहन्ना 5:10-12)। इसे अक्सर मसीहत का अलगाववादी कलंक कहा जाता है। यहाँ बीच का कोई तर्क नहीं है। यह कथन सत्य है या मसीहत झूठा है! कई मायनों में यह यूहन्ना 10 के समान है

14:7 "यदि" इसमें पांडुलिपि का एक प्रकार है जो प्रतिबंधात्मक वाक्य के प्रकार से जुड़ा हुआ है। यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज का यूनानी पाठ प्रथम श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य का समर्थन करता है, जैसा कि प्राचीन यूनानी पांडुलिपियाँ P^{66}, ℵ, और D भी करती हैं। तब इसका अनुवाद होगा "यदि तुम ने मुझे जाना होता और जानते भी हो, तो तुम मेरे पिता को जानते, जो तुम जानते हो।"

यह एक द्वितीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य हो सकता है जिसे अक्सर "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है।तब अनुवाद होगा "यदि तुम ने मुझे जाना होता, जो तुम नहीं जानते, तो तुम मेरे पिता भी जानते, जो तुम नहीं जानते।" यह पांडुलिपियों, A, B, C, D^b, K, L, और X द्वारा समर्थित है। यह एक मुश्किल कथन है क्योंकि हम मानते हैं कि प्रेरितों ने पहले ही यीशु पर YHWH के द्वारा भेजे गए मसीहा के रूप में उद्धार के लिए विश्वास किया था। यह नया और अंततः विशिष्ट सत्य उनको समझने के लिए बहुत कठिन रहा होगा। यूहन्ना रचित सुसमाचार विश्वास के स्तरों की बात करता हुआ प्रतीत होता है। संदर्भ द्वितीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक का समर्थन करता है। यह भी ध्यान दें यूहन्ना 14:2 और 28 में यही शर्त है।

▣ **"तुम ने मुझे जाना होता"** यीशु पूरे प्रेरितों के समूह को फिर से संबोधित कर रहा है (तुलना यूहन्ना 14:9)। शब्द "जाना" का प्रयोग पुराने नियम के अर्थ में किया गया है, जो अंतरंग व्यक्तिगत संबंध की बात करता है, न कि केवल ज्ञानात्मक ज्ञान (तुलना उत्पत्ति 4:1; यिर्मयाह 1:5)।

▣ **"तो मेरे पिता को भी जानते"** यीशु को देखना परमेश्वर को देखना है (तुलना यूहन्ना 1:14-11; 5:24; 12:44-45; 2 कुरिन्थियों 4:4; कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:3)! यीशु अदृश्य परमेश्वर का सिद्ध प्रकटीकरण है। यीशु को अस्वीकार करने वाला कोई भी व्यक्ति परमेश्वर को जानने का दावा नहीं कर सकता (तुलना 1 यूहन्ना 5:9-12)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 14:8-14
8फिलिप्पुस ने उसे कहा, "हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, यही हमारे लिए बहुत है।" 9यीशु ने उससे कहा, "हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा? 10क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। 11मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो। 12मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ, वह भी करेगा, वरन इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। 13जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। 14यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा।

14:8 "फिलिप्पुस ने उसे कहा" स्पष्ट रूप से फिलिप्पुस (1) परमेश्वर का एक दर्शन (ईश्वर प्रभास) कुछ हद तक मूसा, यशायाह, या यहेजकेल की तरह चाहता था या (2) उसने यीशु के शब्दों को पूर्ण रूप से गलत समझ लिया। यीशु ने पुष्टि करते हुए उत्तर दिया कि जब फिलिप्पुस ने उसे देखा और जाना है, तो उसने परमेश्वर को देखा और जाना है (तुलना कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:3)!

NASB	**"यही हमारे लिए बहुत है"**
NKJV	**"यही हमारे लिए पर्याप्त है"**
NRSV	**"हम संतुष्ट हो जाएँगे"**
TEV	**"हमें सिर्फ इतना चाहिए"**
NJB	**"तो हम संतुष्ट हो जाएँगे"**

ये चेले फरीसियों की तरह ही एक प्रकार की पुष्टि चाहते थे। हालाँकि, विश्वासियों को आत्मिक मामलों में विश्वास से चलना चाहिए और दृष्टि पर निर्भर नहीं होना चाहिए (तुलना 2 कुरिन्थियों 4:18; 5:7)। भरोसा मुद्दा है!

14:9 "मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ" ध्यान दें कि यह बहुवचन है। फिलिप्पुस ने वह प्रश्न पूछा जो उनमें से हर एक सोच रहा था।

▣ **"जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है"** यह एक आदर्श कर्तृवाच्य कृदंत है और एक पूर्ण कर्तृवाच्य क्रिया है जिसका अर्थ है "देखा है और देखना जारी है।" यीशु पूर्णतः देवता को प्रकट किया (तुलना कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1: 3)।

14:10 यूनानी में यीशु का प्रश्न "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है। विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "बने रहना" 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

▣ **"तू. . .तुम"** पहला "तू" फिलिप्पुस की ओर इंगित करते हुए एकवचन है। दूसरा "तुम" बहुवचन है, जो प्रेरितों के समूह की ओर इंगित करता है (तुलना यूहन्ना 14:7,10)।

▣ **"ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता"** यीशु बातों में पिता की ओर से काम कर रहा था (तुलना यूहन्ना 14:24; 5:19,30; 7:16-18; 8: 28; 10:38; 12:49)। यीशु की शिक्षाएँ पिता ही के शब्द हैं (तुलना यूहन्ना 14:24)

▣ **"परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है"** पिता और पुत्र के बीच की यह संगति (अर्थात, यूहन्ना 7:14; 8:28; 10:38), जिस पर अध्याय 17 में यीशु की महायाजकीय प्रार्थना में जोर दिया गया है, अध्याय 15 में विश्वासियों के मसीह में "बने रहने" के लिए आधार बन जाती है। यूहन्ना के सुसमाचार में उद्धार को निम्न रूपों में प्रकट किया गया है (1) सिद्धांत; (2) संगति; (3) आज्ञाकारिता; और (4) धीरज।

14:11 "मेरा विश्वास करो" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक या वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (तुलना यूहन्ना 14:1)।

इस पद के आरम्भिक वाक्यांश में पांडुलिपि संस्करण जो कुछ महत्त्व रखता है। कुछ आरम्भिक यूनानी ग्रंथों (P^{66}, P^{75}, א, D, L, और W) में केवल क्रिया है "विश्वास करो" जिसके बाद है (*hoti*) "कि," जिसका अर्थ है कि उन्हें यीशु और पिता की एकता के बारे में सत्य को स्वीकारना है। अन्य प्राचीन ग्रंथ (MSS A और B) सम्प्रदान "मुझ में," जोड़ देते हैं जो विश्वास के

व्यक्तिगत कर्म को दर्शाता है। यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज़ के यूनानी विद्वानों का मानना है कि पहला विकल्प मूल था (तुलना Bruce M. Metzger's *A Textual Commentary on the Greek New Testament*, जो इस विकल्प को "बी" दर्ज़ा [लगभग निश्चित], p.244) देती है। अधिकांश आधुनिक अनुवाद "मुझ में" लिखते हैं, लेकिन "कि" को जोड़ देते हैं (जो विश्वास की जानेवाली विषयवस्तु को दिखाता है)।

▣ **"नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो"** यीशु उन्हें अपने कामों में विश्वास करने के लिए कहता है (तुलना यूहन्ना 5:36; 10: 25,38)। उसके कामों ने पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूर्ण किया। उसके कामों से पता चलता है कि वह कौन है! प्रेरितों को, हम सभी की तरह विश्वास में बढ़ना था।

14:12 "सच सच" यूहन्ना 1:51 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"विश्वास करता है. . .वह भी करेगा"** विश्वास करना केवल एक मानसिक गतिविधि नहीं है, बल्कि एक क्रिया-उन्मुख शब्द है। वाक्यांश "वह इनसे भी बड़े काम करेगा" एक भविष्य का कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जिसका अनुवाद किया जाना चाहिए "वह अधिक बड़े काम करेगा।" यह संभवतः संदर्भित करता है

1. भौगोलिक दायरा (तुलना मत्ती 28:18-20)
2. अन्यजाति मिशन
3. प्रत्येक विश्वासी के साथ आत्मा का होना।
4. यीशु की मध्यस्थता की प्रार्थना (तुलना इब्रानियों 7:25; 9:24)

विशेष विषय: प्रार्थना, असीमित फिर भी सीमित 1 यूहन्ना 3:22,B.2 पर देखें।

बाइबल आधारित मसीहत के लिए अंतिम वाक्यांश "वह करेगा" महत्त्वपूर्ण है। जैसे पिता ने पुत्र को भेजा, वैसे ही पुत्र ने अपने चेलों को भेजता है! "मसीह में" होना, "अनंत जीवन" पा लेने का मतलब है एक सक्रिय "महान आज्ञा" हृदय और मन। मसीहत एक पंथ या कोई चीज नहीं है जो एक बरसात के दिन के लिए हमें मिलती है। यह जीवन का एक नया अभिविन्यास है, एक नया विश्वदृष्टिकोण है! यह सब कुछ बदल देता है! यह एक साभिप्राय, दैनिक, राज्य-उन्मुख, बलिदान वाली जीवन शैली बन जाना चाहिए।

कलीसिया को फिर से हासिल करना चाहिए

1. हर विश्वासी की सेवकाई
2. महान आज्ञा की प्राथमिकता
3. दैनिक साभिप्राय निस्वार्थ सेवा
4. मसीह समान होना अभी!

14:13-14 "जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा" ध्यान दें कि यीशु का दावा है कि वह अपने चरित्र के आधार पर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। प्रेरितों के काम 7:59 में स्तिफनुस यीशु से प्रार्थना करता है। 2 कुरिन्थियों 12:8 में पौलुस यीशु से प्रार्थना करता है। यूहन्ना 15:16 और 16:23 में विश्वासियों को पिता को संबोधित करना है। यीशु के नाम में प्रार्थना करने में एक जादूई सूत्र शामिल नहीं है, जो हमारी प्रार्थना के अंत में कहा जाता है, लेकिन यीशु की इच्छा और चरित्र में प्रार्थना करना।

यह बाइबिल के विषयों पर कट्टर बयानों को देने से पहले समानांतर अवतरणों से परामर्श करने का एक अच्छा उदाहरण है। किसी को भी निम्नलिखित के साथ "जो कुछ हम माँगते हैं" को संतुलित करना चाहिए

1. "मेरे नाम से" (यूहन्ना 14:13-14; 15:7,16; 16:23)
2. "माँगते रहें" (मत्ती 7:7-8; लूका 11: 5-13; 18:1-8)
3. "दो एक मन होकर" (मत्ती 18:19)
4. "विश्वास से" (मत्ती 21:22)
5. "संदेह न करे" (मरकुस 11:22- 24; याकूब 1:6-7)
6. "बुरी इच्छा से नहीं" (याकूब 4:2-3)
7. "उसकी आज्ञाओं को मानें" (1 यूहन्ना 3:22)
8. "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार" (मत्ती 6:10; 1 यूहन्ना 5:14-15)

यीशु का नाम उनके चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। यह यीशु के मन और हृदय को संदर्भित करने का एक और तरीका है। यह वाक्यांश अक्सर यूहन्ना में दिखाई देता है (तुलना यूहन्ना 14:13-14,26; 15:16; 16:23-26)। जितना अधिक कोई मसीह जैसा है, उतनी अधिक प्रार्थनाओं के सकारात्मक उत्तर मिलने की संभावना है। सबसे बुरी बात जो परमेश्वर ज्यादातर विश्वासियों के लिए आत्मिक तौर पर कर सकता है, वह है उनकी स्वार्थी, भौतिकवादी प्रार्थनाओं का जवाब देना। 1 यूहन्ना 3:22 पर टिप्पणी देखें।

विशेष विषय: प्रभावी प्रार्थना (SPECIAL TOPIC: EFFECTIVE PRAYER)

A. त्रिएक परमेश्वर के साथ किसी के व्यक्तिगत संबंध से संबंधित है
   1. पिता की इच्छा से संबंधित
      a. मत्ती 6:10
      b. 1 यूहन्ना 3:22
      c. 1 यूहन्ना 5:14-15
   2. यीशु में बने रहना
      यूहन्ना 15:7
   3. यीशु के नाम में प्रार्थना करना
      a. यूहन्ना 14: 13,14
      b. यूहन्ना 15:16
      c. यूहन्ना 16:23-24
   4. आत्मा में प्रार्थना करना
      a. इफिसियों 6:18
      b. यहूदा 1:20

B. किसी के व्यक्तिगत उद्देश्यों से संबंधित
   1. डगमगाने वाला नहीं
      a. मत्ती 21:22
      b. याकूब 1:6-7
   2. बुरी इच्छा से माँगना
      याकूब 4:3
   3. स्वार्थ से माँगना
      याकूब 4:2-3

C. किसी की व्यक्तिगत पसंद से संबंधित
   1. धीरज
      a. लूका 18:1-8
      b. कुलुस्सियों 4:2
      c. जेम्स 5:16
   2. घर में कलह
      1 पतरस 3:7
   3. पाप
      a. भजनसंहिता 66:18
      b. यशायाह 59:1-2
      c. यशायाह 64:7

सभी प्रार्थना का उत्तर दिया जाता है, लेकिन सभी प्रार्थना प्रभावी नहीं हैं। प्रार्थना दो तरफा संबंध है। परमेश्वर जो सबसे बुरी बात कर सकता है वह यह है कि विश्वासियों के अनुचित अनुरोधों को स्वीकृत करे।

विशेष विषय: प्रभु का नाम (SPECIAL TOPIC: THE NAME OF THE LORD)

यह कलीसिया में त्रिएक परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति और सक्रिय सामर्थ्य के लिए एक सामान्य नये नियम का वाक्यांश था। यह एक जादुई सूत्र नहीं था, लेकिन यीशु में दिखाई देने वाले परमेश्वर के चरित्र को एक आग्रह था।

अक्सर यह वाक्यांश यीशु को प्रभु के रूप में संदर्भित करता है (तुलना फिलिप्पियों 2:11)

1. यीशु में विश्वास का अंगीकार करने के समय (तुलना रोमियों 10:9-13; प्रेरितों के काम 2:21,38; 8:12,16; 10:48; 19:5; 22:16; 1 कुरिन्थियों 1:13,15; याकूब 2:7)
2. दुष्टात्माओं को निकालने के समय (तुलना मत्ती 7:22; मरकुस 9:38; लूका 9:49; 10:17; प्रेरितों के काम 19:13)।
3. चंगाई के समय (तुलना प्रेरितों के काम 3: 6,16; 4:10; 9:34; याकूब 5:14)
4. सेवकाई के एक कार्य के समय (तुलना मत्ती 10:42; 18:5; लूका 9:48)
5. कलीसिया के अनुशासन के समय (तुलना मत्ती 18:15-20)
6. अन्यजातियों को उपदेश देने के दौरान (लूका 24:47; प्रेरितों के काम 9:15; 15:17; रोमियों 1:5)।
7. प्रार्थना में (तुलना यूहन्ना 14:13-14; 15:7,16; 16:23; 1 कुरिन्थियों 1:2)
8. मसीहत का उल्लेख करने का एक तरीका (तुलना प्रेरितों के काम 26:9; 1 कुरिन्थियों 1:10; 2 तीमुथियुस 2:19; याकूब 2:7; 1 पतरस 4:14;

हम प्रचारकों, सेवकों, सहायकों, चंगा करने वालों, दुष्टात्मा निकालनेवालों आदि के रूप में जो कुछ भी करते हैं, हम उसके चरित्र, उसकी सामर्थ्य, उसकी व्यवस्था - उनके नाम में करते हैं (यानी, फिलिप्पियों 2:9-10)!

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"मुझसे कुछ माँगोगे"** सामान्यतः विश्वासियों को आत्मा में, पुत्र के माध्यम से, पिता से प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह पद यूहन्ना के सुसमाचार में एकमात्र पद है जहाँ यीशु प्रार्थना स्वयं की ओर निर्देशित करता है।

यही कारण हो सकता है कि कुछ प्राचीन यूनानी पांडुलिपियाँ "मुझसे" को छोड़ देती हैं (यानी MSS, A, D, L और कुछ पुराने लातिनी, वुलगेट, कॉप्टिक, इथियोपियाई और स्लाव संस्करण) UBS^4 इसके सम्मिलित किये जाने को "B" (लगभग निश्चित) दर्ज़ा देता है। यह MSS P^{66}, P^{75}, א, B, W और कुछ पुराने लातिनी, वुलगेट और सीरियाई संस्करणों में शामिल है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 14:15-17

15"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। 16मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे; 17अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और वह तुम में होगा।"

14:15 "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" यह एक तीसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो संभावित कार्य की बात करता है। मसीह में परमेश्वर के लिए प्रेम आज्ञाकारिता द्वारा व्यक्त किया गया है। "मानोगे" एक भविष्य का कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो वर्तमान आज्ञार्थक के रूप में प्रयोग किया जाता है (Friberg, *Analytical Greek New Testament,* p. 337। आज्ञाकारिता अत्यंत महत्वपूर्ण है (तुलना यूहन्ना 8:51; 14:21,23-24; 15:10; 1 यूहन्ना 2:3-5; 3:22,24; 5:3; 2 यूहन्ना 6; लूका 6:46)। पद 21, 23 और 24 भी इसी सत्य पर बल देते हैं। आज्ञाकारिता सच्चे रूपांतरण का प्रमाण है (तुलना याकूब और 1 यूहन्ना)।

NKJV के पास MSS A, D, W, वुलगेट और कई कलीसिया पिताओं द्वारा समर्थित "मेरी आज्ञाएँ मानोगे" है। UBS^4 भविष्य के कर्तृवाच्य निर्देशात्मक को "C" दर्ज़ा (निर्णय लेने में कठिनाई) देता है, जो MSS, B, L, और कॉप्टिक संस्करण द्वारा साथ ही साथ कई कलीसिया पिताओं द्वारा समर्थित है।

14:16 "वह तुम्हें देगा" यूहन्ना 14:26 पर टिप्पणी देखें।

NASB, NKJV,
TEV "एक और सहायक"
NRSV "एक और अधिवक्ता"
NJB "एक और सान्त्वनादाता"

शब्द "एक और" एक यूनानी शब्द (*allos*) का अनुवाद करता है जिसका अर्थ है "उसी तरह का एक और"। पवित्र आत्मा को "एक अन्य यीशु" कहा गया है(जी. कैम्पबेल मॉर्गन, नीचे विशेष विषय देखें)।

दूसरा शब्द यूनानी शब्द "*paraklētos*" है जिसका प्रयोग 1 यूहन्ना 2:1 (मध्यस्थ के रूप में) यीशु के लिए और यूहन्ना 14:26 और 16:7-14 में पवित्र आत्मा के लिए किया गया है। एक कानूनी अर्थ में इसकी व्युत्पत्ति है, "मदद के लिए साथ में बुलाया गया"। इसलिए, "अधिवक्ता" शब्द इस शब्द का सटीक अनुवाद करता है। इसी यूनानी मूल का एक रूप, "सांत्वना" (*parakalēo*), 2 कुरिन्थियों 1:3-11 में पिता के लिए प्रयुक्त किया गया है।

संज्ञा "अधिवक्ता" (*paraklētos*) का अनुवाद रोमी कानूनी प्रणाली से आता है। अनुवाद " सांत्वनादाता" का प्रयोग पहली बार विक्लिफ द्वारा किया गया था और सेप्टुआजिंट में क्रिया रूप (*parakalēo*) के प्रयोग को दर्शाता है (अर्थात, 2 शमूएल 10: 4; 1 इतिहास 19:3; अय्यूब 16: 2; भजनसंहिता 69:20; सभोपदेशक 4:1; यशायाह 35:4)। यह शैतान (अभियोक्ता) का विलोम शब्द हो सकता है।

फिलो और जोसेफस दोनों ने इस शब्द का प्रयोग " मध्यस्थ " या "सलाहकार" के अर्थ में किया है।

विशेष विषय: यीशु और आत्मा (SPECIAL TOPIC: JESUS AND THE SPIRIT)

आत्मा और पुत्र के कार्य के बीच एक प्रवाहिता है। जी. कैंपबेल मॉर्गन ने कहा कि आत्मा का सबसे अच्छा नाम "एक अन्य यीशु" है (हालांकि, वे अलग-अलग, अनन्त व्यक्ति हैं)। पुत्र और आत्मा के कार्य और नामों की संक्षिप्त तुलना निम्नलिखित है।

1. आत्मा जिसे "यीशु का आत्मा" या इसी तरह के भाव कहते हैं (तुलना रोमियों 8:9; 2 कुरिन्थियों 3:17; गलातियों 4:6; 1 पतरस 1:11)।
2. दोनों को समान शब्दों से पुकारा जाता है
   a. "सत्य"
      1) यीशु (यूहन्ना 14:6)
      2) आत्मा (यूहन्ना 14:17; 16:13)
   b. "सहायक"
      1) यीशु (1 यूहन्ना 2:1)
      2) आत्मा (यूहन्ना 14:16,26; 15:26; 16:7)
   c. "पवित्र"
      1) यीशु (मरकुस 1:24; लूका 1:35; प्रेरितों के काम 3:14; 4:27,30)
      2) आत्मा (लूका 1:35)
3. दोनों विश्वासियों में वास करते हैं
   a. यीशु (मत्ती 28:20; यूहन्ना 14:20,23; 15:4-5; रोमियों 8:10; 2 कुरिन्थियों 13:5; गलातियों 2:20; इफिसियों 3:17; कुलुस्सियों 1:27)
   b. आत्मा (यूहन्ना 14:16-17; रोमियों 8:9,11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; 2 तीमुथियुस 1:14)
   c. पिता (यूहन्ना 14:23; 2 कुरिन्थियों 6:16)
4. आत्मा का काम यीशु की गवाही देना है (तुलना यूहन्ना 15:29; 16:13-15)

▣ **"कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे"** पवित्र आत्मा के संदर्भ में तीन अलग-अलग पूर्वसर्गों का प्रयोग किया गया है।

1. "*meta*" (यूहन्ना 14:16), "साथ"
2. "*para*" (यूहन्ना 14:17), "साथ में"
3. "*en*" (यूहन्ना 14:17), "में"

ध्यान दें कि पवित्र आत्मा हमारे साथ, हमारे साथ में और हमारे भीतर है। विश्वासियों में यीशु के जीवन को प्रकट करना उसका काम है। वह युग के अंत तक उनके साथ रहेगा (तुलना यूहन्ना 14:18; मत्ती 28:20)।

ध्यान दें कि आत्मा को "वह" कहा जाता है।इसका मतलब है कि आत्मा व्यक्तिगत है। अक्सर KJV में आत्मा को "वह" द्वारा संबोधित किया जाता है, लेकिन इसका कारण यह है कि यूनानी में "आत्मा" शब्द नपुंसकलिंग है (तुलना यूहन्ना 14:17,26; 15:26)। वह त्रिएकत्व का तीसरा व्यक्ति है (यूहन्ना 14:26 पर विशेष विषय को देखें)। त्रिएकत्व शब्द एक बाइबल का शब्द नहीं है, लेकिन अगर यीशु दिव्य है और आत्मा एक व्यक्ति है, तो किसी प्रकार की त्रि-एकता सम्मिलित है। परमेश्वर

एक दिव्य सार, परन्तु तीन स्थायी, व्यक्तिगत अभिव्यक्तियाँ है (यूहन्ना 14:26 पर विशेष विषय देखें। तुलना मत्ती 3:16-17; 28:19; प्रेरितों के काम 2:33-34; रोमियों 8:9-10; 1 कुरिन्थियों 12: 4-6; 2 कुरिन्थियों 21:13:14; इफिसियों 1:3-14; 2:18; 4:4-6; तीतुस 3:4-6; 1 पतरस 1:2)।

"सर्वदा" के लिए यूहन्ना 6:58 पर विशेष विषय देखें।

14:17 "सत्य का आत्मा" "सत्य" का यहाँ यूहन्ना 14:6 के समान ही लक्ष्यार्थ है (तुलना यूहन्ना 15:26; 16:13; 1 यूहन्ना 4: 6)। यूहन्ना 6:55 और 17:3 में सत्य पर विशेष विषय देखें। वह झूठ के पिता शैतान के विपरीत है (तुलना यूहन्ना 8:44)।

▣ **"जिसे"** "यह" शब्द "आत्मा" (*pneuma*) से सहमत होने के लिए नपुंसकलिंग है। हालाँकि, यूनानी में किसी और स्थान पर एक पुल्लिंग सर्वनाम का प्रयोग किया गया है (तुलना यूहन्ना 14:26; 15:26; 16:7,8,13,14)। पवित्र आत्मा वास्तव में पुरुष या स्त्री नहीं है; वह आत्मा है। यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि वह एक विशिष्ट व्यक्तित्व भी है (यूहन्ना 14:26 पर विशेष विषय देखें)।

▣ **"संसार ग्रहण नहीं कर सकता"** पवित्र आत्मा केवल उन लोगों द्वारा अपनाया जा सकता है जिन्हें मसीह में विश्वास है (तुलना यूहन्ना 1:10-12)। वह विश्वासियों को वह सब कुछ प्रदान करता है, जिसकी उन्हें आवश्यकता है (तुलना रोमियों 8:1-11)। अविश्वासी संसार (*kosmos* नीचे विशेष विषय देखें) आत्मिक बातों को समझ या सराह सकता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 2:14; 2 कुरिन्थियों 4:4)।

विशेष विषय: पौलुस का *KOSMOS* (विश्व) का प्रयोग (SPECIAL TOPIC: PAUL'S USE OF *KOSMOS* (WORLD))

पौलुस कई तरह से *kosmos* शब्द का प्रयोग करता है।

1. सम्पूर्ण सृष्टि (तुलना रोमियों 1:20; इफिसियों 1:4; 1 कुरिन्थियों 3:22; 8:4)
2. यह ग्रह (तुलना 2 कुरिन्थियों 1:12; इफिसियों 1:10; कुलुस्सियों 1:20; 1 तीमुथियुस 1:15; 3:16; 6:7)
3. मनुष्य (तुलना रोमियों 3:6,19; 11:15; 1 कुरिन्थियों 1:27-28; 4: 9,13; 2 कुरिन्थियों 5:19; कुलुस्सियों 1:6;
4. मनुष्य परमेश्वर से अलग होकर संगठित और क्रियाशील हैं (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:20-21; 2:12; 3:19; 11:32; गलातियों 4:3; इफिसियों 2:2,12; फिलिप्पियों 2:15; कुलुस्सियों 2: 8,20-23)। यह काफी कुछ यूहन्ना के प्रयोग के समान है (यानी, 1 यूहन्ना 2:15-17)
5. वर्तमान विश्व संरचनाएं (तुलना 1 कुरिन्थियों 7: 29-31; गलातियों 6:14, फिलिप्पियों 3:4-9 के समान है, जहाँ पौलुस यहूदी संरचनाओं का वर्णन करता है)।

कुछ मायनों में ये अतिव्यापन करते हैं और हर प्रयोग को वर्गीकृत करना कठिन है। यह शब्द, पौलुस के विचार में इतने सारों के समान, तत्काल संदर्भ द्वारा परिभाषित किया जाना चाहिए न कि पूर्व-निर्धारित परिभाषा द्वारा। पौलुस की शब्दावली तरल थी (तुलना James Stewart's *A Man in Christ*) । वह एक धर्मशास्त्रीय शब्दकोष स्थापित करने का नहीं, परन्तु मसीह का प्रचार करने का प्रयास कर रहा था।

▣ **"जानता. . .जानते"** यह शायद यूहन्ना का एक और दोहरा द्विअर्थी है। इब्रानी लक्ष्यार्थ, अंतरंग, व्यक्तिगत संबंध होगा (तुलना उत्पत्ति 4:1; यिर्मयाह 1:5)। यूनानी लक्ष्यार्थ ज्ञान होगा। सुसमाचार व्यक्तिगत और ज्ञानात्मक दोनों है।

▣ **"वह तुम्हारे साथ रहता है"** यूहन्ना के लेखन में बने रहना एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है (यानी, अध्याय 15, 1 यूहन्ना 2:10 पर विशेष विषय देखें)। पिता पुत्र में बना रहता है, आत्मा विश्वासियों में बना रहता है, और विश्वासी पुत्र में बने रहते हैं। यह बने रहना वर्तमान काल है, एक एकाकी निर्णय या भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं है।

▣ **"और वह तुम में होगा"** यह "तुम्हारे बीच में" (बहुवचन, तुलना NRSV पादटिप्पणी) या "तुम में" (बहुवचन, तुलना NASB, NKJV, NRSV, TEV और NJB) के रूप में समझा जा सकता है। परमेश्वर द्वारा विश्वासी के अंदर वास करना एक अद्‌भुत वादा है। नये नियम का दावा है कि त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तित्व विश्वासियों में वास करते हैं।

1. यीशु (मत्ती 28:20; यूहन्ना 14: 20,23; 15:4-5; रोमियों 8:10; 2 कुरिन्थियों 13: 5; गलातियों 2:20; इफिसियों 3:17; कुलुस्सियों 1:27)
2. आत्मा (यूहन्ना 14:16-17; रोमियों 8:11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; 2 तिमुथियुस 1:14)
3. पिता (यूहन्ना 14:23; 2 कुरिन्थियों 6:16)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 14:18-24
[18]"मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ। [19]और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे; इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे। [20]उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। [21]जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है वही मुझसे प्रेम रखता है; और जो मुझसे प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।" [22]यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उससे कहा, "हे प्रभु, क्या हुआ है तू अपने आप को हम पर प्रगट करना चाहता है और संसार पर नहीं?" [23]यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझसे प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे। [24]जो मुझसे प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं वरन पिता का है, जिसने मुझे भेजा।

14:18 "मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा; मैं तुम्हारे पास आता हूँ" यीशु ने फसह के बाद रविवार की शाम पुनरुत्थान के बाद पहली बार अटारी में चेलों समक्ष प्रकट होने के द्वारा उनसे किये गए अपने हर वादे को पूरा किया (तुलना यूहन्ना 20:19-31)। कुछ टिप्पणीकार, हालाँकि, संदर्भ को पिन्तेकुस्त पर आत्मा के आने के (प्रेरितों के काम 2) या दूसरे आगमन (तुलना यूहन्ना 14:3) से संबंधित मानते हैं।

14:19 "और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे" पद 20 से पता चलता है कि यह यीशु के पुनरुत्थान के बाद प्रकट होने को दर्शाता है। यह वह कथन है जो यहूदा ने यूहन्ना 14:22 में यीशु से एक और सवाल पूछने के लिए चुना है। चेलों को अभी भी अपेक्षा थी कि वह एक सांसारिक मसीहाई साम्राज्य स्थापित करेगा (यानी, मत्ती 20:20-28; मरकुस 10:35-45) और बहुत उलझन में पड़ गए जब उसने कहा, "संसार मुझे न देखेगा।" यीशु का यूहन्ना 14:23 और 24 में यहूदा (जो इस्करियोती न था) के प्रश्न का उत्तर था कि वह हर एक मसीही के जीवन में स्वयं को प्रकट करेगा और इस तरह संसार उसे उनके माध्यम से देखेगा!

▣ **"इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे"** यीशु का पुनरुत्थान परमेश्वर की सामर्थ्य और जीवन देने की इच्छा का प्रदर्शन था (तुलना रोमियों 8:9-11; 1 कुरिन्थियों 15:20-23,50-58)।

14:20 "उस दिन" यह वाक्यांश सामान्य रूप से एक युगांत विषयक अर्थ में प्रयोग किया जाता है (नीचे विशेष विषय देखें), लेकिन यहाँ यह यीशु के पुनरूत्थान के पश्चात दिखाई दिए जाने या पिन्तेकुस्त पर आत्मा की परिपूर्णता के आने का उल्लेख कर सकता है।

विशेष विषय: उस दिन (SPECIAL TOPIC: THAT DAY)
यह वाक्यांश, "उस दिन में" या "उस दिन," आठवीं शताब्दी के भविष्यवक्ताओं का परमेश्वर के दर्शन (उपस्थिति) के बारे में बताने का एक तरीका है, न्याय और पुनर्स्थापना, दोनों के लिए।

होशे		**अमोस**		**मीका**	
सकारात्मक	नकारात्मक	सकारात्मक	नकारात्मक	सकारात्मक	नकारात्मक
1:11	1:5		1:14(2)		2:4
	2:3		2:16		3:6
2:15			3:14	4:6	
2:16	4:5		5:18(2)		5:10
2:18	5:9		5:20		7:4
2:21	6:2		6:3	7:11(2)	
	7:5		8:3	7:12	
	9:5	9:11	8:9(2)		
	10:14		8:10		
			8:13		

यह स्वरूप भविष्यवक्ताओं की विशेषता है। परमेश्वर समय पर पाप के खिलाफ काम करेगा, लेकिन वह उन लोगों के लिए पश्चाताप और क्षमा का दिन भी प्रदान करता है जो अपने हृदय और कार्यों को बदलने के लिए तैयार हैं (यानी, एक

नया हृदय, एक नया मन और एक नई आत्मा प्राप्त करना, तुलना यहेजकेल 36:22-27)! छुटकारे और पुनर्स्थापना का परमेश्वर का उद्देश्य पूरा होगा! उसके पास ऐसे लोग होंगे जो उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं। सृजन का उद्देश्य (परमेश्वर और मानवता के बीच संगति) पूरा होगा!

▣ **"तुम जानोगे"** अक्सर "जानोगे" व्यक्तिगत संगति, अंतरंग संबंध का इब्रानी लक्ष्यार्थ है, लेकिन यहाँ इसके बाद "कि"(*hoti*) आता है,जो ज्ञानात्मक विषयवस्तु को स्पष्ट करता है। "विश्वास" के समान इस शब्द का दोहरा अर्थ है। यूहन्ना सुसमाचार को व्यक्त करने के लिए इस प्रकार के शब्दों का चयन करता है। विश्वासी उसे जानते हैं (उस पर विश्वास करते हैं), लेकिन उसके बारे में सच्चाइयों भी जानते हैं (विश्वास करते हैं कि)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"मैं अपने पिता में हूँ और तुम मुझ में, और मैं तुम में"** यूहन्ना अक्सर यीशु और पिता की एकता पर जोर देता है (तुलना यूहन्ना 10:38; 14:10-11; 17:21-23)। वह इस सत्य को जोड़ता है कि जैसे पिता और यीशु अंतरंग रूप से जुड़े हुए हैं, वैसे ही, यीशु और उसके अनुयायी (तुलना यूहन्ना 17)!

14:21 "जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है" ये दो वर्तमान कृदंत हैं।
आज्ञाकारिता महत्वपूर्ण है (यूहन्ना 14:15 पर टिप्पणी देखें)। यह सच्चे रूपांतरण का प्रमाण है (तुलना यूहन्ना 14:23)।
प्रेरित यहूदी थे और अक्सर अपने लेखन में सामी मुहावरों का प्रयोग करते थे। यहूदी प्रार्थना जो हर आराधना के समय शुरू होती है वह थी व्यवस्था विवरण 6:4-5, जो *shema* कहलाती थी, जिसका अर्थ था "ऐसा करने के लिए सुनना"! यह यूहन्ना की टिप्पणी का अर्थ है (तुलना जेम्स 2:14-26)।

▣ **"और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा"** यह या तो (1) पुनरुत्थान के बाद दिखाई देने (तुलना प्रेरितों के काम 10:40-41) या (2) पवित्र आत्मा को विश्वासियों में मसीह को प्रगट करने और बनाने का उल्लेख करता है (तुलना); यूहन्ना 14:26; रोमियों 8:29; गलातियों 4:19)।

▣ यीशु ने विश्वास किया और दावा किया कि उसने पिता का (1) प्रतिनिधित्व किया; (2) उनके लिए बोला; और (3) प्रकट किया। विश्वासियों के लिए यीशु द्वारा कहा गया प्रेरितिक लेखकों द्वारा दर्ज किया गया यह आधिकारिक शब्द परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के बारे में स्पष्ट जानकारी का एकमात्र स्रोत है। विश्वासियों की पुष्टि है कि यीशु और पवित्रशास्त्र (योग्य व्याख्या किया हुआ) का अधिकार परम अधिकार है; कारण, अनुभव और परंपरा सहायक है, लेकिन परम नहीं आत्मा और पुत्र के कार्य के बीच प्रवाहिता है। जी. कैम्पबेल मॉर्गन ने कहा कि आत्मा के लिए सबसे अच्छा नाम "एक अन्य यीशु" है। यूहन्ना 14:16 पर विशेष विषय देखें।

14:22 पद 19 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"यहूदा (जो इस्करियोती न था)"** यह तददै का दूसरा नाम था (तुलना मत्ती 10:3; मरकुस 3:18)। यूहन्ना 1:45 पर विशेष विषय देखें।

14:23 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जो संभावित कार्य की बात करता है। यीशु के लिए चेलों का प्रेम एक दूसरे के लिए उनके प्रेम में देखा जाएगा (तुलना यूहन्ना 14:15,21)।

14:24 "तुम" टीका संबंधी प्रश्न है, "यह 'तुम' किसको संदर्भित करता है?" व्याकरणिक रूप से सर्वनाम क्रिया, "सुनते" (वर्तमान कर्तृवाच्य, मध्यम पुरुष बहुवचन)। यह संदर्भित कर सकता है

1. संसार के उन लोगों को जो यीशु के संदेश को अस्वीकार करते हैं
2. चेलों को क्योंकि वे यीशु के वचनों को पिता के वचनों के रूप में स्वीकार करते हैं (तुलना यूहन्ना 14:10-11)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 14:25-31
[25]"ये बातें जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। [26]परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा है, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। [27]मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ; अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे। [28]तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा, 'मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आऊँगा।' यदि

तुम मुझसे प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है। [29]और मैं ने अब इसके होने से पहले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम विश्वास करो। [30]मैं अब तुम्हारे साथ और बहुत बातें नहीं करूँगा क्योंकि इस संसार का सरदार आता है।मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं; [31]परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ, और जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी मैं वैसे ही करता हूँ। उठो, यहाँ से चलें।

14:25 "ये बातें" यह अटारी में दी गई शिक्षाओं (अध्याय 13-17, लेकिन यूहन्ना 14:15:11; 16:1,4,6,25,33 में विशेष रूप से व्यक्त किया गया है) का उल्लेख होना चाहिए।

14:26 "पवित्र आत्मा" त्रिएकत्व के तीसरे व्यक्तित्व के लिए यह शीर्षक केवल यूहन्ना 1:33; 20:22, और यहाँ यूहन्ना में (विशेष विषय: एक पवित्र 1 यूहन्ना 2:20 पर देखें) में आता है। हालाँकि, उसे यूहन्ना रचित सुसमाचार में कई अन्य नामों से बुलाया जाता है (सान्त्वनादाता, सत्य का आत्मा, आत्मा)।

नये नियम में कई अवतरण हैं जो आत्मा को व्यक्तिगत शब्दों में संदर्भित करते हैं (तुलना मरकुस 3:29; लूका 12:11; यूहन्ना 14:26; 15:26; 16:7-15, नीचे विशेष विषय देखें)। ऐसे अन्य पाठ हैं जहाँ आत्मा के लिए नपुंसक सर्वनाम प्रयोग किया जाता है क्योंकि आत्मा के लिए यूनानी शब्द (*pneuma*) नपुंसक है (तुलना यूहन्ना 14:17; रोमियों 8:26)।

इसके अलावा, इस स्थान पर त्रिएकत्व की अवधारणा के बारे में सिर्फ एक शब्द। "त्रिएकत्व" शब्द एक बाइबल का शब्द नहीं है, लेकिन कई पाठों में एक सच्चे परमेश्वर की तीन व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों को एक साथ देखा जाता है (नीचे विशेष विषय देखें)। यदि यीशु दिव्य है और आत्मा व्यक्तिगत है, तो धर्मशास्त्रीय रूप से एकेश्वरवादियों के रूप में (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:4-6), हमें एक त्रि-एकता न कि प्रगतिशील अभिव्यक्तियाँ, लेकिन अनन्त व्यक्ति मानने पर विवश किया जाता है!

विशेष विषय: त्रिएकत्व (SPECIAL TOPIC: THE TRINITY)
एकीकृत संदर्भों में त्रिएकत्व के सभी तीन व्यक्तियों की गतिविधि पर ध्यान दें। शब्द " त्रिएकत्व," पहली बार टर्टुलियन द्वारा गढ़ा गया, एक बाइबल का शब्द नहीं है, लेकिन अवधारणा व्यापक है।

A. सुसमाचार
   1. मत्ती 3:16-17; 28:19 (और समानांतर)
   2. यूहन्ना 14:26
B. प्रेरितों के काम- प्रेरितों के काम 2:32-33, 38-39
C. पौलुस
   1. रोमियों 1:4-5; 5:1,5; 8:1-4,8-10
   2. 1 कुरिन्थियों 2:8-10; 12:4-6
   3. 2 कुरिन्थियों 1:21-22; 13:14
   4. गलातियों 4:4-6
   5. इफिसियों 1:3-14,17; 2:18; 3:14-17; 4:4-6
   6. 1 थिस्सलुनीकियों 1:2-5
   7. 2 थिस्सलुनीकियों 2:13
   8. तीतुस 3:4-6
D. पतरस - 1 पतरस 1:2
E. यहूदा - पद 20-21

परमेश्वर की बहुलता संकेत पुराने नियम में दिया गया है।

A. परमेश्वर के लिए बहुवचनों का प्रयोग
   1. नाम *Elohim* बहुवचन है (देखें विशेष विषय: देवता के लिए नाम), लेकिन जब परमेश्वर के लिए प्रयुक्त होता है तो हमेशा एक एकवचन क्रिया होता है
   2. उत्पत्ति 1:26-27; 3:22,11:7 में "हम"
B. "प्रभु का दूत" (विशेष विषय: प्रभु का दूत देखें) देवता के एक दृश्य प्रतिनिधि था
   1. उत्पत्ति 16:7-13; 22:11-15; 31:11,13; 48:15-16

2. निर्गमन 3:2,4; 13:21; 14:19
3. न्यायियों 2:1; 6:22-23; 13:3-22
4. जकर्याह 3:1-2

C. परमेश्वर और उसका आत्मा अलग हैं, उत्पत्ति 1:1-2; भजनसंहिता 104: 30; यशायाह 63:9-11; यहेजकेल 37:13-14
D. परमेश्वर (YHWH) और मसीहा (*Adon*) अलग-अलग हैं, भजनसंहिता 45: 6-7; 110:1; जकर्याह 2:8-11; 10:9-12
E. मसीहा और आत्मा अलग-अलग हैं, जकर्याह 12:10
F. इन तीनों का उल्लेख यशायाह 48:16; 61:1 में किया गया है।

यीशु के देवत्व और आत्मा के व्यक्तित्व ने सख्त, एकेश्वरवादी (विशेष विषय: एकेश्वरवाद), आरंभिक विश्वासियों के लिए समस्याएं पैदा कीं।

1. टर्टुलियन - पुत्र को पिता के अधीनस्थ माना
2. ओरिजन - पुत्र और आत्मा के दिव्य सार को अधीनस्थ किया
3. एरियस - पुत्र और आत्मा से देवता को नकारा
4. एकाधिदेववाद – एक परमेश्वर की पिता, फिर पुत्र और फिर आत्मा के रूप में क्रमिक कालानुक्रमिक अभिव्यक्ति में विश्वास करता था

त्रिएकत्व बाइबल सामग्री द्वारा सूचित एक ऐतिहासिक रूप से विकसित सूत्रीकरण है।

1. यीशु का पूर्ण देवत्व, पिता के तुल्य है, 325 ई. में नाइसिया द्वारा पुष्टि की गई (तुलना यूहन्ना 1:1; फिलिप्पियों 2:6; तीतुस 2:13) ।
2. आत्मा का पूर्ण व्यक्तित्व और देवत्व पिता और पुत्र के तुल्य है, 381ई. में काउंसिल ऑफ़ कांस्टेंटिनोपल द्वारा पुष्टि की गई।
3. त्रिएकत्व का सिद्धांत ऑगस्टीन के लेखन *De Trinitate* में पूरी तरह से व्यक्त किया गया है

यहाँ वास्तव में रहस्य है। लेकिन नया नियम तीन अनंत व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों (पिता, पुत्र और आत्मा) के साथ एक दिव्य सार (एकेश्वरवाद) की पुष्टि करता है।

▣ **"जिसे पिता भेजेगा"** प्रारंभिक कलीसिया (चौथी शताब्दी) में एक जबरदस्त लड़ाई हुई थी कि क्या आत्मा पिता से आया है (तुलना यूहन्ना 3:34; 14:16; 16:26) या पुत्र से (तुलना यूहन्ना 15:26; 16:7; लूका 24:49; प्रेरितों के काम 2:33)। एरियस-अथानासियस बहस में धर्मशास्त्रीय मुद्दा – पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु के बीच पूर्ण और अनंत देवत्व और समानता थी

▣ **"तुम्हें सब बातें सिखाएगा"** यह योग्यता प्राप्त होना चाहिए। आत्मा ज्ञान के सभी क्षेत्रों में विश्वासियों को नहीं सिखाता है, लेकिन आत्मिक सत्य के बारे में, विशेष रूप से यीशु के व्यक्तित्व और कार्य, सुसमाचार के संबंध में (तुलना यूहन्ना 16:13-14; 1 यूहन्ना 2:20,27)।

विशेष विषय: आत्मा का व्यक्ति होना (SPECIAL TOPIC: THE PERSONHOOD OF THE SPIRIT)

पुराने नियम में "परमेश्वर की आत्मा" (यानी, *ruach*) एक ऐसा बल था जिसने YHWH के उद्देश्य को पूरा किया, लेकिन इस बात के संकेत बहुत कम हैं कि यह व्यक्तिगत था (यानी, पुराने नियम एकेश्वरवाद, विशेष विषय, एकेश्वरवाद)। हालाँकि, नये नियम में आत्मा का पूर्ण व्यक्तित्व और व्यक्ति होना प्रगट होता है:

1. उसकी निन्दा की जा सकती है (तुलना मत्ती 12:31; मरकुस 3:29)
2. वह सिखाता है (लूका 12:12; यूहन्ना 14:26)
3. वह गवाही देता है (तुलना यूहन्ना 15:26)
4. वह दोषी ठहरता है, मार्गदर्शन करता है (तुलना यूहन्ना 16:7-15)
5. उसे "वह" कहा जाता है (अर्थात, *hos*, तुलना इफिसियों 1:14) ।
6. उसे शोकित किया जा सकता है (तुलना इफिसियों 4:30)
7. उसे बुझाया जा सकता है (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 5:19)
8. उसका विरोध किया जा सकता है (तुलना प्रेरितों के काम 7:51)
9. वह विश्वासियों के लिए वकालत करता है (तुलना यूहन्ना 14:26; 15:26; 16:7)
10. वह पुत्र की महिमा करता है (तुलना यूहन्ना 16:14)

त्रिएकत्व- संबंधी पाठ (यहाँ कई में से तीन हैं, विशेष विषय: त्रिएकत्व देखें) भी तीन व्यक्तियों की बात करते हैं।

1. मत्ती 28:19
2. 2 कुरिन्थियों 13:14
3. 1 पतरस 1:2

हालांकि यूनानी शब्द "आत्मा" (*pneuma*) नपुंसक है, जब आत्मा का उल्लेख होता है, तो नया नियम अक्सर पुल्लिंग संकेतवाचक विशेषण का प्रयोग करता है (तुलना यूहन्ना 16:8,13-14)।

आत्मा मानव गतिविधि से जुड़ा हुआ है।

1. प्रेरितों के काम 15:28
2. रोमियों 8:26
3. 1 कुरिन्थियों 12:11
4. इफिसियों 4:30

प्रेरितों के काम की आरम्भ में, आत्मा की भूमिका पर ज़ोर दिया गया है (जैसा कि यूहन्ना के सुसमाचार में है)। पिन्तेकुस्त आत्मा के काम का आरम्भ नहीं था, बल्कि एक नया अध्याय था। यीशु के पास आत्मा हमेशा थी। उसका बपतिस्मा आत्मा के काम का आरम्भ नहीं था, बल्कि एक नया अध्याय था। आत्मा परमेश्वर की छवि में बनाए गए सभी मनुष्यों की पुनः स्थापना के लिए पिता के उद्देश्य का प्रभावी साधन है (विशेष विषय: YHWH की अनन्त छुटकारे की योजना देखें)!

▣ **"और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा"** आत्मा के उद्देश्य हैं

1. मनुष्यों को पाप का दोषी ठहराना
2. उन्हें मसीह में लाना
3. उन्हें मसीह में बपतिस्मा देना
4. मसीह उन में बनाना (तुलना यूहन्ना 16:7-15)
5. प्रेरितों को यीशु के द्वारा उन्हें कही गई बातों को याद रखने में मदद करना और उनके अर्थ को स्पष्ट करना ताकि वे उन्हें पवित्रशास्त्र में दर्ज़ कर सकें (तुलना यूहन्ना 2:22; 15:26; 16:13)

यीशु ने स्वयं उसके पुनरुत्थान के बाद प्रेरितों को भी निर्देश दिया, विशेष रूप से कि पुराना नियम कैसे उसकी ओर इंगित करता और उसमें पूर्ण होता है (तुलना लूका 24:13ff)।

14:27 "मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ" विश्वासियों की शान्ति परिस्थितियों से नहीं, लेकिन यीशु के वादों और उपस्थिति के आधार पर एक तसल्ली से संबंधित है (तुलना यूहन्ना 16:33; फिलिप्पियों 4:7; कुलुस्सियों 3:15)।

"शान्ति" का प्रयोग एक कर्म-संबंधी अर्थ, परमेश्वर के साथ पुनर्स्थापना और एक कर्ता-संबंधी अर्थ, कठिन परिस्थितियों में सुरक्षा या स्थिरता की भावना में किया जाता है। यह एक यहूदी अभिवादन, *Shalom* को दर्शाता है, जिसका अर्थ समस्याओं की अनुपस्थिति और संतोष की उपस्थिति दोनों था (तुलना यूहन्ना 20:19,21,26; 3 यूहन्ना 14; इफिसियों 2:14; गिनती 6:26; भजनसंहिता 29:11; यशायाह 9:6)। यह नए युग की विशेषता बताता है!

विशेष विषय: मसीह और शान्ति (SPECIAL TOPIC: THE CHRISTIAN AND PEACE)

इस यूनानी शब्द का मूल अर्थ था "जो टूट गया था उसे एक साथ बाँधना" (तुलना यूहन्ना 14:27; 16:33; फिलिप्पियों 4:7)। नया नियम तीन तरह से शान्ति के विषय में बोलता है:

1. मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ हमारी शांति के वस्तु-निष्ठ दृष्टिकोण से (तुलना कुलुस्सियों 1:20)
2. परमेश्वर के साथ हमारे सही होने के व्यक्ति-निष्ठ दृष्टिकोण से (तुलना यूहन्ना 14:27; 16:33; फिलिप्पियों 4:7)।
3. यह कि परमेश्वर ने विश्वासी यहूदी और अन्यजातियों को मसीह के माध्यम से एक नई देह में एकजुट किया है (तुलना इफिसियों 2: 14-17; कुलुस्सियों 3:15)।

Newman and Nida, *A Translator's Handbook on Paul's Letter to the Romans*, p. 92, "शान्ति" के बारे में एक अच्छी टिप्पणी है।

"पुराने नियम और नए नियम दोनों में शान्ति शब्द का व्यापक अर्थ है। मूल रूप से यह एक व्यक्ति के जीवन के सम्पूर्ण सुख का वर्णन करता है; यह अभिवादन के सूत्र के रूप में यहूदियों के बीच भी अपनाया गया था। इस शब्द का इतना गहरा अर्थ है कि इसका प्रयोग यहूदियों द्वारा मसीहाई उद्धार के वर्णन के रूप में भी किया जा सकता था। इस तथ्य

के कारण, ऐसे भी समय हैं जब इसका प्रयोग उस शब्द, जिसका अर्थ है 'परमेश्वर के साथ सही संबंध में होना' के लगभग पर्यायवाची रूप से किया जाता है। यहाँ इस शब्द का प्रयोग परमेश्वर द्वारा मनुष्य को स्वयं के साथ सही रखने के आधार पर मनुष्य और परमेश्वर के बीच स्थापित सामंजस्यपूर्ण संबंध के वर्णन के रूप में किया जाता है" (p. 92)।

▣ **"देता"** Grant Osborne, *The Hermeneutical Spiral* (p. 21) शब्द का अर्थ निर्धारित करने में संदर्भ की प्राथमिकता के बारे में एक उत्कृष्ट टिप्पणी करता है।

"तर्कसंगत संदर्भ

एक बहुत ही वास्तविक अर्थ में, तर्कसंगत संदर्भ व्याख्या में सबसे मूलभूत घटक है। मैंने अपनी कक्षाओं में कहा कि अगर कोई भी अर्धनिद्रा में है और वह प्रश्न नहीं सुनता है जो मैं पूछता हूँ, तो पचास प्रतिशत सही होने की संभावना है यदि वह 'संदर्भ' उत्तर देता है। शब्द अपने आप में एक पाठ पर प्रभावों की एक विशाल श्रृंखला को शामिल करता है। ये सबसे अच्छा रूप में अवतरण से बाहर की ओर बढ़ने वाले संकेंद्री वृत्तों की एक श्रृंखला के रूप में आरेखित किया जा सकता है।

जैसे-जैसे हम केंद्र के करीब जाते हैं, अवतरण के अर्थ पर प्रभाव बढ़ता जाता है। शैली, उदाहरण के लिए, साहित्य के प्रकार की पहचान करता है और व्याख्याकार को सामानंतरों की पहचान करने में मदद करता है, लेकिन ये उतने प्रभावशाली नहीं हैं जितना कि शेष पवित्रशास्त्र अवतरण पर है। उदाहरण के लिए, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को सर्वनाश से संबंधित के रूप में पहचान सकते हैं; फिर भी हालाँकि अंतर-नियम और यूनानी मत के सर्वनाश संबंधी महत्त्वपूर्ण समानांतर प्रदान करते हैं, अधिकांश प्रतीक पुराने नियम से लिए गए हैं। पैमाने के दूसरे छोर पर, तत्काल संदर्भ एक शब्द या अवधारणा के अर्थ के सभी फैसलों के लिए अंतिम न्यायकर्ता है। इस बात की कोई गारंटी है कि पौलुस एक शब्द को फिलिप्पियों 1 में उसी तरह से प्रयोग करता है जैसे वह फिलिप्पियों 2 में करता है 2. भाषा बस इस तरह से काम नहीं करती है, क्योंकि हर शब्द के कई अर्थ होते हैं और एक लेखक द्वारा उसका प्रयोग वर्तमान संदर्भों पर निर्भर करता है न कि पिछले संदर्भों में उसके प्रयोग पर। एक अच्छा उदाहरण यूहन्ना 14:27 में *aphiemi* का प्रयोग होगा, "मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ" और यूहन्ना 16:28 में, "मैं फिर से जगत को छोड़ कर जाता हूँ।" हम शायद ही एक की व्याख्या दूसरे से करेंगे, क्योंकि उनका प्रयोग ठीक विपरीत है। पहले में यीशु चेलों को कुछ देता है, दूसरे में वह उनसे कुछ (स्वयं को!) दूर ले जाता है। इससे भी कम हम इस शब्द में इसके सामान्य प्रयोग (जैसे 1 यूहन्ना 1:9) "क्षमा" के अर्थ में पढ़ेंगे। अन्य अवतरण हमें अर्थ-संबंधी सीमा (शब्द के अलग-अलग अर्थ) निर्धारित करने में मदद करते हैं, लेकिन केवल तात्कालिक संदर्भ संभावनाओं को वास्तविक अर्थ तक सीमित कर सकता है "(पृष्ठ 21)।

▣ **"तुम्हारा मन व्याकुल न हो"** यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्मवाच्य आज्ञार्थक है जिसका सामान्य रूप से अर्थ होता है "उस कार्य को रोकना जो पहले से ही प्रक्रिया में है," यूहन्ना 14:1 की पुनरावृत्ति ।

14:28 "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते" यह यूहन्ना 14:7 की तरह द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। यह बेहतर होगा कि यीशु पिता के पास जाए और आत्मा को भेजे, लेकिन निश्चित रूप से, उन्हें इस समय इसका एहसास नहीं है।

▣ **"क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है"** यह एक ऐसा कथन नहीं है जो पुत्र की असमानता पर केंद्रित है, बल्कि एक कथन है जो मानव जाति के उद्धार से संबंधित त्रिएकत्व के कार्यों से संबंध रखता है (तुलना यूहन्ना 10:29-30)। पुत्र की यह अधीनता उसके पृथ्वी पर रहने के दौरान, त्रिएक परमेश्वर की प्रकटीकरण और छुटकारे की योजना को पूरा करने के लिए केवल कुछ समय के लिए थी (तुलना यूहन्ना 17:4-5; फिलिप्पियों 2:6-11)। हालाँकि, एक अर्थ है जिसमें पिता, प्रेषक होने के नाते प्राथमिक है (तुलना यूहन्ना 13:16; 1 कुरिन्थियों 27-28: इफिसियों 1:3-14)।

14:29 "और मैं ने अब इसके होने से पहले तुम से कह दिया है" यह इसलिए था ताकि उनका विश्वास मज़बूत हो सके (तुलना यूहन्ना 13:19; 16:4)।

14:30
NASB "संसार का सरदार"

NKJV, NRSV,
TEV **"इस संसार का सरदार "**
NJB **"इस संसार का हाकिम"**

यह शैतान को संदर्भित करता है, जिसकी गतिविधि का क्षेत्र अब पृथ्वी है (तुलना यूहन्ना 12:31; 16:11; 2 कुरिन्थियों 4:4, "इस संसार का ईश्वर"; इफिसियों 2:2, "आकाश के अधिकार का हाकिम")। संभवतः, यीशु ने यहूदा के छोड़कर चले जाने को शैतान के आगमन के रूप में देखा (तुलना यूहन्ना 13:27)। यूहन्ना 12:31 पर विशेष विषय देखें।

NASB, NKJV **"उसका मुझ में कुछ नहीं"**
NRSV, TEV,
NJB **"मुझ पर उसका कोई अधिकार नहीं"**

इसका अर्थ यह है कि शैतान के पास आरोप का कोई आधार नहीं , कोई अधिकार नहीं, या यीशु के साथ साझेदारी में बिल्कुल कुछ भी नहीं है (तुलना इब्रानियों 4:15)।

1. जेम्स मोफैट ने इसका अनुवाद "उसकी मुझ पर कोई पकड़ नहीं" के रूप में किया
2. विलियम एफ. बेक ने "मुझ पर उसका कोई दावा नहीं" के रूप में
3. न्यू इंग्लिश बाइबिल ने "मुझ पर कोई अधिकार नहीं" के रूप में
4. बीसवीं शताब्दी के नये नियम "मेरे साथ कुछ भी साझा नहीं" के रूप में

14:31 "परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि" शैतान परमेश्वर की इच्छा में है और मानव जाति के उद्धार में परमेश्वर के सर्वोच्च उद्देश्य के लिए उसका कुशलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। A.B. Davidson, *The Theology of the Old Testament,* pp. 300-306 देखें।

▣ **"जैसे पिता ने मुझे आज्ञा दी मैं वैसे ही करता हूँ"** यह पिता की वह इच्छा थी कि यीशु मरे (तुलना यशायाह 53:10a,b; मरकुस 10:45; 2 कुरिन्थियों 5:21)। विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "आज्ञा" का प्रयोग यूहन्ना 12:50 पर देखें

▣ **"उठो, यहाँ से चलें"** यह एक वर्तमान मध्यम आज्ञार्थक है। यह एक बहुत ही कठिन वाक्यांश है क्योंकि यह मत्ती और मरकुस में गतसमनी के बाग में तब आता है जब यहूदा और सैनिकों का दल यीशु के पास जाता है। सटीक रूप से इसका प्रयोग अटारी के संदर्भ में क्यों किया गया है (अध्याय 13-17) यह अनिश्चित है। संभवतः, यीशु अटारी से निकल गया था और गतसमनी के रास्ते में चलते हुए शिक्षा दे रहा था (तुलना यूहन्ना 18:1)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. पद 1 के आधार पर ईश्वरवाद, आस्तिकता और मसीहियत के बीच अंतर को स्पष्ट करें।
2. पद 6 में पाई जाने वाली तीन संज्ञाओं की पुराने नियम की पृष्ठभूमि बताएँ।
3. क्या केवल पद 13 पर प्रार्थना का धर्मशास्त्र बनाया जा सकता है?
4. पवित्र आत्मा का प्रमुख उद्देश्य क्या है? (दोनों खोए हुओं और बचाए हुओं के लिए)
5. क्या शैतान परमेश्वर की इच्छा में है?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 15

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS⁴	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु ने सच्ची दाखलता	सच्ची दाखलता	मसीही विश्वासियों के जीवन का नमूना	यीशु सच्ची दाखलता	सच्ची दाखलता
15:1-10	15:1-8	15:1-11	15:1-4	15:1-17
	प्रेम और आनंद पूर्ण		15:5-10	
	15:9-17			
15:11-17			15:11-17	
		15:12-17		
संसार का बैर	संसार का बैर		संसार का बैर	चेले और संसार
				15:18-16:4a
15:18-25	15:18-25	15:18-25	15:18-25	
	आनेवाली अस्वीकृति			
15:26-16:4a	15:26-16:4	15:26-27	15:26-16:4a	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

यूहन्ना 15:1-27 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. यह एक शानदार और परेशान करने वाला अवतरण है! यह विश्वासियों को परमेश्वर के प्रेम और प्रभावशीलता के वादे के लिए बहुत प्रोत्साहन देता है, लेकिन इसमें सख्त चेतावनी भी है! इस क्षेत्र में धर्मशास्त्रीय परंपराओं पर चर्चा करना बहुत मुश्किल है; मुझे मेरे पसंदीदा टिप्पणीकारों में से एक, एफ. एफ. ब्रूस को उनकी पुस्तक *Answers to Questions* में से उद्धृत करने दीजिए।

"यूहन्ना 15:4,6 '"यदि मुझ में बने न रहो" और "यदि कोई मुझ में बना न रहे" इन वाक्यांशों का यूहन्ना 15:4,6 में क्या अर्थ है? क्या मसीह में बने न रहना संभव है?'

इस तरह के अवतरण अपने आप में मुश्किल नहीं हैं; कठिनाई तब होती है जब हम उन्हें और अन्य शास्त्रों अपने धर्मशास्त्रीय ज्ञान के लिए एक आधार के रूप में प्रयोग करने के बजाय उन्हें अपने धर्मशास्त्रीय ज्ञान के साथ तालमेल बनाने की कोशिश करने लगते हैं। उसी समय जब हमारा प्रभु बोल रहा था, वहाँ एक शानदार उदाहरण था जो उसमें बने रहने में नाकाम रहा- यहूदा इस्करियोती, जो अभी उन्हें छोड़कर चला गया था। यहूदा को उसके ग्यारह साथियों के समान ही चुना गया था (लूका 6:13; यूहन्ना 6:70); प्रभु के साथ उनकी संगत ने उन्हें कोई विशेष सुविधा नहीं दी जो उसे न मिली हो। पवित्रशास्त्र के सरल अवतरणों, जो संतों के अंतिम धीरज के विषय में सिखाते हैं, का दुरुपयोग उनके समान सरल अवतरणों, जो स्वधर्मत्याग के खतरे की बात करते हैं, का महत्त्व घटाकर प्रस्तुत करने के बहाने के रूप में नहीं किया जाना चाहिए" (pp. 71-72)

B. आश्चर्य की बात है कि इस संदर्भ में, जहाँ कोई धर्मशास्त्रीय रूप से वर्तमान काल की अपेक्षा करेगा, कितने अनिर्दिष्टकालों का प्रयोग किया गया है। अनिर्दिष्टकालों का प्रयोग किसी के जीवन को समेटने और उसे संपूर्ण रूप में देखने के अर्थ में प्रयोग करते हुए प्रतीत होता है।

C. अध्याय 15 के अनुच्छेद विभाग अनिश्चित हैं। यूहन्ना, 1 यूहन्ना की तरह, विभिन्न रंगों का एक टेपेस्ट्री है। नमूने बार-बार दिखाई देते हैं।

D. शब्द "बने रहना" (*menō*) का प्रयोग नये नियम में लगभग 112 बार किया गया है। इनमें से चालीस यूहन्ना रचित सुसमाचार में और 26 उसकी पत्रियों में दिखाई देते हैं। यह यूहन्ना के लिए एक प्रमुख धर्मशास्त्रीय शब्द है। हालाँकि अध्याय 15 यीशु की आज्ञा कि हम उसमें बने रहें, की उत्तम अभिव्यक्ति है, इस शब्द का यूहन्ना में व्यापक केंद्र बिंदु है।
   1. व्यवस्था हमेशा के लिए बनी रहती है (मत्ती 5:17-18) इसी प्रकार, मसीह भी (12:34)
   2. इब्रानियों की पुस्तक प्रकटीकरण के एक नए माध्यम की ओर इशारा करती है, एक सेवक के माध्यम से नहीं, लेकिन एक बने रहने वाले पुत्र के माध्यम से (इब्रानियों 1:1-3, इसी प्रकार यूहन्ना 8:35 भी)
   3. यीशु ऐसा भोजन प्रदान करता है जो बना रहता है (6:27) और ऐसा फल लाता है जो बना रहता है (15:16)। ये दोनों रूपक एक ही सत्य को व्यक्त करते हैं, मसीह के लिए हमारी आवश्यकता दोनों: (1) प्रारम्भिक और (2) लगातार (तुलना यूहन्ना 6:53)
   4. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने आत्मा को यीशु के बपतिस्मा पर आकाश से उतरते और उसपर ठहरते देखा (1:32)

E. विशेष विषय: बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें

F. पद 11-16 में चेलों को यीशु के आनंद का वादा किया गया है, जबकि पद 17-27 में चेलों को यीशु की पीड़ा का वादा किया गया है। पीड़ा का संदर्भ 16:4a तक चलता है। हालाँकि, इस सब के मध्य विश्वासियों को एक दूसरे से प्रेम करना है जैसा उसने उनसे प्रेम किया!

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 15:1-11

1"सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता किसान है। 2जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है; जो फलती है, उसे वह छाँटता है ताकि और फले। 3तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो। 4तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। 5मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
6यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। 7यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो

जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। [8]मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। [9]जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा; मेरे प्रेम में बने रहो। [10]यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ। [11]मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनंद तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनंद पूरा हो जाए।

15:1 "सच्ची दाखलता मैं हूँ" यह यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु के प्रसिद्ध "मैं हूँ" कथनों में से एक है (तुलना यूहन्ना 4:26; 6:35; 8:12; 10:7,9,10,11,14; 11:25; 14:6)। पुराने नियम में दाखलता इस्राएल का प्रतीक थी। (भजनसंहिता 80:8-16; यशायाह 5:1-86; 2:21; यहेजकेल 15; 19:10; होशे 10:1; मत्ती 21:33ff; मरकुस 12:1-12, रोमियों 11:17ff)। पुराने नियम में इन उदाहरणों का हमेशा नकारात्मक लक्ष्यार्थ होता है। यीशु ने पुष्टि की कि वह आदर्श इस्राएली था (तुलना यशायाह 53)। जैसा कि पौलुस ने मसीह की देह, मसीह की दुल्हन और परमेश्वर का भवन कलीसिया के लिए रूपकों के रूप में प्रयोग किया, इसलिए यूहन्ना ने दाखलता का प्रयोग किया। इसका तात्पर्य यह है कि यीशु, सच्ची दाखलता, के साथ उसके सम्बन्ध के कारण कलीसिया ही सच्चा इस्राएल है (तुलना गलातियों 6:16; 1 पतरस 2:5,9; प्रकाशितवाक्य 1:6)। यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर विशेष विषय देखें। यूहन्ना 8:12 पर टिप्पणी देखें।

कुछ व्याख्याकारों ने दावा किया है कि अटारी का प्रवचन 14:31 "उठो यहाँ से चलें।" पर समाप्त होता है। यदि ऐसा है, तो अध्याय 15-17 गतसमनी के रास्ते में सिखाये गये। फिर, यदि ऐसा है, तो संभवतः "दाखलता" की कल्पना मंदिर की इमारतों पर सुनहरी दाखलताओं से ली गई एक दृश्य निशानी थी जब यीशु और ग्यारह उस रात उसके आँगनों से होकर चले थे।

▣ **"और मेरा पिता किसान है"** फिर से यीशु ने पिता के साथ अपने अंतरंग संबंध की पुष्टि की और साथ ही साथ पिता की इच्छा के प्रति उसकी अधीनता की।

15:2 "जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है; और जो फलती है,. . .ताकि और फले" वर्तमान कर्मवाच्य कृदंत इस पद में दो बार आता है। फल लाना, अंकुरण नहीं, उद्धार का प्रमाण है (तुलना मत्ती 7:16,20; 13:18ff; 21: 18-22; लूका 6:43-45)। संदर्भ का तात्पर्य यह है कि यीशु बात कर रहा था (1) यहूदा के विश्वासघात की (तुलना यूहन्ना 15:6; 13:10; 17:12) या (2) झूठे चेलों की (तुलना यूहन्ना 2:23-25; 8:30-47; 1 यूहन्ना 2:19; 2 पतरस 2)। यूहन्ना में विश्वास के स्तर हैं।

▣ **"उसे वह छाँटता है"** अक्षरशः यह है "शुद्ध करता है।" इस शब्द का प्रयोग फिलो ने दाखलताओं की छंटाई (BDBD 386) के लिए किया था। यह नये नियम में केवल यहाँ पाया जाता है। यह यूहन्ना द्वारा उसके दोहरे अर्थों के लिए चुना गया एक और शब्द है (यानी, छंटाई और शुद्ध करना, तुलना यूहन्ना 15:3; 13:10)। यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। पीड़ा का विश्वासियों के जीवन में एक उद्देश्य है (तुलना यूहन्ना 15:17-22)। यह फलवंतता को उच्चतम सीमा तक बढ़ाता है, ढोंगियों को उजागर करता है, और उन्हें परमेश्वर पर निर्भर रखता है (तुलना मत्ती 13:20-23; रोमियों 8:17; 1 पतरस 4:12-16)। इस कठिन विषय पर दो अच्छी व्यावहारिक पुस्तकों के लिए देखें (1) *Principles of Spiritual Growth* by Miles Stanford और (2) *The Christian's Secret of a Happy Life* by Hannah Whitehall Smith.

अध्याय 13-17 के एकीकृत संदर्भ के कारण इस शुद्ध करने को अध्याय 13 के पाँव धोने की क्रिया से संबंधित करना सम्भव है। वे पहले से ही नहाए हुए थे (बचाए गए), लेकिन उनके पाँवों को धोने की जरूरत थी (निरन्तर क्षमा)। इस वर्तमान कालिक क्रिया ने चेलों को संबोधित किया जैसा 1 यूहन्ना 1:9 पुष्टि करता है। यह न केवल आज्ञाकारिता है जो "बने रहने" के लिए आवश्यक है, बल्कि अविरत पश्चाताप भी है!

विश्वासी के जीवन में पीड़ा के उद्देश्य के कई पहलू हो सकते हैं।

1. मसीह समान होने का विकास करना (तुलना इब्रानियों 5:8)
2. पाप के लिए अस्थायी सजा
3. एक पतित संसार में मात्र जीवन

परमेश्वर के उद्देश्य की पहचान करना हमेशा मुश्किल होता है, लेकिन #1 हमेशा एक संभावित परिणाम होता है।

15:3 "तुम शुद्ध हो" यूहन्ना 15:2 में शब्द "छाँटता" (*kathairō*) का "शुद्ध" (*katharos*) के समान ही यूनानी मूल है। इस पूरे संदर्भ में सच्चे शिष्यत्व के प्रमाण हैं। "पहले से ही" शब्द पर यूनानी पाठ में जोर दिया गया है, जिसने शेष ग्यारह चेलों को

मसीह में उनकी सुरक्षित स्थिति के बारे में विश्वास दिलाया (यूहन्ना 13:10 में यहूदा इस्करियोती के लिये प्रयुक्त मूल की तुलना में)।

▣ **"उस वचन के कारण जो मैं ने तुमसे कहा है"** (तुलना यूहन्ना 17:17; इफिसियों 5:26; 1 पतरस 1:23)।

15:4
NASB, NKJV "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में"
NRSV "तुम मुझ में बने रहो, जैसा मैं तुम में बना रहता हूँ"
TEV "मुझ में जुड़े रहो, और मैं तुम में जुड़ा रहूँगा"
NJB "मुझ में रहो, जैसा मैं तुम में हूँ"

यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक बहुवचन है (तुलना यूहन्ना 6:56; 1 यूहन्ना 2:6)। व्याकरणिक प्रश्न है कि क्या दूसरा वाक्यांश एक विवरण है या तुलना। इस अवतरण में कई बार सच्चे संत के धीरज पर धर्मशास्त्रीय सैद्धान्तिक जोर दिया जाता है (तुलना यूहन्ना 15:4,5,6,7,9,10,14; मरकुस 13:13; 1 कुरिन्थियों 15:2; गलातियों 6:9; प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17,26; 3:5,12,21; 21:7, यूहन्ना 8:31 पर विशेष विषय देखें)। सच्चा उद्धार एक प्रारंभिक और निरंतर प्रतिक्रिया दोनों है। उद्धार के व्यक्तिगत आश्वासन के लिए हमारे उत्साह में इस धर्मशास्त्रीय सत्य को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। बाइबल का आश्वासन इनसे जुड़ा हुआ है

1. विश्वास में धीरज
2. पश्चाताप की जीवनशैली
3. निरंतर आज्ञाकारिता (तुलना याकूब और 1 यूहन्ना)
4. फलवंत होना (तुलना मत्ती 13:23)

"बने रहना" पर विशेष विषय 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें

▣ **"अपने आप से फल नहीं सकती"** यह दिव्य प्रावधान की प्राथमिकता को दर्शाता है। "फल" के लिए यूहन्ना 15:5 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"बनी न रहे तो. . .तुम भी बने न रहो तो"** ये दोनों तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं, जिसका अर्थ है संभावित कार्य। हमारी आत्मिक प्रभावशीलता यीशु के साथ हमारे निरंतर संबंधों से जुड़ी हुई है।

15:5 "जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत के बाद एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। निरन्तर संगति (यानी, व्यक्तिगत विश्वास संबंध) निरन्तर फल का स्रोत है। फल विश्वासियों के दृष्टिकोण और साथ ही साथ कार्यों का उल्लेख कर सकता है (तुलना मत्ती 7:15-23; गलातियों 4:22-23; 1 कुरिन्थियों 13)। विश्वासियों को प्रभावी, स्थायी फल का वादा किया जाता है यदि वे बने रहते हैं (तुलना यूहन्ना 15:16)।

▣ **"क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते"** यह एक प्रबल दोहरा नकारात्मक है। यह यूहन्ना 15:5 और फिलिप्पियों 4:13 के सकारात्मक सत्य का नकारात्मक कथन है।

15:6 "यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह फेंक दिया जाता है" यह तृतीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है। दाखलता की लकड़ी किसी भी घरेलू उद्देश्य (ईंधन की लकड़ी) के लिए बेकार थी क्योंकि यह बहुत तेजी से और बहुत गर्म जलती थी (तुलना यहेजकेल 15)। यह यहूदा और संभवतः इस्राएल का संदर्भ प्रतीत होता है। यदि नहीं, तो यह झूठे विश्वास का उल्लेख होना चाहिए (तुलना मत्ती 13:41-42,50; और 1 यूहन्ना 2:19)।

यह निश्चित रूप से युगांत विषयक कल्पना है! जहाँ एक "उठा लिए जाने का दिन" और "न्याय का दिन" होगा। हम कैसे जीते हैं हमारे जीवन के स्रोत (अर्थात, परमेश्वर या शैतान) को प्रकट करता है। किसी के फल के द्वारा उसे जाना जाता है (तुलना मत्ती 7; गलातियों 6:7)।

▣ **"आग"** नीचे विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: अग्नि (SPECIAL TOPIC: FIRE)

पवित्रशास्त्र में अग्नि के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों अर्थ हैं।

A. सकारात्मक
   1. तापता है (तुलना यशायाह 44:15; यूहन्ना 18:18)
   2. जलाता है (तुलना यशायाह 50:11; मत्ती 25: 1-13)
   3. पकाता है (तुलना निर्गमन 12:8; यशायाह 44:15-16; यूहन्ना 21:9)
   4. शुद्ध करता है (तुलना गिनती 31:22-23; नीतिवचन 17:3; यशायाह 1:25; 6: 6-8; यिर्मयाह6-29; मलाकी 3:2-3)।
   5. परमेश्वर की पवित्रता (तुलना उत्पत्ति 15:17; निर्गमन 3:2; 19:18; यहेजकेल 1:27; इब्रानियों 12:29)।
   6. परमेश्वर का नेतृत्व (तुलना निर्गमन 13:21; गिनती 14:14; 1 राजाओं 18:24)
   7. परमेश्वर का सशक्तिकरण (तुलना प्रेरितों के काम 2:3)
   8. परमेश्वर की सुरक्षा (तुलना जकर्याह 2:5)

B. नकारात्मक
   1. फूँक देता है (तुलना यहोशू 6:24; 8:8; 11:11; मत्ती 22:7)
   2. भस्म कर देता है (तुलना उत्पत्ति 19:24; लैव्यव्यवस्था 10:1-2)
   3. क्रोध (तुलना गिनती 21:28; यशायाह 10:16; जकर्याह 12: 6)
   4. सज़ा (तुलना उत्पत्ति 38:24; लैव्यव्यवस्था 20:14; 21:9; यहोशू 7:15)।
   5. झूठे युगांत-विषयक संकेत (तुलना 13:13)

C. पाप के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध अक्सर अग्नि की अलंकृत भाषा में व्यक्त किया जाता है
   1. उसका क्रोध भड़कता है (तुलना होशे 8:5; सपन्याह 3: 8)
   2. वह आग भड़काता है (तुलना नहूम 1:6)
   3. अनन्त अग्नि (तुलना यिर्मयाह 15:14; 17:4; मत्ती 25:41; यहूदा 7)।
   4. युगांत-विषयक न्याय (तुलना मत्ती 3:10; 5:22; 13:40; यूहन्ना 15:6; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7; 2 पतरस 3:7-10; प्रकाशितवाक्य 8:7; 16:8; 20:14-15)

D. अग्नि अक्सर ईश्वर-विभव में दिखाई देती है
   1. उत्पत्ति 15:17
   2. निर्गमन 3: 2
   3. निर्गमन 19:18
   4. भजनसंहिता 18:7-15; 29:7
   5. यहेजकेल 1:4,27; 10:2
   6. इब्रानियों 1:7; 12:29

E. बाइबल में इतने सारे रूपकों (यानी, ख़मीर, सिंह) के समान अग्नि संदर्भ के आधार पर एक आशीष या शाप हो सकती है।

15:7 "यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे" यह तीसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। प्रार्थना का उत्तर अपने आप नहीं मिलता है! यीशु अपने आप को चेलों में बने रहने की उपमाओं को उसके वचनों के बने रहने से बदल देता है। यीशु पिता को प्रकट करता और इसी प्रकार, उसकी शिक्षाएँ भी। वे प्रकटीकरण के विनिमेय स्रोत हैं। सुसमाचार एक व्यक्ति और एक संदेश दोनों है।

▣ **"जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा"** यह एक अनिर्दिष्टकाल मध्यम आज्ञार्थक है (तुलना यूहन्ना 15:16)। इस वाक्यांश का बुरी तरह से पाठ-प्रमाण किया गया है। सारे शास्त्र की शिक्षाओं को लेने में सावधान रहें और पृथक पाठों पर जोर न दें (तुलना 14:13 पर टिप्पणी देखें)। विशेष विषय: प्रार्थना, असीमित फिर भी सीमित 1 यूहन्ना 3:22 पर देखें।

15:8 "मेरे पिता की महिमा इसी से होती है" विश्वासियों का यीशु के समान जीवन जीना परमेश्वर की महिमा करता है और साबित करता है कि वे सच्चे चेले हैं। यूहन्ना 13:31-32; 14:13; 17:4; और मत्ती 9:8; 15:31 में पिता की महिमा पुत्र के कार्यों में हुई और अब विश्वासी कार्यों में (तुलना मत्ती 5:16)। यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

NASB	**"तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे"**
NKJV	**"तब ही तुम मेरे चेले होगे"**
NRSV, TEV	**"मेरे चेले बनो"**
NJB	**"मेरे चेले बन जाओ"**
REB	**"तो मेरे चेले बन जाओ"**
NIV, Goodspeed	**"अपने आप को मेरे चेले बनना दिखाओ"**
NET Bible	**"दिखाओ कि तुम मेरे चेले हो"**
JB	**"तो तुम मेरे चेले होगे"**

क्रिया में एक काल भिन्नता के कारण मतभेद होते हैं।

1. अनिर्दिष्टकाल, संशयार्थ-सूचक, MSS P[66], B, D, L
2. भविष्यकाल निर्देशात्मक, MSS א, A

विश्वासियों का जीवन (फल) प्रकट करता है कि वे कौन हैं! क्रिया काल प्रेम, आज्ञाकारिता और सेवा के बदले हुए और प्रभावी जीवन की वास्तविकता के जितना महत्त्वपूर्ण नहीं है। ये एक सच्चे विश्वासी के चिन्ह हैं! हम अपने प्रेम, आज्ञाकारिता, सेवा (तुलना इफिसियों 2:8,9) से नहीं बचाए जाते हैं, लेकिन वे सबूत हैं कि हम विश्वासी हैं (तुलना इफिसियों 2:10)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में "चेलों" शब्द का प्रयोग उन सच्चे विश्वासियों और अनुयायियों को निरूपित करने के लिए किया गया है जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं और उसके चरित्र को दर्शाते हैं। यूहन्ना एक बार भी "कलीसिया" (*ekklēsia*) शब्द का प्रयोग नहीं करता है, इसलिए, "चेले" वह तरीका बन जाता है जिससे वह मसीही संगति और सभाओं को दर्शाता है। शिष्यत्व नये युग का दैनिक जीवन है जो वृद्धावस्था में जिया जाता है। प्रेम, ज्योति, आज्ञाकारिता, और सेवा इसकी विशेषता है। इनके द्वारा अन्य लोग उन्हें यीशु के चेलों के रूप में जानते हैं।

15:9 "जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा" प्रेम संबंधों की यह श्रृंखला परमेश्वर के परिवार की विशेषता है; पिता पुत्र से प्रेम रखता है, पुत्र अपने अनुयायियों से प्रेम रखता है, उसके अनुयायी एक दूसरे से प्रेम रखते हैं।

▣ **"मेरे प्रेम में बने रहो"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। विश्वासियों को इनमें बने रहने की आज्ञा दी गई है

1. प्रार्थना (यूहन्ना 15:7; 14:14)
2. आज्ञाकारिता (यूहन्ना 15:10,14,17,20; 14:15,21,23,24)
3. आनन्द (यूहन्ना 15:11)
4. प्रेम (यूहन्ना 15:12; 14:21,23,24)

ये सभी परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के सबूत हैं। विशेष विषय: बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

15:10 "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। आज्ञाकारिता सच्चे शिष्यत्व का प्रमाण है (तुलना यूहन्ना 8:31; 14:15-21, 23-24; लूका 6:46)। यीशु इसे पिता के प्रति उसकी निष्ठा के उदाहरण के रूप में प्रयोग करता है।

▣ **"प्रेम"** प्रेम (*agapē)* के लिये इस यूनानी शब्द का पारंपरिक या बोल-चाल की भाषा के यूनानी साहित्य में तब तक अधिक प्रयोग नहीं किया गया था जब तक कि कलीसिया ने एक विशेष अर्थ में इसका प्रयोग करना शुरू नहीं किया। इसका प्रयोग निस्वार्थ, बलिदानरूपी, निष्ठावान, सक्रिय प्रेम के रूप में किया जाने लगा। प्रेम एक क्रिया है, भावना नहीं (तुलना यूहन्ना 3:16)। नये नियम का शब्द *agapē* पुराने नियम के शब्द *hesed* जिसका अर्थ था वाचा का प्रेम और निष्ठा, का धर्मशास्त्रीय रूप से समरूप है।

▣ **"जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है"** यह एक सही कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। जैसा कि यीशु पिता से संबंध रखता है, वैसे ही विश्वासियों को उससे संबंध रखना है। पिता और पुत्र के बीच एक एकता है जो विश्वासियों के बीच फिर से दिखाई देनी चाहिए (तुलना यूहन्ना 14:23)।

15:11 "तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए" विश्वासियों में यीशु का आनन्द होना चाहिए (तुलना यूहन्ना 17:13)। आनन्द सच्चे शिष्यत्व का एक और प्रमाण है (तुलना यूहन्ना 15:11 [दो बार]; 16:20,21,22,24; 17:13)। इस संसार में पीड़ा और संकट हैं; मसीह में आनंद, पूर्ण आनंद, उसका आनंद है।
NIDOTTE, vol. 1, p. 741, पर यूहन्ना के लेखन में "आनन्द" और "पूरा" का एक साथ कैसे प्रयोग किया गया है, इस बारे में एक अच्छी टिप्पणी है

"यूहन्ना और जोहानिन की पत्रियों में, इस अवतरण में एक विषय के रूप में → आनन्द (*chara*) और क्रिया *plēroō* के बीच एक बहुधा होनेवाला संबंध है। यह आनन्द यीशु का आनन्द है (यूहन्ना 15:11; 17:13) जिसे वह अपने आगमन (3:29), अपने वचनों (15:11; 17:13), और अपनी वापसी (16:22) के माध्यम से अपने चेलों तक लाता है (15:11; 17:13)। यह उस शोक को प्रतिस्थापित करता है जो उनके हृदयों में है (16:16, 20)। इस प्रकार मसीह का आनन्द उनका आनन्द बन जाता है (15:11; 16:24; तुलना 1 यूहन्ना 1:4) यीशु के साथ चलने में यह आनन्द चेलों के जीवन की विशेषता है; यह पूरा हो जाता है (यूहन्ना 3:29; 15:11; 16:24; 17:13; 1 यूहन्ना 1:4; 2 यूहन्ना 12)। अवतरण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि यह परमेश्वर है जो इस आनन्द को पूरा करता है।"

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 15:12-17
[12]"मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। [13]इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे। [14]जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो। [15]अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है; परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं। [16]तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे। [17]इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।"

15:12 "मेरी आज्ञा यह है" यीशु ने इस विषय को अक्सर दोहराया है (तुलना यूहन्ना 13:34; 15:17; 1 यूहन्ना 3:11,23; 4:7-8, 11-12, 19-21; 2 यूहन्ना 5)।

▣ **"कि वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक, एक नियमित आदेश है। प्रेम आत्मा का फल है (तुलना गलातियों 5:22) प्रेम एक भावना नहीं है, बल्कि एक क्रिया है। इसे व्यावहारिक रूप से परिभाषित किया जाता है (तुलना गलातियों 5:22-23; 1 कुरिन्थियों 13)।

▣ **"जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। संभवतः यह क्रूस के लिए एक आलंकारिक संदर्भ था (तुलना यूहन्ना 15:13)। फिर से, यह यीशु का विशेष प्रकार का स्व-अर्पण प्रेम था जिसे विश्वासियों को प्रदर्शित करना है (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:14-15; गलातियों 2:20; 1 यूहन्ना 3:16)।

15:13 "कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे" यह यीशु के प्रतिस्थानिक, स्थानापन्न प्रायश्चित को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 10:11,15,17,18; मरकुस 10:45; रोमियों 5:7-8; 2 कुरिन्थियों 5:21; यशायाह 53)। यह है कार्य में प्रेम! यही चेलों से करने के लिए कहा गया है (तुलना 1 यूहन्ना 3:16)।

15:14 "तुम मेरे मित्र हो" यह यूनानी संज्ञा *philos* है, जो अक्सर मित्रता के प्रेम (*phileō*) से जुड़ा होता है। बोलचाल की यूनानी भाषा में "*agapaō*" और "*phileō*" अक्सर दिव्य प्रेम के पर्यायवाची शब्द हैं (तुलना करें 11:3 [*phileō*] और 5 [*agapaō*]); यूहन्ना 5:20 में परमेश्वर के प्रेम के लिए भी *phileō* का प्रयोग किया गया है।

▣ **"जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। यह मित्रता के लिए नियम देता है, जो है आज्ञाकारिता (तुलना यूहन्ना 14:15, 23-24, 15:10; लूका 6:46)। जैसा कि यीशु पिता में बना रहा और उसके प्रेम में रहा, वैसा ही, उसके चेलों को रहना चाहिए!

15:15 यीशु चेलों को सूचित करता है (1) परमेश्वर के बारे में सत्य और (2) भविष्य की घटनाएँ। वह अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन करता है ताकि चेले विश्वास और भरोसे में बढ़े। यीशु ने जो कुछ पिता से सुना था, अपने चेलों को बताया (तुलना यूहन्ना 3:32; 8:26,40; 12:49; 15:15); उन्हें इसे दूसरों तक पहुँचाना था (तुलना मत्ती 28:20)।

15:16 "तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है" यहाँ कई प्रमुख व्याकरणिक वस्तुएँ हैं।

1. दोनों क्रियाएँ अनिर्दिष्टकाल मध्यम निर्देशात्मक हैं – यीशु ने, स्वयं, हमेशा के लिए उन्हें चुना (तुलना यूहन्ना 6:70; 13:18; 15:16,19)
2. प्रबल "*alla*" (लेकिन) विरोधात्मक
3. दृढ़ "*ego*" या "मैं" कथन

यहाँ मानव प्रतिक्रिया और चुनाव के बीच संतुलन है। दोनों बाइबल की शिक्षाएँ हैं। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (तुलना यूहन्ना 6:44,65; 15:16,19), लेकिन मनुष्यों को प्रत्युत्तर देना चाहिए (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16; 15: 4,7,9)। मानव जाति के साथ परमेश्वर का व्यवहार हमेशा एक वाचा के रिश्ते में होता है ("यदि. . .तो")। यूहन्ना 3:16 पर विशेष विषय देखें।

इस संदर्भ में क्रिया "चुना" बारह को संदर्भित करता है। पुराने नियम में "चुने हुए" शब्द का लक्ष्यार्थ "सेवा के लिए चुने हुए" है और केवल नये नियम में "उद्धार के लिए चुने हुए" की अतिरिक्त अवधारणा शब्दार्थ सीमा में आती है। नये नियम के विश्वासियों को मसीह के समान होने के लिए चुना गया है जो सेवा, निस्वार्थता, और परमेश्वर के राज्य के लिए बलिदान, मसीह की देह, सामूहिक अच्छाई है। यह एक स्पष्ट प्रदर्शन है कि पतन की आत्मकेन्द्रितता टूट गई है।

यूहन्ना में यह विशेषता है कि बारहों के बारे में यीशु जो कहते हैं, उसका सभी विश्वासियों के लिए निहितार्थ और अनुप्रयोग है। वे शिष्यत्व के पहले फलों का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन उनका संबंध

1. अपनी प्रत्यक्षदर्शी गवाही में अद्वितीय है (यानी, प्रेरणा)
2. सब विश्वासियों के लिए इस प्रकार लागू होता है कि उनके लिए यीशु की इच्छा उन सभी के लिए यीशु की इच्छा है जो विश्वास और अनुसरण करते हैं।

▣ **"तुम्हें नियुक्त किया कि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे"** ये तीन वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक हैं: (1) जाकर; (2) फल लाओ; और (3) फल बना रहे (बना रहे)। विश्वासी एक मिशन पर हैं (तुलना मत्ती 28:19-20; लूका 24:46-47; प्रेरितों के काम 1:8)। "नियुक्त" शब्द का धर्मशास्त्रीय पहलू प्रेरितों के काम 20:2; 1 कुरिन्थियों 12:28; 2 तीमुथियुस 1:11 में देखा जा सकता है। यह विश्वासियों के बदले में मसीह की मृत्यु के लिए भी प्रयोग किया गया था (तुलना यूहन्ना 10:11,15,17-18; 15:13)।

▣ **"मेरे नाम से"** विश्वासियों को यीशु के चरित्र को पुन: पेश करना है। यह वाक्यांश 1 यूहन्ना 5:14 में "परमेश्वर की इच्छा" का पर्यायवाची है। यूहन्ना 14:13-15 के समान प्रेम और उत्तर-प्राप्त प्रार्थना यहाँ जुड़ी हुई है। विशेष विषय: प्रभु का नाम यूहन्ना 14:13-14 पर देखें ।

15:17 "इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो" पद 12 पर टिप्पणी देखें। उत्तर-प्राप्त प्रार्थना प्रेम और मिशन से जुड़ी हुई है!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 15:18-25

**[18]"यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुम से पहले मुझ से बैर रखा। [19]यदि तुम
संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता; परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन मैं ने तुम्हें संसार से
चुन लिया है, इसी लिए संसार तुम से बैर रखता है। [20]जो बात मैं ने तुमसे कही थी, 'दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं
होता।' उसको याद रखो। यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी
भी मानेंगे। [21]परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं
जानते। [22]यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते, परन्तु अब उन्हें उनके पाप के लिए कोई
बहाना नहीं। [23]जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। [24]यदि मैं उनमें वे काम न करता जो
और किसी ने नहीं किए, तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा और
दोनों से बैर किया। [25]यह इसलिये हुआ कि वह वचन पूरा हो, जो उनकी व्यवस्था में लिखा है, 'उन्होंने मुझ से व्यर्थ
बैर किया।'"**

15:18 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्य के लिए सही माना जाता है। संसार, एक पतित मानव प्रणाली, यीशु के अनुयायियों से नफरत करता है।

▣ **"संसार"** यूहन्ना इस शब्द का कई तरीकों से प्रयोग करता है: (1) ग्रह, सारी मानवजाति के लिए एक रूपक के रूप में

(तुलना यूहन्ना 3:16) और (2) मानव समाज जो संगठित है और परमेश्वर से अलग हटकर कार्य करता है (तुलना यूहन्ना 10:8; 1 यूहन्ना 2:15-17)। यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"तुम से बैर रखता है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है; संसार का बैर रखना जारी है (तुलना यूहन्ना 15:20)।

▣ **"तुम जानते हो"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। विश्वासियों की नये नियम के सत्यों की जानकारी उन्हें पतित संसार के सताव का सामना करने में सहायता करेगी।

▣ **"कि उसने तुम से पहले मुझ से बैर रखा"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। सर्वनाम "मुझसे" दृढ़ है (तुलना यूहन्ना 7:7)। यह परमेश्वर, उसके मसीहा और उसके लोगों के प्रति संसार के विरोध को प्रकट करता है (तुलना यूहन्ना 17:14; 1 यूहन्ना 3:13)।

विश्वासी मसीह के प्रेम में एक हैं और मसीह के सताव में एक हैं (तुलना रोमियों 8:17; 2 कुरिन्थियों 5:5,7; फिलिप्पियों 3:10; 1 पतरस 4:13)। मसीह के साथ पहचान शांति, आनन्द और सताव, यहाँ तक कि मृत्यु को भी लाती है!

15:19 "यदि" यह द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। इसका अनुवाद किया जाना चाहिए "यदि तुम संसार के होते, जो तुम नहीं हो, तो संसार तुम से प्रेम रखता, परन्तु वह नहीं रखता।"

15:20 "याद रखो" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है, जैसे यूहन्ना 15:18, या वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक, संभवतः एक प्रश्न (LB)।

▣ **"दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता"** जब कोई इस पद की तुलना 13:16 से करता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु ने विभिन्न तरीकों से लोक-प्रसिद्ध कहावतों का प्रयोग किया था।

▣ **"यदि उन्होंने मुझे सताया. . .यदि उन्होंने मेरी बात मानी"** ये दो प्रथम श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं जो लेखक के दृष्टिकोण से सत्य माने जाते हैं। "सताया" शब्द का अर्थ है जंगली जानवर के समान पीछा करना। सताव एक पतित संसार में मसीह के अनुयायियों के लिए मानदण्ड है (मत्ती 5:10-12; यूहन्ना 16:17:14; 17:14; प्रेरितों के काम 14:22; रोमियों 5:3-4; 8:17; 2 कुरिन्थियों 4:16-18; 6:3-10; 11:23-30; फिलिप्पियों 1:29; 1 थिस्सलुनीकियों 3:3; 2 तीमुथियुस 3:12; याकूब 1:2-4; 1 पतरस 4:12-16)।

फिर भी, ध्यान दें कि हालाँकि कुछ प्रेरितों के वचनों को अस्वीकार करेंगे और यहाँ तक कि उन्हें सताएँगे भी, ऐसे भी होगें जो सुनेंगे और प्रत्युत्तर देंगे! वे स्वयं इस वास्तविकता का प्रमाण हैं!

15:21 "वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते" यह स्पष्ट रूप से पिता को संदर्भित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि यहूदी साथ ही साथ अन्यजाति परमेश्वर को नहीं जानते हैं। "जानते" का प्रयोग व्यक्तिगत संबंध (उत्पत्ति 4:1; यिर्मयाह 1:5) उसके सामी (पुराने नियम) अर्थ में किया गया है। खोए हुए संसार ने विश्वासियों को सताया क्योंकि (1) वे यीशु के हैं, उसे भी उन्होंने सताया था और (2) वे परमेश्वर को नहीं जानते हैं!

15:22 "यदि मैं न आता" यह एक और द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसका अर्थ है "तथ्य के विपरीत।" इसका अनुवाद किया जाना चाहिए "यदि मैं वापस न आता था और उनसे बातें न करता, जो मैंने कीं, तो वे पापी न ठहरते, जो वे हैं।" उत्तरदायित्व ज्ञान से संबंधित है (विशेष विषय: अक्षम्य पाप यूहन्ना 5:21 पर देखें)। इस संदर्भ में फलहीन डालियों (अर्थात, यहूदा और यहूदी) के पास ज्ञान के लिए बहुत अच्छा अवसर था, उन लोगों की तुलना में बहुत अधिक, जिनके पास केवल प्राकृतिक प्रकटीकरण था (यानी, अन्यजातियाँ, तुलना भजनसंहिता 19:1-6; रोमियों 1:18-20 या 2:14-15)।

15:23 यीशु का निरंतर विरोध परमेश्वर का निरंतर विरोध है (तुलना यूहन्ना 15:24)।

15:24 "यदि" यह एक और द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है "तथ्य के विपरीत।" इसका अनुवाद किया जाना चाहिए "यदि मैं उनमें वे काम न करता जो और किसी ने नहीं किए (लेकिन जो मैंने किए), तो वे पापी न ठहरते, जो वे हैं।"

ज्योति उत्तरदायित्व लाती है (तुलना यूहन्ना 1:5; 8:12; 12:35,46; 1 यूहन्ना 1:5; 2:8,9,11; मत्ती 6:23)।

▣ **"उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा और दोनों से बैर किया"** ये दोनों पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं जो एक स्थिर मनोभाव दिखाते हैं। यीशु को अस्वीकार करना पिता को अस्वीकार करना है (तुलना 1 यूहन्ना 5:9-13)।

15:25 यह आश्चर्य की बात है कि भजनसंहिता 35:19; 69:4 से एक उद्धरण का वर्णन करने के लिए "व्यवस्था" या "तोराह" शब्द का प्रयोग किया जाता है। । सामान्यतः इस शब्द का प्रयोग मूसा की रचनाओं, उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक के लिए किया जाता है।

इस तरह के स्पष्ट प्रकाशन के उपरांत यीशु के यहूदी अस्वीकृति के रहस्य के लिए जान-बूझकर किए गए अविश्वास को जिम्मेदार ठहराया गया है (तुलना यशायाह 6:9-13; यिर्मयाह 5:21; रोमियों 3:9-18)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 15:26-27
26"परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा, 27और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।"

15:26 "परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूँगा" पिता और पुत्र दोनों आत्मा भेजते हैं (तुलना यूहन्ना 14:16, 26; 15:26; 16:7)। छुटकारे के कार्य में त्रिएकत्व के सभी तीन व्यक्ति शामिल हैं।

▣ **"सत्य का आत्मा"** इसका प्रयोग पिता को प्रगट करने वाले के रूप में पवित्र आत्मा के लिए किया जाता है (तुलना यूहन्ना 14:17,26; 15:26; 16:13)। यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर सच्चाई पर विशेष विषय देखें।

▣ **"वह मेरी गवाही देगा"** आत्मा का कार्य है यीशु और उसकी शिक्षाओं की गवाही देना (तुलना यूहन्ना 14:26; 16:13-15; 1 यूहन्ना 5:7)।

15:27 "तुम भी मेरे गवाह हो" "तुम भी" दृढ़ है। यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह नये नियम (यानी, प्रेरित और उनके मित्रों) के लेखकों की प्रेरणा का उल्लेख होना चाहिए जो यीशु के सांसारिक जीवन के दौरान उसके साथ थे (तुलना लूका 24:48)। विशेष विषयों: यूहन्ना 1:8 पर यीशु के गवाह और यूहन्ना 14:26 पर आत्मा का व्यक्ति होना को देखें ।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. "बने रहने" में क्या शामिल है?
2. क्या होगा यदि कोई विश्वासी बने रहना बंद कर दे? यदि किसी विश्वासी में कोई फल नहीं है तो क्या होगा?
3. सच्चे शिष्यत्व के प्रमाणों की सूची बनाएँ।
4. यदि सताव मसीहियों के लिए मानदण्ड है, तो आज वह हमसे क्या कहता है?
5. यूहन्ना 15:16 का अपने शब्दों में वर्णन करें

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 16

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
संसार का बैर	आने वाली अस्वीकृति			चेले और संसार
(15:18-16:4a)	(15:26-16:4)	मसीही का संसार से संबंध	(15:18-16:4a)	(15:18-16:4a)
आत्मा का कार्य		16:1-4a	पवित्र आत्मा का कार्य	सहायक का आना
16:4b-11	पवित्र आत्मा का कार्य	16:4b-11	16:4b-11	16:4b-15
	16:5-15			
16:12-15		16:12-15	16:12-15	
दु:ख सुख में बदल जाएगा	दु:ख सुख में बदल जाएगा		शोक और आनन्द	यीशु अति शीघ्र आनेवाला है
16:16-24	16:16-24	16:16-24	16:16	16:16
			16:17-18	16:17-28
			16:19-22	
			16:23-24	
मैंने जीत लिया है	यीशु मसीह ने संसार को जीत लिया है		संसार पर विजय	
16:25-33	16:25-33	16:25-28	16:25-28	
		16:29-33	16:29-30	16:29-33
			16:31-33	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

यूहन्ना 16:1-33 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. यूहन्ना 15:18 से 16:4a तक एक साहित्यिक संदर्भ है। अध्याय विभाजन प्रेरित नहीं हैं और बहुत बाद के परिवर्धन हैं, जैसे अनुच्छेद लेखन, बड़े अक्षरों में लिखना, विराम चिह्न और पद्य विभाजन।

B. आत्मिक रूप से खोए हुओं के लिए पवित्र आत्मा के कार्य को यूहन्ना 16:8-11 में, बचाये हुओं के लिए उसका कार्य यूहन्ना 16:12-15 में परिभाषित किया गया है। सैमुएल जे. मिकोलस्की का नये नियम में आत्मा की गतिविधि का एक दिलचस्प सारांश *The Exposition Bible Commentary,* Vol. 1 में उनके लेख "The Theology of the New Testament" में दिया है:

> "नये नियम का पवित्रीकरण का सिद्धांत, जबकि धर्मी ठहराए जाने से नजदीकी से सम्बद्ध है, फिर भी इससे अलग है। जैसा कि पुराने नियम में, पवित्रीकरण पहले अलगाव—परमेश्वर की पवित्र उत्कृष्टता की ओर इशारा करता है और दूसरा, नैतिक गुणवत्ता और संबंध की ओर जो परमेश्वर के समान है। पवित्रीकरण पवित्र आत्मा का कार्य है, जो एक व्यक्ति को मसीह के साथ एक करता है और उसके जीवन को आत्मिक रूप से नवीनीकृत करता है। नये नियम की भाषा आत्मा में बपतिस्मा (1 कुरिन्थियों 12:13); आत्मा की छाप (इफिसियों 1:13,14; 4:30), आत्मा का वास (यूहन्ना 14:17; रोमियों 5:5; 8:9-11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; 2 तीमुथियुस 1:14), आत्मा द्वारा निर्देश (यूहन्ना 14:26; 16:12-15), आत्मा से परिपूर्ण होना (इफिसियों 5:18), और आत्मा का फल (गलातियों 5: 22,23) को आवश्यक बना देती है। पवित्रीकरण धर्मी ठहराए जाने से संबंधित है, जो है परमेश्वर के सामने खड़े रहना (इब्रानियों 10:10), और शायद एक नए आदर्श में विकसित होने के रूप में सोचा जा सकता है" (पृष्ठ 474)।

C. पद 17, 13:36; 14:5, 8 और 22 के समान, प्रेरितों का एक और सवाल है।

D. कई लोगों का मानना है कि यूहन्ना 14:31 का "उठो, यहाँ से चलें" 18:1 के साथ संयुक्त रूप से यह दर्शाता है कि यीशु ने अध्याय 15-17 यरूशलेम के मंदिर और सड़कों से होते हुए गतसमनी की ओर जाते हुए कहे, अटारी में नहीं।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 16:1-4
1"ये बातें मैंने तुम से इसलिये कहीं कि तुम ठोकर न खाओ। 2वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ। 3ऐसा वे इसलिये करेंगे कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं। 4परन्तु ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कहीं, कि जब इनका समय आए, तो तुम्हें स्मरण आ जाए कि मैं ने तुम से पहले ही कह दिया था।मैं ने आरम्भ में ये बातें इसलिये नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।"

16:1
NASB **"इसलिये कि तुम ठोकर खाने से बचे रहो"**
NKJV **"कि कहीं तुम ठोकर न खाओ"**
NRSV **"तुम्हें ठोकर खाने से बचाने के लिए"**
TEV **"ताकि तुम अपने विश्वास को न त्याग दो"**
NJB **"ताकि तुम ठोकर न खाओ"**

यह यूनानी शब्द (*skandalizō*, का अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य संशयार्थ-सूचक रूप, BAGD 752) मूल रूप से जानवरों को पकड़ने के लिए एक चारायुक्त जाल के लिए प्रयोग किया जाता था। इसका अनुवाद अक्सर "ठोकर खाना" होता है (तुलना मत्ती 13:21; 24:10; मरकुस 4:17; 14:27,29)। इस संदर्भ में इसका रूपक के रूप में प्रयोग विश्वासियों के साथी यहूदियों, यहाँ तक कि धार्मिक अगुवों के घृणित कार्यों से अनजान न रहने की ओर इंगित करता है।

16:2 "वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे" यह यहूदी धर्म से बहिष्कार को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 9:22,34; 12:42)।

बहुत सी बातें यहूदी गैर- सहभागिता की प्रक्रियाओं के बारे में अज्ञात है। आराधनालय की सभाओं से एक अस्थायी और एक स्थायी बहिष्करण दोनों थे। बाद में, 70 ई. में यरूशलेम के पतन के बाद, पलस्तीन के जामनिया में, रब्बियों ने मसीह से

संबंधित एक "शाप शपथ" विकसित की जिसके द्वारा वे आराधनालय की सभाओं से मसीहियों को बाहर करने की इच्छा रखते थे। इसी ने अंततः मसीह के अनुयायियों और स्थानीय यहूदी आराधनालयों के बीच एक विभाजन किया।

▣ **"जो कोई तुम्हें मार डालेगा वह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ"** ठीक यही बात यहूदी अगुवे (तुलना यशायाह 66:5; मत्ती 5:10-12; 10:32) सोचते थे। तरसुस का शाऊल (पौलुस) इस पथभ्रष्ट धार्मिक उत्साह का एक अच्छा उदाहरण है (तुलना प्रेरितों के काम 26:9-11; गलातियों 1:13-14)।

16:3 "ऐसा वे इसलिये करेंगे" परमेश्वर के लिए ईमानदारी और प्रतिबद्धता पर्याप्त नहीं है। अक्सर परमेश्वर के नाम से दुष्टता, त्रुटि और कट्टरता होती है।

▣ **"कि उन्होंने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं"** शब्द "जानना" अंतरंग, व्यक्तिगत संबंध के लिए पुराने नियम के लक्ष्यार्थ को संदर्भित करता है (तुलना उत्पत्ति 4:1; यिर्मयाह 1:5) । यह एक मजबूत दावा है कि यीशु की अस्वीकृति अंततः परमेश्वर की अस्वीकृति है (तुलना यूहन्ना 8:19; 15:21; 1 यूहन्ना 5:9-12)।

यूहन्ना अक्सर संसार के आत्मिक अंधेपन और अज्ञानता का दावा करता है (तुलना यूहन्ना 1:10; 8:19,55; 15:21; 16:3; 17:25)। हालाँकि पुत्र के आने का उद्देश्य संसार को बचाना (तुलना यूहन्ना 3:16) और पिता को प्रकट करना था ताकि संसार उसे मसीह के माध्यम से जान सके (तुलना यूहन्ना 17:23)।

16:4 यीशु की भविष्यवाणियाँ क्लेश और अस्वीकृति के बीच चेलों के विश्वास/भरोसा/आस्था को प्रोत्साहित करने के साधन के रूप में दी गईं थीं (तुलना यूहन्ना 13:19; 14:29)।

"आरम्भ में" यीशु के सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ और बारहों की विशेष बुलाहट को संदर्भित करता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 16:5-11

[5]"परन्तु अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूँ; और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, 'तू कहाँ जाता है?' [6]परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कहीं हैं, इसलिये तुम्हारा मन शोक से भर गया है। लेकिन [7]तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा। [8]वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा [9]पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; [10]और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर न देखोगे; [11]न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।"

16:5 "तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, 'तू कहाँ जाता है'" ऐसा लगता है कि पतरस ने अध्याय 13:36 में यही सवाल पूछा था, लेकिन तुरंत उसका मन यीशु के उन्हें छोड़ने की व्यथा से और फिर इस सवाल से कि उनका क्या होगा विचलित हो गया (तुलना यूहन्ना 16:6)। यूहन्ना 14:1-3 यीशु के स्वर्गारोहण की चर्चा करता है (तुलना प्रेरितों के काम 1:19-11)।

यह अपने आप को याद दिलाने के लिए एक अच्छी जगह है कि सुसमाचार शब्दशः, शब्द-प्रति-शब्द, यीशु के वार्तालापों की प्रतिलिपि नहीं हैं। वे कई वर्षों के पश्चात धर्मशास्त्रीय उद्देश्यों के लिए किये गए सारांश हैं। प्रेरणा के तहत, सुसमाचार लेखकों के पास यीशु के शब्दों को चुनने, क्रम से लगाने और सामंजस्य स्थापित करने का विकल्प था (Gordon Fee and Douglas Stuart, *How To Read Bible For All Its Worth* देखें)। मैं नहीं मानता कि उन्हें यीशु के मुँह में शब्द डालने का अधिकार था। यीशु के शब्दों, उपदेशों और कार्यों को कुछ लक्ष्य श्रोताओं के लिए प्रचार के लिए इस प्रकार की धर्मशास्त्रीय संरचना, शायद सुसमाचार विवरणों के बीच के कई अंतरों को समझाती है!

16:6 "तुम्हारा मन शोक से भर गया है" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। अटारी का अनुभव दुख से भरा था (तुलना यूहन्ना 14:1; 16:6,22)। "मन" शब्द का प्रयोग संपूर्ण व्यक्तित्व, भावनाओं और इच्छा के इब्रानी अर्थ में किया गया है। विशेष विषय: हृदय यूहन्ना 12:40 पर देखें

16:7 "मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है" यीशु का भौतिक शरीर एक समय में केवल एक ही स्थान पर हो सकता है, जिसने उसके सभी चेलों को सिखाने और सेवा करने दोनों की उसकी क्षमता को सीमित कर दिया। इसके अलावा, अपने सांसारिक जीवन के दौरान उसने मुख्य रूप से इस्राएल पर ध्यान केंद्रित किया (तुलना मत्ती 10:6; 15:24) पवित्र आत्मा के आने से एक नया युग खुल जाएगा जिससे एक विस्तारित सेवकाई आरम्भ होगी (तुलना इफिसियों 2:11-3:13)।

"अच्छा" शब्द का अर्थ "लाभकारक" होता है और इसका प्रयोग यूहन्ना 11:50 और 18:14 में यीशु की मृत्यु के संबंध में भी किया जाता है। वाक्यांश "जाना" में यीशु के अंतिम सप्ताह की घटनाएँ शामिल हो सकती हैं।

▣ **"क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा"** इस पद में दो तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं जिसका अर्थ है संभावित कार्य। आत्मा की परिपूर्णता आने के लिए यीशु का जाना जरूरी था! शब्द *paraclētos* का अनुवाद "मध्यस्थ," "दिलासा देने वाला," या "सहायक" किया जा सकता है (तुलना14:16, 26; 15:26, यूहन्ना 14:16 पर पूर्ण टिप्पणी देखें)। यह शब्द केवल यूहन्ना के लेखन में दिखाई देता है। इसका प्रयोग यूनानी साहित्य में सहायता प्रदान करने के लिए बचाव पक्ष के वकील के लिए किया जाता था। यूहन्ना 16:8-11 में आत्मा ने संसार के लिए एक अभियोजक के रूप में कार्य किया, तथापि, यूहन्ना 16:12-15 में आत्मा की वकालत विश्वासियों के लिए दिखाई देती है।

यही शब्द *paraclētos*, 1 यूहन्ना 2:1 में पुत्र के लिए प्रयोग किया गया है। यूनानी मूल का अनुवाद "दिलासा" किया जा सकता है। इस अर्थ में यह 2 कुरिन्थियों 1:3-11 में पिता के लिए प्रयोग किया गया है।

▣ **"मैं उसे तुम्हारे पास भेजूँगा"** आत्मा पिता और पुत्र दोनों की ओर से आया था (तुलना यूहन्ना 14:26)।

16:8 "वह आकर संसार को निरुत्तर करेगा" ध्यान दें कि आत्मा की गवाही के सभी तीन क्षेत्र (पाप, धार्मिकता, न्याय) मानव जाति की आवश्यकता और यीशु मसीह के छुटकारे के कार्य से संबंधित हैं। "निरुत्तर" शब्द "प्रति-परीक्षा" के लिए कानूनी शब्द था।

G. B. Caird, *The Language and Imagery of the Bible,* p. 159, में इन तीन क्षेत्रों की एक दिलचस्प समझ है। संसार को निश्चय दिलाएँ कि

1. वह यीशु पर मुकदमा करने और प्राणदण्ड देने में गलत है।
2. वह पाप के अर्थ के बारे में गलत है।
3. वह धार्मिकता के अर्थ के बारे में गलत है।
4. वह न्याय के अर्थ के बारे में गलत है।

यदि ऐसा है, तो आत्मा यीशु के व्यक्तित्व के माध्यम से सुसमाचार को प्रकट कर रहा है। उनकी धार्मिक कट्टरता उन्हें बचा नहीं सकती है। न्याय उनकी राह देखता है जो यीशु को अस्वीकार करते हैं! "पाप" अविश्वास है! यीशु परमेश्वर के साथ जीवन का एकमात्र मार्ग है!

शब्द "संसार" मानव, पतित समाज जो संगठित और परमेश्वर से अलग होकर कार्य करता है, को संदर्भित करता है यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय देखें।

16:9 "पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते" सुसमाचार मानव जाति के पाप की मान्यता और परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता के साथ शुरू होता है (तुलना रोमियों 3:9-18,23; 6:23; इफिसियों 2:1-3)। कलवरी के इस तरफ उद्धार के लिए पाप "मुख्य ठोकर" नहीं है, लेकिन यीशु मसीह के कार्य और व्यक्तित्व में मानव जाति का अविश्वास है (तुलना यूहन्ना 3:6-21; 8:24,26)। "विश्वास" शब्द में ज्ञानात्मक और भावनात्मक तत्व हैं, लेकिन प्राथमिक रूप से यह स्वैच्छिक है (यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें)। यह विश्वासी की योग्यता या प्रदर्शन पर नहीं, बल्कि मसीह में परमेश्वर के वादों पर उनके पश्चातापपूर्ण विश्वास की प्रतिक्रिया पर केंद्रित है (तुलना रोमियों 3:21-30)।

16:10 "धार्मिकता के विषय में" यह संदर्भित कर सकता है

1. कलवरी पर मसीह के आगामी छुटकारे का काम और पुनरुत्थान एक इकाई के रूप में देखा जाना (तुलना यूहन्ना 16:10)
2. जो लोग सोचते हैं कि वे मसीह से अलग होकर परमेश्वर के साथ सही हैं जबकि वास्तव में यह केवल मसीह है जो परमेश्वर के साथ सही है, जैसा स्वर्गारोहण में देखा गया

16:11 "न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है" एक दिन आ रहा है जब स्वर्गदूत और पापी मानव जाति दोनों धर्मी परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। (तुलना फिलिप्पियों 2:9-11)। हालांकि शैतान इस संसार में अभी भी एक महान शक्ति है (तुलना यूहन्ना 12:31; 14:30; 2 कुरिन्थियों 4:4; इफिसियों 2:2; 1 यूहन्ना 5:19), पहले से ही एक पराजित दुश्मन (पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक) है। उसकी सन्तान (तुलना यूहन्ना 8:44; मत्ती 13:38; 1 यूहन्ना 3:8-10) परमेश्वर के क्रोध का फल भोगते हैं!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 16:12-15
[12]"मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। [13]परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। [14]वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। [15]जो कुछ पिता का है,वह सब मेरा है; इसलिए मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।"

16:12 "अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते" शब्द "सह" एक बोझ उठाने वाले जानवर के लिए प्रयोग किया जाता है। कुछ बातें जो वे समझ नहीं पाए वे थीं

1. मसीह की पीड़ा
2. मसीह का पुनरुत्थान
3. कलीसिया का विश्व मिशन

आधुनिक पाठकों को यह याद रखना चाहिए कि कई मायनों में मसीह का जीवन एक परिवर्तनकाल का प्रतिनिधित्व करता है। प्रेरित यीशु के पुनरुत्थान के बाद के दर्शन और पिन्तेकुस्त में आत्मा के परिपूर्णता में तक बहुत सी बातों को नहीं समझ पाए।

हालाँकि, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि सुसमाचारों को कुछ लक्षित श्रोताओं के लिए सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य से वर्षों बाद लिखा गया था। इसलिए, वे बाद के, परिपक्व धर्मशास्त्र को दर्शाते हैं।

16:13 "सत्य का आत्मा" सत्य (*alētheia*) पुराने नियम में विश्वासयोग्यता के लक्ष्यार्थ के रूप में प्रयुक्त होता है और केवल गौण रूप से सच्चाई के अर्थ में किया जाता है। यीशु ने यूहन्ना 14:6 में कहा कि वह सत्य था। पवित्र आत्मा के लिए यह नाम यीशु के प्रकटकर्ता के रूप में उसकी भूमिका पर जोर देता है (तुलना यूहन्ना 14:17,26; 15:26; 16:13-14; 1 यूहन्ना 4:6; 5:7)। यूहन्ना 6:55 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा"** यह हर क्षेत्र में परम सत्य का उल्लेख नहीं करता है, लेकिन केवल आत्मिक सत्य और यीशु की शिक्षाओं के क्षेत्र में। यह मुख्य रूप से नये नियम के लेखकों की प्रेरणा को संदर्भित करता है। आत्मा ने उन्हें अद्वितीय, आधिकारिक (प्रेरित) तरीकों से निर्देशित किया। एक गौण अर्थ में, यह आत्मा के बाद के पाठकों पर सुसमाचार की सच्चाइयों का प्रकाशन करने के काम से संबंध रखता है। यूहन्ना 6:55 पर सच्चाई पर विशेष विषयों और यूहन्ना 14:26 पर आत्मा का व्यक्ति होना देखें।

विशेष विषय: प्रकाशन (SPECIAL TOPIC: ILLUMINATION)

परमेश्वर ने अतीत में मानव जाति पर स्वयं को स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए कार्य किया है (अर्थात, सृष्टि, जल प्रलय, कुलपिताओं की बुलाहट, निर्गमन, विजय, आदि)। धर्मशास्त्र में इसे "प्रकटीकरण" कहा जाता है। उसने इस स्व-प्रकाशन को दर्ज़ करने और समझाने के लिए कुछ पुरुषों का चयन किया (जैसे, यूहन्ना 14:26; 16:12-15)। धर्मशास्त्र में इसे "प्रेरणा" कहा जाता है। उसने अपनी आत्मा को उसे और उसके वादों और प्रावधानों को ,विशेष रूप से मसीहा के आगमन को पाठकों को समझने में मदद करने के लिए भेजा है। धर्मशास्त्र में इसे "प्रकाशन" कहा जाता है। समस्या उत्पन्न होती है, यदि परमेश्वर को समझने में आत्मा शामिल हो — उसकी और उसकी इच्छा और मार्गों की इतनी सारी व्याख्याएँ क्यों हैं?

समस्या का एक हिस्सा पाठक की पूर्व-समझ या व्यक्तिगत अनुभवों में निहित है। अक्सर एक व्यक्तिगत कार्यसूची का समर्थन बाइबल के पाठ-प्रमाण या व्यष्टिक रीति से किया जाता है । अक्सर धर्मशास्त्रीय जाल बाइबल पर थोपा जाता है, जिससे वह केवल कुछ क्षेत्रों में और चयनित तरीकों से ही बात कर पाती है। प्रकाशन को बस ऐसे ही प्रेरणा से समान नहीं माना जा सकता है, हालाँकि पवित्र आत्मा प्रत्येक में सम्मिलित है। प्रेरणा (विशेष विषय:प्रेरणा देखें) नये नियम (यानी, यहूदा 3,20) के साथ रुक गई है। अधिकांश नये नियम के पाठ जो प्रकाशन से संबंधित हैं, सुसमाचार और मसीह के समान जीवन के बारे में ज्ञान का संदर्भ देते हैं (यानी, रोमियों 8:12-17; 1 कुरिन्थियों 2:10-13; इफिसियों 1:17-19; फिलिप्पियों 1:9-11; कुलुस्सियों 1:9-13; 1 यूहन्ना 2:20-27)। यह, वास्तव में, "नई वाचा" के वादों में से एक है (तुलना यिर्मयाह 31:31-34, विशेषतः पद 34)।

विश्वासियों को प्रकटीकरण को समझने में मदद करने के लिए आत्मा को अनुमति देने का सबसे अच्छा तरीका एक

अनुच्छेद के केंद्रीय विचार को दृढ़तापूर्वक कहने का प्रयास करना हो सकता है, न कि पाठ के प्रत्येक विवरण की व्याख्या करना। यह प्रासंगिक विचार है जो मूल लेखक के केंद्रीय सत्य को बताता है। पुस्तक या साहित्यिक इकाई की रूपरेखा मूल प्रेरित लेखक के अभिप्राय का पालन करने में मदद करती है। कोई व्याख्याकार प्रेरित नहीं है। हम बाइबल के लेखक की व्याख्या की विधि (यानी, प्रेरणा) की प्रतिलिपि तैयार नहीं कर सकते। हम यह समझने की कोशिश कर सकते और करनी चाहिए कि वे अपने दिन में क्या कह रहे थे और फिर उस सच को हमारे अपने दिन तक पहुँचा सकते हैं। बाइबल के कुछ भाग ऐसे हैं जो अस्पष्ट या छिपे हुए हैं (एक निश्चित समय या अवधि तक)। कुछ पाठों और विषयों पर हमेशा असहमति होगी, लेकिन हमें स्पष्ट रूप से केंद्रीय सत्य को स्पष्ट करना चाहिए और मूल लेखक के अभिप्राय की सीमा के अंदर व्यक्तिगत विश्वासी की व्याख्या के लिए स्वतंत्रता की अनुमति देनी चाहिए। व्याख्याकारों को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो उनके पास है, हमेशा बाइबल और आत्मा से अधिक प्रकाश के लिए खुला हुआ होना चाहिए। परमेश्वर हमारी समझ के स्तर और हम उस समझ को कैसे जीएँगे, इस आधार पर हमारा न्याय करेगा।

▣ **"क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बतायएगा"** ये जो आने वाली बातें हैं, वे तात्कालिक छुटकारे से संबंधित घटनाओं को संदर्भित करती हैं: कलवरी , पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त। यह भविष्यवाणी करने की भविष्य-सूचक सेवकाईको संदर्भित नहीं करता है (यानी, अगबुस, प्रेरितों के काम 21:10, विशेष विषय: भविष्यवाणी यूहन्ना 4:19 पर देखें)।

आत्मा पिता से सत्य को प्राप्त करेगा, जैसा कि यीशु ने किया था, और इसे विश्वासियों पर पारित कर देगा, जैसा कि यीशु ने किया था। यह सिर्फ आत्मा के संदेश की विषय वस्तु ही नहीं है जो पिता की ओर से है, बल्कि कार्यप्रणाली भी (यानी, व्यक्तिगत, यूहन्ना 14:26 पर विशेष विषय को देखें)। पिता कार्यात्मक रूप से सर्वोच्च है (तुलना 1 कुरिन्थियों 15:27-28)।

16:14-15 "वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा" आत्मा का प्राथमिक कार्य है यीशु मसीहा को उठाना और यीशु मसीहा का वर्णन करना (तुलना यूहन्ना 16:15)। आत्मा कभी भी स्वयं पर स्पॉटलाइट नहीं चमकता है, लेकिन हमेशा यीशु पर (तुलना यूहन्ना 14:26)।

▣ **"जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है"** कितना आश्चर्यजनक दावा (तुलना यूहन्ना 3:35; 5:20; 13:3; 17:10; मत्ती 11:27)। यह मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-22; कुलुस्सियों 2:10; 1 पतरस 3:22 के अनुरूप है।

त्रिएकत्व में एक कार्यात्मक क्रम है, न कि एक असमानता। जैसे यीशु ने पिता को प्रतिबिंबित किया, आत्मा यीशु को प्रतिबिंबित करता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 16:16-24

16"थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर से थोड़ी देर में मुझे देखोगे।" 17तब उसके कुछ चेलों ने आपस में कहा, "यह क्या है जो वह हम से कहता है, 'थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे?' और यह 'इसलिये कि मैं' पिता के पास जाता हूँ?' 18तब उन्होंने कहा, "यह 'थोड़ी देर' जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते कि वह क्या कहता है।" 19यीशु ने यह जानकर कि वे मुझसे पूछना चाहते हैं, उनसे कहा, "क्या तुम आपस में मेरी इस बात के विषय में पूछताछ करते हो, 'थोड़ी देर में मुझे देखोगे'? 20मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा; तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा। 21प्रसव के समय स्त्री को शोक होता है, क्योंकि उसकी दुःख की घड़ी आ पहुँची है, परन्तु जब वह बालक को जन्म दे चुकती है, तो इस आनन्द से कि संसार में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती है। 22उसी प्रकार तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूँगा और तुम्हारे मन आनन्द से भर जाएँगे; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा 23उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यदि पिता से कुछ माँगोगे तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। 24अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा; माँगो तो पाओगे, ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

16:16 "थोड़ी देर" यह वाक्यांश अक्सर यूहन्ना में आता है (तुलना यूहन्ना 7:33; 12:35; 13:33; 14:19)। इस मुहावरेदार वाक्यांश का अर्थ क्या है, इसके कई सिद्धांत हैं।

1. पुनरुत्थान के बाद के दर्शन
2. दूसरा आगमन
3. यीशु का पवित्र आत्मा में और पवित्र आत्मा के माध्यम से आना

इस संदर्भ के प्रकाश में, क्रमांक 1 एकमात्र संभावना है (तुलना यूहन्ना 16:22)। चेले इस कथन से भ्रमित हो गए थे (तुलना यूहन्ना 16:17-18);

16:17 "तब उसके कुछ चेलों ने आपस में कहा" यह यूहन्ना 13:36; 14:5,8,22 के समान एक अन्य प्रश्न है। यीशु इन प्रश्नों का प्रयोग उन्हें आश्वस्त करने और स्वयं को प्रकट करने के लिए करता है। यह यूहन्ना की विशेषता है कि वह सत्य को प्रकट करने के लिए संवाद का प्रयोग करता है। यूहन्ना में यीशु के साथ या उसके बारे में सत्ताईस वार्तालाप हैं। यह भी यूहन्ना की विशेषता है कि यीशु के श्रोताओं ने उनके द्वारा कही गई बातों को नहीं समझा (तुलना यूहन्ना 16:18) वह ऊपर से जन्मा है; वे नीचे के हैं।

▣ **"और यह 'इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ'"** यीशु ने यह बात यूहन्ना 16:5 में बताई है जैसा कि उसने यूहन्ना 16:16 में वाक्यांश "थोड़ी देर में" में किया था। एक अर्थ में यह एक बहुत ही विशिष्ट मसीहाई संदर्भ है (तुलना यूहन्ना 13:1,3; 16:28; 17:24)।

▣ **"न देखोगे. . .देखोगे"** यूहन्ना 16:16 और 17 में "देखोगे" के लिए दो अलग-अलग शब्द हैं। वे पर्यायवाची लगते हैं। यदि ऐसा है तो केवल एक ही समयावधि को संदर्भित किया जा रहा है और शायद वह समय क्रूस पर यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की सुबह के बीच का समय था।

अन्य लोग मानते हैं कि दो क्रियाएँ और वाक्यांश को "भौतिक" दृष्टि और "आत्मिक" दृष्टि को संदर्भित करते हैं और इस तरह से (1) कलवरी और रविवार की सुबह या (2) स्वर्गारोहण और दूसरे आगमन के बीच के समय को बताते हैं।

तथ्य यह है कि पहली क्रिया (*theōreō*) यूहन्ना 16:16 और 17 दोनों में वर्तमानकाल है और दूसरी (*horaō*) यूहन्ना 16:16 और 17 दोनों में भविष्यकाल है और पर्यायवाची सिद्धांत का समर्थन करती हुई प्रतीत होती है।

16:18 "तब उन्होंने कहा" यह एक अपूर्ण काल है जिसका अर्थ हो सकता है (1) वे बार-बार कह रहे थे या (2) वे कहने लगे।

▣ **"जो वह कहता है, क्या बात है"** जो लोग उसके साथ थे, जिन्होंने उसे सुना और उसके चमत्कारों को देखा था, उसे हमेशा समझ नहीं सके (तुलना यूहन्ना 8:27,43; 10:6; 12:16: 18:4)। यही वह बात है जो आत्मा की सेवकाई दूर करेगी।

16:19 "यीशु ने यह जानकर कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं" यीशु अक्सर लोगों के विचारों को जानता था (तुलना यूहन्ना 2:25; 6:61,64; 13:11)। यह सुनिश्चित करना मुश्किल है कि क्या यह (1) उसकी दिव्य प्रकृति थी; (2) लोगों और स्थितियों की अंतर्दृष्टि थी; या (3) दोनों।

16:20 "मैं तुम से सच सच कहता हूँ" यह अक्षरशः है "आमीन, आमीन" (विशेष विषय 1:51 देखें)। "आमीन" "विश्वास" के लिए पुराने नियम का शब्द (*aman*, *emeth*, *emunah*) था (तुलना हबक्कूक 2:4)। इसकी प्राथमिक व्युत्पत्ति "दृढ़ होना" या "निश्चित होना" थी। यह परमेश्वर की विश्वसनीयता के लिए आलंकारिक रूप से इस्तेमाल किया जाने लगा, जो विश्वास/विश्वासयोग्यता की बाइबल की अवधारणा के लिए पृष्ठभूमि है। यीशु एकमात्र ऐसा है जिसने कभी इस शब्द के साथ एक वाक्य शुरू किया। ऐसा लगता है कि इसका लक्ष्यार्थ "यह एक महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय कथन है, ध्यान से सुनो।"

▣ **"तुम रोओगे और विलाप करोगे"** इसका अर्थ ऊँचे स्वर में और अभिव्यक्तिपूर्ण दुःख था जो यहूदी शोक प्रथाओं की विशेषता थी (तुलना यूहन्ना 11:31,33; 20:11)। यीशु ने चेलों के दुःख की बात करते हुए तीन बार दृढ़ बहुवचन "तुम" का प्रयोग किया (यूहन्ना 16:20 [दो बार] और यूहन्ना 16:22)। नेतृत्व का अर्थ है

1. दास होना
2. संसार के द्वारा अस्वीकृत किया जाना।
3. स्वामी के समान सताव

▣ **"तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा"** चेलों के लिएउनकी उलझन और समझ की कमी के बीच कितना महान वादा। जो कुछ यीशु ने चेलों के इस मुख्य समूह से वादा किया था वह यीशु के पुनरुत्थान के बाद के पहले दर्शन, जो अटारी में पुनरुत्थान के बाद पहले रविवार की रात को हुआ में पूरा हुआ।

1. वह उन्हें नहीं छोड़ेगा (तुलना यूहन्ना 14:18; 16:16,19; 20:19)

2. वह उनके पास आएगा (तुलना यूहन्ना 14:18; 16:16,19; 20:19)
3. वह उन्हें शांति देगा (तुलना यूहन्ना 16:22; 20:19)
4. वह उन्हें आत्मा देगा (तुलना यूहन्ना 15:26; 20:22)

16:21 "प्रसव के समय" स्त्री के प्रसव के समय का रूपक पुराने और नए नियम में आम है। सामान्य तौर पर इसका प्रयोग जन्म के अचानक होने या अपरिहार्यता पर जोर देने के लिए किया जाता है, लेकिन यहाँ ध्यान माँ के पहले और बाद के मनोभाव पर है। इस रूपक को अक्सर नए युग की "प्रसव पीड़ा" के साथ जोड़ा जाता है (तुलना यशायाह 26:17-18; 66:7-14; मरकुस 13:8) यह ठीक वैसा ही था जैसा यीशु जिक्र कर रहा था और यही कारण था कि चेले, जो अभी भी क्रूस, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के दूसरी ओर थे, यीशु के शब्दों को नहीं समझ सके!

16:23 "उस दिन" यह एक और प्राचीन यहूदी मुहावरेदार वाक्यांश है (जैसे प्रसव तुलना यूहन्ना 16:21) जो आम तौर पर नए युग के आगमन के साथ जुड़ा है (तुलना यूहन्ना 14:20; 16:25,26)।

▣ **"तुम मुझ से कुछ न पूछोगे"** इस पद में "सवाल" या "पूछना" के लिए दो अलग-अलग शब्द हैं (तुलना यूहन्ना 16:26)। पहले का अर्थ है "एक प्रश्न पूछो" (तुलना यूहन्ना 16:5,19,30)। यदि यह उचित अनुवाद है, तो यीशु अध्याय 13-17 के संदर्भ में व्यक्त किए गए उनके सारे प्रश्नों का उल्लेख कर रहा था (तुलना यूहन्ना 13:36; 14: 5,8,22; 16:17-18)। दूसरा शब्द तब पवित्र आत्मा के आने का उल्लेख करता है (तुलना यूहन्ना 14:16-31; 15: 26-27; 16:1-15), जो उनके प्रश्नों के उत्तर देगा।

कुछ मायनों में यह वाक्यांश मुझे यिर्मयाह 31:31-34 की "नई वाचा" के वादे की याद दिलाता है, जहाँ नए युग का आना सब विश्वासियों के लिए एक संपूर्ण ज्ञान लाएगा।

NASB	**"यदि तुम पिता से कुछ मेरे नाम से माँगोगे"**
NKJV	**"जो कुछ भी तुम मेरे नाम से पिता से माँगोगे"**
NRSV	**"यदि तुम मेरे नाम से पिता से कुछ भी माँगोगे"**
TEV	**"जो कुछ भी तुम उससे माँगोगे मेरे नाम में पिता तुम्हें देगा"**
NJB	**"जो कुछ भी तुम पिता से माँगोगे वह मेरे नाम में प्रदान करेगा"**

यह एक अनिश्चित संबंध-सूचक खंड है, प्रतिबंधात्मक वाक्य नहीं। यह समझना चाहिए कि यीशु के नाम में माँगना हमारी प्रार्थना को केवल एक अनुष्ठान के सूत्र के साथ समाप्त करना नहीं है, बल्कि यीशु मसीह की इच्छा, मन और चरित्र में प्रार्थना करना है (तुलना 1 यूहन्ना 5:13)। यूहन्ना 15:16 पर टिप्पणी देखें। विशेष विषय: प्रार्थना, असीमित फिर भी सीमित 1 यूहन्ना 3:22 पर देखें।

वाक्यांश "मेरे नाम से" से संबंधित एक पांडुलिपि संस्करण है। क्या यह "माँगना" या "देना" या दोनों के साथ जाना चाहिए? संदर्भ प्रार्थना है, इसलिए, इसे संभवतः यह "माँगना" के साथ जाना चाहिए, हालांकि वास्तव में, पिता से सब कुछ यीशु के माध्यम से आता है ("मेरे नाम" तुलना यूहन्ना 14:13,14; 16:15,24,26)। विशेष विषय: प्रभु का नाम यूहन्ना 14:13-14 पर देखें।

16:24 "माँगो तो पाओगे" "माँगो" एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यह विश्वासियों की प्रार्थनाओं के दृढ़ और निरंतर जारी रहने पर केंद्रित है। एक अर्थ में विश्वासियों को विश्वास करते हुए केवल एक बार माँगने की आवश्यकता होती है, लेकिन दूसरे अर्थ में, प्रार्थना परमेश्वर में एक निरंतर संगति और विश्वास है, माँगते रहें (तुलना मत्ती 7:7-8; लूका 11:5-13; 18:1-8)।

▣ **"ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए"** यह एक वर्णनात्मक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है (तुलना 1 यूहन्ना 1:4)। उत्तर-प्राप्त प्रार्थना हमारे आनन्द का कारण है! आनन्द यीशु के अनुयायियों की एक विशेषता है (तुलना यूहन्ना 15:11; 16:20,21,24; 17:13)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 16:25-28
25"मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कहीं हैं, परन्तु वह समय आता है कि मैं तुम से फिर दृष्टान्तों में नहीं कहूँगा, परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊँगा।
26उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे; और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूँगा;
27क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है, इसलिये कि

तुम ने मुझ से प्रेम रखा है और यह भी विश्वास किया है कि मैं पिता की ओर से आया हूँ। 28मैं पिता की ओर से जगत में आया हूँ; मैं फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ।"

16:25 "दृष्टान्त" यीशु की शिक्षाओं का प्रभाव दुगना था: (1) उन्होंने समझ दी और (2) उन्होंने समझ को रोक दिया (तुलना मरकुस 4:10-11; यशायाह 6:9-10; यिर्मयाह 5:21)। सुनने वाले का मन प्रभावशाली समझ की कुंजी है। हालाँकि, कई ऐसे सत्य थे जिन्हें दुःख- भोग सप्ताह की घटनाओं (क्रूसित होना, पुनरुत्थान, पुनरुत्थान दर्शन, स्वर्गारोहण) और पिन्तेकुस्त के बाद तक भी उद्धार पाए हुए लोग भी समझ न सके।

पुनरुत्थान के बाद इम्माऊस के मार्ग पर दो जनों को दर्शन देना (तुलना लूका 24:13-35) शायद इस बात का संकेत दे सकता है कि यीशु ने प्रेरितों को कैसे सिखाया (तुलना यूहन्ना 16:25-27,29)। उसने स्वयं अपने पुनरुत्थान के बाद के दर्शनों दिखाया कि किस प्रकार पुराना नियम उसकी सेवकाई पर लागू होता और उसका पूर्वाभास कराता है। इसने प्रेरितों के काम में पतरस के उपदेश के लिए नमूना निर्धारित किया (*kerygma*, यूहन्ना 5:39 पर विशेष विषय देखें)।

▣ **"खोलकर तुम्हें बताऊँगा"** विशेष विषय: निर्भीकता (*Parrhēsia*) यूहन्ना 7:4 पर देखें।

16:26 "उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मैं तुम्हारे लिए पिता से विनती करूँगा" यह पद एक महत्त्वपूर्ण सत्य को व्यक्त करता है। कई आधुनिक मसीही महसूस करते हैं कि वे परमेश्वर से सीधे संपर्क नहीं कर सकते हैं! हालाँकि, बाइबल सिखाती है कि

1. आत्मा विश्वासियों के लिए प्रार्थना करता है (तुलना रोमियों 8:26-27)
2. 1 यूहन्ना 2:1 पुत्र में विश्वासियों के लिए मध्यस्थता करता है
3. विश्वासी मसीह के कारण प्रार्थना में परमेश्वर तक सीधे पहुँच सकते हैं

16:27 "पिता तो आप ही तुम से प्रेम रखता है" "प्रेम" के लिए यह शब्द *phileō* है, जिसका प्रयोग यूहन्ना 5:20 में यीशु के प्रति पिता के प्रेम के लिए भी किया जाता है। यूहन्ना 3:16 (जो *agapaō* का प्रयोग करता है) को पुष्ट करने वाला कितना जबरदस्त कथन। यह एक अनिच्छुक परमेश्वर नहीं है जिसे यीशु को दिलासा देना है, लेकिन एक प्रेमी पिता जिसके साथ मिलकर यीशु उनके छुटकारे के उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम करता है!

NASB **"पिता से"**
NKJV, NRSV,
TEV, NJB **"परमेश्वर से"**

दो यूनानी पांडुलिपि संस्करण हैं: (1)"परमेश्वर" या "पिता" और (2) एक शब्दवर्ग की उपस्थिति या अनुपस्थिति। MSS P^5, $א^2$, A, और N में "परमेश्वर" आता है, जबकि MSS C^3 और W में "परमेश्वर" आता है। यह अधिक कठिन और असामान्य शब्द प्रतीत होता है। यह पाठ्य समीक्षा के नियमों में से एक है (परिशिष्ट देखें) कि सबसे कठिन या असामान्य पाठ संभवतः मौलिक है जिसे परिवर्तित करने के लिए शास्त्री प्रवृत्त हो गए। यूनाइटेड बाइबल सोसायटी का यूनानी नया नियम इसे "C" दर्ज़ा (निर्णय लेने में कठिनाई) देता है।

हालाँकि "पिता" $א^1$, में और "पिता" B, C^*, D,और L में दिखाई देता है। यह संदर्भ में सबसे उपयुक्त है।

▣ **"इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रेम रखा है और यह भी विश्वास किया है कि मैं पिता की ओर से आया"** ये दो पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं। यीशु में प्रेम और विश्वास पिता के साथ संगति के लिए मंच तैयार करते हैं। *A Translator's Handbook on the Gospel of John* by Barclay Newman and Eugene Nida में एक कथन बहुत दिलचस्प है:

"ये कथन संकेत देते हैं कि यूहन्ना के लिए प्रेम, आज्ञाकारिता और विश्वास की अवधारणाएँ पुत्र के साथ किसी के संबंध को व्यक्त करने के अलग-अलग तरीके हैं" (p. 518)।

"विश्वास किया" के लिए यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय: यूहन्ना का क्रिया "विश्वास" का प्रयोग देखें।

16:28 "मैं आया. . .और आया हूँ" यह एक अनिर्दिष्टकाल के बाद एक पूर्ण काल है। यीशु का जन्म बैतलहम में हुआ (देहधारण) और उनके आने के परिणाम बने रहते हैं (यानी, "मैं सदा तुम्हारे संग हूँ," तुलना मत्ती 28:20)।

यह तथ्य कि यीशु "पिता की ओर से आया" (तुलना यूहन्ना 16:27,30; 8:42; 13:3; 17:8) जोर देता है

1. उसके पूर्व-अस्तित्व पर

2. उसके दैवत्व पर
3. उसके द्वारा पिता के संपूर्ण प्रकाशन पर

▣ **"मैं फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ"** यह आगामी स्वर्गारोहण और "सहायक" की सेवकाई की शुरुआत और यीशु की मध्यस्थता की सेवकाई को संदर्भित करता है(तुलना इब्रानियों 7:25; 9:24; 1 यूहन्ना 2:1)। चूँकि यूहन्ना 1:1 में पूर्व-अस्तित्व का दावा किया गया था, इसलिए यीशु का महिमा और सामर्थ्य में फिर से प्राप्त करने का दावा इस पद में किया गया है (तुलना यूहन्ना 17:5,24)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 16:29-33
[29]उसके चेलों ने कहा, "देख, अब तो तू खोलकर कहता है और कोई दृष्टांत नहीं कहता। [30]अब हम जान गए हैं
कि तू सब कुछ जानता है, और इसकी आवश्यकता नहीं कि कोई तुझ से कुछ पूछे; इससे हम विश्वास करते हैं कि
तू परमेश्वर की ओर से आया है।" [31]यह सुन यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम अब विश्वास करते हो? [32]देखो, वह घड़ी
आती है वरन आ पहुँची है, कि तुम सब तितर-बितर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे; तौभी
भी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है। [33]मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं कि तुम्हें मुझे में शान्ति मिले।
संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।"

16:29 "खोलकर कहता है" विशेष विषय: निर्भीकता (*Parrhēsia*) यूहन्ना 7:4 पर देखें।

16:30 इस वाक्य को इस प्रकाश में समझा जाना चाहिए, कि यीशु यूहन्ना 16:19 में चेलों का सवाल जानता था उनके द्वारा यह कथन उनके बढ़ते, लेकिन अभी भी अपूर्ण, विश्वास को दर्शाता है। उन्होंने इतना कुछ देखा और सुना था; क्या यह घटना (तुलना यूहन्ना 16:19) उनकी समझ में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ के रूप में कार्य करती है? मुझे यह पतरस के नेकनीयत लेकिन अतिशयोक्तिपूर्ण कथनों में से एक लगता है (The Jerome Biblical Commentary, p. 456 देखें)।

16:31 "क्या अब तुम विश्वास करते हो" यह एक प्रश्न या कथन हो सकता है। अधिकांश आधुनिक अंग्रेजी अनुवाद इसे एक प्रश्न मानते हैं। इस निर्णायक अवधि में भी, प्रेरितों का विश्वास पूर्ण नहीं हुआ। आधुनिक विश्वासियों का प्रारंभिक, लेकिन कमजोर, विश्वास भी परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया जाता है जब वे उस ज्योति के आधार पर जो उनके पास है, यीशु को प्रतिक्रिया देते हैं। चेलों में विश्वास की कमी यीशु के मुकदमों और क्रूसित किये जाने के दौरान उनके छोड़ जाने के द्वारा स्पष्ट होती है।

16:32 "तुम सब तितर-बितर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे" जाहिर तौर पर केवल यूहन्ना मुकदमों और क्रूसित किये जाने पर मौजूद था (तुलना मत्ती 26:31, जकर्याह 13:7 से)। यूहन्ना 21:1-3 यह बताता है कि बहुत से प्रेरित एक व्यवसाय के रूप में फिर से मछली पकड़ने चले गए थे।

यीशु क्रूसित किये जाने तक, जब उसने सारे संसार का पाप उठा लिया (तुलना मत्ती 27:45-46), मानव साहचर्य (तुलना मत्ती 26:38,40-41, 43,45) का दीवाना था, लेकिन दैवीय साहचर्य का कभी भी नहीं (तुलना यूहन्ना 8:16,29)।

NASB	**"अपने खुद के घर को"**
NKJV	**"अपनों को"**
NRSV	**"अपने घर को"**
NJB	**"अपना अपना मार्ग"**
TEV	**"तुम्हारे अपने घर"**
REB, NET, NIV	**"अपने खुद के घर को"**

NKJV शाब्दिक है। अधिकांश अंग्रेजी अनुवाद मानते हैं कि यह किसी के घर को संदर्भित करता है। बुल्टमन यह दावा करता है कि यह यीशु को सृष्टिकर्त्ता के रूप में संदर्भित करते हुए "संपत्ति" या "अधिकार" (NIDOTTE, vol. 2, p. 839) को संदर्भित करता है, (यानी, यूहन्ना 1:3; 1 कुरिन्थियों 8:6; कुलुस्सियों; 1:16; इब्रानियों 1:2)।

16:33 "तुम्हें मुझ में शान्ति मिले" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है (तुलना यूहन्ना 14:27)। वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिनिष्ठ दोनों शान्ति मसीह में पाई और बनाई रखी जाती है। विशेष विषय: शान्ति यूहन्ना 14:27 पर देखें।

▣ **"संसार"** यूहन्ना इस संदर्भ में "संसार" का प्रयोग परमेश्वर के अलग होकर संगठित और कार्य करने वाले मानव समाज के रूप में करता है। विशेष विषय: *Kosmos* यूहन्ना 14:17 पर देखें।

▣ **"तुम्हें क्लेश होता है"** जिस सताव का यीशु ने सामना किया, वे भी करेंगे (तुलना यूहन्ना 15:18-25; मत्ती 5:10-12; प्रेरितों के काम 14:22; 1 थिस्सलुनीकियों 3:3)। सताव (यानी, *thlipsis*) यीशु के सच्चे अनुयायियों को प्रकट करने का एक तरीका है।

प्रकाशितवाक्य में "प्रकोप" और "सताव" के बीच एक धर्मशास्त्रीय भेद है। परमेश्वर का प्रकोप विश्वासियों पर कभी नहीं आता है, लेकिन अविश्वासियों का क्रोध विश्वासियों पर होता है। "जगत की ज्योति" पर अपने हमलों के द्वारा संसार खुद को शैतान की संतान के रूप में प्रकट करता है (तुलना यूहन्ना 1:1-18; 3:17-21)!

▣ **"ढाढ़स बाँधो"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है (तुलना मत्ती 9:2,22; 14:27; मरकुस 6:50; 10:49; प्रेरितों 23:11)। यह यहोशू के लिए YHWH के वचनों की तरह लगता है (तुलना यहोशू 1:6,9,18; 10:25)।

▣ **"मैं ने संसार को जीत लिया है"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। गतसमनी से भी पहले, कलवरी से पहले, खाली कब्र से पहले विजय का आश्वासन दिया गया है (तुलना रोमियों 8:37; 1 कुरिन्थियों 15:57; 2 कुरिन्थियों 2:14; 4:7-15), कोई सर्वोच्च द्वैतवाद नहीं है। परमेश्वर के नियंत्रण में है।

जिस प्रकार यीशु ने पिता के प्रति प्रेम और आज्ञाकारिता से संसार को जीता है, विश्वासी भी उसके द्वारा जयवंत है (तुलना 1 यूहन्ना 2:13-14; 4:4; 5:4-5; प्रकाशितवाक्य 3:21; 12:11)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. अध्याय 15 और अध्याय 16 के बीच क्या संबंध है?
2. पद 5 के संबंध में, हम 13:36 को कैसे समझते हैं?
3. खोए हुए संसार के लिए पवित्र आत्मा की सेवकाई क्या है?
4. विश्वासियों के लिए पवित्र आत्मा की सेवकाई क्या है?
5. क्यों पद 26-27 ऐसे महत्त्वपूर्ण सत्य हैं जो आधुनिक साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों के प्रकाश में आवश्यक हैं?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 17

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु की प्रार्थना	यीशु खुद के लिए प्रार्थना करता है	यीशु की महायाजकीय प्रार्थना	यीशु अपने चेलों के लिए प्रार्थना करता है	यीशु की प्रार्थना
17:1-5	17:1-5	17:1-5	17:1-5	17:1-23
	यीशु अपने चेलों के लिए प्रार्थना करता है			
17:6-19	17:6-19	17:6-19	17:6-8	
	यीशु सभी विश्वासियों के लिए प्रार्थना करता है		17:9-19	
17:20-26	17:20-26	17:20-24	17:20-23	
			17:24-26	17:24-26
		17:25-26		

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 1-26 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. ऐतिहासिक विन्यास
   1. यह अध्याय यीशु की महायाजकीय प्रार्थना है
      a. स्वयं के लिए (यूहन्ना 17:1-5)
      b. उसके चेलों के लिए (यूहन्ना 17:6-19)
      c. भविष्य के अनुयायियों के लिए (यूहन्ना 17:20-26) यह विश्वास के माहौल में दिया गया था, इस्तीफा नहीं (तुलना यूहन्ना 16:33)।
   2. यह यीशु की दर्ज की गई सबसे लंबी प्रार्थना है।

3. इस अध्याय को विषयों में विभाजित करना मुश्किल है क्योंकि उन्हीं मूलभावों का बार-बार उल्लेख किया जाता है, जो यूहन्ना के लेखन की विशेषता है। यह आवर्तक नमूनों की चित्रयवनिका की तरह है। प्रमुख शब्द "महिमा," "देता," "जानना," "भेजा," "नाम," "संसार," और "एक।"
4. इस अध्याय में पवित्र आत्मा का कोई उल्लेख नहीं है। अध्याय 14-16 में उसकी प्रमुखता के कारण यह असामान्य है।

B. पद 6-19 में चेलों की विशेषताएँ
1. वे चुने गए हैं
2. वे आज्ञाकारी हैं
3. वे परमेश्वर और मसीह को जानते हैं
4. वे सत्य को स्वीकार करते हैं
5. उनके लिए यीशु के द्वारा प्रार्थना की गई है
6. वे संसार में रहते हैं।
7. वे उसकी सामर्थ्य से सुरक्षित हैं।
8. वे एक हैं क्योंकि पिता और यीशु एक हैं।
9. उनके पास उसका आनन्द है।
10. वे इस संसार के नहीं हैं।
11. वे सत्य के द्वारा पवित्र किए गए हैं।
12. उन्हें भेजा गया है जैसा कि उसे भेजा गया था
13. उनसे प्रेम किया गया है जैसा पिता ने यीशु से प्रेम किया।

C. यूहन्ना में शब्द "महिमा"
1. सेप्टुआजिंट (LXX) में यूनानी शब्द *doxa* से अनुवादित 25 से अधिक इब्रानी शब्द हैं। पुराने नियम का प्रमुख शब्द *kabod* है, जिसका अर्थ है "अलग," "वजन," "भारीपन," "योग्यता," "प्रतिष्ठा," "सम्मान," या "चमक/भव्यता।"
2. यूनानी शब्द *doxa* प्रतिष्ठा के अर्थ में क्रिया "सोचना" से आता है।
3. यूहन्ना में इस शब्द के कई लक्ष्यार्थ हैं।
   a. दिव्य महिमा (तुलना यूहन्ना 17: 5,24; 1:14; 12:41; 12:16)
   b. यीशु के चिन्हों, शिक्षाओं और दुःख-सहन सप्ताह के कार्यों के द्वारा पिता का प्रकटीकरण (तुलना यूहन्ना 17:4,10,22; 1:14; 2:11; 7:18; 11:4,40)
   c. विशेष रूप से क्रूस (तुलना यूहन्ना 17:1,4; 7:39; 12:23; 13:31-32)

स्पष्ट रूप से इन प्रयोगों के बीच कुछ अस्थिरता है। केंद्रीय सत्य यह है कि अदृश्य परमेश्वर एक मानव (अर्थात, यीशु मसीह) में अपने वचनों और कृत्यों से प्रकट होता है।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 17:1-5
[1]यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा, "हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है; अपने पुत्र की महिमा करे कि पुत्र भी तेरी महिमा करे, [2]क्योंकि तू ने उसको सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तूने उसको दिया है उन सब को वह अनन्त जीवन दे। [3]और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें। [4]जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है। [5]अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी।

17:1 "यीशु ने ये बातें कहीं" यह अध्याय 13-16 के अटारी के प्रवचनों का उल्लेख होना चाहिए।

▣ **"अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा"** यह प्रार्थना के लिए सामान्य यहूदी मुद्रा थी: हाथ, सिर, और खुली

आँखें आकाश की ओर उठी हुईं मानो परमेश्वर के साथ बातचीत करते हुए (तुलना यूहन्ना 11:41; मरकुस 7:34; लूका 18:13; भजनसंहिता 123:1)। यीशु अक्सर प्रार्थना करता था। यह स्पष्ट रूप से लूका 3:21; 5:16, 6:12; 9:18, 28; 11:1; 22: 41-45; 23:34 के सुसमाचार से प्रलेखित किया जा सकता है।

▣ **"हे पिता"** यीशु ने आमतौर पर इस शब्द से देवता को संबोधित किया (तुलना यूहन्ना 11:41; 12:27,28; मत्ती 11:25-27; लूका 22:42; 23:34)। यीशु अरामी भाषा बोलता था। यीशु का अरामी शब्द *Abba* था, जो कि एक बालक अपने पिता के लिए घर पर इस्तेमाल करता था, "डैडी" (तुलना मार्क 14:36)। इससे यीशु के गैर-चेलों को झटका और बुरा लगा होगा!

▣ **"वह घड़ी आ पहुँची है"** यह दर्शाता है कि यीशु अपनी सेवकाई के उद्देश्य और समय को जानता था (तुलना यूहन्ना 2:4; 7:6,8,30; 8:20; 12:23; 13:1)।अज्ञात परिस्थितियाँ उस पर हावी नहीं हुईं।

▣ **"अपने पुत्र की महिमा कर"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यीशु यूहन्ना में हमेशा अपनी मृत्यु को इसी प्रकार के शब्दों में संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 17:4; 7:39; 12:23; 13:31-32)। यह शब्द यीशु के पहले से मौजूद देवत्व से भी संबंधित है (तुलना यूहन्ना 1:14 और यूहन्ना 17:5,24) । यीशु के कार्यों ने पिता को महिमान्वित किया। एक पारस्परिकता थी! यूहन्ना 1:14 और प्रासंगिक अंतर्दृष्टि, C पर टिप्पणी देखें

"पुत्र" के लिए 1 यूहन्ना 3:8 पर विशेष विषय देखें।

"पुत्र" से संबंधित पांडुलिपि संस्करण है।

1. पुत्र, एक शब्द वर्ग के साथ MSS P^{60}, א, B, C*, W में आता है
2. पुत्र, एक संबंधकारक सर्वनाम के साथ MSS A, D, C^2 में आता है

UBS^4 प्रारूप #1 को "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है।

17:2 "सब प्राणियों पर अधिकार" यह एक देहाती बढ़ई द्वारा एक बहुत बढ़िया कथन है (तुलना यूहन्ना 27; मत्ती 11:27; 28:18; लूका 10:22)। शब्द "अधिकार" (*exousia*) वही है जो यूहन्ना 1:12; 5:27; 19:10,11 में प्रयुक्त हुआ है। इसका अनुवाद "कानूनी अधिकार," "अधिकार" या "सत्ता" हो सकता है।

वाक्यांश "सब प्राणियों" एकवचन है (मानव जाति का उल्लेख करते हुए एक इब्रानी मुहावरा, तुलना उत्पत्ति 6:12; भजनसंहिता 65:2; 145:21; यशायाह 40:5; 66:23; योएल 2:28)।

▣ **"जिन्हें तू ने उसको दिया है उन सब को"** शब्द "उन सबको" शब्द, वह नपुंसक और एकवचन है (तुलना यूहन्ना 7:24), जो चेलों, मसीह की देह पर केंद्रित है, व्यक्तियों पर नहीं! क्रिया पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो एक चिरस्थायी वरदान की बात करती है! यह वाक्यांश पूर्व-ज्ञान और चुनाव की पुष्टि करता है (तुलना यूहन्ना 17:6, 9, 12; 6:37, 39; रोमियों 8:29-30; इफिसियों 1:3-14)। पुराने नियम में चुनाव सेवा के लिए था, जबकि नये नियम में यह आत्मिक, सुरक्षित और अनंत उद्धार के लिए है। विश्वासी भी सेवा के लिए बुलाए गए हैं। चुनाव केवल दैवीय कार्य नहीं है, बल्कि वाचा के आधार पर मानवीय जिम्मेदारी से जुड़ा होना चाहिए। यह मृत्यु पर केंद्रित नहीं है, लेकिन जीवन पर! विश्वासियों को "पवित्रता" के लिए चुना जाता है (तुलना इफिसियों 1:4), विशेषाधिकार प्राप्त पदवी के लिए नहीं। इस वाक्यांश को इस प्रकार से नहीं समझा जाना चाहिए कि पिता कुछ मनुष्यों को यीशु को दे रहे हैं और अन्य को नहीं।

विशेष विषय: चुनाव/पूर्वनियति और एक धर्मशास्त्रीय संतुलन की आवश्यकता (SPECIAL TOPIC: ELECTION/PREDESTINATION AND THE NEED FOR A THEOLOGICAL BALANCE)

चुनाव एक अद्भुत सिद्धांत है। हालाँकि, यह पक्षपात करने के लिए एक आह्वान नहीं है, बल्कि एक माध्यम, एक उपकरण, या दूसरों के छुटकारे का एक साधन बनने का आह्वान है! पुराने नियम में इस शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से सेवा के लिए किया जाता था; नए नियम में इसका प्रयोग मुख्य रूप से उद्धार के लिए किया गया है जो सेवा में परिणित होता है। बाइबल कभी भी परमेश्वर की संप्रभुता और मानव जाति की स्वतंत्र इच्छा के बीच प्रतीत होने वाले विरोधाभास में सामंजस्य स्थापित नहीं करती है, लेकिन उन दोनों की पुष्टि करती है! बाइबल के तनाव का एक अच्छा उदाहरण होगा परमेश्वर की सार्वभौम पसंद पर रोमियों 9 और मानव जाति की आवश्यक प्रतिक्रिया पर रोमियों 10 (तुलना रोमियों 10:11,13)।

इस धर्मशास्त्रीय तनाव की कुंजी इफिसियों 1:4 में मिल सकती है। यीशु परमेश्वर का चुना हुआ जन है और सभी संभावित रूप से उसमें चुने हुए हैं (कार्ल बर्थ)। यीशु पतित मानवजाति की ज़रूरतके लिए परमेश्वर की "हाँ" है (कार्ल

बर्थ)। इफिसियों 1:4 भी इस बात पर जोर देकर मुद्दे को स्पष्ट करने में मदद करता है कि पूर्वनियति का लक्ष्य स्वर्ग नहीं है, बल्कि पवित्रता (मसीह की समानता) है। हम अक्सर सुसमाचार के लाभों की ओर आकर्षित होते हैं और जिम्मेदारियों की अनदेखी करते हैं! परमेश्वर का आह्वान (चुनाव) अभी और साथ-साथ अनंत काल के लिए है!

सिद्धांत अन्य सत्यों के संबंध में आते हैं, न कि एकाकी, असंबंधित सत्यों के रूप में। एक अच्छा रूपक हो सकता है एक एकाकी तारा बनाम एक नक्षत्र। परमेश्वर पूर्वी शैलियों में सत्य प्रस्तुत करते हैं, पश्चिमी में नहीं। हमें द्वंद्वात्मक (मिथ्याभासी) सिद्धांतिक सत्यों के जोड़ों के कारण उत्पन्न तनाव को दूर नहीं करना चाहिए:

1. पूर्वनियति के विरुद्ध मानव स्वतंत्र इच्छा
2. विश्वासियों की सुरक्षा के विरुद्ध धीरज की आवश्यकता
3. मूल पाप के विरुद्ध स्वेच्छिक पाप
4. पापहीनता (पूर्णतावाद) के विरुद्ध कम पाप करना
5. प्रारंभिक तात्कालिक दोषमुक्ति और पवित्रीकरण के विरुद्ध प्रगतिशील पवित्रीकरण
6. मसीही स्वतंत्रता के विरुद्ध मसीही जिम्मेदारी
7. परमेश्वर की उत्कृष्टता के विरुद्ध परमेश्वर की स्थिरता
8. अंततः अज्ञात के रूप में परमेश्वर के विरुद्ध पवित्रशास्त्र में ज्ञेय के रूप में परमेश्वर
9. वर्तमान में परमेश्वर के राज्य के विरुद्ध भविष्य में उसकी परिपूर्णता
10. परमेश्वर के उपहार के रूप में पश्चाताप के विरुद्ध एक आवश्यक मानव वाचा प्रतिक्रिया के रूप में पश्चाताप
11. दिव्य रूप में यीशु के विरुद्ध मानव रूप में यीशु
12. पिता के समान रूप में यीशु के विरुद्ध पिता के अधीन रूप में यीशु

"वाचा" की धर्मशास्त्रीय अवधारणा मानव जाति से अनिवार्य प्रारंभिक और निरंतर पश्चातापी विश्वास प्रतिक्रिया के साथ परमेश्वर की संप्रभुता (जो हमेशा पहल करती है और कार्यसूची निर्धारित करती है) को एकजुट करती है (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 3:16,19; 20:21)। विरोधाभास के एक तरफ प्रूफ़-टेक्स्टिंग और दूसरे को हतोत्साहित करने से सावधान रहें! केवल अपने पसंदीदा सिद्धांत या धर्मशास्त्र की प्रणाली का दावा करने से सावधान रहें!

▣ **"वह अनन्त जीवन दे"** अनन्त जीवन मसीह के माध्यम से परमेश्वर का एक दान है (तुलना यूहन्ना 5:21,26; 6; 40,47; 10:28; 1 यूहन्ना 2:25; 5:11)। इसका अर्थ है "परमेश्वर का जीवन," "नए युग का जीवन," या "पुनरुत्थान जीवन।" यह मुख्य रूप से मात्रा नहीं , लेकिन गुणवत्ता है (तुलना यूहन्ना 10:10)।

17:3 "अनन्त जीवन यह है" यह यूहन्ना द्वारा डाली गई "अनन्त जीवन" की परिभाषा है। यह पद मसीहत की दो प्रमुख सच्चाइयों को दर्शाता है: (1) एकेश्वरवाद (तुलना व्यवस्थाविवरण 6:4-6) और (2) यीशु दाऊद के वंश से मसीहा के रूप में (तुलना 2 शमूएल 7)। यह "अनन्त जीवन" भविष्य के लिए आरक्षित नहीं है, लेकिन इस समय यीशु मसीह में उपलब्ध है।

▣ **"कि वे तुझ को जानें"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है। यह केवल परमेश्वर के बारे में ज्ञानात्मक ज्ञान का ही उल्लेख नहीं करता, हालाँकि सत्य की पुष्टि की जानी है, लेकिन व्यक्तिगत संबंध के यहूदी अर्थ में प्रयोग किया जाता है। तथापि, सच्चाई यह है कि यीशु मसीहा है, एक सच्चे परमेश्वर का संपूर्ण और पूर्ण प्रकटीकरण (तुलना यूहन्ना 1:12,14; कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:3), और व्यक्तियों को विश्वास करना, ग्रहण करना, पश्चाताप करना, आज्ञा मानना और उसमें दृढ़ रहना चाहिए।

▣ **"एकमात्र सच्चे परमेश्वर"** पुराना नियम एक और केवल एक परमेश्वर के अस्तित्व के दावे में अद्वितीय था (तुलना निर्गमन 8:10; 9:14; व्यवस्थाविवरण 4:35,39; 6:4; 33:26; 1 शमूएल 2:2; 2 शमूएल 7:22; 1 राजाओं 8:23; यशायाह 37:20; 44:6,8; 45: 6-7,14,18,21,22; 46:9; यूहन्ना 5:44; 1 कुरिन्थियों 8:4,6; 1 तीमुथियुस 1:17; 2:5; यहूदा 1:25)। निष्पक्षता से यह कहा जाना चाहिए कि पुराने नियम की परमेश्वर की विशिष्टता और अखंडता की प्रस्तुति कई आत्मिक प्राणियों के प्राचीन निकट पूर्वी के विश्वदृष्टिकोण की पृष्ठभूमि पर स्थापित है। केवल एक ही परमेश्वर, लेकिन अन्य आत्मिक प्राणी हैं (तुलना निर्गमन 15:11; व्यवस्थाविवरण 3:24; भजनसंहिता 86:8; 89:6)।

विशेष विषय: एकेश्वरवाद (SPECIAL TOPIC: MONOTHEISM)

मानवजाति ने हमेशा महसूस किया है कि वास्तविकता भौतिक से कहीं अधिक (यानी, उनके नियंत्रण से बाहर की चीजों से प्रभावित होती है, जैसे कि तूफान, ग्रहण, धूमकेतु, मौसम, घटनाएँ, मृत्यु, आदि) है। मानवविज्ञानी हमें बताते हैं कि

उन्हें आदिम होमिनोइड्स की कब्रों में ऐसी चीजें मिलती हैं जो स्पष्ट रूप से अगले जीवन के लिए हैं, जिसे वे इस जीवन के विस्तार के रूप में देखते थे।

पहली लिखित संस्कृति सुमेर (दक्षिणी फरात, दजला नदियाँ) थी, जिसकी शुरुआत लगभग 10,000 - 8,000 ई.पू.में हुई। उन्होंने देवताओं के बारे में और उनके परस्पर विचार व्यक्त करने के लिए कविताएँ लिखीं। फिर से, काफी कुछ मनुष्यों की तरह सभी अपनी कमजोरियों के साथ । उनकी परंपराएँ लिखे जाने से बहुत पहले मौखिक रूप में अस्तित्व में थीं।

एक धर्मशास्त्रीय विकास हुआ

1. जीववाद से
2. बहुदेववाद से
3. एक उच्च देवता (या द्वैतवाद)

"एकेश्वरवाद" (एक और केवल एक व्यक्तिगत, नैतिक ईश्वर किसी स्त्री सहचारी के बिना) की अवधारणा, न केवल बहुदेववाद के "उच्च देवता" या ईरानी द्वैतवाद (जोरोएस्ट्रियनवाद) के अच्छे देवता, इस्राएल (अब्राहम और अय्यूब, 2000 ई.पू.)के लिए अद्वितीय है। मिस्र में केवल कुछ समय के लिए एक दुर्लभ अपवाद (अमेनहोटेप IV, जिसे एखेनातेन, 1367-1350 या 1386-1361 ई.पू. के रूप में भी जाना जाता है, जिन्होंने एकमात्र देवता के रूप में सूर्य देवता, *Aten* की आराधना की थी)। J. Aasman, *The Mind of Egypt*, pp. 216-217 देखें।

यह अवधारणा पुराने नियम में कई वाक्यांशों में व्यक्त की गई है।

1. "YHWH हमारे एलोहिम के तुल्य और कोई नहीं है," निर्गमन 8:10; 9:14; व्यवस्थाविवरण 33:26; 1 राजाओं 8:23
2. "उसको छोड़ और कोई है ही नहीं," व्यवस्थाविवरण 4:35,39; 32:39; 1 शमूएल 2:2; 2 शमूएल 22:32; यशायाह 45:21; 44:6,8; 45:6,21
3. "YHWH एक ही है," व्यवस्थाविवरण 6:4; रोमियों 3:30; 1 कुरिन्थियों 8:4,6; 1 तीमुथियुस 2:5; याकूब 2:19
4. "तेरे तुल्य कोई नहीं है," 2 शमूएल 7:22; यिर्मयाह 10:6
5. "केवल तू ही परमेश्वर है," भजनसंहिता 86:10; यशायाह 37:16
6. "मुझसे पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा," यशायाह 43:10
7. "दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं," यशायाह 45:5,6,22
8. "वह सभों का कर्ता है," यशायाह 45:7 (तुलना आमोस 3:6)
9. "दूसरा कोई नहीं, कोई और परमेश्वर नहीं," यशायाह 45:14,18
10. "मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है," यशायाह 45:21
11. "दूसरा कोई नहीं;. . .मेरे तुल्य कोई भी नहीं है," यशायाह 46:9

यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि यह महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रगतिशील तरीकों से प्रकट हुआ है। प्रारंभिक कथनों को "एकैकापि देववाद" या व्यावहारिक एकेश्वरवाद के रूप में समझा जा सकता है (कई अन्य देवता हैं, अर्थात, यहोशू 24:15; 1 राजाओं 18:21), लेकिन हमारे लिए केवल एक परमेश्वर (तुलना निर्गमन 15:11; 20:2-5; व्यवस्थाविवरण 5:7; 6:4,14; 10:17; 32:12; 1 राजाओं 8:23; भजनसंहिता 83:18; 86:8; 136:1-9)।

पहले पाठ जो एक एकवचनात्मकता (दार्शनिक एकेश्वरवाद) को निरूपित करना शुरू करते हैं, वे प्रारंभिक हैं (तुलना निर्गमन 8:10; 9:14; 20:2-3; व्यवस्थाविवरण 4:35,39; 33:26)। यशायाह 43-46 में पूर्ण और प्रतिस्पर्धा के दावे पाए जाते हैं (तुलना 43:10-11; 44: 6,8; 45:7,14,18,22; 46: 5,9) ।

पुराना नियम राष्ट्रों के देवताओं को इनके समान तुच्छ मानता है

1. मानव रचनाएँ - व्यवस्थाविवरण 4:28; 2 राजाओं 19:18; भजनसंहिता 115: 4-8; 135: 15-18; यशायाह 2:8; 17:8; 37:19; 40:19; 41:7,24,29; 44:10,12; 46:6-7; यिर्मयाह 10:3-5; प्रकाशितवाक्य 9:10
2. पिशाच - व्यवस्थाविवरण 32:17; भजनसंहिता 106: 37; यशायाह 8:19; 19:3c; 1 कुरिन्थियों 10:20; प्रकाशितवाक्य 9:20
3. व्यर्थ, खाली - व्यवस्थाविवरण 32:21; 2 राजाओं 17:15; भजनसंहिता 31: 6; यशायाह 2:18; 41:29; यिर्मयाह 2:5; 10: 8; 14:22; यिर्मयाह 2:5; 8:19
4. जो ईश्वर नहीं है - व्यवस्थाविवरण 32:21; 2 इतिहास 13:9; यशायाह 37:19; यिर्मयाह 2:11; 5:7; 1 कुरिन्थियों 8:4-5; 10:20; प्रकाशितवाक्य 9:20

नया नियम रोमियों 3:30; 1 कुरिन्थियों 8:4,6; इफिसियों 4:6; 1 तीमुथियुस 2:5; और याकूब 2:19 में व्यवस्थाविवरण 6:4 की ओर संकेत करता है। यीशु ने इसे मत्ती 22:36-37; मरकुस 12:29-30; लूका 10:27 में पहली आज्ञा के रूप में उद्धृत किया। पुराना नियम, साथ ही नया नियम अन्य आत्मिक प्राणियों (पिशाचों, स्वर्गदूतों) की वास्तविकता का दावा

करता है, लेकिन केवल एक सृष्टिकर्त्ता/उद्धारकर्ता परमेश्वर (YHWH, उत्पत्ति 1:1)।

बाइबल के एकेश्वरवाद की विशेषता है

1. परमेश्वर एक है और अद्वितीय है (सत्व शास्त्र कल्पित है, निर्दिष्ट नहीं)
2. परमेश्वर व्यक्तिगत है (तुलना उत्पत्ति 1:26-27; 3:8)
3. परमेश्वर नीतिपरक है (तुलना निर्गमन 34:6; नहेम्याह 9:17; भजनसंहिता 103:8-10)
4. परमेश्वर ने मनुष्यों को संगति के लिए (यानी, #2) अपने स्वरूप में बनाया (उत्पत्ति 1:26-27) । वह जलन रखने वाला परमेश्वर है (निर्गमन 20:5-6)

नये नियम से

1. परमेश्वर की तीन अनंत, व्यक्तिगत अभिव्यक्तियाँ हैं (विशेष विषय: त्रिएकत्व देखें)
2. परमेश्वर यीशु में उत्तमता से और पूर्ण रूप से प्रकट होता है (तुलना यूहन्ना 1:1-14; कुलुस्सियों 1:15-19; इब्रानियों 1:2-3)
3. पतित मानवता के छुटकारे के लिए परमेश्वर की अनन्त योजना उसके एकमात्र पुत्र की बलिदान की भेंट है (यशायाह 53; मरकुस 10:45; 2 कुरिन्थियों 5:21; फिलिप्पियों 2:6-11; इब्रानियों)।

विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "सत्य" (शब्द) (SPECIAL TOPIC: "TRUE" (THE TERM) IN JOHN'S WRITINGS)

1. पिता परमेश्वर
   a. परमेश्वर सच्चा/भरोसेमंद (तुलना यूहन्ना 3:33; 7:18,28; 8:26; 17:32; रोमियों 3:4; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9; 1 यूहन्ना 5:20; प्रकाशितवाक्य 6:10)
   b. परमेश्वर के मार्ग सच्चे हैं (तुलना प्रकाशितवाक्य 15:3)
   c. परमेश्वर के निर्णय सच्चे हैं (तुलना प्रकाशितवाक्य 16:7; 19: 2)
   d. परमेश्वर की बातें सत्य हैं (तुलना प्रकाशितवाक्य 19:11)
2. परमेश्वर पुत्र
   a. पुत्र सच्चा/सत्य है
      1) सच्ची ज्योति (तुलना यूहन्ना 1:9; 1 यूहन्ना 2:8)
      2) सच्ची दाखलता (तुलना यूहन्ना 15:1)
      3) अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण (तुलना यूहन्ना 1:14,17)
      4) वह सत्य है (तुलना यूहन्ना 14:6; 8:32)
      5) वह सच्चा है (तुलना प्रकाशितवाक्य 3:7,14; 19:11)
   b. पुत्र की साक्षी / गवाही सत्य है (तुलना यूहन्ना 18:37)
3. इसका एक तुलनात्मक अर्थ हो सकता है
   a. मूसा की व्यवस्था के मुकाबले. यीशु का अनुग्रह और सच्चाई (तुलना यूहन्ना 1:17)
   b. जंगल में तम्बू के मुकाबले स्वर्गीय तम्बू (तुलना इब्रानियों 8:2; 9:1)
4. जैसा कि अक्सर यूहन्ना के लेखन में देखा जाता है, इस शब्द के कई लक्ष्यार्थ थे (इब्रानी और यूनानी)। यूहन्ना उन सभी का प्रयोग पिता और पुत्र का व्यक्तियों के रूप में, वक्ताओं के रूप में, और उनके उस संदेश के रूप में वर्णन करने के लिए करता है,जो उनके अनुयायियों तक पहुँचाया जाना है (तुलना यूहन्ना 4:23; 19:35; इब्रानियों 10:22; प्रकाशितवाक्य 22:6)।
5. यूहन्ना के लिए ये दो विशेषण पिता का एकमात्र भरोसेमंद देवता के रूप में (तुलना 5:44; 1 यूहन्ना 5:20) और यीशु का उसके सत्य और पूर्ण प्रकटीकरण के रूप में केवल ज्ञानात्मक नहीं, छुटकारे संबंधी तथ्यों के उद्देश्य से वर्णन करते हैं!

▣ **"और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है"** यह यूहन्ना द्वारा एक संपादकीय टिप्पणी हो सकती है। पिता की ओर से "भेजे गए" के रूप में यीशु पर यह जोर यूहन्ना में एक आवर्ती ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद है (तुलना यूहन्ना 3:17,34; 5:36,38; 6:29,38,57; 7:29; 8:42; 10:36; 11:42; 17:3,8,18,21,23,25; 20:21)। रब्बियों ने आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में भेजे गए के लिए *apostellō* शब्द का प्रयोग किया। विशेष विषय: भेजना *(Apostellō)* यूहन्ना 5:24 पर देखें

17:4 *"मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है"* (यूहन्ना 13:32 पर टिप्पणी देखें)। "महिमा" शब्द का प्रयोग इन अर्थों में किया जा

सकता है (1) "महिमा देने के लिए" या (2) "की महिमा प्रकट करने के लिए"। पद 6 का तात्पर्य #2 है। यीशु के मुख्य कार्यों में से एक पिता को प्रकट करना था (तुलना यूहन्ना 1:14,18)।

▣ **"उसे (कार्य) पूरा कर के"** यूनानी मूल, *telos,* का अर्थ है "सम्पूर्ण पूरा करना" (तुलना यूहन्ना 4:34; 5:36; 19:30)। काम तीन गुना था।

1. पिता का प्रकटीकरण (तुलना यूहन्ना 1:14,18)
2. पतित मानव जाति का छुटकारा (तुलना मरकुस 10:45; 2 कुरिन्थियों 5:21)
3. सच्ची मानवता का एक उदाहरण (तुलना यूहन्ना 13:31; 1 पतरस 2:21)
4. इसके अलावा, यीशु का मध्यस्थता का काम जारी है (तुलना 1 यूहन्ना 2:1; इब्रानियों 7:25; 9:24)।

17:5 "महिमा कर. . .महिमा से" यह पद मसीह के पूर्व-अस्तित्व पर जोर देता है (तुलना यूहन्ना 1:1,15; 6:62; 8:58; 16:28; 17:11,13,24; 2 कुरिन्थियों 8:9; फिलिप्पियों 2:6-11; कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 1:3; 10: 5-8)। यीशु ने अपने चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा चेलों पर "महिमा" प्रकट की थी (तुलना यूहन्ना 1:14; 2:11; 11:4,40; 12:28)। अब परम "महिमा" उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान और स्वर्ग की महिमा में उठा लिया जाना होगा (तुलना यूहन्ना 17:24; फिलिप्पियों 2:5-6)। क्रिया, पिता से अनुरोध के रूप में प्रयोग की जाने वाली अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यूहन्ना 1:14 पर "महिमा" पर पूर्ण टिप्पणी देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 17:6-19
**6"मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रकट किया है जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दिया। वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे
दिया, और उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है। 7अब वे जान गए हैं कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है वह सब तेरी ओर
से है; 8क्योंकि जो वचन तू ने मुझे दिये, मैं ने उन्हें उनको पहुँचा दिये; और उन्होंने उनको ग्रहण किया और सच
सच जान लिया है कि मैं तेरी ओर से आया हूँ, और विश्वास कर लिया है कि तू ही ने मुझे भेजा। 9मैं उनके लिए
विनती करता हूँ; संसार के लिए विनती नहीं करता परन्तु उन्हीं के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है,क्योंकि वे तेरे हैं;
10और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है, और इनसे मेरी महिमा प्रगट हुई है। 11मैं अब
जगत में न रहूँगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूँ। पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे
दिया है, उनकी रक्षा कर कि वे हमारे समान एक हों। 12जब मैं उनके साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने
मुझे दिया है उनकी रक्षा की।मैं ने उनकी चौकसी की, और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ,
इसलिये कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो। 13अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें जगत में कहता हूँ,
कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएँ। 14मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुँचा दिया है; और संसार ने उनसे बैर किया, क्योंकि
जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। 15मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले;
परन्तु यह कि उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख। 16जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं। 17सत्य के द्वारा
उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है। 18जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। 19और
उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ, ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किये जाएँ।**

17:6 "मैंने तेरा नाम प्रकट किया है" इब्रानी नामों का अर्थ चरित्र को प्रतिबिंबित करना था (तुलना यूहन्ना 17:11,12,25-26; भजनसंहिता 9:10)। यह वाक्यांश धर्मशास्त्रीय रूप से यह भी दावा करता है कि यीशु को देखना परमेश्वर को देखना है (तुलना यूहन्ना 1:18; 12:45; 14:8-11; कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:3)।

"नाम" अटारी के संवादों में एक महत्वपूर्ण धर्मशास्त्रीय भूमिका निभाता है (तुलना यूहन्ना 14:13,14,26; 15:16,21; 16: 23,24,26; 17:6, 11,12,26) । अध्याय 17 में परमेश्वर के लिए दो अनूठे नामों का प्रयोग किया जाता है।

1. पवित्र पिता, यूहन्ना 17:11
2. धार्मिक पिता, यूहन्ना 17:25

▣ **"जिन्हें तू ने मुझे दिया है"** धर्मशास्त्रीय रूप से यह चुनाव के बारे में बताता है (तुलना यूहन्ना 17:2,9,24; 6:37,39) । कोई भी तब तक नहीं आ सकता जब तक

1. परमेश्वर नहीं देता है
2. आत्मा खींच न ले (यूहन्ना 6:44,65)
3. वे ग्रहण (यूहन्ना 1:12); विश्वास (यूहन्ना 3:16) न करें

▣ **"उन्होंने तेरे वचन को मान लिया है"** आज्ञाकारिता महत्वपूर्ण है (तुलना यूहन्ना 8: 51,55; 14:23; 15:10,20)। इसका प्रयोग पुराने नियम के "दोषरहित" के लिए एक समान अर्थ में किया जाता है (तुलना नूह, उत्पत्ति 6:9; अब्राहम; उत्पत्ति 17:1; इस्राएल, व्यवस्थाविवरण 18:13; अय्यूब, अय्यूब 1:1)। इसका अर्थ उत्तम आज्ञाकारिता या पापहीनता नहीं, लेकिन जो कुछ प्रगट हुआ है उसे सुनने और करने की इच्छा है; अब तक यह यीशु में चेलों के विश्वास, यीशु में बने रहने और जैसे यीशु ने उनसे प्रेम किया वैसे ही एक दूसरे से प्रेम करने के रूप में संदर्भित करता है।

17:7 "वे जान गए हैं" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जिसके बाद "कि" (*hoti*) आता है, जो एक संदेश की विषय-वस्तु को संदर्भित करता है। यूहन्ना के "*hoti*" के प्रयोग के लिए यूहन्ना 2:23, #4 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"जो कुछ तू ने मुझे दिया है वह सब तेरी ओर से है"** यीशु ने वही कहा जो पिता के द्वारा उस पर प्रगट किया गया था (तुलना 17:8; 7:16; 12:48-49)।

17:8 "उन्होंने उनको ग्रहण किया" उन्हें परमेश्वर के बारे में यीशु का संदेश मिला। कोई प्रत्यक्ष कर्म नहीं बताया गया है। यूहन्ना 1:12 में स्वीकार करने/ग्रहण करने का प्रत्यक्ष कर्म स्वयं यीशु को संदर्भित किया गया है; यहाँ, यह परमेश्वर के बारे में संदेश है जो यीशु लाया (तुलना यूहन्ना 17:4)। यह सुसमाचार के दो पहलुओं पर प्रकाश डालता है (1) एक व्यक्ति और (2) संदेश के रूप में ।

▣ **"उन्होंने ग्रहण किया. . .उन्होंने विश्वास कर लिया"** ये अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं। ये सत्य यीशु की दिव्य उत्पत्ति और संदेश का उल्लेख करते हैं (तुलना यूहन्ना 5:19; 6:68-69; 12:48-49; 16:30; 17:18,21,23,25) ।

17:9 "मैं उनके लिए विनती करता हूँ" यीशु हमारा मध्यस्थ (तुलना 1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 8: 6; 9:15; 12:24) और अधिवक्ता (तुलना 1 यूहन्ना 2:1) है। पिता भी इन कार्यों में शामिल हैं (तुलना यूहन्ना 16:26-27), उसी प्रकार आत्मा भी (तुलना रोमियों 8:26-27)। त्रिएकत्व के सभी तीन व्यक्ति छुटकारे के सभी पहलुओं में शामिल हैं।

▣ **"संसार"** *Kosmos* का प्रयोग इस अध्याय में अठारह बार किया गया है। यीशु चिंता करता है (1) ग्रह की (तुलना यूहन्ना 17:5,24) और (2) विश्वासियों के इसके पतित होने के साथ संबंध की (तुलना यूहन्ना 1:10; 17:6,9,11,13,14,15,16,17,18,21,23)। यूहन्ना के लेखन में इस शब्द का विशिष्ट अर्थ है "परमेश्वर से अलग होकर संगठित और कार्य करनेवाला मानव समाज।" कभी-कभी इसका तात्पर्य होता है(1) ग्रह; (२) ग्रह पर सब प्राणी; या (3) या परमेश्वर से अलग जीवन। यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय देखें।

17:10 "और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है" यह त्रिएकत्व की एकता को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 17:11, 21-23; 16:15)। त्रिएकत्व के लिए यूहन्ना 14:26 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"इनसे मेरी महिमा प्रगट हुई है"** यह एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है। एक चेले का जीवन यीशु को आदर देना है जैसे उसने पिता को आदर दिया। क्या कमाल की जिम्मेदारी है!

17:11 "मैं अब जगत में न रहूँगा" यह उल्लेख करता है (1) तात्कालिक भविष्य (स्वर्गारोहण) का जब यीशु पिता के पास लौट जाएगा (तुलना प्रेरितों के काम 1:9-10) या (2) यीशु की सार्वजनिक सेवकाई का।

▣ **"पवित्र पिता"** यह शब्द "पवित्र" जैसे पुराने नियम में वैसे ही केवल यहाँ नये नियम में पिता के लिए प्रयोग किया गया है ("पवित्र," शीर्षक में भी प्रयोग किया गया है, 1 पतरस 1:15)। यह विशेषण (*hagios*) भी अक्सर आत्मा पर आरोपित किया जाता है (तुलना यूहन्ना 1:33; 14:23; 20:22)। उसी यूनानी मूल का प्रयोग यूहन्ना 17:17 में चेलों के लिए (*hagiasmos*) और यूहन्ना 17:19 में यीशु के लिए (*hagiazō*) किया जाता है।

मूल की मूल व्युत्पत्ति “परमेश्वर की सेवा के लिए अलग करना” है (तुलना यूहन्ना 17:17,19)। इसका प्रयोग व्यक्तियों, स्थानों और विशेष रूप से परमेश्वर के उपयोग के लिए दी गई चीजों के लिए किया जाता है। यह परमेश्वर के उत्कृष्ट चरित्र (इस्राएल का पवित्र) और भौतिक, सांसारिक, पतित चीजों से भिन्नता का वर्णन किया गया है। यीशु पवित्र था; जैसे ही उसके अनुयायी उसके जैसे हो जाते हैं, वे भी "पवित्रता" को दर्शाते हैं। "संत" शब्द का मूल यूनानी शब्द "पवित्र" से है। विश्वासी पवित्र हैं क्योंकि वे मसीह में हैं, लेकिन उन्हें पवित्र बनना है क्योंकि वे उसके लिए जीते हैं, उसके समान जीते हैं और उसमें जीते हैं।

विशेष विषय: पवित्र (SPECIAL TOPIC: HOLY)

I. पुराना नियम (ज्यादातर यशायाह के उदाहरण से स्पष्ट किया गया)
   A. *kadosh* (BDB 872, KB 1072) शब्द की व्युत्पत्ति अनिश्चित है, संभवतः कनानी (यानी, युगारिट की)। यह संभव है कि मूल के भाग (यानी, *kd*) का अर्थ है "विभाजित करना।" यह लोकप्रिय परिभाषा "परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ" का स्रोत है (कनानी संस्कृति से अलग, तुलना व्यवस्थाविवरण 7:6 14:2,21; 26:19)।
   B. यह चीजों, स्थानों, समय और व्यक्तियों में परमेश्वर की उपस्थिति से संबंधित है। यह उत्पत्ति में प्रयोग नहीं किया जाता है, लेकिन निर्गमन, लैव्यव्यवस्था और गिनती में आम हो जाता है।
   C. भविष्यवाणी के साहित्य में (विशेषतः यशायाह और होशे) पहले से मौजूद व्यक्तिगत तत्व, लेकिन जिसपर जोर नहीं दिया गया है सामने आता है (विशेष विषय: एक पवित्र देखें)। यह परमेश्वर के सार का वर्णन करने का एक तरीका बन जाता है (तुलना यशायाह 6:3)। परमेश्वर पवित्र है। उसके चरित्र का प्रतिनिधित्व करने वाला उसका नाम पवित्र है। उसके लोग जिन्हें एक जरूरतमंद संसार के समक्ष उसके चरित्र को प्रकट करना है, पवित्र हैं (यदि वे विश्वास के साथ वाचा का पालन करते हैं)।
      1. विशेषण, BDB 872 קָדוֹשׁ, "पवित्र," "पावन" का प्रयोग इनके लिये किया गया है
         a. परमेश्वर, यशायाह 5:16, 6:3 (तीन बार); विशेष विषय: एक पवित्र देखें
         b. उसके नाम, यशायाह 40:25; 49:7; 57:15
         c. उसका निवास, यशायाह 57:15
         d. उसका विश्रामदिन, यशायाह 58:13
      2. क्रिया, BDB 872 קָדַשׁ, "अलग करने के लिए," "पवित्र किए हुए"
         a. परमेश्वर का चरित्र, यशायाह 5:16, 29:23
         b. परमेश्वर, यशायाह 8:13; 65:5
         c. परमेश्वर के स्वर्गदूत, यशायाह 13:3
         d. परमेश्वर का नाम, यशायाह 29:23
         e. पर्व, यशायाह 30:29
         f. पवित्र हुए मनुष्य, यशायाह 66:17
      3. संज्ञा, BDB 871 קֹדֶשׁ, "अलगाव," "पवित्रता"
         a. पवित्र वंश, यशायाह 6:13
         b. पवित्र पर्वत, यशायाह 11:9; 27:13; 56:7; 57:13; 65:11,25; 66:20
         c. अलग किया गया, यशायाह 23:18
         d. पवित्र मार्ग, यशायाह 35:8
         e. पवित्रस्थान, यशायाह 43:28; 62:9; 64:11
         f. पवित्र नगर, यशायाह 48:2; 52:1
         g. एक पवित्र, यशायाह 49:7 (विशेष विषय: एक पवित्र देखें)
         h. पवित्र भुजा, यशायाह 52:10
         i. पवित्र दिन, यशायाह 58:13
         j. पवित्र प्रजा, यशायाह 62:12
         k. पवित्र आत्मा, यशायाह 63:10,11
         l. परमेश्वर का सिंहासन, यशायाह 63:15
         m. पवित्रस्थान, यशायाह 63:18
         n. पवित्र नगर, यशायाह 64:10
   D. परमेश्वर की दया और प्रेम वाचा, न्याय और आवश्यक चरित्र की सैद्धान्तिक अवधारणाओं से अविभाज्य हैं। यहाँ एक अपवित्र, पतित, विद्रोही मानवता के प्रति परमेश्वर में तनाव है। परमेश्वर "दयालु" और परमेश्वर "पवित्र" के बीच संबंध पर Robert B. Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament*, pp. 112-113 में एक बहुत ही दिलचस्प लेख है।

II. नया नियम
   A. नये नियम के लेखक (लूका को छोड़कर) इब्रानी विचारक थे, लेकिन बोलचाल की यूनानी भाषा में लिख रहे थे। नये नियम की कलीसिया ने पुराने नियम के यूनानी अनुवाद, सेप्टुआजिंट, का प्रयोग किया। यह पुराने नियम का

यूनानी अनुवाद था, न कि प्राचीनकालीन यूनानी साहित्य, विचार, या धर्म, जिसने उनकी शब्दावली को नियंत्रित किया।

B. यीशु पवित्र है क्योंकि वह परमेश्वर का है और परमेश्वर की तरह है (तुलना लूका 1:35; 4:34; प्रेरितों के काम 3:45; 4: 27,30; प्रकाशितवाक्य 3:7)। वह पवित्र और धर्मी है (तुलना प्रेरितों के काम 3:14; 22:14)। यीशु पवित्र है क्योंकि वह पाप रहित है (तुलना यूहन्ना 8:46; 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15; 7:26; 1 पतरस 1:19; 2:22; 1 यूहन्ना 3:5)।

C. क्योंकि परमेश्वर पवित्र हैं (तुलना यूहन्ना 17:11; 1 पतरस 1:15-16 प्रकाशितवाक्य 4:8; 6:10), उसके बच्चों को पवित्र होना है (तुलना लैव्यव्यवस्था 11:44-45; 19:2; 20:7,26; मत्ती 5:48; 1 पतरस 1:16)। क्योंकि यीशु पवित्र हैं, उनके अनुयायियों को पवित्र होना है (तुलना रोमियों 8:28-29; 2 कुरिन्थियों 3:33; गलातियों 4:19; इफिसियों 1:4; 1 थिस्सलुनीकियों 3:13; 4:3; 1 पतरस 1:15)। मसीहियों को मसीह की समानता (पवित्रता) में सेवा करने के लिए बचाया गया है।

▣ **"अपने उस नाम से उनकी रक्षा कर"** यीशु सशक्त बनाने वाली सुरक्षा और व्यक्तिगत उपस्थिति के लिए जो कि YHWH ने उसे दी है (पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक) उसके चेलों को प्रदान करने के लिए प्रार्थना कर रहा है (अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक) (तुलना यूहन्ना 17:12) । यह एक पतित संसार की सेवा करने के लिए उन्हें सक्षम बनाएगा जिस प्रकार उसने पतित संसार की सेवा की (तुलना यूहन्ना 17:18)। यह इनके के बीच एकता (तुलना यूहन्ना 17:21) के लाभों में से एक है

1. पिता
2. पुत्र
3. चेले

▣ **"कि वे हमारे समान एक हों"** यह एक वर्तमान संशयार्थ-सूचक है। यह त्रिएक परमेश्वर की संबंधपरक एकता को दर्शाता है (यूहन्ना 17:21,22,23; 10:30; 14:10)। यह भी मसीहियों के लिए एक बहुत बढ़िया अनुरोध और जिम्मेदारी है! एकता के लिए बुलाहट की हमारे दिन में कमी है (तुलना इफिसियों 4:1-6)। एकता, न कि एकरूपता, परमेश्वर की खंडित कलीसिया को फिर से जोड़ने का तरीका है।

17:12 "मैं ने रक्षा की. . .मैं ने चौकसी की" पहली क्रिया अपूर्ण काल है और दूसरी अनिर्दिष्टकाल। ये क्रियाएं पर्यायवाची हैं। अवतरण का मुख्य विषय यीशु की सतत सुरक्षा है (तुलना 1 पतरस 1:3-9)।

अपनी *Word Studies in the New Testament,* Vol. 1, में M.R. Vincent इन दो शब्दों के बीच अंतर करता है। वह कहता है कि पहले (*tēreō*) का अर्थ संरक्षण करना और दूसरे (*phulassō*) का अर्थ चौकसी करना था (पृष्ठ 496)।

▣ **"उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ"** इससे यीशु की सुरक्षा की सामर्थ्य का पता चलता है (तुलना यूहन्ना 6:37,37; 10:28-29)।

इस शब्द (*apollumi*) का अनुवाद करना मुश्किल है क्योंकि इसका प्रयोग दो अलग-अलग अर्थों में किया जाता है। अपनी पुस्तक *Theological Dictionary of the New Testament*, Vol. 1, में Gerhard Kittel इस शब्द के बारे में कहते हैं, "सामान्य तौर पर हम कह सकते हैं कि 2 और 4 इस संसार से संबंधित आधार कथन हैं, जैसे कि सिनॉप्टिक्स में, जबकि 1 और 3 आगामी संसार से संबंधित आधार कथन हैं, जैसे पौलुस और यूहन्ना में" p. 394. वह जो परिभाषाएँ देता है, वे हैं:

1. "नष्ट करने या घात करने"
2. "खोने के लिए या पीड़ित होने के लिए"
3. "नाश होने के लिए"
4. "खो जाने के लिए"

इस शब्द का प्रयोग अक्सर विनाश के सिद्धांत, यानी कि जो लोग बचाये नहीं गए, न्याय के बाद उनका अस्तित्व नहीं रहेगा, को दृढ़तापूर्वक कहने के लिए किया गया है। यह दानिय्येल 12:2 का उल्लंघन लगता है। यह सिनॉप्टिक्स सुसमाचारों के मुकाबले यूहन्ना और पौलुस में , जो इसे भौतिक विनाश के नहीं किंतु आत्मिक रूप से खो जाने के रूपक की तरह प्रयोग करते हैं, अर्थों के बीच के अंतर में चूक जाता है। यूहन्ना 10:10 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"विनाश के पुत्र को छोड़"** यह स्पष्ट रूप से यहूदा इस्करियोती को संदर्भित करता है। यही वाक्यांश 2 थिस्सलुनीकियों

2:3 में "पाप का पुरुष" (अंत समय का मसीह का विरोधी) के लिए प्रयोग किया गया है।। यह एक प्राचीन यहूदी मुहावरा है जिसका अर्थ है "वह जिसका खोना तय है।" इस शब्द "खोना" पर एक शब्द क्रीड़ा है जो इस पद में पहले प्रयुक्त हुई है: "कोई भी खोया नहीं है सिवाय उसके जिसका खोना तय है।"

विशेष विषय: स्वधर्मत्याग (*APHISTĒMI*) यूहन्ना 6:64 पर देखें।

▣ **"कि पवित्रशास्त्र में जो कहा गया वह पूरा हो"** यह भजनसंहिता 41:9 को संदर्भित करता है, जो यूहन्ना 13:18; 6:70-71 में उद्धृत है।

17:13 "अब मैं तेरे पास आता हूँ" यह संदर्भित कर सकता है
1. यीशु की प्रार्थना (यूहन्ना 17)
2. यीशु का स्वर्गारोहण (यूहन्ना 17:11; प्रेरितों के काम 1)

▣ **"मैं ये बातें जगत में कहता हूँ"** यह वाक्यांश हो सकता है,
1. 11:42, यीशु ने बड़े शब्द से पुकारा ताकि दूसरे सुन सकें।
2. 15:11, यीशु की बातें सीधे चेलों के "आनन्द" से संबंधित हैं

▣ **"कि वे मेरा आनंद अपने में पूरा पाएँ"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक और पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है। कितना अद्भुत वादा है (तुलना यूहन्ना 15:11; 16:24)। यूहन्ना फिर से इसी वाक्यांश का प्रयोग करता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:4; 2 यूहन्ना 12)।

17:14 "मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुँचा दिया है" शब्द "वचन" यहाँ *logos* है। यूनानी पर्यायवाची *rhēma* का प्रयोग पद 8 में किया गया है। यह यीशु के व्यक्ति, शिक्षाओं और उदाहरण के माध्यम से ईश्वरीय प्रकाशन की पुष्टि है। यीशु वचन देता है और वचन है। शब्द व्यक्तिगत और ज्ञानात्मक दोनों प्रकार की विषय-वस्तु है। हम सुसमाचार के व्यक्ति का स्वागत करते हैं और सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करते हैं!

▣ **"संसार ने उनसे बैर किया"** संसार द्वारा अस्वीकृति मसीह द्वारा स्वीकार किए जाने का संकेत है (तुलना यूहन्ना 15:18-20; 1 यूहन्ना 3:13)।

▣ **"क्योंकि वे भी संसार के नहीं"** विश्वासियों संसार में हैं, लेकिन संसार के नहीं (तुलना यूहन्ना 17:16; 1 यूहन्ना 2:15-17)।

▣ **"क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं"** "संसार" मानव और स्वर्गदूतों के विद्रोह के पतित युग को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 8:23)। यह यूहन्ना के ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का एक और उदाहरण है।

17:15 "मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले" मसीहियों के लिए इस संसार में एक मिशन है (तुलना यूहन्ना 17:18; मत्ती 28:19-20; लूका 24:47; प्रेरितों के काम 1:8) । यह उनके घर जाने का समय नहीं है!

NASB, NKJV "उस दुष्ट"
NRSV "उस दुष्ट"
TEV, NJB "उस दुष्ट"

यह शब्द नपुंसक या पुल्लिंग है। इस साहित्यिक इकाई में अक्सर दुष्ट के व्यक्तिगत बल का उल्लेख किया गया है (तुलना यूहन्ना 12:31; 13:27; 14:30; 16:11), इसलिए, यह पद, मत्ती 5:37; 6:13; 13:19,38, "उस दुष्ट" होना चाहिए (तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 3:3; 1 यूहन्ना 2:13-14; 3:12; 5:18-19)। यूहन्ना 12:31 पर विशेष विषय देखें।

17:17 "पवित्र कर" यह मूल "पवित्र" (*hagios*) से एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। इसका अर्थ यह हो सकता है
1. विश्वासियों को मसीह के समान होने के लिए बुलाया गया है (तुलना यूहन्ना 17:19; रोमियों 8:28-29; 2 कुरिन्थियों 3:18; 7:1; गलातियों 4:19; इफिसियों 1:4; 4:13; 1 थिस्सलुनीकियों 3:13; 4:3,7; 5:23; 1 पतरस 1:15)। यह केवल सत्य के ज्ञान के माध्यम से हो सकता है, जो जीवित वचन (यीशु तुलना यूहन्ना 1:1-14) और लिखित वचन (बाइबल, तुलना यूहन्ना 15:3) दोनों है।

2. "पवित्र कर," अपने पुराने नियम के अर्थ में, मूल रूप से इसका अर्थ है "परमेश्वर की सेवा के लिए अलग किया गया। पद 18 उनके "पवित्र होने" के उद्देश्य को स्पष्ट करता है।

यह #1 या #2 सत्य है अथवा नहीं का प्रश्न नहीं है। ये दोनों सत्य हैं। यीशु के जीवन ने दोनों की आवश्यकता को दर्शाया है (तुलना यूहन्ना 17:19)।

यह बहुत संभव है कि यूहन्ना का परमेश्वर की सेवा के लिए चेलों को "पवित्र" करना पुराने नियम के याजकों को परमेश्वर की सेवा के लिए अलग करने के समरूप है। वे पुराने नियम के बलिदानों के मध्यस्थों के रूप में सेवा करते थे, लेकिन चेलों ने नये नियम के पूर्ण, एक बार के लिए बलिदान, मसीह के प्रकटकर्ताओं के रूप में सेवा की (इब्रानियों की पुस्तक देखें, जो पुराने नियम और नये नियम की तुलना करती है) ।

▣ **"सत्य के द्वारा; तेरा वचन सत्य है"** सत्य परमेश्वर के बारे में यीशु के संदेश को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 8:31-32)। यीशु परमेश्वर का संदेश (*Logos*, तुलना यूहन्ना 1:1,14) और सत्य (तुलना यूहन्ना 14:6)दोनों कहलाता है। आत्मा को अक्सर सत्य का आत्मा के रूप में संदर्भित किया जाता है (तुलना यूहन्ना 14:17; 15:26; 16:13)। ध्यान दें कि विश्वासियों को भी सत्य (तुलना यूहन्ना 17:19,पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत) और आत्मा द्वारा (तुलना 1 पतरस 1:2) से पवित्र किया जाता है। यूनानी मूल "सच, सत्य" पर एक गहन चर्चा के लिए यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर सत्य पर विशेष विषय देखें।

यह संभव है कि "तेरा वचन सत्य है" LXX से भजनसंहिता 119:142, "तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी व्यवस्था सत्य है।" से एक संकेत या उद्धरण हो सकता है। यह निश्चित रूप से संभव है कि यीशु को इस प्रकार देखा गया

1. नया मूसा (व्यवस्था विवरण 18:15)
2. उसके चेलों को नए याजकों के रूप में (क्रिया "पवित्र कर" का प्रयोग)
3. उसका जीवन एक सच्चे परमेश्वर के सच्चे प्रकाशन के रूप में
4. त्रिएक परमेश्वर और चेलों की एकता को सृष्टि के परिपूर्ण किए गए उद्देश्य के रूप में (अर्थात, उत्पत्ति 1:26-27)
5. यीशु को उत्पत्ति 3:15 की परिपूर्णता के रूप में

17:18 "जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा" यीशु का आज्ञाकारिता का जीवन और सेवा, मृत्यु तक भी (2 कुरिन्थियों 5:14-15; गलातियों 2:20; 1 यूहन्ना 3:16), उसके अनुयायियों के लिए नमूना स्थापित करता है (तुलना यूहन्ना 17:19)। जैसे उसे यूहन्ना 20:21 में भेजा गया था, वह भी उन्हें खोये हुये संसार में मिशन पर भेजेगा। उन्हें संसार से संलग्न होना चाहिए, न कि उससे एकांत वास करना चाहिए। यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना *(Apostellō)* देखें।

17:19 "मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ" इस संदर्भ में यह कलवरी से संबंधित होना चाहिए! यीशु ने खुद को पिता की इच्छा (यानी, मरकुस 10:45) करने के लिए तैयार किया।

▣ **"ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किये जाएँ"** यह वर्णनात्मक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत के साथ एक *hina* खंड (उद्देश्य खंड) है, जिसका अर्थ है कि परिणाम पहले ही आ चुके हैं और जोर के साथ लागू हैं। हालाँकि, निम्न पर आधारित संयोग का एक तत्व है।

1. क्रूस पर मसीह का आगामी कार्य, पुनरुत्थान, और स्वर्गारोहण
2. यीशु और उनके उपदेशों के प्रति उनकी निरंतर पश्चातापपूर्ण विश्वास प्रतिक्रिया

यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर सत्य पर विशेष विषय देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 17:20-24

20"मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, 21कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है। 22वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों, जैसे कि हम एक हैं, 23मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा है, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा। 24हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा।"

17:20 "परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे" यह भविष्यकाल के रूप में एक

वर्तमानकाल कार्य कर रहा है। यह बाद के विश्वासियों को और यूहन्ना 10:16 में, अन्यजातियों तक को भी संदर्भित करता है। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"इनके वचन के द्वारा"** यह *logos* शब्द है। यूहन्ना 17:14 में इसके और यूहन्ना 17:8 में इसके पर्यायवाची *rhēma* के प्रयोग के कारण, यह चेलों के द्वारा यीशु के प्रकाशन के संदेश को आगे बढ़ाने से संबंधित होना चाहिए।

17:21 "कि वे सब एक हों" यह एकता त्रिएकत्व की एकता के अलावा और कुछ नहीं है (तुलना यूहन्ना 17:11, 22,23; इफिसियों 4:1-6)। यह यीशु के उपदेश का एक पहलू है जिसका उसके अनुयायियों ने पालन नहीं किया।

▣ **"जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है। एकता का उद्देश्य सुसमाचार-प्रचार है। पद 23 की लगभग एक ही संरचना और जोर है!

यीशु की प्रार्थना में एक तनाव है। वह संसार के लिए प्रार्थना नहीं करता है (तुलना यूहन्ना 17:9), फिर भी वह अपने संदेश के साथ अपने अनुयायियों को संसार में भेजता है, जो उनके सताव का कारण बनेगा क्योंकि परमेश्वर संसार से प्रेम करता है (तुलना यूहन्ना 17:21,23; 3:16)। परमेश्वर चाहता है कि पूरा संसार विश्वास करे (तुलना 1 तीमुथियुस 2:4; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3:9)। परमेश्वर को अपने स्वरूप और समानता में बने लोगों से प्रेम है। यीशु पूरे संसार के पापों के लिए मर गया। यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय: भेजना *(Apostellō)* देखें।

17:22 "वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है" ये दोनों पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं। महिमा के द्वारा प्रकाशन के संदेश का उल्लेख किया जाना चाहिए। वे संसार में उसका वचन देंगे जिस प्रकार यीशु ने पिता का वचन दिया। परिणाम में उन्हें उसकी निन्दा भी सहनी पड़ेगी! A.T. Robertson *Word Pictures in the New Testament*, Vol. V, में कहते हैं "यह देहधारी वचन की महिमा है (यूहन्ना यूहन्ना 1:14 और 2:11) यूहन्ना 17:24 में वर्णित अनन्त वचन की महिमा नहीं है" (p. 280)। यूहन्ना 1:14 पर "महिमा" पर पूर्ण टिप्पणी देखें।

17:23 "कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ" यह यूहन्ना 17:19 की तरह एक वर्णनात्मक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत के साथ एक *hina* खंड है । यूहन्ना 17:19 में, वहाँ (1) मसीह के आगामी कार्य या (2) उनके निरंतर विश्वास के आधार पर संयोग का एक तत्व है। निहितार्थ यह है कि वे पहले से ही यीशु के माध्यम से एकजुट हो गए हैं और यह है कि वे बने रहेंगे! एकता का उद्देश्य सुसमाचार-प्रचार है।

▣ **"और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रखा"** यह एक वादा है (तुलना यूहन्ना 16:27 और 14: 21,23), लेकिन इसकी एक शर्त है। परमेश्वर वाचाओं के माध्यम से मनुष्यों के साथ व्यवहार करते हैं ("यदि. . .तो")।

यूहन्ना 1-12 में प्रेम (*agapeō*) आठ बार आता है, लेकिन यूहन्ना 13-17 में 31 बार। अटारी के संवादों ने पुत्र के वचनों और कार्यों के माध्यम से और तत्पश्चात जल्द ही, पुनरुत्थान, और विशेष रूप से पिन्तेकुस्त, चेलों के माध्यम से परमेश्वर पिता के प्रकट चरित्र पर जोर दिया। परमेश्वर प्रेम है (तुलना 1 यूहन्ना 4:7-21)।

17:24 "जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों" यीशु अपने अनुयायियों के लिए एक जगह तैयार करने के लिए महिमा में लौट रहा है (तुलना यूहन्ना 14:1-3)। यह संसार हमारा घर नहीं है जैसे यह उसका भी नहीं था! यह उसकी रचना है (उत्पत्ति 1-2) और इसे पुनर्स्थापित किया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21-22)।

▣ **"कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है"** स्पष्ट रूप से इस पद में "महिमा" शब्द का अर्थ वह नहीं हो सकता है जो यूहन्ना 17:22 में है। यहाँ यह यीशु के पूर्व-विद्यमान देवत्व की महिमा को शामिल करता हुआ प्रतीत होता है।

▣ **"जगत की उत्पत्ति से पहले"** त्रिएक परमेश्वर सृजन से भी पहले छुटकारे में सक्रिय था। इस वाक्यांश का प्रयोग नये नियम में कई बार किया गया है (तुलना मत्ती 25:34; लूका 11:50; इफिसियों 1:4; इब्रानियों 4:3; 9:26; 1 पतरस 1:20; प्रकाशितवाक्य 13:8; 17:8)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 17:25-26

[25]"हे धार्मिक पिता, संसार ने तुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना; और इन्होंने भी जाना है कि तू ही ने मुझे भेजा है। [26]मैं ने तेरा नाम उनको बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था वह उनमें रहे, और मैं उनमें रहूँ।"

17:25 "धार्मिक पिता" यह शीर्षक नये नियम में केवल यहाँ दिखाई देता है। यह यूहन्ना 17:11 में "पवित्र पिता" के समानांतर है जो "मापने की ईख" इब्रानी शब्द से आया है। परमेश्वर न्याय का मानक है! 1 यूहन्ना 2:29 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"संसार ने तुझे नहीं जाना"** संसार, परमेश्वर से अलग होकर संगठित और कार्य करनेवाले मानव समाज(यूहन्ना का अनूठा उपयोग) ने न परमेश्वर(तुलना यूहन्ना 17:25) को और न ही उसके पुत्र (तुलना यूहन्ना 1:10) को जाना। यह दुष्ट और बुरा है (तुलना यूहन्ना 3:19-20; 7:7)।

▣ **"परन्तु मैं ने तुझे जाना"** यीशु परमेश्वर के बारे में जानकारी का उच्चतम और शुद्धतम स्रोत है (तुलना यूहन्ना 1:18; 3:11)।

17:26 "मैं ने तेरा नाम उनको बताया" यह यीशु के द्वारा पिता के चरित्र और मानव जाति के लिए छुटकारे की योजना के प्रकटीकरण का उल्लेख करता है (तुलना यूहन्ना 17:6,11,12; प्रेरितों के काम 2:23; 3:23; 3:18; 4:28)। यूहन्ना 17:25-26 में "जाना" शब्द पाँच बार प्रयुक्त हुआ है।

▣ **"और बताता रहूँगा"** यह या तो (1) आत्मा के माध्यम से यीशु के निरंतर प्रकटीकरण को दर्शाता है जो उसकी शिक्षाओं को स्पष्ट करता है या (2) उद्धार (दुःख-सहन सप्ताह) की होने वाली घटनाओं के बारे में बताता है। अवतरण का सन्दर्भ का तात्पर्य #1 है। उद्धार में एक व्यक्ति और एक संदेश, एक निर्णय और एक जीवन शैली, एक प्रारंभिक विश्वास और एक सतत विश्वास शामिल है। इसमें "जाना" के यूनानी लक्ष्यार्थ और "जाना" के इब्रानी लक्ष्यार्थ दोनों शामिल हैं।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यह प्रार्थना धर्मशास्त्रीय रूप से इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों है?
2. क्या यहूदा एक ऐसा विश्वासी था जो अनुग्रह से दूर हो गया?
3. हमारी एकता का उद्देश्य क्या है?
4. यीशु का पूर्व-अस्तित्व क्यों महत्त्वपूर्ण है?
5. इस संदर्भ में परिभाषित करें प्रमुख शब्द:
    a. "महिमान्वित"
    b. "दे"
    c. "जाना"
    d. "भेजा"
    e. "नाम"
    f. "संसार"

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 18

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु से विश्वासघात और उसकी गिरफ्तारी	गतसमनी में विश्वासघात और गिरफ्तारी	यीशु की गिरफ्तारी, मुकदमा, क्रूस पर चढ़ाया जाना गाड़ा जाना (18:1-19:42)	यीशु की गिरफ्तारी	यीशु की गिरफ्तारी
18:1-11	18:1-11	18:1-11	18:1-4	18:1-9
			18:5a	
			18:5b	
			18:5c-7a	
			18:7b	
			18:8-9	
			18:10-11	18:10-11
महायाजक के समक्ष यीशु	महायाजक के समक्ष		हन्ना के समक्ष यीशु	हन्ना और काइफा के समक्ष यीशु, पतरस उसका इन्कार करता है
18:12-14	18:12-14	18:12-14	18:12-14	18:12-14
पतरस द्वारा यीशु के इन्कार	पतरस यीशु का इन्कार करता है		पतरस यीशु का इन्कार करता है	
18:15-18	18:15-18	18:15-18	18:15-17a	18:15-18
			18:17b	
			18:18	
महायाजक द्वारा यीशु से पूछताछ	महायाजक का यीशु से पूछताछ करना		महायाजक का यीशु से पूछताछ करना	
18:19-24	18:19-24	18:19-24	18:19-21	18:19-24
			18:22	
			18:23	
			18:24	
पतरस द्वारा यीशु का पुनः इन्कार	पतरस और दो बार इन्कार करता है		पतरस द्वारा यीशु का पुनः इन्कार	
18:25-27	18:25-27	18:25-27	18:25a	18:25-27
			18:25b	

			18:26	
			18:27	
पिलातुस के सामने यीशु	पिलातुस के किले में		पिलातुस के सामने यीशु	पिलातुस के सामने यीशु
18:28-38a	18:28-38	18:28-32	18:28-29	18:28-32
			18:30	
			18:31a	
			18:31b-32	
		18:33-38a	18:33	18:33-19:3
			18:34	
			18:35	
			18:36	
			18:37a	
			18:37b	
			18:38a	
यीशु पर मृत्यु-दण्ड की आज्ञा	बरअब्बा का स्थान लिया जाना		यीशु पर मृत्यु-दण्ड की आज्ञा	
(18:38b-19:16c)			(18:38b-19:16a)	
18:38b-19:7		18:38b-19:7	18:38b-39	
	18:39-40			
			18:40-19:3	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

18:1-40 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. यूहन्ना ने गतसमनी में यीशु की व्यथा को छोड़ दिया (हालाँकि अध्याय 17 समानांतर हो सकता है)। यह कदाचित इसलिये था क्योंकि वह यीशु के शक्तिशाली चरित्र, जिसका सारी परिस्थितियों पर नियंत्रण था, पर जोर दे रहा था। उसने स्वयं अपना जीवन दे दिया (तुलना यूहन्ना 10:11,15,17,18)।

B. इस अध्याय की घटनाओं का क्रम सिनॉप्टिक सुसमाचारों से कुछ अलग है। इस विसंगति के लिए जिम्मेदार माना जाता है
   1. प्रत्यक्षदर्शी विवरणों की प्रकृति
   2. लेखक के धर्मशास्त्रीय उद्देश्य

C. यूहन्ना सिनॉप्टिक सुसमाचारों से बहुत भिन्न है। क्यों और कैसे प्रश्न हैं जिनका विद्वत्ता जवाब नहीं दे सकती है। इस मुद्दे पर मैंने जो सबसे अच्छी चर्चा देखी है वह है Gordon Fee, Douglas Stuart, *How to Read The Bible For All Its Worth,* जहाँ यह कई सिद्धांत देती है। जाहिर तौर पर सुसमाचार के लेखकों को, प्रेरणा के तहत, स्वतंत्रता थी कि वे यीशु के वचन और कार्य
   1. से चुने
   2. अनुकूलन करें
   3. पुनर्व्यवस्थित करें
   मुझे नहीं लगता कि वे वचन और कार्यों को कर सकते थे, लेकिन अलग-अलग लोगों के समूहों में यीशु को प्रकट करने में मदद करने के लिए उनके सुसमाचार-प्रचार के उद्देश्यों के लिए उन्हें अनुकूलित कर सकते थे। याद रखें कि सुसमाचार पश्चिमी इतिहास नहीं (यानी, कारण और प्रभाव और कालानुक्रमिक), लेकिन पूर्वी इतिहास हैं। वे जीवनी नहीं हैं, लेकिन सुसमाचार-प्रचार की पुस्तिकाएँ हैं।

D. इस अध्याय पर एक अच्छी संदर्भ पुस्तक, जहाँ तक यीशु के मुकदमों की वैधता है (तुलना, सन्हेद्रयौन, 4:1), A. N. Sherwin-White's *Roman Society and Roman Law in the NT* है।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:1-11
[1]यीशु ये बातें कहकर अपने चेलों के साथ किद्रोन नाले के पार गया। वहाँ एक बाग था, जिसमें वह और उसके
चेले गए। [2]उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ जाया
करता था। [3]तब यहूदा, सैनिकों के एक दल को और प्रधान याजकों और फरीसियों की ओर से प्यादों को लेकर,
दीपकों और मशालों और हथियारों को लिये हुए वहाँ आया। [4]तब यीशु, उन सब बातों को, जो उस पर आनेवाली
थीं जानकर, निकाला और उनसे कहा, "किसे ढूँढते हो?" [5]उन्होंने उसको उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।" यीशु ने
उनसे कहा, "मैं हूँ।" उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था। [6]उसके यह कहते ही, "मैं हूँ," वे पीछे
हटकर भूमि पर गिर पड़े। [7]तब उसने फिर उनसे पूछा, "तुम किसको ढूँढते हो?" वे बोले, "यीशु नासरी को।"
[8]यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं हूँ, यदि मुझे ढूँढते हो, तो इन्हें जाने दो।" [9]यह इसलिए हुआ
कि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा था: "जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमें से मैं ने एक को भी न खोया।" [10]तब शमौन
पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महायाजक के दास पर चलाकर उसका दाहिना कान उड़ा
दिया। दास का नाम मलखुस था। [11]तब यीशु ने पतरस से कहा, "अपनी तलवार म्यान में रख। जो कटोरा पिता ने
मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पीऊँ?"

18:1 "किद्रोन नाले" "नाले" शब्द का अर्थ "शीत-नाला" या "तराई" है। "किद्रोन" (BDB 871) का अर्थ था (1) देवदार या (2) काला। यह एक तराई थी जो गर्मी के समय में पूरी तरह से सूख जाती थी लेकिन सर्दियों के मौसम में बहती थी। यह वह जगह थी जहाँ मोरिय्याह पर्वत से बलिदानों का लहू बहाया जाता था। यह "काला" विवरण का स्रोत हो सकता है। यह मंदिर के पर्वत और जैतून के पर्वत के बीच था (तुलना LXX 2 शमूएल 15:23; 2 राजाओं 23: 4,6,12; 2 इतिहास 15:16; 29:16; 30:14; यिर्मयाह 31:40)।

इस स्थान पर एक यूनानी पांडुलिपि संस्करण है:

1. "देवदारों का" (*kedrōn*) MSS אc, B, C, L और कई अन्य बृहदक्षर पांडुलिपियों में
2. "देवदार का" (*kedrou*) MSS א*, D, और W में
3. "किद्रोन का" (*kedrōn*) MSS A और S में

The United Bible Society के चौथे संस्करण में #3 प्रयुक्त हुआ है

▣ **"एक बाग"** यह अध्याय गतसमनी में यीशु की व्यथा को पूरी तरह से छोड़ देता है, लेकिन यह गिरफ्तारी की घटना को अवश्य एक बाग में दर्शाता है। यह यीशु का पसंदीदा विश्राम स्थल था (तुलना यूहन्ना 18:2; लूका 22:39)। यीशु स्पष्ट रूप से अपने जीवन के अंतिम सप्ताह के दौरान यहाँ सोया था (तुलना लूका 21:37)।

यरूशलेम में बागों की अनुमति नहीं थी क्योंकि आवश्यक उर्वरक इसे अशुद्ध बना देते थे। इसलिए कई धनी व्यक्तियों के, जैतून के पहाड़ पर दाख की बारियाँ, फलों के बाग आदि थे।

18:2 यह यूहन्ना की एक और संपादकीय टिप्पणी है।

▣ **"यहूदा"** यहूदा और उसके उद्देश्यों के बारे में बहुत अटकलें हैं। यूहन्ना रचित सुसमाचार(तुलना यूहन्ना 6:70-71; 12:4; 13:2,26,27; 18:2,3,5) में अक्सर उसका उल्लेख और तिरस्कार किया गया है। आधुनिक नाटक "यीशु मसीह सुपरस्टार" ने उसे एक विश्वासयोग्य किंतु मोहभंगित अनुयायी के रूप में चित्रित किया है, जिसने यीशु को पुराने नियम के यहूदी मसीहा की भूमिका अदा करने के लिए मजबूर करने की कोशिश की, जो कि रोमी सत्ता को उखाड़ फेंकना, दुष्टों को दंडित करना और यरूशलेम को संसार की राजधानी के रूप में स्थापित करना था। हालाँकि, यूहन्ना ने उसके उद्देश्यों को लालच और शैतान से प्रेरित दर्शाया।

मुख्य समस्या परमेश्वर की संप्रभुता और मानव स्वतंत्र इच्छा के धर्मशास्त्रीय मुद्दे हैं। क्या परमेश्वर या यीशु ने यहूदा में हेरफेर किया? क्या यहूदा अपने कृत्यों के लिए ज़िम्मेदार है अगर शैतान ने उसे नियंत्रित किया या परमेश्वर ने पूर्वनिर्धारित किया और उसके द्वारा यीशु से विश्वासघात करवाया? बाइबल इन सवालों को सीधे संबोधित नहीं करती है। इतिहास परमेश्वर के नियंत्रण में है; वह भविष्य की घटनाओं को जानता है, लेकिन मानव जाति चुनावों और कार्यों के लिए जिम्मेदार है। परमेश्वर निष्पक्ष है, हेराफेरी करनेवाला नहीं।

एक नई पुस्तक है जो यहूदा का बचाव करने की कोशिश करती है-*Judas Betrayer or Friend of Jesus?* by William Klassen, Fortress Press, 1996। मैं इस पुस्तक से सहमत नहीं हूँ क्योंकि यह यहूदा के बारे में यूहन्ना की गवाही को तुच्छ दर्शाती है, लेकिन यह बहुत दिलचस्प और विचार-उत्तेजक है।

विशेष विषय: चुनाव/पूर्वनियति और एक धर्मशास्त्रीय संतुलन की आवश्यकता (SPECIAL TOPIC: ELECTION/PREDESTINATION AND THE NEED FOR A THEOLOGICAL BALANCE)

चुनाव एक अद्‌भुत सिद्धांत है। हालाँकि, यह पक्षपात करने के लिए एक आह्वान नहीं है, बल्कि एक माध्यम, एक उपकरण, या दूसरों के छुटकारे का एक साधन बनने का आह्वान है! पुराने नियम में इस शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से सेवा के लिए किया जाता था; नए नियम में इसका प्रयोग मुख्य रूप से उद्धार के लिए किया गया है जो सेवा में परिणित होता है। बाइबल कभी भी परमेश्वर की संप्रभुता और मानव जाति की स्वतंत्र इच्छा के बीच प्रतीत होने वाले विरोधाभास में सामंजस्य स्थापित नहीं करती है, लेकिन उन दोनों की पुष्टि करती है! बाइबल के तनाव का एक अच्छा उदाहरण होगा परमेश्वर की सार्वभौम पसंद पर रोमियों 9 और मानव जाति की आवश्यक प्रतिक्रिया पर रोमियों 10 (तुलना रोमियों 10:11,13)।

इस धर्मशास्त्रीय तनाव की कुंजी इफिसियों 1:4 में मिल सकती है। यीशु परमेश्वर का चुना हुआ जन है और सभी संभावित रूप से उसमें चुने हुए हैं (कार्ल बर्थ)। यीशु पतित मानवजाति की ज़रूरतके लिए परमेश्वर की "हाँ" है (कार्ल बर्थ)। इफिसियों 1:4 भी इस बात पर जोर देकर मुद्दे को स्पष्ट करने में मदद करता है कि पूर्वनियति का लक्ष्य स्वर्ग नहीं है, बल्कि पवित्रता (मसीह की समानता) है। हम अक्सर सुसमाचार के लाभों की ओर आकर्षित होते हैं और जिम्मेदारियों की अनदेखी करते हैं! परमेश्वर का आह्वान (चुनाव) अभी और साथ-साथ अनंत काल के लिए है!

सिद्धांत अन्य सत्यों के संबंध में आते हैं, न कि एकाकी, असंबंधित सत्यों के रूप में। एक अच्छा रूपक हो सकता है एक एकाकी तारा बनाम एक नक्षत्र। परमेश्वर पूर्वी शैलियों में सत्य प्रस्तुत करते हैं, पश्चिमी में नहीं। हमें द्वंद्वात्मक (मिथ्याभासी) सिद्धांतिक सत्यों के जोड़ों के कारण उत्पन्न तनाव को दूर नहीं करना चाहिए:

1. पूर्वनियति के विरुद्ध मानव स्वतंत्र इच्छा
2. विश्वासियों की सुरक्षा के विरुद्ध धीरज की आवश्यकता
3. मूल पाप के विरुद्ध स्वेच्छिक पाप
4. पापहीनता (पूर्णतावाद) के विरुद्ध कम पाप करना
5. प्रारंभिक तात्कालिक दोषमुक्ति और पवित्रीकरण के विरुद्ध प्रगतिशील पवित्रीकरण
6. मसीही स्वतंत्रता के विरुद्ध मसीही जिम्मेदारी
7. परमेश्वर की उत्कृष्टता के विरुद्ध परमेश्वर की स्थिरता
8. अंततः अज्ञात के रूप में परमेश्वर के विरुद्ध पवित्रशास्त्र में ज्ञेय के रूप में परमेश्वर
9. वर्तमान में परमेश्वर के राज्य के विरुद्ध भविष्य में उसकी परिपूर्णता
10. परमेश्वर के उपहार के रूप में पश्चाताप के विरुद्ध एक आवश्यक मानव वाचा प्रतिक्रिया के रूप में पश्चाताप
11. दिव्य रूप में यीशु के विरुद्ध मानव रूप में यीशु
12. पिता के समान रूप में यीशु के विरुद्ध पिता के अधीन रूप में यीशु

"वाचा" की धर्मशास्त्रीय अवधारणा मानव जाति से अनिवार्य प्रारंभिक और निरंतर पश्चातापी विश्वास प्रतिक्रिया के साथ परमेश्वर की संप्रभुता (जो हमेशा पहल करती है और कार्यसूची निर्धारित करती है) को एकजुट करती है (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 3:16,19; 20:21)। विरोधाभास के एक तरफ प्रूफ़-टेक्स्टिंग और दूसरे को हतोत्साहित करने से सावधान रहें! केवल अपने पसंदीदा सिद्धांत या धर्मशास्त्र की प्रणाली का दावा करने से सावधान रहें!

18:3

NASB	**"रोमी सेना का दल"**
NKJV	**"सैन्य दल की एक टुकड़ी"**
NRSV	**"सैनिकों की एक टुकड़ी"**
TEV	**"रोमी सैनिकों का एक समूह"**
NJB	**"सेना का दल"**

यह एक रोमी सैन्य इकाई को संदर्भित करता है, जो एक सेना का दसवाँ हिस्सा है और मंदिर के बगल के किले एंटोनिया में 600 पुरुष तक तैनात हो सकते हैं (तुलना अधिनियम 21:31,33)। यह असंभव है कि इस समूह के इतने बड़े हिस्से को बुलाया गया था। इन त्योहारों के समय में यरूशलेम में दंगों के लिए रोमी तैयार थे। उन्होंने समुद्र के मार्ग से कैसरिया से सैनिकों को स्थानांतरित करके आवश्यक सावधानी बरती होगी। रोम के लोग यीशु के मुकदमे में शामिल थे क्योंकि यहूदी यीशु को क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। सामान्यत: इसमें कई दिन लगे; वे केवल रोमी सरकार की अनुमति और सहयोग से ही ऐसा कर सकते थे।

▣ **"और प्रधान याजकों की ओर से प्यादों"** लेवीय मंदिर की पुलिस रोमी गढ़सेना के साथ थी। वे पहले ही एक बार यीशु को गिरफ्तार करने में विफल हो गए थे (तुलना यूहन्ना 7:32,45)।

▣ **"हथियारों"** तलवारें रोमी सैनिकों द्वारा उठाई गईं थीं, और गदाएँ मंदिर पुलिस द्वारा उठाई गईं थीं (तुलना मत्ती 26:43; मरकुस 14:43; लूका 22:52)।

18:4 "तब यीशु, उन सब बातों को जानकर" यह यीशु के स्वयं के ज्ञान और उनकी गिरफ्तारी, मुकदमों और क्रूस पर चढ़ाये जाने पर नियंत्रण पर एक ज़ोर है (तुलना यूहन्ना 10:11,15,17,18)। यह दुर्घटना से नहीं थी कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया (तुलना मरकुस 10:45; प्रेरितों के काम 2:23; 3:18; 4:28)। यह विषय यूहन्ना रचित सुसमाचार की विशेषता है और हो सकता है कि क्यों वह यीशु के गतसमनी के संघर्ष को दर्ज़ नहीं करता।

18:5

NASB, NJB	**"यीशु नासरी"**
NKJV, NRSV, TEV	**"नासरत का यीशु"**

"नासरी" शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में कुछ चर्चा हुई है। यह संभव है कि इसका अर्थ हो सकता है (1) नासरी; (2) नाज़ीर (तुलना गिनती 6); या (3) नासरत से। नये नियम का प्रयोग (तुलना मत्ती 2:23) #3 की पुष्टि करता है। कुछ लोगों ने इब्रानी

व्यंजन *nzr* को मसीहाई नाम "डाली" (*nezer*, तुलना यशायाह 11:1; 14:19; 60:21) से भी जोड़ा है।

विशेष विषय: यीशु नासरी (SPECIAL TOPIC: JESUS THE NAZARENE)

कई अलग-अलग यूनानी शब्द हैं जिनका यीशु की बात करने के लिए नया नियम प्रयोग करता है।

A. नये नियम के शब्द
   1. नासरत – गलील का नगर (तुलना लूका 1:26; 2:4,39,51; 4:16; प्रेरितों के काम 10:38)। यह नगर समकालीन स्रोतों में वर्णित नहीं है, लेकिन बाद के शिलालेखों में पाया गया है। यीशु के लिए नासरत से होना एक प्रशंसा नहीं थी (तुलना यूहन्ना 1:46)। यीशु के क्रूस पर चिन्ह जिसमें इस स्थान का नाम शामिल था, यहूदी अवमानना का चिन्ह था।
   2. *Nazarēnos* - यह एक भौगोलिक स्थिति को भी संदर्भित करता प्रतीत होता है। (तुलना लूका 4:34; 24:19)
   3. *Nazōraios* - एक शहर को संदर्भित कर सकता है, लेकिन इब्रानी मसीहाई शब्द "शाखा" (*netzer*, BDB 666, KB 718 II, तुलना यशायाह 11:1 पर एक शब्द क्रीड़ा भी हो सकता है; पर्यायवाची, BDB 655, यिर्मयाह 23 : 5; 33:15; जकर्याह 3: 8; 6:12; जिसका संकेत प्रकाशितवाक्य 22:16 में दिया गया है। लूका 18:37 और प्रेरितों के काम 2:22; 3:6; 4:10; 6:14; 22:8; 24:5; 26:9 में यीशु के लिए इसका प्रयोग करता है।
   4. #3 से संबंधित *nāzir* (BDB 634, KB 684), जिसका अर्थ है "एक प्रतिज्ञा के द्वारा पवित्र किया हुआ।"

B. नये नियम के बाहर शब्द का ऐतिहासिक प्रयोग।
   1. इसने एक यहूदी (पूर्व-ईसाई) विधर्मी समूह (अरामी *nāsōrayyā*) को लक्षित किया।
   2. इसका प्रयोग यहूदी समुदायों में मसीह में विश्वासियों का वर्णन करने के लिए किया गया (तुलना प्रेरितों के काम 24:5,14; 28:22, *nosri*)।
   3. यह सीरियाई (अरामी) कलीसियाओं में विश्वासियों को लक्षित करने वाला नियमित शब्द बन गया। विश्वासियों को लक्षित करने के लिए यूनानी कलीसियाओं में "मसीही" का प्रयोग किया गया।
   4. यरुशलेम के पतन के कुछ समय बाद, फरीसियों ने जामनिया में पुनर्गठन किया और आराधनालय और कलीसिया के बीच एक औपचारिक अलगाव को उकसाया। मसीहियों के खिलाफ शाप सूत्रों के प्रकारों का एक उदाहरण बेराकॉथ 28b -29a से "the Eighteen Benedictions" में मिलता है, जो विश्वासियों को "नासरी" कहता है।

      "नासरी और विधर्मी एक पल में गायब हो जाएँ; उन्हें जीवन की पुस्तक से मिटा दिया जाए और विश्वासयोग्य के साथ न लिखा जाए।"
   5. इसका प्रयोग जस्टिन मार्टियर, *Dial.* 126:1, द्वारा किया गया, जिसने यशायाह का *netzer* (यशायाह 11:1) यीशु के लिए प्रयोग किया था।

C. लेखक का मत

   मैं इस शब्द की कई वर्तनियों से आश्चर्यचकित हूँ, हालांकि मुझे पता है कि यह पुराने नियम में अनसुना नहीं है क्योंकि इब्रानी में "यहोशू" की कई अलग-अलग वर्तनियाँ हैं। निम्नलिखित वस्तुएँ मुझे इसके सटीक अर्थ के बारे में अनिश्चित बनाए रखती हैं:
   1. मसीहाई शब्द "शाखा" (netzer) या इसी तरह के शब्द नज़ीर (एक प्रतिज्ञा के द्वारा पवित्र किया हुआ) के साथ घनिष्ठ संबंध
   2. अन्यजातियों के विषय में गलील के क्षेत्र का नकारात्मक लक्ष्यार्थ
   3. गलील के नासरत शहर में बहुत कम या कोई साहित्यिक समकालीन अनुप्रमाणन नहीं है
   4. यह एक युगांत-विषयक अर्थ में एक दुष्टात्मा के मुंह से आ रहा है (यानी, "क्या तू हमें नष्ट करने आया है?")।

इस शब्द समूह के अध्ययन की पूरी ग्रंथ सूची के लिए, Colin Brown (ed.) *New International Dictionary of New Testament Theology*, vol. 2, p.346 या Raymond E. Brown, *Birth of the Messiah*, pp. 209-213, 223-225 देखें।

▣ **"मैं हूँ"** यह अक्षरशः है "मैं हूँ," इब्रानी क्रिया "होना" (यूहन्ना 6:20 पर विशेष विषय देखें), जो यहूदी परमेश्वर के वाचा नाम YHWH (तुलना निर्गमन 3:14 और यशायाह 41:4) से जोड़ते थे।। यूहन्ना 4:26; 8:24, 28, 58 और 13:19 में यीशु ने देवता के इस बहुत बढ़िया अभिकथन को उसी व्याकरणिक तरीके (*ego eimi*) से कहा है। महत्त्व देने के लिए इस संदर्भ में इसे तीन बार दोहराया गया है (तुलना यूहन्ना 18:6, 8)। यह व्याकरणिक संरचना यीशु के प्रसिद्ध "I Am. . ." कथनों से अलग है।

▣ **"उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था"** यह सुसमाचार, यूहन्ना के प्रत्यक्षदर्शी लेखक द्वारा एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है।

18:6 "वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े" यूहन्ना ने यीशु के शक्तिशाली चरित्र और उपस्थिति पर जोर देने के लिए इसे दर्ज किया।

इसका अर्थ श्रद्धा (किसी के सामने झुकना) नहीं, लेकिन डर है।

18:7 "तब उसने फिर उनसे पूछा" संभवतः, यीशु खुद पर और चेलों से दूर ध्यान आकर्षित कर रहा था। यह पद 8 के तत्काल संदर्भ में उपयुक्त बैठता है।

18:8 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है; वे उसे ढूँढ रहे थे।

▣ **"इन्हें जाने दो"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यह जकर्याह 13:7 की एक भविष्यवाणी की पूर्णता है। (तुलना मत्ती 26:31; यूहन्ना 16:32)।

18:9 "उस शब्द को पूरा करने के लिए जिसे उन्होंने बोला" यह यूहन्ना 16:32 का संदर्भ लगता है, लेकिन यूहन्ना 17:12 उद्धृत है।

18:10 "तब शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महायाजक के दास पर चलाकर उसका दाहिना कान उड़ा दिया" पतरस का लक्ष्य उसका कान नहीं, लेकिन उसका सिर था! यह यीशु की जगह मरने की पतरस की इच्छुकता को दर्शाता है। पतरस की कार्रवाई शायद लूका 22:36-38 में यीशु के कथन की गलतफहमी के कारण हुई हो। लूका 22:51 हमें सूचित करता है कि यीशु ने छूकर उस मनुष्य के कान को चंगा किया।

▣ **"उस दास का नाम मलखुस था"** केवल यूहन्ना ने इस संपादकीय टिप्पणी में उसके नाम का उल्लेख किया है। यह एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण को दर्शाता है। यूहन्ना का लेखक बाग में था!

18:11 "कटोरा" यह एक रूपक है जिसे पुराने नियम में एक व्यक्ति के भाग्य के प्रतीक के रूप में, सामान्य रूप से एक नकारात्मक अर्थ में प्रयोग किया जाता है (तुलना भजनसंहिता 11:6; 60:3; 75:8; यशायाह 51:17; 22; यिर्मयाह 25:15,16,27-28)।

यीशु के सवालों का व्याकरणिक रूप एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है। पतरस फिर से किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में काम कर रहा है जो जानता है कि क्या करना सबसे अच्छा है (तुलना मत्ती 16:22; यूहन्ना 13:8)।

यहाँ "कटोरा" का प्रयोग गतसमनी में यीशु की व्यथा के सिनॉप्टिक विवरणों में "कटोरा" के प्रयोग से भिन्न है। यूहन्ना के लिए, घटनाएँ यीशु के पूर्ण नियंत्रण में है! यूहन्ना यीशु को आत्मविश्वासी के रूप में प्रस्तुत करता है, न कि भयभीत के रूप में (तुलना यूहन्ना 18:4; 13:1,11)!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:12-14

[12]तब सैनिकों और उनके सूबेदार और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बाँध लिया, [13]और पहले उसे हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था। [14]यह वही काइफा था, जिसने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिए एक पुरुष का मरना अच्छा है।

18:12

NASB	**"रोमी सैन्य दल और सूबेदार"**
NKJV	**"सैनिकों और कप्तान की टुकड़ी"**
NRSV	**"सैनिकों, उनके प्यादों"**
TEV	**"अपने कमान अधिकारी के साथ रोमी सैनिक"**
NJB	**"सैन्य दल और उसका हाकिम"**

रोमी सैन्य इकाइयों के नाम इसमें शामिल पूर्ण पूरक सैनिकों की संख्या से लिए गए हैं।

1. सैन्य दल - 600 व्यक्तियों तक की एक इकाई को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 18:3)

2. सूबेदार - 1,000 की संख्या से है (*chiliarch*, अर्थात, प्रेरितों के काम 21:31; 22:24; 23:10; 24:7)
ये उपाधियाँ इस बारे में कुछ भी नहीं बताती हैं कि यीशु को गिरफ्तार करने वाली सैन्य इकाई कितनी बड़ी या छोटी थी। पलस्तीन में #2 का सीधा- साधा अर्थ केवल सैनिकों के एक छोटे समूह का अगुवा था।

▣ **"बाँध लिया"** इसका मतलब यह नहीं है कि वे यीशु से विशेष रूप से डरते थे, लेकिन ऐसा लगता है कि ये सामान्य प्रक्रियाएँ थीं (तुलना पद 24)।

18:13 "और पहले उसे हन्ना के पास ले गए" हन्ना और काइफा के समक्ष इन मुकदमों के क्रम के बारे में बहुत चर्चा है। सिनॉप्टिक्स हन्ना के साथ भेंट का उल्लेख बिल्कुल भी नहीं करते हैं। पद 24 यूहन्ना में एक पाद- टिप्पणी लगता है, लेकिन यह यीशु के मुकदमों के सिनॉप्टिक विवरणों का एक अभिन्न अंग है (तुलना मत्ती 26:57; मरकुस 14:53)।

पुराने नियम में महायाजक जीवनभर के लिए होता था और हर व्यक्ति को हारून के वंश का होना आवश्यक था। हालाँकि रोमियों ने इस सेवा को लेवी घराने के द्वारा खरीदे गए एक राजनीतिक ऊँचे ओहदे में बदल दिया था। महायाजक स्त्रियों के आँगन में माल का नियंत्रण और संचालन करते थे। यीशु के द्वारा मंदिर के शुद्ध किये जाने से यह परिवार नाराज हो गया।

फ्लेवियस जोसेफस के अनुसार, हन्ना 6-14 ई.तक महायाजक थे। उन्हें सीरिया के गवर्नर क्विरिनियस द्वारा नियुक्त किया गया था और वेलेरियस ग्रैटस द्वारा हटा दिया गया था। उनके रिश्तेदारों (5 बेटे और 1 पोता) उनके उत्तराधिकारी बने। काइफा (a.d. 18-36), उनके दामाद (तुलना यूहन्ना 18:13), उनके तत्काल उत्तराधिकारी थे। पद के पीछे हन्ना असली शक्ति था। यूहन्ना ने उसे पहले व्यक्ति के रूप में दर्शाया है जिसके पास यीशु को ले जाया गया (तुलना यूहन्ना 18:13,19-22)।

18:14 पद 15 और 18 के समान यह यूहन्ना की एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है।

▣ **"काइफा"** काइफा के संबंध में यूहन्ना की मुख्य चिंता यह थी कि उसने अनजाने में यीशु की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी की थी (तुलना यूहन्ना 11:50)। वह हन्ना का दामाद था और 18-36 ई. तक महायाजक था। यूहन्ना 11:49 पर टिप्पणी देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:15-18
15शमौन पतरस और एक अन्य चेला भी यीशु के पीछे हो लिए। यह चेला महायाजक का जाना- पहचाना था, इसलिये वह यीशु के साथ महायाजक के आँगन में गया, 16परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा। तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का जाना-पहचाना था, बाहर निकला और द्वारपालिन से कहकर पतरस को भीतर ले आया। 17उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, "कहीं तू भी इस मनुष्य के चेलों में से तो नहीं है?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" 18दास और प्यादे जाड़े के कारण कोयले धधकाकर खड़े आग ताप रहे थे, और पतरस भी उनके साथ खड़ा आग ताप रहा था।

18:15 "शमौन पतरस और एक अन्य चेला भी यीशु के पीछे हो लिए" इस अन्य चेले की पहचान के बारे में बहुत चर्चा हुई है।

1. पारंपरिक सिद्धांत यह रहा है कि यह यूहन्ना 20:2, 3, 4 और 8 में उसके लिए प्रयोग किए गए एक समान वाक्यांश के कारण यह प्रेरित यूहन्ना है। इसके अलावा, एक और संभावित संबंध यूहन्ना 19:25 के साथ है, जो यूहन्ना की माता का नाम लेता है, जो संभवतः मरियम की एक बहन हो सकती है, जिसका अर्थ है कि वह लेवी हो सकता है और इसलिए, एक महायाजक के घराने से (तुलना पॉलीकार्प की गवाही)।
2. महायाजक और उसके घराने के साथ उसके संबंध के कारण नीकुदेमुस या अरिमतिया का यूसुफ जैसे स्थानीय अनाम अनुयायी हो सकते हैं (तुलना यूहन्ना 18:15-16)।

▣ **"यह चेला महायाजक का जाना-पहचाना था"** यह "परिचित" के लिए एक बहुत ही प्रभावी शब्द है और इसका अर्थ "करीबी मित्र" प्रतीत होता है (तुलना लूका 2:44 और 23:49)। यदि यूहन्ना है, तो यह उसके मछली पकड़ने के व्यवसाय से संबंधित हो सकता है जिसके कारण उसका परिवार नियमित रूप से यरूशलेम में मछली लाने में शामिल रहा होगा।

18:17 "उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, 'कहीं तू भी इस मनुष्य के चेलों में से तो नहीं है?'" यह व्याकरणिक रूप, यूहन्ना 18:25 के समान, एक "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है। यह यीशु के नाम का प्रयोग न करते हुए सम्मिलित होने वालों की अवमानना को दर्शाता है। उसने सम्भवतः यह इस कारण से पूछा होगा (1) यूहन्ना के साथ पतरस के संबंध या (2) पतरस के गलीली उच्चारण।

▣ **"मैं नहीं हूँ"** पतरस को यीशु के लिए मरने के लिए तैयार किया गया हो सकता है, लेकिन वह एक दासी के सवाल का सच्चाई से जवाब देने के लिए तैयार नहीं था! सिनॉप्टिक सुसमाचारों में इन तीन इन्कारों को एक साथ रखा गया है, लेकिन यूहन्ना में उन्हें हन्ना (तुलना यूहन्ना 18:24) द्वारा यीशु की पूछताछ से अलग किया गया है।

पतरस का "मैं हूँ" कथन यीशु के "मैं हूँ" कथन के ठीक विपरीत है (तुलना यूहन्ना 18:5)।

18:18 इस कहानी को इस तरह के सुस्पष्ट प्रत्यक्षदर्शी विस्तृत विवरणों के साथ बताया गया है। दोनों पदों 18 और 25 में दो अपूर्ण वर्णनात्मक हैं।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:19-24

[19]तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछताछ की। [20]यीशु ने उसको उत्तर दिया, "मैं ने संसार से खुलकर बातें कीं; मैं ने आराधनालयों और मंदिर में, जहाँ सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं, सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहा। [21]तू मुझ से क्यों पूछता है? सुननेवालों से पूछ कि मैं ने उनसे क्या कहा। देख, वे जानते हैं कि मैंने क्या क्या कहा।" [22]जब उसने यह कहा, तो प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, "क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है?" [23]यीशु ने उसे उत्तर दिया,"यदि मैं ने बुरा कहा, तो उस बुराई की गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है?" [24]हन्ना ने उसे बन्धे हुए काइफा महायाजक के पास भेज दिया

18:19 "तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछताछ की" यह हन्ना को संदर्भित करता है, काइफा को नहीं। हन्ना सत्ता के पीछे की शक्ति थी। उसने 6 से 15 ई. तक शासन किया। उसके तुरंत पश्चात उसके दामाद और बाद में उसके पाँच पुत्रों और एक पोते ने शासन किया। मंदिर क्षेत्र में वाणिज्यिक अधिकार रखने वाला हन्ना शायद मंदिर को साफ करनेवाले से पूछताछ करने के लिए उत्सुक था। (संभवतः दो बार)। यह दिलचस्प है कि हन्ना यीशु के चेलों और उसके उपदेशों के बारे में चिंतित था।

18:20 यह निश्चित रूप से सच है कि यीशु ने खुलेआम सिखाया था। हालाँकि, यह भी सच है कि उसके कई उपदेश लोगों के सामने प्रगट नहीं किए गए (तुलना मरकुस 4:10-12)। उसके श्रोताओं की ओर से वास्तविक मुद्दा आत्मिक अंधापन था।

यीशु के वचनों और उपदेश के तरीकों को सिनॉप्टिक सुसमाचारों और यूहन्ना में अलग-अलग प्रकार से दर्ज किया गया है। सिनॉप्टिक्स में कोई "मैं. . .हूँ" कथन नहीं है। यीशु दृष्टान्तों में सिखाता है; यूहन्ना कोई दृष्टांत दर्ज नहीं करता है। मुझे लगता है कि भिन्नताओं को इस प्रकार समझाया जा सकता है कि सिनॉप्टिक्स में यीशु के सार्वजनिक उपदेशों और यूहन्ना में यीशु के निजी सत्रों को दर्ज किया गया है।

18:21 "तू मुझ से क्यों पूछता है" यूहन्ना 18:20 में यीशु ने अपने उपदेशों की सेवकाई की सार्वजनिक प्रकृति पर जोर दिया। यीशु हन्ना की ओर इशारा कर रहा था कि उसके प्रश्न यहूदी कानून के अनुसार गैर- कानूनी थे और आम लोगों की जानकारी में भी थे।

18:22 "प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मारकर कहा" इस शब्द का अर्थ "थप्पड़ मारना" या "छड़ी से पीटना" है। इसका अर्थ हुआ "खुले हाथ से एक थप्पड़।" यह यशायाह 50:6 के लिए एक भ्रम है। यीशु ने दृढ़ता से कहा कि अगर उसने कुछ गलत किया है, तो उस पर आरोप लगाओ; अन्यथा, उसे क्यों मारा जा रहा है?

18:23 "यदि. . .यदि" ये दो प्रथम श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं, जिन्हें लेखक के दृष्टिकोण से या उनके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है। यहाँ पहलेवाला एक झूठी वास्तविकता का उच्चारण करने का एक साहित्यिक तरीका है। यीशु हन्ना को उसके प्रमाणों को सामने लाने के लिए चुनौती दे रहा है।

18:24 सिनॉप्टिक सुसमाचारों में इन मुकदमों का क्रम उलटा है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:25-27

[25]शमौन पतरस खड़ा हुआ आग ताप रहा था। तब उन्होंने उससे कहा, "कहीं तू भी उसके चेलों में से तो नहीं है?" उसने इन्कार करके कहा, "मैं नहीं हूँ।" [26]महायाजक के दासों में से एक, जो उसके कुटुम्ब में से था जिसका कान पतरस ने काट डाला था, बोला, "क्या मैं ने उसके साथ बाग में नहीं देखा था ?" [27]पतरस फिर इन्कार कर गया, और तुरंत मुर्ग ने बाँग दी।

18:26 "महायाजक के दासों में से एक, जो उसके कुटुम्ब में से था जिसका कान पतरस ने काट डाला था, बोला," चारों सुसमाचारों में इस बारे में कुछ विसंगति है कि किसने पतरस से प्रश्न किये।

1. मरकुस में, यह एक दासी है जिसने पहला प्रश्न पूछा (तुलना मरकुस 14:69)
2. मत्ती में यह एक और दासी है (तुलना मत्ती 26:71)
3. लूका 22:58 में यह एक मनुष्य है।
4. यूहन्ना में महायाजक का दास/सेवक

ऐतिहासिक विन्यास से यह स्पष्ट है कि एक व्यक्ति ने आग के आसपास प्रश्न पूछा था और अन्य लोग इसमें शामिल हो गए (तुलना यूहन्ना 18:18)।

18:26 "क्या मैं ने तुझे उसके साथ बाग में नहीं देखा था" यूहन्ना 18:17 और 25 के पहले दो प्रश्नों के विपरीत, यह व्याकरणिक रूप "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है।

18:27 "पतरस फिर इन्कार कर गया" हम मरकुस 14:71 और मत्ती 26:74 से समझते हैं कि पतरस ने धिक्कारकर और शपथ खाकर इसका इन्कार किया।

▣ **"तुरंत मुर्ग ने बाँग दी"** सभी चार सुसमाचारों की घटनाओं के कालक्रम का तात्पर्य है कि यह सुबह 12:00 से 3:00 बजे के बीच हुआ था। यहूदियों ने यरूशलेम की शहर की सीमा के अंदर मुर्गियों की अनुमति नहीं दी थी अतः यह एक रोमी मुर्ग रहा होगा।

लूका 22:61 इस स्थान पर जोर देता है कि यीशु ने पतरस को देखा। यह माना जाता है कि हन्ना और काइफा एक ही घर में रहते थे और सैनिक यीशु को हन्ना के साथ उसकी मुलाकात के बाद काइफा से मुलाकात और फिर महासभा ले जा रहे थे। यह वह गमनागमन था जब यीशु ने पतरस को देखा। यह सब अनुमान है क्योंकि हमारे पास इन रात के मुकदमों की घटनाओं के क्रम के बारे में कट्टर होने के लिए पर्याप्त ऐतिहासिक जानकारी नहीं है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:28-32

[28]तब वे यीशु को काइफा के पास से किले को ले गए, और भोर का समय था, परन्तु वे आप किले के भीतर नहीं गए ताकि अशुद्ध न हों, परन्तु फसह खा सकें। [29]तब पिलातुस उनके पास बाहर निकल आया और कहा, "तुम इस मनुष्य पर किस बात का आरोप लगाते हो?" [30]उन्होंने उसको उत्तर दिया, "यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते।" [31]पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।" यहूदियों ने उससे कहा, "हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें।" [32]यह इसलिये हुआ कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उस ने यह संकेत देते हुए कही थी कि उसकी मृत्यु कैसी होगी।

18:28
NASB, NKJV,
JB "किले को"
NRSV "पिलातुस के मुख्यालय को"
TEV "हाकिम के निवासस्थान को"

यह एक लातिनी शब्द है जो रोमी हाकिम के आधिकारिक निवास का उल्लेख करता है जब वे यरूशलेम में थे। यह किला एंटोनिया रहा होगा, जो मंदिर या हेरोदेस महान के महल के बगल में था।

विशेष विषय: प्रीटोरियुम का सैनिक (SPECIAL TOPIC: PRAETORIAN GUARD)

मूल रूप से, "प्रीटोरियुम" शब्द एक रोमी हाकिम के निवासस्थान ("*praetor*") को संदर्भित करता है, लेकिन रोमी विजय के युग के बाद इसे राजनीतिक या सैन्य प्रशासन के मुख्यालय या निवास को निरूपित करने के लिए प्रशासनिक अर्थ में प्रयुक्त किया जाने लगा (तुलना मत्ती 27:27; यूहन्ना 18:28,33; 19:9; प्रेरितों के काम 23:35; फिलिप्पियों 1:13)।

हालाँकि, पहली शताब्दी के रोमी जगत में इसका प्रयोग उन अधिकारियों के लिए किया गया था जो विशेष शाही सैनिक थे। सैनिकों का यह कुलीन समूह औगुस्तुस (27 ई.पू.) द्वारा शुरू किया गया था, लेकिन अंत में रोम में टिबेरियस द्वारा संकेंद्रित किया गया था। वे

1. सभी समान ओहदे के, सूबेदार थे
2. दुगुना वेतन प्राप्त करते थे
3. विशेषाधिकार प्राप्त थे (यानी, 25 वर्ष के बजाय 16 वर्ष के बाद सेवानिवृत्त होते थे)
4. इतना शक्तिशाली बन गए कि सम्राट के लिए उनकी पसंद को हमेशा सम्मानित किया जाता था

यह कॉन्स्टेंटाइन के काल में यह कुलीन, राजनीतिक रूप से शक्तिशाली समूह अंततः भंग हो गया था।

▣ **"भोर का समय था"** हम रोमी अभिलेखों से जानते हैं कि पलस्तीन में रोमी अधिकारी प्रातःकाल अदालत में मिलते थे। जाहिर तौर पर, यह ठीक भोर का समय होता था जब गैर-कानूनी मुकदमों को विश्वसनीयता और वैधता का आभास देने के लिए महासभा मिलती थी। तुरंत यीशु को पिलातुस के पास ले गए।

▣ **"परन्तु वे आप किले के भीतर नहीं गए ताकि अशुद्ध न हों"** एक अन्यजातियों के निवास में प्रवेश करके वे फसह के भोज के लिए अपवित्र हो जाते थे। यह विडंबना है कि वे औपचारिक आयोजनों के बारे में अति शंकायुक्त थे, लेकिन एक मनुष्य को मौत के घाट उतारने के बारे में कोई हिचक नहीं थी।

यह पद सिनॉप्टिक सुसमाचारों के बीच एक स्पष्ट ऐतिहासिक विसंगति के विवाद का केंद्र है, जो यह दावा करता है कि यीशु ने अपने चेलों के साथ फसह खाया (तुलना मत्ती 26:17; मरकुस 14:12; लूका 22:1), और यूहन्ना, जो दावा करता है कि यह एक दिन पहले, पारंपरिक फसह के पर्व की तैयारी के दिन (गुरुवार) हुआ था। प्रसिद्ध रोमन कैथोलिक जोहानिन विद्वान, रेमंड ब्राउन, Jerome Biblical Commentary में ये टिप्पणी करते हैं:

> "यदि पर्यायवाची परंपरा में बताई गई घटनाओं के कालानुक्रम को 'ऐतिहासिकता,' के दृष्टिकोण से यूहन्ना से निरपवाद रूप से पसंद किया जाए, निम्नलिखित अवतरण- एक गवाह का वर्णन जो निश्चित रूप से पर्यायवाची परंपरा को जानता था - कुछ अघुलनशील कठिनाइयों को प्रस्तुत करता है। यदि, दूसरी ओर, हम मान लेते हैं कि वह प्रत्यक्षदर्शी गवाही जिस पर यूहन्ना का गठन किया गया है, वह अक्सर योजनाबद्ध पर्यायवाची रूपरेखा की तुलना में तथ्यात्मक घटनाओं के करीब है, अवतरण अधिक समझ में आता है" (p. 458)।

गुरुवार और शुक्रवार को फसह का पालन करने के लिए दो अलग-अलग तिथियों की कुछ संभावना है। अतिरिक्त समस्या यह भी है कि "फसह" शब्द का प्रयोग एक दिन के पर्व और आठ दिन के त्योहार (अखमीरी रोटी के पर्व के साथ संयुक्त फसह, तुलना निर्गमन 12) के लिए किया जा सकता है।

▣ **"फसह खा सकें"** अंतिम भोज की सही तारीख को लेकर अभी भी समस्याएँ हैं। सिनॉप्टिक सुसमाचारों का तात्पर्य है कि यह फसह का भोज था, लेकिन यूहन्ना ने कहा कि यह अधिकृत फसह भोज से पहले का दिन था (तुलना यूहन्ना 19:14 और यह पद) इसका उत्तर हो सकता है

1. इस तथ्य में कि "फसह" शब्द सप्ताह, भोज या विशेष सब्त का उल्लेख कर सकता है।
2. यह तथ्य कि कुछ यहूदी अलगाववादी समूह (यानी, इस्सैन) अन्तर्नियमीय जुबलियों की पुस्तक से एक चंद्र कैलेंडर का अनुसरण करते हैं।
3. यह तथ्य कि यूहन्ना के "दोहरे अर्थ" यीशु को फसह के मेमने (1:29) के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो कि फसह के दिन से पहलेवाले दिन वध किया जाता था

18:29 परमेश्वर ने पिलातुस के व्यक्तित्व का बहुत प्रयोग किया जैसे कि उसने निर्गमन में फिरौन का प्रयोग किया। उसे 26 ई. में सम्राट तिबिरियुस द्वारा यहूदिया का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। उसने वेलेरियस ग्रैटस (जिसने हन्ना को महायाजक के पद से हटा दिया) का स्थान लिया। पुन्तियुस पिलातुस पाँचवाँ रोमी राज्यपाल था। उसने अरखिलाउस (हेरोदेस महान का पुत्र) के राज्य का संचालन किया, जिसमें सामरिया और यहूदिया, गाजा और मृत सागर शामिल थे। पिलातुस के बारे में अधिकांश जानकारी फ्लेवियस जोसेफस के लेखन से आती है।

विशेष विषय: पुन्तियुस पिलातुस (SPECIAL TOPIC: PONTIUS PILATE)

I. पुरुष
   A. जन्म का स्थान और समय अज्ञात
   B. अश्वारोही कोटि (रोमी समाज का उच्च मध्यम वर्ग)

C. विवाहित है, लेकिन कोई ज्ञात संतान नहीं है
D. पहले की प्रशासनिक नियुक्तियाँ (जिनमें से कई अवश्य रही होंगी) अज्ञात हैं

II. उसका व्यक्तित्व
A. दो अलग-अलग विचार
1. फिलो (*Legatio and Gaium*, 299-305) और जोसेफुस (*Antiq.* 18.3.1 और *Jewish Wars* 2.9.2-4) ने उसे एक क्रूर और निर्दयी तानाशाह के रूप में दर्शाते हैं।
2. नया नियम (सुसमाचार, प्रेरितों के काम) एक कमजोर, ऐसा रोमी हाकिम जिससे आसानी से चालाकी से काम निकाला जा सके, प्रस्तुत करता है ।

B. Paul Barnett, *Jesus and the Rise of Early Christianity*, pp. 143-148, इन दो विचारों की एक प्रशंसनीय व्याख्या देता है।
1. पिलातुस को 26 ई. में तिबिरियुस के अधीन, जो यहूदी-समर्थक था(तुलना Philo, *Legatio and Gaium*, 160-161), सीजेनस की, जो तिबिरियुस का यहूदी विरोधी मुख्य सलाहकार था, सलाह पर हाकिम नियुक्त किया गया था ।
2. तिबिरियुस एल. एलीस सीजेनस, उनके प्रीटोरियुम अधिकारी, जो सिंहासन के पीछे वास्तविक शक्ति बन गया था और जो यहूदियों (Philo, *Legatio and Gaium*, 159-160) से नफरत करता था, से राजनीतिक सत्ता हार गया।
3. पिलातुस सीजेनस का एक आश्रित था और उसने उसे प्रभावित करने का प्रयास इस प्रकार किया
   a. यरूशलेम में (26 ई.) में रोमी मानक लाना, जो अन्य हाकिमों ने नहीं किया था। रोमी देवताओं के इन प्रतीकों ने यहूदियों को उत्तेजित किया (तुलना *Antiq*. 18.3.1 और *Jewish Wars* 2.9.2-3)।
   b. ऐसे सिक्के ढाले (29-31ई.) जिसपर रोमी आराधना की छवियाँ उकेरी गई थीं। जोसेफुस का कहना है कि वह जानबूझकर यहूदी कानूनों और रीति-रिवाजों को पलटने की कोशिश कर रहा था (तुलना जोसेफुस, *Antiq*. 18.4.1-2)।
   c. यरूशलेम में एक नहर के निर्माण के लिए मंदिर के खजाने से पैसा लेना (तुलना जोसेफुस, *Antiq*. 18.3.2; *Jewish Wars* 2.9.3)।
   d. यरूशलेम में फसह के समय बलिदान अर्पण करने के दौरान कई गलीलियों को मार डाला जाना।
   e. 31 ई.में रोमी ढालें यरूशलेम में लाया जाना। हेरोदेस महान के बेटे ने उन्हें हटाने के लिए उससे आग्रह किया, लेकिन उसने नहीं हटाया, इसलिए उन्होंने तिबिरियुस को लिखा, जिसने माँग की कि समुद्र के मार्ग से उन्हें कैसरिया वापस भेजा जाये। (तुलना Philo, *Legatio and Gaium*, 299-305)
   f. गिरिज्जीम पर्वत पर कई सामरी लोग मारे गए (36/37ई.) जब उन्होंने अपने धर्म की उन पवित्र वस्तुओं की खोज की, जो खो गई थी। इससे पिलातुस के स्थानीय प्रधान (विटालियस, सीरिया के राज्याधिकारी) ने उसे पद से हटा दिया और उसे रोम भेज दिया (तुलना जोसेफुस, *Antiq* 18.4.1-2)।
4. सीजेनस को 31ई. में मार डाला गया और तिबिरियुस को पूर्ण राजनीतिक सत्ता में बहाल किया गया था; इसलिए, #a, b, c, और d संभवतः पिलातुस द्वारा सीजेनस का विश्वास अर्जित करने के लिए किए गए थे; #e और f तिबिरियुस के भरोसे को अर्जित करने का प्रयास हो सकते थे, लेकिन उनका उल्टा असर हुआ।
5. यहूदी समर्थक बादशाह के बहाल होने, साथ ही हाकिमों को तिबिरियुस की ओर से यहूदियों के प्रति दयालु रहने का आधिकारिक पत्र (तुलना Philo, *Legatio and Gaium*, 160-161), से यह स्पष्ट है कि यरूशलेम में यहूदी नेतृत्व ने तिबिरियुस के साथ पिलातुस की राजनीतिक भेद्यता का फायदा उठाया और यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उसके साथ हेराफेरी की। बार्नेट का यह सिद्धांत पिलातुस के दो विचारों को एक साथ प्रशंसनीय तरीके से लाता है।

III. उसकी किस्मत
A. उसे रोम में वापस बुलाया गया और तिबिरियुस की मृत्यु (37 ई.) के ठीक बाद वह वहाँ पहुँचा।
B. उसे फिर से नियुक्त नहीं किया गया।
C. उसका जीवन इसके बाद अज्ञात है। कई बाद के सिद्धांत हैं, लेकिन कोई सुरक्षित तथ्य नहीं है।

18:30 "यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते" यह एक दूसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे अक्सर "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। यीशु एक कुकर्मी नहीं था। यह पिलातुस की व्यंग्यात्मक टिप्पणी थी जिसने यहूदियों के "बाल की खाल निकालने वाले" धार्मिक आरोपों में लिप्त होने से इनकार कर दिया।

यह क्रिया "सौंपते" वही है जिसका सामान्य रूप से अनुवाद "विश्वासघात" किया जाता है जब इसका प्रयोग यहूदा के लिए किया जाता है (तुलना यूहन्ना 6:64,71; 12:4; 13:2,11,21; 18:2,5)। अक्षरशः शब्द का अर्थ है "किसी को एक अधिकारी को सौंपना" या "एक परंपरा को आगे जारी रखना।" यहूदा के संबंध में, यह शब्द अंग्रेजी अनुवादकों के बीच अर्थ में तीव्र हो गया है।

18:31 "हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें" यहूदी नेतृत्व ने ईशनिंदा के लिए यीशु की निंदा की थी, लेकिन उन्होंने रोमियों द्वारा प्राण दण्ड देने के लिए विद्रोह के आरोप का प्रयोग किया। यहूदी अगुवों के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण था कि यीशु को व्यवस्थाविवरण 21:23 (यानी, क्रूस पर चढ़ाया जाना पहली शताब्दी के रब्बियों के द्वारा परमेश्वर द्वारा शापित होने के रूप में समझा जाता था) के कारण क्रूस पर चढ़ाया जाए। यीशु ने यूहन्ना 18:32; 3:14; 8:28; 12:32,33; और गलातियों 3:13 में यह भविष्यवाणी की थी।

18:32 "यह संकेत देते हुए कही थी कि उसकी मृत्यु कैसी होगी" यहूदी अगुवे क्यों चाहते थे कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए? प्रेरितों के काम 7 से यह स्पष्ट है कि वे लोगों को ईशनिंदा के लिए तत्काल पत्थरवाह करके मार देते थे। संभवतः यह व्यवस्थाविवरण 21:22-23 के पुराने नियम के ईश्वरीय अभिशाप से संबंधित है। मूलतः यह मृत्यु के बाद सार्वजनिक रूप से बेधने को संदर्भित करता है, लेकिन समकालीन रब्बियों ने रोमियों के क्रूस पर चढ़ाये जाने के प्रकाश में इस पद की व्याख्या की। वे यीशु, इस मसीहाई दावेदार, को परमेश्वर द्वारा शापित करवाना चाहते थे। पतित मानवता के छुटकारे के लिए यह परमेश्वर की योजना थी। यीशु, परमेश्वर के मेमने (यानी, 1:29) ने बदले में खुद को दे दिया (तुलना यशायाह 53; 2 कुरिन्थियों 5:21)। यीशु हमारे लिए "शाप" बन गया (तुलना गलातियों 3:13)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:33-38a
33इसलिये पिलातुस ने फिर से प्रीटोरियुम में प्रवेश किया, और यीशु को बुलाकर और उससे कहा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?" 34यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या दूसरों ने मेरे विषय में तुझ से यह कहा है?" 35पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तेरी ही जाति और मुख्य याजकों ने तुझे मेरे हाथों में सौंपा है? तू ने क्या किया है?" 36यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता, परन्तु मेरा राज्य इस यहाँ का नहीं ।" 37पिलातुस ने उससे कहा, "तो क्या तू राजा है?" यीशु ने उत्तर दिया, "तू ठीक कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं ने इसलिये जन्म लिया और इसलिए इस संसार में आया हूँ सत्य की गवाही दूँ। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।" 38पिलातुस ने उससे कहा, "सत्य क्या है?"

18:33 "प्रीटोरियुम" यूहन्ना 18:28 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"क्या तू यहूदियों का राजा है"** यीशु पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया था (तुलना मत्ती 27:19: 15:2; लूका 23:2 और यूहन्ना 19:3,12,15,19-22)।

18:34 "यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या दूसरों ने मेरे विषय में तुझ से यह कहा है'" यदि पिलातुस एक राजनीतिक शासन के संदर्भ में प्रश्न पूछ रहा होता, तो यीशु इससे इन्कार करता। यदि यहूदियों ने ये सुझाव दिया था, तो यह उसके मसीहा होने को संदर्भित करता है और यीशु ने इसकी पुष्टि की होगी। पिलातुस स्पष्ट रूप से यहूदी धार्मिक विचार की पेचीदगियों पर चर्चा करने के लिए तैयार नहीं था (तुलना यूहन्ना 18:35)

18:35 पहला प्रश्न "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है। पिलातुस यहूदी धर्म के प्रति अपनी अवमानना व्यक्त कर रहा है।

18:36 "यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते" यह दूसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। इसका अनुवाद किया जाना चाहिए "यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, और यह नहीं है, तो मेरे सेवक लड़ते, जो वे नहीं लड़ रहे हैं।" वाक्यांश "मेरे सेवक" संदर्भित कर सकता है (1) चेलों को या (2) स्वर्गदूतों को (तुलना मत्ती 26:53)।

18:37 "पिलातुस ने उससे कहा, 'तो क्या तू राजा है?'" यह सांसारिक शक्ति के प्रतीक (यानी, रोम) के होंठों पर चरम विडंबना थी, यीशु और उसके आत्मिक साम्राज्य का सामना करना। यह प्रश्न "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है।

▣ **"तू ठीक कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं ने इसलिये जन्म लिया और इसलिये संसार में आया हूँ"** पहला वाक्यांश उसकी अस्पष्टता के कारण अनुवाद करना मुश्किल है। यह योग्यता के साथ एक प्रतिज्ञान है (तुलना मत्ती 27:11; मरकुस 15:2; लूका 23:3)। यीशु जानता था कि वह कौन था (दो पूर्ण कालिक क्रियाएँ), और वह क्यों आया (तुलना यूहन्ना 13:1,3; मरकुस 10:45; लूका 2:49; मत्ती 16:22ff)। पिलातुस को समझ नहीं आया होगा!

▣ **"मैं ने इसलिये जन्म लिया"** यीशु पिता को प्रकट करने के अपने कार्य का उल्लेख कर रहा है (अर्थात, "सत्य की गवाही देने के लिए")। मूलतः यीशु के आने के तीन कारण हैं।

1. परमेश्वर के चरित्र और उद्देश्य को पूरी तरह से प्रकट करने के लिए (तुलना यूहन्ना 1:18; 3:32)
2. संसार के पाप को दूर करने के लिए परमेश्वर के निर्दोष मेमने के रूप में मरना (तुलना यूहन्ना 1:29))
3. विश्वासियों को जीने और परमेश्वर को खुश करने का एक उदाहरण देना

▣ **"जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है"** मैं हमेशा "हर कोई," "जो कोई," "जो भी," "जितने भी" से गहराई से प्रेरित होता हूँ! वाह! YHWH मसीह में उत्पत्ति 3:15 को पूरा कर रहा है। यीशु पतन में क्षतिग्रस्त परमेश्वर की छवि को पुनर्स्थापित करता है। अंतरंग, व्यक्तिगत संगति फिर से संभव है! संगति को अब बहाल किया गया है (साधित युगांत-विषयक ज्ञान)।

केवल आत्मिक आँखों और कानों वाले (अर्थात, यूहन्ना 10:3,16,27; 18:37) सत्य को समझ सकते हैं (तुलना मत्ती 11:15; 13:9,16,43; मरकुस 4:9,23; लूका 8:8; 10:23,24; 14:35; प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17,29; 3: 6,13,22)। यीशु सच्चाई है (यूहन्ना 14:6)! जब वह बोलता है उसके अनुयायी सुनते हैं (तुलना यूहन्ना 10:1-5)। यूहन्ना में सत्य को "देखना" या "सुनना", धर्मशास्त्रीय रूप से "अनन्त जीवन" प्राप्त करने के समतुल्य है।

18:38 "पिलातुस ने उससे कहा, 'सत्य क्या है'" पिलातुस ने यह सवाल पूछा, लेकिन जाहिर तौर पर जवाब मिलने से पहले ही वह चला गया। पिलातुस खुद को आश्वस्त करना चाहता था कि यीशु रोमी सरकार के लिए कोई खतरा नहीं था। उसने ऐसा किया। फिर उसने यीशु को रिहा करने की कोशिश की क्योंकि फसह के समय के दौरान उस दिन के यहूदियों का रिवाज था (तुलना यूहन्ना 18:39; मत्ती 27:15)। यूहन्ना, जैसा कि लूका ने किया था, यह दिखाने के लिए लिख रहा है कि मसीहत रोमी साम्राज्य के लिए कोई खतरा नहीं था। (यानी, यूहन्ना 18:38b; 19:4; लूका 23:4,14,22)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 18:38b-40
38b और जब यह कह चुका तो वह फिर से यहूदियों के पास बाहर गया और उनसे कहा, "मैं उस में कोई दोष नहीं पाता। 39 परन्तु तुम्हारी रीति है कि फसह के दिन मैं तुम्हारे लिए एक व्यक्ति को छोड़ दूँ: क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" 40 तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, "इस मनुष्य को नहीं, परन्तु बरअब्बा को छोड़ दे।" और बरअब्बा एक डाकू था।

18:39 "तुम्हारी रीति है" यह मत्ती 27:15 और लूका 23:17 में समझाया गया है। (लेकिन नये नियम के बाहर ऐतिहासिक प्रलेखन से अज्ञात है)।

18:40 "तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा, 'इस मनुष्य को नहीं, परन्तु बरअब्बा को छोड़ दे'" यह विडंबना है कि बरअब्बा जाहिर तौर पर जेलोतेस पक्ष का सदस्य था और इसलिए, उसी आरोप का दोषी था जिसके लिए यीशु की निंदा की गई थी (तुलना मरकुस 15:7; लूका 23:19,25)। यह भीड़ स्पष्ट रूप से अपने स्थानीय लोक-नायक का समर्थन करने के लिए वहाँ इंतजार कर रही थी। यहूदी अधिकारियों ने यीशु को मृत्युदंड निश्चित करने के लिए यह अवसर ले लिया (तुलना मरकुस 15:11)।

यह भी विडंबना है कि "बरअब्बा" नाम का अर्थ है "एक पिता का पुत्र।" यूहन्ना शब्दों पर इन क्रीड़ाओं का प्रयोग अपने पूरे सुसमाचार में करता है। भीड़ "पिता के पुत्र" के बजाय "पिता का पुत्र" चाहती थी। अंधेरा पूरी तरह से घिर आया है!

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यीशु ऐसी जगह क्यों गया जहाँ उसे पता था कि यहूदा उसे ढूँढ लेगा?
2. यूहन्ना ने गतसमनी में यीशु की व्यथा को क्यों छोड़ दिया?
3. यीशु को महासभा पिलातुस के पास क्यों ले गई?
4. यूहन्ना और सिनॉप्टिक्स के बीच घटनाओं का क्रम इतना भ्रामक क्यों है?
5. यूहन्ना ने पिलातुस को यीशु को रिहा करने का प्रयास करते हुए क्यों चित्रित किया?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 19

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु को मृत्यु-दण्ड की आज्ञा	सिपाहियों द्वारा यीशु का उपहास		यीशु को मृत्यु-दण्ड की आज्ञा	पिलातुस के समक्ष यीशु
(18:38b-19:16a)		(18:38b-19:7)	(18:38b-19:16)	(18:28-19:11)
18:38b-19:7		18:38b-19:7		18:33-19:3
			18:40-19:3	
	19:1-4			
	पिलातुस का निर्णय		19:4-5	19:4-7
	19:5-16			
			19:6a	
			19:6b	
			19:7	
19:8-12		19:8-12	19:8-9a	19:8-11
			19:9b-10	
			19:11	
			19:12	यीशु को मृत्युदण्ड
				19:12-16a
19:13-16a		19:13-16a	19:13-14	
			19:15a	
			19:15b	
			19:15c	
			19:16a	
यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना	क्रूस पर राजा		यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया	क्रूस पर चढ़ाया जाना
19:16b-22		19:16b-25a	19:16b-21	19:16b-22
	19:17-24			
			19:22	यीशु के कपड़े बाँटे गए
19:23-27			19:23-24	19:23-24
	देख तेरी माता			यीशु और उसकी माता

	19:25-27	19:25b-27	19:25-26	19:25-27
			19:27	
यीशु की मृत्यु	पूरा हुआ		यीशु की मृत्यु	यीशु की मृत्यु
19:28-30	19:28-30	19:28-30	19:28	19:28
			19:29-30a	19:29-30
			19:30b	
यीशु का पंजर बेधा जाना	यीशु का पंजर बेधा गया		यीशु का पंजर बेधा गया	बेधा हुआ पंजर
19:31-37	19:31-37	19:31-37	19:31-37	19:31-37
यीशु का गाड़ा जाना	यीशु यूसुफ की कब्र में गाड़ा गया		यीशु का गाड़ा जाना	गाड़ा जाना
19:38-42	19:38-42	19:38-42	19:38-42	19:38-42

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:1-7
1तब पिलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए। 2और सिपाहियों ने काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर
रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया, 3और वे उसके पास आ-आकर कहने लगे, "हे यहूदियों का राजा, प्रणाम!"
और उसे थप्पड़ मारने लगे। 4और पिलातुस ने फिर बाहर निकलकर उन से कहा, "देखो, मैं उसे बाहर तुम्हारे
पास ला रहा हूँ जिस से कि तुम जान लो कि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।" 5तब यीशु काँटों का मुकुट और
बैंजनी वस्त्र पहिने बाहर आया और पिलातुस ने उनसे कहा, "देखो, यह मनुष्य!" 6जब मुख्ययाजकों और
सिपाहियों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर बोले, "क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!" पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम ही उसे ले
जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।" 7यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हमारी भी
व्यवस्था है, और उस व्यवस्था के अनुसार इसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिए, क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर
का पुत्र ठहराया।"

19:1 "पिलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए" समय का क्रम और कोड़ों की गिनती अनिश्चित है। क्रूस पर चढ़ाये जाने की सज़ा पानेवाले सभी कैदियों को कोड़े लगाए जाते थे। यह एक ऐसा क्रूर अनुभव था कि कई लोग इससे मर जाते थे।

हालाँकि, संदर्भ में, पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए ताकि उसके छोड़ दिए जाने के लिए सहानुभूति प्राप्त कर सके (तुलना लूका 23:16,22; यूहन्ना 19:12)। यह यशायाह 53:5 की एक भविष्यवाणी की पूर्ति हो सकती है।

रोमी कोड़ों की मार गैर-रोमियों के लिए आरक्षित एक बहुत दर्दनाक, क्रूर सजा थी।एक चमड़े की पट्टियों का कोड़ा जिसके सिरे पर हड्डी या धातु के टुकड़े बँधे होते थे, एक नीची खूंटी से बँधे हुए हाथों के साथ झुके हुए व्यक्ति को मारने के लिए प्रयोग किया जाता था। वारों की सँख्या तय नहीं थी। यह नियमित रूप से क्रूस पर चढ़ाने से पहले किया जाता था (तुलना Livy XXXIII:36)।

रोमवासियों के हाथों मारे जाने का वर्णन करने के लिए सुसमाचार विभिन्न शब्दों का प्रयोग करते हैं।

1. मत्ती 27:26; मरकुस 15:15 - *phragelloō*, चाबुक या कोड़ा मरना
2. लूका 23:16,22 - *paideuō*, मूलतः बाल अनुशासन के लिए (तुलना इब्रानियों 12:6-7,10), लेकिन यहाँ, 2 कुरिन्थियों 6:9 में ताड़ना के लिए
3. यूहन्ना 19:1 - *mastigoō*, मूलतः कोड़े का नाम, मत्ती 10:17; 20:19; 23:34; प्रेरितों के काम 22:24-25; इब्रानियों 11:36

वे सभी पर्यायवाची हो सकते हैं या वे दो प्रकार की ताड़ना को व्यक्त कर सकते हैं।

a. पिलातुस द्वारा थोड़ी ताड़ना
b. क्रूस पर चढ़ाने से पहले कोड़े मरना

19:2 "और सिपाहियों ने काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा" यह यातना का एक तरीका था जिसके माध्यम से कांटों को यीशु के माथे में दबाया गया। हालाँकि, यह बहुत संभव है कि यह ताड़ के पत्तों से बने एक उज्ज्वल मुकुट का प्रतीक है, जो एक राजा के रूप में यीशु का मजाक उड़ाने का एक और तरीका था (तुलना मत्ती 27:27-31; मरकुस 15:15-20)।

यूनानी शब्द "मुकुट" (*stephanos*) का प्रयोग खेलकूद की विजयमाला या सम्राट द्वारा पहनी जाने वाली लॉरेल पुष्पमाला के लिए किया जाता था।

▣ **"उसे बैंजनी वस्त्र पहनाया"** बैंजनी (*porphyros*) शाही गौरव का संकेत था, रंजक बहुत महंगा था, क्योंकि यह घोंघे के शंख से बनाया जाता था। लाल रोमी अधिकारियों के बागे का रंग था (मरकुस 15:17,20)। बलूत के पेड़ों पर पाए जाने वाले एक कीड़े के शल्क से लाल डाई बनाई जाती थी। यह बागा एक शाही बैंजनी राजसी बागे के लिए एक भ्रम था, लेकिन वास्तव में यह शायद एक फीके लाल रंग का रोमी अधिकारी का चोगा था (तुलना मत्ती 27:28)।

19:3

NASB	**"और वे उसके पास आए और बोले"**
NKJV	**"फिर उन्होंने कहा"**
NRSV	**"वे उसके पास आ-आकर कहने लगे"**
TEV	**"और उसके पास आए और कहा"**
NJB	**"वे उसके पास आने और कहने लगे"**

ये अपूर्ण काल हैं। जाहिर तौर पर सैनिकों ने एक के बाद एक यह किया। यह मजाक विशेष रूप से यीशु की तुलना में यहूदियों का अधिक अपमान था। संभवतः पिलातुस चाहता था कि यह यीशु के लिए सहानुभूति पैदा करे, लेकिन इसने काम नहीं किया।

यूहन्ना के लेखन में फिर से भविष्यवाणी के कथन अक्सर विरोधियों के मुँह में डाल दिए जाते हैं। इन सैनिकों ने जितना महसूस किया उससे अधिक कहा।

▣ **"और उसे थप्पड़ मारने लगे"** इस शब्द का मूल अर्थ "छड़ से पिटाई" है, लेकिन इसका प्रयोग बस "खुले हाथ से थप्पड़ मारने" के लिए किया जाने लगा। यह एक क्रूरता से चेहरे पर मारने से अधिक शाही अभिवादन का एक मज़ाकिया हावभाव हो सकता है।

19:4

NASB	**"मैं उसमें कोई गुनाह नहीं पाता"**
NKJV	**"मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता"**

NRSV "मैं उसके खिलाफ कोई मामला नहीं पाता"
TEV "मैं उसे अपराधी ठहराने का कोई कारण नहीं पाता"
NJB "मैं उसके खिलाफ कोई मामला नहीं पाता"

यूहन्ना का एक उद्देश्य यह दिखाना था कि मसीहत रोमी सरकार या उसके अधिकारियों के लिए एक खतरा नहीं थी। यूहन्ना दर्ज़ करता है कि पि।लातुस ने यीशु को कई बार रिहा करने की कोशिश की (तुलना यूहन्ना 18:38; 19:6; लूका 23:4,14,22)।

19:5
NASB, NKJV "देखो, यह मनुष्य!"
TEV, NET "देखो! यहाँ है यह मनुष्य!"
NRSV, NJB,
REB "यहाँ है यह मनुष्य!"

इस वाक्यांश को समझने के कई तरीके हुए हैं।

1. यीशु को नकली राजा के रूप में कपड़े पहनाए गए
2. सहानुभूति का आह्वान करने के लिए यीशु को मारा गया
3. जकर्याह 6:12 के लिए एक भ्रम (मसीहाई प्रसंगार्थ "शाख")
4. यीशु की मानवता की एक बाद की पुष्टि (यानी, यूहन्ना के दिन के ज्ञानवाद के विरोध में)
5. अरामी "मनुष्य का पुत्र," *bar nashā* से संबंधित (एक और गुप्त रखा गया मसीहाई प्रसंगार्थ))

19:6 "वे चिल्लाकर बोले, 'क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!'" यहूदी अगुवे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के इस कारण इच्छुक थे ताकि व्यवस्थाविवरण 21:23 का शाप प्रभावी हो जाए। यह एक कारण है कि पौलुस को शायद नासरत के यीशु के परमेश्वर के मसीहा होने के बारे में इतनी बड़ी शंका थी। हालाँकि, हम गलातियों 3:13 से सीखते हैं कि यीशु ने हमारे शाप को क्रूस पर उठा लिया (तुलना कुलुस्सियों 2:14)।

▣ **"मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता"** पिलातुस यह तीन बार कहता है (तुलना यूहन्ना 18:38; 19:4)।

19:7 "इसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिए, क्योंकि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र ठहराया" यीशु ने परमेश्वर के साथ एक होने, उसका पुत्र होने का दावा किया था। यहूदियों, जिन्होंने उसके कथनों को सुना और उनके अभिप्राय को समझा, उन्हें कोई संदेह नहीं था कि वह दिव्य होने का दावा कर रहा था (तुलना यूहन्ना 5:18; 8:53-59; 10:33)। यीशु के खिलाफ असली यहूदी आरोप ईशनिन्दा था (तुलना मत्ती 9:3; 26:65; मरकुस 2:7; 14:64; लूका 5:21; यूहन्ना 10:33,36)। ईशनिंदा का आरोप पत्थरवाह द्वारा दंडनीय था (तुलना लैव्यव्यवस्था 24:16)। यदि यीशु अवतरित, पूर्व- विद्यमान देवता नहीं है, उसे पत्थरवाह किया जाना चाहिए!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:8-12
[8]जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया, [9]तब उसने फिर से राजभवन के भीतर जाकर यीशु से कहा, "तू कहाँ का है?" परन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर न दिया। [10]तब पिलातुस ने उस से कहा, "क्या तू मुझ से नहीं बोलेगा? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने और क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?" [11]यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता तो तेरा मुझ पर कोई अधिकार न होता, इसलिये जिसने मुझे तेरे हाथ सौंपा है उसका पाप अधिक है।" [12]इसके फलस्वरूप पिलातुस ने उसे छोड़ देने का प्रयत्न किया, पर यहूदियों ने चिल्ला-चिल्लाकर कहा, "यदि इस मनुष्य को छोड़ दे, तो तू कैसर का राज-भक्त नहीं। जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है।"

19:8 "जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया" पिलातुस की पत्नी ने उसे पहले ही यीशु के बारे में चेतावनी दी थी (तुलना मत्ती 27:19), और अब यहूदी अगुवे दावा कर रहे थे कि उसने दावा किया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है। पिलातुस, अंधविश्वासी होने के कारण डर गया। मानव रूप में मानवता से भेंट करने के लिए यूनानी और रोमी देवालयों के देवताओं के लिए यह काफी सामान्य था।

19:9
NASB, NKJV,
NRSV "तू कहाँ का है"
TEV, NJB,
NIV "तू कहाँ से आया है"

पिलातुस यीशु के गृहनगर के बारे में नहीं, लेकिन उसका मूल पूछ रहा है। पिलातुस उसके सामने खड़े व्यक्ति के महत्त्व को महसूस करने लगा है। यीशु ने यूहन्ना 18:38 में उसकी टिप्पणियों से जान लिया कि पिलातुस को सत्य में नहीं, बल्कि राजनीतिक लाभ में रुचि थी, इसलिए उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

पिलातुस कई ऐसे लोगों में सम्मिलित हो जाता है जो यीशु पर अचंभा करते हैं लेकिन उसकी उत्पत्ति को नहीं समझते हैं (तुलना यूहन्ना 4:12; 6:42; 7:27-28,41-42; 8:14; 9:29-30)। यह यूहन्ना के ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का हिस्सा है। यीशु ऊपर का है और नीचे का कोई भी पिता के स्पर्श के बिना जान/समझ/देख/सुन नहीं सकता है (यानी, 6:44,65; 10:29)।

▣ **"यीशु ने उसे कोई उत्तर न दिया"** पिलातुस ने यीशु के उत्तर को याद किया होगा (तुलना यूहन्ना 18:37)! कुछ इसे यशायाह 53:7 की भविष्यवाणी की पूर्णता के रूप में देखते हैं। ।

19:10 "और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है" पिलातुस दावा करता है कि उसके पास जीवन और मृत्यु के राजनीतिक अधिकार हैं, फिर भी एक अनियंत्रित भीड़ की इच्छा के सामने उसने अपने इस अधिकार को त्याग दिया। पिलातुस का प्रश्न व्याकरणिक रूप से "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है।

19:11 "यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता तो तेरा मुझ पर कोई अधिकार न होता" यह द्वितीय श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसे "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। पिलातुस द्वारा यीशु को धमकाया नहीं गया था। वह जानता था कि वह कौन था और वह क्यों आया था! बाइबल दावा करती है कि सारी मानव सत्ता के पीछे परमेश्वर है (तुलना रोमियों 13:1-7)।

▣ **"जिसने मुझे तेरे हाथ सौंपा है उसका पाप अधिक है"** पहली बार में पढ़ने से यह यहूदा इस्करियोती का उल्लेख प्रतीत होता है (तुलना यूहन्ना 6:64,71; 13:11) लेकिन अधिकांश व्याख्याकारों का मानना है कि यह काइफा को संदर्भित करता है, जिसने आधिकारिक रूप से यीशु को रोमियों को सौंप दिया था। इस वाक्यांश को सम्मिलित रूप से समझा जा सकता है कि यह उल्लेख कर रही है (1) गैर- कानूनी यहूदी अगुवों या (2) सारे के सारे यहूदी लोगों का (तुलना मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19; रोमियों 9-11)।

19:12 "पिलातुस ने उसे छोड़ देने का प्रयत्न किया" यह एक अपूर्ण काल है, जिसका अर्थ है कि पिछले समय में दोहराया गया कार्य। उसने कई बार कोशिश की थी।

▣ **"यदि इस मनुष्य को छोड़ दे, तो तू कैसर का राज-भक्त नहीं"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। यहूदी अगुवे पिलातुस को रोम में उसके वरिष्ठ अधिकारियों को शिकायत करने की धमकी दे रहे थे यदि वह उनकी इच्छानुसार नही करता और यीशु को मृत्यु-दण्ड नहीं देता। "कैसर का राज-भक्त" वाक्यांश रोमी सम्राट (औगुस्तुस या वेस्पासियन के साथ शुरू करके) द्वारा प्रदान की जानेवाली एक सम्मानजनक उपाधि को दर्शानेवाला एक मुहावरा था।

कैसर रोमी सम्राट के लिए एक उपाधि था। यह जूलियस कैसर से आया था और इसे औगुस्तुस ने अपनाया था।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:13-16
[13]पिलातुस ये बातें सुनकर यीशु को बाहर ले आया, और न्याय- आसन पर बैठ गया अर्थात, उस स्थान पर जो चबूतरा कहलाता था और इब्रानी में, गब्बता। [14]यह फसह की तैयारी का दिन था, छठे घंटे के लगभग था। तब उसने यहूदियों से कहा, "देखो, तुम्हारा राजा!" [15]इस पर वे चिल्लाकर बोले, "ले जा, ले जा, इसे क्रूस पर चढ़ा!" पिलातुस ने उनसे कहा, "क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ?" महायाजकों ने उत्तर दिया, "कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं।" [16]तब उसने क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए उसे उनके हाथ सौंप दिया।

19:13 "पिलातुस ये बातें सुनकर यीशु को बाहर ले आया, और न्याय-आसन पर बैठ गया" पाठ इस बारे में अस्पष्ट है कि कौन न्याय-आसन पर बैठता है। Williams और Goodspeed दोनों अनुवाद दावा करते हैं कि वह स्वयं यीशु था, जिसे

मजाक के तौर पर यहूदियों के राजा के रूप में वहाँ बिठाया गया था। हालाँकि, संदर्भ का अर्थ है पिलातुस, जो न्याय करने वाला था।

NASB, NKJV,
NJB "जो चबूतरा कहलाता था और इब्रानी में, गब्बता"
NRSV "जो पत्थर का चबूतरा कहलाता था या इब्रानी में, गब्बता"
TEV "जो पत्थर का चबूतरा कहलाता था (इब्रानी में नाम 'गब्बता' है)"

उनकी परिभाषाओं के साथ इब्रानी/अरामी शब्दों का प्रयोग यह दर्शाता है कि यूहन्ना के सुसमाचार के लिए उसके लक्षित दर्शक अन्यजाति थे (तुलना यूहन्ना 19:17)। यह पत्थर का चबूतरा रोमी कानूनी घोषणाओं का स्थल था। अरामी शब्द *Gabbatha* का अर्थ है "उभरे हुए पत्थर" या "ऊँचा स्थान।"

19:14 "यह फसह की तैयारी का दिन था" सिनॉप्टिक सुसमाचारों की तिथि- निर्धारण और यूहन्ना की तिथि- निर्धारण के बीच एक स्पष्ट विसंगति है। सिनॉप्टिक्स में, यीशु ने अपने गिरफ्तारी से पहले चेलों के साथ फसह का भोज किया (तुलना मरकुस 15:42), लेकिन यूहन्ना में भोज पर्व से पहले तैयारी के दिन हुआ। यूहन्ना 18:28 पर पूर्ण टिप्पणी देखें।

▣ **"यह छठे घंटे लगभग था"** पिलातुस के सामने यीशु के मुकदमों और उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने का कालक्रम है:

	मत्ती	मरकुस	लूका	यूहन्ना
पिलातुस का फैसला				6 वाँ घंटा 19:14
क्रूस पर चढ़ाया जाना		3 रा घंटा 15:25		
अन्धकार छाना	6 वें-9 वें घंटे 27:45	6 वें-9 वें घंटे 15:33	6 वें-9 वें घंटे 23:44	
यीशु चिल्लाया	9 वाँ घंटा 27:46	9 वाँ घंटा 15:34		

जब इन समय के पदनामों की तुलना की जाती है, तो दो व्याख्यात्मक विकल्प उत्पन्न होते हैं।

1. वे समान हैं। यूहन्ना ने 12:00 पूर्वाह्न से गिनते हुए रोमी समय का प्रयोग किया, (तुलना Gleason L. Archer, *Encyclopedia of Bible Difficulties*, p. 364), और सिनॉप्टिक्स 6:00 पूर्वाह्न से गिनते हुए यहूदी समय का प्रयोग करते हैं।
2. यूहन्ना यीशु के क्रूस पर चढ़ाने का समय एक बाद का समय बता रहा है जो कि सिनॉप्टिक्स और यूहन्ना के बीच मतभेदों का एक और उदाहरण होगा

यूहन्ना 1:39 और 4:6 से ऐसा प्रतीत होता है कि वह यहूदी समय का प्रयोग कर रहा है न कि रोमी समय का। (तुलना M. R. Vincent, *Word Studies,* Vol. 1, p. 403)।

समय पदनाम सभी सुसमाचारों में प्रतीकात्मक हो सकते हैं क्योंकि वे संबंधित हैं

1. मंदिर में दैनिक अर्पणों के समय से (सुबह 9 बजे और संध्या 3 बजे तुलना प्रेरितों के काम 2:15; 3:1)
2. दोपहर के ठीक बाद निसान 14 की दोपहर को फसह के मेम्ने को वध करने का पारंपरिक समय था

बाइबल, एक प्राचीन पूर्वी पुस्तक होने के नाते, कालक्रम पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है, जैसा कि आधुनिक पश्चिमी ऐतिहासिक विवरण करते हैं।

▣ **"देखो, तुम्हारा राजा"** जिस प्रकार पद 5 जकर्याह 6:12 के लिए एक भ्रम हो सकता है, यह वाक्यांश जकर्याह 9:9 के लिए एक भ्रम हो सकता है। (F. F. Bruce, *Answers to Questions,* p. 72 देखें)।

19:14 पहला वाक्य एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है।

19:15 "ले जा, ले जा, इसे क्रूस पर चढ़ा!" इस वाक्यांश में तीन अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक हैं। मूल शब्द "क्रूस पर चढ़ाना" का अर्थ "ऊँचा उठाना" या "प्रशंसा करना"; यह यूहन्ना के द्विअर्थियों में से एक हो सकता है (तुलना यूहन्ना 3:14; 8:28; 12:32)।

▣ **"महायाजकों ने उत्तर दिया, 'कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं'"** विडंबना आश्चर्यजनक है। ये यहूदी नेता ईश निंदा के दोषी थे, वही आरोप जो उन्होंने यीशु पर लगाया था। पुराने नियम में केवल परमेश्वर ही उसकी प्रजा का राजा है (तुलना 1 शमूएल 8)।

19:16 "उनके" मत्ती 27:26-27 और मरकुस 15:15-16 में सर्वनाम रोमी सैनिकों को संदर्भित करता है। यूहन्ना में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पिलातुस ने यीशु को यहूदी अगुवों और भीड़ की इच्छा पर सौंप दिया।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:17-22
[17]इसलिए वे यीशु को ले गए, और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और जिसे इब्रानी में 'गुलगुता' कहते हैं। [18]वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ दो और मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इस ओर तथा दूसरे को उस ओर, और बीच में यीशु को। [19]और पिलातुस ने एक दोष-पत्र लिख कर क्रूस पर लगा दिया, जिस पर यह लिखा हुआ था, "यीशु नासरी, यहूदियों. का राजा।"
[20]इसलिए इस दोष-पत्र को बहुत-से यहूदियों ने पढ़ा, क्योंकि जिस स्थान पर यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह शहर के पास था, और यह इब्रानी, लतीनी और यूनानी में लिखा था। [21]इसलिये यहूदियों के मुख्य याजक पिलातुस से कहने लगे, "'यहूदियों का राजा' मत लिख, परन्तु यह कि उसने कहा, 'मैं यहूदियों का राजा हूँ।'" [22]पिलातुस ने उत्तर दिया, "जो मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

19:17 "अपना क्रूस उठाए हुए" पहली शताब्दी के पलस्तीन के क्रूस का आकार अनिश्चित है; यह एक बड़े अक्षर का T, एक छोटे अक्षर का t या X रहा होगा। कभी-कभी एक ही मचान पर कई कैदियों को क्रूस पर चढ़ाया जाता था। आकृति जो भी हो, दोषी कैदी की जिसे अभी-अभी कोड़े मारे गए, उसे लकड़ी के उपकरण का हिस्सा क्रूस पर चढ़ाने के स्थान तक ले जाना पड़ता था (तुलना मत्ती 27:32; मरकुस 15:21; लूका 14:27; 23:26)।

▣ **"जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और जिसे इब्रानी में 'गुलगुता' कहते हैं"** इस वाक्यांश का सटीक अर्थ अनिश्चित है। इब्रानी/अरामी शब्द का अर्थ एक ऐसी पहाड़ी से नहीं था जो कि एक पूरी खोपड़ी जैसी दिखती थी, बल्कि यरुशलेम के एक राजमार्ग पर स्थित एक नीची बंजर पहाड़ी से था। रोमी विद्रोह के लिए एक निवारक के रूप में क्रूस पर चढ़ाते थे। आधुनिक पुरातत्व विज्ञान प्राचीन शहरपनाह के सटीक स्थान के विषय में अनिश्चित है। यीशु को शहरपनाह के बाहर एक प्रसिद्ध फाँसी का दण्ड दिए जानेवाले सार्वजनिक स्थान पर मारा गया था!

19:18 "वहाँ उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया" कोई भी सुसमाचार रोमियों द्वारा क्रूस पर चढ़ाये जाने के भौतिक विवरणों को नहीं बताता है। रोम के लोगों ने इसे तर्शीशवासियों से सीखा, जिन्होंने इसे फारसियों से सीखा था। यहाँ तक कि क्रूस का सटीक आकार भी अनिश्चित है। हालाँकि, हम जानते हैं कि यह एक क्रूर, विलंब से होनेवाली मृत्यु थी! कई दिनों तक एक व्यक्ति को जीवित रखने और दर्द में रहने के लिए इसे विकसित किया गया था। सामान्य रूप से श्वासावरोध से मृत्यु होती थी। इसका उद्देश्य रोम के खिलाफ विद्रोह को हतोत्साहित करना था।।

▣ **"दो और मनुष्यों को"** इसने मत्ती 27:38; मरकुस 15:27; और लूका 23:33 में दर्ज यशायाह 53:9 की भविष्यवाणी को पूर्ण किया।

19:19 "पिलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर" पिलातुस ने इस शीर्षक (*titlon*) को हाथ से लिखा होगा, जिसे किसी और ने लकड़ी के तख्त पर लिख दिया। मत्ती इसे "दोष-पत्र" (*aitian*, तुलना मत्ती 27:37) कहता है, जबकि मरकुस और लूका ने इसे शिलालेख कहा है (*epigraphē*, तुलना मरकुस 15:26; लूका 23:38)।

19:20 "और यह इब्रानी, लातीनी और यूनानी में लिखा था" "इब्रानी" का अर्थ है अरामी (तुलना यूहन्ना 5:2; 19:13,17; 20:16; जोसेफस, *Antiq* 2.13.1)। क्रूस पर यीशु के सिर के ऊपर लगाए गए दोष के सटीक शब्द के लिए सुसमाचारों में विविधता की ओर ध्यान देना दिलचस्प है।

1. मत्ती 27:37 - "यह यहूदियों का राजा यीशु है"
2. मरकुस 15:26 - "यहूदियों का राजा"
3. लूका 23:38 - "यह यहूदियों का राजा है"
4. यूहन्ना 19:19 - "यीशु नासरी, यहूदियों का राजा"

हर एक अलग है, लेकिन मूल रूप से एक ही है। यह सुसमाचारों में अधिकतर ऐतिहासिक विवरणों की विविधता के बारे में सच है। प्रत्येक लेखक ने अपने संस्मरणों को थोड़े अलग तरीके से दर्ज किया, लेकिन वे फिर भी एक ही प्रत्यक्षदर्शी गवाह हैं।

पिलातुस उसी शीर्षक को यीशु के क्रूस पर लगाकर यहूदी अगुवों को चिढ़ाना चाहता था, जिससे वे डरते थे। (यूहन्ना 19:21-22)।

19:22 "जो मैंने लिख दिया सो लिख दिया" ये दो पूर्ण कालिक क्रियाएँ हैं जो लिखे गए के पूरा और अंतिम होने पर जोर देती हैं।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:23-25a
[23]जब सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया, तो उन्होंने उसके ऊपरी वस्त्रों को उतारा और उसके चार भाग किए, प्रत्येक सैनिक के लिए एक भाग, और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था [24]इसलिये उन्होंने एक दूसरे से कहा, "हम इसको न फाड़े, परन्तु इसके लिए चिट्ठी डालें कि यह किसका होगा," जिस से कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, "उन्होंने मेरे ऊपरी वस्त्र आपस में बाँट लिए, और मेरे कपड़े पर चिट्ठी डाली।" [25]अतः सैनिकों ने ऐसा ही किया।

19:23 "चार भाग किए, प्रत्येक सैनिक के लिए एक भाग" सैनिकों ने यीशु के कपड़ों के लिए जुआ खेला। यह केवल उसके ऊपरी वस्त्रों को दर्शाता है। यह अनिश्चित है कि यीशु के कपड़ों को चार तरीकों से कैसे विभाजित किया जा सकता है। यह उसके जूते, प्रार्थना की शाल (*tallith*), कमरबन्ध और ऊपरी वस्त्र(त्रों) को संदर्भित करता होगा। यह अनिश्चित है कि यीशु ने पगड़ी पहनी थी या नहीं। यहूदी पूर्ण नग्नता से नाराज हो गए होंगे। यह यूहन्ना 19:24 (तुलना भजनसंहिता 22:18) में उद्धृत एक अन्य परिपूर्ण भविष्यवाणी है।

▣ **"कुरता"** यीशु के ऊपरी वस्त्र को बहुवचन शब्द *himatia* द्वारा संदर्भित किया गया है। उसका लंबा अंदरूनी वस्त्र, जो त्वचा पर पहना जाता था, वह कुरता (*chitōn*) था। इनके बीच का अंतर मत्ती 5:40 और लूका 6:29 में देखा जा सकता है। दोरकास कपड़ों की इन दोनों वस्तुओं को बनाती थी (तुलना प्रेरितों के काम 9:39)। पहली शताब्दी के यहूदी स्पष्ट रूप से एक अतिरिक्त जांघिया पहनते थे जो लंगोटी कहलाता था। यीशु को पूरी तरह से नग्न नहीं किया गया था।

यूहन्ना 19:23 का अंतिम वाक्यांश यीशु के साथ रहने वाले की एक और संपादकीय टिप्पणी है।

▣ **"परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था"** इसका कोई धार्मिक महत्त्व हो सकता है। इस तरह एक कुरता असामान्य था और महंगा रहा होगा। ऐसे असामान्य रूप से महंगे कपड़े का यीशु के पास होना चरित्र के अनुकूल नहीं लगता। जोसेफस (*Antiq.* 3.7.4) से, हम जानते हैं कि महायाजक इस तरह का वस्त्र पहनता था, जैसा कि रब्बियों की परंपरा ने दावा किया है कि मूसा पहनता था। क्या यह यीशु के लिए निम्न रूप में एक संदर्भ हो सकता है

1. महायाजक (तुलना इब्रानियों)
2. नई व्यवस्था देनेवाला

दोहरे अर्थ यूहन्ना के सुसमाचार में हमेशा संभव होते हैं, लेकिन व्याख्याकारों को सावधान रहना चाहिए कि सारे विवरणों का रूपक के रूप में वर्णन न करें!

19:24 "पवित्र शास्त्र की बात पूरी हुई" भजनसंहिता 22 क्रूस पर चढ़ाए जाने की पुराने नियम की पृष्ठभूमि है।

1. भजनसंहिता 22:1-2 - मत्ती 27:46; मरकुस 15:34
2. भजनसंहिता 22:7-8 - मत्ती 27:39,43; मरकुस 15:29; लूका 23:35
3. भजनसंहिता 22:15 - मत्ती 27:48; मरकुस 15:36; लूका 23:36; यूहन्ना 19:28,29

4. भजनसंहिता 22:16 - मत्ती 27:35; मरकुस 15:24; यूहन्ना 20:25
5. भजनसंहिता 22:18 - मत्ती 27:35; मरकुस 15:24; लूका 23:34; यूहन्ना 19:24
6. भजनसंहिता 22:27-28 - मत्ती 27:54; मरकुस 15:39; लूका 23:47; (यूहन्ना 20:31; मत्ती 28:18-20; लूका 24:46-47; प्रेरितों के काम 1:8)

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:25b-27
25b परन्तु यीशु के क्रूस के पास उसकी माता, और माता की बहिन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। 26 तो जब यीशु ने अपनी माता, और उस चेले को जिस से वह प्रेम करता था पास खड़े हुए देखा तो अपनी माता से कहा, "हे नारी! देख, तेरा पुत्र!" 27 तब उसने चेले से कहा, "देख, तेरी माता!" और उस समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया।

19:25 "परन्तु यीशु के क्रूस के पास उसकी माता, और माता की बहिन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं" इस बारे में बहुत चर्चा है कि यहाँ चार नाम हैं या तीन नाम हैं। यह संभावना है कि चार नाम हैं क्योंकि मरियम नाम की दो बहनें नहीं होंगी। मरियम की बहिन, सलोमी, का नाम मरकुस 15:40 और 16:1 में है। अगर यह सच है, तो इसका अर्थ होगा कि याकूब, यूहन्ना और यीशु चचेरे भाई थे। एक दूसरी शताब्दी की परंपरा (*Hegesippus*) कहती है कि क्लोपास यूसुफ का भाई था। मरियम मगदलीनी उनमें से एक थी, जिसमें से यीशु ने सात दुष्टात्माओं को निकाला था, और उनमें से पहली जिसके सामने यीशु अपने पुनरुत्थान के बाद सबसे पहले प्रकट हुआ (तुलना यूहन्ना 20:1-2, 11-18; मरकुस 16:1; लूका 24:1-10)।

विशेष विषय: यीशु के पीछे-पीछे चलने वाली स्त्रियाँ (SPECIAL TOPIC: THE WOMEN WHO FOLLOWED JESUS)

A. यीशु की उन स्त्री अनुयायियों, जिन्होंने उसकी और प्रेरितों की मण्डली मदद की, का पहला उल्लेख लूका 8:1-3 है।
   1. मरियम, जो मगदलीनी कहलाती थी (लूका 8:2)
      a. मत्ती 27:56,61; 28:1
      b. मरकुस 15:40,47; 16:1,9
      c. लूका 8:2; 24:10
      d. यूहन्ना 19:25; 20:1,11,16,18
   2. योअन्ना, खुज़ा की पत्नी (हेरोदेस का भण्डारी, लूका 8:3) भी लूका 24:10 में सूचीबद्ध है
   3. सूसन्नाह (लूका 8:3)
   4. "और बहुत सी अन्य स्त्रियाँ जो अपनी संपत्ति से उसकी सेवा करती थीं" (लूका 8:3)
B. स्त्रियों के एक समूह का क्रूस पर चढ़ाये जाने के समय उपस्थित होने का उल्लेख किया गया है
   1. मत्ती की सूची
      a. मरियम मगदलीनी (मत्ती 27:56)
      b. याकूब और योसेस की माता मरियम (मत्ती 27:56)
      c. जब्दी के बेटों की माँ (मत्ती 27:56)
   2. मरकुस की सूची
      a. मरियम मगदलीनी (मरकुस 15:40)
      b. याकूब और योसेस की माता मरियम (मरकुस 15:40)
      c. सलोमी (मरकुस 15:40)
   3. केवल लूका कहता है, "जो स्त्रियाँ गलील से उसके साथ आई थीं" (23:49)
   4. यूहन्ना की सूची
      a. मरियम, यीशु की माता (यूहन्ना 19:25)
      b. उसकी माता की बहिन (यूहन्ना 19:25)
      c. क्लोपास की मरियम (KJ, क्लियोफास, इसका मतलब हो सकता है क्लोपास की पत्नी या क्लोपास की पुत्री, यूहन्ना 19:25)
      d. मरियम मगदलीनी (यूहन्ना 19:25)
C. यीशु के दफ़नाने के स्थान को देखते हुए स्त्रियों के एक समूह का उल्लेख किया गया है

1. मत्ती की सूची
    a. मरियम मगदलीनी (मत्ती 27:61)
    b. दूसरी मरियम (मत्ती 27:61)
2. मरकुस की सूची
    a. मरियम मगदलीनी (मरकुस 15:47)
    b. मरियम योसेस की माता (मरकुस 15:47)
3. केवल लूका कहता है, "उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं" (लूका 23:55)
4. यूहन्ना के पास कब्र देखने वाली स्त्रियों का कोई लिखित प्रमाण नहीं है

D. स्त्रियों का एक समूह रविवार तड़के कब्र पर आया
1. मत्ती की सूची
    a. मरियम मगदलीनी (28:1)
    b. दूसरी मरियम (28:1)
2. मरकुस की सूची
    a. मरियम मगदलीनी (16:1)
    b. याकूब की माता मरियम (16:1)
    c. सलोमी (16:1)
3. लूका की सूची
    a. "वे कब्र पर आईं" (24:1-5,24)
        (1) मरियम मगदलीनी (24:10)
        (2) योअन्ना (24:10)
        (3) याकूब की माता मरियम (24:10)
4. यूहन्ना केवल मरियम मगदलीनी (20:1,11) को सूचीबद्ध करता है

E. स्त्रियों का अटारी में उपस्थित होने का उल्लेख किया गया है (प्रेरितों के काम 1:14)
1. "स्त्रियों" (प्रेरितों के काम 1:14)
2. यीशु की माता मरियम (प्रेरितों के काम 1:14)

F. इन सूचियों में विभिन्न स्त्रियों के बीच का सटीक संबंध अनिश्चित है।स्पष्ट रूप से मरियम मगदलीनी की भूमिका प्रबल है। यीशु के जीवन और सेवकाई में " स्त्रियों" के बारे में एक अच्छा लेख IVP द्वारा प्रकाशित *Dictionary of Jesus and the Gospels*, pp. 880-886 में पाया जाता है।

19:26 "उस चेले को जिससे वह प्रेम करता था" चूंकि सुसमाचार में यूहन्ना का उल्लेख नाम से नहीं है, कई लोग मानते हैं कि यह उसकी पहचान कराने का अपना तरीका था (तुलना यूहन्ना 13:23; 19:26; 21:7,20)। इनमें से प्रत्येक में वह *agapaō* शब्द का प्रयोग करता है, लेकिन यूहन्ना 20:2 में वह उसी वाक्यांश का प्रयोग करता है, लेकिन *phileō* के साथ। ये शब्द यूहन्ना में पर्यायवाची हैं; तुलना करें 3:35, *agapaō* और 5:20, *phileō*, जहाँ वे दोनों पुत्र के लिए पिता के प्रेम का उल्लेख करते हैं।

19:27 "उस समय से वह चेला उसे अपने घर ले गया" इसका अर्थ यह नहीं है कि यूहन्ना तुरंत मरियम को अपने घर ले गया, हालाँकि इस तथ्य से यह अर्थ निकाला जा सकता है कि वह मत्ती 27:56 और मरकुस 15:40 में अन्य स्त्रियों के साथ सूचीबद्ध नहीं है। परंपरा कहती है कि यूहन्ना ने मरियम की मृत्यु तक उसकी देखभाल की और फिर वह एशिया माइनर (विशेषतः इफिसुस) चला गया जहाँ उसने एक लंबी और सफल सेवकाई की। यह इफिसुस के प्राचीनों का आग्रह था कि यूहन्ना ने एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में, यीशु के जीवन की अपनी यादों को लिखा (यानी, यूहन्ना रचित सुसमाचार)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:28-30

[28]इसके पश्चात यीशु ने यह जानकर कि सब कुछ पूरा हो चुका, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, कहा, "मैं प्यासा हूँ।" [29]वहाँ सिरके से भरा एक बर्तन रखा था; अतः उन्होंने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफे की टहनी पर रखा और उसके मुँह से लगाया। [30]जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, "पूरा हुआ!" और उसने सिर झुकाकर प्राण त्याग दिया।

19:28 "यीशु यह जानकर कि सब कुछ पूरा हो चुका, इसलिए कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, कहा, 'मैं प्यासा हूँ'" यह वाक्यरचना अस्पष्ट है कि क्या उल्लेख किया पवित्रशास्त्र वाक्यांश "मैं प्यासा हूँ" को संदर्भित करता है या "सब पूरा हो चुका" को। यदि इसे पारंपरिक तरीके से लिया जाता है, तो "मैं प्यासा हूँ" भजनसंहिता 69:21 का एक संदर्भ है।

19:29 "वहाँ सिरके से भरा एक बर्तन रखा था" यह एक सस्ता दाखरस था, एक खट्टा दाखरस था। यह सैनिकों और क्रूस पर चढ़ने वाले दोनों के लिए होता होगा। क्रूस पर चढ़ाये जाने की प्रक्रिया को देर तक चलाने के लिए उन्हें थोड़ी मात्रा में तरल पदार्थ दिया जाता था।

▣ **"खट्टा दाखरस"** यह अक्षरशः "सिरका" है। यह गरीब लोगों का पेय था। ध्यान दें कि यीशु ने नशीला दाखरस नहीं लिया जो कि यरूशलेम की स्त्रियों ने उसे पेश किया था (तुलना मरकुस 15:23; मत्ती 27:34)। संभवतः इस पेय को स्वीकार करने का कारण भजनसंहिता 22:15 को पूरा करना था। उसका गला कुछ भी कह पाने के लिए बहुत सूख चुका था और न उसके पास कहने के लिए कोई और बात थी।

▣ **"जूफे की टहनी पर"** कुछ लोग इसे एक विशेष पौधे के प्रतीकात्मक प्रयोग के रूप में देखते हैं जिसका प्रयोग फसह सेवा (तुलना निर्गमन 12:22) में किया जाता था। अन्य लोगों का मानना है कि इस शब्द का प्राचीन शास्त्रियों द्वारा अपभृष्ट प्रयोग हुआ है और जिसका मूल अर्थ था "बरछी," "भाला," या "छड़ी" (तुलना NEB लेकिन REB पुनः जूफे का प्रयोग करता है)। मत्ती 27:48 और मरकुस 15:36 में "सरकण्डा" है।

बहुत से लोग यहाँ एक शास्त्रीय बदलाव को देखते हैं, क्योंकि जूफे के पौधे में बहुत लंबा तना नहीं होता (केवल 2 से 4 फुट), लेकिन यह याद रखना चाहिए कि क्रूस जमीन से इतने अधिक ऊपर नहीं उठाये जाते थे। एक ऊँचे क्रूस की हमारी पारंपरिक तस्वीरें यूहन्ना 3:14 के विषय में हमारी गलतफहमी हो सकती हैं। यीशु के पैर जमीन से एक-दो फुट ऊपर ही रहे होंगे।

19:30 "पूरा हुआ!" यह एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है। सिनॉप्टिक सुसमाचारों से हमें पता चला कि वह ऊँचे स्वर से चिल्लाया (तुलना मरकुस 15:48; लूका 23:46; मत्ती 27:50)। यह उद्धार के पूर्ण हुए कार्य को संदर्भित करता है। मिस्र के पपीरस (Moulton and Milligan) में शब्द (*telos*) का यह रूप "पूरा दाम चुकाना" के लिए एक व्यापारिक मुहावरा था।

▣ **"उसने अपना सिर झुकाकर प्राण त्याग दिया"** वाक्यांश "सिर झुकाकर" "सोने जा रहा था" का मुहावरेदार प्रयोग था। यीशु की मृत्यु उसके लिए एक शांत क्षण था। निष्कर्ष यह है कि मृत्यु में व्यक्ति का आत्मिक पहलू शारीरिक से अलग हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मृत्यु और पुनरुत्थान दिवस के बीच विश्वासियों के लिए एक भंगित स्थिति की मांग करता है (तुलना 2 कुरिन्थियों 5; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18, William Hendriksen, *The Bible On the Life Hereafter* देखें)।

मरकुस 15:37 और लूका 23:46 में सुसमाचार समानंतरों में "उसने अपनी अंतिम साँस ली।" "आत्मा" और "साँस" के लिए समान इब्रानी शब्द हैं। उसकी अंतिम सांस को उसकी आत्मा के शरीर को छोड़ने के रूप में देखा गया (तुलना उत्पत्ति 2:7)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:31-37

31इसलिए कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टांगें तोड़ दी जाएं और
उन्हें उतार दिया जाए जिस से कि सब्त के दिन (क्योंकि वह सब्त का एक विशेष दिन था) उनके शव क्रूस पर न
रहें। 32इसलिए सैनिकों ने आकर पहले की, और फिर दूसरे की भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, टांगें
तोड़ी, 33परन्तु जब उन्होंने यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें नहीं तोड़ीं। 34परन्तु
सैनिकों में से एक ने एक भाले से उसका पंजर बेधा, और तुरंत उसमें से लहू और पानी बह निकला। 35जिसने यह
देखा, उसने साक्षी दी है, और उसकी साक्षी सच्ची है, वह स्वयं जानता है कि वह सच कहता है, जिस से कि तुम
भी विश्वास करो। 36ये बातें इसलिए हुईं कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो, "उसकी एक भी हड्डी तोड़ी न
जाएगी।" 37फिर पवित्रशास्त्र के एक अन्य भाग में लिखा है, "जिसे उन्होंने बेधा है, वे उस पर दृष्टि करेंगे।"

19:31 "कि सब्त के दिन उनके शव क्रूस पर न रहें" यहूदी रस्मों के तौर पर शवों के द्वारा भूमि के होने बारे में बहुत चिंतित थे (तुलना व्यवस्थाविवरण 21:23), विशेष रूप से फसह के विशेष पवित्र सब्त के दिन।

▣ **"(क्योंकि वह सब्त का एक विशेष दिन था)"** इसकी दो तरह से व्याख्या की गई है।

1. फसह का भोज और सब्त का दिन इस विशेष वर्ष में संयोग हुआ (यहूदी एक चंद्र कैलेंडर का प्रयोग करते थे)

2. अखमीरी रोटी के पर्व का इस वर्ष सब्त के साथ संयोग हुआ।

फसह और अखमीरी रोटी का पर्व (तुलना निर्गमन 12) एक आठ-दिन का पर्व बन गए थे।

▣ **"कि उनकी टांगें तोड़ दी जाएं और उन्हें उतार दिया जाए"** जाहिर तौर पर यह स्थिति पहले भी हुई थी। क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्तियों की टांगें तोड़ने के लिए एक बड़े लकड़ी के हथौड़े का प्रयोग किया जाता था। क्रूस पर चढ़ाए जाने पर सामान्य रूप से श्वासावरोध से मृत्यु हो जाती थी। टांगों को तोड़ने से यह लगभग तुरंत हो जाता था क्योंकि व्यक्ति साँस लेने के लिए अपने टांगों पर जोर नहीं दे सकता था।

19:33 "उन्होंने देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टांगें नहीं तोड़ीं" यह भी निर्गमन 12:46; गिनती 9:12 और भजनसंहिता 34:20; 19:34 की भविष्यवाणी की पूर्ति हो सकती है।

19:34 "सैनिकों में से एक ने एक भाले से उसका पंजर बेधा, और तुरंत उसमें से लहू और पानी बह निकला" यह एक प्रत्यक्षदर्शी चिकित्सा संबंधी विवरण है जो दिखाता है कि वह वास्तव में मर चुका था और इस तरह यीशु मसीह की सच्ची मानवता का दावा करता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार, साथ ही साथ 1 यूहन्ना, एक बढ़ते ज्ञानवाद के दिनों में लिखे गए थे जिसने यीशु के देवत्व की पुष्टि की लेकिन उसकी मानवता को नकार दिया।

19:35 यह पद यूहन्ना की एक टिप्पणी है, जो इनका एक प्रत्यक्षदर्शी गवाह था (1) रात के मुकदमे; (2) रोमी मुकदमे; और (3) क्रूस पर चढ़ाना। यीशु की मृत्यु पर यह टिप्पणी 20:30-31 के समानांतर है, जो सुसमाचार के धर्मप्रचार के उद्देश्य को दर्शाती है (तुलना यूहन्ना 21:24)। विशेष विषय: यीशु के गवाह यूहन्ना 1:8 पर देखें।

अंतिम खंड के क्रिया में एक यूनानी पांडुलिपि संस्करण है। कुछ ग्रंथों में वर्तमान काल है और कुछ अनिर्दिष्टकाल है। यदि यह मूलरूप से अनिर्दिष्टकाल था, तो यह अविश्वासियों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जैसा कि 20:30-31 करता है। हालाँकि, यदि यह वर्तमान है तो यह जारी रहने और विकसित होनेवाले विश्वास पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। यूहन्ना रचित सुसमाचार दोनों समूहों की ओर निर्देशित किया गया लगता है।

▣ **"सच्ची. . .सच"** यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर विशेष विषय देखें।

19:36 यह निर्गमन 12:46; गिनती 9:12; या भजनसंहिता 34:20 से फसह के मेमने के लिए एक भ्रम हो सकता है। यह निर्भर करता है कि वाक्यांश में किस को संदर्भित किया जा रहा है: (1) बेधा या (2) तोड़ी। यीशु ने स्वयं उन 40 दिनों के दौरान जब वह पुनरुत्थान के बाद पृथ्वी पर रहा इस पवित्रशास्त्र को प्रारम्भिक कलीसिया को दिखाया था (लूका 24:27; प्रेरितों के काम 1:2-3)। प्रारम्भिक कलीसिया में किया गया प्रचार (प्रेरितों के काम में) इन पुराने नियम की पूर्ण हुई भविष्यवाणियों को दर्शाता है जो यीशु ने उन्हें दिखाईं थीं ।

19:37 यह जकर्याह 12:10 का एक उद्धरण है जो महान वादों में से एक है कि

1. इस्राएल विश्वास में एक दिन यीशु, मसीहा, की ओर फिर जाएगा (तुलना प्रकाशितवाक्य 1:7)
2. कई यहूदी जो पहले से ही विश्वास कर चुके थे, यीशु की मृत्यु पर शोक करते हुए वहाँ थे
3. यह रोमी सैनिकों को संदर्भित करता है (तुलना मत्ती 27:54) जो अन्यजातियों के राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे (तुलना यूहन्ना 12:32)

यह दिलचस्प है कि यह उद्धरण स्पष्ट रूप से मैसोरिटिक इब्रानी पाठ से है, न कि सेप्टुआजिंट से जो सामान्य रूप से है सुसमाचार लेखकों द्वारा उद्धृत किया जाता है। सेप्टुआजिंट में "ठट्ठा किया", है लेकिन मैसोरिटिक पाठ में "बेधा गया" है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 19:38-42

[38]इन बातों के पश्चात अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यहूदियों के डर से गुप्त रूप से यीशु का चेला था, पिलातुस से विनती की कि उसे यीशु के शव को ले जाने की अनुमति मिले और पिलातुस ने अनुमति दे दी। तब वह आकर यीशु के शव को ले गया। [39]और नीकुदेमुस भी, जो पहले यीशु के पास रात्रि में आया था लगभग चालीस किलो मिला हुआ गन्धरस और एलवा लेकर आया। [40]तब उन्होने यीशु के शव को लिया और यहूदियों के दफनाने की रीति के अनुसार उसे सुगंधित द्रव्यों के साथ कफन में लपेटा। [41]उस स्थान पर जहाँ उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था एक बाग था, और उस बाग में एक नई कब्र थी जिस में अभी तक कोई भी न रखा गया था। [42]अत: यहूदियों के तैयारी के दिन के कारण, और इसलिए कि वह कब्र समीप ही थी, उन्होंने यीशु को उस में रख दिया।

19:38-39 "यूसुफ. . .नीकुदेमुस" ये दो धनी, महासभा के प्रभावशाली सदस्य यीशु के गुप्त चेले थे जो इस महत्त्वपूर्ण और संकटपूर्ण समय में लोगों के सामने आए।

19:39 "लगभग चालीस किलो मिला हुआ गन्धरस और एलवा लेकर," यह पहली सदी के यहूदी लोगों का दफ़न-क्रिया का पारंपरिक सुगन्धित द्रव्य था। मात्रा कुछ हद तक असाधारण है; कई लोग इसे यीशु को एक राजा के रूप में दफन किए जाने के प्रतीक के रूप में देखते हैं (तुलना 2 इतिहास 16:14)। यूहन्ना 11:2 पर अभिषेक पर विशेष विषय देखें।

"मिला हुआ" (*migma*) के लिए यूनानी शब्द, जो MSS P^{66}, $\aleph^2$, A, D, L, और अधिकांश कलीसिया पिता और संस्करणों में पाया जाता है, आश्चर्यजनक रूप से MSS $\aleph^*$, B, W, और कुछ कॉप्टिक संस्करणों में "पैकेज" (*eligma*) में बदल गया है। UBS^4 "मिला हुआ" को "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है।

विशेष विषय: दफ़न-क्रिया के सुगन्ध द्रव्य (SPECIAL TOPIC: BURIAL SPICES)

A. गन्धरस, अरब के पेड़ों से एक सुगंधित गोंद (BDB 600, KB 629; UBS, *Fauna and Flora of the Bible*, pp. 147-148 देखें)।
   1. इस मसाले का पुराने नियम में बारह बार उल्लेख किया गया है, ज्ञान साहित्य में ज्यादातर एक इत्र के रूप में (तुलना भजनसंहिता 45: 8; श्रेष्ठगीत 1:13; 4:14; 5:1,5)
   2. यह मजूसियों द्वारा बालक यीशु को दी गई भेंटों में से एक था (तुलना मत्ती 2:11)
   3. इसका प्रतीकवाद आश्चर्यजनक है
      a. "पवित्र अभिषेक तेल" में प्रयोग किया जाता है (निर्गमन 30:23-25)
      b. एक राजा के लिए उपहार के रूप में प्रयोग किया जाता है (मत्ती 2:11)
      c. यीशु को दफनाने पर उसके अभिषेक के लिए प्रयोग किया गया (तुलना यूहन्ना 19:39 और प्रतीकात्मक रूप से यूहन्ना 11:2 में)। यह तल्मूड (यानी, बेरखोथ 53 a) में वर्णित यहूदी रिवाजों के अनुसार था।
      d. यरूशलेम की स्त्रियों द्वारा उन पुरुषों को, जो कोड़ों की मार खाते हुए क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिए ले जाये जाते थे, (तुलना मरकुस 15:23) दर्द को कम करने के लिए दिया जाने वाला पेय

B. अगर, एक सुगंधित प्रकार की लकड़ी (BDB 14 III, KB 19)
   1. सुगंधित इत्र से संबंधित (तुलना गिनती 24: 6; भजनसंहिता 45: 8; नीतिवचन 7:17; श्रेष्ठगीत 4:14; UBS, *Fauna and Flora of the Bible*, pp. 90-91 देखें)।
   2. यह मिस्रियों द्वारा, गन्धरस के साथ मिलाकर, संलेपन प्रक्रिया के हिस्से के रूप में प्रयोग किया गया था।
   3. नीकुदेमुस यीशु के दफन क्रिया के समय अधिक मात्रा में लाया और उससे उसका अभिषेक किया (तुलना यूहन्ना 19:39)। यह तल्मूड (अर्थात, बेतसाह 6a) में वर्णित यहूदी रीति-रिवाजों के अनुसार था। विशेष विषय: दफ़नाने की परम्पराएँ देखें

19:40 "तब उन्होंने यीशु के शव को लिया और उसे सुगन्धित द्रव्यों के साथ कफ़न में लपेटा" सुगन्धित द्रव्य दो उद्देश्यों के लिए थे: (1) गंध को समाप्त करने के लिए और (2) कफ़न को लपटे रहने के लिए।

19:41 "उस स्थान पर जहाँ उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था एक बाग था" यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उस जल्दबाजी को समझें जिसके साथ यूसुफ और नीकुदेमुस ने काम किया। अपराह्न 3:00 बजे यीशु की मृत्यु हो गई थी और शाम 6:00 बजे तक कब्र में रखना था, जो कि यहूदी फसह के सब्त की शुरुआत थी।

▣ **"एक नई कब्र थी जिसमें अभी तक कोई भी न रखा गया था"** यह एक वर्णनात्मक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है। हमें मत्ती 27:60 से पता चलता है कि यह यूसुफ की अपनी कब्र थी। यह मत्ती 27:57 में उद्धृत यशायाह 53:9 की एक पूर्ति है।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. क्यों सैनिकों ने यीशु को कोड़े मारे और उसका ठट्ठा उड़ाया?
2. यीशु को रिहा करने के लिए पिलातुस के बार-बार किए गए प्रयास का क्या महत्त्व है?
3. पद 15 में यहूदी याजक का कथन इतना चौंकाने वाला क्यों है?
4. क्रूस पर चढ़ाये जाने के विवरण एक सुसमाचार से दूसरे सुसमाचार में भिन्न क्यों हैं?
5. व्यवस्थाविवरण 21:23 यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने से कैसे संबंधित है?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 20

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यीशु का पुनरुत्थान	खाली कब्र	पुनरुत्थान	खाली कब्र	खाली कब्र
20:1-10	20:1-10	20:1-10	20:1-10	20:1-2
				20:3-10
मरियम मगदलीनी को यीशु का दर्शन	मरियम मगदलीनी उठे हुए प्रभु को देखती है		यीशु मरियम मगदलीनी को दर्शन देता है	मरियम मगदलीनी को दर्शन
20:11-18	20:11-18	20:11-18	20:11-13a	20:11-18
			20:13b	
			20:14-15a	
			20:15b	
			20:16a	
			20:16b	
			20:17	
			20:18	
चेलों को यीशु का दर्शन	प्रेरितों को आदेश दिया गया		यीशु अपने चेलों को दर्शन देता है	चेलों को दर्शन
20:19-23	20:19-23	20:19-23	20:19-23	20:19-23
यीशु और थोमा	देखना और विश्वास करना		यीशु और थोमा	
20:24-29	20:24-29	20:24-29	20:24-25a	20:24-29
			20:25b	
			20:26-27	
			20:28	
			20:29	
पुस्तक का उद्देश्य	कि तुम विश्वास करो		पुस्तक का उद्देश्य	प्रथम निष्कर्ष
20:30-31	20:30-31	20:30-31	20:30-31	20:30-31

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 1-29 पर प्रासंगिक अंतर्दृष्टि

A. हर वो वादा जो यीशु ने अध्याय 14-17 में प्रेरितों से किया था, वह पहले पुनरुत्थान रविवार की संध्या को पूरा हुआ। यूहन्ना 16:20 पर टिप्पणी देखें।

B. पुनरुत्थान से सम्बंधित सविस्तार वर्णन में सुसमाचार के विवरणों में भिन्नता है क्योंकि
   1. वे प्रत्यक्षदर्शी विवरण हैं
   2. वर्षों बीत चुके हैं
   3. प्रत्येक ने एक चयनित लक्ष्य समूह के लिए लिखा और भिन्न-भिन्न बातों पर जोर दिया (तुलना मत्ती 28; मरकुस 16; लूका 24)

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 20:1-10
[1]सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी, बड़े सवेरे जब कि अभी अंधेरा ही था कब्र पर आई, तो उसने पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा। [2]अतः वह दौड़कर शमौन पतरस और दूसरे चेले के पास जिससे यीशु प्रेम रखता था, गई और उनसे कहने लगी, "वे प्रभु को क़ब्र में से उठा ले गए हैं और हमें नहीं मालूम कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।" [3]तब पतरस और दूसरा चेला निकल कर क़ब्र की ओर चल पड़े। [4]वे दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे, परन्तु वह दूसरा चेला पतरस से तेज़ दौड़कर क़ब्र पर पहले पहुँचा [5]उसने झुक कर भीतर झाँका और कफ़न को अलग पड़ा देखा, पर वह अंदर न गया। [6]तब शमौन पतरस भी उसके पीछे पीछे वहाँ आ पहुँचा और क़ब्र के भीतर जाकर उसने कपड़ों को पड़े देखा, [7]और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ नहीं वरन अलग एक जगह लिपटा हुआ पड़ा देखा। [8]तब दूसरे चेले ने भी, जो क़ब्र पर पहले पहुँच गया था, भीतर जाकर देखा और देखकर विश्वास किया। [9]अभी तक वे पवित्रशास्त्र की वह बात न समझे थे, कि मृतकों में से उसका जी उठना अवश्य है। [10]तब ये चेले अपने घरों को लौट गए।

20:1 "सप्ताह के पहले दिन" यह रविवार था, फसह सप्ताह के विशेष सब्त के बाद का पहला कार्य दिवस, जब मंदिर में प्रथम फल अर्पण किए जाते थे। यीशु मृतकों का प्रथम फल था (तुलना 1 कुरिन्थियों 15:23)।लगातार रविवार की तीन रातों में यीशु के दर्शन विश्वासियों के लिए रविवार को आराधना करने का कारण बन गए(तुलना यूहन्ना 20:19,26; लूका 24:36ff; प्रेरितों के काम 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2)।

▣ **"मरियम मगदलीनी"** यह यीशु और प्रेरितों के साथ आने वाली कई स्त्रियों में से एक थी। गलील में यीशु ने उसे कई दुष्टात्माओं से छुड़ाया था (तुलना मरकुस 16:9 और लूका 8:2)। वह क्रूस पर चढ़ाये जाने के समय पर मौजूद थी। यूहन्ना 19:25 पर टिप्पणी देखें।

हालाँकि यूहन्ना रचित सुसमाचार मरियम के आने के उद्देश्य को नहीं बताता है, मरकुस 16:1 और लूका 23:56 इस बात का उल्लेख करते हैं कि कई स्त्रियाँ (तुलना यूहन्ना 20:2) सुगन्धित मसालों के साथ यीशु के शव का अभिषेक करने के लिए जल्दी आई थीं। जाहिर तौर पर वे यूसुफ और नीकुदेमुस के अभिषेक के बारे में नहीं जानती थीं या उन्हें लगा कि उसे पूरा करने की जरूरत है।

▣ **"जब कि अभी अंधेरा ही था"** जाहिर तौर पर वह और अन्य लोग घर छोड़ चुके थे जब कि अभी अंधेरा ही था, लेकिन

जब तक वे पहुँचे, भोर हो चुकी थी (तुलना मत्ती 28:1; मरकुस 16:2)।

▣ **"पत्थर को कब्र से हटा हुआ"** अक्षरशः यह अपने खांचे से "बाहर निकाला गया" है (पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत) (तुलना मत्ती 28:2)। याद रखें पत्थर को प्रत्यक्षदर्शियों को कब्र में जाने के लिए हटाया गया था, न कि यीशु को बाहर निकालने के लिए। उसके नये पुनरुत्थान शरीर में उसके पार्थिव शरीर की भौतिक सीमाएँ नहीं थीं (अर्थात, 20:19,26)

20:2 "अतः वह दौड़कर" जाहिर तौर पर वह यीशु के वहाँ न होने के बारे में चेलों को बताने के लिए खाली क़ब्र जल्दी छोड़कर चली गई (तुलना मत्ती 28:5)।

▣ **"दूसरा चेला जिससे यीशु प्रेम रखता था"** प्रेम के लिए यूनानी शब्द *phileō* है जिसका लक्ष्यार्थ है "भाई का प्रेम।" हालाँकि बोलचाल की यूनानी भाषा (300 ई.पू.-300 ई.) में इसे *agapaō* के पर्यायवाची के रूप में प्रयोग किया जा रहा था। जिस चेले का उल्लेख किया गया है वह यूहन्ना, सुसमाचार का लेखक प्रतीत होता है (तुलना यूहन्ना 20:4-8 और 13:23)। यहाँ वह पतरस के साथ जुड़ा हुआ है।

▣ **"वे प्रभु को उठा ले गए हैं"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (यानी पूर्ण कार्य)। यीशु जा चुका था। मरियम के दिमाग में, "वे" यहूदी अगुवों को संदर्भित करता है। जाहिर तौर पर, अटारी में उपस्थित प्रेरित और चेले पुनरुत्थान से आश्चर्यचकित हो गए थे!

▣ **"हमें"** इसमें मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम, सलोमी, योअन्ना और अन्य स्त्रियाँ शामिल हैं (तुलना 28:1) मरकुस 16:1; लूका 24:10) ।

20:4 "दूसरा चेला पतरस से तेज़ दौड़कर क़ब्र पर पहले पहुँचा" यूहन्ना संभवतः प्रेरितों में से सबसे कम उम्र का था (अर्थात, परंपरा) ।

20:5 "झुक कर" इस अवधि की क़ब्रों में प्रवेश द्वार नीचा होता था लगभग 3 से 4 फुट ऊँचा। किसी को गुफा/ डोंगी में प्रवेश करने के लिए नीचे झुकना पड़ता था (तुलना यूहन्ना 20:11)

▣ **"भीतर झाँका"** यह अक्षरशः "तिरछी नज़र से देखना" है। इसकी वजह भोर के प्रकाश और अंधेरी क़ब्र के बीच की विषमता।

▣ **"कफ़न को अलग पड़ा"** पट्टियाँ कहाँ और कैसे पड़ी हुई थीं यूनानी पाठ में निर्दिष्ट नहीं हैं। यदि शव को चुरा लिया गया था, तो पट्टियाँ भी ले ली जातीं क्योंकि सुगन्धित मसाले एक गोंद की तरह काम करते थे!

20:6 "शमौन पतरस" शमौन (*Cephas*) उसका इब्रानी (अरामी) नाम था, जबकि पतरस (*Petros*) यीशु के द्वारा उसे दिया हुआ यूनानी नाम था। यूनानी में इसका अर्थ था "एक अलग किया हुआ पत्थर या चट्टान" (तुलनामत्ती 16:18)। *Petros* और *Petra* के बीच कोई भेद नहीं है।

20:7 "अंगोछा" चेहरे को एक अलग कपड़े से लपेटा गया था (तुलना यूहन्ना 11:44)। यह संभव है कि इस रुमाल का प्रयोग किया गया था (1) चेहरे पर डालने के लिए (2) चेहरे को लपेटने के लिए (तुलना NJB); या (3) जबड़े को हल्के से जगह में बाँधने के लिए (तुलना TEV)।

▣ **"वरन अलग एक जगह लिपटा हुआ पड़ा"** यह एक और पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है जिसका तात्पर्य है कि किसी व्यक्ति द्वारा इसे तह करने के लिए विशेष ध्यान रखा गया था। जाहिर तौर पर यह वह बात है जिसने यूहन्ना का ध्यान आकर्षित किया और विश्वास प्रकट किया (यूहन्ना 20:8)

20:8 "उसने देखा और विश्वास किया" यूहन्ना ने भौतिक प्रमाण देखे और विश्वास किया कि यीशु जीवित था! पुनरुत्थान में विश्वास एक महत्त्वपूर्ण धर्मशास्त्रीय मुद्दा बन जाता है ।

1. रोमियों 10:9-13
2. 1 कुरिन्थियों 15

1 कुरिन्थियों 15:12-19 परिणामों का एक अच्छा सारांश है यदि यीशु को नहीं उठाया गया है! पुनरुत्थान प्रारंभिक प्रेरितीय

उपदेशों का एक केंद्रीय सत्य बन गया जिसे प्रेरितों के काम में *kerygma* कहा जाता है। यूहन्ना 5:39 विशेष विषय देखें।

20:9 "वे पवित्रशास्त्र की वह बात न समझे थे" यह लेखक की एक अन्य संपादकीय टिप्पणी है। यह भजनसंहिता 16:10 को संदर्भित करता होगा, जिसे पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन पर प्रेरितों के काम 2:27 में उद्धृत किया। हालाँकि, यह यशायाह 53:10-12 या होशे 6:2 का उल्लेख भी हो सकता है। महासभा ने यीशु के पुनरुत्थान के बारे में भविष्यवाणी को समझ लिया (तुलनामत्ती 27:62-66), जबकि चेलों ने नहीं। कैसी विडंबना है!

हो सकता है कि इस पद ने इस सत्य को सुदृढ़ करने के लिए धर्मशास्त्रीय रूप से कार्य किया हो कि आत्मा अभी तक चेलों पर भरपूरी से नहीं आया था। आत्मा, एक बार दिए जाने पर, विश्वासियों को यीशु के वचनों और कार्यों को समझने में मदद करेगा (तुलना यूहन्ना 2:22; 14:26)।

20:10 इसका अर्थ हो सकता है (1) वे गलील वापस लौट गए (तुलना मत्ती 26:32; 28:7,10,16; यूहन्ना 21 में वे गलील की झील में मछली पकड़ते हुए पाए जाते हैं) या (2) वे यरूशलेम में अपने निवासस्थानों को चले गए। क्योंकि पुनरुत्थान के बाद के अनुभव अटारी में हुए थे, #2 अधिक संभावित है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 20:11-18
[11]परन्तु मरियम रोती हुई क़ब्र के बाहर खड़ी रही और रोते हुए उसने क़ब्र में झाँका [12]जहाँ यीशु का शव रखा हुआ था वहाँ उसने दो स्वर्गदूतों को उज्वल वस्त्र पहिने हुए, एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा। [13]और उन्होंने उस से कहा, "हे नारी, तू क्यों रो रही है?" उसने उस से कहा, "इसलिए कि वे मेरे प्रभु को उठा ले गए हैं और मैं नहीं जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।" [14]यह कह कर जब वह मुड़ी तो यीशु को वहाँ खड़े देखा और न पहिचाना कि वह यीशु है। [15]यीशु ने उससे कहा, "हे नारी, तू क्यों रो रही है? तू किसे ढूँढ रही है?" उसने उसे माली समझ कर उस से कहा, "महोदय, यदि तू उसे कहीं उठा ले गया है तो मुझे बता कि तू ने उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी।" [16]यीशु ने उस से कहा, "मरियम!" उसने मुड़कर इब्रानी में कहा, "रब्बूनी!" (जिसका अर्थ है, गुरु)। [17]यीशु ने उस से कहा, "मुझे मत छू, क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ, परन्तु मेरे भाइयों के पास जा और उनसे कह, 'मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।'" [18]मरियम मगदलीनी जाकर चेलों को बताने लगी, "मैंने प्रभु को देखा है," और कि उसने मुझ से ये बातें कही थीं।

20:11 "रोते हुए" यह अक्षरशः "चिल्लाना" है (तुलना यूहन्ना 11:31)। यह अपूर्णकाल है, जो पिछले समय में निरंतर कार्य की बात करता है। पूर्वी अंतिम संस्कार की प्रथाएँ विशेषतया बहुत भावुक हैं।

20:12 "दो स्वर्गदूत" यूहन्ना और लूका (24:23) सहमत हैं कि वहाँ दो स्वर्गदूत थे। मत्ती में, जहाँ सामान्य रूप से हर चीज दो होती हैं (तुलना यूहन्ना 8:28; 9:27; 20:30), केवल एक स्वर्गदूत है! यह सुसमाचारों के बीच न समझाई जा सकनेवाली भिन्नता का एक उदाहरण है।

सुसमाचार प्रत्यक्षदर्शी विवरण हैं जो अपने स्वयं के (प्रेरित) धर्मशास्त्रीय उद्देश्यों और लक्ष्य समूह के लिए यीशु के वचनों और कार्यों का चयन, अनुकूलन और संयोजन करते हैं। आधुनिक पाठक अक्सर प्रश्न पूछते हैं,जैसे (1) कौनसा सुसमाचार ऐतिहासिकरूप से सटीक है या (2) किसी एक प्रेरित सुसमाचार लेखक द्वारा दर्ज की गई घटना या शिक्षण के बारे में अधिक ऐतिहासिक विवरण चाहते हैं। व्याख्याकारों को पहले मूल लेखक के अभिप्राय को, जैसा कि एक व्यक्तिगत सुसमाचार में व्यक्त किया गया है, खोजना चाहिए । हमें सुसमाचार को समझने के लिए अधिक ऐतिहासिक विवरण की आवश्यकता नहीं है।

▣ **"उज्ज्वल"** आत्मिक क्षेत्र या आत्मिक प्राणियों को उज्ज्वल पहने हुए वर्णित किया जाता है।
1. रूपान्तर के समय यीशु के वस्त्र - मत्ती 17:2; मरकुस 9:3; लूका 9:29
2. क़ब्र पर स्वर्गदूत - मत्ती 28:3; मरकुस 16:5; लूका 24:4; यूहन्ना 20:12
3. स्वर्गारोहण के समय स्वर्गदूत – प्रेरितों के काम 1:10
4. महिमान्वित मसीह के साथ संत – प्रकाशितवाक्य 3:4-5,18
5. परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर प्राचीन (स्वर्गदूत) - प्रकाशितवाक्य 4:4
6. परमेश्वर की वेदी के नीचे शहीद - प्रकाशितवाक्य 6:11

7. सब छुटकारा पाए हुए - प्रकाशितवाक्य 7:9,13-14 (तुलना दानिय्येल 12:10)
8. स्वर्ग की (स्वर्गदूतों की) सेनाएँ - प्रकाशितवाक्य 19:14
9. क्षमा के लिए पुराने नियम की कल्पना – भजनसंहिता 51:7; यशायाह 1:18 (परमेश्वर की पवित्रता का प्रतीक, तुलना दानिय्येल 7:9)

20:14 "न पहिचाना कि वह यीशु है" मरियम मगदलीनी यीशु को नहीं पहचान पाई। इसके संभावित कारण हैं:
1. उसकी आँखों में आँसू थे।
2. वह अंधेरे में से उजाले की ओर देख रही थी।
3. यीशु का रूप कुछ अलग था (तुलनामत्ती 28:17 और लूका 24:16,37)

20:15 "महोदय" यह यूनानी शब्द *kurios* है। यहाँ इसका प्रयोग इसके गैर-धर्मशास्त्रीय अर्थ में किया गया है (तुलना यूहन्ना 12:21)। इसका मतलब "महोदय," "श्रीमान," "स्वामी," "मालिक," "पति," या "प्रभु" हो सकता है। मरियम ने सोचा कि वह (1) एक माली या (2) बगीचे के मालिक से बात कर रही है।

लेकिन यूहन्ना 20:28 में इसके धर्मशास्त्रीय प्रयोग पर ध्यान दें!

▣ **"यदि"** यह एक प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे वक्ता के दृष्टिकोण से सही माना जाता है। उसे विश्वास था कि किसी ने शव चुरा लिया है।

20:16 "मरियम. . .रब्बूनी" मरियम अक्षरशः मिरिएम (मरियम) है। ये दोनों शब्द अरामी हैं ("इब्रानी" का अर्थ है अरामी, तुलना यूहन्ना 5:2; 19:13,17,20)। स्पष्ट रूप से यीशु ने एक विशिष्ट तरीके से उसका नाम बोला। उसने इसी तरह का काम किया होगा जब उसने इम्माऊस के मार्ग पर दो व्यक्तियों के साथ प्रार्थना की थी। लूका 24:30-31)। "रब्बूनी" (Rabboni) के अंत में "i" अक्षर सम्भवतः "मेरे रब्बी," "मेरे स्वामी" या "मेरे गुरु" को प्रतिबिंबित करता है।

विशेष विषय: यीशु का पुनरुत्थान के बाद दर्शन (SPECIAL TOPIC: JESUS' POST RESURRECTION APPEARANCES)

यीशु ने अपने पुनरुत्थान की पुष्टि करने के लिए स्वयं को कई लोगों को दिखाया।
1. कब्र पर स्त्रियाँ, मत्ती 28:9
2. गलील में निर्धारित मुलाकात में ग्यारह शिष्य, मत्ती 28:16
3. शमौन, लूका 24:34
4. इम्माऊस के मार्ग पर दोनों, लूका 24:15
5. अटारी में चेले, लूका 24:36
6. मरियम मगदलीनी, यूहन्ना 20:15
7. अटारी में दस चेले, यूहन्ना 20:20
8. अटारी में ग्यारह चेले, यूहन्ना 20:26
9. गलील की झील पर सात शिष्य, यूहन्ना 21:1
10. कैफा (पतरस), 1 कुरिन्थियों 15: 5
11. बारहों (प्रेरित), 1 कुरिन्थियों 15:5
12. 500 भाइयों, 1 कुरिन्थियों 15:6 मत्ती 28:16-17 के साथ संयुक्त।
13. याकूब (उसका सांसारिक परिवार), 1 कुरिन्थियों 15:7
14. सभी प्रेरित, 1 कुरिन्थियों 15:7
15. पौलुस, 1 कुरिन्थियों 15:8 (प्रेरितों के काम 9)

स्पष्ट रूप से इनमें से कुछ समान दर्शन का उल्लेख करते हैं। यीशु चाहता था कि वे निश्चित जान लें कि वह जीवित था!

20:17
NASB **"मुझे मत पकड़े रह"**
NKJV **"मुझे मत पकड़ना"**
NRSV **"मुझे मत छू"**

TEV **"मुझे मत छू"**
NJB **"मुझे मत पकड़"**

KJV में "मुझे मत छूना" है। यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान मध्यम आज्ञार्थक है सामान्य रूप से जिसका अर्थ है उस कार्य को रोकना जो पहले से ही प्रक्रिया में है। मरियम ने उसे झपटकर पकड़ लिया था और पकड़े हुई थी! इसका स्वर्गारोहण से पहले यीशु के शरीर को छूने के बारे में कोई धर्मशास्त्रीय निहितार्थ नहीं है। यूहन्ना 20:27 में यीशु ने थोमा को उसे छूने दिया और मत्ती 28:9 में उसने स्त्रियों को उसके पाँव पकड़ने दिए।

▣ **"मैं अभी तक ऊपर नहीं गया हूँ"** यह पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यीशु पुनरूत्थान के 40 दिन बाद तक ऊपर स्वर्ग में नहीं जाएगा (तुलना प्रेरितों 1:9)।

▣ **"मेरे भाइयों के पास जा"** पुनरुत्थित, महिमान्वित प्रभु इन कायरों "भाइयों" कहता है (तुलना मत्ती 12:50)।

▣ **"मैं ऊपर जाता हूँ"** यह वर्तमान काल है। ऐसा चालीस दिन बाद तक नहीं हुआ जब तक वह उनकी उपस्थिति में था (तुलना लूका 24:50-52; प्रेरितों के काम 1:2-3)। यूहन्ना लगातार "ऊपर" और "नीचे" के ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का प्रयोग करता है। यीशु पिता (पूर्व-विद्यमान) से है और वह पिता के पास लौटता है (महिमान्वित होना)।

▣ **"मेरे पिता और तुम्हारे पिता के पास"** कितना अद्‌भुत कथन है! हालाँकि, यह भी कहा जाना चाहिए कि इसका अर्थ यह नहीं है कि विश्वासियों का पुत्रत्व यीशु के पुत्रवधू के समतुल्य है। वह पिता का अनोखा पुत्र है (यूहन्ना 3:16), सम्पूर्ण परमेश्वर और सम्पूर्ण मनुष्य । उसके माध्यम से ही विश्वासी परिवार के सदस्य बनते हैं। वह प्रभु, उद्धारकर्ता, और भाई दोनों है!

20:18 मरियम भी एक गवाह है!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 20:19-23
[19]उसी दिन, जो सप्ताह का पहिला दिन था, संध्या के समय जब वहाँ के द्वार जहाँ चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आकर उनके मध्य खड़ा हो गया और उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" [20]जब वह यह कह चुका तो उसने अपने हाथ और पंजर दोनों दिखाए। तब चेले प्रभु को देख कर आनन्दित हुए। [21]यीशु ने फिर उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले, जैसा पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।" [22]और जब वह यह कह चुका, तो उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा लो। [23]यदि तुम किसी के पाप क्षमा करो, तो वे उनके लिए क्षमा किए गए हैं। यदि तुम किसी के पाप रखो तो वे रखे गए हैं।"

20:19 "उसी दिन संध्या के समय" यहूदी समय गोधूलि से शुरू और समाप्त होता है (तुलना उत्पत्ति 1:5), जो यहाँ रविवार को लगभग शाम के 6:00 बजे है।

▣ **"सप्ताह का पहिला दिन"** रविवार हमारे सोमवार की तरह पहिला कार्य दिवस था। यह यीशु के पुनरुत्थान को मनाने के लिए कलीसिया का सभा दिवस बन गया। उसने लगातार तीन रविवारों की रात को अटारी में दर्शन देकर स्वयं एक नमूना स्थापित किया (तुलना यूहन्ना 20:19,26; लूका 24:36ff; प्रेरितों के काम 20:3; 1 कुरिन्थियों 16:2)।

पहली पीढ़ी के विश्वासियों ने सब्त के दिन स्थानीय आराधनालयों में और निर्धारित पर्व के दिनों पर मंदिर में मिलना जारी रखा। हालाँकि, रब्बियों ने एक "शाप शपथ" की स्थापना की, जिसमें आराधनालय के सदस्यों को यीशु मसीह को मसीहा के रूप में अस्वीकार करना पड़ता था (70ई. के बाद)। इस समय पर उन्होंने सब्त की सेवाओं को बन्द कर दिया, लेकिन अन्य विश्वासियों के साथ रविवार, पुनरुत्थान दिवस को यीशु के पुनरुत्थान को याद रखने के लिए मिलना जारी रखा।

▣ **"द्वार बन्द थे"** यह एक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है। बहुवचन का तात्पर्य है कि नीचे और ऊपर के दोनों दरवाजे बन्द थे। यह उल्लेख किया गया (1) यीशु के दर्शन पर बल देने के लिए या (2) उनके गिरफ्तार होने के डर को दिखाने के लिए।

▣ **"चेले"** थोमा उपस्थित नहीं था। ग्यारह प्रेरितों के अलावा अन्य चेले उपस्थित थे (तुलना लूका 24:33)।

▣ **"तुम्हें शान्ति मिले"** यह उनके आश्चर्य, और संभवतः भय को दर्शाता है। यीशु ने उनसे शान्ति का वादा किया था (तुलना

यूहन्ना 14:27; 16:33)। यह शायद इब्रानी अभिवादन *shalom* को प्रतिबिम्बित करता है। यीशु ने इसे तीन बार दोहराया (यूहन्ना 20:19,21,26)।

20:20 "अपने हाथ और पंजर दोनों दिखाए" यूहन्ना जाहिर तौर पर अन्य सुसमाचारों से अधिक यीशु के पंजर के बेधे जाने पर ध्यान केंद्रित करता है (तुलना यूहन्ना 19:37; 20:25)। लूका 24:39 और भजनसंहिता 22:16 ।को छोड़कर उसके पाँवों का उल्लेख कहीं नहीं किया गया है। यीशु के महिमान्वित शरीर पर उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने के चिन्ह बरकरार थे (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:23; गलातियों 3:1)।

▣ **"प्रभु"** यहाँ इस नाम का प्रयोग इसके पूर्ण धर्मशास्त्रीय अर्थ में किया गया है जो कि पुराने नियम के YHWH से संबंधित है (तुलना निर्गमन 3:14)। परमेश्वर पिता के लिए एक पुराने नियम का नाम यीशु के लिए लागू करना एक तरह से नये नियम के लेखकों द्वारा यीशु के पूर्ण देवत्व की पुष्टि थी। यूहन्ना 6:20 पर विशेष विषय देखें।

20:21 "जैसे पिता ने मुझे भेजा है" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (तुलना यूहन्ना 17:18)। कलीसिया का एक दिव्य शासनादेश होता है (तुलना मत्ती 28:18-20; लूका 24:47; प्रेरितों के काम 1:8)। विश्वासियों को भी एक बलिदान मिशन पर भी भेजा गया है (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:14-15; 1 यूहन्ना 3:16)।

यीशु "भेजने" के लिए दो अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करता है। यूहन्ना में ये पर्यायवाची हैं। यह अध्याय 8 में स्पष्ट रूप से देखा गया है, जहाँ पिता द्वारा यीशु के भेजे जाने के लिए *pempō* का प्रयोग किया गया है (तुलना यूहन्ना 8:16,18,26,29), फिर भी *Apostellō* का प्रयोग यूहन्ना 8:42 में किया गया है। यही बात अध्याय 5,6 के लिए सच है। यूहन्ना 5:24 पर विशेष विषय भेजना (*Apostellō*) देखें।

20:22 "उसने उन पर फूँका" यह शब्द "फूँका" पर एक क्रीड़ा है। इब्रानी *ruach* और यूनानी *pneuma* का अर्थ "साँस लेना," "हवा," या "आत्मा" हो सकता है। पुराने नियम में सेप्टुआजिंट में इसी क्रिया का प्रयोग उत्पत्ति 2:7 में परमेश्वर की सृजनात्मक गतिविधि और यहेजकेल 37:5,9 में इस्राएल के पुनरोद्धार के लिए किया गया था। सर्वनाम "उन" सिर्फ प्रेरितों को ही नहीं, एक व्यापक समूह को संदर्भित करता है (तुलना लूका 24:33)।

▣ **"पवित्र आत्मा लो"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यह किस प्रकार से पिन्तेकुस्त पर आत्मा के आने से संबंधित है, यह अनिश्चित है। यीशु ने इस पहले दर्शन के समय उन सभी बातों को पूरा किया, जिनका उसने अपने चेलों से वादा किया था। जिस प्रकार आत्मा ने यीशु को उसके बपतिस्मे पर सुसज्जित किया था उसी प्रकार यह यीशु के द्वारा उन्हें उनके नये सेवकाई के कार्य के लिए सुसज्जित करने से संबंधित है।

आत्मा पिता से या पिता और पुत्र दोनों से आता है, इस सवाल पर प्रारम्भिक कलीसिया की लड़ाई में इस पद का प्रयोग किया गया था। वास्तविकता में, त्रिदेवत्व के तीनों व्यक्ति छुटकारे के कार्यों में शामिल हैं।

A Theology of the New Testament में, George Ladd इस अवतरण की संभावित व्याख्याओं को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं:

> "यह अवतरण पिन्तेकुस्त पर आत्मा के आने के प्रकाश में कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है, जिन्हें तीन में से एक तरीके से हल किया जा सकता है। या तो यूहन्ना पिन्तेकुस्त के बारे में नहीं जानता और इस कहानी को प्रतिस्थापित करता है ताकि यह प्रभाव में जोहानिन पिन्तेकुस्त हो जाए; या आत्मा के वास्तव में दो वरदान थे; या यीशु का चेलों पर फूँकना प्रतिज्ञात्मक दृष्टांत का अभिनय और पेंटाकोस्ट पर आत्मा के वास्तविक आगमन का पूर्वाभास था" (p. 289)।

NET बाइबल में फुटनोट #24 (p. 1965) में कहा गया है कि यह उत्पत्ति 2:7 (LXX) की याद दिलाता है। जिस प्रकार भौतिक जीवन उत्पत्ति में दिया गया था, अनन्त जीवन नये नियम में दिया गया है। यह "परमेश्वर का श्वास" पर जोर यहेजकेल 37 के साथ समानांतर है, जहाँ YHWH आत्मा की साँस से अपने लोगों के लिए नया जीवन लाता है।

20:23 "यदि तुम किसी के पाप क्षमा करो" ये *ean* नहीं, *an* के साथ दो तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं जिसका सामान्य रूप से द्वितीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्यों के साथ प्रयोग किया जाता है। यह मिली-जुली स्थिति उस आकस्मिकता को और बढ़ा देती है, यह उनसे जो सुसमाचार को बाँटते हैं और उनसे जो विश्वास से प्रत्युत्तर देते हैं दोनों से संबंधित है।कोई जिसके पास सुसमाचार का ज्ञान हो, इसे बाँटना पसंद करता है और कोई इसे सुनता और इसे ग्रहण करना पसंद करता है। दोनों पहलुओं की आवश्यकता है। यह पद पादरियों को कोई मनमाना अधिकार नहीं, लेकिन विश्वास करने वाले गवाहों को अद्भुत जीवन-शक्ति देता है! यह अधिकार यीशु के जीवन के दौरान सत्तर की मिशन यात्रा में साबित होता है।

▣ **"तो वे उनके लिए क्षमा किए गए हैं"** यह व्याकरणिक संरचना एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है। कर्मवाच्य का तात्पर्य है परमेश्वर की क्षमा, पूर्ण रूप से सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से उपलब्ध है। विश्वासियों के पास राज्य की कुंजियाँ है (तुलना मत्ती 16:19) मात्र यदि वे उनका प्रयोग करें। यह वादा कलीसिया से है, व्यक्तियों से नहीं। यह धर्मशास्त्रीय रूप से मत्ती 18:18 के "बंधेगा और खुलेगा" के समान है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 20:24-25
[24]परन्तु बारहों में से एक, अर्थात थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ नहीं था। [25]जब अन्य चेले उस से कहने लगे, "हम ने प्रभु को देखा है!" तो उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के चिन्ह न देख लूँ और कीलों के छेद में अपनी ऊँगली न डालूँ, और उसके पंजर में अपने हाथ न डालूँ, तब तक मैं विश्वास न करूँगा।"

20:24 "परन्तु बारहों में से एक, अर्थात थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ नहीं था" यूनानी में दिदुमुस का अर्थ है "जुड़वाँ" (तुलना यूहन्ना 11:16)। अक्सर लोगों ने इस अवतरण का प्रयोग थोमा को एक शंकाशील व्यक्ति कहने के लिए किया है, लेकिन 11:16 को याद करें। थोमा यूहन्ना के सुसमाचार में किसी भी अन्य सुसमाचार की तुलना में अधिक बार दिखाई देता है। (तुलना यूहन्ना 11:16; 14:5; 20:24,26,27,28,29; 21:2)

20:25 "जब तक. . .विश्वास न करूँगा" "जब तक" एक प्रबल दोहरे नकारात्मक के साथ एक तीसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है, "देखे और छुए बिना मैं कभी नहीं, नहीं कभी नहीं, विश्वास करूँगा"। यीशु ने इस अनुरोध का सम्मान किया। यीशु ने चेलों के विश्वास के साथ (1) उसके चमत्कारों और (2) उसकी भविष्यवाणियों के माध्यम से काम किया। यीशु का संदेश इतने मौलिक रूप से नया था, उसने सुसमाचार के अभिकथनों और निहितार्थों को समझने और आत्मसात करने के लिए उन्हें समय दिया।

▣ **"छाप"** नीचे विशेष विषय देखें।

विशेष विषय: रूप (*tupos*) (SPECIAL TOPIC: FORM (*tupos*))
tupos शब्द का एक विस्तृत शब्दार्थ क्षेत्र है।

1. Moulton and Milligan, *The Vocabulary of the Greek New Testament*, p. 645
   a. नमूना
   b. योजना
   c. लिखने का प्रकार या ढंग
   d. विधान या पुनर्लेखन
   e. वाक्य या निर्णय
   f. मानव शरीर के प्रतिरूपों का चंगाई देनेवाले परमेश्वर को मन्नत के रूप में अर्पण
   g. व्यवस्था के उपदेशों को लागू करने के अर्थ में क्रिया का प्रयोग
2. Louw and Nida, *Greek-English Lexicon*, vol. 2, p.249
   a. निशान (तुलना यूहन्ना 20:25)
   b. मूर्तियाँ (तुलना प्रेरितों के काम 7:43)
   c. प्रतिरूप (तुलना इब्रानियों 8: 5)
   d. उदाहरण (तुलना 1 कुरिन्थियों 10: 6; फिलिप्पियों 3:17)
   e. आदिरूप (तुलना रोमियों 5:14)
   f. प्रकार (तुलना प्रेरितों के काम 23:25)
   g. विषय वस्तु (तुलना प्रेरितों के काम 23:25)
3. Harold K. Moulton, *The Analytical Greek Lexicon Revised* p. 411
   a. एक आघात, एक छाप, एक निशान (तुलना यूहन्ना 20:25)
   b. एक रूपरेखा
   c. एक मूर्ति (तुलना प्रेरितों के काम 7:43)
   d. एक सूत्र, योजना (तुलना रोमियों 6:17)

e. प्रकार, आशय (तुलना प्रेरितों के काम 23:25)
f. एक नमूना, प्रतिरूप (तुलना 1 कुरिन्थियों 10:6)
g. एक पूर्वकल्पित रूप, प्रकार (तुलना रोमियों 5:14; 1 कुरिन्थियों 10:11)
h. एक आदर्श प्रतिरूप (तुलना प्रेरितों के काम 7:44; इब्रानियों 8: 5)
i. एक नैतिक नमूना (तुलना फिलिप्पियों 3:17; 1 थिस्सलुनीकियों 1:7; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1; 1 तीमुथियुस 4:12; 1 पतरस 5:3।

याद रखें, शब्दकोश अर्थ निर्धारित नहीं करते हैं; केवल वाक्यों/अनुच्छेदों में शब्दों के प्रयोग से अर्थ (अर्थात, संदर्भ) निर्धारित होता है। एक शब्द के लिए एक निर्धारित परिभाषा निर्दिष्ट करने और प्रत्येक स्थान पर, जहाँ बाइबल में यह शब्द आता है, इसका प्रयोग करने में सावधान रहें। संदर्भ, संदर्भ, संदर्भ अर्थ निर्धारित करता है!

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 20:26-29

[26]आठ दिन के पश्चात उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ था।जब द्वार बन्द थे, तब यीशु आया, और उनके मध्य खड़े होकर और कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।" [27]तब उसने थोमा से कहा, "अपनी ऊँगली यहाँ ला और मेरे हाथों को देख, और अपना हाथ बढ़ाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।" [28]थोमा ने उत्तर देते हुए उस से कहा, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" [29]यीशु ने उससे कहा, "क्योंकि तू ने मुझे देखा है, क्या इसलिए विश्वास किया है? धन्य हैं वे, जिन्होंने मुझे नहीं देखा, फिर भी विश्वास किया है।"

20:26 "आठ दिन के पश्चात" यह एक सप्ताह के लिए एक इब्रानी मुहावरा है। यह रविवार की एक और शाम थी। यीशु ने अटारी (संभवत: यूहन्ना मरकुस के घर) में तीन रविवार की रातों को चेलों को दर्शन दिए और इस तरह मसीही आराधना के लिए एक मिसाल कायम की। यूहन्ना 20:19 पर टिप्पणी देखें।

20:27 "और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो" यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान मध्यम (प्रतिपादक) आज्ञार्थक है सामान्यतः जिसका अर्थ है एक कार्यरत प्रक्रिया को रोकना। सभी विश्वासी संदेह और विश्वास का एक अजीब मिश्रण है!

20:28 थोमा की स्वीकारोक्ति, पद 17 से धर्मशास्त्रीय रूप से संबंधित हो सकती है। थोमा की स्वीकारोक्ति में पुराने नियम की एक मिसाल हो सकती है, जब भी YHWH *Elohim* (यानी, उत्पत्ति 2:4) नाम एक साथ आता है, तो इस नाम का अनुवाद "प्रभु परमेश्वर" होता है। यीशु अपने देवत्व की इस चौंकाने वाली पुष्टि को पूर्ण रूप से स्वीकार करता है। अध्याय 1, पद 1 से, यूहन्ना रचित सुसमाचार में नासरत के यीशु के देवत्व का दृढ़तापूर्वक उल्लेख है।

यीशु ने यूहन्ना में कई बार देवत्व का दावा किया (तुलना यूहन्ना 8:58; 10:30; 14:9; 20:28) और लेखक ने यूहन्ना 1:1,14-18; 5:18 में उसके देवत्व का दावा किया। अन्य बाइबल लेखकों ने भी स्पष्ट रूप से कहा कि यीशु दिव्य है (तुलना प्रेरितों 20:28; रोमियों 9:4; फिलिप्पियों 2:6-7; कुलुस्सियों 1:15-17; 2 थिस्सलुनीकियों 1:12; तीतुस 2:13; इब्रानियों 1:8; 2 पतरस 1:1,11; 1 यूहन्ना 5:20)।

20:29 यह प्रारम्भिक वाक्यांश एक कथन या एक प्रश्न हो सकता है, जो एक "हाँ" उत्तर की अपेक्षा करता है। व्याकरणिक संरचना अस्पष्ट है।

यह यूहन्ना 17:20 की आशीष के समान है (तुलना 1 पतरस 1:8)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 20:30-31

[30]यीशु ने बहुत-से अन्य चिन्ह भी चेलों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं; [31]परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

20:30 पद 30-31 स्पष्ट रूप से सुसमाचार का विषय और उद्देश्य है। यह एक सुसमाचार- प्रचार पुस्तिका है! सुसमाचार के लेखकों को, यीशु के बारे में महान सत्य को, चयनित श्रोताओं, यहूदियों, रोमियों और अन्यजातियों स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने के लिए, प्रेरणा के अधीन, यीशु के कृत्यों का चयन करने, क्रमबद्ध करने और अनुकूलन करने और संक्षेप में प्रस्तुत करने का अधिकार और ईश्वर-प्रदत्त क्षमता थी। नया नियम मसीही तल्मूड नहीं है।

Carl F. H. Henry, *The Expositor's Bible Commentary,* Vol. 1 में "The Authority and Inspiration of the Bible" शीर्षक के शुरुआती लेख में कहते हैं:

> "बाइबल घटनाओं के पूर्ण कालक्रम को प्रस्तुत करने का लक्ष्य नहीं रखती है, चाहे वह सृजन कथा से संबंधित हो या देहधारण के इतिहास सहित, उद्धार के इतिहास से संबंधित हो। लेकिन बाइबल के लेखन का कथित उद्देश्य मनुष्य को वह सब प्रदान करना है जो उसके उद्धाररूपी बचाव और उसके सृष्टिकर्त्ता की आज्ञाकारी सेवा के लिए आवश्यक और पर्याप्त है। हालाँकि बाइबल के लेखक कभी-कभी परमेश्वर के बचाए जाने के एक ही कार्य को विभिन्न कोणों से और अलग-अलग उद्देश्यों से देखते हैं, जो वे हमें बताते हैं, वह विश्वसनीय और पर्याप्त है। मत्ती यीशु की सेवकाई के अधिकांश कालक्रम को निर्देश के लिए उपयोगी एक सामयिक व्यवस्था के अधीनस्थ करता है। लूका मरकुस में, जो अभी भी एक ऐसा सुव्यवस्थित विवरण है जो बिना निंदा किए धार्मिक शिक्षाओं को ग्रहण करने का पक्ष लेता है, निहित कई विषय-वस्तुओं को छोड़ देता है (तुलना यूहन्ना 1:4) यूहन्ना खुले तौर पर कट्टरपंथी चयनात्मकता पर टिप्पणी करता है जो चौथे सुसमाचार का आधार है (20:30,31)" (pp. 27-28)।

▣ **"यीशु ने बहुत-से अन्य चिन्ह भी चेलों के सामने दिखाए"** इन "चिन्हों" को कई तरीकों से समझा जा सकता है।

1. वे चिन्ह कि वह वास्तव में जीवित था
   a. उनका उसके घावों का छूआ जाना
   b. उसका उनके साथ खाना (तुलना लूका 24:43)
2. उनकी उपस्थिति में अटारी में किए गए विशेष अलिखित चिन्ह
3. उन्हें सुसमाचार लिपिबद्ध करने के लिए तैयार करते हुए उसके जीवन के कार्यों (अतीत पर केंद्रित) का संदर्भ (तुलना लूका 24:46-48)

20:31
NASB, NKJV,
TEV, NJB "कि तुम विश्वास करो"
NRSV "कि तुम विश्वास कर सको"

कुछ प्रारम्भिक यूनानी पांडुलिपियों, P[66], א[*], B, और ओरिजिन द्वारा प्रयुक्त यूनानी पाठ में एक वर्तमान संशयार्थ- सूचक है, जिसका तात्पर्य यह है कि यूहन्ना विश्वासियों को विश्वास में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए लिखा गया था।

अन्य यूनानी बृहदक्षर पांडुलिपियों (यानी, א[2], A, C, D, L, N, W) में एक अनिर्दिष्टकाल संशयार्थ- सूचक है, जिसका अर्थ होगा कि यूहन्ना अविश्वासियों को लिख रहा था। UBS[4] अनिर्दिष्टकाल को पाठ में सम्मिलित करता है लेकिन इसे "C" दर्ज़ा (निर्णय लेने में कठिनाई) देता है। यह पद सुसमाचार का कथित उद्देश्य है। यूहन्ना, अन्य सुसमाचारों की तरह, एक सुसमाचार-प्रचार पुस्तिका है।

▣ **"मसीह"** यह इब्रानी शब्द "मसीहा" का यूनानी अनुवाद है जो अक्षरशः है "अभिषिक्त जन" यह पुराने नियम का दाऊद का वंशज था जिसकी नए युग में धार्मिकता लाने के लिए भविष्यवाणी की गई थी। नासरत का यीशु (तुलना यूहन्ना 1:45) यहूदी मसीहा (तुलना यूहन्ना 11:27) है।

यीशु के लिए यह पदनाम सुसमाचार के आरम्भ में ही पाया जाता है (तुलना यूहन्ना 1:41)। हालाँकि, नाम "प्रभु," न कि "मसीहा", सामान्य नाम था जो अन्यजातियों के संदर्भों में यीशु के लिए प्रयुक्त होता था (तुलना रोमियों 10:9-13; फिलिप्पियों 2:9-11)।

"मसीहा" की अवधारणा के युगांत-विषयक निहितार्थ हैं (1) फरीसियों के लिए इसमें राजनीतिक, राष्ट्रीय अपेक्षाएँ थीं और (2) भविष्यसूचक यहूदी साहित्य में इसमें सृष्टि संबंधी, सार्वभौमिक अपेक्षाएँ थीं।

▣ **"परमेश्वर का पुत्र"** सिनॉप्टिक्स में इस शीर्षक का प्रयोग संयम से किया गया है (शायद अन्यजातियों द्वारा संभावित गलतफहमी के कारण), लेकिन यूहन्ना में आरम्भ में ही प्रयोग किया गया है (तुलना यूहन्ना 1:14,34,49)। यह यीशु और पिता के बीच अनूठे संबंध का दावा करने का यूहन्ना का तरीका था (*huios* का प्रयोग)। यूहन्ना इस पारिवारिक रूपक का कई तरह से प्रयोग करता है।

1. एक शीर्षक
2. "एकलौता" के संबंध में (*monogenēs*, तुलना यूहन्ना 1:18; 3:16; 1 यूहन्ना 4:9)
3. शीर्षक "पिता" के प्रयोग के साथ संयोजन में (तुलना यूहन्ना 20:17)

विशेष विषय: परमेश्वर का पुत्र 1 यूहन्ना 3:8 पर देखें।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. क़ब्र पर कौन आया था? कब? क्यों?
2. चेलों ने पुनरुत्थान की उम्मीद क्यों नहीं की थी? क्या किसी को इसकी उम्मीद थी?
3. मरियम ने यीशु को क्यों नहीं पहचाना?
4. यीशु ने मरियम को उसे छूने से मना क्यों किया?
5. पद 22-23 को अपने शब्दों में समझाइए।
6. क्या थोमा को एक शंकाशील व्यक्ति कहना उचित है?
7. शब्द "विश्वास" को परिभाषित करें जिस प्रकार से उसे यीशु के दिन में समझा गया था, हमारे नहीं।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूहन्ना 21

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
सात चेलों को यीशु का दर्शन	झील पर नाश्ता	उपसंहार	यीशु सात चेलों को दर्शन देता है	तिबिरियास के किनारे दर्शन
21:1-14	21:1-14	21:1-3	21:1-3a	21:1-3
			21:3b-5a	
		21:4-8		21:4-8
			21:5b	
			21:6	
			21:7-10	
		21:9-14		21:9-14
			21:11-14	
यीशु और पतरस	यीशु पतरस को पुनर्स्थापित करता है		यीशु और पतरस	
21:15-19	21:15-19	21:15-19	21:15a	21:15-19
			21:15b	
			21:15c-16a	
			21:16b	
			21:16c-17a	
			21:17b	
			21:17c-19	
यीशु और प्रिय चेला	प्रिय चेला और उसकी पुस्तक		यीशु और अन्य चेला	
21:20-23	21:20-25	21:20-23	21:20-21	21:20-23
			21:22	
			21:23	दूसरा निष्कर्ष
21:24		21:24-25	21:24	21:24
			निष्कर्ष	
21:25			21:25	21:25

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

पद 1-25 प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. ध्याय 21 के एक परिवर्धन होने के बारे में बहुत चर्चा हुई है, क्योंकि सुसमाचार यूहन्ना 20:31 पर समाप्त होता प्रतीत हो रहा है। हालाँकि, कोई यूनानी पांडुलिपि नहीं है जो अध्याय 21 को छोड़ती हो।

B. पद 25 को अक्सर एक बाद में जोड़ा गया माना जाता है क्योंकि कुछ पांडुलिपियों में यूहन्ना 7:53 - 8:11 पद्य 24 के बाद डाला गया है। इसके अलावा, प्राचीन पांडुलिपि साइनस में लेखक ने मूलतः पद 25 को छोड़ दिया और इसे डालने के लिए पीछे जाकर एक अलंकारिक पुष्पिका को मिटाना पड़ा।

C. हालांकि यूहन्ना के सुसमाचार का अभिन्न अंग नहीं है, अध्याय 21 निश्चित रूप से प्रेरित की ओर से था। यह प्रारंभिक कलीसिया के दो सवालों के जवाब देता है:
   1. क्या पतरस को फिर से रख लिया गया?
   2. यूहन्ना की दीर्घायु से संबंधित किंवदंती के बारे में क्या कहेंगे?

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 21:1-3
[1]इन बातों के पश्चात यीशु ने तिबिरियास झील के किनारे फिर से अपने आप को चेलों पर प्रकट किया, और उसने इस प्रकार प्रकट किया: [2]शमौन पतरस, और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना का नतनएल, और जब्दी के पुत्र और यीशु के चेलों में से अन्य दो इक्कट्ठे थे। [3]शमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।" उन्होंने उस से कहा, "हम भी तेरे साथ चलेंगे।" वे जाकर नाव पर चढ़ गए, और उस रात उन्होंने कुछ भी नहीं पकड़ा।

21:1 "तिबिरियास झील" तिबिरियास गलील की रोमी प्रशासनिक राजधानी थी। जल के इस श्रोत को "गलील की झील" (तुलना यूहन्ना 6:1) या "गन्नेसरत की झील" (तुलना मत्ती 14:34; मरकुस 6:53; लूका 5:1) और पुराने नियम में "किन्नेरेत की झील" (तुलना गिनती 34:11; व्यवस्थाविवरण 3:17; यहोशू 11:2; 12:3; 13:27; 19:35; 1 राजाओं 15:20) के रूप में भी जाना जाता है।

▣ **"उसने अपने आप को इस प्रकार प्रकट किया"** इस क्रिया में "पूर्ण या स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने" का लक्ष्यार्थ है (तुलना यूहन्ना 1:31; 2:11; 7:4; 9:3; 1 यूहन्ना 1:2; 2:28; 3:2; 4:9)। मत्ती में गलील में एक सभा है जो एक पर्वत पर हुई (तुलना 26:32; 28:7,10,16), "महान आज्ञा" के लिए व्यवस्था। यूहन्ना में यीशु ने स्वयं को तिबिरियास झील पर प्रकट किया। इस मुठभेड़ में यीशु दो सवालों का सामना करता है जिसमें आरम्भिक कलीसिया की दिलचस्पी थी
1. क्या पतरस को एक अगुवे के रूप में फिर से रखा गया था
2. उस किंवदंती के बारे में क्या कहेंगे कि यूहन्ना यीशु के लौटने से पहले नहीं मरेगा

21:2 "थोमा जो दिदुमुस कहलाता है" प्रेरितों के नामों के बारे में विशेष विषय यूहन्ना 1:45 पर देखें

जाहिर तौर पर ग्यारह में से सात मछली पकड़ने गए।

▣ **"जब्दी के पुत्र"** यह याकूब (याक़ूब) और यूहन्ना (योहानान, तुलना मत्ती 4:21) को संदर्भित करता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार में न तो याकूब और न ही यूहन्ना का उल्लेख किया गया है।

21:3 "शमौन पतरस ने उनसे कहा, 'मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ'" यह वर्तमान काल है। इस मछली पकड़ने के इस भ्रमण के विषय में कई सिद्धांत हैं।

1. यीशु के साथ नियत भेंट होने तक समय बिताने के लिए यह एक आरामदायक भ्रमण था (तुलना मत्ती 26:32; 28:7,10)।
2. यह पैसा कमाने के उद्देश्य से था
3. यह पतरस के मछली पकड़ने के व्यवसाय का पुन: उकसाया जाना था

यह अध्याय लूका 5 के समान है।

▣ **"और उस रात उन्होंने कुछ भी नहीं पकड़ा"** ध्यान दें कि इन लोगों, जो बीमार लोगों को ठीक करने और दुष्टात्माओं को बाहर निकालने में सक्षम थे, के पास प्रत्येक प्रयोजन के लिए प्रत्येक अवसर पर चमत्कारी शक्तियाँ नहीं थीं। मछली पकड़ने के लिए इस क्रिया का प्रयोग नये नियम में कहीं और नहीं किया गया है। सामान्यतः इसका प्रयोग किसी को गिरफ्तार करने के लिए किया जाता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 21:4-8
[4]जब भोर होने लगी तो यीशु तट पर आ खड़ा हुआ, चेलों ने नहीं पहिचाना कि वह यीशु है। [5]इस पर यीशु ने उनसे कहा, "हे बालकों, क्या तुम्हारे पास कुछ मछलियाँ हैं ?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं।" [6]और उसने उनसे कहा, "नाव की दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे।" इसलिए उन्होंने जाल डाला, तब मछलियों की अधिकता के कारण वे खींच न सके। [7]तब उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम करता था पतरस से कहा, "यह तो प्रभु है।" और इसलिए जब शमौन पतरस ने सुना कि यह प्रभु है, तो उसने अपना अंगरखा पहन लिया (क्योंकि काम के कारण कुछ भी पहिने न था) और झील में कूद पड़ा। [8]परन्तु अन्य चेले डोंगी पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, पर लगभग दो सौ हाथ की दूरी पर थे।

21:4 "परन्तु चेलों ने नहीं पहिचाना कि वह यीशु है" यीशु को पहचानने में इस असमर्थता के कई सिद्धांत हैं।

1. वहाँ बहुत अंधकार था
2. वह बहुत दूर था
3. वे बहुत थके हुए थे
4. यीशु थोड़ा अलग दिख रहा था (तुलना यूहन्ना 21:12; मत्ती 28:16-17; लूका 24:13ff)
5. दिव्य रूप से उन्हें उसे पहचानने से रोका गया (तुलना लूका 24:16)

21:5 "बालकों" यह उपमा के रूप में प्रयोग किया गया है। आमतौर पर "छोटे बच्चों" के लिए नये नियम में दो शब्द प्रयोग किए जाते हैं। यह शब्द (*paidion*) कम से कम प्रयुक्त होता है और यूहन्ना और 1 यूहन्ना में प्रयुक्त अधिक सामान्य शब्द (*teknion*) से अलग है। यह शब्द सुसमाचार में केवल यूहन्ना 4:49; 16:21 और यहाँ प्रयुक्त होता है। ये शब्द 1 यूहन्ना में समानार्थी रूप से प्रयोग किए गए लगते हैं, यूहन्ना 2:13,18 में *paidion*, लेकिन यूहन्ना 2:1,12,28 में *teknion*।

▣ **"क्या तुम्हारे पास कुछ मछलियाँ हैं"** यह शब्द "मछलियाँ" (*prosphagion*) वास्तव में रोटी के साथ खाए जाने वाले किसी भी प्रकार के भोजन को दर्शाता है, लेकिन इस संदर्भ में, "मछली" की माँग की गई है। यह प्रश्न "नहीं" उत्तर की अपेक्षा करता है।

21:6 यीशु उसी तरह से व्यवहार कर रहा था जैसे उसने तब किया था जब उसने पहली बार उन्हें बुलाया था, लूका 5:1-11। इस अध्याय की एक विशेषता के रूप में (यूहन्ना 21:15 पर टिप्पणी देखें) नाव के लिए दो अलग-अलग यूनानी शब्दों का प्रयोग किया गया है, यूहन्ना 21:3 और 6 में *ploion* और यूहन्ना 21:8 में *ploiaron* (छोटी नाव)। यूहन्ना कई बार अध्याय में अपनी साहित्यिक विविधता दिखाता है।

21:7 "तब उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम करता था" यह सुसमाचार के लेखक, प्रेरित यूहन्ना (तुलना यूहन्ना 13:23; 20:2,3,8; 21:20) का उल्लेख करता है। यूहन्ना का नाम सुसमाचार में कहीं नहीं लिया गया है।

NASB **"उसने अपना अंगरखा पहन लिया (क्योंकि काम के कारण कुछ भी पहिने न था)"**
NKJV **"अपना अंगरखा पहन लिया (क्योंकि उसने उसे उतार दिया था)"**
NRSV **"उसने कुछ कपड़े पहन लिए, क्योंकि वह नग्न था"**
TEV **"उसने अपना अंगरखा लपेट लिया (क्योंकि उसने अपने कपड़े उतार दिए थे)"**
NJB **"पतरस ने कमर में अपना अंगरखा कस लिया (क्योंकि वह कुछ नहीं पहिने था)"**

पहली शताब्दी में पलस्तीन के लोग एक बाहरी बागा और कसा हुई लंबी जांघिया पहनते थे। पतरस ने अपने बाहरी लबादे/बागे को उतार दिया था और अपने जांघिया को कमर तक नीचे कर दिया था।

▣ **"यह तो प्रभु है"** शब्द *kurios* "श्रीमान," "महोदय," "स्वामी," "मालिक," या "प्रभु" के लिए यूनानी शब्द था। कुछ संदर्भों में यह केवल एक विनम्र संबोधन है, लेकिन दूसरों में यह यीशु के देवत्व का एक धर्मशास्त्रीय पुष्टिकरण है। इस संदर्भ में इन मछुआरों ने समुद्र तट पर मौजूद इस व्यक्ति को महिमान्वित, पुनरुत्थित प्रभु के रूप में पहिचाना!

अनुवाद का मूल पुराने नियम के प्रयोग से आता है, जहां YHWH का अनुवाद प्रभु के रूप में किया जाता है। यह इसलिए हुआ क्योंकि यहूदी देवता के लिए इस वाचा के नाम का उच्चारण करने से डरते थे, इसलिए उन्होंने एक और इब्रानी शब्द, *Adonai* को प्रतिस्थापित किया, जो कि *kurios* से मेल खाता है। यूहन्ना 6:20 पर विशेष विषय देखें।

प्रभु एक ऐसा नाम है जो फिलिप्पियों 2:9-11 में हर नाम से ऊपर है। यह प्रारंभिक कलीसिया के बपतिस्मा संबंधी स्वीकारोक्ति का हिस्सा था, "यीशु प्रभु है" (तुलना रोमियों 10:9-13)।

21:8 "अन्य चेले" जाहिर तौर पर पूरा गोपनीय दल पतरस और यूहन्ना के साथ एक मछली पकड़ने के लिए चला गया था ताकि कुछ खर्च करने के लिए पैसे मिल सकें (वे यीशु के साथ यात्रा करने वाली स्त्रियों पर और अधिक निर्भर नहीं रह सकते थे)।

▣ **"मछलियों से भरा हुआ जाल"** इतने समय के बाद भी यीशु
1. उनके विश्वास को बढ़ा रहा है
2. उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है
3. अपने पुनरुत्थान और (सृष्टि पर) अधिकार की पुष्टि कर रहा है

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 21:9-14
[9]इसलिए जब वे किनारे पर उतरे तो उन्होंने कोयले की आग पहले से जली हुई और उस पर मछली रखी हुई तथा रोटी देखी। [10]यीशु ने उनसे कहा, "जो मछलियाँ तुमने अभी पकड़ी हैं, उनमें से कुछ लाओ" [11]शमौन पतरस गया और एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरे हुए जाल को किनारे पर खींच लाया यद्यपि मछलियाँ इतनी अधिक थीं फिर भी जाल न फटा। [12]यीशु ने उनसे कहा, "आओ, नाश्ता करो।" चेलों में से किसी को यह पूछने का साहस न हुआ, "तू कौन है?" क्योंकि वे जानते थे कि यह प्रभु ही है। [13]यीशु ने आकर रोटी ले ली और उन्हें दी, और इसी प्रकार मछली भी। [14]यह तीसरी बार है जब यीशु मरे हुओं में से जी उठने के पश्चात चेलों पर प्रकट हुआ।

21:9 "कोयले की आग पहले से जली हुई और उस पर मछली रखी हुई तथा रोटी देखी" इस बड़ी सुबह के नाश्ते का उद्देश्य संगति और धर्मशास्त्रीय परावर्तन के लिए था। धर्मशास्त्रीय निहितार्थ हैं
1. यह खंड एक और कोयले की आग (तुलना यूहन्ना 18:18) के एक समायोजन में पतरस के इन्कार से संबंधित है। यह शब्द इधर-उधर पाया जाता है।
2. यूहन्ना रचित सुसमाचार और 1 यूहन्ना को ज्ञानवाद के मतान्तर, जिसने यीशु, मसीहा के प्रति सच्ची मानवता को नकार दिया था, का सामना करने के लिए लिखा गया था। यीशु ने उनके साथ भोजन किया।

21:10 इस अनुच्छेद में मछली के लिए दो अलग-अलग शब्द हैं: (1) यूहन्ना में 21:9,10, और 13 शब्द *opsarion* है, जिसका अर्थ था छोटी मछली और (2) यूहन्ना 21:6,8 और 11 में शब्द *ichthus* है, जिसका अर्थ बड़ी मछली है। वे इस संदर्भ में एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए गए प्रतीत होते हैं।

21:11 "एक सौ तिरपन" संदर्भ में इस संख्या का कोई प्रतीकात्मक महत्त्व नहीं है; यह बस एक प्रत्यक्षदर्शी विवरण है। हालाँकि, संख्याओं और विवरणों को अन्योक्ति के रूप में प्रस्तुत करने की प्रारंभिक कलीसिया की अनुचित प्रवृत्ति ने इस पद का निम्न अर्थ लगाने के लिए मजबूर कर दिया:

1. सिरिल ने कहा कि 100 अन्यजातियों को और 50 यहूदियों को और 3 त्रिदेवत्व को दर्शाता है।
2. ऑगस्टीन ने कहा कि यह संख्या दस आज्ञाओं और आत्मा के सात वरदानों को संदर्भित करती है, जो सत्रह की संख्या के बराबर है। यदि आप प्रत्येक संख्या 1,2,3,4 को 17 तक जोड़ते हैं तो आपको 153 मिलता है। ऑगस्टीन ने कहा कि यह कुल संख्या थी जो व्यवस्था और अनुग्रह के माध्यम से मसीह में आई थी।
3. जेरोम ने कहा कि 153 विभिन्न प्रकार की मछलियाँ हैं, इसलिए, यह मसीह में आने वाले राष्ट्रों का प्रतीक है। यह व्याख्या का रूपक संबंधी तरीका व्याख्याकार की चतुराई का वर्णन करता है न कि मूल, प्रेरित लेखक के अभिप्राय का!

▣ **"यद्यपि मछलियाँ इतनी अधिक थीं फिर भी जाल न फटा"** यह या तो एक सामान्य प्रत्यक्षदर्शी वर्णन या एक अस्पष्ट चमत्कार है।

21:14 "यह तीसरी बार है जब यीशु चेलों पर प्रकट हुआ" यह अध्याय 20 में दो विवरणों को संदर्भित करता है जो इसमें जोड़े गए।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 21:15-19

15अतः जब वे नाश्ता कर चुके, तो यीशु ने शमौन पतरस से कहा, "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इनसे बढ़कर मुझ से प्रेम करता है?" 16उसने उससे कहा, "हाँ, प्रभु, तू तो जानता है कि मैं तुझ से प्रीति करता हूँ।" उसने उस से कहा, "मेरे मेमनों को चरा।" उसने फिर दूसरी बार उस से कहा, "शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझ से प्रेम करता है?" उसने उस से कहा, "हाँ, प्रभु, तू तो जानता है कि मैं तुझ से प्रीति करता हूँ।" उसने उस से कहा, "मेरी भेड़ों की रखवाली कर।" 17उसने उससे तीसरी बार कहा, "शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति करता है?" पतरस उदास हुआ क्योंकि उसने उस से तीसरी बार ऐसा कहा, "क्या तू मुझ से प्रीति करता है?" और उस से कहा, "हे प्रभु, तू सब कुछ जानता है, तू यह भी जानता है कि मैं तुझ से प्रीति करता हूँ।" यीशु ने उस से कहा, "तू मेरी भेड़ों को चरा। 18मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तू जवान था तो अपनी कमर कस कर जहाँ चाहता था वहाँ फिरता था, परन्तु जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथ फैलाएगा और कोई दूसरा तेरी कमर बाँधेगा और जहाँ तू न चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा।" 19उसने ऐसा यह संकेत देते हुए कहा, कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा। और जब वह यह कह चुका, उसने उस से कहा, "मेरे पीछे चल!"

21:15 "हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र" ध्यान दें कि यीशु ने उसे "शमौन पतरस" नहीं कहा; यह मनुष्य एक चट्टान के अलावा सब कुछ था!

शमौन के पिता के नाम से संबंधित एक पांडुलिपि संस्करण है।

1. यूहन्ना - א[1], B, C*, D, L W
2. जोना - A, C[2]
3. लुप्त- א*

UBS[4] विकल्प #1 को "B" दर्ज़ा देता है (लगभग निश्चित) 1:42 (P[66], P[72], א, B*, L, W) का अनुसरण करते हुए।

▣ **"प्रेम. . .प्रेम. . .प्रेम"** एक स्पष्ट तीन गुना पुनरावृत्ति है जो महायाजक के आँगन में पतरस के तीन गुना इन्कार से संबंधित प्रतीत होती है (तुलना यूहन्ना 18:17,25,27)। इस पूरे खंड में कई तरह के समानांतर और विरोधाभास हैं।

1. प्रेम (*phileō*) बनाम प्रेम (*agapaō*)
2. मेमना बनाम भेड़
3. जानता (*ginoskō*) बनाम जानता (*oida*)

इस बात पर बहुत चर्चा हुई है कि क्या यह साहित्यिक विविधता को संदर्भित करता है या इन शब्दों के बीच एक इच्छित विरोधाभास है । यूहन्ना अक्सर विविधता का प्रयोग करता है, विशेष रूप से इस अध्याय में ("बालकों," "नाव," और "मछली" के लिए दो शब्द)। यूनानी शब्दों *agapaō* और *phileō*, के बीच इस संदर्भ में कुछ अंतर प्रतीत होता है लेकिन इस पर जोर नहीं दिया जा सकता क्योंकि बोलचाल की यूनानी भाषा में वे समानार्थी हैं (तुलना यूहन्ना 3:35; 5:20; 11:3,5)।

▣ **"क्या तू इनसे बढ़कर मुझ से प्रेम करता है"** इस प्रश्न के कर्म के विषय में वाक्य-रचना अस्पष्ट है। कुछ का कहना है कि यह संदर्भित करता है

1. मछली पकड़ने को एक व्यवसाय के रूप में
2. पतरस के यीशु को अन्य चेलों से अधिक प्यार करने के पिछले कथनों को (तुलना मत्ती 26:33; मरकुस 14:29 और यूहन्ना 13:37)
3. प्रमुख सबका सेवक बने (तुलना लूका 9:46-48; 22:24-27)

▣ **"मेरे मेमनों को चरा"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। ये सभी तीनों कथन एक ही व्याकरणिक रूप (तुलना यूहन्ना 21:16 और 17), लेकिन थोड़े भिन्न शब्द हैं (मेरी भेड़ों की रखवाली कर और मेरी भेड़ों को चरा)।

21:17 "हे प्रभु तू सब कुछ जानता है" पतरस सीख रहा है कि इतनी जल्दी से न बोले । वह अच्छे धर्मशास्त्र को व्यक्त करता है (तुलना यूहन्ना 2:25; 6:61,64; 13:11; 16:30)।

▣ **"तू यह भी जानता है कि मैं तुझ से प्रीति करता हूँ"** यूहन्ना 21:16 (*oida*) और यूहन्ना 21:17 (*oida* और *ginoskō*) के बीच "जानता" के लिए यूनानी शब्द में एक बदलाव है। सटीक कारण अनिश्चित है और सम्भवतः इसमें विविधता शामिल हो।

21:18 "अपने हाथ फैलाएगा" यह (1) प्रारंभिक कलीसिया में (2) और यूनानी साहित्य में "क्रूस पर चढ़ाये जाने" के लिए प्रयुक्त एक पारिभाषिक मुहावरा हो सकता है।

21:19 "यह संकेत देते हुए कहा, कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा" परंपरा यह दावा करती है कि पतरस की मृत्यु एक उल्टी स्थिति में क्रूस पर चढ़ाने से हुई थी। *The Ecclesiastical History,* Vol. 3:1 में यूसेबियस का कहना है, "माना जाता है कि पतरस ने को पुन्तुस, गलातिया, बिथुनिया, कप्पदुकिया और एशिया में विस्तार के यहूदियों को उपदेश दिया था। रोम जाने के बाद वह अपने स्वयं के अनुरोध पर सिर नीचे किए हुए क्रूस पर चढ़ाया गया।" यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"मेरे पीछे चल"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है, जैसा कि यूहन्ना 21:22 है। यह पतरस के नेतृत्व की बुलाहट के नवीनीकरण और पुन: पुष्टि से संबंधित है (तुलना मत्ती 4:19-20)।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 21:20-23
[20]पतरस ने मुड़कर उस चेले को पीछे आते देखा जिस से यीशु प्रेम करता था, अर्थात वही जिसने भोजन के समय, उसकी छाती की ओर झुके हुए पूछा था, "प्रभु, तुझे धोखे से पकड़वाने वाला कौन है?" [21]उसे देख कर पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, इस मनुष्य का क्या होगा?" [22]यीशु ने उस से कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या? तू मेरे पीछे हो ले।" [23]इसलिए भाइयों में यह बात फैल गई कि वह चेला न मरेगा, परन्तु यीशु ने उस से यह नहीं कहा कि वह न मरेगा, परन्तु केवल यह, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या?"

21:20 "उस चेले को जिस से यीशु प्रेम करता था" यह यूहन्ना 13:25 में पाए गए विवरण को संदर्भित करता है।यह अनिश्चित है कि वह इस गुप्त रूप से नामांकित क्यों है (तुलना यूहन्ना 13:23; 19:26; 20:2; 21:7,20)। संभावित सिद्धांत हैं।

1. पहली शताब्दी के पारंपरिक यहूदी लेखन में लेखक का नाम नहीं था।
2. जब वह यीशु का अनुयायी बना तब यूहन्ना बहुत छोटा था।
3. यूहन्ना एकमात्र ऐसा प्रेरित था जो मुकदमों और क्रूस पर चढ़ाये जाने के दौरान यीशु के साथ रहा था।

21:22 "यीशु ने उस से कहा, 'यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या'" "यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है। हमें याद रखना चाहिए कि हम अपने स्वयं के वरदानों और सेवकाइयों को संभालना है और इस बात से चिंतित नहीं होना है कि परमेश्वर ने दूसरों के लिए क्या योजना बनाई है! अध्याय 21 को जोड़ने का एक संभावित कारण इस मुद्दे पर गलतफहमी का जवाब देना हो सकता है। जाहिर तौर पर एक प्रारंभिक अफवाह थी (संभवतः ज्ञानवादी) कि यूहन्ना को दूसरे आगमन तक जीवित रहना था (यूहन्ना *Parousia* की बात नहीं करता, तुलना 1 यूहन्ना 3:2)।

▣ **"मेरे पीछे चल"** यह यूहन्ना रचित सुसमाचार के व्यक्तिगत निमंत्रण को लगभग संक्षेप में प्रस्तुत करता है (तुलना यूहन्ना

1:43; 10:27; 12:26; 21:19,22)। यह सुसमाचार के व्यक्तिगत पहलू पर जोर देता है, जबकि "विश्वास करो कि" सुसमाचार के विषय वस्तु के पहलू पर जोर देता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 21:24
[24]यह वही चेला है जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने इन बातों को लिखा, और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है।

21:24 "इन बातों को लिखा" क्या यह (1) यूहन्ना 21:20-23: (2) अध्याय 21; या (3) संपूर्ण सुसमाचार को संदर्भित करता है? जवाब अनिश्चित है।

▣ **"हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है"** सर्वनाम "हम" द्वारा निर्दिष्ट विशिष्ट समूह अनिश्चित है। यह स्पष्ट है कि अन्य लोगों को यूहन्ना रचित सुसमाचार की सच्चाई की पुष्टि में लाया जा रहा है। यह संभवतः इफिसियों के प्राचीनों को संदर्भित करता है। यह वह क्षेत्र था जिसमें यूहन्ना रहे, सेवकाई की, और मर गए। आरंभिक परंपरा इस बात पर जोर देती है कि इफिसियों के अगुवों ने वृद्ध यूहन्ना से आग्रह किया कि वे अन्य प्रेरितों की मृत्यु और यीशु के बारे में बढ़ते हुए विधर्मों के कारण अपने स्वयं का सुसमाचार लिखें। विशेष विषय: यीशु के गवाह यूहन्ना 1:8 पर देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: यूहन्ना 21:25
[25]और भी बहुत काम हैं जो यीशु ने किए। यदि उन्हें एक-एक करके लिखा जाता, तो मैं सोचता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं।

21:25 पद 25 दो कारणों से विवादग्रस्त हुआ है: (1) कई पांडुलिपियों में यूहन्ना 7:53 - 8:11 को पद 24 और 25 के बीच डाला गया है (2) पांडुलिपि सिनैटिकस (א) में, लेखक ने एक अलंगकारिक पुष्पिका को मिटा दिया और बाद में यूहन्ना को 21:25 डाला। यह ब्रिटिश संग्रहालय में परा-बैंगनी किरणों द्वारा देखा गया था। यह पद विशिष्ट रूप से हमें सूचित करता है कि सुसमाचार के लेखकों ने जो कुछ दर्ज़ किया था उसमें वे चयनात्मक थे। व्याख्या से संबंधित प्रश्न यह है कि हमेशा यह पूछा जाए, "जिस प्रकार से उन्होंने दर्ज़ किया उन्होंने ऐसा क्यों दर्ज़ किया और चार सुसमाचारों को संयोजित करने के लिए जल्दी नहीं की?" (Gordon Fee and Douglas Stuart, *How To Read the Bible For All Its Worth,* देखें)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यूहन्ना 21 लूका 5 के समान कैसे है?
2. चेलों ने यीशु को तुरंत क्यों नहीं पहिचाना?
3. वह चेला कौन है जिससे यीशु प्रेम करता था?
4. यीशु ने पतरस से उसके लिए उसके प्रेम के बारे में तीन बार क्यों पूछा?
5. क्या यीशु ने दावा किया था कि उसके फिर से आने तक यूहन्ना जीवित रहेगा?
6. पद 24 में किसे संदर्भित किया गया है?
7. क्या पद 25 मूल है?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1 यूहन्ना की प्रस्तावना

पुस्तक की विशिष्टता

A. यूहन्ना की पुस्तक एक व्यक्तिगत पत्र नहीं है और न ही एक कलीसिया को लिखा गया पत्र है, क्योंकि यह "मुख्यालय से एक जोशपूर्ण सेवा का स्मृति पत्र" है (समष्टिगत पत्र) है।
   1. इसकी कोई पारंपरिक प्रस्तावना नहीं है (किससे, किसको)।
   2. इसमें कोई निजी अभिवादन या समापन संदेश नहीं है।

B. व्यक्तिगत नामों का कोई उल्लेख नहीं है। यह कई कलीसियाओं को लिखी गई पुस्तकों, जैसे इफिसियों और याकूब को छोड़कर बहुत असामान्य है। नये नियम का एकमात्र पत्र जिसमें लेखक का नाम शामिल नहीं है, वह है इब्रानियों। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि 1 यूहन्ना उन विश्वासियों के लिए लिखा गया था जो वर्तमान में झूठे शिक्षकों (ज्ञानवादी) की आंतरिक कलीसियाई समस्या का सामना कर रहे थे।

C. यह पत्र एक शक्तिशाली धर्मशास्त्रीय आलेख है
   1. यीशु की केंद्रीयता
      a. संपूर्ण परमेश्वर और संपूर्ण मनुष्य
      b. उद्धार यीशु मसीह में विश्वास से आता है, न कि एक रहस्यमय अनुभव या गुप्त ज्ञान (झूठे शिक्षक)
   2. एक मसीही जीवनशैली की माँग (वास्तविक मसीहत के तीन परीक्षण)
      a. भाईचारे की प्रीति
      b. आज्ञाकारिता
      c. पतित विश्व व्यवस्था का नकार
   3. नासरत के यीशु में विश्वास के माध्यम से अनन्त उद्धार का आश्वासन ("जानो" 27 बार प्रयुक्त)
   4. झूठे शिक्षकों को कैसे पहचानना है।

D. यूहन्ना के लेखन (विशेष रूप से 1 यूहन्ना) किसी भी नये नियम के लेखक की बोलचाल की यूनानी भाषा से सबसे कम जटिल हैं, फिर भी उसकी पुस्तकें, जितना कोई और नहीं कर पाता, यीशु मसीह में परमेश्वर के गहन और अनन्त सत्य की गहराई को जान लेती हैं (अर्थात, परमेश्वर ज्योति है, 1 यूहन्ना 1:5; परमेश्वर प्रेम है, 1 यूहन्ना 4:8,16; परमेश्वर आत्मा है, यूहन्ना 4:24)।

E. यह संभव है कि 1 यूहन्ना यूहन्ना रचित सुसमाचार के लिए एक प्रावरण पत्र होने के लिए लिखा गया था। पहली शताब्दी का ज्ञानवादी कुपन्थ दोनों पुस्तकों की पृष्ठभूमि बनाता है। सुसमाचार का एक प्रचारक रुझान है, जबकि 1 यूहन्ना विश्वासियों (यानी, शिष्यत्व) के लिए लिखा गया है।
   प्रसिद्ध टिप्पणीकार वेस्टकॉट ने कहा कि सुसमाचार यीशु के देवत्व की पुष्टि करता है, जबकि 1 यूहन्ना उसकी मानवता की पुष्टि करता है। ये पुस्तकें एक साथ चलती हैं!

F. यूहन्ना स्पष्ट (द्वैतवादी) शब्दों में लिखते हैं। यह मृत सागर चीरकों और ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों की विशेषता है। 1 यूहन्ना का संरचित साहित्यिक द्वैतवाद मौखिक (ज्योति बनाम अंधेरा) और शैलीगत (एक नकारात्मक कथन के बाद एक सकारात्मक कथन) है। यह यूहन्ना रचित सुसमाचार से अलग है, जो एक ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद (ऊपर से बनाम नीचे के मनुष्यों से यीशु) का प्रयोग करता है।

G. यूहन्ना के विषयों की पुनरावृत्ति के कारण 1 यूहन्ना का प्रारूप बनाना बहुत कठिन है। पुस्तक पुनरावृत्त नमूनों में बुनी गई सत्य की चित्रयवनिका की तरह है (तुलना Bill Hendricks, *Tapestries of Truth, The Leters of John*)।

लेखक

A. 1 यूहन्ना का साहित्यिक कार्य जोहानिन कोष - सुसमाचार, 1 यूहन्ना, 2 यूहन्ना, 3 यूहन्ना और प्रकाशितवाक्य के साहित्यिक कार्य पर बहस का हिस्सा है।

B. दो मूल स्थान हैं

1. पारंपरिक

a. प्रारंभिक कलीसिया के पिताओं में परंपरा एकमत थी कि यूहन्ना, प्रिय प्रेरित, 1 यूहन्ना का लेखक था।

b. प्रारंभिक कलीसिया के प्रमाण का सारांश

(1) क्लेमेंट ऑफ रोम (90ई.) 1 यूहन्ना की ओर संकेत करता है

(2) पॉलीकार्प ऑफ स्मरना, *Philippians* 7 (110-140 ई.) 1 यूहन्ना का उद्धरण देता है

(3) जस्टिन मार्टियर, *Dialogue* 123:9 (150-160 ई.) 1 यूहन्ना का उद्धरण देता है

(4) निम्न लेखनों में 1 यूहन्ना के उल्लेख दिए गए हैं

(a) अन्ताकिया के इग्नेशियस (उनके लेखन की तारीख अनिश्चित है लेकिन 100 ई. के प्रारम्भ में है)

(b) पैपिएस ऑफ हिरापोलिस (50-60 ई के मध्य जन्मा और लगभग 155 ई. में शहीद)

(5) ल्यॉन्स के इरेनुयस (130-202 ई.) 1 यूहन्ना का श्रेय प्रेरित यूहन्ना को देते हैं1 टर्रटुलियन, एक आरम्भिक पक्ष समर्थक, जिसने विधर्मियों के खिलाफ 50 पुस्तकें लिखीं, अक्सर 1 यूहन्ना का उद्धरण देता है

(6) अन्य आरम्भिक लेख, जो साहित्यिक कार्य का श्रेय प्रेरित यूहन्ना को देते हैं वे हैं, क्लेमेंट, ऑरिजन और डायोनिसियस सभी तीन अलेक्जेंड्रिया से, म्यूरेटेरियन फ्रैगमेंट (180-200 ई.),और यूसेबियस (तीसरी शताब्दी)।

(7) जेरोम (चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में) ने यूहन्ना के लेखक होने की पुष्टि की लेकिन यह स्वीकार किया कि उनके दिन में कुछ लोगों द्वारा इसका खंडन किया गया था।

(8) थियोडोर ऑफ मोपसुस्तिया 392-428 ई. तक अन्ताकिया के बिशप ने, यूहन्ना के लेखकत्व से इनकार किया।

c. अगर यूहन्ना है, हम प्रेरित यूहन्ना के बारे में क्या जानते हैं?

(1) वह जब्दी और सलोमी का पुत्र था

(2) वह अपने भाई याकूब के साथ गलील की झील पर एक मछुआरा था (संभवतः कई नावों का मालिक)

(3) कुछ का मानना है कि उसकी माता मरियम, यीशु की माता की बहिन थी। यीशु (तुलना यूहन्ना 19:25; मरकुस 15:20)

(4) स्पष्ट रूप से वह धनी था क्योंकि उसके पास थे

(a) मजदूर (तुलना मरकुस 1:20)

(b) कई नावें

(c) यरुशलेम में एक घर

(5) यूहन्ना की यरुशलेम में महायाजक के घर तक पहुँच थी, जो दर्शाता है कि वह एक जाना- पहचाना व्यक्ति था (तुलना यूहन्ना 18:15-16)

(6) यह यूहन्ना ही था जिसकी देखभाल में मरियम, यीशु की माता को सौंपा गया था।

d. प्रारंभिक कलीसिया परंपरा ने सर्वसम्मति से गवाही दी कि यूहन्ना ने अन्य प्रेरितों के मुकाबले सबसे अधिक जिया, और यरूशलेम में मरियम की मृत्यु के बाद वह एशिया माइनर में चले गया और उस क्षेत्र के सबसे बड़े नगर इफिसुस में बस गया। इस नगर से उसे पतमुस द्वीप (बस तट से दूर) में निर्वासित कर दिया गया था और बाद में उसे छोड़ दिया गया और इफिसुस भेज दिया गया (यूसेबियस पॉलीकार्प, पैपिएस और इरेनुयस का उद्धरण देता है)

2. आधुनिक विद्वत्ता

a. आधुनिक विद्वानों के विशाल बहुमत ने सभी जोहानिन लेखनों में समानता को स्वीकार किया, विशेषतः वाक्यांश रचना, शब्दावली और व्याकरणिक रूपों में। इसका एक अच्छा उदाहरण कड़ा विरोधाभास है, जो इन लेखों की विशेषता है: जीवन बनाम मृत्यु, सत्य बनाम असत्य। यही कड़ा विरोधाभास दिन के अन्य लेखन, मृत सागर चीरकों और प्रारम्भिक ज्ञानवादी लेखन में देखा जा सकता है।

b. परंपरा के आधार पर जिन पाँच पुस्तकों का श्रेय यूहन्ना को जाता है, उनके बीच अंतर-संबंध के बारे में कई सिद्धांत हैं। कुछ समूह एक व्यक्ति, दो लोगों, तीन लोगों पर, और इसी तरह लेखकत्व का दावा करते हैं। ऐसा लगता है कि सबसे प्रशंसनीय स्थिति यह है कि सम्पूर्ण जोहानिन लेखन एक व्यक्ति के विचारों का परिणाम है, भले ही उसके कई चेलों द्वारा लिखा गया हो।

c. मेरी व्यक्तिगत मान्यता यह है कि वृद्ध प्रेरित, यूहन्ना, ने इफिसुस में अपनी सेवकाई के अंत समय में पाँचों पुस्तकें लिखीं।

3. लेखकत्व का मुद्दा व्याख्या संबंधी मुद्दा है, प्रेरणा का नहीं। अंततः पवित्रशास्त्र का लेखक परमेश्वर है!

तिथि - जाहिर तौर पर यह लेखकत्व से जुड़ा हुआ है।

A. यदि प्रेरित यूहन्ना ने ये पत्र लिखे थे, और विशेषतः 1 यूहन्ना, हम पहली शताब्दी के अंत के कुछ समय के बारे में बात कर रहे हैं। यह ज्ञानवादी झूठी धर्मशास्त्रीय/दार्शनिक प्रणालियों के विकास के लिए समय देगा और 1 यूहन्ना ("बालकों") की शब्दावली में भी उपयुक्त बैठेगा, जो विश्वासियों के एक कम आयु वाले समूह से एक वृद्ध व्यक्ति को दर्शाता है। जेरोम का कहना है कि यीशु के क्रूसित किए जाने के 68 वर्ष बाद तक यूहन्ना जीवित था। यह इस परंपरा के साथ उपयुक्त बैठता है।

B. ए. टी. रॉबर्टसन को लगता है कि 1 यूहन्ना को 85-95 ई. के बीच लिखा गया था, जबकि सुसमाचार 95 ई. तक लिखे गए थे।

C. *The New International Commentary Series on 1 John* by I. Howard Marshall का दावा है कि 60-100 ई. के बीच की तिथि आधुनिक विद्वत्ता जोहानिन लेखन की तारीख का जितना अनुमान लगाती है, उसके बहुत करीब है।

प्राप्तकर्ता

A. परंपरा दावा करती है कि यह पुस्तक रोमी प्रांत के एशिया माइनर (पश्चिमी तुर्की) को लिखी गई थी, जिसमें इफिसुस इसका प्रमुख महानगरीय क्षेत्र था।

B. ऐसा लगता है कि यह पत्र एशिया माइनर में कलीसियाओं के एक विशिष्ट समूह (जैसे कि कुलुस्सियों और इफिसियों) को भेजा गया था जो कि झूठे शिक्षकों की एक समस्या का सामना कर रहे थे, विशिष्ट रूप से
1. डोसेटिक ज्ञानवादी जिन्होंने मसीह की मानवता से इन्कार किया, लेकिन उसके देवत्व की पुष्टि की।
2. एंटीनोमियन ज्ञानवादी, जिन्होंने धर्मशास्त्र को आचारनीति/नैतिकता से अलग किया।

C. ऑगस्तीन (चौथी शताब्दी ई.) का कहना है कि यह पारथियों (बेबीलोन) को लिखा गया था। उसका कैसियोड्रस (छठी शताब्दी ई. की शुरुआत में) द्वारा अनुसरण किया गया। यह संभवतः 2 यूहन्ना 1 के वाक्यांश "चुनी हुई महिला," 1 पतरस 5:13 के वाक्यांश, "वह जो बेबीलोन में है," की गलतफहमी से आया है।

D. द मुराटोरियन फ्रैगमेंट,180-200 ई. के मध्य रोम में लिखी गई नये नियम की पुस्तकों की प्रारंभिक धर्मवैधानिक सूची, का दावा है कि यह पत्र "उनके सहयोगी चेलों और बिशपों के प्रोत्साहन के बाद" लिखा गया था (एशिया माइनर में)।

कुपन्थ

A. पत्र स्वयं ही स्पष्ट रूप से एक प्रकार की झूठी शिक्षा के खिलाफ प्रतिक्रिया है (यानी, "यदि हम कहें कि. . ." 1 यूहन्ना 1:6ff और "जो कोई यह कहता है. . ." 1 यूहन्ना 2:9; 4:20 [अभियोगात्मक भाषण]।

B. हम 1 यूहन्ना से आंतरिक प्रमाण द्वारा कुपन्थ के कुछ मूल सिद्धांतों को जान सकते हैं।
1. यीशु मसीह के देहधारण का एक खंडन
2. उद्धार में यीशु मसीह की केंद्रीयता का खंडन
3. एक उपयुक्त मसीही जीवनशैली का अभाव
4. ज्ञान पर जोर (अक्सर गुप्त)
5. बहिष्कार की ओर एक प्रवृत्ति

C. पहली शताब्दी का विन्यास

पूर्वी और पश्चिमी धर्मों के बीच पहली सदी का रोमी संसार सारसंग्रहवाद का समय था। यूनानी और रोमी सब देवताओं के मंदिर के देवता बदनाम थे। देवता के साथ व्यक्तिगत संबंधों और गुप्त ज्ञान पर जोर देने के कारण रहस्यपूर्ण धर्म बहुत लोकप्रिय थे धर्मनिरपेक्ष यूनानी दर्शन लोकप्रिय था और अन्य विश्वदृष्टिकोणों के साथ विलय कर रहा था। उदार धर्म के इस संसार में मसीही विश्वास की विशिष्टता आ गई (यीशु परमेश्वर के पास पहुँचने का एकमात्र मार्ग है, तुलना यूहन्ना 14:6)। कुपन्थ की सटीक पृष्ठभूमि जो भी रही हो, यह मसीहत की प्रतीत होती संकीर्णता को एक व्यापक यूनानी-रोमी दर्शकों के लिए प्रशंसनीय और बौद्धिक रूप से स्वीकार्य बनाने का एक प्रयास था।

D. संभावित विकल्प कि ज्ञानवादियों के किस समूह को यूहन्ना संबोधित कर रहा है

1. प्रारंभिक ज्ञानवाद
   a. पहली शताब्दी के प्रारंभिक ज्ञानवाद की बुनियादी शिक्षाओं में आत्मा और तत्व के बीच के सात्त्विक (अनन्त) द्वैतवाद पर जोर दिया गया प्रतीत होता है। आत्मा (प्रधान परमेश्वर) को अच्छा माना गया, जबकि तत्व स्वाभाविक रूप से बुरा था। यह द्वंद्ववाद प्लैटोवाद के आदर्श बनाम भौतिक, स्वर्गीय बनाम सांसारिक, अदृश्य बनाम दृश्य जैसा दिखता है। उद्धार के लिए आवश्यक गुप्त ज्ञान (सांकेतिक शब्द या गुप्त कोड जो एक आत्मा को प्रधान परमेश्वर तक पहुँचने के लिए दिव्य क्षेत्रों [*aeons*] से गुजरने देते हैं) के महत्त्व पर एक अत्यधिक बल दिया जाता था।
   b. प्रारंभिक ज्ञानवाद के दो रूप हैं जो जाहिर तौर पर 1 यूहन्ना की पृष्ठभूमि में हो सकते हैं
      (1) डोसेटिक ज्ञानवाद, जो यीशु की सच्ची मानवता को नकारता है क्योंकि मामला बुराई है
      (2) सेरिंथियन ज्ञानवाद, जो मसीह को अच्छे प्रधान परमेश्वर और दुष्ट तत्व के बीच कई *aeons* या दिव्य स्तरों में से एक के रूप में पहचानता है । यह "मसीह आत्मा" मानव यीशु में उसके बपतिस्मे पर आया और उसके क्रूस पर चढ़ने से पहले उसे छोड़ दिया।
      (3) इन दोनों समूहों में से कुछ ने सन्यास (यदि शरीर इसे चाहता है, तो वह दुष्ट है), अन्य विधिमुक्तिवाद (यदि शरीर इसे चाहता है तो उसे दें) का पालन किया। पहली सदी में ज्ञानवाद की एक विकसित प्रणाली का कोई लिखित प्रमाण नहीं है। दूसरी सदी के मध्य तक प्रलेखित प्रमाण मौजूद नहीं थे। "ज्ञानवाद" के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें
         (a) *The Gnostic Religion* by Hans Jonas, published by Beacon Press
         (b) *The Gnostic Gospels* by Elaine Pagels, published by Random House
         (c) *The Nag Hammadi Gnostic Texts and the Bible* by Andrew Helmbold
2. इग्नेशियस ने अपने साहित्यिक कार्य *to the Smymaeans* iv-v में कुपन्थ के एक अन्य संभावित स्रोत का सुझाव दिया है। उन्होंने यीशु के देहधारण से इन्कार किया और विधिमुक्त जीवनशैली का निर्वाह किया।
3. फिर भी कुपन्थ के एक और कम संभावित स्रोत अन्ताकिया का मिएन्डर है, जो इरेनुयस के लेखन, *Against Heresies* XXIII से जाना जाता है। वह शमौन समारी का अनुयायी और गुप्त ज्ञान का समर्थक था।

E. आज का कुपन्थ

1. यह कुपन्थ की भावना आज हमारे बीच मौजूद है जब लोग मसीही सत्य को विचार की अन्य प्रणालियों के साथ संयोजित करने का प्रयास करते हैं।
2. यह कुपन्थ की भावना आज हमारे बीच मौजूद है जब लोग व्यक्तिगत संबंधों और जीवन शैली के विश्वास के बहिष्कार के लिए "सही" सिद्धांत पर जोर देते हैं।
3. यह कुपन्थ की भावना आज भी हमारे बीच मौजूद है जब लोग मसीहत को एक विशिष्ट बौद्धिक संभ्रांतता में बदल देते हैं।
4. यह कुपन्थ की भावना आज भी हमारे बीच मौजूद है जब धार्मिक लोग सन्यास या विधिमुक्तिवाद की ओर रुख करते हैं।

उद्देश्य

A. इसमें विश्वासियों के लिए एक व्यावहारिक केन्द्र-बिंदु है
   1. उन्हें आनन्द देने के लिए (तुलना 1 यूहन्ना 1:4)
   2. उन्हें ईश्वरीय जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए (तुलना 1:7; 2:1)
   3. उन्हें आज्ञा देने के लिए (और उन्हें याद दिलाना)कि वे एक दूसरे से प्रेम करें (तुलना 1 यूहन्ना 4:7-21) और न कि संसार से (तुलना 1 यूहन्ना 2:15-17)।
   4. उन्हें मसीह में उनके उद्धार का आश्वासन देने के लिए (तुलना 1 यूहन्ना 5:13)

B. इसमें विश्वासियों के लिए एक सैद्धांतिक केंद्रबिंदु है।
   1. यीशु के देवत्व और मानवता को अलग करने की त्रुटि का खंडन करें
   2. आध्यात्मिकता को एक ईश्वरीय जीवन से रहित बौद्धिकता में अलग करने की त्रुटि का खंडन करें।
   3. उस त्रुटि का खंडन करें कि दूसरों से अलगाव करके किसी को बचाया जा सकता है

वाचन चक्र एक

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की स्वयं की व्याख्या के लिए ज़िम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को अपने प्रकाश में चलना चाहिए। आप, बाइबल, और पवित्र आत्मा व्याख्या में प्राथमिकता है। आपको इसे एक टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक बैठक में पढ़ें। संपूर्ण पुस्तक की केंद्रीय विषय वस्तु अपने स्वयं के शब्दों में बताएं।

1. पूरी किताब की विषय वस्तु
2. साहित्य का प्रकार (शैली)

वाचन चक्र दो

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की स्वयं की व्याख्या के लिए ज़िम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को अपने प्रकाश में चलना चाहिए। आप, बाइबल, और पवित्र आत्मा व्याख्या में प्राथमिकता है। आपको इसे एक टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को दूसरी बार एक बैठक में पढ़ें। मुख्य विषयों की रूपरेखा बनाएं और एक वाक्य में इस विषय को व्यक्त करें।

1. पहली साहित्यिक इकाई का विषय
2. दूसरी साहित्यिक इकाई का विषय
3. तीसरी साहित्यिक इकाई का विषय
4. चौथी साहित्यिक इकाई का विषय
5. आदि।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1 यूहन्ना 1:1-2:2

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग*

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
जीवन का वचन	जिसे सुना, देखा, और स्पर्श किया	परिचय	जीवन का वचन	अवतरित वचन और पिता और पुत्र के साथ सहभागिता
1:1-4	1:1-4	1:1-4	1:1-4	1:1-4
परमेश्वर ज्योति है	उसके साथ सहभागिता का आधार	पाप के प्रति उचित रवैया	परमेश्वर ज्योति है	ज्योति में चलना
				(1:5-2:28)
1:5-10	1:5-2:2	1:5-10	1:5-7	1:5-7
				पहली शर्त: पाप से संबंध तोड़ना
			1:8-10	1:8-2:2

* हालांकि वे प्रेरित नहीं हैं, अनुच्छेद विभाग मूल लेखक के अभिप्राय को समझने और अनुसरण करने की कुंजी है। प्रत्येक आधुनिक अनुवाद ने अनुच्छेद को विभाजित और सारांशित किया है। हर अनुच्छेद में एक केंद्रीय विषय, सत्य या विचार होता है। प्रत्येक संस्करण उस विषय को अपने विशिष्ट तरीके से समाहित करता है। जब आप पाठ को पढ़ते हैं, अपने आप से पूछें कि कौन सा अनुवाद आपकी विषय और पद विभाजन की समझ के लिए उपयुक्त है।
हर अध्याय में हमें पहले बाइबल पढ़ना चाहिए और उसके विषयों (अनुच्छेदों) को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए, फिर आधुनिक संस्करणों के साथ अपनी समझ की तुलना करनी चाहिए। केवल जब हम मूल लेखक के अभिप्राय को उसके तर्क और प्रस्तुति को समझकर समझते हैं, तब हम सही मायने में बाइबल को समझ सकते हैं। केवल मूल लेखक ही प्रेरित है-पाठकों को संदेश को बदलने या संशोधित करने का कोई अधिकार नहीं है। बाइबल के पाठकों पर अपने दिन और अपने जीवन के लिए प्रेरित सत्य को लागू करने की ज़िम्मेदारी है।
ध्यान दें कि सारे तकनीकी शब्दों और संक्षिप्तीकरणों को निम्नलिखित आलेखों में स्पष्ट रूप से समझाया गया है: यूनानी व्याकरणिक संरचना की संक्षिप्त परिभाषा, पाठ संबंधी आलोचना और शब्दावली।

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

A. यह अवतरण यूहन्ना के सुसमाचार के प्रस्तावना (1:1-18 भौतिक सृजन से पहले) से संबंधित है, जो कि उत्पत्ति 1:1 (भौतिक सृजन) से संबंधित है। हालाँकि, यहाँ यह यीशु की सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत को दर्शाता है।

B. इन पर बल दिया गया है
   1. यीशु मसीह की संपूर्ण मानवता
      a. मानव इंद्रियों से संबंधित कृदंत : दृष्टि, ध्वनि, स्पर्श (तुलना 1 यूहन्ना 1:1,3)। यीशु सही मायने में मनुष्य और शारीरिक था
      b. यीशु के पूर्ण नाम
         (1) जीवन का वचन (तुलना 1 यूहन्ना 1:1)
         (2) उसका पुत्र यीशु मसीह (तुलना 1 यूहन्ना 1:3)
   2. नासरत के यीशु का देवत्व
      a. पूर्व-अस्तित्व (1 यूहन्ना 1:1,2)
      b. देहधारण (1 यूहन्ना 1:2)

ये सत्य ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों की विश्वदृष्टि के विरुद्ध हैं।

वाक्यविन्यास

A. पद 1-4
   1. पद 1-3a यूनानी में एक वाक्य बनाते हैं।
   2. मुख्य क्रिया "सुनाते" 1 यूहन्ना 1:3 में है। प्रेरितिक प्रचार की विषयवस्तु पर जोर दिया गया है।
   3. 1 यूहन्ना 1:1 में चार संबंध-सूचक खंड हैं जिन्हें जोर देने के लिए उनके खंडों में आगे रखा गया है।
      a. "जो आदि से था"
      b. "जिसे हमने सुना"
      c. "जिसे हमने अपनी आँखों से देखा"
      d. "जिसे हमने ध्यान से देखा और हमारे हाथों से स्पर्श किया"
   4. पद 2 मसीह के देहधारण के विषय में एक उपवाक्य लगता है। यह तथ्य कि यह व्याकरणिक रूप से बहुत अजीब है, इस पर ध्यान आकर्षित करता है!
   5. पद 3 और 4 यूहन्ना की प्रेरितिक उद्घोषणा के उद्देश्यों को परिभाषित करते हैं: सहभागिता और आनन्द। प्रेरितिक प्रत्यक्षदर्शी विवरण ग्रंथ को धार्मिक मान्यता देने के आरम्भिक कलीसिया के मानदंडों में से एक थे।
   6. पद 1 में क्रिया काल के प्रवाह पर ध्यान दें।
      a. अपूर्ण (पूर्व- अस्तित्व में)
      b. पूर्ण, परिपूर्ण (बने रहनेवाला सत्य)
      c. अनिर्दिष्टकाल, अनिर्दिष्टकाल (विशिष्ट उदाहरण)

B. पद 1:5-2:2
   1. 1 यूहन्ना 1:5-2:2 में सर्वनाम बहुत अस्पष्ट हैं, लेकिन मुझे लगता है कि 1 यूहन्ना 1:5 को छोड़कर लगभग सभी, पिता का उल्लेख करते हैं (इफिसियों 1:3-14 के समान)
   2. सभी "यदि" तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं जो संभावित कार्य की बात करते हैं।
   3. इनके बीच एक महत्त्वपूर्ण धर्मशास्त्रीय भिन्नता है।
      a. "पाप" के संदर्भ में क्रियाकाल वर्तमान बनाम अनिर्दिष्टकाल
      b. एकवचन और बहुवचन, "पाप" बनाम "पापों"

विधर्मी

A. विधर्मियों के झूठे दावों को 1 यूहन्ना 1:1,6,8,10; 2:4,6,9 में देखा जा सकता है ।

B. पद 5-10 परमेश्वर को जानने (धर्मशास्त्र) को परमेश्वर का अनुसरण करने(नैतिकता) से अलग करने के धर्मशास्त्रीय

प्रयास से संबंधित है। यह ज्ञान पर एक अनुचित ज्ञानवाद के अत्यधिक बल का प्रतीक है। जो लोग परमेश्वर को जानते हैं वे अपनी जीवनशैली में उसकी विशेषताओं को प्रकट करेंगे।

C. पद 1:8-2:2 को 3:6-9 के साथ संतुलन में रखना चाहिए। वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वे संभवतः दो अलग-अलग त्रुटियों का खंडन करते हैं:
   1. धर्मशास्त्रीय त्रुटि (कोई पाप नहीं)
   2. नैतिक त्रुटि (पाप से कोई फर्क नहीं पड़ता)

D. 1 यूहन्ना 2:1-2 पाप को बहुत हल्के में लेने (विधिमुक्तिवाद) और मसीही आलोचनावाद, सांस्कृतिक कानूनीवाद या सन्यास की आवर्तक समस्या के बीच एक संतुलन का प्रयास है।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 1:1-4
[1]उस जीवन के वचन के संबंध में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, जिसे हमने अपनी आँखों से देखा, वरन जिसे ध्यानपूर्वक देखा और हमारे हाथों ने स्पर्श किया-- [2]वह जीवन प्रकट हुआ; हमने उसे देखा है और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार सुनाते हैं जो पिता के साथ था और हम पर प्रकट हुआ--
[3]जिसे हमने देखा और सुना, उसी का समाचार हम तुम्हें भी सुनाते हैं, कि तुम भी हमारे साथ सहभागिता रखो; वास्तव में हमारी यह सहभागिता पिता के और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। [4]और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।

1:1 "जो" पुस्तक एक नपुंसक सर्वनाम के साथ आरम्भ होती है। यह परमेश्वर के संदेश के दोहरे पहलुओं की बात करता है जो है
1. यीशु के बारे में संदेश
2. स्वयं यीशु का व्यक्तित्व

सुसमाचार एक संदेश, एक व्यक्ति और एक जीवनशैली है।

▣ **"था"** यह एक अपूर्ण निर्देशात्मक है। यह यीशु के पूर्व-अस्तित्व का दावा करता है (यानी, यह यूहन्ना के लेखन में एक आवर्तक विषय है, तुलना 1 यूहन्ना 1:2; यूहन्ना 1:1,15; 3:13; 8:57-58; 17:5)। यह उसके देवत्व का दावा करने का एक तरीका था। यीशु ने पिता को प्रकट किया क्योंकि वह आरम्भ से ही पिता के साथ रहा है।

▣ **"आदि से"** यह उत्पत्ति 1 और यूहन्ना 1 का एक स्पष्ट संकेत है, लेकिन यहाँ यह यीशु के सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत को संदर्भित करता है (विशेष विषय: *Archē* यूहन्ना 1:1 पर देखें)। यीशु का आना "योजना B" नहीं थी। सुसमाचार हमेशा से परमेश्वर की छुटकारे की योजना था (तुलना उत्पत्ति 3:15; प्रेरितों के काम 2:23; 3:13; 4:28; 13:29)। इस संदर्भ में यह वाक्यांश यीशु के साथ बारह प्रेरितों की व्यक्तिगत आकस्मिक भेंट की शुरुआत को संदर्भित करता है।

यूहन्ना अक्सर "आदि" (*archē*) की अवधारणा का प्रयोग करता है। अधिकांश घटनाएँ दो आधारभूत श्रेणियों में विभाजित होती हैं।

1. सृजन से
   a. यूहन्ना 1:1,2 (आदि में यीशु)
   b. यूहन्ना 8:44; 1 राजाओं 3:8 (शैतान आदि से हत्यारा और झूठा)
   c. प्रकाशितवाक्य 3:14; 21:6,12 (यीशु आदि और अंत)
2. यीशु के देहधारण और सेवकाई के समय से
   a. यूहन्ना 8:25; 1 यूहन्ना 2:7 [दो बार]; 3:11; 2 यूहन्ना 5,6 (यीशु के उपदेश)
   b. यूहन्ना 15:27; 16:4 (यीशु के साथ)
   c. 1 यूहन्ना 1:1 (यीशु की सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत से)
   d. 1 यूहन्ना 2:13,24 [दो बार] (यीशु पर उनके विश्वास से)
   e. यूहन्ना 6:64 (उनकी यीशु की अस्वीकृति से)
3. संदर्भ #2 का समर्थन करता है

विशेष विषय: यूहन्ना 1 1 यूहन्ना 1 की तुलना में (SPECIAL TOPIC: JOHN 1 COMPARED TO 1 JOHN 1)	
सुसमाचार	**पत्र**
आदि में (1:1,2)	जो आदि से था (1:1)
वचन (*logos*) (1:1)	वचन (*logos*) (1:1)
जीवन (*zōē*) (1:4)	जीवन (*zōē*) (1:1,2)
यीशु में ज्योति (1:4)	परमेश्वर में ज्योति (1:5)
ज्योति का प्रकट होना (1:4)	ज्योति का प्रकट होना (1:5)
अन्धकार (1:5)	अन्धकार (1:5)
ज्योति की गवाही (1:6-8)	ज्योति की गवाही (1:3,5)
मनुष्यों का परमेश्वर के समीप लाया जाना (1:7,12-13)	मनुष्यों का परमेश्वर के समीप लाया जाना (1:3)
उसकी महिमा देखी (1:14)	उसकी महिमा देखी (1:1-3)

▣ **"हम"** इसका तात्पर्य प्रेरितों (यानी, नये नियम के लेखकों) की सामूहिक फिर भी व्यक्तिगत गवाही से है। यह सामूहिक गवाही 1 यूहन्ना की विशेषता है। इसका प्रयोग 50 से अधिक बार किया गया है।

कुछ लोग इस संयोजक सर्वनाम को "यूहन्ना की परंपरा" के संदर्भ में देखते हैं। इसका तात्पर्य यूहन्ना के अद्वितीय धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण के संरक्षकों या उपदेशकों से है।

▣ **"सुना. . .देखा"** ये दोनों पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं जो बने रहने वाले परिणाम पर जोर देते हैं। यूहन्ना 1:1,3 में पाँच इंद्रियों से संबंधित कृदंतों के पुनरावर्ती प्रयोग द्वारा यूहन्ना यीशु की मानवता पर बल दे रहा था। इस प्रकार से वह नासरत के यीशु के जीवन और शिक्षण के लिए एक प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा करता है।

▣ **"देखा. . .और स्पर्श किया"** ये दोनों अनिर्दिष्टकाल निर्देशात्मक हैं जो विशिष्ट घटनाओं पर जोर देते हैं। "देखा" का अर्थ है "बारीकी से देखा" (तुलना यूहन्ना 1:14), "स्पर्श किया" का अर्थ है "महसूस करके बारीकी से जाँचा" (तुलना यूहन्ना 20:20,27; लूका 24:39)।

"स्पर्श किया" या "हाथ लगाया" (*psēlaphaō*) के लिए यूनानी शब्द नये नियम में केवल दो पदों में पाया गया है: यहाँ और लूका 24:39 में। लूका में यह यीशु के साथ एक पुनरुत्थान के बाद की आकस्मिक भेंट के लिए प्रयोग किया जाता है। 1 यूहन्ना उसी अर्थ में इसका प्रयोग करता है।

▣ **"जीवन का वचन"** *logos* शब्द के प्रयोग ने यूनानी झूठे शिक्षकों का ध्यान आकर्षित करने का काम किया, जैसा कि यूहन्ना रचित सुसमाचार के प्रस्तावना में है (तुलना 1 यूहन्ना 1:1)। यूनानी दर्शन में इस शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग किया गया था। इसमें इब्रानी जीवन की एक विशिष्ट पृष्ठभूमि भी थी (तुलना 1 यूहन्ना की प्रस्तावना, C)। यहाँ यह वाक्यांश सुसमाचार की विषय वस्तु और सुसमाचार के व्यक्ति दोनों को संदर्भित करता है।

1:2 यह पद "जीवन" को परिभाषित करने वाला एक उपवाक्य है।

▣ **"जीवन"** "*Zōē* " (1 यूहन्ना 1:2 दो बार) यूहन्ना के लेखन में आत्मिक जीवन, पुनरुत्थान जीवन, नए युग के जीवन या परमेश्वर के जीवन के लिए लगातार प्रयोग किया गया है (तुलना यूहन्ना 1:4; 3:15,36 [दो बार]; 4:14,36; 5:24 [दो बार], 26 [दो बार], 29,39,40; 6:27,33,35,40,47,48,51,53,54,63,68; 8:12; 10:10,28; 11:25; 12: 25,50; 14:6; 17:2,3; 20:31; 1 यूहन्ना 1:1,2; 2:25; 3:14-15; 5:11,12,13,16,20)। यीशु ने स्वयं को "जीवन" कहा (तुलना यूहन्ना 14:6)।

▣ **"प्रकट हुआ"** इस क्रिया का प्रयोग इस पद में दो बार किया गया है और दोनों अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य निर्देशात्मक हैं। कर्मवाच्य का प्रयोग अक्सर पिता परमेश्वर के प्रतिनिधित्व के लिए किया जाता है। इस शब्द (*phaneroō*) का तात्पर्य है "जो पहले से उपस्थित था उसे ज्योति में लाना" यह यूहन्ना का एक पसंदीदा शब्द था (तुलना यूहन्ना 1:31; 3:21; 9:3; 17:6; 1 यूहन्ना 1:2[दो बार]; 2:19; 3:5,8,10; 4:9)। अनिर्दिष्टकाल देहधारण पर जोर देता है (तुलना यूहन्ना 1:14), जिसे झूठे शिक्षकों ने नकार दिया।

▣ **"गवाही देते हैं"** यह यूहन्ना के व्यक्तिगत अनुभव (अर्थात, वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक) का संदर्भ है। यह शब्द अक्सर एक अदालत के मामले में गवाही के लिए प्रयोग किया जाता था। विशेष विषय: यीशु के गवाह यूहन्ना 1:8 पर देखें।

▣ **"समाचार सुनाते"** यह यूहन्ना के आधिकारिक गवाही (अर्थात, वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक) को दर्शाता है जो उसके प्रचार और लेखन में दर्ज की गई है। यह 1 यूहन्ना 1:1-3 की मुख्य क्रिया है। इसे दो बार दोहराया गया है (1 यूहन्ना 1:2 और 1 यूहन्ना 1:3)।

▣ **"पिता के साथ था"** 1 यूहन्ना 1:1 के समान, यह यीशु के पूर्व-अस्तित्व का दावा है। यह वाक्यांश रचना यूहन्ना 1:1 जैसी है। देवता को मनुष्य के रूप में अवतरित किया गया है (तुलना यूहन्ना 1:14)। यीशु को जानना परमेश्वर को जानना है (तुलना यूहन्ना 14:8-11)। यह यूहन्ना के ऊर्ध्वाधर द्वैतवाद का एक उदाहरण है।

1:3 "जिसे हमने देखा और सुना, उसी का समाचार हम तुम्हें भी सुनाते हैं" यह पाँचवाँ संबंधवाचक खंड है, जो 1 यूहन्ना 1:2 के उपवाक्य के बाद 1 यूहन्ना 1:1 के विचार को पुनः आरम्भ करता है। यह 1 यूहन्ना 1:1 में पाई जाने वाली बोध की क्रियाओं को दोहराता है।

▣ **"उसी का समाचार हम तुम्हें भी सुनाते हैं"** यह 1 यूहन्ना 1:1-3 की मुख्य क्रिया है। यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। परमेश्वर को जानना उसके बच्चों के साथ एक सहभागिता की माँग करता है!

▣ **"कि तुम भी हमारे साथ सहभागिता रखो"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक के साथ एक उद्देश्य खंड (*hina*) है।सुसमाचार का कथित उद्देश्य यह था कि जिन लोगों ने यीशु को न कभी सुना या देखा है उन्हें प्रेरितिक गवाही के द्वारा बचाया जा सके (तुलना यूहन्ना 17:20; 20:29-31)। जताने वाले अनुग्रह में यही सहभागिता है जो "आनन्द," "शांति," और "आश्वासन" लाती है! कलीसिया विश्वासियों का एक समाज, विश्वासियों का एक समुदाय है! सुसमाचार पूरी दुनिया के लिए है।

विशेष विषय: *KOINŌNIA* (सहभागिता) (SPECIAL TOPIC: *KOINŌNIA* (FELLOWSHIP))

शब्द "सहभागिता" (*koinōnia*) का अर्थ है

1. किसी व्यक्ति के साथ घनिष्ठ संबंध
   a. पुत्र के साथ (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:9; 1 यूहन्ना 1:6)
   b. आत्मा के साथ (तुलना 2 कुरिन्थियों 13:14; फिलिप्पियों 2:1)
   c. पिता और पुत्र के साथ (तुलना 1 यूहन्ना 1:3)
   d. वाचा के अन्य भाइयों / बहनों के साथ (तुलना प्रेरितों 2:42; 2 कुरिन्थियों 8:23; गलातियों 2:9; फिलेमोन पद 17; 1 यूहन्ना 1:3,7)
   e. बुराई के साथ नहीं (तुलना 2 कुरिन्थियों 6:14)
2. चीजों या समूहों के साथ घनिष्ठ संबंध
   a. सुसमाचार के साथ (तुलना फिलिप्पियों 1:5; फिलेमोन पद 6)
   b. मसीह के लहू के साथ (तुलना 1 कुरिन्थियों 10:16)
   c. अन्धकार के साथ नहीं (तुलना 2 कुरिन्थियों 6:14)
   d. दुःखों में (तुलना 2 कुरिन्थियों 1: 7; फिलिप्पियों 3:10; 4:14; 1 पतरस 4:13)।
3. उदार रूप से दिया गया दान या योगदान। (रोमियों 12:13; 15:26; 2 कुरिन्थियों 8:4; 9:13; फिलिप्पियों 4:15; इब्रानियों 13:16)।
4. मसीह के माध्यम से परमेश्वर की कृपा का दान, जो उसके और उसके भाई और बहनों के साथ मानवजाति की सहभागिता को पुनर्स्थापित करता है

यह क्षैतिज संबंध (मानव से मानव) जिसे ऊर्ध्वाधर संबंध (मानव से सृष्टिकर्त्ता) द्वारा लाया जाता है, का दावा करता है। यह मसीही समुदाय की आवश्यकता और आनंद पर भी जोर देता है (यानी, इब्रानियों 10:25)।

विशेष विषय: मसीहत सामूहिक है (SPECIAL TOPIC: CHRISTIANITY IS CORPORATE)

A. पौलुस और पतरस का परमेश्वर के लोगों के लिए बहुवचन रूपकों का प्रयोग
   1. देह (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:12-20)
   2. खेती (तुलना 1 कुरिन्थियों 3:9)
   3. घर (तुलना 1 पतरस 2:4-5)

B. "संत" शब्द हमेशा बहुवचन होता है (फिलिप्पियों 4:21 को छोड़कर, लेकिन वहाँ भी यह सामूहिक है)
C. "विश्वासी का याजकपन" (यानी, आत्मा की योग्यता) पर मार्टिन लूथर का सुधार जोर एक बाइबल की पूर्वधारणा है। वास्तव में बाइबल "विश्वासियों के याजकपन" की बात करती है (तुलना निर्गमन 19:6; 1 पतरस 2:5,9; प्रकाशितवाक्य 1:6)।
D. प्रत्येक विश्वासी के लाभ के लिए वरदान दिया जाता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:7)
E. केवल सहयोग से ही परमेश्वर के लोग प्रभावी हो सकते हैं। सेवा सामूहिक है (तुलना इफिसियों 4:11-12)।

▣ **"पिता के साथ. . .उसके पुत्र के साथ"** ये वाक्यांश पूर्वसर्ग और निश्चियवाचक उपपद में व्याकरणिक रूप से समानांतर हैं। यह वाक्यविन्यास यीशु की समानता और देवत्व की पुष्टि करता है (तुलना यूहन्ना 5:18; 10:33; 19:7)।जैसा झूठे शिक्षकों का तात्पर्य था पुत्र (अवतरित परमेश्वर) के बिना पिता (प्रधान परमेश्वर) को प्राप्त करना असंभव है (तुलना 1 यूहन्ना 2:23; 5:10-12)।

पिता और पुत्र के साथ यह सहभागिता यूहन्ना 14:23 के पारस्परिक "बने रहने" के अवतरण के समान है।

1:4 "ये बातें हम इसलिए लिखते हैं" यह पूरी पुस्तक या विशेष रूप से 1 यूहन्ना 1:1-3 का उल्लेख हो सकता है। यही अस्पष्टता 1 यूहन्ना 2:1 में देखी गई है। लेखक अपने उद्देश्यों में से एक को यहाँ बताता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:1)।

▣ **"कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए"** यह एक वर्णनात्मक पूर्ण कर्मवाच्य संशयार्थ-सूचक है(तुलना यूहन्ना 15:11; 16:20,22,24; 17:13; 2 यूहन्ना 12; 3 यूहन्ना 4)। पिता, पुत्र, और आत्मा के साथ सहभागिता के द्वारा विश्वासियों के आनन्द को पूरा किया गया था। झूठे शिक्षकों के अवरोधों के प्रकाश में यह एक महत्त्वपूर्ण तत्व था। इस पुस्तक को लिखने में यूहन्ना के कथित उद्देश्य हैं।

1. परमेश्वर और उसके बच्चों के साथ सहभागिता
2. आनन्द
3. आश्वासन
4. नकारात्मक पक्ष में, उसका उद्देश्य ज्ञानवादी शिक्षकों के झूठे धर्मशास्त्र के खिलाफ विश्वासियों को सुसज्जित करना था

इस पद में इनके बीच में एक यूनानी संस्करण है।

1. "हमारा आनन्द," MSS א, B, L; NASB, NRSV, NJB, REB, NIV
2. "तुम्हारा आनन्द," MSS A, C; NKJV

UBS[4] #1 को प्राथमिकता देता है। क्या "हमारा" प्रेरितिक प्रत्यक्षदर्शियों या विश्वासियों को संदर्भित करता है? मसीही आश्वासन के प्रति 1 यूहन्ना के धर्मशास्त्रीय जोर के कारण, मुझे लगता है कि यह सब विश्वासियों को इंगित करता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 1:5-2:2

5वह समाचार जो हमने उस से सुना है और तुमको सुनाते हैं, वह यह है, कि परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। 6यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर भी अन्धकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य पर आचरण नहीं करते; 7परन्तु यदि हम ज्योति में चलें जैसा वह स्वयं ज्योति में है, तो हमारी सहभागिता एक-दूसरे से है, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पाप से शुद्ध करता है। 8यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं है। 9यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। 10यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं। 2:1मेरे बच्चों, मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो। परन्तु यदि कोई पाप करता है, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात यीशु मसीह जो धर्मी है; 2वह स्वयं हमारे पापों का प्रायश्चित है; और हमारा ही नहीं वरन समस्त संसार के पापों का भी।

1:5 "वह समाचार जो हमने सुना है" सर्वनाम "हम" यूहन्ना और अन्य प्रत्यक्षदर्शियों श्रोताओं और यीशु के सांसारिक जीवन के दौरान उसके अनुयायियों को संदर्भित करता है। यूहन्ना 1 यूहन्ना 2:1 में अपने पाठकों ("आप") से सीधे बात करता है, शायद एशिया माइनर की कलीसियाओं का उल्लेख करता है।

क्रिया "सुना" एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह 1 यूहन्ना 1:1-4 में शारीरिक इंद्रियों से संबंधित सुस्पष्ट आवर्तक

शब्द को दर्शाता है। एक अर्थ में यह प्रेरित यूहन्ना है जो यीशु के शिक्षण सत्रों में अपनी व्यक्तिगत उपस्थिति की पुष्टि करता है। यूहन्ना यीशु के प्रकटीकरण को आगे बढ़ा रहा है, न कि उसके अपने! यह भी संभव है कि सुसमाचारों के अनोखे "मैं हूँ" कथन यीशु के निजी उपदेशों की यूहन्ना की यादें थीं।

▣ **"उससे"** "उससे" पूरे यूहन्ना 1:5-2:2 के पूरे खंड में एकमात्र सर्वनाम है जो यीशु को संदर्भित करता है। यीशु पिता को प्रकट करने के लिए आया (तुलना यूहन्ना 1:18)। धर्मशास्त्रीय रूप से कहें तो, यीशु तीन उद्देश्यों के लिए आया था।

1. पिता को प्रकट करने के लिए (तुलना 1 यूहन्ना 1:5)
2. विश्वासियों को अनुसरण करने के लिए एक उदाहरण देने के लिए (तुलना 1 यूहन्ना 1:7)
3. पापी मानव जाति के बदले में मरने के लिए (तुलना 1 यूहन्ना 1:7; 2:2)

▣ **"परमेश्वर ज्योति है"** कोई लेख नहीं है। यह परमेश्वर के स्वभाव के प्रकाशन संबंधी और नैतिक पहलुओं पर जोर दे रहा है (तुलना भजनसंहिता 27:1; यशायाह 60:20; मीका 7:8; 1 तीमुथियुस 6:16; याकूब 1:17)। ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों ने कहा कि ज्योति ज्ञान को संदर्भित करती है, लेकिन यूहन्ना का कहना है कि यह नैतिक शुद्धता को भी संदर्भित करती है। "ज्योति" और "अन्धकार" सामान्य शब्द थे (मृत सागर चीरकों और प्रारंभिक ज्ञानवाद में एक नैतिक द्वैतवाद इन शब्दों का प्रयोग करते हुए में भी पाया गया है)। यह अच्छे और बुरे के बीच द्वैतवाद से संबंधित है (यानी, यूहन्ना 1:5; 8:12; 12:46) और संभवत: आत्मा बनाम तत्व के ज्ञानवादी द्वैतवाद से। यह देवत्व के बारे में यूहन्ना के सरल फिर भी गंभीर धर्मशास्त्रीय दावों में से एक है। अन्य हैं (1) "परमेश्वर प्रेम है" (तुलना 1 यूहन्ना 4:8,16) और (2) "परमेश्वर आत्मा है" (तुलना यूहन्ना 4:24)। परमेश्वर के परिवार को, यीशु की तरह (तुलना यूहन्ना 8:12; 9:5), उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करना चाहिए (तुलना मत्ती 5:14)। प्रेम, क्षमा और पवित्रता का यह परिवर्तित और परिवर्तनशील जीवन एक सच्चे रूपांतरण के प्रमाणों में से एक है।

▣ **"उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं"** यह जोर देने के लिए एक दोहरा नकारात्मक है। यह परमेश्वर के अपरिवर्तनीय पवित्र चरित्र का एक दावा है (तुलना 1 तीमु। 6:16; याकूब 1:17; भजनसंहिता 102:27; मलाकी 3:6)।

1:6 "यदि हम कहें" यह कई तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्यों में से पहला है जो झूठे शिक्षकों के दावों का उल्लेख करता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:8,10; 2:4,6,9)। ये कथन झूठे शिक्षकों के दावे की पहचान करने का एकमात्र तरीका है। वे आरंभिक (प्रारंभिक) ज्ञानवाद प्रतीत होते हैं।

एक कल्पित आपत्तिकर्ता की साहित्यिक तकनीक को अभियोगात्मक भाषण कहा जाता है। यह एक प्रश्न/उत्तर प्रारूप में सत्य को प्रस्तुत करने का एक तरीका था। इसे स्पष्ट रूप से मलाकी (तुलना मलाकी 1:2,6,7,12; 2: 14,21; 3:7,14) और रोमियों में देखा जा सकता है (तुलना रोमियों 2:3,17,21-23; 3:1,3,7-8,9,31; 4:1; 6:1; 7:7)।

▣ **"उसके साथ हमारी सहभागिता है"** विधर्मियों ने दावा किया कि सहभागिता केवल ज्ञान पर आधारित थी। यह प्लॉटो के यूनानी दर्शन का एक पहलू था। हालाँकि, यूहन्ना का दावा है कि मसीहियों को मसीह जैसा जीवन जीना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 1:7; लैव्यव्यवस्था 19:2; 20:7; मत्ती; 5:48)।

▣ **"फिर भी अन्धकार में चलें"** "चलें" एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है। यह एक बाइबल का रूपक है जो एक नैतिक जीवन शैली को व्यक्त करता है (तुलना इफिसियों 4:1,17; 5:2,15)। परमेश्वर ज्योति है जिसमें कोई अन्धकार नहीं है। उसके बच्चों को उसके जैसा होना चाहिए (तुलना मत्ती 5:48)।

▣ **"हम झूठ बोलते हैं और सत्य पर आचरण नहीं करते"** ये दोनों वर्तमान काल की क्रियाएँ हैं। यूहन्ना कई प्रकार के धार्मिक लोगों को झूठा बोलता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:10; 2:4,22; 4:20; यशायाह 29:13)। जीवनशैली के काम वास्तव में हृदय को प्रकट करते हैं (तुलना मत्ती 7)। विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में सत्य, यूहन्ना 6:55 पर देखें।

1:7 "परन्तु यदि हम ज्योति में चलें" यह एक और वर्तमान काल है जो निरंतर कार्य पर जोर देता है। "चलें" मसीही जीवन (यानी, इफिसियों 4:1,17; 5:2,15) के लिए एक नये नियम का रूपक है।

ध्यान दें कि कितनी बार "चलें" और वर्तमान काल क्रियाएँ मसीही जीवन से संबंधित हैं। सत्य कुछ ऐसा है जिसे हम जीते हैं, न कि केवल कुछ जिसे हम जानते हैं! यूहन्ना में सत्य एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है। यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"जैसा वह स्वयं ज्योति में है"** विश्वासियों को परमेश्वर की तरह सोचना और जीना है (तुलना मत्ती 5:48)। हम उसके

चरित्र को एक खोए हुए संसार पर प्रतिबिंबित करना है। उद्धार उत्पत्ति 3 के पतन में क्षतिग्रस्त हुई मानव जाति में परमेश्वर की छवि (यानी, उत्पत्ति 1:26,27), की पुनर्स्थापना है ।

▣ **"हमारी सहभागिता एक-दूसरे से है"** "सहभागिता" शब्द, यूनानी शब्द *koinōnia* है, जिसका अर्थ है दो व्यक्तियों के बीच एक संयुक्त भागीदारी (1 यूहन्ना 1:3 पर विशेष विषय देखें)। मसीहत यीशु के जीवन को बाँटने वाले विश्वासियों पर आधारित है। अगर हम क्षमा में उसके जीवन को स्वीकार करते हैं, तो हमें उसकी प्रेम की सेवकाई को स्वीकार करना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर को जानना भावात्मक सत्य नहीं है, बल्कि सहभागिता और ईश्वरीय जीवन की शुरुआत करता है। मसीहत का लक्ष्य मरने पर केवल स्वर्ग ही नहीं है, बल्कि अभी मसीही के समान होना है। ज्ञानवादी विधर्मियों की प्रवृत्ति थी एकान्तिकता की ओर। हालाँकि, जब कोई परमेश्वर के साथ सही संबंध में है, तो वह अपने संगी मसीही के साथ भी सही संबंध में होगा । अन्य मसीहियों के प्रति प्रेम का अभाव, परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों में एक समस्या का एक अतिस्पष्ट संकेत है (तुलना 1 यूहन्ना 4:20-21 और साथ ही मत्ती 5:7; 6:14-15; 18:21-35)

▣ **"यीशु का लहू"** यह मसीह की बलिदानकारी मृत्यु को दर्शाता है (तुलना यशायाह 52:13-53:12; मरकुस 10:45; 2 कुरिन्थियों 5:21)। यह 2:2 के समान है, "हमारे पापों का प्रायश्चित (आराधन) है।" यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के "देखो, परमेश्वर का मेमना जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (तुलना यूहन्ना 1:29) का जोर है। दोषियों के स्थान पर निर्दोष की मृत्यु हो गई!

प्रारंभिक ज्ञानवादियों ने यीशु की सच्ची मानवता को नकार दिया। यूहन्ना का "लहू" का प्रयोग यीशु की सच्ची मानवता को पुष्ट करता है।

नाम से संबंधित एक यूनानी पांडुलिपि परिवर्ती है।

1. यीशु - NASB, NRSV, NJB, REB, NET
2. मसीह - MSS א, B, C
3. यीशु मसीह - NKJV

यह एक ऐसा उदाहरण है जिसे Bart D. Herman, *The Orthodox Corruption of Scripture*, p. 153 में, यह दिखाने के लिए किया कि प्राचीन शास्त्रियों ने वर्तमान विधर्मियों का खंडन करने के लिए पाठ को और अधिक विशिष्ट बनाने की कोशिश की। विकल्प #3 MSS संस्करण की मध्यस्थता का प्रयास था।

▣ **"हमें सब पाप से शुद्ध करता है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। शब्द "पाप" बिना एक शब्द वर्ग के एकवचन है। इसका तात्पर्य हर प्रकार के पाप से है। ध्यान दें कि यह पद एक बार की शुद्धता (उद्धार, 1 यूहन्ना 1:7) पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहा है, लेकिन एक निरंतर शुद्ध होने की ओर(मसीही जीवन, 1 यूहन्ना 1:9)। दोनों मसीही अनुभव का हिस्सा हैं (तुलना यूहन्ना 13:10)।

1:8 "यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं" यह एक और तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है। पाप विश्वासियों के लिए भी पतित जगत की एक आत्मिक सच्चाई है। (तुलना रोमियो 7)। यूहन्ना रचित सुसमाचार अक्सर इस मुद्दे को संबोधित करता है (तुलना 1 यूहन्ना 9:41; 15:22,24; 19:11)। यह पद सभी प्राचीन और आधुनिक दावों को अस्वीकार करता है जो व्यक्तिगत नैतिक जिम्मेदारी से इन्कार करते हैं।

▣ **"अपने आप को धोखा देते हैं"** यह यूनानी वाक्यांश व्यक्तिगत, सत्य की अस्वीकृति को संदर्भित करता है, अज्ञानता को नहीं।

▣ **"हम में सत्य नहीं है"** एक पवित्र परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने का तरीका इन्कार नहीं, लेकिन अपने पाप को मानना और मसीह में उसके प्रावधान को स्वीकार करना है (तुलना रोमियों 3:21-31)। "सत्य" यीशु या यीशु के व्यक्तित्व के बारे में संदेश का संदर्भ हो सकता है (तुलना यूहन्ना 14:6)। यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर विशेष विषय देखें।

1:8,9 "यदि" ये दोनों तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

1:9 "मान लें" यह "बोलना" और "समान" से एक मिश्रित यूनानी शब्द है। विश्वासियों ने परमेश्वर के साथ सहमत होना जारी रखा है कि उन्होंने उसकी पवित्रता का उल्लंघन किया है (तुलना रोमियों 3:23)। यह वर्तमान काल है, जिसका अर्थ है कि चल रहा कार्य। पाप-स्वीकारोक्ति का तात्पर्य है

1. पापों का एक विशिष्ट नामकरण (1 यूहन्ना 1:9)
2. पापों की सार्वजनिक स्वीकृति (तुलना मत्ती 10:32; याकूब 5:16)
3. विशिष्ट पापों से मुड़ना (तुलना मत्ती 3:6; मरकुस 1:5; प्रेरितों 19:18; याकूब 5:16)

1 यूहन्ना इस शब्द का अक्सर प्रयोग करता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:9; 4:2,3,15; 2 यूहन्ना 7)। यीशु की मृत्यु क्षमा का साधन है, लेकिन पापी मानवजाति को प्रत्युत्तर देना चाहिए और विश्वास में प्रत्युत्तर देना जारी रखना चाहिए (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16)। विशेष विषय: अंगीकार यूहन्ना 9:22-23 पर देखें।

▣ **"हमारे पापों"** बहुवचन पर ध्यान दें। यह पाप के विशिष्ट कृत्यों को संदर्भित करता है।

▣ **"वह विश्वासयोग्य है"** यह परमेश्वर पिता को संदर्भित करता है (तुलना व्यवस्थाविवरण 7:9; 32: 4; भजनसंहिता 36:5; 40:10; 89:1,2,5,8; 92:2; 119:90; यशायाह 49:7; रोमियों 3:3; 1 कुरिन्थियों 1:9; 10:13; 2 कुरिन्थियों 1:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:24; 2 तीमुथियुस 2:13)। परमेश्वर पिता का अपरिवर्तनीय, दयालु, विश्वासयोग्य चरित्र हमारी पक्की आशा है! यह वाक्यांश परमेश्वर के वचन के प्रति उसकी विश्वासयोग्यता को अधिक सुस्पष्ट करता है (तुलना इब्रानियों 10:23; 11:11)। यह यिर्मयाह 31:34 में किए गए परमेश्वर के नए नियम के वादे का भी उल्लेख हो सकता है, जो पापों की क्षमा का वादा करता है।

▣ **"और धर्मी"** यह शब्द एक पवित्र परमेश्वर के अपवित्र लोगों को स्वतंत्रता से क्षमा करने से संबंधित एक संदर्भ में असामान्य है। हालाँकि, यह धर्मशास्त्रीय रूप से सटीक है क्योंकि परमेश्वर हमारे पापों को गंभीरता से लेता है, फिर भी उसने मसीह की प्रतिस्थापन मृत्यु में हमारी क्षमा के लिए साधन प्रदान किया है (तुलना रोमियों 3:21-31)। 1 यूहन्ना 2:29 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"क्षमा करने. . .शुद्ध करने"** ये दोनों ही अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक हैं। इस संदर्भ में ये दो शब्द पर्यायवाची हैं; वे खोए हुओं के उद्धार और परमेश्वर के साथ सहभागिता के लिए लगातार शुद्धिकरण दोनों को संदर्भित करते हैं (तुलना यशायाह 1:18; 38:17; 43:25; 44:22; भजनसंहिता 103: 3,11-13; मीका 7:19)। झूठे शिक्षक जिन्होंने सुसमाचार का खंडन किया, उन्हें उद्धार की आवश्यकता थी। विश्वासी जो पाप के कृत्यों को जारी रखते हैं, उन्हें सहभागिता की पुनर्स्थापना की आवश्यकता होती है। यूहन्ना पहले समूह को निहितार्थ से और दूसरे को स्पष्ट रूप से संबोधित करता है।

1:10 "यदि हम कहें" 1 यूहन्ना 1:6 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"हमने पाप नहीं किया"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जिसका तात्पर्य है कि किसी ने न तो भूतकाल में पाप किया है और न ही वर्तमान में। "पाप" शब्द एकवचन है और पाप को सामान्य रूप में संदर्भित करता है। यूनानी शब्द का अर्थ है "निशान चूकना।" इसका मतलब यह है कि पाप परमेश्वर के वचन में प्रकट की गई बातों ठहराया जाना और छोड़ देना दोनों हैं। झूठे शिक्षकों ने दावा किया कि उद्धार केवल ज्ञान से संबंधित था, जीवन से नहीं।

▣ **"हम उसे झूठा ठहराते हैं"** सुसमाचार सारी मानवजाति के पाप पर आधारित है (तुलना रोमियों 3:9-18,23; 5:1; 11:32)। या तो परमेश्वर (तुलना रोमियों 3:4) या जो पापहीनता का दावा करते हैं, झूठ बोल रहे हैं।

▣ **"उसका वचन हम में नहीं"** इसमें "*logos*" शब्द का दोहरा पहलू शामिल है, एक संदेश और एक व्यक्ति दोनों के रूप में (तुलना 1 यूहन्ना 1:1,8; यूहन्ना 14:6)। यूहन्ना अक्सर इसे "सत्य" के रूप में संदर्भित करता है।

2:1 "मेरे बच्चों" यूहन्ना 1 यूहन्ना में "बच्चों" के लिए दो अलग-अलग अल्पार्थक शब्दों का प्रयोग करता है।
1. *teknion* (तुलना 1 यूहन्ना 2:1,12,28; 3:7,18; 4:4; 5:21; यूहन्ना 13:33)
2. *paidion* (तुलना 1 यूहन्ना 2:14,18)

वे बिना किसी उद्देश्य के साथ धर्मशास्त्रीय विशेषता-सूचकों के पर्यायवाची हैं। ये स्नेही शब्द शायद यूहन्ना के लेखन के समय उसकी वृद्धावस्था के कारण आते हैं।

यूहन्ना 13:33 में यीशु ने चेलों को संदर्भित करने के लिए "बच्चों" शब्द का प्रयोग किया।

▣ **"मैं तुम्हें ये बातें इसलिए लिख रहा हूँ कि तुम पाप न करो"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है। यूहन्ना वर्तमान काल, पाप करने की चल रही अभ्यस्त जीवन शैली (तुलना 1 यूहन्ना 3:6,9) और संघर्षरत और प्रलोभित

मसीहियों द्वारा किए गए पाप के व्यक्तिगत कार्य के बीच एक निश्चित अंतर बना रहा है। वह निम्नलिखित की दो चरम सीमाओं के बीच एक संतुलन लाने की कोशिश कर रहा है

1. पाप को बहुत सहजता से लेना (तुलना रोमियों 6:1; 1 यूहन्ना 1:8-10; 3:6-9; 5:16)
2. व्यक्तिगत पापों पर मसीही निष्ठुरता और भंगुरता

ये दो चरमसीमाएँ शायद ज्ञानवादी शिक्षाओं के दो अलग-अलग सम्प्रदायों को दर्शाते हैं। एक समूह ने महसूस किया कि उद्धार एक बौद्धिक मामला था; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि कोई कैसे रहता था क्योंकि शरीर दुष्ट था। ज्ञानवादियों के दूसरे समूह का भी मानना था कि शरीर दुष्ट था और इसलिए, उसकी इच्छाओं में सीमित रहना पड़ा।

▣ **"परन्तु यदि कोई पाप करता है"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो संभावित कार्य की बात करता है। यहाँ तक कि मसीही भी पाप करते हैं (तुलना रोमियों 7)।

▣ **"तो पिता के पास हमारा एक सहायक है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो हमारे स्वर्गीय सहायक (*paraklētos*) के रूप में यीशु की चल रही मध्यस्थता को संदर्भित करता है। यह एक बचाव पक्ष के वकील या "मदद के लिए साथ में बुलाया गया" (*para* से, साथ में और *kaleō* से, बुलाना) के लिए एक कानूनी शब्द था। यह पवित्र आत्मा, हमारे सांसारिक, अंदर रहनेवाले वकील (तुलना यूहन्ना 14:16,26; 15:26; 16:7) के लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार में अटारी के उपदेश में प्रयोग किया गया है। हालाँकि, यह यीशु के लिए इस शब्द का एकमात्र प्रयोग है (हालाँकि यह यूहन्ना 14:16; रोमियों 8:34; इब्रानियों 4:14-16; 7:25; 9:24 में निहित है)। पौलुस ने इसी अवधारणा का प्रयोग रोमियों 8:34 में मसीह के मध्यस्थता के कार्य के लिए किया था। इसी अवतरण में वह रोमियों 8:26 में पवित्र आत्मा की मध्यस्थता की बात भी करता है। हमारे पास स्वर्ग .में एक सहायक (यीशु) और भीतर एक सहायक (आत्मा) है, दोनों को प्रेमी पिता ने अपनी ओर से भेजा है।

▣ **"यीशु मसीह जो धर्मी है"** यह चरित्रिकरण 1 यूहन्ना 1:9 में परमेश्वर पिता के लिए किया गया है। नए नियम के लेखक यीशु के देवत्व का दावा करने के लिए कई साहित्यिक तकनीकों का प्रयोग करते हैं।

1. परमेश्वर के लिए प्रयुक्त शीर्षकों का यीशु के लिए प्रयोग करके।
2. यीशु द्वारा किए गए परमेश्वर के कार्यों का दावा करके।
3. दोनों (क्रियाओं या पूर्वसर्गों के कर्म) का उल्लेख करते हुए व्याकरणिक समानांतर वाक्यांशों का प्रयोग करके

यह मसीह की पापहीनता (पवित्रता, परमेश्वर के समान होने) की बात करता है। (1 यूहन्ना 3:5; 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 2:18; 4:15; 7:26; 1 पतरस 2:22)। वह लोगों के लिए "धार्मिकता" लाने के लिए पिता का साधन था।

2:2

NASB, NKJV "वह स्वयं हमारे पापों का प्रायश्चित है"
NRSV "वह हमारे पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान है"
TEV "मसीह स्वयं वह माध्यम है जिसके द्वारा हमारे पाप क्षमा कर दिए जाते हैं"
NJB, RSV "हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए वह बलिदान है"

शब्द *hilasmos* सेप्टुआजिंट में वाचा के सन्दूक के ढक्कन के लिए जो अनुग्रह का सिंहासन या प्रायश्चित का स्थान कहलाता है, प्रयुक्त होता है। यीशु ने स्वयं को परमेश्वर के सामने हमारे दोषी स्थान पर रखा (तुलना 1 यूहन्ना 4:10; रोमियों 3:25)।

यूनानी-रोमी दुनिया में इस शब्द ने एक मूल्य चुकाने के द्वारा एक पराये देवता के साथ सहभागिता की पुनर्स्थापना की अवधारणा को आगे बढ़ाया, लेकिन वचन सेप्टुआजिंट में इस अर्थ में नहीं है (याद रखें नये नियम के लेखक (लूका को छोड़कर) बोलचाल की यूनानी में लिखने वाले इब्रानी विचारक थे)। इसका प्रयोग सेप्टुआजिंट और इब्रानियों 9:5 में " अनुग्रह का सिंहासन," का अनुवाद करने के लिए किया गया जो परम पवित्र स्थान में स्थित वाचा के सन्दूक का ढक्कन था, वह स्थान जहाँ प्रायश्चित के दिन राष्ट्र के लिए प्रायश्चित प्राप्त कर लिया गया (तुलना लैव्यव्यवस्था 16)।

इस शब्द को इस प्रकार से समझा जाना चाहिए, जो पाप के प्रति परमेश्वर की घृणा को कम न करे, लेकिन पापियों के प्रति उसके सकारात्मक छुटकारे के रवैये की पुष्टि करे। James Stewart's *A Man in Christ,* pp. 214-224 में एक अच्छी चर्चा पाई गई है। इसे पूरा करने का एक तरीका यह है कि इस पद का अनुवाद किया जाए ताकि यह मसीह में परमेश्वर के कार्य को प्रतिबिंबित करे: "एक सांत्वना देने वाला बलिदान" या "सांत्वना देने वाली सामर्थ्य के साथ।"

आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों में इस बलिदान शब्द को समझने के तरीके पर भिन्नताएँ हैं। "आराधन" शब्द का अर्थ है कि यीशु ने परमेश्वर के क्रोध को शांत किया। (रोमियों 1:1; 5:9; इफिसियों 5:6; कुलुस्सियों 3:6)। परमेश्वर की पवित्रता मानव जाति के पाप से अपमानित हुई है। यीशु की सेवकाई में इससे निपटा गया है (तुलना रोमियों 3:25; 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 2:17)।

कुछ विद्वानों (यानी, सी.एच. डोड) को लगता है कि एक मूर्तिपूजकों की(यूनानी) अवधारणा (एक देवता के क्रोध को शांत करने) को YHWH पर लागू नहीं किया जाना चाहिए, इसलिए, वे "प्रायश्चित" पसंद करते हैं जबकि यीशु की सेवकाई ने परमेश्वर के समक्ष मानवजाति के अपराध (यूहन्ना 1:29; 3:16) का सामना किया और पाप के खिलाफ परमेश्वर के क्रोध का नहीं। हालाँकि, दोनों बाइबल के आधार पर सच हैं।

▣ **"हमारे पापों का; और हमारा ही नहीं, वरन समस्त संसार के पापों का भी"** यह असीमित प्रायश्चित की क्षमता को दर्शाता है (तुलना 1 यूहन्ना 4:14; यूहन्ना 1:29; 3:16,17; 12:47; रोमियों 5:18; 1 तीमुथियुस 4:10; तीतुस 2:11; इब्रानियों 2:9; 7:25)। यीशु समस्त संसार के पाप और पापों के लिए मर गया (तुलना उत्पत्ति 3:15)। समस्त संसार को बचाए जाने से रोकने वाली एकमात्र चीज पाप नहीं, बल्कि अविश्वास है। हालाँकि, मनुष्यों को प्रत्युत्तर देना चाहिए और विश्वास, पश्चाताप, आज्ञाकारिता और दृढ़ता से प्रत्युत्तर देना जारी रखना चाहिए!

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. यूहन्ना पाँच इंद्रियों के संबंध में इतनी सारी क्रियाओं का प्रयोग क्यों करता है?
2. 1 यूहन्ना 1:7 और 9 में पाए जानेवाले बलिदानों संबंधी शब्दों को सूचीबद्ध करें।
3. उन विधर्मियों की मान्यताओं का वर्णन करें जिनसे यूहन्ना जूझ रहा है।
4. 1 यूहन्ना 1:9 का ज्ञानवादियों और विश्वासियों दोनों से क्या संबंध है?
5. "अंगीकार" का वर्णन करें और परिभाषित करें।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1 यूहन्ना 2:3-27

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
मसीह हमारा मध्यस्थ	उसके साथ सहभागिता का आधार (1:5-2:2)	आज्ञाकारिता	मसीह हमारा सहायक	ज्योति में चलना (1:5-2:28)
				पहली शर्त: पाप से अलग होना (1:8-2:3)
2:1-6	उसे जानने की जाँच	2:1-2	2:1-2	दूसरी शर्त: आज्ञाओं का पालन करना, विशेषतः प्रेम की
	2:3-11	2:3-6	2:3-6	2:3-11
नई आज्ञा		एक दूसरे से प्रेम	नई आज्ञा	
2:7-14		2:7-11	2:7-8	
	उनकी आत्मिक स्थिति	मसीह में परमेश्वर के साथ सच्चा संबंध	2:9-11	तीसरी शर्त: संसार से अलगाव
	2:12-14	2:12-14	2:12-13	2:12-17
	संसार से प्रेम न करो	संसार का सही मूल्यांकन	2:14	
2:15-17	2:15-17	2:15-17	2:15-17	
मसीही-विरोधी	अंतिम घड़ी के छल	सच्चे विश्वास के प्रति निष्ठा	मसीह का शत्रु	चौथी शर्त: मसीही विरोधियों से सावधान रहें
2:18-25	2:18-23	2:18-25	2:18-19	2:18-28
			2:20-21	
	सत्य तुम में बना रहे		2:22-23	
	2:24-27		2:24-25	
2:26-27		2:26-27	2:26-27	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

2:3-27 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. उसके आवर्तक विषयों के कारण 1 यूहन्ना की रूपरेखा बनाना बहुत मुश्किल है। हालाँकि, अधिकांश टिप्पणीकार इस बात से सहमत हैं कि अध्याय 1 के विषय अध्याय 2 में जारी रहते हैं, जो परमेश्वर के साथ सहभागिता की, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों, विशेषताएं हैं।

B. अध्याय 1 और 2 के बीच एक संरचनात्मक समानांतर है। यूहन्ना ज्ञानवादियों के झूठे अभिकथनों के विपरीत संदेश प्रस्तुत करता है।

अध्याय 1	अध्याय 2
1. यदि हम कहें. . .(1 यूहन्ना 2:6-7)	1. जो कहता है. . .(1 यूहन्ना 2:4-5)
2. यदि हम कहें. . .(1 यूहन्ना 2:8-9)	2. जो कहता है. . .(1 यूहन्ना 2:6)
3. यदि हम कहें. . .(1 यूहन्ना 2:10)	3. जो कहता है. . .(1 यूहन्ना 2:8-11)

C. यह संदर्भ कई परीक्षणों या प्रमाणों को सूचीबद्ध करता है जो एक सच्चे विश्वासी को प्रकट करते हैं (1 यूहन्ना 2:3-25)
   1. पाप को स्वीकार करने की इच्छा (आरम्भ में और नित्य) (1 यूहन्ना 1: 8))
   2. जीवनशैली आज्ञापालन (1 यूहन्ना 2:3-6)
   3. जीवनशैली प्रेम (1 यूहन्ना 2:7-11)
   4. दुष्ट पर विजय (1 यूहन्ना 2:12-14)
   5. संसार को त्यागना (1 यूहन्ना 2:15-17)
   6. दृढ़ता (1 यूहन्ना 2:19)
   7. सही सिद्धांत (1 यूहन्ना 2:20-24; 4:1-3)

D. विशेष धर्मशास्त्रीय अवधारणाएँ (1 यूहन्ना 2:18-19 में)
   1. "अन्तिम घड़ी" (1 यूहन्ना 2:18)
      a. यह वाक्यांश और इसी तरह के वाक्यांश, जैसे कि "अंतिम दिन," बैतलहम में यीशु के जन्म से लेकर दूसरे आगमन तक की अवधि का उल्लेख करते हैं। राज्य आ गया है, लेकिन अभी तक पूर्ण रूप से अंत तक नहीं पहुँचा है।
      b. अंतर-बाइबल काल के दौरान इस्राएली लोगों ने दो युगों में विश्वास करना शुरू कर दिया, वर्तमान दुष्टता का युग और आत्मा के द्वारा लाया गया धार्मिकता का युग, जो अभी भी भविष्य में था। पुराने नियम ने जो स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं किया वह था मसीहा के दो आगमन, पहला उद्धारकर्ता के रूप में और दूसरा पूर्ण करनेवाले के रूप में। ये दो युग अधिव्यापन करते हैं। 1 यूहन्ना 2:17 पर विशेष विषय देखें।
      c. यह समय के अनिर्दिष्ट काल के लिए शब्द "घड़ी" (*kairos*) का रूपात्मक प्रयोग है (तुलना यूहन्ना 4:21,23; 5:25,28; 16:2)।
   2. "मसीह-विरोधी" (1 यूहन्ना 2:18)
      केवल यूहन्ना "मसीह-विरोधी" शब्द का प्रयोग करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:18,22; 4:3; 2 यूहन्ना 7)। ध्यान दें कि 1 यूहन्ना 2:18 में यह बहुवचन और एकवचन दोनों है (तुलना 2 यूहन्ना 7)।
      a. अन्य बाइबल लेखकों में इसी अंत-समय के व्यक्ति के लिए संदर्भ हैं।
         1) दानिय्येल- "चौथा जन्तु" (तुलना दानिय्येल 7:7-8,23-26; 9:24-27)

        2) यीशु - "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" (तुलना मरकुस 13; मत्ती 24)
        3) यूहन्ना - "समुद्र में से निकला पशु" (तुलना प्रकाशितवाक्य 13)
        4) पॉल - "पाप का पुरुष" (तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 2)
    b. यूहन्ना, युगांत-विषयक व्यक्ति और संसार में सदैव उपस्थित आवर्ती भावना या रवैये के बीच अंतर भी करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:18; 4:3; 2 यूहन्ना 7; मरकुस 13:22; मत्ती 24:5,24)।
    c. यूनानी में पूर्वसर्ग *anti* का मतलब (1) के मुकाबले या (2) के बदले हो सकता है। यह उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना 1 यूहन्ना 2:18 में एकवचन और बहुवचन दोनों का प्रयोग। इतिहास ऐसे लोगों परिपूर्ण है जिन्होंने परमेश्वर और उसके मसीह का विरोध किया है
        1) एंटिओकस IV एपिफेन्स (दानिय्येल 8 का छोटा-सा सींग; 11:36-45)
        2) नीरो और डोमिनिशन (देवत्व का दावा किया लेकिन मसीहा का नहीं)
        3) नास्तिक साम्यवाद
        4) धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद

    लेकिन यह उन लोगों से भी मेल खाता है जो मसीह के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन मसीह होने का दावा करते हैं (#2 का प्रयोग)।
        1) मरकुस 13:6,22 और मत्ती 24:5,24 के झूठे शिक्षक
        2) आधुनिक पंथ के अगुवे
        3) मसीह-विरोधी (दानिय्येल 7:8, 23-26; 9:24-27; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3; और प्रकाशितवाक्य 13)
    d. हर युग में मसीही लोग झूठे शिक्षकों का जो मसीह का खंडन करते हैं और झूठे मसीहाओं का जो मसीह होने का दावा करते हैं, अनुभव करेंगे। हालाँकि, एक दिन, अन्तिम दिन, दुष्ट का एक विशेष अवतार (यानी, मसीह-विरोधी) दोनों करेगा!
3. "तुम में बना रहता है" (1 यूहन्ना 2:19,24,27,28)
    a. अधिकांश आधुनिक सुसमाचार प्रचारक मसीह में आस्था/विश्वास/भरोसा करने के लिए एक व्यक्तिगत प्रारंभिक निर्णय की आवश्यकता पर बल देते हैं, और यह निश्चित रूप से सत्य है। हालाँकि, बाइबल का ज़ोर निर्णयों पर नहीं, शिष्यत्व पर है (तुलना मत्ती 28:19-20)।
    b. विश्वासी की सुरक्षा का सिद्धांत दृढ़ता के सिद्धांत से अविभाज्य रूप से जुड़ा होना चाहिए। विशेष विषय: धीरज धरने की आवश्यकता यूहन्ना 8:31 पर देखें। यह कोई एक/या विकल्प नहीं है, लेकिन दोनों/और बाइबल की वास्तविकता है। वास्तव में "बने रहना" एक बाइबल की चेतावनी है (तुलना यूहन्ना 15)!
    c. बने रहने पर अन्य अवतरण हैं मत्ती 10:22; 13:1-9,18-23; मरकुस 13:13; यूहन्ना 8:31; 15:1-27; 1 कुरिन्थियों 15:2; गलातियों 6:1; प्रकाशितवाक्य 2:2,7,11,17,26; 3:5,12,21; 21:7। विशेष विषय: "बने रहना" यूहन्ना 2:10 पर देखें।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 2:3-6
[3]यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसे जान गए हैं। [4]जो कहता है, "मैं उसे जान गया हूँ" और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं; [5]परन्तु जो उसके वचन का पालन करता है, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है। इसी से हम जानते हैं कि हम उस में हैं: [6]जो कहता है कि मैं उस में बना रहता हूँ तो वह स्वयं भी वैसा ही चले जैसा कि वह चलता था।

2:3 "इसी से हमें ज्ञात होता है कि हम उसे जान गए हैं" अक्षरशः यह है "हम जानते हैं कि हम उसे जान गए हैं।" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक के बाद एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है, जिसमें जोर दिया गया है कि ज्ञानवादी झूठी शिक्षाओं के प्रकाश में इन आघात पहुँचाई गई कलीसियाओं के मसीही अपने उद्धार का पूर्ण आश्वासन पा सकते हैं।

शब्द "जानना" का व्यक्तिगत संबंधों के लिए (तुलना उत्पत्ति 4:1; यिर्मयाह 1:5) और किसी बात के या किसी के बारे में तथ्यों की यूनानी समझ के लिए उसके इब्रानी अर्थ में प्रयोग किया गया है। सुसमाचार एक व्यक्ति और सत्य का शरीर दोनों है। इस वाक्यांश में प्रमुखताएँ हैं

1. हम परमेश्वर को जान सकते हैं।
2. हम यह जान सकते हैं कि वह हमारे जीवन के लिए क्या चाहता है।
3. हम यह जान सकते हैं कि हम जानते हैं! (तुलना 1 यूहन्ना 5:13)

परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों के आश्वासनों में से एक हमारे कार्यों और उद्देश्यों से पता चलता है (तुलना मत्ती 7; याकूब, 1 पतरस)। यह 1 यूहन्ना (तुलना 1 यूहन्ना 2:3,5; 3:24; 4:13; 5:2,13) का एक आवर्तक विषय है।

यूहन्ना के लेखन में "जानना" के लिए दो यूनानी शब्दों (*ginōskō* और *oida*) का अक्सर (1 यूहन्ना के पाँच अध्यायों में 27 बार) और पर्यायवाची रूप में प्रयोग होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बोलचाल की यूनानी भाषा में इन शब्दों के बीच कोई पहचाना जाने वाला अर्थ-संबंधी भेद नहीं है। चुनाव शैलीगत है। यह भी दिलचस्प है कि यूहन्ना तीव्र शब्द *epiginōskō* का प्रयोग नहीं करता है।

यूहन्ना विश्वासियों को प्रोत्साहित करने साथ ही साथ कुपन्थ को झूठा ठहराने के लिए लिख रहा है। यूहन्ना और 1 यूहन्ना रचित सुसमाचार नये नियम में किसी भी अन्य पुस्तकों की तुलना में "जानना" के लिए शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। 1 यूहन्ना, सुसमाचार के ज्ञान पर आधारित आश्वासन की एक पुस्तक है और जीवनशैली प्रेम और आज्ञाकारिता को समप्रमाण बनाती है (तुलना याकूब की पुस्तक) ।

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं"** प्रतिबंधात्मक तत्व (वर्तमानकर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक) पर ध्यान दें। परमेश्वर के प्रस्ताव के संबंध में, नई वाचा बिना शर्त के है, लेकिन मानव जाति के पश्चाताप विश्वास और आज्ञाकारी प्रतिक्रिया के संबंध में, यह सशर्त है (तुलना 1 यूहन्ना 2:3-5; 3:22,24; 5:2,3; यूहन्ना 8:51-52; 14:15,21,23; 15:10; प्रकाशितवाक्य 2:26; 3:8,10; 12:17; 14:12)। सच्चे रूपांतरण के प्रमाणों में से एक है ज्योति के प्रति आज्ञाकारी होना (दोनों यीशु और सुसमाचार, तुलना लूका 6:46)। यहाँ तक कि पुराने नियम में भी आज्ञापालन बलिदान के संस्कार से बेहतर था (तुलना 1 शमूएल 15:22; यिर्मयाह 7:22-23)। आज्ञापालन उद्धार को लाता या सुरक्षित नहीं करता है, लेकिन यह उद्धार का प्रमाण देता है। यह आधार नहीं (तुलना इफ 2: 8-9), परन्तु फल है (तुलना इफिसियों 2:10)।

2:4 "जो कहता है" यह यूहन्ना के आलोचनात्मक प्रारूप के लिए पाठीय चिन्हक है।

▣ **"मैं उसे जान गया हूँ"** यह झूठे शिक्षकों के कई दावों में से एक है (तुलना 1 यूहन्ना 1:6,8,10; 2:4,6,9)। यह एक आक्षेप है ("जो कहता है. . .") मलाकी, रोमियों और याकूब के समान। झूठे शिक्षक परमेश्वर को जानने (पूर्ण काल) का दावा कर रहे थे, लेकिन उद्धार को ईश्वरीय जीवन से अलग करने की कोशिश कर रहे थे। वे धर्मी ठहराए जाने को पवित्रता से अलग कर रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के श्रेष्ठ (यानी, गुप्त) ज्ञान का दावा किया, लेकिन उनकी जीवनशैली ने उनके वास्तविक उद्देश्यों को प्रकट कर दिया।

▣ **"और उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है जो आदतन जीवन शैली कार्य की बात करता है। हमारे जीवन हमारे आत्मिक उन्मुखीकरण को प्रकट करते हैं (तुलना मत्ती 7)। पद 4 सत्य को नकारात्मक रूप से व्यक्त करता है, जबकि पद 5 उसी सत्य को सकारात्मक रूप से व्यक्त करता है।

▣ **"वह झूठा है"** यह स्व-इच्छित धोखे से बदतर कुछ भी नहीं है! आज्ञापालन सच्चे रूपांतरण का प्रमाण है। तुम उन्हें उनके फल से पहचान लोगे (तुलना मत्ती 7)।

यूहन्ना कई धार्मिक लोगों (शिक्षकों, उपदेशकों) को झूठा कहता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:6; 2:4,22; 4:20)। वे धार्मिक हैं लेकिन परमेश्वर के साथ सही नहीं हैं!

2:5 "जो उसके वचन का पालन करता है" यह वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है जो आदतन जीवन शैली कार्य की बात करता है। UBS की *A Handbook on The Letters of John* के लेखक (Haas, Jonge and Swellengrebel) इस यूनानी संरचना पर एक दिलचस्प टिप्पणी पेश करते हैं: "यूनानी सामान्य प्रत्यय, '*an*' या '*ean*' के साथ एक संबंध-सूचक सर्वनाम और संशयार्थ-सूचक में अगली क्रिया 1 यूहन्ना 3:17,22; 4:15; 5:15; 3 यूहन्ना 5 में आती है।ऐसा प्रतीत होता है कि यह सामान्य रूप से होने वाली परिस्थितियों को व्यक्त करता है" (पृष्ठ 40)। आज्ञापालन वाचा के विश्वास का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। यह 1 यूहन्ना और याकूब का केंद्रीय संदेश है। कोई यह नहीं कह सकता कि वह परमेश्वर को जानता है और फिर भी जीवन शैली पाप द्वारा जीवित वचन और लिखित वचन दोनों को अस्वीकार करता है (तुलना 1 यूहन्ना 3:6,9)!

▣ **"उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हो चुका है"** यह एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है जो पूर्ण हुई क्रिया की बात करता है (तुलना 1 यूहन्ना 4:12,17,18)। व्याकरणिक रूप से देखें तो यह अनिश्चित है, कि क्या संबंधकारक इसकी बात कर रहा है

1. परमेश्वर का हमारे प्रति प्रेम (तुलना 1 यूहन्ना 4:12)
2. हमारा परमेश्वर के प्रति प्रेम (तुलना 1 यूहन्ना 5:3)
3. सिर्फ सामान्य रूप से परमेश्वर का प्रेम हमारे दिलों में

"सिद्ध" (*telos* तुलना 1 यूहन्ना 4:12,17,18) शब्द का अर्थ है परिपक्व, पूर्ण, या एक निर्दिष्ट कार्य के लिए पूरी तरह से सुसज्जित (तुलना इफिसियों 4:12), पाप के बिना नहीं (तुलना 1 यूहन्ना 1:8,10)।

▣ **"इसी से हम जानते हैं कि हम उस में हैं"** यहाँ फिर से विश्वासियों की परमेश्वर के साथ उनके संबंध में विश्वास करने की क्षमता पर जोर दिया गया है। हमारे उसमें बने में रहने की अवधारणा (बने रहना तुलना 1 यूहन्ना 2:6) यूहन्ना के लेखन का एक आवर्तक विषय है (तुलना यूहन्ना 14:20,23; 15:4-10; 17:21,23,26; 1 यूहन्ना; 2:24-28; 3:6,24; 4:13,16)।

2:6 "बना रहता" 1 यूहन्ना 2:10 पर विशेष विषय देखें। नया नियम यह भी दावा करता है कि पिता और पुत्र दोनों ही हम में बने रहते हैं (तुलना यूहन्ना 14:23 और 17:21)। ध्यान दें कि एक खंड में भी, जो आश्वासन पर जोर देता है, "तो" की एक आवश्यकता और निहित चेतावनी है (तुलना 1 यूहन्ना 2:6, वर्तमान क्रियार्थक, "उस में बने रहता है")। सुसमाचार अधिकारों और जिम्मेदारियों के साथ एक सशर्त वाचा है!

▣ **"तो वह स्वयं भी वैसा ही चले जैसा कि वह चलता था"** यह जीवन शैली के विश्वास के रूप में "सच्चे विश्वास" पर एक और जोर है (तुलना याकूब 2:14-26)। विश्वास केवल एक निर्णय नहीं है, बल्कि यीशु के साथ चल रहा व्यक्तिगत संबंध हैं जो प्राकृतिक रूप से मसीह के स्वरूप जीवन जीने को लाता है। अनन्त जीवन में अवलोकनीय विशेषताएँ हैं! यह 1:7 के समानांतर है। मसीहत का लक्ष्य केवल मृत्यु के बाद स्वर्ग ही नहीं है, लेकिन अभी मसीह के स्वरूप होना है (तुलना रोमियों 8:29-30; 2 कुरिन्थियों 3:18; गलातियों 4:19; इफिसियों 1:4; 1 थिस्सलुनीकियों 3:13; 4:3; 1 पतरस 1:15)! हम सेवा करने के लिए बचाये गए हैं। हमें मिशन पर भेजा जाता है जैसा उसे मिशन पर भेजा गया था। जैसा उसने दूसरों के लिए अपना प्राण दे दिया, इसलिए हमें भी स्वयं को दासों के रूप में देखना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 3:16)।

"वह" अक्षरशः है "वह जो," जो "यीशु" के लिए यूहन्ना के लेखन में एक सामान्य मुहावरा है (तुलना यूहन्ना 2:21; 19:35; 1 यूहन्ना 2:6, 3:3,5,7,16; 4:17)। अक्सर इसका प्रयोग अपमानजनक तरीके से किया जाता है (तुलना यूहन्ना 7:11; 9:12,28; 19:21)।

यदि "वह जो" यीशु को संदर्भित करता है, तो 6a का "उस में" किसे संदर्भित करता है? यूहन्ना अक्सर एक उद्देश्यपूर्ण अस्पष्टता का प्रयोग करता था। यह पिता (तुलना यूहन्ना 15:1-2,9-10) या पुत्र (तुलना यूहन्ना 15:4-6) का उल्लेख कर सकता है। यही अस्पष्टता 1 यूहन्ना 2:20 के "पवित्र" में व्याखित की जा सकती है।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 2:7-11

[7]प्रियो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ, परन्तु वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से ही तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वही वचन है जो तुम सुन चुके हो। [8]फिर भी मैं तुम्हें एक नई आज्ञा लिख रहा हूँ जो उस में और तुम में सत्य है, क्योंकि अन्धकार मिटता जा रहा है और सत्य ज्योति चमक रही है। [9]जो कोई यह कहता है कि मैं ज्योति में हूँ फिर भी अपने भाई से घृणा करता है, वह अब तक अन्धकार ही में है। [10]जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है, और उसमें कोई ठोकर का कारण नहीं। [11]परन्तु जो कोई अपने भाई से घृणा करता है, वह अन्धकार में है और अन्धकार में चलता है, और नहीं जानता कि कहाँ जा रहा है, क्योंकि अन्धकार ने उसकी आँखें अन्धी कर दी हैं।

2:7 "प्रियो" यूहन्ना अक्सर अपने पाठकों को स्नेही शब्दों से बुलाता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:1)। इस शब्द का प्रयोग पिता द्वारा यीशु का उसके बपतिस्मे (तुलना मत्ती 3:17) और रूपांतरण (तुलना मत्ती 17:5) पर उल्लेख करने के लिए किया गया था। यह यूहन्ना के पत्रों में बचाये हुओं के लिए एक सामान्य पदनाम है (तुलना 1 यूहन्ना 3:2,21; 4:1,7,11; और 3 यूहन्ना 1,2,5,11)।

द टेक्स्टस रिसेप्टस में "भाइयों" (MSS K, L, NKJV) है, लेकिन 1 यूहन्ना में केवल 1 यूहन्ना 3:13 में इसका प्रयोग हुआ है। "प्रियो" को बृहदक्षर यूनानी पांडुलिपियों (א, A, B, C, P, और Vulgate, Peshitta, Coptic, और Armenian versions) द्वारा समर्थित किया गया है। (Bruce Metzger, *A Textual Commentary On The Greek New Testament,* p. 708 देखें)

▣ **"मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा हूँ, परन्तु वही पुरानी आज्ञा"** यह यूहन्ना के लेखन की विशेषता है (तुलना यूहन्ना 13:34; 15:12,17)। समय के संदर्भ में यह आज्ञा नई नहीं थी, लेकिन गुणवत्ता के संदर्भ में नई। विश्वासियों को जिस प्रकार यीशु ने उनसे प्रेम किया उसी प्रकार एक-दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा दी गई है (तुलना यूहन्ना 13:34)।

"पुरानी आज्ञा" को दो अर्थों में समझा जा सकता है।

1. मूसा की व्यवस्था (यानी, लैव्यव्यवस्था 19:18)
2. यूहन्ना के सुसमाचार में दर्ज की गई यीशु की शिक्षाएँ (यानी, यूहन्ना 13:34; 15:12,17)

▣ **"पुरानी आज्ञा"** 1 यूहन्ना 2:3 में "आज्ञा" शब्द बहुवचन है, लेकिन यहाँ यह एकवचन है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रेम सभी अन्य आज्ञाओं की पूर्ति कर देता है (तुलना गलातियों 5:22; 1 कुरिन्थियों 13:13)। प्रेम सुसमाचार का आज्ञापत्र है।

▣ **"जो आरम्भ से ही तुम्हें मिली है"** यह एक अपूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो कि सुसमाचार संदेश के साथ श्रोता की पहली मुठभेड़ को संदर्भित करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:24; 1:1; 3:11; 2 यूहन्ना 5-6)।

▣ **"सुन चुके हो"** द टेक्स्टस रिसेप्टस वाक्यांश में "आरम्भ से" जोड़ता है (पद के पहले भाग में प्रयुक्त)।

2:8 "जो उस में सत्य है" इस सर्वनाम का लिंग 1 यूहन्ना 2:7 में स्त्रीलिंग से, जो "आज्ञा" से मेल खाता है, बदल कर नपुंसकलिंग हो जाता है, जो सम्पूर्ण सुसमाचार को संबोधित करता है। सर्वनाम में एक इसी प्रकार का परिवर्तन इफिसियों 2:8-9 में पाया जाता है।

▣ **"अन्धकार मिटता जा रहा है"** यह वर्तमान मध्यम निर्देशात्मक है (A. T. Robertson's *Word Pictures in the New* Testament, p. 212 के अनुसार)। उन लोगों के लिए जो मसीह में परमेश्वर को जानते हैं, नए युग का उदय हुआ है और उनके हृदयों और मनों में उदय होना जारी है (यानी, महसूस किया गया युगांत-विषयक ज्ञान)।

▣ **"सत्य ज्योति चमक रही है"** यीशु जगत की ज्योति है (तुलना यूहन्ना 1:4-5,9; 8:12), जो सत्य, प्रकटीकरण और नैतिक शुद्धता के लिए एक बाइबल रूपक है। 1 यूहन्ना 1:5 और 1:7 पर टिप्पणी देखें। नये युग का उदय हो गया है!

2:9 "फिर भी अपने भाई से घृणा करता है" यह एक कर्तृवाच्य कृदंत है जो एक स्थिर चल रही मनोवृत्ति की बात करता है। घृणा अन्धकार का एक प्रमाण है (तुलना मत्ती 5:21-26)।

2:10 "जो कोई अपने भाई से प्रेम करता है, वह ज्योति में बना रहता है" वर्तमान काल की क्रियाएँ इस संदर्भ पर हावी हैं। प्रेम विश्वासी के उद्धार और सत्य और ज्योति के साथ व्यक्तिगत संबंध और उनके ज्ञान का प्रमाण है। यह नई, फिर भी पुरानी आज्ञा है (तुलना 1 यूहन्ना 3:11,23; 4:7,11,21)।

विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "बने रहना" (SPECIAL TOPIC: "ABIDING" IN JOHN'S WRITINGS)

यूहन्ना के सुसमाचार में पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु के बीच एक विशेष संबंध का वर्णन किया गया है। यह यीशु की अधीनता और समानता पर आधारित एक अंतरंगता है। पूरे सुसमाचार में यीशु वही कहता है जो पिता को कहते हुए सुनता है, वह वही करता है जो वह पिता को करते हुए देखता है। यीशु अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि पिता की इच्छा पर (यानी, यूहन्ना 5:19,30; 8:28; 12:49; 14:10,24) पर काम करता है।

यह अंतरंग संगति और सेवकपन यीशु और उनके अनुयायियों के बीच संबंधों के लिए नमूना निर्धारित करता है। यह अंतरंग संबंध व्यक्ति का अवशोषण नहीं, (जैसा कि पूर्वी रहस्यवाद में) लेकिन अनुकरण की एक, नीतिपरक, नैतिक जीवन शैली थी (तुलना यूहन्ना 13:15; 1 पतरस 2:21)। संगति थी

1. ज्ञानात्मक (सुसमाचार का परमेश्वर के वचन के रूप में विश्वदृष्टिकोण)
2. संबंधपरक (यीशु परमेश्वर का वादा किया गया मसीहा था जिस पर भरोसा किया जाना चाहिए और निर्भर होना चाहिए)
3. नीतिपरक (उसका चरित्र धार्मिक विश्वासियों में दिखाई देना)

यीशु आदर्श मनुष्य है, सच्चा इस्राएली, मानवता का मानक। वह बताता है कि आदम क्या होना चाहिए, और क्या हो सकता था (मानवीय रूप से)। यीशु "परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ छवि" है। वह मानव जाति में गिरी हुई दिव्य छवि को पुनर्स्थापित करता है (तुलना उत्पत्ति 1:26-27) इनके द्वारा

1. परमेश्वर का पूर्ण, अनोखा और सर्वश्रेष्ठ प्रकटीकरण (तुलना यूहन्ना 1:18; 14:7-10; कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:1-2)।
2. हमारे बदले में मरना (प्रतिस्थापन प्रायश्चित, तुलना मरकुस 10:45; 2 कुरिन्थियों 5:21)
3. मनुष्यों को पालन करने के लिए एक उदाहरण प्रदान करना (तुलना यूहन्ना 13:15; 1 पतरस 2:21; 1 यूहन्ना 1: 7)

"बने रहना" (*menō*) शब्द ख्रिस्त समान होने के लक्ष्य को दर्शाता है (तुलना रोमियों 8:28-30; 2 कुरिन्थियों 3:18; गलातियों 4:19; इफिसियों 1:4; 4:13; 1 थिस्सलुनीकियों 3:13; 4:3; 5:23; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13; तीतुस 2: 4; 1 पतरस 1:15), पतन की पुनः स्थापना (तुलना उत्पत्ति 3)। परमेश्वर और उसकी परम रचना, मानवजाति का यह पुनर्मिलन, संगति के उद्देश्य के लिए प्रेरित पौलुस का "मसीह में" और प्रेरित यूहन्ना का "मुझ में बने रहता है" (अर्थात, मुख्य पाठ यूहन्ना 15 है)।

यूहन्ना के प्रयोग पर ध्यान दें:

1. पिता और पुत्र के बीच बने रहना
   a. पिता पुत्र में (यूहन्ना 10:38; 14:10,11; 17:21,23)
   b. पुत्र पिता में (यूहन्ना 10:38; 14:10,11; 17:21)
2. देवता और विश्वासी के बीच बने रहना
   a. पिता विश्वासी में (यूहन्ना 14:20,23; 1 यूहन्ना 3:24;4:12-13,15)
   b. विश्वासी पिता में (यूहन्ना 14: 20,23; 17:21; 1 यूहन्ना 2: 24,27; 4: 13,16)
   c. पुत्र विश्वासी में (यूहन्ना 6:56; 14:20,23; 15:4,5; 17:23)
   d. विश्वासी पुत्र में (यूहन्ना 6:56; 14:20,23; 15:4,5,7; 1 यूहन्ना 2:6,24,27,28)
3. बने रहने के अन्य आधार (सकारात्मक)
   a. परमेश्वर का वचन
      1) नकारात्मक रूप से (यूहन्ना 5:38; 8:37; 1 यूहन्ना 1:10; 2 यूहन्ना 9)
      2) सकारात्मक रूप से (यूहन्ना 8:31; 15:2; 1 यूहन्ना 2:14,24; 2 यूहन्ना 9)
   b. परमेश्वर का प्रेम (यूहन्ना 15:9-10; 17:26; 1 यूहन्ना 3:17; 4:16)
   c. परमेश्वर की आत्मा
      1) पुत्र पर (यूहन्ना 1:32)
      2) विश्वासी में (यूहन्ना 14:17)
   d. आज्ञाकारिता बने रहना है (यूहन्ना 14:15-21,23-24; 15:10; लूका 6:46; 1 यूहन्ना 3:24)
   e. प्रेम ज्योति में बने रहना है (1यूहन्ना 2:10)
   f. परमेश्वर की इच्छा पूरी करना बने रहना है (1 यूहन्ना 2:17)
   g. अभिषेक बना रहता है (1 यूहन्ना 2:27)
   h. सत्य बना रहता है (2 यूहन्ना 2)
   i. पुत्र बना रहता है (यूहन्ना 8:35; 12:34)
4. बने रहने के अन्य आधार (नकारात्मक)
   a. परमेश्वर का क्रोध बना रहता है (यूहन्ना 3:36)
   b. अंधकार में बना रहता है (यूहन्ना 12:46)
   c. फेंक दिया जाता है. . .जल जाता है (नहीं बने रहना, यूहन्ना 15:6)
   d. पाप करना (नहीं बने रहना, 1 यूहन्ना 3:6)
   e. प्यार नहीं करना (नहीं बने रहना, 1 यूहन्ना 3:14)
   f. एक हत्यारा (अनंत जीवन नहीं बने रहना, 1 यूहन्ना 3:15)
   g. वह जो जीवित नहीं मृत्यु में बना रहता है (1 यूहन्ना 3:14)

NASB, NKJV “और उसमें कोई ठोकर का कारण नहीं”
NRSV "ऐसे व्यक्ति में ठोकर का कोई कारण नहीं"
TEV "हममें ऐसा कुछ भी नहीं जो किसी और को पाप में डाले"
NJB "उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसे दूर कर दे"

इस पद के दो संभावित अनुवाद हैं।

1. जो विश्वासी प्रेम में चलता है, व्यक्तिगत रूप से ठोकर नहीं खाएगा (तुलना 1 यूहन्ना 2:11)
2. जो विश्वासी प्रेम में चलता है वह दूसरों को ठोकर नहीं खाने देगा (तुलना मत्ती 18:6; रोमियों 14:13; 1 कुरिन्थियों 8:13)

दोनों सच हैं! सुसमाचार से विश्वासी और दूसरों (दोनों अन्य विश्वासी और खोए हुए) को लाभ होता है।

पुराने नियम में "ठोकर" विश्वास का विलोम है (न गिरनेवाले, स्थिर रुख)। परमेश्वर की इच्छा और आज्ञाएँ एक स्पष्ट मार्ग या रास्ते से व्याखित की गईं थी। इस प्रकार "चलना" जीवनशैली के लिए एक रूपक हो सकता है।

विशेष विषय: पुराने नियम में आस्था, भरोसा, विश्वास और विश्वासयोग्यता यूहन्ना 1:14 पर देखें।

2:11 "परन्तु जो कोई अपने भाई से घृणा करता है वह अन्धकार में है और अन्धकार में चलता है" एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत (घृणा करता है) के बाद एक कर्तृवाच्य निर्देशात्मक (चलता है) है। घृणा अविश्वास का चिन्ह है (तुलना 1 यूहन्ना 3:15; 4:20)। ज्योति और अन्धकार, प्रेम और घृणा एक ही व्यक्ति में मौजूद नहीं रह सकते। यह यूहन्ना के श्वेत-श्याम कथनों की खासियत है। वह आदर्श व्यक्त करता है! अक्सर, हालाँकि, विश्वासी पूर्वाग्रह, नफरत और उपेक्षा के साथ संघर्ष करते हैं! सुसमाचार एक तात्कालिक परिवर्तन और एक प्रगतिशील परिवर्तन दोनों लाता है।

▣ **"अन्धकार ने उसकी आँखें अन्धी कर दी हैं"** यह या तो विश्वासियों के शेष पापी स्वभाव (तुलना 2 पतरस 1:5-9), या शैतान के कार्यों (तुलना 2 कुरिन्थियों 4:4) को संदर्भित करता है। मानव जाति के तीन शत्रु हैं: (1)पतित विश्व व्यवस्था; (2) एक व्यक्तिगत दैवीय प्रलोभक, शैतान; और (3) हमारा अपना पतित, आदम का स्वभाव (तुलना इफिसियों 2:2-3,16; याकूब 4)।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 2:12-14

[12]बच्चों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम्हारे पाप उसके नाम के कारण क्षमा हुए हैं। [13]पितरों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम उसको जानते हो जो आदि से है युवकों, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुमने उस दुष्ट पर विजय पाई है। [14]बच्चों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम पिता को जानते हो। पितरों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम उसको जानते हो जो आदि से है। युवकों, मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है, क्योंकि तुम बलवान हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, तथा तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है।

2:12-14 इन पदों में सभी क्रियाएँ ("मैं इसलिए लिख रहा हूँ" [NASB 1970], "मैंने इसलिए लिखा है" [NASB 1995] को छोड़कर, UBS[4] दूसरे विकल्प को "A" दर्ज़ा [निश्चित] देता है) पूर्ण काल हैं, जो अतीत में कार्य की बात करती हैं जिसके परिणामस्वरूप होने की एक कार्यरत स्थिति होती है। जिस प्रकार पिछले संदर्भ में झूठे शिक्षकों को संबोधित किया गया था, यह संदर्भ विश्वासी को संबोधित करता है। विश्वासियों को दिए गए तीन अलग-अलग शीर्षक हैं:"बच्चों," "पितरों" और "युवकों" यह अनुच्छेद आश्वासन की जीवन शैली के प्रमाण के संदर्भ में आसानी से उपयुक्त नहीं बैठता है। यह संभव है कि हम तीन समूहों की बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन एक साहित्यिक रचना है जो सारे मसीहियों की स्थिर स्थिति का वर्णन करती है।

चार बातें जो विश्वासी जानते हैं, सूचीबद्ध हैं।

1. कि उनके पाप क्षमा कर दिए गए हैं (1 यूहन्ना 2:12)
2. कि मसीह के द्वारा उन्होंने शैतान पर विजय प्राप्त कर ली है (1 यूहन्ना 2:13)
3. कि वे “जानते हैं” कि उनकी सहभागिता पिता (1 यूहन्ना 2:14) और पुत्र (1 यूहन्ना 2:13-14) दोनों के साथ है
4. कि वे परमेश्वर के वचन में मजबूत हैं (1 यूहन्ना 2:14)।

इस सूची को व्याकरणिक रूप से (1) वाक्यांश "मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ" और (2) छह *hoti* (क्योंकि) खंड में व्यक्त किया गया है।

2:12 "क्योंकि तुम्हारे पाप उसके नाम के कारण क्षमा हुए हैं" यीशु की सेवकाई मानव जाति की क्षमा के लिए एकमात्र आशा है (पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक)। इब्रानी समझ में, नाम चरित्र और व्यक्तित्व (तुलना 1 यूहन्ना 3:23; 3 यूहन्ना 7; रोमियों 10:9-13; फिलिप्पियों 2:6-11) के समतुल्य है।

1 यूहन्ना 2:12-14 में छह *hoti* खंडों की एक श्रृंखला है। वे उद्देश्य खंड (NASB, NRSV, NJB, "क्योंकि") या साधारण रूप से तथ्य के कथनों को प्रस्तुत करने का एक साहित्यिक तरीका हो सकता है (NET, "कि")।

2:13 "उसको जो आदि से है" 1 यूहन्ना में सर्वनाम अस्पष्ट हैं और परमेश्वर पिता या परमेश्वर पुत्र का उल्लेख कर सकते हैं। संदर्भ में यह यीशु का उल्लेख करता है। यह पूर्व-अस्तित्व का एक कथन है और इस प्रकार, उसके देवत्व का (तुलना यूहन्ना

1:1,15; 3:15; 8:48-59; 17:5,24; 2 कुरिन्थियों 8:9; फिलिप्पियों 2।:6-7; कुलुस्सियों 1:17; इब्रानियों 1:3)।

▣ **"तुमने विजय पाई है"** यह 1 यूहन्ना में एक आवर्तक प्रतिज्ञा और चेतावनी है (तुलना 1 यूहन्ना 2:14; 4:4, 5:4-5, 18-19)। यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक में व्यक्त किया गया है जो एक प्रक्रिया की परिणति की बात करता है। यहाँ फिर से, यूहन्ना स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं (यह महसूस की गई युगांत-विषयक विजय यूहन्ना रचित सुसमाचार की याद दिलाती है)। विश्वासी विजेता हैं, परन्तु परमेश्वर के राज्य के "पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं" तनाव के कारण, अभी भी वे पाप, प्रलोभन, सताव और मृत्यु के साथ संघर्ष करते हैं।

▣ **"उस दुष्ट पर"** यह शैतान का संदर्भ है, जिसका 1 यूहन्ना 2:14 में फिर से उल्लेख किया गया है। पद 13 और 14 समानांतर हैं। यूहन्ना 12:31 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"क्योंकि तुम पिता को जानते हो"** "जानने" की बाइबल अवधारणा में अंतरंग व्यक्तिगत संबंध का इब्रानी अर्थ (तुलना उत्पत्ति 4:1; यिर्मयाह 1:5) और यूनानी अवधारणा "के बारे में तथ्य" शामिल है। सुसमाचार स्वागत करने के योग्य एक व्यक्ति (यीशु), स्वीकार करने और कार्य करने के योग्य एक संदेश (सिद्धांत), और जीने के लिए एक जीवन दोनों है।

विशेष विषय: जानना (अधिकतर व्यवस्थाविवरण को परिपेक्ष्य के रूप में प्रयोग करते हुए) (SPECIAL TOPIC: KNOW (USING MOSTLY DEUTERONOMY AS A PARADIGM))

इब्रानी शब्द "जानना" (*yada*, BDB 393, KB 390) के *Qal* मूलशब्द में कई अर्थ हैं।

1. भले और बुरे को समझने के लिए - उत्पत्ति 3:22; व्यवस्थाविवरण1:39; यशायाह 7:14-15; योना 4:11
2. समझ से जानने के लिए -व्यवस्थाविवरण 9:2,3,6; 18:21
3. अनुभव से जानने के लिए - व्यवस्थाविवरण 3:19; 4:35; 8:2,3,5; 11:2; 20:20; 31:13; यहोशू 23:14
4. विचार करना – व्यवस्थाविवरण 4:39; 11:2; 29:16
5. व्यक्तिगत रूप से जानने के लिए
    a. एक व्यक्ति – उत्पत्ति 29:5; निर्गमन 1:8; व्यवस्थाविवरण 22:2 33:9; यिर्मयाह 1:5
    b. एक परमेश्वर- व्यवस्थाविवरण 11:28; 13:2,6,13; 28:64; 29:26; 32:17
    c. YHWH -व्यवस्थाविवरण 4:35,39; 7:9; 29:6; यशायाह 1:3; 56:10-11
    d. यौन संबंधी- उत्पत्ति 4:1,17,25; 24:16; 38:26
6. एक सीखा हुआ कौशल या ज्ञान - यशायाह 29:11,12; आमोस 5:16
7. बुद्धिमान बनो – व्यवस्थाविवरण 29:4; नीतिवचन 1: 2; 4:1; यशायाह 29:24
8. परमेश्वर का ज्ञान
    a. मूसा का – व्यवस्थाविवरण 34:10
    b. इस्राएल का– व्यवस्थाविवरण 31: 21,27,29

धर्मशात्रीय रूप से #5 अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बाइबल पर विश्वास परमेश्वर के साथ प्रतिदिन, बढ़ती,अंतरंग सहभागिता है (विशेष विषय: *Koinōnia* देखें) यह केवल एक सम्प्रदाय अथवा केवल एक नैतिक जीवन मात्र नहीं है। यह एक व्यक्तिगत विश्वास का संबंध है। इसलिए पौलुस ने कलीसिया के प्रति मसीह के प्यार को चित्रित करने के लिए इफिसियों 5:22- 6:9 में मसीही घर का प्रयोग किया है।

2:14 "तुम बलवान हो" ध्यान दें कि उनकी ताकत परमेश्वर के बने रहने वाले वचन पर आधारित है। यह इफिसियों 6:10-18 में पौलुस की चेतावनियों के समान है। बने रहने वाला वचन सुसमाचार है। यह वैचारिक और व्यक्तिगत दोनों है, परमेश्वर के द्वारा आरम्भ किया गया और व्यक्तिगत रूप से ग्रहण किया गया, निर्णय और शिष्यत्व दोनों है, सत्य और विश्वसनीयता दोनों है।

▣ **"परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है"** यह परमेश्वर के वचन की अवधारणा का मानवीकरण करता है (सुसमाचार, तुलना 1 यूहन्ना 2:24)। यह यूहन्ना 15 के लिए एक संकेत है। इसका प्रयोग यूहन्ना 5:38 और 8:37 में एक नकारात्मक अर्थ में किया गया है।

▣ **"तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है"** यह सच्चे संतों की दृढ़ता पर जोर है। यह फिर से 1 यूहन्ना 2:17,19,24,27,28; 5:18; और 2 यूहन्ना 9 में पाया जाता है। विश्वासी की सुरक्षा के सिद्धांत को इस सत्य के साथ संतुलित करने की आवश्यकता है

कि जो लोग वास्तव में छुड़ाए गए हैं अंत तक डटे रहेंगे (तुलना प्रकाशितवाक्य 2:7,11,17,26; 3; 5,12,21)। विशेष विषय: धीरज धरने की आवश्यकता यूहन्ना 8:31 पर देखें। इसका तात्पर्य अभी पापहीनता नहीं है, हालाँकि यह मसीह के समाप्त कार्य में एक सैद्धांतिक संभावना है (तुलना रोमियों 6)।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 2:15-17
15संसार से प्रेम न करो, और न उन वस्तुओं से जो संसार में हैं। यदि कोई संसार से प्रेम करता है तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। 16क्योंकि वह सब जो संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, आँखों की लालसा और जीवन का अहंकार, पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है। 17संसार तथा उसकी लालसाएँ भी मिटती जा रही हैं, परन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है सर्वदा बना रहेगा।

2:15 "प्रेम न करो" यह एक नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है, जिसका अर्थ है कि पहले से ही चल रहे एक कार्य को रोकना। संसार का ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के एक समूह की विशेषता बताता है।

▣ **"संसार से"** इस शब्द का प्रयोग नये नियम में दो अलग-अलग अर्थों में किया गया है: (1) भौतिक ग्रह और/या सृजित ब्रह्मांड (तुलना यूहन्ना 3:16; 16:33; 1 यूहन्ना 4:14) और (2) परमेश्वर से अलग होकर संगठित और कार्यशील मानव समाज (तुलना 1 यूहन्ना 2:15-17; 3:1,13; 4:4-5; 5:4-5,19)। पहला प्रारंभिक भौतिक सृजन (तुलना उत्पत्ति 1-2) और दूसरा पतित सृजन (तुलना उत्पत्ति 3) को संदर्भित करता है। विशेष विषय: *Kosmos* यूहन्ना 14:17 पर देखें

विशेष विषय: मानवीय शासन-प्रबंध (SPECIAL TOPIC: HUMAN GOVERNMENT)

I. प्रस्तावना
   A. परिभाषा - अनुभव की गई आवश्यकताओं (जैसे, उत्पत्ति 4 और 11) को प्रदान और सुरक्षित करने के लिए मानवता के द्वारा स्वयं को संगठित करना शासन- प्रबंध है। मनुष्य पतन के पहले से ही सामाजिक प्राणी हैं (तुलना उत्पत्ति 2:18)। परिवार, जनजाति, राष्ट्र हमें समुदाय देते हैं।
   B. उद्देश्य - परमेश्वर की चाहा है कि क्रम अराजकता से बेहतर है।
      1. समाज में मानव जाति के लिए मूसा के विधान, विशेष रूप से दस आज्ञाएँ, परमेश्वर की इच्छा है। यह आराधना और जीवन को संतुलित करता है।
      2. पवित्रशास्त्र में शासन- प्रबंध के किसी भी रूप या संरचना की पैरवी नहीं की गई है, हालाँकि प्राचीन इस्राएल का धर्मतंत्र स्वर्ग का प्रत्याशित रूप है। न तो लोकतंत्र और न ही पूंजीवाद बाइबल का एक सत्य है। मसीहियों को, जिस भी सरकारी प्रणाली में खुद को पाते हैं, उसमें उचित रूप से कार्य करना है। मसीहियों का उद्देश्य सुसमाचार प्रचार और सेवकाई है, क्रांति नहीं। सभी शासन- प्रबंध अस्थायी हैं!
   C. मानवीय शासन- प्रबंध की उत्पत्ति
      1. रोमन कैथोलिकवाद ने दावा किया है कि मानवीय शासन- प्रबंध एक जन्मजात आवश्यकता है, पतन से पहले भी। लगता है कि अरस्तू ने पहली बार इस आधार पर जोर दिया। वह कहते हैं, "मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है" और इसका मतलब है कि शासन- प्रबंध "अच्छे जीवन की उन्नति के लिए विद्यमान है।"
      2. प्रोटेस्टेंटवाद, विशेष रूप से मार्टिन लूथर ने कहा है कि मानवीय शासन- प्रबंध पतन में मूलभूत है। वे इसे “परमेश्वर के बायें हाथ का साम्राज्य" कहतें हैं। उन्होंने कहा कि "बुरे पुरुषों को नियंत्रित करने के लिए बुरे पुरुषों को नियंत्रण देना परमेश्वर का तरीका है।"
      3. कार्ल मार्क्स ने कहा है कि शासन- प्रबंध वह साधन है जिसके द्वारा कुछ कुलीन वर्ग जनता को नियंत्रण में रखते हैं। उनके लिए, शासन- प्रबंध और धर्म एक समान भूमिका निभाते हैं।

II. बाइबल के तथ्य
   A. पुराना नियम
      1. इस्राएल वह प्रतिमान है जिसका प्रयोग स्वर्ग में किया जाएगा। प्राचीन इस्राएल में YHWH राजा था। धर्मतंत्र परमेश्वर के प्रत्यक्ष राज्य का वर्णन करने के लिए प्रयुक्त शब्द है (तुलना 1 शमूएल 8:4-9)।
      2. मानवीय शासन- प्रबंध में परमेश्वर की संप्रभुता को उसकी नियुक्ति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है
         a. सभी राजा, दानिय्येल 2:21; 4:17,24-25
         b. मसीहाई शासनकाल, दानिय्येल 2:44-45

c. नबूकदनेस्सर (नव-बेबीलोन), यिर्मयाह 27:6; दानिय्येल 5:28
d. कुस्रू II (फारस), 2 इतिहास 36:22; एज्रा 1:1; यशायाह 44:28; 45:1
3. परमेश्वर के लोगों को हमला करने और कब्जा करने वाले शासन- क्रमों के प्रति भी विनम्र और सम्मानजनक होना चाहिए:
a. दानिय्येल 1-4, नबूकदनेस्सर (नव- बेबीलोन)
b. दानिय्येल 5, बेलशस्सर (नव- बेबीलोन)
c. दानिय्येल 6, दारा (फारस)
d. एज्रा और नहेम्याह (फारस)
4. बहाल यहूदा को कुस्रू और उसके वंशजों के राज्य के लिए प्रार्थना करनी थी
a. एज्रा 6:10; 7:23
b. यहूदियों को शासकीय अधिकारी, मिश्नाह, के लिए प्रार्थना करनी थी एवोट 3:2
B. नया नियम
1. यीशु ने मानवीय शासन-प्रबंधों के प्रति सम्मान दिखाया
a. मत्ती 17:24-27(, उसने मंदिर के कर का भुगतान किया (धार्मिक और शासकीय अधिकारी एक ही माने जाते थे, तुलना 1पतरस 2:17) ।
b. मत्ती 22:15-22; मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26, उसने रोमी कर के लिए एक जगह और इस तरह रोमी शासकीय अधिकारियों की पैरवी की।
c. यूहन्ना 19:11, परमेश्वर शासकीय अधिकारियों को कार्य करने देता है
2. मानवीय शासन-प्रबंधों से संबंधित पौलुस के शब्द
a. रोमियों 13:1-5, विश्वासियों को शासकीय अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए क्योंकि वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं
b. रोमियों 13:6-7, विश्वासियों को करों का भुगतान करना चाहिए और शासकीय अधिकारियों का सम्मान करना चाहिए
c. 1 तीमुथियुस 2:1-3, विश्वासियों को शासकीय अधिकारियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए
d. तीतुस 3:1, विश्वासियों को शासकीय अधिकारियों के अधीन होना चाहिए
3. मानवीय शासन-प्रबंधों से संबंधित पतरस के शब्द
a. प्रेरितों के काम 4:1-31; 5:29, महासभा के सामने पतरस और यूहन्ना (यह सविनय अवज्ञा के लिए बाइबल का उदाहरण दिखाता है)
b. 1 पतरस 2:13-17, विश्वासियों को समाज की भलाई के लिए और सुसमाचार प्रचार के लिए शासकीय अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए
4. मानवीय शासन-प्रबंधों से संबंधित यूहन्ना के शब्द
a. प्रकाशितवाक्य 17, बेबीलोन की वेश्या परमेश्वर से अलग होकर संगठित और कार्य करने वाले मानवीय शासन-प्रबंध की प्रतीक है
b. प्रकाशितवाक्य 18, बेबीलोन की वेश्या का नाश हो गया

III. निष्कर्ष
A. मानवीय शासन-प्रबंध (एक पतित दुनिया में) परमेश्वर द्वारा ठहराया जाता है। यह "राजाओं का दैवीय अधिकार" नहीं है, लेकिन शासन-प्रबंध का दैवीय कार्य है (यानी,अराजकता नहीं, व्यवस्था)। किसी एक रूप को दूसरे से ऊपर रखने की पैरवी नहीं की जाती है।
B. शासकीय अधिकारियों का आज्ञापालन करना और उनके लिए प्रार्थना करना विश्वासियों का एक धार्मिक कर्तव्य है।
C. उचित श्रद्धापूर्ण प्रवृत्ति के साथ करों द्वारा मानवीय शासन-प्रबंध का समर्थन करना विश्वासियों के लिए उचित है।
D. मानवीय शासन-प्रबंध शासकीय व्यवस्था के उद्देश्य से है। वे इस कार्य के लिए परमेश्वर के सेवक हैं।
E. मानवीय शासन-प्रबंध सर्वोच्च नहीं है। यह अपने अधिकार में सीमित है। विश्वासियों को शासकीय अधिकार को अस्वीकार करने में अपने विवेक की खातिर कार्य करना चाहिए जब यह अपनी दैवीय रूप से नियुक्त सीमा से आगे निकल जाता है। जैसा कि ऑगस्टीन ने *The City of God* में जोर दिया है, हम दो लोकों के नागरिक हैं, एक अस्थायी और एक अनंत (तुलना फिलिप्पियों 3:20)। दोनों में हमारी जिम्मेदारी है, लेकिन परमेश्वर का राज्य

सर्वोच्च है! परमेश्वर के प्रति हमारी जिम्मेदारी में व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों केंद्रबिंदु हैं।
F. हमें एक लोकतांत्रिक प्रणाली में विश्वासियों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे शासन-प्रबंध की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लें और जब संभव हो, पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को लागू करें।
G. सामाजिक परिवर्तन से पहले व्यक्तिगत रूपांतरण होना चाहिए। शासन-प्रबंध में कोई वास्तविक स्थायी युगांत-विषयक आशा नहीं है। सभी मानवीय शासन-प्रबंध, हालाँकि परमेश्वर द्वारा इच्छित और प्रयुक्त होते हैं, वे परमेश्वर से अलग मानव संगठन के पापी भाव हैं। यह अवधारणा जोहानिन द्वारा "संसार" (यानी, 1 यूहन्ना 2:15-17) शब्द के प्रयोग में व्यक्त की गई है।

▣ **"और न उन वस्तुओं से जो संसार में हैं"** यह भौतिक वस्तुओं (तुलना 1 यूहन्ना 2:16) या संसार की पेशकश: सत्ता, प्रतिष्ठा, प्रभाव, आदि की चीजों के एक प्रेम को संदर्भित करता है: (तुलना रोमियों 12:2; याकूब 1:27)। यह पतित विश्व व्यवस्था परमेश्वर के अतिरिक्त मानव जाति की सारी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करती है। यह जीवन की इस तरह से संरचना करती है कि मनुष्य स्वतंत्र प्रतीत होता है। संस्थाएँ जिनके लिए हम सभी आभारी हैं, मूर्तिपूजक बन सकती हैं यदि वे परमेश्वर से स्वतंत्र होने की अनुमति देती हैं। उदाहरणों में शामिल हैं: (1) मानव शासन प्रणालियाँ; (2) मानव शैक्षिक प्रणालियाँ; (3) मानव आर्थिक प्रणालियाँ; (4) चिकित्सा प्रणालियाँ इत्यादि

जिस प्रकार ऑगस्तीन ने इतना अच्छा कहा है कि मनुष्य के जीवन में "एक परमेश्वर के आकार का छेद है"। हम उस छेद को सांसारिक चीजों से भरने की कोशिश करते हैं, लेकिन हम केवल उसी में शान्ति और तृप्ति पा सकते हैं! स्वतंत्रता अदन का अभिशाप है!

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है, जिसका अर्थ है संभावित कार्य। हम जिसे प्रेम करते हैं, वह इस बात का प्रमाण है कि हम किसके हैं. . .परमेश्वर के या शैतान के।

2:16 "शरीर की अभिलाषा" यह पतित मानव जाति के स्वार्थलोलुप रवैये का उल्लेख करता है(तुलना गलातियों 5:16-21; इफिसियों 2:3; 1 पतरस 2:11)। विशेष विषय: शरीर (*sarx*) यूहन्ना 1:14 पर देखें।

▣ **"आँखों की लालसा"** यहूदियों ने माना कि आँखें आत्मा की खिड़कियाँ हैं। पाप विचार में शुरू होता है और कार्य करने के लिए अपना रास्ता बनाता है। किसी के कार्य जीवन शैली के प्रभुत्व में विकसित हो जाते हैं (उदाहरण, नीतिवचन 23:7)।

▣ **"और जीवन का अहंकार"** यह परमेश्वर से अलग मानव अहंकार को संदर्भित करता है (यानी, मानव अपने संसाधनों में भरोसा करता है)। *The Jerome Bible Commentary,* vol. II में, Raymond Brown, एक प्रसिद्ध कैथोलिक जोहानिन विद्वान, वाक्यांश के लिए कहते हैं,

> "हालाँकि, *alazoneia,* जो याकूब 4:16 में भी पाया जाता है, का मात्र अहंकार के अलावा एक अधिक सक्रिय अर्थ है: यह उद्दंडता, डींग मारने, आत्म-निर्भरता के दृढ़ विश्वास को दर्शाता है।" (p. 408)।

जीवन शब्द *bios* है जो इस ग्रह पर सांसारिक, भौतिक, अस्थायी जीवन (जो मानवजाति पौधों और प्राणियों के साथ साझा करती है, तुलना 1 यूहन्ना 3:17) को संदर्भित करता है। ये लक्षण ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के दोनों समूहों और हठीली पतित मानवजाति का वर्णन करते हैं। परमेश्वर हमारी सहायता करो, वे अपरिपक्व मसीहियों का भी वर्णन करते हैं!

▣ **"पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से है"** दो कारण हैं कि मसीहियों को संसार से प्रेम नहीं करना चाहिए।

1. वह प्रेम पिता की ओर से नहीं है (तुलना 1 यूहन्ना 2:16)
2. संसार मिटता जा रहा है (तुलना 1 यूहन्ना 2:17)

2:17 "संसार मिटता जा रहा है" यह एक वर्तमान मध्यम निर्देशात्मक है (तुलना 1 यूहन्ना 2:8)। यह दो यहूदी युगों से संबंधित है। नया और पूर्णता तक पहुँचा युग आ रहा है; पाप और विद्रोह का पुराना युग मिटता जा रहा है (तुलना रोमियों 8:18-25)।

विशेष विषय: यह युग और आनेवाला युग (SPECIAL TOPIC: THIS AGE AND THE AGE TO COME)

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्य को वर्तमान के विस्तार के रूप में देखा। उनके लिए भविष्य भौगोलिक इस्राएल की पुनर्स्थापना होगा। हालाँकि, उन्होंने इसे एक नए दिन के रूप में भी देखा (तुलना यशायाह 65:17; 66:22)।

अब्राहम के वंशजों (निर्वासन के बाद भी) द्वारा YHWH की निरंतर उद्दंड अस्वीकृति के साथ, यहूदी अंतर्विधानीय भविष्यसूचक साहित्य (यानी, I हनोक, IV एज्रा, II बारूक) में एक नया प्रतिमान विकसित हुआ। ये लेखन दो युगों के बीच एक अंतर बनाते हैं: शैतान के अधिकार में एक दुष्टता का वर्तमान युग और आत्मा के अधिकार में और मसीहा (अक्सर एक शक्तिमान योद्धा) के द्वारा शुभारंभ किया गया आनेवाला धार्मिकता का युग।

धर्मशास्त्र (युगांत-विषयक ज्ञान) के इस क्षेत्र में एक स्पष्ट विकास है। धर्मशास्त्री इसे "प्रगतिशील प्रकटीकरण" कहते हैं। नया नियम दो युगों (यानी, एक अस्थायी द्वैतवाद) की इस नई लौकिक वास्तविकता की पुष्टि करता है।

यीशु	पौलुस	इब्रानियों (पौलुस)
मत्ती 12:32; 13:22,39	रोमियों 12:2	इब्रानियों.1:2; 6:5; 11:3
मरकुस 10:30	1 कुरिन्थियों 1:20; 2:6,8; 3:18	
लूका 16:8; 18:30; 20:34-35	2 कुरिन्थियों 4:4	
	गलातियों 1:4	
	इफिसियों 1:21 2:2,7; 6:12	
	1 तीमुथियुस 6:17	
	2 तीमुथियुस 4:10	
	तीतुस 2:12	

नये नियम के धर्मशास्त्र में इन दो यहूदी युगों का मसीहा के दो आगमनों की अप्रत्याशित और अनदेखी भविष्यवाणियों के कारण अतिच्छादन किया गया है। यीशु के देहधारण ने नए युग के शुभारंभ की पुराने नियम की अधिकांश भविष्यवाणियों को पूरा किया (दानिय्येल 2:44-45)। हालाँकि, पुराने नियम ने भी न्यायाधीश और विजेता के रूप में उसके आगमन को देखा, फिर भी वह पहले एक पीड़ित दास के रूप में आया (तुलना यशायाह 53; जकर्याह 12:10), नम्र और दीन (तुलना जकर्याह 9:9)। वह पुराने नियम की भविष्यवाणी के अनुसार ही सत्ता में वापस आएगा (तुलना प्रकाशितवाक्य 19)। इस दो-चरण की पूर्ति के कारण राज्य वर्तमान (शुभारंभ), लेकिन भविष्य (पूरी तरह से पूर्ण नहीं) हुआ। यह नये नियम का पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं, तनाव है!

▣ **"परन्तु वह जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है सर्वदा बना रहेगा"** ध्यान दें कि किस प्रकार अनन्त जीवन (यानी, अक्षरशः "युग में बना रहता है") एक प्रेमपूर्ण जीवन शैली से जुड़ा है, न कि केवल अतीत में विश्वास के स्वीकारे जाने से (तुलना मत्ती 25:31-46; याकूब 2:14-26)। विशेष विषय: परमेश्वर की इच्छा यूहन्ना 4:34 पर देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 2:18-25
18बच्चों, यह अन्तिम घड़ी है; और जैसा तुमने सुना था कि मसीह-विरोधी आने वाला है, वैसे ही अब अनेक
मसीह-विरोधी उठ खड़े हुए हैं; इसी से हम जानते हैं कि यह अन्तिम घड़ी है। 19वे निकले तो हम ही में से, परन्तु
वास्तव में हम में से नहीं थे; क्योंकि यदि वे हम में से होते तो हमारे साथ रहते; परन्तु वे निकल इसलिए गए, कि
यह प्रकट हो जाए कि वे सब हम में से नहीं हैं। 20परन्तु तुम्हारा अभिषेक तो उस पवित्र से हुआ है, और तुम सब
जानते हो। 21मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम सत्य को नहीं जानते, वरन इसलिए कि तुम उसे जानते हो,
क्योंकि कोई झूठ सत्य की ओर से नहीं। 22झूठा कौन है केवल वह जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है?
यह मसीह-विरोधी है, अर्थात जो पिता और पुत्र का इन्कार करता है। 23जो पुत्र का इन्कार करता है, उसके पास
पिता नहीं; जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है। 24जहाँ तक तुम्हारा संबंध है, तुमने जो आरम्भ से सुना
है, उसे अपने में बना रहने दो। जो कुछ तुमने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे तो तुम भी पुत्र में और
पिता में बने रहोगे। 25जो प्रतिज्ञा स्वयं उसने हम से की है, वह यह है, अर्थात अनन्त जीवन।

2:18 "बच्चों" 1 यूहन्ना 2:1 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"यह अन्तिम घड़ी है"** अक्षरशः यह "अन्तिम घड़ी" है जिसमें कोई शब्द वर्ग नहीं है (केवल यहाँ पाया गया है)। "अंतिम दिनों" की तरह, यह यीशु मसीह के दूसरे आगमन का वर्णन करने के लिए नये नियम में प्रयुक्त वाक्यांशों में से एक है (तुलना यूहन्ना 6:39-40,44)। यूहन्ना में यह एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है क्योंकि हमारे दिन में सी. एच. डोड का "महसूस किया गया युगांत-विषयक ज्ञान" (हज़ार वर्ष का राज्य न होने का एक प्रमुख सिद्धांत) से कई व्याख्याकार प्रभावित हुए हैं। यह निश्चित

रूप से सच है कि यूहन्ना विशिष्ट रूप से और बलपूर्वक सिखाता है कि यीशु में परमेश्वर का राज्य आया है। हालाँकि, इस पाठ से पता चलता है कि एक भविष्य में एक पूर्णता तक पहुँचना (घटना या अवधि) भी है। दोनों सत्य हैं। यह दो यहूदी युगों के "पहले से और अभी तक नहीं" (यानी; "आने वाला है") के बीच नये नियम के तनाव (विरोधाभास) की एक और अभिव्यक्ति है, जो अब समय के साथ अतिव्याप्त हैं।

▣ **"मसीह-विरोधी. . .अनेक मसीह-विरोधी"** यह वर्णनात्मक वाक्यांश एकवचन और बहुवचन दोनों है; किसी भी शब्द में शब्द वर्ग नहीं है (MSS א*, B, C का अनुसरण)। केवल यूहन्ना इस शब्द का प्रयोग नये नियम में करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:18,22; 4:3; 2 यूहन्ना 7)। 2:3-27, D पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि में पूर्ण टिप्पणी देखें।

▣ **"आने वाला है"** यह एक वर्तमान मध्यम (प्रतिपादक) निर्देशात्मक है। बोलचाल की यूनानी भाषा में यूनानी क्रिया के कुछ रूपों का प्रयोग बंद हो गया और अन्य रूप उनके स्थान पर प्रयोग किए जाने लगे। प्रतिपादक क्रिया मध्यम या कर्मवाच्य के रूप में होती है, लेकिन अर्थ में कर्तृवाच्य के रूप में अनुवादित की जाती है। यहाँ भविष्य की घटना की निश्चितता को व्यक्त करने के लिए वर्तमान का प्रयोग किया जाता है। मसीह-विरोधी, एकवचन, आ रहा है और उसके समान कई झूठे शिक्षक या झूठे मसीहा पहले से ही उठ खड़े हुए हैं (अनेक मसीह-विरोधी)।

यह सिर्फ धर्मशास्त्रीय रूप से संभव है कि चूँकि शैतान को मसीह के लौटने का समय नहीं पता है, इसलिए उसने किसी को अवसर के किसी भी क्षण विश्व नेतृत्व में कदम रखने के लिए तैयार किया है।

▣ **"उठ खड़े हुए हैं"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह मसीह-"विरोधी" आत्मा इस पतित संसार मे (यानी, झूठे शिक्षक) पहले से ही मौजूद और सक्रिय है, फिर भी एक भविष्य में अभिव्यक्ति है। कुछ टिप्पणीकार इसे यूहन्ना के दिन के रोमी साम्राज्य को संदर्भित करता हुआ समझते हैं, जबकि अन्य इसे अन्तिम दिन के भविष्य के विश्व साम्राज्य के रूप में देखते हैं। कई अर्थों में, यह दोनों है! अंतिम घड़ी का उद्‌घाटन देहधारण के समय हो गया था और पूर्णता तक पहुँचने तक जारी रहेगा (मसीह का दूसरा आगमन)।

2:19 "वे निकले तो हम ही में से, परन्तु वास्तव में हम में से नहीं थे" यह प्रत्यक्ष कलीसिया में झूठी शिक्षा और झूठे दावों का एक आदर्श उदाहरण है (तुलना मत्ती 7:21-23; 13:1-9;18-23,24-30)। उनकी सच्चाई, प्रेम और दृढ़ता की कमी इस बात का प्रमाण है कि वे विश्वासी नहीं हैं। कुपन्थ हमेशा भीतर से आता है!

1 यूहन्ना का लेखक क्रिया काल की अपनी पसंद में बहुत सावधान है। पद 19 दर्शाता है।

1. झूठे शिक्षकों ने छोड़ दिया है (अनिर्दिष्टकाल)
2. वे वास्तव में कभी भी एक हिस्सा नहीं थे (अपूर्ण)
3. यदि वे ऐसा हिस्सा होते तो वे नहीं छोड़ते (एक पूर्ण भूतकाल की क्रिया के साथ एक द्वितीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य)

विशेष विषय: स्वधर्मत्याग यूहन्ना 6:64 पर देखें ।

▣ **"यदि"** यह एक द्वितीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो तथ्य के विपरीत कहलाता है। इसका अनुवाद किया जाना चाहिए, "यदि वे हमारे होते, जो वे नहीं थे, तो वे हमारे साथ रहते, जो वे नहीं रहे।"

▣ **"तो हमारे साथ रहते"** यह एक पूर्ण भूतकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो पिछले समय में पूरे हुए कार्य की बात करता है। यह दृढ़ता के सिद्धांत के कई संदर्भों में से एक है (तुलना 1 यूहन्ना 2:24,27,28)। सच्चा विश्वास बना रहता है और फल लाता है (तुलना मत्ती 13:1-23)। यूहन्ना 8:31 पर विशेष विषय देखें।

2:20 "तुम्हारा अभिषेक तो उस पवित्र से हुआ है" "तुम्हारा" बहुवचन है जो यूनानी पाठ में उन लोगों के विरोध में जोर देकर कहा गया है जिन्होंने मसीही सहभागिता को छोड़ दिया था। यह संभव है कि ज्ञानवादी पूर्वी "रहस्यमयी" धर्मों से प्रभावित थे और एक विशेष अभिषेक सिखाते थे जो ज्ञान और एक देवता के साथ पहचान लाता था। यूहन्ना का दावा है कि यह विश्वासी थे, न कि ज्ञानवादी, जिन्होंने देवता से अभिषेक (विशेष दीक्षा) पाया था।

विशेष विषय: एक पवित्र (SPECIAL TOPIC: THE HOLY ONE)

I. "इस्राएल का पवित्र" यशायाह में देवता के लिए एक पसंदीदा नाम है (तुलना 1:4; 5:19; 10: 17,20; 12:6; 17:7; 29:19,23; 30:11,12,15; 31:1; 37:23; 40:25; 41:14,16,20; 43:3,14,15; 45:11; 47:4; 48:17; 49:7; 54:5;

55:5; 60:9,14)। क्योंकि वह "पवित्र" है, उसके लोगों को पवित्र होना चाहिए (तुलना लैव्यव्यवस्था 19:2; मत्ती 5:48; 1 पतरस 1:16)।

यह नाम, एक अर्थ में, एक पापी, पतित लोग के असंभव तनाव को व्यक्त करता है, जो एक पवित्र मानक को स्वीकारते हैं। मूसा की वाचा का पालन करना असंभव था (तुलना यहोशू 24:19; प्रेरितों के काम 15; गलातियों 3; इब्रानियों की पुस्तक)। पुरानी वाचा परमेश्वर के मानक (गलातियों 3) के अनुरूप होने में मनुष्यों की असंभवता दिखाने का एक तरीका थी, फिर भी वह उनके साथ था, उनके लिए, उनकी पतित स्थिति के लिए उसके उत्तर के लिए उन्हें तैयार कर रहा था (अर्थात, "यीशु में नई वाचा")। वह अपने मानक को कम नहीं करता है, लेकिन इसे अपने मसीहा के माध्यम से प्रदान करता है। नई वाचा (तुलना यिर्मयाह 31:31-34; यहेजकेल 36:22-38) विश्वास और पश्चाताप की एक वाचा है, न कि मानवीय प्रदर्शन, हालांकि यह मसीह की समानता में ले जाती है (तुलना याकूब 2:14-26)। परमेश्वर ऐसे लोगों को चाहता है जो राष्ट्रों को उसका चरित्र दर्शाते हैं (तुलना मत्ती 5:48)।

II. "एक पवित्र" उल्लेख कर सकता है
1. परमेश्वर पिता (तुलना "इस्राएल का पवित्र" पर पुराने नियम के अनेक अवतरण)
2. परमेश्वर पुत्र (मरकुस 1:24; लूका 4:34; यूहन्ना 6:69; प्रेरितों के काम 3:14; 1 यूहन्ना 2:20)
3. परमेश्वर आत्मा (उसका नाम, "पवित्र आत्मा", यूहन्ना 1:33; 14:26; 20:22)।

प्रेरितों के काम 10:38 एक ऐसा पद है जिसमें परमेश्वर के तीनों व्यक्तित्व अभिषेक में शामिल होते हैं। यीशु का अभिषेक किया गया था (तुलना लूका 4:18; प्रेरितों के काम 4:27; 10:38)। अवधारणा को सभी विश्वासियों को शामिल करने के लिए विस्तृत किया गया है (तुलना 1 यूहन्ना 2:27)। एक अभिषिक्त, अभिषिक्त जन बन गए हैं! यह मसीह विरोधी और मसीह विरोधियों के समानांतर हो सकता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:18)। पुराने नियम का तेल के साथ शारीरिक अभिषेक करने का प्रतीकात्मक कार्य (तुलना निर्गमन 29:7; 30:25; 37:29) उन लोगों से संबंधित है जिन्हें परमेश्वर द्वारा एक विशेष कार्य के लिए बुलाया और सुसज्जित किया गया था। (यानी भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा) शब्द "मसीह" इब्रानी शब्द "अभिषिक्त" या मसीहा का एक अनुवाद है।

▣ **"अभिषेक"** विशेष विषय: बाइबल में अभिषेक (BDB 603) यूहन्ना 11:2 पर देखें

NASB "और तुम सब जानते हो"
NKJV "और तुम सब बातों को जानते हो"
NRSV "और तुम सभी के पास ज्ञान है"
TEV "और इसलिए तुम सभी सत्य जानते हो"
NJB "और तुम सभी को ज्ञान प्राप्त हुआ है"

यह ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के गुप्त ज्ञान के बारे में उनके अहंकारी दावों के प्रकाश में एक महत्त्वपूर्ण कथन था। यूहन्ना का दावा है कि विश्वासियों को बुनियादी मसीही ज्ञान है (1 यूहन्ना 2:27 और यूहन्ना 16:7-14 और यिर्मयाह 31:34), धर्म या अन्य क्षेत्रों या ज्ञान में विस्तृत ज्ञान नहीं है (तुलना 1 यूहन्ना 3:2)। यूहन्ना के लिए, सत्य वैचारिक और व्यक्तिगत दोनों है, उसी प्रकार अभिषेक है जो सुसमाचार या आत्मा का उल्लेख कर सकता है।

इस वाक्यांश में एक यूनानी पांडुलिपि संस्करण है। NKJV A, C, और K बृहदक्षर पांडुलिपियों का अनुसरण करता है, जिसमें *panta* होता है, एक नपुंसक बहुवचन प्रत्यक्ष कर्म के समान प्रयोग किया जाता है, जबकि NASB पांडुलिपियों א, B, और P, का अनुसरण करता है जिसमें *pantes होता है*, एक पुल्लिंग बहुवचन, जो कर्त्ता "तुम सब" पर केंद्रित है। झूठे शिक्षकों के एकान्तिक दावों के प्रकाश में, अंतिम विकल्प सबसे अच्छा है। UBS[4] इसे "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है। अभिषेक और ज्ञान सभी विश्वासियों को दिया जाता है, न कि कुछ चुनिंदा, विशेष, बौद्धिक, आत्मिक लोगों को!

2:21 यह कई पदों में से एक है जो इस बात पर जोर देता है कि यूहन्ना के पाठकों में उद्धार का विश्वास आश्वासन है और सत्य को जानते हैं। इस पद में विश्वास उस आत्मा के अभिषेक पर आधारित है जिसने विश्वासियों को सुसमाचार की जानकारी और ज्ञान की भूख दी है।

2:22 "झूठा कौन है" इस वाक्यांश में निश्चयवाचक उपपद है, इसलिए, यूहन्ना इनमें से किसी का उल्लेख कर रहा है
1. एक विशिष्ट झूठा शिक्षक (संभवतः सेरिंथस)
2. "बड़ा झूठ" और सुसमाचार का खंडन (तुलना 1 यूहन्ना 5:10)

"झूठा" "मसीह-विरोधी" के समानांतर है। हर युग में मसीह-विरोधी की भावना मौजूद है; एक मूल परिभाषा ("विरोधी" के दो लक्ष्यार्थ) यह है "वह जो इस बात से इन्कार करता है कि यीशु मसीह है" या "वह जो मसीह का स्थान लेने की कोशिश करता है।"

▣ **"यीशु के मसीह होने का"** The Jerome Biblical Commentary, p. 408, एक अच्छी बात कहता है,

> "लेखक का अर्थ केवल यीशु के द्वारा पुराने नियम को पूरा करना और किसी मसीहा की यहूदी उम्मीद से पूरा करना ही नहीं है। 'मसीह' यहाँ यीशु के पसंदीदा नये नियम के पदनाम के रूप में अपना पूर्ण अर्थ रखता है, जिसके वचनों और कार्यों ने उसे मानव जाति के दिव्य उद्धारकर्ता के रूप में घोषित किया है (तुलना प्रेरितों के काम 2:31; रोमियों 1:4)।"

यह संभव है कि इस सैद्धान्तिक पुष्टि ने कार्य किया है

1. ज्ञानवाद के खिलाफ एक विवाद के रूप में
2. एक पलस्तीनी पंथ सूत्र जिसने आराधनालय को कलीसिया से स्पष्ट रूप से अलग कर दिया; यह जामनिया के पश्चात (70 ई.) रब्बियों के शाप के सूत्रों को प्रतिबिंबित कर सकता है।
3. जैसे "यीशु प्रभु है," यह एक बपतिस्मा संबंधी अभिकथन रहा होगा

2:22-23 "जो पुत्र का इन्कार करता है" जाहिर तौर पर ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों ने परमेश्वर को जानने का दावा किया, लेकिन उन्होंने यीशु मसीह के स्थान का खण्डन, उसे विकेन्द्रीकृत, और उसका अवमूल्यन किया (तुलना 1 यूहन्ना 4:1-6; 5:1-12; यूहन्ना 5:23)।

दूसरी शताब्दी ई. के ज्ञानवादियों के लेखन, नये नियम के भीतर की टिप्पणियों, और प्रारम्भिक कलीसिया पिताओं के आधार पर निम्नलिखित विश्वास उभर कर आए।

1. ज्ञानवादियों ने मसीहत को यूनानी दर्शन (प्लेटो) और पूर्वी रहस्यमय धर्मों से जोड़ने की कोशिश की।
2. उन्होंने सिखाया कि यीशु दिव्य था, लेकिन मानव नहीं क्योंकि आत्मा अच्छा था, लेकिन तत्व (शरीर) दुष्ट था। इसलिए, देवता के भौतिक देहधारण की कोई संभावना नहीं थी।
3. उन्होंने उद्धार के बारे में दो बातें सिखायीं
    a. एक समूह ने जोर दिया कि दिव्य क्षेत्रों (*aeon*) का एक विशेष ज्ञान आत्मा का उद्धार लाया भौतिक स्तर पर शरीर के कार्यों से असंबंधित था।
    b. एक अन्य समूह ने शारीरिक तपस्या पर जोर दिया (तुलना कुलुस्सियों 2:20-23)। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि शारीरिक इच्छाओं और जरूरतों का पूर्ण रूप से खंडन एक सच्चे उद्धार के लिए महत्त्वपूर्ण था।

2:23 टेक्स्टस रिसेप्टस में इस पद को, K और L बृहदक्षर पांडुलिपियों का अनुसरण करते हुए, मूल पाठ को पिता के लिए दूसरे समानांतर संदर्भ, जो यूनानी बृहदक्षर पांडुलिपियों א, A, B, और C द्वारा दृढ़ता से समर्थित है, को हटाकर गलती से छोटा कर दिया है।

▣ **"जो मान लेता है"** यह 1 यूहन्ना 2:22 [दो बार] और 23 [एक बार] और 26 [एक बार] में "जो इन्कार करता है" के ठीक विपरीत है। विशेष विषय: अंगीकार यूहन्ना 9:22-23 पर देखें।

▣ **"पुत्र को"** परमेश्वर के साथ सहभागिता केवल पुत्र में विश्वास के माध्यम से उपलब्ध है (तुलना 1 यूहन्ना 5:10-12,13)। यीशु में विश्वास एक विकल्प नहीं है! वह पिता के पास जाने का एकमात्र मार्ग है (तुलना यूहन्ना 5:23; 14:6; लूका 10:16)।

2:24 "जहाँ तक तुम्हारा संबंध है" यह यूहन्ना के पाठकों और झूठे शिक्षकों और उनके अनुयायियों जो उन्हें छोड़ गए, के बीच एक बहुत ही प्रभावी विषमता दिखाता है, (तुलना 1 यूहन्ना 2:27)।

▣ **"तुमने जो आरम्भ से सुना है, उसे अपने में बना रहने दो"** यह झूठे शिक्षकों के संदेश के विरोधाभास में "अपने में" (जो यूनानी वाक्यांश के आरम्भ में है) पर एक व्याकरणिक जोर के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। सुसमाचार को एक अंदर रहने वाले अतिथि के रूप में मानवीकृत और वर्णित किया गया है। यह झूठे शिक्षकों (झूठे) पर मसीहियों की जीत के लिए दिए गए दो कारणों में से पहला है। दूसरा एक 1 यूहन्ना 2:20 और 27 में मिलता है, जहाँ आत्मा के अभिषेक का उल्लेख किया गया है। फिर से, सुसमाचार संदेश और व्यक्ति दोनों के रूप में "आरम्भ से" वाक्यांश से जुड़ा हुआ है (तुलना 1

यूहन्ना 2:13,14,24 [दो बार])। परमेश्वर का वचन विषय वस्तु और व्यक्तिगत दोनों है, लिखित और जीवित दोनों है (तुलना 1 यूहन्ना 1:8,10; 2:20,24)! विशेष विषय: बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। यह "बने रहने" से संबंधित चेतावनी और ताड़ना जारी है। बने रहने की समाप्ति से पता चलता है कि वे कभी भाग थे ही नहीं (तुलना 1 यूहन्ना 2:18-19)। "बने रहने" की जीवनशैली का प्रमाण विश्वास का आश्वासन देता है (तुलना यूहन्ना 15)। बने रहना एक संदेश है जिसे सुना और ग्रहण किया गया और पुत्र और पिता (तुलना यूहन्ना 14:23) दोनों के साथ एक सहभागिता है, जो जीवन शैली की पसंद में, सकारात्मक (प्रेम) और नकारात्मक (दुनिया की अस्वीकृति) दोनों रूपों में प्रकट होती है।

2:25 "जो प्रतिज्ञा स्वयं उसने हम से की है, वह यह है, अर्थात अनन्त जीवन" फिर से 1 यूहन्ना 2:25 में सर्वनाम बहुत ही अस्पष्ट हैं और परमेश्वर पिता या परमेश्वर पुत्र का उल्लेख कर सकते हैं। शायद यह उद्देश्यपूर्ण था (जैसा कि 2 पतरस 1 में)। जाहिर तौर पर यह कथन बहुत कुछ यूहन्ना 3:15-16 और 6:40 जैसा है। विश्वासी की आशा परमेश्वर के चरित्र और वादों में रहती है (तुलना यशायाह 45:23; 55:11)। त्रिएक परमेश्वर के साथ हमारी अंतरंग सहभागिता आशा, हाँ, अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा, लाती है (तुलना 1 यूहन्ना 5:13)। अनन्त जीवन में अवलोकनीय विशेषताएँ हैं।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 2:26-27
[26]मैंने ये बातें तुम्हें उन लोगों के सम्बन्ध में लिखी हैं, जो तुम्हें धोखा देने का यत्न कर रहे हैं। [27]पर जहाँ तक तुम्हारा सम्बन्ध है, वह अभिषेक जो तुमने उस से प्राप्त किया है, तुम में बना रहता है, और तुम्हें इस बात की आवश्यकता नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए; परन्तु जिस प्रकार उसका वह अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है, और सत्य है और झूठ नहीं, और जैसा कि उसने तुम्हें सिखाया है, तुम उसमें बने रहो।

2:26 "जो तुम्हें धोखा देने का यत्न कर रहे हैं" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है। हर युग में धोखेबाज होते हैं (तुलना मत्ती 7:15; 24:11,24; 2 यूहन्ना 7)। ये अक्सर ईमानदार धर्मावलम्बी होते हैं जो मसीही सभाओं में भाग लेते और सक्रिय होते हैं।

2:27 "अभिषेक" यह अभिषेक के परिणाम पर जोर देता है, न कि उसमें शामिल साधनों (आत्मा) या तत्वों (सुसमाचार सत्य) में। अभिषेक एक विशेष बुलाहट और एक परमेश्वर-प्रदत्त कार्य के लिए एक व्यक्ति को सुसज्जित करने की पुराने नियम की अवधारणा थी। भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं का अभिषेक किया जाता था। यह शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर "मसीहा" शब्द से संबंधित है। यहाँ यह परिणामी स्थिरता को संदर्भित करता है जो पवित्र आत्मा के द्वारा सुसमाचार के प्रति हृदय और मन का प्रबोधन विश्वासियों के लिए लाता है। विशेष विषय: बाइबल में अभिषेक (BDB 603) यूहन्ना 11:2 पर देखें

झूठे शिक्षक परमेश्वर से एक विशेष प्रकटीकरण (यानी, विशेष अभिषेक) का दावा कर रहे थे। यूहन्ना का दावा है कि सभी विश्वासी पहले से ही सच्चा अभिषेक प्राप्त कर लेते हैं जब वे अभिषिक्त जन पर भरोसा करते हैं, उसकी आत्मा से भर जाते हैं, और परमेश्वर के वचन में बने रहते हैं।

▣ **"जो तुमने प्राप्त किया है"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो कुछ पिछले पूर्ण किए गए कार्य की ओर इशारा करता है। "अभिषेक" 1 यूहन्ना 2:24 में "तुमने सुना है" का समानांतर है। सुसमाचार को ग्रहण किया जाना चाहिए (1) विश्वास द्वारा व्यक्तिगत रूप से (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16) और (2) सत्य की देह के रूप में (तुलना 2 यूहन्ना 9-10; 1 कुरिन्थियों 15:1-4; यहूदा 3)। इन दोनों कृत्यों की मध्यस्थता पवित्र आत्मा द्वारा की जाती है।

▣ **"और तुम्हें इस बात की आवश्यकता नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए"** पद 27 एक यूहन्ना 2:20 (यानी, नई वाचा, तुलना यिर्मयाह 31:34) के समानांतर है। यूहन्ना आवर्तक विषयों का प्रयोग कर रहा है (1 यूहन्ना 2:20,24,27)। पवित्र आत्मा, ज्ञानवादी झूठे शिक्षक नहीं, हमारा सर्वोच्च और अनिवार्य शिक्षक है (तुलना यूहन्ना 14:26)। हालाँकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि शिक्षक की सेवा और वरदान प्रारंभिक कलीसिया में और आज सक्रिय नहीं है (तुलना इफिसियों 4:11; प्रेरितों के काम 13:1; 1 कुरिन्थियों 12:28)। इसका सीधा सा अर्थ है कि उद्धार से संबंधित बुनियादी बातें पवित्र आत्मा और बाइबल से आती हैं, किसी विशेष, प्रतिभाशाली, मानव शिक्षक से नहीं, हालाँकि वह अक्सर उन्हें एक साधन के रूप में प्रयोग करता है।

▣ **"परन्तु जिस प्रकार उसका वह अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है, और सत्य है और झूठ नहीं"** यह आत्मिक सत्य को दर्शाता है। प्रत्येक मसीही के पास उसकी अंतरात्मा का मार्गदर्शन करने वाला पवित्र आत्मा है। हमें सच्चाई

और नैतिकता के क्षेत्रों में आत्मा के कोमल नेतृत्व के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

▣ **"जैसा कि उसने तुम्हें सिखाया है, तुम उसमें बने रहो"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यूहन्ना इस पत्र में अपने पाठकों के लिए विश्वास आश्वासन के एक तत्व के रूप में "बने रहने" की अवधारणा का बड़े पैमाने पर प्रयोग करता है (तुलना यूहन्ना 15)। बाइबल का विश्वास एक वाचा है जिसमें परमेश्वर पहल करता है और कार्य-सूची निर्धारित करता है, लेकिन मनुष्य को आरम्भ में प्रत्युत्तर देना चाहिए और जारी रहना चाहिए (बने रहें)! बने रहने में एक दिव्य पहलू और एक मानवीय पहलू दोनों शामिल हैं। विशेष विषय: बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. झूठे शिक्षकों की मान्यताओं का वर्णन करें।
2. ऐसे प्रमाण दीजिए जिनसे हम जान सकें कि हम वास्तव में छुड़ाए गए हैं।
3. अभ्यस्त पाप और पाप के पृथक कार्यों के बीच के संबंध को स्पष्ट करें।
4. संत की दृढ़ता और विश्वासी की सुरक्षा के बीच के संबंध को स्पष्ट करें।
5. मनुष्य के तीन शत्रुओं को सूचीबद्ध और परिभाषित करें।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1 यूहन्ना 2:28-3:24

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
परमेश्वर की सन्तान (2:28-3:10)	परमेश्वर की सन्तान	सच्चे विश्वास के प्रति निष्ठा (2:18-29)	मसीह का दुश्मन (2:18-29)	परमेश्वर की सन्तान के रूप में जीना (2:29-4:6)
2:28-3:3	2:28-3:3	2:28	2:28-29	
		2:29	परमेश्वर की सन्तान	2:29-3:2
		सही आचरण में व्यक्त सन्तानोचित संबंध		
		3:1-10	3:1-3	पहली शर्त: पाप से अलग होना
	पाप और परमेश्वर की संतान			3:3-10
3:4-10	3:4-9		3:4-6	
			3:7-8	
	प्रेम की अनिवार्यता		3:9-10	
एक दूसरे से प्रेम करो	3:10-15	एक दूसरे के लिए प्रेम	एक दूसरे से प्रेम करो	दूसरी शर्त: आज्ञाओं का पालन करना, विशेष रूप से जीवन
3:11-18		3:11-18	3:11-12	3:11-24
	प्रेम का कार्य		3:13-18	
परमेश्वर के सम्मुख विश्वास	3:16-23	मसीही का आश्वासन	परमेश्वर के सम्मुख साहस	
3:19-24	सत्य की आत्मा और भ्रांति की आत्मा	3:19-24	3:19-24	
	3:24-4:6			

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद

3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. अध्याय 2 ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों (विशिष्ट रूप से डोसेटिक ज्ञानवादी जिन्होंने यीशु की मानवता को नकार दिया) की ओर निर्देशित किया गया है।

B. अध्याय 3 उन झूठे शिक्षकों की ओर इंगित करना जारी रखता है जिन्होंने आचारनीति और नैतिकता (पवित्रीकरण) से उद्धार (धर्मी ठहराने) को अलग कर दिया है। फिर भी अध्याय 3 विश्वासी को भी अधिक सीधे-सीधे संबोधित करता है।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठः 1 यूहन्ना 2:28-3:3
[28]अतः हे बच्चों, उसमें बने रहो, जिससे कि जब वह प्रकट हो, तो हमें साहस हो और उसके आगमन पर हमें उसके सम्मुख लज्जित न होना पड़े। [29]यदि तुम जानते हो कि वह धर्मी है, तो यह भी जानते हो कि प्रत्येक जो धार्मिकता पर आचरण करता है, उस से उत्पन्न हुआ है। [3:1]देखो, पिता ने हमें कैसा महान प्रेम प्रदान किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ; और हम वही हैं। इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि संसार ने उसे भी नहीं जाना। [2]प्रियों, हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे। पर यह जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा, तो हम उसके सदृश होंगे, क्योंकि हम उसको ठीक वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। [3]प्रत्येक जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा कि वह पवित्र है।

2:28 टिप्पणीकारों के बीच बहुत चर्चा है कि क्या 28, 29, या 3:1 में एक नया अनुच्छेद शुरू होना चाहिए। 1 यूहन्ना 3:27 और 28 के बीच दोहराव के कारण, अनुच्छेद विभाग शायद यहाँ आना चाहिए।

▣ **"बच्चों"** 1 यूहन्ना 2:1 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"उसमें बने रहो"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यह मसीही दृढ़ता (तुलना 1 यूहन्ना 3:15,24) को बढ़ावा देने के लिए प्रयोग की जाने वाला तीसरा वर्तमान आज्ञार्थक है। विशेष विषय: धीरज धरने की आवश्यकता यूहन्ना 8:31 और बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

सर्वनामों के पूर्ववृत्त अक्सर पहचानने में मुश्किल होते हैं, लेकिन इस अनुच्छेद में, वे स्पष्ट हैं।

1. "उस में," 1 यूहन्ना 2:28a - यीशु
2. "उसके," 1 यूहन्ना 2:28b - यीशु
3. "उसके," 1 यूहन्ना 2:28b - यीशु
4. "वह धर्मी है," 1 यूहन्ना 2:29 - पिता
5. "उससे उत्पन्न," 1 यूहन्ना 2:29 - पिता (ध्यान दें)
6. "उसे जाना," 1 यूहन्ना 3:1 - पिता (तुलना यूहन्ना 15:21;16:2-3)
7. "वह प्रकट होगा," 1 यूहन्ना 3:2 - यीशु
8. "उस के सदृश," 1 यूहन्ना 3:2 - यीशु
9. "उसको देखेगें," 1 यूहन्ना 3:2 - यीशु
10. "वह है," 1 यूहन्ना 3:2 - यीशु
11. "उस पर," 1 यूहन्ना 3:3 - यीशु
12. "जैसा कि वह पवित्र है," 1 यूहन्ना 3:3 - यीशु

संदर्भ संदर्भ, संदर्भ!

▣ **"जब वह प्रकट हो"** यह 1 यूहन्ना 2:29 और 1 यूहन्ना 3:2 का "जब वह प्रकट होगा," की तरह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है। इसका अर्थ एक अनिश्चित घटना को नहीं, लेकिन एक अनिश्चित समय को व्यक्त करना है (नये नियम में शब्द "आशा," के प्रयोग के समान 1 यूहन्ना 3:3)।

▣ **"हमें साहस हो"** "साहस" (*parrhēsia*) के लिए यूनानी शब्द "स्वतंत्र रूप से बोलने के लिए" मूल से है। आश्वासन एक वर्तमान जीवनशैली है जो विश्वासी के यीशु मसीह के सुसमाचार के ज्ञान और उसमें विश्वास पर आधारित है।

विशेष विषय: निर्भीकता यूहन्ना 7:4 पर देखें।

NASB **"और शर्म से उससे ना झिझकें"**
NKJV **"उसके सम्मुख लज्जित न होना पड़े"**
NRSV **"और उसके सामने शर्मिंदा हो"**
TEV **"और शर्म से उससे न छिपें"**
NJB **"और शर्म से उससे ना झिझकें"**

यह निर्देशात्मक कर्मवाच्य (प्रतिपादक) संशयार्थ-सूचक है जिसका अर्थ है कि इसे इस प्रकार समझा जा सकता है
1. विश्वासी का स्वयं लज्जित होना (NASB, TEV, NJB)
2. विश्वासी को लज्जित किया जाया जाना (NRSV)

विश्वासियों को मसीह की वापसी की बाट जोहनी है और आनन्दित होना है, लेकिन जिन्होंने स्वार्थी सांसारिक तरीकों से जीवन जिया है, वे उसके प्रकट होने पर निश्चित रूप से आश्चर्यचकित और शर्मिंदा होंगे! विश्वासियों का न्याय होगा (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:10)।

▣ **"उसके आगमन पर"** यह दूसरे आगमन का संदर्भ है। यह शब्द, *Parousia*, यूहन्ना के सारे लेखनों में से केवल यहाँ प्रयोग किया गया है और इसका लक्ष्यार्थ एक निकटस्थ राजसी आगमन है।

यह अक्षरशः है "*Parousia* तक," जिसका अर्थ है "उपस्थिति" और एक राजसी आगमन के लिए प्रयोग किया जाता था। दूसरे आगमन के लिए प्रयोग किए जाने वाले अन्य नये नियम के शब्द हैं
1. *epiphaneia*, "आमने-सामने दर्शन"
2. *apokalupis*, "अनावरण"
3. "प्रभु का दिन" और इस वाक्यांश के रूपांतर

विशेष विषय: यीशु के पुनरागमन के लिए नये नियम के शब्द (SPECIAL TOPIC: NT TERMS FOR CHRIST'S RETURN)

एक विशेष आने वाले दिन, जब मनुष्य यीशु से मिलेंगे (उद्धारकर्ता और न्यायाधीश के रूप में),पर युगांतकारी जोर कई पदनामों से दिया गया है।
1. "हमारे प्रभु यीशु मसीह का दिन" (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:8)
2. "प्रभु का दिन" (तुलना 1 कुरिन्थियों 5:5; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 थिस्सलुनीकियों 2:2)।
3. "प्रभु यीशु का दिन" (तुलना 2 कुरिन्थियों 1:14; MS א इसमें 1 कुरिन्थियों 5:5) है।
4. "यीशु मसीह का दिन" (तुलना फिलिप्पियों 1:6)
5. "मसीह का दिन" (तुलना फिलिप्पियों 1:10; 2:16)
6. "अपने दिन (मनुष्य का पुत्र)" (तुलना लूका 17:24)
7. "मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने का दिन" (तुलना लूका 17:30)
8. "हमारे प्रभु यीशु मसीह का प्रगट होना" (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:7)
9. "जब प्रभु यीशु स्वर्ग से प्रगट होगा" (तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 1:7)
10. "हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय" (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 2:19)

कम से कम चार तरीके हैं जिनमें नये नियम के लेखक यीशु के पुनरागमन का उल्लेख करते हैं।
1. *epiphaneia*, जो एक चकाचौंध करनेवाली चमक को संदर्भित करता है जो कि धर्मशास्त्रीय रूप से (हालाँकि व्युत्पत्तिक रूप से नहीं) "महिमा" से संबंधित है। 2 तीमुथियुस 1:10; तीतुस 2:11 और 3:4 में यह यीशु के प्रथम आगमन (अर्थात देहधारण) और उसके दूसरे आगमन का उल्लेख करता है। इसका प्रयोग 2 थिस्सलुनीकियों 2:8 में किया गया है जिसमें दूसरे आगमन के लिए सभी तीन प्रमुख शब्द शामिल हैं: 1 तीमुथियुस 6:14; 2 तीमुथियुस 4:1,8; तीतुस 2:13।
2. *parousia*, जिसका अर्थ है उपस्थिति और मूल रूप से एक शाही दौरे का उल्लेख करता है। यह सबसे व्यापक

रूप से प्रयोग किया जाने वाला शब्द है (तुलना मत्ती 24:3,27,37,39; 1 कुरिन्थियों 15:14; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; 3:13; 4:15; 5:23; 2 तीमुथियुस 4:1,8; याकूब 5:7,8; 2 पतरस 1:16; 3:4,12; 1 यूहन्ना 2:28)।

3. *apokalupsis* (या *apocalysis*), प्रगट करने के उद्देश्य से एक अनावरण। यह नये नियम की अंतिम पुस्तक का नाम है (तुलना लूका 17:30; 1 कुरिन्थियों 1:7; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7; 1 पतरस 1:7; 4:13)।
4. *phaneroō*, जिसका अर्थ है प्रकाश में लाना या स्पष्ट रूप से प्रकट करना या प्रदर्शित करना। यह शब्द अक्सर परमेश्वर के प्रकटीकरण के कई पहलुओं के लिए नये नियम में प्रयोग किया जाता है। यह *epiphaneia* की तरह, मसीह के पहले आगमन (तुलना 1 पतरस 1:20; 1 यूहन्ना 1:2; 3:5,8; 4:9) और उसके दूसरे आगमन (तुलना मत्ती 24:30) कुलुस्सियों 3:4; 1 पतरस 5:4; 1 यूहन्ना 2:28; 3:2)। का उल्लेख कर सकता है
5. "आगमन," के लिए बहुत ही सामान्य शब्द, *erchomai* का प्रयोग कभी-कभी मसीह के पुनरागमन के लिए भी किया जाता है (तुलना मत्ती 16:27-28; 23:39; 24:30; 25:31; प्रेरितों के काम 1:10-11; 1 कुरिन्थियों 11:26; प्रकाशितवाक्य 1:7,8)।
6. यह "प्रभु का दिन" वाक्यांश के साथ भी प्रयोग किया जाता है (तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 5:2), जो परमेश्वर के आशीष (पुनरुत्थान) और न्याय के दिन के लिए एक पुराने नियम का नाम है।
   नया नियम एक पूर्ण रूप में पुराने नियम की विश्वदृष्टि के अंतर्गत लिखा गया है, जो दावा करता है
   a. एक वर्तमान दुष्ट, विद्रोही युग
   b. आनेवाला धार्मिकता का एक नया युग
   c. मसीहा (अभिषिक्त) के काम के माध्यम से आत्मा के प्रतिनिधित्व द्वारा लाया गया एक युग

प्रगतिशील प्रकटीकरण की धर्मशास्त्रीय धारणा की आवश्यकता है क्योंकि नये नियम के लेखक इस्राएल की अपेक्षा को थोड़ा संशोधित करते हैं।मसीहा के एक सैन्य, राष्ट्रवादी (इस्राएल) आगमन के बजाय, दो आगमन हैं। पहला आगमन नासरत के यीशु के गर्भाधान और जन्म में देवता का देहधारण है। वह यशायाह 53 के गैर-सैन्य, गैर-न्यायिक "पीड़ित दास" के रूप में; साथ ही जकर्याह 9:9 के एक गधी के बच्चे (जो कि एक युद्ध का घोड़ा या शाही खच्चर नहीं है), पर दीन सवार के रूप में आया। पहले आगमन ने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य, नए मसीहाई युग का शुभारंभ किया (विशेष विषय: परमेश्वर का राज्य देखें)। एक अर्थ में राज्य यहाँ है, लेकिन निश्चित रूप से, दूसरे में यह अभी भी दूर है। यह मसीहा के दो आगमनों (विशेष विषय: मसीहा देखें) के बीच का यही तनाव है, जो एक मायने में, दो यहूदी युगों का अतिच्छादन है (विशेष विषय: यह युग और आने वाला युग देखें) , जो पुराने नियम से अनदेखा या कम से कम अस्पष्ट रहा। वास्तव में, यह दोहरा आगमन YHWH की सारी मानवता को छुटकारा देने की प्रतिबद्धता पर जोर देता है (तुलना उत्पत्त 3:15; 12:3; निर्गमन 19:5 और भविष्यवक्ताओं के उपदेश, विशेषकर यशायाह और योना)।

कलीसिया पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति के लिए इंतजार नहीं कर रही है क्योंकि अधिकांश भविष्यवाणियाँ पहले आगमन का उल्लेख करती हैं (तुलना *How to Read the Bible For All Its Worth*, pp.165-166)। विश्वासी, पुनरुत्थित राजाओं के राजा प्रभु के प्रभु के गौरवशाली आगमन की आशा अवश्य रखते हैं, जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर धार्मिकता के नए युग की अपेक्षित ऐतिहासिक पूर्ति (तुलना मत्ती 6:10)। पुराने नियम की प्रस्तुतियाँ गलत नहीं थीं, लेकिन अधूरी थीं। वह फिर से वैसे ही आएगा जैसा कि भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी YHWH की सामर्थ्य और अधिकार के साथ।

दूसरा आगमन बाइबल का शब्द नहीं है, बल्कि यह अवधारणा संपूर्ण नये नियम की विश्वदृष्टि और ढांचा है। परमेश्वर यह सब ठीक करेगा। परमेश्वर और उसके स्वरूप में बनी मानवजाति के बीच संगति पुनर्स्थापित की जाएगी। दुष्ट का न्याय किया जाएगा और हटाया जाएगा। परमेश्वर के उद्देश्य, असफल नहीं होगें, नहीं हो सकते हैं!

प्रारंभिक कलीसिया सब्त और सप्ताह के पहले दिन (यानी, रविवार, पुनरुत्थान दिवस) दोनों दिन आराधना करती थी। आराधनालय ने बढ़ते हुए मसीही आंदोलन से निपटने के लिए यीशु को मसीहा के रूप में अस्वीकार करने की माँग की (यानी, अठारह आशीर्वाद)। इस समय पर (यानी,70 ई.) मसीही केवल रविवार को मिलने लगे।

2:29 "यदि" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। यहाँ यह एक स्वीकृत ज्ञान को संदर्भित करता है जिसे विश्वासी लोग साझा करते हैं, लेकिन झूठे शिक्षक चूक गए हैं।

▣ **"तुम जानते हो"** व्याकरणिक रूप में यह या तो एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है, जो एक निरंतर ज्ञान को बताता है, या एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है जो एक विश्वासी के आवश्यक ज्ञान की बात करता है।जिनके पास आत्मा है, उन सभी के अधिकार के रूप में यूहन्ना का "जानते" का प्रयोग निर्धारित करता है कि यह निर्देशात्मक है।

▣ **"वह"** यह यीशु को संदर्भित करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:1, 28; 3:7)। हालाँकि, अंतिम सर्वनाम "उससे उत्पन्न हुआ"

परमेश्वर पिता को संदर्भित करता हुआ प्रतीत होता है क्योंकि "परमेश्वर से उत्पन्न" वाक्यांश का प्रयोग अक्सर किया गया है (तुलना 1 यूहन्ना 3:9; 4:7; 5:1,4,18; यूहन्ना 1:13)।

▣ **"धर्मी. . .धार्मिकता"** यह एक अपेक्षित पारिवारिक विशेषता है!

विशेष विषय: धार्मिकता (SPECIAL TOPIC: RIGHTEOUSNESS)

"धार्मिकता" एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है, कि बाइबल के विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से अवधारणा का व्यापक अध्ययन करना चाहिए।

पुराने नियम में परमेश्वर के चरित्र को "न्यायी" या "धर्मी" (क्रिया, BDB 842, KB 1003; पुल्लिंग संज्ञा, BDB 841, KB 1004; स्त्रीलिंग संज्ञा, BDB 842, KB 1006) के रूप में वर्णित किया गया है। मेसोपोटामियाई शब्द स्वयं एक "नदी की ईख" से आता है, जिसका उपयोग दीवारों और बाड़ों की समस्तरीय सीधाई जाँचने के लिए एक निर्माण उपकरण के रूप में किया जाता था। परमेश्वर ने अपने स्वभाव के रूपक का उपयोग करने के लिए इस शब्द को चुना। वह सीधमापक (पैमाना) है जिसके द्वारा सभी चीजों का मूल्यांकन किया जाता है। यह अवधारणा परमेश्वर की धार्मिकता साथ ही साथ न्याय करने के उसके अधिकार पर जोर देती है।

मनुष्य को परमेश्वर की छवि में बनाया गया था (तुलना उत्पत्ति 1:26-27; 5:1,3; 9:6)। मानवजाति को परमेश्वर के साथ संगति के लिए बनाया गया था (यानी, उत्त्पति 3:8)। सारी सृष्टि परमेश्वर और मानव जाति के परस्पर संवाद के लिए एक मंच या पृष्ठभूमि है। परमेश्वर चाहता था कि उसकी सर्वोच्च रचना, मानव जाति, उसे जाने, उससे प्रेम करे, उसकी सेवा करे, और उसी के समान बने। मानव जाति की वफादारी का परीक्षण किया गया (तुलना उत्पत्ति 3) और मूल जोड़ा परीक्षण में विफल हो गया। इससे परमेश्वर और मानवता के बीच के संबंध में व्यवधान उत्पन्न हुआ (रोमियों 5:12-21)।

परमेश्वर ने संगति को सुधारने और उसे बहाल करने का वादा किया था (तुलना उत्पत्ति 3:15; विशेष विषय : YHWH की अनंत छुटकारे की योजना देखें)। ऐसा वह अपने स्वयं की इच्छा और स्वयं के पुत्र के माध्यम से करता है। मनुष्य संबंध विच्छेद को बहाल करने में असमर्थ थे (तुलना रोमियों 1:18-3: 20, प्रकाशितवाक्य 5)।

पतन के बाद, परमेश्वर का बहाली की ओर पहला कदम वाचा की अवधारणा था जो उसके निमंत्रण और मानव जाति का पश्चातापी, विश्वासयोग्य, आज्ञाकारी प्रतिक्रिया पर आधारित था (तुलना यिर्मयाह 31:31-34; यहेजकेल 36:22-38)। पतन के कारण मनुष्य उचित कार्रवाई करने में असमर्थ थे (तुलना रोमियों 3:21-31; गलातियों 3)। वाचा तोड़नेवाले मनुष्यों को पुनर्स्थापित करने के लिए परमेश्वर को स्वयं पहल करनी पड़ी। उसने इसके द्वारा किया

1. मसीह के काम के माध्यम से पापी मानवजाति को धर्मी घोषित करना (न्याय संबंधी धार्मिकता)।
2. मसीह के काम के माध्यम से मानव जाति को उदारता से धार्मिकता देना (आरोपित धार्मिकता)।
3. अन्तर्निवास करने वाला आत्मा प्रदान करना जो मानवजाति में धार्मिकता (यानी,मसीह की समानता, परमेश्वर की छवि की बहाली) उत्पन्न करता है।
4. अदन की वाटिका की संगति को बहाल करना (उत्त्पति 1-2 की प्रकाशितवाक्य 21-22 से तुलना करें)

हालाँकि, परमेश्वर को एक अनुबंधात्मक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। परमेश्वर आदेश देता (यानी उदारता से देता है, यानी, रोमियों 5:8; 6:23) और प्रदान करता है, लेकिन मनुष्यों को प्रत्युत्तर देना चाहिए और इनमें प्रत्युत्तर देना जारी रखना चाहिए

1. पश्चाताप
2. विश्वास
3. जीवनशैली में आज्ञाकारिता
4. धीरज

धार्मिकता, अतः, परमेश्वर और उसकी सर्वोच्च रचना के बीच एक अनुबंधात्मक, पारस्परिक कार्यवाही है। यह परमेश्वर के चरित्र, मसीह के कार्य और आत्मा को सक्षम करने पर आधारित है, जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से और लगातार उचित तरीके से प्रतिक्रिया करनी चाहिए। अवधारणा को "विश्वास के द्वारा दोष मुक्ति" कहा जाता है(यानी, इफिसियों 2:8-9)। अवधारणा का खुलासा सुसमाचारों में होता है, लेकिन इन शब्दों में नहीं। यह मुख्य रूप से पौलुस द्वारा परिभाषित किया गया है,जो 100 से अधिक बार अपने विभिन्न रूपों में यूनानी शब्द "धार्मिकता" का उपयोग करता है।

पौलुस, एक प्रशिक्षित रब्बी होने के नाते, *dikaiosunē* शब्द का इस्तेमाल Septuagint में प्रयुक्त शब्द *tsaddiq* के इब्रानी अर्थ में करता है , यूनानी साहित्य से नहीं। यूनानी लेखन में यह शब्द किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ा है जो देवता और समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप है (यानी, नूह, अय्यूब)। इब्रानी अर्थ में इसकी संरचना हमेशा वाचा के शब्दों से होती है

(विशेष विषय: वाचा देखें)। YHWH एक न्यायी, नीतिपरक, नैतिक परमेश्वर है। वह चाहता है कि उसके लोग उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करें। पापमुक्त मानवजाति एक नया प्राणी बन जाती है(तुलना 2 कुरिन्थियों 5:17; गलातियों 6:15)। इस नयेपन से देवभक्ति की एक नई जीवन शैली विकसित होती है (तुलना मत्ती 5-7; गलातियों 5:22-24;याकूब; 1यूहन्ना)। चूंकि इस्राएल एक धर्मतंत्र था, इसलिए धर्मनिरपेक्ष (समाज के मानदंड) और पवित्र (परमेश्वर की इच्छा) के बीच कोई स्पष्ट रूपरेखा नहीं थी। यह भेद जो इब्रानी और यूनानी शब्दों में प्रकट किया गया है, अंग्रेजी में "न्याय" (समाज से संबंधित) "धार्मिकता" (धर्म से संबंधित) के रूप में अनुवादित किया जा रहा है।

यीशु का सुसमाचार (अच्छी खबर) यह है कि पतित मानवजाति को परमेश्वर के साथ संगति के लिए बहाल किया गया है। यह पिता के प्यार, दया और अनुग्रह; पुत्र के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान; और आत्मा का लुभाने और सुसमाचार की ओर लाने के माध्यम से पूर्ण हुआ है। दोषमुक्ति परमेश्वर का एक नि:शुल्क कार्य है, लेकिन इसका परिणाम देवभक्ति होना चाहिए (ऑगस्टीन का दृष्टिकोण जो सुसमाचार की स्वतंत्रता के सुधारक कार्यों पर जोर और प्यार और विश्वास के एक परिवर्तित जीवन पर रोमन कैथोलिक जोर, दोनों को प्रतिबिंबित करता है)। सुधारकों के लिए यह शब्द "परमेश्वर की धार्मिकता" एक वस्तुनिष्ठ संबंध कारक है (अर्थात पापी मानवजाति को परमेश्वर के लिए स्वीकार्य बनाने का कार्य [स्थिति संबंधी पवित्रीकरण]), जबकि कैथोलिक के लिए यह एक व्यक्तिनिष्ठ संबंधकारक है, जो और अधिक परमेश्वर की तरह बनने की प्रक्रिया (अनुभवात्मक प्रगतिशील पवित्रीकरण)। वास्तव में यह निश्चित रूप से दोनों है!!)

मेरे विचार से, उत्पत्ति 4 से प्रकाशितवाक्य 20 तक संपूर्ण बाइबल, परमेश्वर का अदन की संगति बहाल करने का एक अभिलेख है। बाइबल एक सांसारिक विन्यास में परमेश्वर और मानव जाति की संगति के साथ शुरू होती है (तुलना उत्पत्ति 1-2) और बाइबल उसी विन्यास के साथ समाप्त होती है (तुलना प्रकाशितवाक्य 21-22)। परमेश्वर की छवि और उद्देश्य बहाल किया जाएगा!

उपरोक्त चर्चाओं का प्रलेखन करने के लिए, यूनानी शब्द समूह दर्शाने वाले निम्नलिखित चयनित नए नियम अनुच्छेदों की ओर ध्यान दें।

1. परमेश्वर धर्मी है (अक्सर न्यायाधीश के रूप में परमेश्वर से जुड़ा होता है)
   a. रोमियों 3:26
   b. 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-6
   c. 2 तीमुथियुस 4:8
   d. प्रकाशितवाक्य 16:5
2. यीशु धर्मी है
   a. प्रेरितों के काम 3:14; 7:52; 22:14 (मसीह की उपाधि)
   b. मत्ती 27:19
   c. 1 यूहन्ना 2:1,29; 3:7
3. उसकी रचना के लिए परमेश्वर की इच्छा धार्मिकता है
   a. लैव्यव्यवस्था 19:2
   b. मत्ती 5:48 (तुलना 5:17-20)
4. धार्मिकता प्रदान करने और उत्पादन करने के परमेश्वर के साधन
   a. रोमियों 3:21-31
   b. रोमियों 4
   c. रोमियों 5:6-11
   d. गलातियों 3:6-14
5. परमेश्वर द्वारा दिया गया
   a. रोमियों 3:24; 6:23
   b. 1 कुरिन्थियों 1:30
   c. इफिसियों 2:8-9
6. विश्वास से प्राप्त
   a. रोमियों 1:17; 3:22,26; 4:3,5,13; 9:30; 10:4,6,10
   b. 2 कुरिन्थियों 5:7,21
7. पुत्र के कृत्यों के माध्यम से
   a. रोमियों 5:21
   b. 2 कुरिंथियों 5:21

c. फिलिप्पियों 2:6-11

8. परमेश्वर की इच्छा है कि उसके अनुयायी धर्मी हों
   a. मत्ती 5:3-48; 7:24-27
   b. रोमियों 2:13; 5:1-5; 6:1-23
   c. इफिसियों 1:4, 2:10
   d. 1 तीमुथियुस 6:11
   e. 2 तीमुथियुस 2:22; 3:16
   f. 1 यूहन्ना 3:7
   g. 1 पतरस 2:24
9. परमेश्वर दुनिया का न्याय धार्मिकता के साथ करेंगे
   a. प्रेरितों 17:31
   b. 2 तीमुथियुस 4:8

धार्मिकता परमेश्वर की एक विशेषता है, जो स्वतंत्र रूप से मसीह के माध्यम से पापी मानव जाति को दी गई है। यह है

1. परमेश्वर की एक आज्ञा
2. परमेश्वर का एक उपहार
3. मसीह का एक कृत्य
4. एक जीवन जीने के लिए

लेकिन यह धर्मी बनने की भी एक प्रक्रिया है जिसका उत्साह से और दृढ़तापूर्वक पालन किया जाना चाहिए; यह एक दिन दूसरे आगमन पर संपूर्ण हो जाएगी। उद्धार के समय परमेश्वर के साथ संगति बहाल हो जाती है, लेकिन मृत्यु या पुनरागमन (*Parousia)* पर आमने-सामने मुठभेड़ (तुलना 1 यूहन्ना 3:2) बनने के लिए जीवन भर आगे बढ़ती रहती है!

इस चर्चा को समाप्त करने के लिए यहाँ IVP से *Dictionary of Paul and His Letters* से लिया गया एक अच्छा उद्धरण है

> "केल्विन, लूथर से अधिक, परमेश्वर की धार्मिकता के संबंधपरक पहलू पर जोर देता है। लूथर के परमेश्वर की धार्मिकता के दृष्टिकोण में दोषमुक्ति का पहलू समाहित है। केल्विन व्यवहार की अद्‌भुत प्रकृति अथवा परमेश्वर की धार्मिकता हमें प्रदान करने पर जोर देता है" (पृष्ठ 834)।

मेरे लिए परमेश्वर के साथ विश्वासी के रिश्ते के तीन पहलू हैं:

1. सुसमाचार एक व्यक्ति है (पूर्वी कलीसिया और केल्विन का जोर)
2. सुसमाचार सत्य है (ऑगस्टाइन और लूथर का जोर)
3. सुसमाचार एक परिवर्तित जीवन है (कैथोलिक जोर)

वे सभी सत्य हैं और एक स्वस्थ, सही, बाइबल आधारित मसीहत के लिए एक साथ संगठित रहने चाहिए। यदि किसी एक पर अधिक बल दिया जाता है या मूल्यह्रास किया जाता है, समस्याएँ होती हैं।

हमें यीशु का स्वागत करना चाहिए!
हमें सुसमाचार पर विश्वास करना चाहिए!
हमें मसीह के समान होने का अनुसरण करना चाहिए!

▣ **"उत्पन्न"** यह एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है जिसका अर्थ है कि एक बाहरी प्रतिनिधि, परमेश्वर पिता (तुलना यूहन्ना 3:3) द्वारा लाई गई एक स्थिर स्थिति है। मसीहत (यह एक परिवार है) का वर्णन करने के लिए एक और पारिवारिक उपमा (तुलना 1 यूहन्ना 3:9) के प्रयोग पर ध्यान दें। 1 यूहन्ना 3:1d पर टिप्पणी देखें।

3:1 "कैसा महान प्रेम" यहाँ पर और पूरे 1 यूहन्ना में प्रेम के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द हैं *agapaō* (क्रिया) या *agapē* (संज्ञा, तुलना 1 यूहन्ना 2:5,15; 3:1,16,17; 4:7,8,9,10,12,16,17,13; 3:3)। यह शब्द प्राचीन यूनानी में प्रयोग किया गया था, लेकिन बहुधा नहीं। ऐसा लगता है कि प्रारम्भिक कलीसिया ने इसे सुसमाचार के प्रकाश में पुनर्परिभाषित किया था। यह एक गहरे बने रहने वाले प्रेम को दर्शाने वाला बना। यह कहना अनुचित है कि "एक परमेश्वर की तरह स्व-अर्पण वाला प्रेम" क्योंकि यूहन्ना के सुसमाचार में इसे *phileō* के साथ पर्यायवाची रूप में प्रयोग किया गया है (तुलना यूहन्ना 5:20; 11:3,36; 12:25; 15:19; 16:27; 20:2; 21:15,16,17)। तथापि, यह दिलचस्प है कि इसका प्रयोग हमेशा (1 यूहन्ना में) विश्वासियों के साथ विश्वासियों के प्रेम के संबंध में किया गया है। विश्वास और यीशु के साथ सहभागिता हमारे देवता और मानवजाति के साथ संबंध को बदल देता है!

▣ **"पिता ने हमें प्रदान किया है"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। मसीह में परमेश्वर के उद्धार के दान से जुड़े इस काल का प्रयोग विश्वासी की सुरक्षा के सिद्धांत के लिए एक बाइबल का आधार है (तुलना यूहन्ना 6:35-40; 10:1ff; इफिसियों 2:5,8; 5:1)। विशेष विषय: मसीही आश्वासन यूहन्ना 6:37 पर देखें

विशेष विषय: किसी के उद्धार के लिए नये नियम के प्रमाण (SPECIAL TOPIC: NEW TESTAMENT EVIDENCE FOR ONE'S SALVATION)

यह यीशु में नई वाचा (तुलना यिर्मयाह 31:31-34; यहेजकेल 36:22-38) पर आधारित है:

1. पिता का चरित्र (तुलना यूहन्ना 3:16), पुत्र का काम (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:21), और आत्मा की सेवकाई (तुलना रोमियों 8:14-16)। मानव प्रदर्शन पर नहीं, आज्ञाकारिता के कारण मजदूरी नहीं, सिर्फ एक पंथ नहीं।
2. यह एक वरदान है (तुलना रोमियों 3:24; 6:23; इफिसियों 2:5,8-9)।
3. यह एक नया जीवन, एक नया विश्वदृष्टि है (तुलना याकूब और 1 यूहन्ना)।
4. यह ज्ञान (सुसमाचार), संगति (यीशु में और यीशु के साथ विश्वास), और एक नई जीवन शैली (आत्मा की अगुवाई में मसीह समान होना) सभी तीनों हैं, न कि अपने आप में सिर्फ कोई।
5. सच्चे उद्धार के परीक्षण 1 यूहन्ना 2:3-27, C पर प्रासंगिक अंतर्दृष्टि में ऑनलाइन देखें।

▣ **"कि हम कहलाएँ"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य संशयार्थ-सूचक है जो परमेश्वर द्वारा दिए गए एक सम्मानजनक नाम ("परमेश्वर की संतान") के अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

▣ **"परमेश्वर की संतान"** यह 1 यूहन्ना 2:29-3:10 का केंद्रबिंदु है। यह हमारे उद्धार में परमेश्वर की पहल की पुष्टि करता है (तुलना यूहन्ना 6:44,65)। यूहन्ना देवता के साथ विश्वासी के नए संबंध का वर्णन करने के लिए पारिवारिक शब्दों का प्रयोग करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:29; 3:1,2,9,10; यूहन्ना 1:12)।

यह दिलचस्प है कि यूहन्ना (तुलना यूहन्ना 3:3) और पतरस (तुलना 1 पतरस 1:3,23) पारिवारिक उपमा "नया जन्म" या "ऊपर से उत्पन्न," का प्रयोग करते हैं, जबकि पौलुस पारिवारिक उपमा "लेपालकपन" (तुलना रोमियों 8: 15,23; 9:4; गलातियों 4:1-5; इफिसियों 1:5) और याकूब "जन्म" (तुलना याकूब 1:18) या मसीह के माध्यम से परमेश्वर के साथ विश्वासी के नए रिश्ते का वर्णन करने के लिए "उत्पन्न करना" की पारिवारिक उपमा का प्रयोग करते हैं। मसीहत एक परिवार है।

▣ **"और वही हम हैं"** यह वर्तमान निर्देशात्मक है। यह वाक्यांश बाइबल के King James Version में नहीं पाया जाता है क्योंकि यह बाद की यूनानी पांडुलिपियों (यानी, K और L) में शामिल नहीं किया गया था, जिस पर KJV आधारित है। हालाँकि, यह वाक्यांश कई प्राचीन यूनानी पांडुलिपियों (P^{47}, א, A, B, और C) में से कई में आता है। UBS^4 इसके समावेश को "A" दर्ज़ा (निश्चित) देता है। पाठीय आलोचना पर परिशिष्ट दो देखें।

▣ **"संसार हमें नहीं जानता"** शब्द "संसार" का प्रयोग 2:15-17 की तरह एक समान धर्मशास्त्रीय तरीके से किया गया है। संसार परमेश्वर से अलग होकर संगठित और कार्यरत मानव समाज को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 15:18-19; 17:14-15)। संसार द्वारा सताव और अस्वीकृति मसीह में हमारे स्थान का एक और प्रमाण है (तुलना मत्ती 5:10-16)।

▣ **"क्योंकि संसार ने उसे भी नहीं जाना"** यह परमेश्वर पिता का एक संदर्भ प्रतीत होता है क्योंकि यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु बार-बार यह कहता है कि संसार उसे नहीं जानता (तुलना यूहन्ना 8:19,55; 15:18;21; 16:3)। 1 यूहन्ना में सर्वनाम अस्पष्ट हैं (1 यूहन्ना 2:28 पर ध्यान दें)। इस संदर्भ में व्याकरणिक पूर्ववृत्त पिता है, लेकिन 1 यूहन्ना 3:2 में धर्मशास्त्रीय संदर्भ पुत्र है। हालाँकि, यूहन्ना में यह उद्देश्यपूर्ण अस्पष्टता हो सकती है क्योंकि यीशु को देखना पिता को देखना है (तुलना यूहन्ना 12:45; 14:9)।

3:2 "अब तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे" यह इन अंत समय की घटनाओं (तुलना प्रेरितों के काम 1:7) या पुनर्जीवित शरीर की सटीक प्रकृति का वर्णन करने में यूहन्ना की अक्षमता दर्शाता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 15:35-49)। इससे यह भी पता चलता है कि 2:27 का अर्थ हर क्षेत्र में विस्तृत ज्ञान से नहीं है। यहाँ तक कि इस घटना के बारे में भी यीशु का ज्ञान भी सीमित था जबकि वह मनुष्य रूप में था (तुलना मत्ती 24:36; मरकुस 13:22)।

▣ **"जब वह प्रकट होगा"** शब्द "जब" एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य का परिचय देता है। यहाँ पर इसका प्रयोग दूसरे आगमन पर सवाल उठाने के लिए नहीं, बल्कि इसकी अनिश्चित तिथि को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। यूहन्ना, हालाँकि

अभी एक सम्पूर्ण उद्धार पर जोर देते हुए, एक दूसरे आगमन की भी अपेक्षा करता है।

▣ **"हम उसके सदृश होंगे"** इसमें हमारी मसीह के समान होने की परिणति शामिल है (तुलना 2 कुरिन्थियों 3:18; इफिसियों 4:13; फिलिप्पियों 3:21; और कुलुस्सियों 3:4)। इसे अक्सर " महिमान्वित होना" कहा जाता है (तुलना रोमियों 8:28-30)। यह हमारे उद्धार की पराकाष्ठा है! यह युगांत-विषयक परिवर्तन उसकी समानता में बनाए गए मनुष्यों में परमेश्वर के स्वरूप की पूर्ण पुनःस्थापना से संबंधित है (तुलना उत्पत्ति 1:26; 5:1,3; 9:6)। परमेश्वर के साथ अंतरंग सहभागिता फिर से संभव है!

▣ **"क्योंकि हम उसे ठीक वैसा ही देखेंगे जैसा वह है"** अय्यूब परमेश्वर को देखने के लिए तरस रहा था (तुलना अय्यूब 19:25-27)। यीशु ने हमें बताया कि जो मन के शुद्ध हैं, वे परमेश्वर को देखेंगे (तुलना मत्ती 5:8)। उसकी पूर्णता में उसे देखने का अर्थ है कि हम उसकी समानता में बदल जाएँगे (तुलना 1 कुरिन्थियों 13:12)। यह द्वितीय आगमन पर विश्वासी के महिमान्वित होने को संदर्भित करता है (तुलना रोमियों 8:29)। यदि "धर्मी ठहराए जाने" का अर्थ पाप के दंड से मुक्ति और "पवित्रिकरण" का अर्थ पाप की शक्ति से स्वतंत्रता है, तो "महिमान्वित होने" का अर्थ है पाप की उपस्थिति से स्वतंत्रता!

3:3 "प्रत्येक" यूनानी शब्द *pas* 2:29 से 3:10 तक में सात बार आता है। कोई अपवाद नहीं हैं। यूहन्ना, नितांत, स्पष्ट श्रेणियों में सत्य प्रस्तुत करता है। कोई या तो परमेश्वर की संतान है या शैतान की संतान है (तुलना 1 यूहन्ना 2:29; 3:3,4,6 [दो बार], 9,10)।

▣ **"ऐसी आशा"** पौलुस में यह शब्द अक्सर पुनरुत्थान दिवस को संदर्भित करता है (तुलना प्रेरितों के काम 23:6; 24:15; 26:6-7; रोमियों 8:20-25; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19; तीतुस 2:13; 1 पतरस 1:3,21)। यह घटना की निश्चितता को व्यक्त करता है, लेकिन अस्पष्ट समय तत्व के साथ।

यूहन्ना दूसरी आगमन की "आशा" की बात दूसरे नये नियम के लेखकों की तरह बार बार नहीं करता है। उसके लेखन में इस शब्द का एकमात्र उपयोग है। वह अभी मसीह में "बने रहने" के लाभों और दायित्वों पर ध्यान केंद्रित करता है! हालाँकि, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह अंत-समय में बुराई के न्याय की (तुलना 1 यूहन्ना 2:18) और विश्वासी के अंत-समय में महिमान्वित होने की अपेक्षा नहीं करता (तुलना 1 यूहन्ना 3:1-3)।

▣ **"अपने आप को पवित्र करता है, जैसा कि वह पवित्र है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। शुद्धता महत्त्वपूर्ण है (तुलना मत्ती 5:8,48)। हमें पवित्रीकरण की प्रक्रिया में सहयोग करना चाहिए (तुलना 2 कुरिन्थियों 7:1; याकूब 4:8, 1पतरस 1:22; 2 पतरस 3:13,14) जिस तरह यूहन्ना 1:12 धर्मी ठहराए जाने की प्रक्रिया में हमारे सहयोग की बात करता है। हमारे उद्धार में परमेश्वर की भूमिका (संप्रभुता) और हमारी भूमिका (मानव स्वतंत्र इच्छा) के बीच इसी तनाव को यहेजकेल 18:31 की तुलना 36:26-27 से करके स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (तुलना यूहन्ना 6:44,65), लेकिन उसने माँग की है कि वाचा के लोगों को प्रारंभिक पश्चाताप और विश्वास के साथ निरंतर पश्चाताप, विश्वास, आज्ञाकारिता, सेवा, आराधना और दृढ़ता के साथ प्रत्युत्तर देना चाहिए।

यह यीशु की यूहन्ना 17 की महायाजकीय प्रार्थना, विशिष्ट रूप 1 यूहन्ना 3:17,19 का एक संकेत हो सकता है। वह खुद को पवित्र करता है, उसके अनुयायी खुद को पवित्र करते हैं। यह कुछ आश्चर्यजनक है कि एक ही आधारभूत मूल के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया गया है।

1. यूहन्ना 17:17,19 - *hagiazō* (*hagios*, तुलना यूहन्ना 10:36)
2. 1 यूहन्ना 3:3 – *hagnizō* (*hagnos*, तुलना यूहन्ना 11:55)

3:4-10 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. यह अवतरण मसीही आदर्शवाद (तुलना रोमियों 6) जिसे कभी-कभी सम्पूर्ण पवित्रिकरण कहा जाता है, और मसीही के निरंतर पाप (तुलना रोमियों 7) के बीच विवाद का केंद्र रहा है।

B. हमें अपने धर्मशास्त्रीय पूर्वाग्रह को इस पाठ की हमारी व्याख्या को प्रभावित नहीं करने देना चाहिए। इसके अलावा, हमें अन्य पाठों को इस पाठ को प्रभावित नहीं करने देना चाहिए जब तक कि इस पाठ का हमारा स्वतंत्र अध्ययन पूरा नहीं हो जाता है और हमें यह निश्चय नहीं हो जाता है कि यूहन्ना अध्याय 3 और 1 यूहन्ना की पूरी पुस्तक दोनों में क्या कह रहा था!

C. यह पाठ स्पष्ट रूप से उस लक्ष्य को प्रस्तुत करता है जिसकी सब विश्वासी इच्छा रखते हैं, पाप से पूर्ण रूप से छुटकारा। इसी आदर्श को रोमियों 6 में प्रस्तुत किया गया है। मसीह की शक्ति के माध्यम से हम पाप रहित जीवन जीने की क्षमता रखते हैं।

D. यह अवतरण, हालाँकि, 1 यूहन्ना की संपूर्ण पुस्तक के विस्तृत संदर्भ में उपयुक्त बैठना चाहिए।
1. 1:8-2:2 (मसीही अभी भी पाप करते हैं)पर ध्यान दिए बिना इस अवतरण की व्याख्या करना मूर्खतापूर्ण होगा।
2. इस अवतरण की व्याख्या इस प्रकार से करना कि 1 यूहन्ना समस्त उद्देश्य, झूठे शिक्षकों के दावों के खिलाफ उद्धार का आश्वासन, असफल हो, भी मूर्खतापूर्ण होगा।
3. यह अवतरण झूठे शिक्षकों के पापरहित होने या पाप की महत्त्वहीनता के दावों से संबंधित होगा। संभवतः 1:8-2:2 झूठे शिक्षकों की एक चरमसीमा से संबंध रहता है, जबकि 3:1-10 दूसरी चरमसीमा से। याद रखें कि नये नियम के पत्रों की व्याख्या करना एक फोन वार्तालाप के आधे हिस्से को सुनने जैसा है।

E. इन दो अवतरणों के बीच एक मिथ्याभासी संबंध मौजूद है। मसीही के जीवन में पाप नये नियम में एक आवर्ती समस्या है (तुलना रोमियों 7)। यह पूर्वनिर्धारण और स्वतंत्र इच्छा या सुरक्षा और दृढ़ता के समान उसी द्वंद्वात्मक तनाव को बनाता है। मिथ्याभास एक धर्मशास्त्रीय संतुलन प्रदान करता और चरम स्थितियों पर आक्षेप करता है। झूठे शिक्षक पाप के क्षेत्र में दो त्रुटियाँ पेश कर रहे थे।

F. यह संपूर्ण धर्मशास्त्रीय चर्चा के निम्न बातों के बीच के अंतर की गलतफहमी पर आधारित है
1. मसीह में हमारा स्थान
2. दैनिक जीवन में उस स्थान को अनुभूतिपूर्वक पूरा करने के लिए हमारा प्रयास
3. यह वायदा कि एक दिन जीत हमारी होगी!

हम मसीह में पाप के दंड से मुक्त हैं (धर्मी ठहराया जाना), फिर भी हम उसकी सामर्थ्य के साथ संघर्ष करते हैं (प्रगतिशील पवित्रिकरण) और एक दिन हम उसकी उपस्थिति से मुक्त (महिमान्वित) होंगे। समग्र रूप से यह पुस्तक हमारे पाप को स्वीकार करने और पापहीनता की ओर बढ़ने की प्राथमिकता सिखाती है।

G. दूसरा विकल्प यूहन्ना के साहित्यिक द्वैतवाद से आता है। उसने स्पष्ट श्रेणियों (मृत सागर चीरकों में भी पाया जाता है) में लिखा। उसके अनुसार जो मसीह में था और वह धर्मी था, या शैतान में था और इस तरह पापी था। कोई तीसरी श्रेणी नहीं थी। यह परिधीय, सांस्कृतिक, अंशकालिक, मात्र अंतिम संस्कार, मात्र-ईस्टर मसीही धर्म के लिए "जगाने की याचना" के रूप में कार्य करता है!

H. इस कठिन विषय पर कुछ संदर्भ:
1. इस अवतरण की सात पारंपरिक व्याख्याओं के लिए देखें "The Epistles of John" in *The Tyndale New Testament Commentaries* by John R. W. Story, published by Eerdman's (pp. 130-136).
2. प्रवीणता की स्थिति पर एक अच्छे वर्णन के लिए *Christian Theology*, Vol. II, p. 440ff by H. Orlon Willie, published by Beacon Hill Press, देखें।
3. मसीही के जीवन में जारी रहने वाले पाप के सिद्धांत पर एक अच्छे वर्णन के लिए "Perfectionism" by B. B. Warfield published by The Presbytetian and Reformed Published Company देखें।

शब्द और पाठ अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 3:4-10

4प्रत्येक जो पाप करता है वह व्यवस्था का उल्लंघन करता है; क्योंकि पाप व्यवस्था का उल्लंघन है। 5तुम जानते हो कि वह इसलिएप्रकट हुआ कि पापों को हर ले जाए; और उसमें कोई भी पाप नहीं। 6जो उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता; जो पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जानता है। 7बच्चों, कोई तुम्हें धोखा न दे। जो धार्मिकता का आचरण करता है, वह धर्मी है,ठीक वैसा ही जैसा वह धर्मी है। 8जो पाप करता है वह शैतान से है; क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इस अभिप्राय से प्रकट हुआ कि वह शैतान के कार्य को नष्ट करे। 9जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें

बना रहता है; और वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है। [10]इसी से परमेश्वर के संतान और शैतान के संतान जाने जाते हैं कि कोई धार्मिकता पर आचरण नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और वह भी नहीं जो अपने भाई से प्रेम नहीं करता।

3:4

NASB	**"प्रत्येक जो पाप करता है वह व्यवस्था का उल्लंघन करता है"**
NKJV	**"जो कोई पाप करता है अधर्म भी करता है"**
NRSV	**"प्रत्येक जो पाप करता है वह अधर्म का दोषी है"**
TEV	**"जो कोई पाप करता है वह परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने का दोषी है "**
NJB	**"जो कोई पाप करता है, वह दुष्टता से कार्य करता है"**

सर्वनाम "प्रत्येक" यहाँ और 1 यूहन्ना 3:6 में सामने है। यह सन्दर्भ सारी मानवता से संबंधित है!

यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत और एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह महत्त्वपूर्ण है कि ये वर्तमान काल क्रिया 1 यूहन्ना 2:1-2 के अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक के मुकाबले आदतन, चल रही, जीवन शैली की क्रिया पर जोर दें, हालाँकि, इस अवतरण की धर्मशास्त्रीय समस्या (1:7-10 के साथ 3:69 की तुलना करें) को क्रिया काल द्वारा हल नहीं किया जा सकता है। इसे दो प्रकार के ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के ऐतिहासिक विन्यास और पुस्तक के कुल संदर्भ द्वारा हल किया गया है।

इस अवतरण का एक और विशिष्ट शब्द "अधर्म" का प्रयोग है। यह एक व्यवस्था (मूसा की व्यवस्था या सामाजिक मानदंडों) के उल्लंघन की उतनी बात नहीं करता है, जितनी कि विद्रोह के रवैये की। इसी शब्द का प्रयोग 2 थिस्सलुनीकियों 2:3,7 में मसीह-विरोधी का वर्णन करने के लिए किया गया है। यह पाप, मसीह के समान होने के विपरीत (तुलना 1 यूहन्ना 3:5), की एक पूर्ण परिभाषा हो सकती है (तुलना यूहन्ना 9:41; रोमियों 14:23; याकूब 4:17; 1 यूहन्ना 5:17), एक नियम या मानक का उल्लंघन मात्र नहीं।

3:5 "वह प्रकट हुआ" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य निर्देशात्मक है जो यीशु के देहधारण की बात करता है (तुलना 1 यूहन्ना 3:8; 2 तीमुथियुस 1:10)। उसी क्रिया, *phaneroō*, का प्रयोग दो बार 1 यूहन्ना 3:2 में उसके दूसरे आगमन के लिए किया गया है। वह पहली बार उद्धारकर्ता के रूप में आया (तुलना मरकुस 10:45; यूहन्ना 3:16; 2 कुरिन्थियों 5:21), लेकिन वह पूर्ण करनेवाले के रूप में लौटेगा! अपनी टिप्पणी, *The Letters of John*, में मेरे पसंदीदा शिक्षकों में से एक, बी. एल. हेंड्रिक कहते हैं:

> "मसीह के आने के उद्देश्य के दो सबसे मर्मज्ञ कथन इस पद और पद 8 में पाए जाते हैं। वह परमेश्वर द्वारा पापों को हर ले जाने के लिए भेजा गया था (3:5), और वह शैतान के कार्यों को नष्ट करने के लिए प्रकट हुआ था (3:8)। किसी और स्थान पर लूका ने दर्ज किया कि यीशु के आने का उद्देश्य खोए हुओं को ढूँढना और उनका उद्धार करना था (लूका 19:10)। यूहन्ना रचित सुसमाचार में कहा गया है कि यीशु आया कि उसकी भेड़ें बहुतायत का जीवन पाएँ (यूहन्ना 10:10)। मत्ती ने यीशु के नाम की व्याख्या में यीशु के आने के उद्देश्य को बताया; वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा (मत्ती 1:21)। इन भावों के आधार पर मूल तथ्य यह है कि यीशु मसीह ने मनुष्य के लिए कुछ किया है जो मनुष्य स्वयं अपने लिए नहीं कर सकता (pp. 79-80)।

▣ **"पापों को हर ले जाए"** यह एक अनिर्दिष्टकाल संशयार्थ-सूचक है। कार्य मानव प्रतिक्रिया (यानी, पश्चाताप और विश्वास) पर निर्भर है। इस कथन की पृष्ठभूमि दो संभावित स्रोतों से संबंधित है।

1. प्रायश्चित्त का दिन (तुलना लैव्यव्यवस्था 16) जहाँ दो बलि के बकरों में से एक प्रतीकात्मक रूप से इस्राएल प्रजा के पाप उठा ले जाता है (तुलना यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का यूहन्ना 1:29 में प्रयोग)
2. जो कुछ यीशु ने क्रूस पर किया, उसका सन्दर्भ (तुलना यशायाह 53:11-12; यूहन्ना 1:29; इब्रानियों 9:28; 1 पतरस 2:24)।

▣ **"और उसमें कोई भी पाप नहीं"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यीशु मसीह की पापहीनता (तुलना यूहन्ना 8:46; 2 कुरिन्थियों 5:21; इब्रानियों 4:15; 7:11; 1 पतरस 1:19; 2:22) हमारे बदले में उसके प्रतिनिधिक, प्रतिस्थापन के प्रायश्चित्त का आधार है (यशायाह 53)।

ध्यान दें कि "पाप" 1 यूहन्ना 3:5 के पहले भाग में बहुवचन है और अंतिम भाग में एकवचन है। पहला पाप के कृत्यों को संदर्भित करता है, दूसरा उसके धर्मी चरित्र को। लक्ष्य यह है कि विश्वासी मसीह के स्थिति- संबंधी पवित्रिकरण और प्रगतिशील पवित्रिकरण दोनों में हिस्सेदार होगा। पाप मसीह और उसके अनुयायियों के लिए एक अनजानी वस्तु है।

विशेष विषय: पवित्रीकरण (SPECIAL TOPIC: SANCTIFICATION)

नया नियम यह दावा करता है कि जब पापी पश्चाताप और विश्वास के साथ यीशु की ओर मुड़ते हैं (तुलना मरकुस 1:15; प्रेरितों के काम 3:16,19; 20:21), वे तुरंत धर्मी ठहराए और पवित्र किये जाते हैं। यह मसीह में उनका नया स्थान है। उनकी धार्मिकता उन पर लाद दी गई है (तुलना उत्पत्ति 15:6; रोमियों 4)। उन्हें सही और पवित्र (परमेश्वर का एक न्यायिक कार्य) घोषित किया गया है।

लेकिन नया नियम भी पवित्रता या पवित्रीकरण पर विश्वासियों को आग्रह करता है। यह यीशु मसीह के समाप्त कार्य में एक धर्मशास्त्रीय स्थिति और दैनिक जीवन में दृष्टिकोण और कार्यों में मसीह के समान होने का आह्वान है। जैसा कि उद्धार एक मुफ्त दान है और एक हर कीमत चुकानेवाली जीवन शैली है, वैसे ही, पवित्रीकरण भी है

<u>प्रारंभिक प्रतिक्रिया</u>	<u>उत्तरोत्तर मसीह के समान होना</u>
प्रेरितों के काम 26:18	रोमियों 6:19
रोमियों 15:16	2 कुरिन्थियों 7:1
1 कुरिन्थियों 1:2-3; 6:11	इफिसियों 1:4; 2:10
2 थिस्सलुनीकियों 2:13	1 थिस्सलुनीकियों 3:13, 4:3-4,7; 5:2
इब्रानियों 2:11; 10:10,14; 13:12	1 तीमुथियुस 2:15
2 पतरस 1:2	2 तीमुथियुस 2:21
	1 पतरस 1:15-16
	इब्रानियों 12:14

3:6 "जो उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता" 3:4 के समान, यह एक और वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है और कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह अवतरण 1:8-2:2 और 5:16 के विपरीत होना चाहिए।

▣ **"जो पाप करता है उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जानता है"** इस पद में एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है जिसके पश्चात दो पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं। निरंतर घोर पाप किया जाना इस बात को प्रकट करता है कि कोई व्यक्ति मसीह को नहीं जानता है और कभी भी मसीह को नहीं जाना है। पाप करनेवाले मसीही

1. मसीह के मिशन को विफल करते हैं
2. मसीह के समान होने के लक्ष्य को विफल करते हैं
3. व्यक्ति के आत्मिक मूल को प्रकट करते हैं (तुलना यूहन्ना 8:44)

3:7 "कोई तुम्हें धोखा न दे" यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है, सामान्य रूप से जिसका अर्थ है कि प्रक्रिया में एक कार्य को बंद करो। झूठे शिक्षकों की उपस्थिति (तुलना 1 यूहन्ना 2:26) पूर्ण रूप से 1 यूहन्ना और विशेष रूप से 1:7-10 और 3:4-10 पदों की उचित धर्मशास्त्रीय समझ के लिए ऐतिहासिक स्थिति निर्धारित करती है।

▣ **"जो धार्मिकता का आचरण करता है, वह धर्मी है"** इस पद को सामान्य संदर्भ से अलग नहीं किया जा सकता है और एक सिद्धांतवादी स्थिति ("धार्मिकता काम करता है") का समर्थन या निंदा करने के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है । नया नियम स्पष्ट है वह मनुष्य अपनी व्यक्तिगत योग्यता से पवित्र परमेश्वर के पास नहीं जा सकता है। मनुष्यों ने स्वयं के प्रयास से उद्धार नहीं पाया है। हालाँकि, मनुष्यों को मसीह के पूर्ण हुए कार्य में परमेश्वर के उद्धार के प्रस्ताव का प्रत्युत्तर देना चाहिए। हमारे प्रयास हमें परमेश्वर तक नहीं लाते। वे दिखाते हैं कि हम उससे मिले हैं। वे स्पष्ट रूप से हमारी आत्मिक स्थिति (तुलना प्रकाशितवाक्य 22:11) और उद्धार के बाद परिपक्वता को प्रकट करते हैं। हम अच्छे कार्यों "से" नहीं, बल्कि अच्छे कार्यों "में" उद्धार पाए हैं। मसीह में परमेश्वर के मुफ्त दान का लक्ष्य मसीही सदृश अनुयायी है (तुलना इफिसियों 2:8-9,10)। प्रत्येक विश्वासी के लिए परमेश्वर की अंतिम इच्छा मृत्यु होने पर सिर्फ स्वर्ग नहीं है (न्यायिक धर्मी ठहराया जाना), लेकिन अभी मसीह के समान होना है(अस्थायी पवित्रीकरण) (तुलना मत्ती 5:48; रोमियों 8:28-29; गलातियों 4:19)! धार्मिकता पर एक शब्द अध्ययन के लिए 1 यूहन्ना 2:29 पर विशेष विषय देखें।

3:8 "जो पाप करता है वह शैतान से है" यह वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है। परमेश्वर के संतान इस बात से जाने जाते हैं कि वे कैसे रहते हैं, उसी प्रकार शैतान के संतान भी (तुलना 1 यूहन्ना 3:10; मत्ती 7:41; इफिसियों 2:1-3)।

▣ **"शैतान ने शुरू से ही पाप किया है"** यह कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। शैतान शुरू से ही पाप करता आया है (यूहन्ना 8:44)। क्या यह सृजन या एक दिव्य विद्रोह को संदर्भित करता है?

धर्मशास्त्रीय रूप से यह निर्धारित करना मुश्किल है कि शैतान ने कब परमेश्वर के खिलाफ नेतृत्व विद्रोह किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि अय्यूब 1-2; जकर्याह 3 और 1 राजाओं 22:19-23 दर्शाते हैं कि शैतान परमेश्वर का सेवक और दिव्य सभासदों में से एक है। यह संभव है (लेकिन संभावित नहीं) कि पूर्वी राजाओं (बेबीलोन के, यशायाह 14:13-14 या सोर के, यहेजकेल 28:12-16) के गर्व, अहंकार और महत्वाकांक्षा का प्रयोग शैतान (जाहिर तौर पर एक सुरक्षा प्रदान करनेवाला करूब, यहेजकेल 28:14,16) के विद्रोह की घोषणा करने के लिए किया गया है। । हालाँकि, लूका 10:18 में यीशु ने कहा कि उसने शैतान को बिजली के समान आकाश से गिरते देखा, लेकिन यह हमें नहीं बताता है कि ठीक ठीक कब। प्रकटीकरण की कमी के कारण दुष्ट की उत्पत्ति और विकास एक अनिश्चितता बनी हुई है। अलग-थलग, अस्पष्ट, आलंकारिक पाठों को व्यवस्थित करने और रूढ़ि के रूप में कहने से सावधान रहें! पुराने नियम के दास से लेकर नीच शत्रु तक शैतान के विकास की सबसे अच्छी चर्चा A. B. Davidson's *Old Testament Theology,* published by T&T Clark, pp. 300-306 है। विशेष विषय: व्यक्तिगत दुष्टता यूहन्ना 12:31 पर देखें।

▣ **"परमेश्वर का पुत्र"** नीचे दिए गए विशेष विषय को देखें।

विशेष विषय: परमेश्वर का पुत्र (SPECIAL TOPIC: THE SON OF GOD)

यह यीशु के लिए नये नियम के प्रमुख नामों में से एक है। इसका निश्चित रूप से दिव्य लक्ष्यार्थ है। इसमें यीशु को "पुत्र" या "मेरा पुत्र" के रूप में शामिल किया गया, परमेश्वर को "पिता" के रूप में भी संबोधित किया गया (विशेष विषय: परमेश्वर का पितृत्व देखें)। यह नये नियम में 124 से अधिक बार आता है। यहाँ तक कि यीशु के स्व-पदनाम "मनुष्य का पुत्र" का भी दानिय्येल 7:13-14 से एक दिव्य लक्ष्यार्थ है।

पुराने नियम में पदनाम "पुत्र" चार विशिष्ट समूहों को संदर्भित कर सकता है (विशेष विषय: ". . .के पुत्र" (पुराना नियम) देखें।

A. स्वर्गदूत (आमतौर पर बहुवचन में, तुलना उत्पत्ति 6:2; अय्यूब 1:6; 2:1)
B. इस्राएल का राजा (तुलना 2 शमूएल 7:14; भजनसंहिता 2:7; 89:26-27)
C. सम्पूर्ण रूप से इस्राएल राष्ट्र (तुलना निर्गमन 4:22-23; व्यवस्थाविवरण 14:1; होशे 11:1; मलाकी 2:10)।
D. इस्राएल के न्यायाधीश (तुलना भजनसंहिता 82:6)

यह दूसरा प्रयोग है जो यीशु से जुड़ा हुआ है। इस तरह "दाऊद का पुत्र" और "परमेश्वर का पुत्र" दोनों 2 शमूएल 7; भजनसंहिता 2 और 89 से संबंध रखते हैं। पुराने नियम में "परमेश्वर का पुत्र" का प्रयोग विशेष रूप से मसीहा के रूप में नहीं किया गया है, सिवाय इस्राएल के "अभिषिक्त अधिकारी" के रूप में एक युगांतकारी राजा। हालाँकि, मृतक सागर चीरकों में मसीहाई निहितार्थ के साथ नाम आम है (*Dictionary of Jesus and the Gospels*, p.770 में विशिष्ट संदर्भ देखें)। इसके अलावा "परमेश्वर का पुत्र" दो अंतरबाइबलीय यहूदी भविष्यसूचक लेखनों में एक मसीहाई नाम है (तुलना II एसद्रास 7:28; 13:32,37,52; 14: 9 और I हनोक 105:2)।

इसकी नये नियम की पृष्ठभूमि जिस प्रकार से यीशु का उल्लेख करती है, कई श्रेणियों द्वारा सर्वोत्तम रीति से संक्षेप में प्रस्तुत की गई है।

1. उसका पूर्व-अस्तित्व (तुलना यूहन्ना 1:15-30; 8:56-59; 16:28; 17:5; 2 कुरिन्थियों 8:9; फिलिप्पियों 2:6-7; कुलुस्सियों 1:13; ; इब्रानियों 1:3; 10:5-8)
2. उनका अनोखा (कुँवारी) जन्म (तुलना यशायाह 7:14; मत्ती 1:23; लूका 1:31-35)
3. उसका बपतिस्मा (तुलना मत्ती 3:17; मरकुस 1:11; लूका 3:22; स्वर्ग से परमेश्वर की आवाज़, यशायाह 53 के पीड़ित दास को भजनसंहिता 2 के शाही राजा के साथ एक करती है)।
4. उसकी शैतानी परीक्षा (तुलना मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12,13; लूका 4:1-13। उसे अपने पुत्रत्व पर संदेह करने के लिए या कम से कम अपने उद्देश्य को क्रूस के अलावा अलग-अलग तरीकों से पूरा करने के लिए लुभाया जाता है)।
5. अस्वीकार्य पापस्वीकर्ता द्वारा उसकी पुष्टि
   a. दुष्टात्मा (तुलना मरकुस 1:23-25; लूका 4:31-37,41; मरकुस 3:11-12; 5:7; विशेष विषय: नये नियम में

दुष्टात्मा [अशुद्ध आत्मा] देखें)
b. अविश्वासी (तुलना मत्ती 27:43; मरकुस 14:61; यूहन्ना 19:7)
6. उसके शिष्यों द्वारा उसकी पुष्टि
a. मत्ती 14:33; 16:16
b. यूहन्ना 1:34,49; 6:69; 11:27
7. उसकी आत्मपुष्टि
a. मत्ती 11:25-27
b. यूहन्ना 10:36
8. परमेश्वर के लिए पिता के रूप में पारिवारिक रूपक का उसका प्रयोग
a. परमेश्वर के लिए उसका अब्बा का प्रयोग
1) मरकुस 14:36
2) रोमियों 8:15
3) गलातियों 4:6
b. देवता के साथ अपने संबंध का वर्णन करने के लिए उसके द्वारा पिता (*patēr*) का आवर्तक प्रयोग

सारांश में, "परमेश्वर के पुत्र" नाम का पुराने नियम और इसके वादों और श्रेणियों को जानने वालों के लिए बहुत धर्मशास्त्रीय अर्थ था, लेकिन नये नियम के लेखक "देवताओं" द्वारा स्त्रियों को लेने के परिणामस्वरूप संतानों के "दैत्य" या "दानव" होने की पृष्ठभूमि के कारण अन्यजातियों के साथ इसके प्रयोग के बारे में घबराए हुए थे।

▣ **"प्रकट हुआ"** यह यूनानी शब्द *phaneroō* है, जिसका अर्थ है "स्पष्ट करने के लिए प्रकाश में लाना।" पद 5 और 8 समानांतर हैं और दोनों ही कर्मवाच्य में इस शब्द का प्रयोग करते हैं, जो मसीह के उसके देहधारण में सही मायने में प्रकट होने की बात करता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:2)। झूठे शिक्षकों के साथ समस्या यह नहीं थी कि सुसमाचार उनके लिए अस्पष्ट था, बल्कि यह कि उनकी अपनी धार्मिक/दार्शनिक कार्यावली थी।

▣ **"शैतान के कार्य को नष्ट करे"** समय और देह में यीशु की अभिव्यक्ति का उद्देश्य "नष्ट करना" था (*luō* का अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक), जिसका अर्थ है "खोलना", "बंधनमुक्त करना" या "नष्ट करना।" यीशु ने कलवरी पर ठीक यही किया, लेकिन मनुष्यों को उसे विश्वास के साथ ग्रहण करके (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16) उसके पूर्ण हुए काम और मुफ्त दान (तुलना रोमियों 3:24; 6:23; इफिसियों 2:8) का प्रत्युत्तर देना चाहिए।

नये नियम का "पहले से और अभी तक नहीं" तनाव भी दुष्ट के विनाश से संबंधित है। शैतान को हरा दिया गया है, लेकिन वह संसार में परमेश्वर के साम्राज्य के पूर्णता तक पहुँचने तक अभी भी सक्रिय है।

3:9 "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है" यह एक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है (तुलना 1 यूहन्ना 3:9c; 2:29; और 5:18 में समानांतर) जो एक बाहरी प्रतिनिधि (परमेश्वर) द्वारा उत्पादित स्थिर स्थिति की बात करता है।

▣ **"पाप नहीं करता"** यह 2:1 के विरोध में एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जहाँ अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक का दो बार प्रयोग किया गया है। इस कथन के महत्त्व के बारे में दो सिद्धांत हैं।

1. यह ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों से संबंधित है, विशेष रूप से वह गुट जिसने उद्धार को बौद्धिक अवधारणा तक सीमित कर दिया, इस प्रकार एक नैतिक जीवनशैली की आवश्यकता को हटा दिया।
2. वर्तमान काल क्रिया निरंतर, अभ्यस्त, पापी गतिविधि (तुलना रोमियों 6:1) पर जोर देती है, पापों के पृथक कार्यों पर नहीं (तुलना रोमियों 6:15)

इस धर्मशास्त्रीय भेद की रोमियों 6 (मसीह में संभावित पापहीनता) और रोमियों 7 (कम पाप करने का विश्वासी का चल रहा संघर्ष) में व्याख्या की गई है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण #1 सबसे उचित लगता है, लेकिन फिर भी इस सत्य को आज लागू करने की आवश्यकता है, जो #2 को सम्बोधित करता है। *Hard Sayings of the Bible* by Walter Kaiser, Peter Davis, F.F. Bruce, and Manfred Branch, pp. 736-739 में इस कठिन पद की एक अच्छी चर्चा है।

▣ **"क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। इस बात को लेकर कई सिद्धांत हुए हैं कि यूनानी वाक्यांश "उसका बीज," का अर्थ क्या है

1. ऑगस्तीन और लूथर ने कहा कि यह परमेश्वर के वचन को संदर्भित करता है (तुलना लूका 8:11; यूहन्ना 5:38; याकूब 1:18; 1 पतरस 1:23)
2. केल्विन ने कहा कि यह पवित्र आत्मा को संदर्भित करता है (तुलना यूहन्ना 3:5,6,8; 1 यूहन्ना 3:24; 4:4,13)
3. अन्य लोगों ने कहा कि यह दिव्य प्रकृति या नये निजी व्यक्तित्व को संदर्भित करता है (तुलना 2 पतरस 1:4; इफिसियों 4:24)
4. संभवतः यह स्वयं मसीह को "अब्राहम" के बीज के रूप में संदर्भित करता है (तुलना लूका 1:55; यूहन्ना 8: 33,37; गलातियों 3:16)
5. कुछ लोग यह कहते हैं कि यह "परमेश्वर से उत्पन्न" वाक्यांश का पर्याय है।
6. जाहिर तौर पर यह एक शब्द था जिसका प्रयोग ज्ञानवादियों ने सब मनुष्यों में दिव्य चिंगारी के विषय में बोलने के लिए किया था

नंबर 4 शायद इन सब सिद्धांतों में से सबसे अच्छा प्रासंगिक विकल्प है, लेकिन यूहन्ना ने आरम्भिक ज्ञानवादियों का खंडन करने के लिए अपनी शब्दावली को चुना (यानी, #6)।

3:10 यह 1 यूहन्ना 3:4-9 का सारांश है। इसमें दो वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक और दो वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत शामिल हैं, जो प्रक्रिया में कार्य का उल्लेख करते हैं। धर्मशास्त्रीय रूप से यह पहाड़ी उपदेश में यीशु के कथन समानांतर है (तुलना मत्ती 7:16-20)। किसी का जीवन जीना उसके हृदय, उसके आत्मिक अभिविन्यास को प्रकट करता है। यह 2:29 की नकारात्मक विषमता है!

▣ **"परमेश्वर के संतान. . .शैतान के संतान"** यह यूहन्ना की सामी पृष्ठभूमि को दर्शाता है। इब्रानी ने, विशेषण के बिना एक प्राचीन भाषा होने के नाते, "का पुत्र" का प्रयोग व्यक्तियों का वर्णन करने के तरीके के रूप में किया।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 3:11-12
[11]क्योंकि जो समाचार तुमने आरम्भ से सुना, वह यह है कि हम एक दूसरे से प्रेम करें—[12]कैन के समान नहीं, जो उस दुष्ट से था, और जिसने अपने भाई की हत्या की। उसने किस कारण से उसकी हत्या की? उसके कर्म तो दुष्ट और उसके भाई के कर्म धार्मिकता के थे।

3:11 "समाचर" यह यूनानी शब्द (*aggelia*, सामान्य रूप से लिप्यन्तरण एंजेलिया) केवल 1 यूहन्ना 1:5 और 3:11 में प्रयोग किया जाता है। पहला प्रयोग सैद्धांतिक लगता है, जबकि दूसरा नैतिक लगता है। यह मसीहत के इन दो पहलुओं के बीच यूहन्ना के संतुलन को ध्यान में रखते हुए है (तुलना 1 यूहन्ना 1:8,10; 2:20,24; 3:14)।

▣ **"तुमने आरम्भ से सुना"** यह वाक्यांश एक साहित्यिक रचना है जो यीशु को परमेश्वर के जीवित वचन (तुलना यूहन्ना 1:1) और परमेश्वर के प्रकट करने वाले वचन के रूप में समझाती है (तुलना 1 यूहन्ना 1:1; 2:7,13,14,24; 2 यूहन्ना 5,6)।

▣ **"हम एक दूसरे से प्रेम करें"** यह सबूत है जिसके द्वारा विश्वासियों को पता है कि वे वास्तव में छुड़ाए गए हैं (तुलना 1 यूहन्ना 3:10,14)। यह यीशु के शब्दों को दर्शाता है (तुलना यूहन्ना 13:34-35;15:12,17; 1 यूहन्ना 3:23;4:7-8,11-12,19-21)।

3:12 "कैन" कैन के जीवन का विवरण उत्पत्ति 4 में दर्ज किया गया है। सटीक संदर्भ उत्पत्ति 4:4 है (तुलना इब्रानियों 11:4), जहाँ कैन और हाबिल के अर्पणों में विषमता है। कैन के कार्य से मानवजाति के पतन के प्रभाव का पता चलता है (तुलना उत्पत्ति 4:7; 6:5,11-12,13b)। यहूदी और मसीही दोनों परंपराओं में (तुलना इब्रानियों 11: 4; यहूदा 11) कैन दुष्ट विद्रोह का एक उदाहरण है।

▣ **"जो उस दुष्ट से था"** यह व्याकरणिक संरचना पुल्लिंग एकवचन हो सकता है (उस दुष्ट, तुलना 1 यूहन्ना 3:10) या नपुंसक एकवचन (दुष्ट का)। यही व्याकरण संबंधी अस्पष्टता मत्ती 5:37; 6:13; 13:19,38; यूहन्ना 17:15; 2 थिस्सलुनीकियों 3:3; 1 यूहन्ना 2:13,14; 3:12, और 5:18-19 में पाई जाती है। कई मामलों में संदर्भ स्पष्ट रूप से शैतान को संदर्भित करता है (तुलना मत्ती 5:37; 13:38; यूहन्ना 17:15)।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 3:13-22
[13]भाइयों, यदि संसार तुमसे घृणा करता है तो आश्चर्य न करना। [14]हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन

में आ पहुँचे हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। वह जो प्रेम नहीं रखता मृत्यु में बना रहता है। [15]प्रत्येक जो अपने भाई से घृणा करता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन वास नहीं करता। [16]हम प्रेम को इसी से जानते हैं, कि उसने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया। अतः हमें भी भाइयों के लिए अपना प्राण देना चाहिए। [17]परन्तु जिस किसी के पास इस संसार की संपत्ति है और वह अपने भाई को आवश्यकता में देख कर भी उसके प्रति अपना हृदय कठोर कर लेता है तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? [18]बच्चों, हम कथन अथवा जीभ से नहीं, वरन कार्य तथा सत्य द्वारा भी प्रेम करें। [19]इसी से हम जानेंगे कि हम सत्य के हैं और हम उसके सम्मुख उन बातों में अपने हृदयों को आश्वस्त कर सकेंगे, [20]जिन बातों में हमारा हृदय हमें दोषी ठहरता है; क्योंकि परमेश्वर हमारे हृदय की अपेक्षा कहीं महान है और वह सब कुछ जानता है। [21]प्रियों, यदि हमारा हृदय हमें दोषी न ठहराए, तो परमेश्वर के सम्मुख हमें साहस होता है; [22]और जो कुछ हम माँगते हैं, उससे पाते हैं, क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते और वे ही कार्य करते हैं जो उसकी दृष्टि में प्रिय हैं।

3:13 "आश्चर्य न करना" यह एक नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है जिसका अर्थ अक्सर पहले से ही प्रगति में एक कार्य को रोकना होता है (तुलना 1 पतरस 4:12-16)। यह संसार निष्कपट नहीं है; यह संसार वैसा नहीं है जैसा कि परमेश्वर ने इसे चाहा था!

▣ **"यदि"** यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है।

▣ **"संसार तुमसे घृणा करता है"** उसने यीशु से घृणा की; यह उसके अनुयायियों से भी घृणा करेगा। नये नियम में यह एक आम विषय (तुलना यूहन्ना 15:18; 17:14; मत्ती 5:10-11; 2 तीमुथियुस 3:12) और एक और प्रमाण है कि कोई व्यक्ति विश्वासी है।

3:14 "हम जानते हैं" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (*oida* का रूप पूर्ण है, लेकिन अर्थ वर्तमान है)। यह एक और आम विषय है। परमेश्वर के संतानों का आत्मविश्वास संबंधित है (1) मन परिवर्तन और (2) कार्य परिवर्तन से, जो यूनानी और इब्रानी में "पश्चाताप" शब्द के मूल अर्थ हैं।

▣ **"हम मृत्यु से पार होकर जीवन में आ पहुँचे हैं"** यह एक और पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (तुलना यूहन्ना 5:24)। मृत्यु से पार होकर जीवन (यानी, मसीही आश्वासन, यूहन्ना 6:37 पर विशेष विषय देखें)में आने के प्रमाणों में से एक है कि हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं। दूसरा यह है कि संसार हमसे घृणा करता है।

▣ **"क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। प्रेम परमेश्वर के परिवार की प्रमुख विशेषता है (तुलना यूहन्ना 13:34-35; 15:12,17; 2 यूहन्ना 5; 1 कुरिन्थियों 13; गलातियों 5:22) क्योंकि यह परमेश्वर की स्वयं की विशेषता है,(तुलना 1 यूहन्ना 4:7-21)। प्रेम परमेश्वर के साथ मानवीय संबंधों का आधार नहीं, बल्कि परिणाम है। प्रेम उद्धार का आधार नहीं, बल्कि इसका एक और प्रमाण है।

▣ **"वह जो प्रेम नहीं रखता मृत्यु में बना रहता है"** यह एक वर्तमान सामान्य प्रत्यय है जिसका प्रयोग वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक क्रिया के साथ कर्त्ता के रूप में किया जाता है। जिस प्रकार विश्वासियों का प्रेम करना जारी है, अविश्वासी घृणा में बने रहते हैं। घृणा, प्रेम की तरह, किसी के आत्मिक अभिविन्यास का एक प्रमाण है। यूहन्ना की नितांत, द्वैतवादी श्रेणियों को याद रखें; कोई भी या तो प्रेम में बना रहता है या मृत्यु में बना रहता है। कोई बीच का स्थल नहीं है।

3:15 "प्रत्येक" यूहन्ना ने 2:29 के बाद से 8 बार इस शब्द (*pas*) का प्रयोग किया है। इसका महत्त्व यह है कि यूहन्ना जो कह रहा है, इसका कोई अपवाद नहीं हैं। केवल दो तरह के लोग होते हैं, प्रेमी और घृणा करनेवाले। यूहन्ना स्पष्ट शब्दों में जीवन को देखता है, कोई अस्पष्टता नहीं।

▣ **"प्रत्येक जो अपने भाई से घृणा करता है, वह हत्यारा है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है (यानी, एक चल रही, स्थिर घृणा)। विचार जीवन में पाप सबसे पहले आता है। यीशु के पहाड़ी उपदेश में यीशु ने सिखाया कि घृणा हत्या के बराबर है जैसे कामुकता व्यभिचार के बराबर है (तुलना मत्ती 5:21-22)।

▣ **"और तुम जानते हो कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन वास नहीं करता"** यह ऐसा नहीं कह रहा है जो हत्या करता

है वह मसीही नहीं हो सकता। पाप क्षम्य है, लेकिन जीवनशैली की क्रियाएँ हृदय को प्रकट करती हैं। यह कह रहा है कि जो आदतन घृणा करता है वह मसीही नहीं हो सकता। प्रेम और घृणा परस्पर एकान्तिक हैं! घृणा एक प्राण लेती है, लेकिन प्रेम अपना प्राण देता है।

3:16 "हम जानते हैं" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। 1 यूहन्ना 3:15 में प्रयुक्त यूनानी शब्द *oida* था; यहाँ यह *ginōskō* है। ये यूहन्ना के लेखन में समानार्थी रूप से प्रयुक्त होते हैं।

▣ **"प्रेम को इसी से"** यीशु ने प्रेम क्या है इसका सर्वोच्च उदाहरण दिखाया है। विश्वासियों को उसके उदाहरण का अनुकरण करना है (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:14-15)।

▣ **"उसने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया"** यह यीशु के स्वयं के शब्दों प्रयोग करते हुए कलवरी का उल्लेख है। (यूहन्ना 10:11,15,17,18; 15:13)।

▣ **"हमें भी चाहिए"** विश्वासी यीशु के उदाहरण से बंधे हुए हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:6; 4:11)।

▣ **"भाइयों के लिए अपना प्राण देना"** मसीह इसका उदाहरण है। जैसा कि उसने दूसरों के लिए अपना प्राण दिया, मसीहियों को भी अपना प्राण यदि आवश्यक हो तो भाइयों के लिए देना चाहिए। आत्म-केंद्रित होने से मरने का अर्थ है

1. पतन का विपरीत
2. परमेश्वर के स्वरूप की पुनःस्थापना
3. सामाजिक भलाई के लिए जीना (तुलना 2 कुरिन्थियों 5:14-15; फिलिप्पियों 2:5-11; गलातियों 2:20; 1 पतरस 2:21)

3:17 "परन्तु जिस किसी के पास इस संसार की संपत्ति है और वह अपने भाई को आवश्यकता में देख कर भी" ये वर्तमान संशयार्थ-सूचक क्रियाएँ हैं। 1 यूहन्ना 3:16 का किसी के प्राण का दिया जाना अब किसी भाई की संभावित, व्यावहारिक सहायता के दायरे में आता है। ये पद याकूब के समान प्रतीत होते हैं। (तुलना याकूब 2:15,16)

▣ **"उसके प्रति अपना हृदय कठोर कर लेता है"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है। अक्षरशः शब्द हृदय है "भीतरी भाग," भावनाओं के लिए एक इब्रानी मुहावरा। फिर से, हमारे कार्य हमारे पिता को प्रकट करते हैं।

▣ **"परमेश्वर का प्रेम"** फिर से यह एक वस्तुनिष्ठ या संशयार्थ-सूचक या उद्देश्यपूर्ण अस्पष्टता है?

1. परमेश्वर के लिए प्रेम
2. हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम
3. दोनों

नंबर 3 यूहन्ना के लेखन में उचित बैठता है!

3:18 "हम कथन या जीभ से प्रेम नहीं करें" कार्य शब्दों से अधिक प्रभावशाली होते हैं (तुलना मत्ती 7:24; याकूब 1:22-25; 2:14-26)।

▣ **"वरन कार्य तथा सत्य द्वारा भी"** "सत्य" शब्द आश्चर्यजनक है। कोई भी "कार्य" के पर्यायवाची जैसे "कर्म," की अपेक्षा करेगा। इस शब्द का अर्थ खरा (NJB) या सच्चा (TEV) लगता है, जैसे 1 यूहन्ना 1:5 और 3:11 में "समाचर" का प्रयोग जो सिद्धांत और जीवन शैली दोनों पर जोर देता है, इसी प्रकार "सत्य" भी।कर्म और उद्देश्य दोनों स्वार्पण-प्रेम (परमेश्वर का प्रेम) से प्रेरित होना चाहिए, न कि केवल दिखावटी कर्मों से जो प्रदाता या दाता के अहंकार को बढ़ाते हैं।

3:19 "इसी से हम जानेंगे" यह पहले उल्लेखित प्रेमपूर्ण कृत्यों को संदर्भित करता है। यह भविष्यकाल मध्यम (प्रतिपादक) निर्देशात्मक है, जो किसी व्यक्ति के वास्तविक रूपांतरण का एक और प्रमाण है।

▣ **"कि हम सत्य के हैं"** विश्वासियों की प्रेममय जीवनशैली दो चीजें दिखाती है: (1) कि वे सत्य के पक्ष में हैं और (2) कि उनका अंतःकरण शुद्ध है। विशेष विषय: सत्य यूहन्ना 6:55 पर देखें।

3:19-20 इन दोनों पदों के यूनानी पाठ का अनुवाद कैसे किया जाए, इस बारे में बहुत भ्रम है। एक संभावित व्याख्या परमेश्वर के न्याय पर जोर देती है, जबकि दूसरी परमेश्वर की दया पर जोर देती है। संदर्भ के कारण, दूसरा विकल्प सबसे उपयुक्त लगता है।

3:20-21 ये दोनों पद तृतीय श्रेणी के प्रतिबंधात्मक वाक्य हैं।

3:20

NASB	**"जिन बातों में हमारा हृदय हमें दोषी ठहराता है"**
NKJV	**"कि यदि हमारा हृदय हमें दोषी ठहराता है"**
NRSV	**"जब भी हमारा हृदय हमें दोषी ठहराता है"**
TEV	**"यदि हमारा अंतःकरण हमें दोषी ठहराता है"**
NJB	**"भले ही हमारी खुद की भावनाएँ हमें दोषी ठहराती हैं"**

सभी विश्वासियों ने उस "मानक" जो वे जानते हैं कि उनके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा है (यानी, रोमियों 7) के अनुसार नहीं जीने पर आंतरिक दुःख का अनुभव किया है । अंतः करण की पीड़ा परमेश्वर की आत्मा (पश्चाताप करवाने के लिए) या शैतान (आत्म-विनाश या गवाही को नष्ट करने के लिए) से हो सकती है। उचित अपराधबोध और अनुचित अपराधबोध दोनों है। विश्वासियों को परमेश्वर की पुस्तक पढ़ने (या उसके दूतों को सुनने) से अंतर पता चलता है। यूहन्ना उन विश्वासियों को सांत्वना देने की कोशिश कर रहा है, जो प्रेम के मानक से जी रहे हैं, लेकिन पाप से जूझ रहे हैं (आज्ञा और चूक दोनों)। विशेष विषय: हृदय यूहन्ना 12:40 पर देखें।

▣ **"और वह सब कुछ जानता है"** परमेश्वर हमारे वास्तविक उद्देश्यों को जानता है (तुलना 1 शमूएल 2:3; 16:7; 1 राजाओं 8:39; 1 इतिहास 28: 9; 2 इतिहास 6:30; भजनसंहिता 7: 9; 44:21; नीतिवचन 15:11; 20:27; 21:2; यिर्मयाह 11:20; 17:9-10; 20:12; लूका 16:15; प्रेरितों के काम 1:24; 15:8; रोमियों 8:26,27)।

3:21 "यदि हमारा हृदय हमें दोषी न ठहराए" यह तीसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है। मसीही अभी भी पाप और स्वयं के साथ संघर्ष करते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:1; 5:16-17)। वे अभी भी प्रलोभनों का सामना करते हैं और विशिष्ट स्थितियों में अनुचित व्यवहार करते हैं। अक्सर उनका अंतःकरण उन्हें दोषी न ठहराता है। जैसा कि हेनरी ट्वेल्स का गीत "At Even, Ere the Sun Was Set," कहता है:

"और किसी को नहीं, हे परमेश्वर, संपूर्ण विश्राम,
क्योंकि कोई भी नहीं पूरी तरह पाप से मुक्त;
और वे जो प्रसन्नतापूर्वक करेंगे सेवा तेरी
वे सबसे सचेत हैं भीतर के पाप से"

सुसमाचार का ज्ञान, यीशु के साथ एक मधुर सहभागिता, आत्मा की अगुवाई को मान लेना और पिता की सर्वज्ञता हमारे मिट्टी के हृदय को शाँत करती है (तुलना भजनसंहिता 103:8-14)!

▣ **"परमेश्वर के सम्मुख हमें साहस होता है"** यह परमेश्वर की उपस्थिति के लिए मुक्त और मुफ्त पहुँच की बात करता है। यह एक बार-बार दोहराया गया शब्द और यूहन्ना की अवधारणा है (तुलना 1 यूहन्ना 2:28; 3:21; 4:17; 5:14; इब्रानियों 3:6; 10:35, 1 यूहन्ना 7:4 पर विशेष विषय देखें। यह वाक्यांश आश्वासन के दो लाभों का परिचय देता है।

1. कि विश्वासियों का परमेश्वर के समक्ष पूर्ण विश्वास है
2. वे जो कुछ माँगते हैं उस से पाते हैं

3:22 "जो कुछ हम माँगते हैं, उस से पाते हैं" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक और एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह मत्ती 7:7; 18:19, यूहन्ना 9:31; 14:13-14; 15:7,16; 16:23; मरकुस 11:24; लूका 11:9-10 में यीशु के कथनों को दर्शाता है। ये पवित्रशास्त्र की प्रतिज्ञा की प्रार्थना में विश्वासी के अनुभव से बहुत भिन्न हैं। यह पद असीमित उत्तर-प्राप्त प्रार्थना की प्रतिज्ञा करता है। ऐसे स्थान पर अन्य प्रासंगिक पाठों से तुलना एक धर्मशास्त्रीय संतुलन लाने में मदद करती है।

विशेष विषय: प्रार्थना, असीमित फिर भी सीमित (SPECIAL TOPIC: PRAYER, UNLIMITED YET LIMITED)

A. सिनॉप्टिक सुसमाचार
   1. विश्वासियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे प्रार्थना में दृढ़ बने रहें और परमेश्वर "अच्छी चीजें" (मत्ती, मत्ती 7:7-11) या "उसकी आत्मा" (लूका, लूका 11:5-13) प्रदान करेगा।

2. कलीसिया के अनुशासन के संदर्भ में विश्वासियों (दो) को प्रार्थना में एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है (मत्ती 18:19)
3. यहूदी धर्म के न्याय के संदर्भ में विश्वासियों को संदेह किये बिना विश्वास के साथ माँगना है (मत्ती 21:22; मरकुस 11:23-24)।
4. दो दृष्टांतों (लूका 18:1-8, अधर्मी न्यायाधीश और लूका 18:9-14, फरीसी और पापी) के संदर्भ में विश्वासियों को दुष्ट न्यायाधीश और पाखंडी फरीसी से अलग आचरण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। परमेश्वर नम्र और पश्चातापी की सुनता है (लूका 18:1-14)

B. यूहन्ना का लेखन
1. जन्म के अंधे मनुष्य के संदर्भ में, जिसे यीशु चंगा करता है, फरीसियों का सच्चा अंधेपन प्रकट होता है। यीशु की प्रार्थनाओं (जिस प्रकार किसी की भी) का उत्तर मिलता है क्योंकि वह परमेश्वर को जानता था और उसी के अनुसार रहता था (यूहन्ना 9:31)।
2. यूहन्ना का अटारी का प्रवचन (यूहन्ना 13-17)
    a. यूहन्ना 14:12-14 -विश्वास की प्रार्थना की विशेषता है
        1) विश्वासियों से आती है
        2) यीशु के नाम में माँगना
        3) इस इच्छा से कि पिता की महिमा हो
        4) आज्ञाओं को मानना (पद 15)
    b. यूहन्ना 15:7-10 - विश्वासी की प्रार्थना की विशेषता है
        1) यीशु में बने रहना
        2) उसका वचन उनमें बने रहना
        3) इस इच्छा से कि पिता की महिमा हो
        4) अधिक फल लाना
        5) आज्ञाओं को मानना (पद10)
    c. यूहन्ना 15: 15-17 - विश्वासियों की प्रार्थना की विशेषता है
        1) उनका चुनाव
        2) उनका फल लाना
        3) यीशु के नाम में माँगना
        4) एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा का पालन करना
    d. यूहन्ना 16:23-24 - विश्वासियों की प्रार्थनाओं की विशेषता है
        1) यीशु के नाम में माँगना
        2) यह इच्छा कि आनंद पूरा हो जाए
3. यूहन्ना का पहला पत्र (1 यूहन्ना)
    a. 1 यूहन्ना 3:22-24 - विश्वासियों की प्रार्थना की विशेषता है
        1) उसकी आज्ञाओं को मानना (पद 22,24)
        2) उचित रूप से रहना
        3) यीशु पर विश्वास करना
        4) आपस में प्रेम रखना
        5) हम उसमें और वह हम में बना रहता है
        6) आत्मा का दान पाना
    b. 1 यूहन्ना 5:14-16 - विश्वासियों की प्रार्थना की विशेषता है
        1) परमेश्वर पर हियाव
        2) उसकी इच्छा के अनुसार
        3) विश्वासी एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं

C. याकूब
1. याकूब 1:5-7 - विभिन्न परीक्षणों का सामना करने वाले विश्वासियों को बिना संदेह के बुद्धि माँगने के लिए कहा गया है
2. याकूब 4:2-3 - विश्वासियों को अच्छी इच्छा से माँगना चाहिए

3. याकूब 5:13-18 – स्वास्थ्य-संबंधी समस्याओं का सामना करने वाले विश्वासियों को प्रोत्साहित किया जाता है
   a. प्राचीनों से प्रार्थना करवाने के लिए
   b. विश्वास के साथ प्रार्थना करने के लिए
   c. यह माँगने के लिए कि उनके पाप क्षमा कर दिये जायेंगे
   d. एक दूसरे के सामने पाप कबूल करने और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने के लिए (1 यूहन्ना 5:16 के समान)

प्रभावशाली प्रार्थना की कुंजी है मसीह के समान होना। यीशु के नाम में प्रार्थना करने का यही अर्थ है। अधिकांश मसीहियों के लिए परमेश्वर जो सबसे बुरा काम कर सकता है, वह है उनकी स्वार्थी प्रार्थनाओं का जवाब देना! एक अर्थ में सभी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाता है। प्रार्थना का सबसे मूल्यवान पहलू यह है कि विश्वासी ने परमेश्वर पर भरोसा करते हुए, परमेश्वर के साथ समय व्यतीत किया है।

▣ **"क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते और वे ही कार्य करते हैं जो उसकी दृष्टि में प्रिय हैं"** इस संदर्भ में उत्तर-प्राप्त प्रार्थना के लिए दो आवश्यकताओं पर ध्यान दें।

1. आज्ञाकारिता
2. परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्य करना (तुलना यूहन्ना 8:29)

1 यूहन्ना एक प्रभावी मसीही जीवनयापन और सेवकाई पर "किस प्रकार" पुस्तक है।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 3:23-24
[23]उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक दूसरे से ठीक वैसा ही प्रेम करें जैसी कि उसने हमें आज्ञा दी है। [24]जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और वह उसमें। और इसी से, अर्थात उस आत्मा से जिसे उसने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वह हम में बना रहता है।

3:23 "उसकी आज्ञा यह है कि हम. . .विश्वास करें. . .और प्रेम करें" शब्द "आज्ञा" को दो पहलुओं के साथ एकवचन है। पहला पहलू व्यक्तिगत विश्वास है; क्रिया, "विश्वास करें," अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है (तुलना यूहन्ना 6:29,40)। दूसरा पहलू नैतिक है; क्रिया, प्रेम, वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है (तुलना 1 यूहन्ना 3:11; 4:7)। सुसमाचार एक ऐसा संदेश है जिस पर विश्वास किया जाना चाहिए, एक व्यक्ति जिसे ग्रहण किया जाना चाहिए और एक जीवन शैली जिसे जीना चाहिए!

▣ **"कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें"** बाइबल-संबंधी विश्वास को समझने में "विश्वास" की अवधारणा महत्त्वपूर्ण है। पुराने नियम का शब्द *aman* "वफादारी," "विश्वसनीयता," "निर्भरता," या "विश्वासयोग्यता" को प्रतिबिंबित करता है (1 यूहन्ना 2:10 पर पुराने नियम के शब्द पर विशेष विषय देखें)। नये नियम में यूनानी शब्द (*pisteuō*) का अनुवाद तीन अलग-अलग अंग्रेजी शब्दों से किया जाता है: आस्था, विश्वास, या भरोसा (यूहन्ना 2:23 पर यूनानी शब्द पर विशेष विषय देखें)। यह शब्द विश्वासी की विश्वसनीयता को इतना अधिक नहीं दर्शाता है जितना परमेश्वर की। यह उसका चरित्र, प्रकटीकरण, और प्रतिज्ञाएँ हैं, न कि पतित मनुष्यों की वफादारी या विश्वासयोग्यता, यहाँ तक कि छुटकारा पाए हुए मनुष्यों की भी नहीं, जो कि अटल आधार बनते हैं!

"नाम" में विश्वास या "नाम में" प्रार्थना करने की अवधारणा निकट पूर्वी समझ को दर्शाती है कि नाम व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

1. यीशु मत्ती 1:21,23,25; 7:22; 10:22; 12:21; 18:5,20; 19:29; 24:5,9; यूहन्ना 1:12; 2:23, 3:18; 14:26; 15:21; 17:6; 20:31 में
2. पिता मत्ती 6:9; 21:9; 23:39; यूहन्ना 5:43; 10:25; 12:13; 17:12 में
3. त्रिएक मत्ती 28:19 में

इस पद पर बस एक संक्षिप्त पारिभाषिक टिप्पणी। उनकी *Word Pictures in the New Testament* (p. 228) में, A. T. Robertson ने एक यूनानी पांडुलिपि समस्या का उल्लेख किया है जो क्रिया "विश्वास करें" से संबंधित है। यूनानी बृहदक्षर पांडुलिपियों B, K, और L में अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक हैं, जबकि א, A, और C में वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक हैं। दोनों यूहन्ना के संदर्भ और शैली में सही बैठते हैं।

3:24 "जो पालन करता है. . .बना रहता है. . ." ये दोनों वर्तमान काल हैं। आज्ञाकारिता बने रहने से जुड़ा हुआ है। प्रेम इस बात का प्रमाण है कि हम परमेश्वर में हैं और परमेश्वर हम में है (तुलना 1 यूहन्ना 4:12,15-16; यूहन्ना 14:23; 15:10)। बने रहने पर विशेष विषय 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

▣ **"आत्मा से जिसे उसने हमें दिया है"** यूहन्ना सच्चे विश्वासियों का मूल्यांकन करने के लिए कुछ प्रमाणों का प्रयोग करता है (तुलना रोमियों 4:13; 8:14-16, 2:3-27 पर प्रासंगिक अंतर्दृष्टि C, देखें)। दो पवित्र आत्मा से संबंधित हैं।

1. यीशु का अंगीकार करना (तुलना रोमियों 10:9-13; 1 कुरिन्थियों 12:3)
2. मसीह के समान जीवनयापन (तुलना यूहन्ना 15; गलातियों 5:22; याकूब 2:14-26)

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. पद 11-24 का एकीकृत विषय क्या है? (तुलना 1 यूहन्ना 2:7-11)?
2. पद 16 और 17 के संबंध को समझाइए। हमारे प्राण दिए जाने की तुलना जो भाई आवश्यकता में है, उसकी सहायता करने से किस प्रकार की जा सकती है?
3. क्या पद 19-20 में परमेश्वर के न्याय पर या परमेश्वर की महान करुणा पर जो हमारे डर को शांत करती है, ज़ोर दिया गया है?
4. पद 22 में प्रार्थना के बारे में यूहन्ना के कथन को हम अपने दैनिक अनुभव में किस प्रकार समझ सकते हैं?
5. एक व्यक्ति किस प्रकार यूहन्ना के द्वारा विश्वासी की पाप को स्वीकार करने और अंगीकार करने की आवश्यकता और उसके पापरहित सिद्धता के कथन पर असत्य से प्रतीत होने वाले जोर से सामंजस्य स्थापित कर सकता है?
6. यूहन्ना जीवनशैली पर इतना अधिक जोर क्यों दे रहा है?
7. "नया जन्म" पाने में अंतर्निहित धर्मशास्त्रीय सत्य को स्पष्ट करें।
8. यह अवतरण दैनिक मसीही जीवन से कैसे संबंधित है?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1 यूहन्ना 4

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
परमेश्वर की आत्मा और मसीह-विरोधी की आत्मा	सत्य की आत्मा और भ्रांति की आत्मा	सत्य और भ्रांति की परख	सच्ची आत्मा और झूठी आत्मा	तीसरी शर्त: मसीह-विरोधी से और संसार से सावधान रहो
	3:24-4:6			
4:1-6		4:1-6	4:1-3	4:1-6
			4:4-6	प्रेम और विश्वास का स्त्रोत (4:7-5:13)
परमेश्वर प्रेम है	प्रेम के माध्यम से परमेश्वर को जानना	प्रेम की धन्यता	परमेश्वर प्रेम है	प्रेम का स्त्रोत
4:7-12	4:7-11	4:7-12	4:7-10	4:7-5:4
	प्रेम के माध्यम से परमेश्वर को देखना		4:11-12	
	4:12-16			
4:13-16a		4:13-16a	4:13-16a	
4:16b-21	प्रेम की परिपूर्णता	4:16b-21	4:16b-18	
	4:17-19			
	विश्वास द्वारा आज्ञाकारिता		4:19-21	
	4:20-5:5			

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

4:1-21 पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

A. यूहन्ना 4 एक बहुत ही विशिष्ट साहित्यिक इकाई है कि कैसे मसीही परमेश्वर के लिए बोलने का दावा करने वालों का मूल्यांकन और सत्यापन करते हैं। यह अवतरण संबंधित है
   1. उन झूठे भविष्यद्वक्ताओं से जो मसीह-विरोधी कहलाते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:18-25)
   2. उनसे जो धोखा देने का यत्न करते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:26; 3:7)
   3. संभवतः उनसे जो विशेष आत्मिक सत्यों के ज्ञान का दावा करते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 3:24)
   आरंभिक मसीहियों की अवस्था को समझने के लिए, यह जान लेना चाहिए कि कई लोग परमेश्वर के लिए बोलने का दावा करते हैं (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:10; 14:29; 1 थिस्सलुनीकियों 5:20-21; 1 यूहन्ना 4:1-6)। कोई पूर्ण और उपलब्ध नया नियम नहीं था। आत्मिक सूझबूझ में सैद्धांतिक और सामाजिक दोनों परख शामिल थी (तुलना याकूब 3:1-12)।

B. विषयों के आवर्ती रूप के कारण 1 यूहन्ना की रूपरेखा तैयार करना बहुत कठिन है। अध्याय 4 में यह निश्चित रूप से सही है। ऐसा लगता है कि यह अध्याय उन सच्चाइयों पर फिर से जोर देता है जो पहले के अध्यायों में सिखाए गए थे, विशेष रूप से विश्वासियों की एक दूसरे से प्रेम करने की आवश्यकता (तुलना 1 यूहन्ना 4:7-21; 2:7-12; 3:11-24)।

C. यूहन्ना झूठे शिक्षकों का मुकाबला करने और सच्चे विश्वासियों को प्रोत्साहित करने दोनों के लिए लिख रहा है। वह कई जाँचों का प्रयोग करके ऐसा करता है:
   1. सैद्धांतिक जाँच (यीशु में विश्वास, तुलना 1 यूहन्ना 2:18-25; 4:1-6,14-16; 5:1,5,10)
   2. जीवनशैली जाँच (आज्ञाकारिता, तुलना 1 यूहन्ना 2:3-7; 3:1-10,22-24)
   3. सामाजिक जाँच (प्रेम, तुलना 1 यूहन्ना 2:7-11; 3:11-18; 4:7-12,16-21; 5:1-2)
   पवित्रशास्त्र के अलग-अलग हिस्से अलग-अलग झूठे शिक्षकों से संबंधित हैं। 1 यूहन्ना ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के कुपन्थ को संबोधित करता है। 1 यूहन्ना की प्रस्तावना, कुपन्थ देखें। नये नियम के अन्य भाग अन्य असत्यों को संबोधित करते हैं (तुलना यूहन्ना 1:13; रोमियों 10:9-13; 1 कुरिन्थियों 12:3)। प्रत्येक संदर्भ को यह पता लगाने के लिए अलग से अध्ययन किया जाना चाहिए कि किस भ्रांति को सम्बोधित किया जा रहा है। कई स्रोतों से भ्रांतियाँ हैं।

   1. यहूदी विधिवादी
   2. यूनानी दार्शनिक
   3. यूनानी स्वेच्छाचारी
   4. जिन्होंने विशेष आत्मिक प्रकटीकरण या अनुभवों का दावा किया

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यत) पाठ: 1 यूहन्ना 4:1-6 **[1]प्रियों, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं; क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े हैं। [2]परमेश्वर की आत्मा को तुम इस से जान सकते हो: प्रत्येक आत्मा जो यह मानती है कि यीशु मसीह देह-धारण कर के आया है, वह परमेश्वर की ओर से है; [3]और प्रत्येक आत्मा जो यीशु को नहीं मानती वह परमेश्वर की ओर से नहीं है; यही तो मसीह-विरोधी की आत्मा है, जिसके विषय में तुम सुन चुके हो कि वह आने वाला है और अब भी संसार में है। [4]बच्चों, तुम परमेश्वर से हो और तुम उन पर विजयी हुए हो; क्योंकि वह जो तुम में है, उस से जो संसार में है, कहीं बढ़कर है। [5]वे संसार के हैं, इसलिए संसार की बातें बोलते हैं, और संसार उनकी सुनता है। [6]हम परमेश्वर से हैं; वह जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है; और जो परमेश्वर से नहीं, हमारी नहीं सुनता। इसी से हम सत्य की आत्मा और भ्रांति की आत्मा को पहिचानते हैं।**

4:1 "प्रतीति न करो" यह एक एक नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ वर्तमान आज्ञार्थक है जिसका सामान्य रूप से अर्थ पहले से ही प्रक्रिया में एक कार्य को रोकना है। मसीहियों की प्रवृत्ति है परमेश्वर की ओर से प्रभावशाली व्यक्तित्वों, न्यायसंगत तर्कों या चमत्कारी घटनाओं को स्वीकार करना। जाहिर तौर पर झूठे शिक्षक दावा कर रहे थे (1) परमेश्वर की ओर से बोलने का या (2) परमेश्वर से एक विशेष प्रकटीकरण प्राप्त कर लेने का।

विशेष विषय: क्या मसीहियों को एक दूसरे का न्याय करना चाहिए? (SPECIAL TOPIC: SHOULD CHRISTIANS JUDGE ONE ANOTHER?)

न्याय निश्चित है (तुलना मत्ती 12:36; इब्रानियों 9:27; 10:27; 2 पतरस 2:4,9; 3:7)।

A. जो न्याय करता है, वह है
   1. परमेश्वर (तुलना रोमियों 2:2-3; 14:10,12; 1 पतरस 1:17; 2:23; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)।
   2. मसीह (तुलना यूहन्ना 9:39; मत्ती 16:27; 25:31-46; प्रेरितों के काम 10:42; 17:31; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1)।
   3. पुत्र के माध्यम से पिता (तुलना यूहन्ना 5:22-27; प्रेरितों के काम 17:31; रोमियो 2:16)

   न्याय एक अप्रिय विषय है, लेकिन बाइबल में एक आवर्ती विषयवस्तु है। यह बाइबल की कई मूल सच्चाइयों पर आधारित है।
   1. यह नैतिक परमेश्वर द्वारा बनाया गया एक नैतिक ब्रह्मांड है (हम जो बोते हैं उसे काटते हैं, तुलना गलातियों 6:7)।
   2. मानवता गिर गई है; हमने बगावत कर दी है।
   3. यह वैसा संसार नहीं है, जैसा परमेश्वर इसे चाहता था।
   4. सभी जागरूक रचनाएँ (स्वर्गदूत और मनुष्य) जीवन की भेंट के लिए अपने सृष्टिकर्ता को एक हिसाब देंगे। हम भण्डारी हैं।
   5. अनन्त काल स्थायी रूप से हमारे कार्यों और इस जीवन में चुने हुए विकल्पों द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

B. क्या मसीहियों को एक दूसरे का न्याय करना चाहिए? इस मुद्दे से दो तरह से निपटा जाना चाहिए।
   1. विश्वासियों को एक दूसरे का न्याय नहीं करने के लिए चेतावनी दी जाती है (तुलना मत्ती 7:1-5; लूका 6:37,42; रोमियों 2:1-11; याकूब 4:11-12)।
   2. विश्वासियों को अगुवों का मूल्यांकन न करने के लिए चेतावनी दी जाती है (तुलना मत्ती 7:6,15-16; 1 कुरिन्थियों 14:29; 1 थिस्सलुनीकियों 5:21; 1 तीमुथियुस 3:1-13; और 1 यूहन्ना 4:1-6)

   उचित मूल्यांकन के लिए कुछ मानदंड सहायक हो सकते हैं।
   1. मूल्यांकन पुष्टिकरण के उद्देश्य से होना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 4:1 - "परखो" अनुमोदन की ओर एक दृष्टिकोण के साथ; विषय: परखना [*peirazō* और *dokimazō*] देखें)
   2. मूल्यांकन विनम्रता और सज्जनता से किया जाना चाहिए (तुलना गलातियों 6:1)
   3. मूल्यांकन में व्यक्तिगत प्राथमिकता के मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए (तुलना रोमियो 14:1-23; 1 कुरिन्थियों 8:1-30; 10:23-33)
   4. मूल्यांकन में उन अगुवों की पहचान की जानी चाहिए जिन्हें कलीसिया या समुदाय में से "आलोचना की कोई परवाह नहीं है" (तुलना 1 तीमुथियुस 3)।

▣ **"प्रत्येक आत्मा"** आत्मा का प्रयोग मानव व्यक्तित्व के अर्थ में किया गया है। 1 यूहन्ना 4:6 पर टिप्पणी देखें। यह संदर्भित करता है परमेश्वर की ओर से एक तथाकथित संदेश को। कुपन्थ कलीसिया के भीतर से आता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:19)। झूठे शिक्षक परमेश्वर के लिए बोलने का दावा कर रहे थे। यूहन्ना जोर देकर कहता है कि मानव वाणी और कार्य के पीछे दो आत्मिक स्रोत हैं, परमेश्वर या शैतान।

▣ **"परन्तु आत्माओं को परखो"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यह एक आत्मिक वरदान (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:10; 14:29) और प्रार्थना, सुसमाचार-प्रचार, और देने के रूप में हर विश्वासी के लिए एक आवश्यकता दोनों है। इस यूनानी शब्द *dokimazō* का लक्ष्यार्थ "अनुमोदन की दृष्टी से जाँच करना" है। विश्वासियों को दूसरों के लिए सबसे उत्तम सोचना चाहिए जब तक कि सबसे खराब साबित न हो (तुलना 1 कुरिन्थियों 13:4-7; 1 थिस्सलुनीकियों 5:20-21)।

विशेष विषय: परखना और उनके संकेतार्थों के लिए यूनानी शब्द (SPECIAL TOPIC: GREEK TERMS FOR TESTING AND THEIR CONNOTATIONS)

दो ऐसे यूनानी शब्द हैं जिनका संकेतार्थ किसी उद्देश्य के लिए किसी को परखने से है।

1. *Dokimazō, Dokimion, Dokimasia*

   यह शब्द अग्नि से किसी चीज (यानी, किसी के लिये रूपक) के खरेपन का परीक्षण करने के लिए एक धातुशोधन करनेवाले का शब्द है (देखें विशेष विषय: आग)। आग सच्ची धातु को प्रकट करती है और तलछट को जलाती

है (यानी, शुद्ध करती है)। यह भौतिक प्रक्रिया परमेश्वर और/या शैतान और/या मनुष्यों के द्वारा दूसरों को परखने करने के लिए एक शक्तिशाली मुहावरा बन गई। यह शब्द केवल स्वीकृति के प्रति दृष्टिकोण के साथ परखने के सकारात्मक अर्थ में प्रयोग किया जाता है (विशेष विषय: परमेश्वर अपने लोगों को परखता है [पुराना नियम] देखें)।

नये नियम में इसका प्रयोग इनको परखने में किया जाता है

a. बैलों - लूका 14:19
b. अपने आप – 1 कुरिन्थियों 11:28
c. हमारा विश्वास – याकूब 1:3
d. परमेश्वर भी - इब्रानियों 3:9

इन परखने के परिणामों को सकारात्मक मान लिया गया था (तुलना रोमियों 2:18; 14:22; 16:10; 2 कुरिन्थियों 10:18; 13:3,7; फिलिप्पियों 2:27; 1 पतरस 1:7), इसलिए, यह शब्द किसी निम्न बातों के लिए जाँचे जाने और स्वीकृत होने के विचार को बताता है

a. लाभकर होने के लिए
b. अच्छा होने के लिए
c. वास्तविक होने के लिए
d. मूल्यवान होने के लिए
e. सम्मानित होने के लिए

2. *Peirazō, Peirasmus*

इस शब्द में अक्सर गलती खोजने या अस्वीकृति के उद्देश्य से परखने का संकेतार्थ है। इसका प्रयोग जंगल में यीशु की परीक्षा के संबंध में किया जाता है।

a. यह यीशु को फँसाने की कोशिश को व्यक्त करता है। (तुलना मत्ती 4:1; 16:1; 19:3 22:18,35; मरकुस 1:13; लूका 4:2; इब्रानियों 2:18)
b. इस शब्द (*peirazōn)* का प्रयोग मत्ती 4:3; 1 थिस्सलुनीकियों 3:5 में शैतान के लिए एक नाम के रूप में किया जाता है। (यानी, "प्रलोभक")।
c. प्रयोग
   (1) इसका प्रयोग यीशु के द्वारा मनुष्यों को परमेश्वर (तुलना मत्ती 4:7; लूका 4:12, [या मसीह तुलना 1 कुरिन्थियों 10:9])। को न परखने की चेतावनी देते हुए किया गया था।
   (2) यह कुछ ऐसा करने के प्रयास को भी दर्शाता है जो विफल हो गया है (तुलना इब्रानियों 11: 29)।
   (3) यह विश्वासियों के प्रलोभन और परीक्षाओं के संबंध में प्रयोग किया जाता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 7:5; 10:9,13; गलातियों 6:1; 1 थिस्सलुनीकियों 3:5; इब्रानियों 2:18; याकूब 1:2, 13,14; 1 पतरस 4:12; 2 पतरस 2:9)।

▣ **"क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े हैं"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (तुलना यिर्मयाह 14:14; 23:21; 29:8; मत्ती 7:15; 24:11,24; प्रेरितों के काम 20:28-30; 2 पतरस 2:1; 1 यूहन्ना 2:18-19,24; 3:7; 2 यूहन्ना 7)। निहितार्थ यह है कि उन्होंने कलीसिया (घर कलीसिया) को छोड़ दिया है, फिर भी यह दावा करना जारी रखते हैं कि वे परमेश्वर के लिए बोलते हैं।

विशेष विषय: नये नियम की भविष्यवाणी यूहन्ना 4:19 पर देखें

4:2 "परमेश्वर के आत्मा को तुम इससे जान सकते हो" यह व्याकरणिक रूप या तो एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक (एक कथन) या वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक (एक आज्ञा) है। रूप की यही अस्पष्टता "बना रहता", 2:27 और "जानते हो," 2:29 में है। पवित्र आत्मा हमेशा यीशु का अतिशय वर्णन करता है (तुलना यूहन्ना 14:26; 15:26; 16:13-15)। इसी परख को पौलुस के लेखन में 1 कुरिन्थियों 12:3 में देखा जा सकता है। ।

▣ **"प्रत्येक आत्मा जो यह मानती है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो एक निरंतर घोषणा की ओर संकेत करता है, न कि विश्वास की एक अतीत की पुष्टि। यूनानी शब्द "स्वीकारना" "वही" और "बोलना" का संयुक्त शब्द है, जिसका अर्थ है "वही बात कहना"। यह 1 यूहन्ना में एक बार-बार आनेवाला विषय है (तुलना 1 यूहन्ना 1:9; 2:23; 4:23; 4:15; यूहन्ना 9:22; 2 यूहन्ना 7) । इस शब्द का तात्पर्य है, यीशु के मसीह के सुसमाचार के प्रति प्रतिबद्धता और पुष्टिकरण की विशिष्ट,

सार्वजनिक, मौखिक स्वीकार्यता। यूहन्ना 9:22 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"कि यीशु मसीह देह-धारण कर के आया है, वह परमेश्वर की ओर से है"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य कृदंत है। यह झूठे शिक्षकों (यानी, ज्ञानवादियों) के लिए आवश्यक सैद्धांतिक परख है, जिसका यूहन्ना इस पुस्तक में सामना कर रहा था। इसका मूल अभिकथन यह है कि यीशु पूर्ण रूप से मनुष्य (यानी, शरीर, जिसे ज्ञानवादियों ने नकारा) साथ ही साथ पूर्ण रूप से परमेश्वर है (तुलना 1 यूहन्ना 1:1-4; 2 यूहन्ना 7; यूहन्ना 1:14; 1 तीमुथियुस 3:16;)। पूर्ण काल इस बात की पुष्टि करता है कि यीशु की मानवता अस्थायी नहीं थी, लेकिन स्थायी थी। यह कोई मामूली बात नहीं थी। यीशु वास्तव में मानवता के साथ एक है और परमेश्वर के साथ एक है।

4:3 "प्रत्येक आत्मा जो यीशु को नहीं मानती" यह धर्मशास्त्रीय रूप से दिलचस्प है कि नये नियम के पुराने लातीनी संस्करण और प्राचीन धर्मशास्त्रीय लेखक, क्लेमेंट, ओरिजेन ऑफ एलेक्जेंड्रिया, इरेनुयस और टर्टुलियन में *leui* (खोता) है, जिसका अर्थ है "यीशु को अलग करना," जाहिर तौर पर एक मानवीय आत्मा और एक अलग दिव्य आत्मा में, जो दूसरी शताब्दी के ज्ञानवादी लेखन की विशेषता थी। लेकिन यह एक पाठीय जोड़ है जो प्रारंभिक कलीसिया के कुपन्थ के साथ जीवन और मृत्यु के संघर्ष को दर्शाता है (देखें Bart Erhart, *The Orthodox Corruption of Scripture,* pp. 125-135)।

▣ **"मसीह-विरोधी की आत्मा"** यहाँ शब्द (तुलना 1 यूहन्ना 2:18-25) का प्रयोग मसीह का इन्कार करनेवाले के रूप में किया गया है, न कि उस (मसीह) के स्थान को हड़पने का प्रयास।

▣ **"तुम सुन चुके हो कि वह आने वाला है, और अब भी संसार में है"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है तात्पर्य है कि यूहन्ना ने पहले उनके साथ इस विषय पर चर्चा की थी और इसकी प्रासंगिकता बनी हुई थी। यूनानी में सर्वनाम "वह" नपुंसक "आत्मा" से मेल खाता है। 2:18 की तरह, यह वाक्यांश दर्शाता है कि मसीह-विरोधी की आत्मा पहले से ही आई है और आने वाली है। ये ज्ञानी झूठे शिक्षक युगों से झूठी सूचनाओं, झूठी जीवनशैली और झूठे दावों की एक श्रृंखला बनाते हैं, उत्पत्ति 3 के उस दुष्ट से लेकर दुष्ट के अवतार के प्रकटीकरण और अंत समय के मसीह-विरोधी तक (अर्थात, 2 थिस्सलुनीकियों; प्रकाशितवाक्य 13)।

4:4-6 "तुम. . .वे. . .हम" इन सभी सर्वनामों पर जोर दिया गया है। तीन समूहों को संबोधित किया जा रहा है।

1. सच्चा विश्वासी (यूहन्ना और उसके पाठक)
2. झूठे विश्वासी (ज्ञानवादी शिक्षक और उनके अनुयायी)
3. यूहन्ना का मिशनरी दल या धर्मशास्त्रीय समूह

इस तरह का त्रय इब्रानियों 6 और 10 में दिखता है।

4:4 "उन पर विजयी हुए हो" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह सैद्धांतिक विवाद और विजयी मसीही जीवन दोनों का संदर्भ प्रतीत होता है। उनके और हमारे लिए प्रोत्साहन का क्या ही बढ़िया वचन है!

यूहन्ना पाप और शैतान पर मसीही की जीत के लिए चिंतित है। वह इस शब्द (*nikaō*) का प्रयोग 6 बार 1 यूहन्ना में (तुलना 1 यूहन्ना 2:13,14; 4:4; 5:4,5), 11 बार प्रकाशितवाक्य में, और एक बार यूहन्ना 16:33 में करता है। "जीत" के लिए इस शब्द का प्रयोग केवल एक बार लूका (तुलना लूका 11:22) और दो बार पौलुस के लेखन में किया गया था (तुलना रोमियों 3:4; 12:21)।

▣ **"क्योंकि वह जो तुम में है, उस से जो संसार में है, कहीं बढ़कर है"** यह अन्दर वास करनेवाले देवता पर जोर है। यहाँ यह अन्दर वास करनेवाले पिता के लिए एक संदर्भ प्रतीत होता है (तुलना यूहन्ना 14:23; 2 कुरिन्थियों 6:16)। नया नियम इन पर भी जोर देता है (1) अन्दर वास करनेवाला पुत्र (तुलना मत्ती 28:20; कुलुस्सियों 1:27) और (2) अन्दर वास करनेवाला पवित्र आत्मा (तुलना रोमियों 8:9; 1 यूहन्ना 4:13)। आत्मा और पुत्र को करीब से पहचाना जाता है (तुलना रोमियों 8:9; 2 कुरिन्थियों 3:17; गलातियों 4:6; फिलिप्पियों 1:19; 1 पतरस 1:11)। यूहन्ना 14:16 पर विशेष विषय देखें।

वाक्यांश "उस से जो संसार में है" शैतान (तुलना यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11; 2 कुरिन्थियों 4:4; इफिसियों 2:2; 1 यूहन्ना 5:19) और उसके अनुयायियों को संदर्भित करता है। 1 यूहन्ना में शब्द "संसार" के हमेशा नकारात्मक लक्ष्यार्थ होते हैं (अर्थात, परमेश्वर से अलग होकर संगठित और कार्य करनेवाला मानव समाज, विशेष विषय: *Kosmos* यूहन्ना 14:17 पर देखें)।

4:5 "वे संसार के हैं" यह स्रोत का एक अपादान कारक है। यहाँ शब्द "संसार" का प्रयोग एक ऐसे मानव समाज के अर्थ में किया गया है जो परमेश्वर से अलग होकर अपनी सारी आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश कर रहा है (तुलना 1 यूहन्ना

2:15-17)। यह पतित मानवता की सामूहिक स्वतंत्र आत्मा को संदर्भित करता है! इसका एक उदाहरण कैन है (तुलना 1 यूहन्ना 3:12)। अन्य उदाहरण होंगे (1) एलिय्याह और बाल के नबी (1 राजाओं 18) और (2) यिर्मयाह बनाम हनन्याह (यिर्मयाह 28)।

▣ **"संसार उनकी सुनता है"** मसीही शिक्षकों बनाम झूठे शिक्षकों का एक और प्रमाण है जो उनकी सुनता है (तुलना 1 तीमुथियुस 4:1)।

4:6 "जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है। सच्चे विश्वासी प्रेरितीय सत्य को सुनना और उसका प्रत्युत्तर देना जारी रखते हैं! विश्वासी सच्चे उपदेशक/शिक्षक की पहचान उनके संदेश की विषयवस्तु और उन्हें सुनने और प्रतिक्रिया देनेवालों दोनों के द्वारा कर सकते हैं।

▣ **"इसी से हम सत्य की आत्मा और भ्रांति की आत्मा को पहिचानते हैं"** यह पवित्र आत्मा (तुलना यूहन्ना 14:17; 15:26; 16:13; 1 यूहन्ना 4:6; 5:7) और दुष्ट आत्मा, शैतान का उल्लेख हो सकता है। विश्वासियों को संदेश के स्रोत को परखने में सक्षम होना चाहिए। अक्सर वे दोनों परमेश्वर के नाम में दिए जाते हैं, तथाकथित परमेश्वर के वक्ताओं द्वारा। एक यीशु और मसीह के समान होने को महत्त्व देता है और एक मानव परिकल्पना और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्त्व देता है।

Robert Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament*, नये नियम में "आत्मा" शब्द के प्रयोगों की एक दिलचस्प चर्चा है।

1. दुष्ट आत्माएँ
2. मानव आत्मा
3. पवित्र आत्मा
4. वे बातें जो और मानव आत्माओं में और उनके माध्यम से आत्मा उत्पन्न करती हैं
   a. 'दासत्व का आत्मा नहीं बनाम लेपालकपन का आत्मा' - रोमियों 8:15
   b. 'नम्रता की आत्मा' - 1 कुरिन्थियों 4:21
   c. 'विश्वास की आत्मा' - 2 कुरिन्थियों 4:13
   d. 'ज्ञान और प्रकाशन की आत्मा' - इफिसियों 1:17
   e. 'भीरुता की नहीं, सामर्थ्य, प्रेम और संयम की आत्मा' - 2 तीमुथियुस 1:7
   f. 'भ्रांति की आत्मा बनाम सत्य की आत्मा' - 1 यूहन्ना 4:6" (pp. 61-63)।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 4:7-14

[7]प्रियों, हम आपस में प्रेम करें, क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है; प्रत्येक जो प्रेम करता है, परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और परमेश्वर को जानता है। [8]वह जो प्रेम नहीं करता परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। [9]परमेश्वर का प्रेम हम में इसी से प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेज दिया कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। [10]प्रेम इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु इसमें है कि उसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा। [11]प्रियों, यदि परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया तो हमको भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। [12]परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम एक दूसरे से प्रेम करें तो परमेश्वर हम में बना रहता है, और उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है। [13]इसी से हम जानते हैं कि हम उस में बने रहते हैं और वह हम में, क्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है। [14]हमने उसे देखा है, और गवाही देते हैं कि पिता ने पुत्र को संसार का उद्धारकर्ता कर के भेजा।

4:7 "हम आपस में प्रेम करें" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है। जीवनशैली, दैनिक प्रेम सब विश्वासियों की एक सामान्य विशेषता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 13; गलातियों 5:22)। यह यूहन्ना के लेखन की आवर्तक विषयवस्तु और नैतिक परख का सार है (तुलना यूहन्ना 13:44; 15:12,17; 1 यूहन्ना 2:7-11; 3:11,23; 2 यूहन्ना 5, प्रासंगिक अंतर्दृष्टि, C देखें)। संशयार्थ-सूचक एक आकस्मिकता बताता है।

▣ **"क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है"** परमेश्वर, न कि मानव परोपकार, दया, या भावना, प्रेम का स्रोत है (तुलना 1 यूहन्ना 4:16)। यह मुख्य रूप से भावनात्मक नहीं बल्कि उद्देश्यपूर्ण कार्य है (यानी, पिता ने हमारे बदले पुत्र को मरने के लिए भेजा, तुलना 1 यूहन्ना 4:10; यूहन्ना 3:16)।

▣ **"प्रत्येक जो प्रेम करता है, परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और परमेश्वर को जानता है"** क्रियाएँ पूर्ण कर्मवाच्य और वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं। विश्वासी बनने के लिए यूहन्ना के मनपसंद शब्द शारीरिक जन्म से जुड़े हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:29; 3:9; 4:7; 5:1,4,18; यूहन्ना 3:3,7)।

शब्द "जानता" निरंतर चल रही, अंतरंग सहभागिता (तुलना उत्पत्ति 4:28; यिर्मयाह 1:5) के इब्रानी अर्थ को दर्शाता है। यह 1 यूहन्ना की आवर्तक विषयवस्तु है, जिसका प्रयोग सत्तर से अधिक बार किया गया है। यूहन्ना 1:10 पर विशेष विषय देखें।

4:8 "वह जो प्रेम नहीं करता परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है" जीवनशैली प्रेम परमेश्वर को जानने की सच्ची परख है।

यह यूहन्ना के गंभीर रूप से सरल कथनों में से एक है; "परमेश्वर प्रेम है" "परमेश्वर ज्योति है" (तुलना 1 यूहन्ना 1: 5) और "परमेश्वर आत्मा है" (तुलना यूहन्ना 4:24) से मेल खाता है। परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर के कोप की विषमता दिखाने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है व्यवस्थाविवरण 5:9 की तुलना 5:10 और 7:9 के साथ करना।

4:9 "परमेश्वर का प्रेम हम में इसी से प्रकट हुआ" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य निर्देशात्मक है (तुलना यूहन्ना 3:16; 2 कुरिन्थियों 9:15; रोमियों 8:32)। परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को हमारी जगह मरने के लिए भेजकर स्पष्ट रूप से दिखाया है कि वह हमसे प्रेम करता है। प्रेम एक क्रिया है, न कि केवल भावना। विश्वासियों को अपने दैनिक जीवन में इसका अनुकरण करना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर को जानना जैसा प्रेम वह करता है वैसा ही प्रेम करना है।

▣ **"परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को संसार में भेज दिया"** यह एक आदर्श कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है; देह-धारण और इसके परिणाम बने हुए हैं! परमेश्वर के सारे उपकार मसीह के माध्यम से मिलते हैं।

"एकलौता" शब्द *monogenēs* है, जिसका अर्थ है "अनोखा," "अपने प्रकार का एक," यौन पीढ़ी के रूप में उत्पन्न नहीं। कुँवारी से जन्म परमेश्वर या मरियम के लिए एक यौन अनुभव नहीं था। यूहन्ना इस शब्द का प्रयोग कई बार यीशु का उल्लेख करते हुए करता है (तुलना यूहन्ना 1:14,18; 3:16,18; 1 यूहन्ना 4:9)। आगे की टिप्पणी यूहन्ना 3:16 पर देखें। यीशु एक अद्वितीय (सत्तामूलक) अर्थ में परमेश्वर का पुत्र है। विश्वासी केवल एक व्युत्पन्न अर्थ में परमेश्वर के संतान हैं।

▣ **"कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है जिसका अर्थ है एक आकस्मिकता, एक विश्वास प्रत्युत्तर आवश्यक है। देहधारणका उद्देश्य अनन्त जीवन और बहुतायत जीवन था (तुलना यूहन्ना 10:10)।

4:10 "प्रेम इसमें है" परमेश्वर का प्रेम यीशु के जीवन और मृत्यु में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है (तुलना रोमियों 5:6,8)। यीशु को जानना परमेश्वर को जानना है। परमेश्वर को जानना ही प्रेम है!

▣ **"इसमें नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया"** नया नियम विश्व धर्मों के बीच अद्वितीय है। विशिष्ट रूप से धर्म मानव जाति है जो परमेश्वर को ढूँढ रही है, लेकिन मसीहत परमेश्वर ह जो पतित मानव जाति को बचाने के लिए ढूँढ रहा है! अद्भुत सत्य परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम नहीं है, लेकिन हमारे लिए उसका प्रेम है। उसने हमें हमारे पाप और आत्म, हमारे विद्रोह और गर्व में से ढूँढा है। मसीहत का गौरवशाली सत्य यह है कि परमेश्वर मानवजाति से प्रेम करता है और उसने पहल की और जीवन को बदलने वाले संपर्क को बनाए रखा है।

क्रिया के रूप से संबंधित एक प्रकार है।

1. प्रेम किया है और करता रहता, पूर्ण- MS B
2. प्रेम किया, अनिर्दिष्टकाल- MS א

UBS[4] पूर्णकाल को एक "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है।

▣ **"हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा"** 1 यूहन्ना 2:2 पर टिप्पणी देखें।

4:11 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है। परमेश्वर हमसे प्रेम करता ही है (तुलना रोमियों 8:31)!

▣ **"परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया"** "ऐसा" को "इस तरह से" समझा जाना चाहिए, जैसा कि यूहन्ना 3:16 में।

▣ **"हमको भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए"** क्योंकि उसने हमसे प्रेम किया है हमें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए

(तुलना 1 यूहन्ना 2:10; 3:16; 4:7)। आवश्यकता का यह कथन झूठे शिक्षकों के विघटनकारी कार्यों और दृष्टिकोण को दर्शाता है।

4:12 "परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा" यह एक पूर्ण मध्यम (प्रतिपादक) निर्देशात्मक है। इस शब्द का तात्पर्य है "किसी को या किसी चीज़ को तीव्रता से एकटक देखना" (तुलना निर्गमन 33:20 और यूहन्ना 1:18; 5:37; 6:46; 1 तीमुथियुस 6:16)। यह संभव है कि ज्ञानवादी शिक्षकों ने, कुछ हद तक पूर्वी रहस्यमयी धर्मों से प्रभावित थे, परमेश्वर से या परमेश्वर के किसी प्रकार के दर्शन का दावा किया। यीशु पूर्ण रूप से पिता को प्रकट करने आया। हम उसे एकटक देखकर परमेश्वर को जानते हैं!

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"परमेश्वर हम में बना रहता है"** विशेष विषय: बने रहना 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

▣ **"उसका प्रेम हम में सिद्ध होता है"** यह एक वर्णनात्मक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है। प्रेम करने वाले मसीही परमेश्वर के बने रहनेवाले, सिद्ध प्रेम का प्रमाण हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:5; 4:17)।

4:13 "उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है" यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। हम में वास करनेवाला पवित्र आत्मा (तुलना 1 यूहन्ना 3:24; रोमियों 8:9) और उसका परिवर्तन करनेवाला प्रभाव हमारे सच्चे उद्धार का प्रमाण है (तुलना रोमियों 8:16)। ऐसा लगता है कि 1 यूहन्ना 4:13 आत्मा का व्यक्तिनिष्ठ गवाह है, जबकि 1 यूहन्ना 4:14 प्रेरितीय गवाही का वस्तुनिष्ठ गवाह है। त्रिएकत्व के तीन व्यक्ति 1 यूहन्ना 4:13-14 में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। विशेष विषय: त्रिएकत्व यूहन्ना 14:26 पर देखें।

4:14 "हमने देखा है और गवाही देते हैं" क्रिया पूर्ण मध्यम (प्रतिपादक) निर्देशात्मक हैं जो वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक के साथ जुड़ा हुआ है। यह ठीक 1:1-3 की तरह, मसीह के व्यक्तित्व के विषय में यूहन्ना की प्रत्यक्षदर्शी गवाही की बात करता है।

शब्द "देखा" 1 यूहन्ना 4:12 के समान वही यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है "अभिप्राय से एकटक देखना।" विशेष विषय: यीशु के गवाह यूहन्ना 1:8 पर देखें।

▣ **"कि पिता ने पुत्र को भेजा"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह तथ्य कि परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र को संसार में भेजा (तुलना यूहन्ना 3:16) आत्मा (भला) और तत्व (दुष्ट) के बीच के तथाकथित द्वैतवाद के बारे में ज्ञानवादी झूठे उपदेश का खंडन करता है। यीशु वास्तव में दिव्य था और उसे पाप के एक दुष्ट संसार में उसे और हमें (तुलना गलातियों 3:13) उत्पत्ति 3 के अभिशाप (तुलना रोमियों 8:18-25) से छुटकारा दिलाने के लिए भेजा गया।

▣ **"संसार का उद्धारकर्ता करके"** यह तथ्य कि पिता ने यीशु को उद्धार के साधन के रूप में प्रयोग करने के लिए चुना था, ज्ञानवादी झूठे शिक्षण का खंडन करता है कि उद्धार को दिव्य स्तरों से संबंधित विशेष, गुप्त ज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। उन्होंने इन दिव्य स्तरों को *eons* या उच्च परमेश्वर और गौण परमेश्वर, जिन्होंने संसार को पूर्व-विद्यमान तत्व से रचा, के बीच दिव्य सत्ता के क्षेत्र कहा है।

वाक्यांश "संसार का उद्धारकर्ता" था (1) देवताओं के लिए एक शीर्षक (यानी, ज्यूस) और (2) रोमी कैसर के लिए एक सामान्य शीर्षक। मसीही के लिए केवल यीशु ही यह उपाधि धारण कर सकते थे (तुलना यूहन्ना 4:42; 1 तीमुथियुस 2:4; 4:10)। यह वही है जो एशिया माइनर में स्थानीय कैसर-पंथों द्वारा उत्पीड़न का कारण बना।

ध्यान दें यह सर्वसमावेशी है। वह सब का उद्धारकर्ता है (कुछ का नहीं) यदि वे मात्र प्रतिक्रिया देते हैं (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमियो 5:18; 10:9-13)।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 4:15-21

[15]जो कोई यह मान लेता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है, तो परमेश्वर उसमें और वह परमेश्वर में बना रहता है। [16]जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसे हम जान गए हैं और हमने उस पर विश्वास किया है। परमेश्वर प्रेम है; जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें। [17]इसी से प्रेम हम में सिद्ध होता है कि न्याय के दिन हमें साहस हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी संसार में हैं। [18]प्रेम में भय नहीं होता; परन्तु सिद्ध

प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय में दण्ड निहित है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। [19]हम इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि उसने पहिले हमसे प्रेम किया। [20]यदि कोई कहे, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ," और अपने भाई से घृणा करे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं करता तो वह परमेश्वर से जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं कर सकता। [21]हमें उस से यह आज्ञा मिली है कि जो परमेश्वर से प्रेम करता है, वह अपने भाई से भी प्रेम करे।

4:15 " जो कोई यह मान लेता है कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र है" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है। "मान लेता" के लिए 1 यूहन्ना 4:2 पर टिप्पणी देखें। एक सच्चे मसीही के यूहन्ना की तीन जाँचों में से एक है यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के विषय में धर्मशास्त्रीय सत्य (तुलना 1 यूहन्ना 2:22-23; 4:1-6; 5:1,5)। यह 1 यूहन्ना और याकूब में जीवनशैली प्रेम और आज्ञाकारिता के साथ भी मेल खाता है। मसीहत एक व्यक्ति, सत्य का शरीर और जीवनशैली है। प्रासंगिक अंतर्दृष्टि, C देखें।

समावेशी शब्द "जो कोई" किसी के लिए और सभी के लिए परमेश्वर का उसके पास आने के लिए एक महान निमंत्रण है। सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं (तुलना उत्पत्ति 1:26-27; 5:3; 9:6)। परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:15 में मानव जाति को छुड़ाने का वादा किया। इब्राहीम के लिए उसकी बुलाहट संसार तक पहुँचने की एक बुलाहट थी (तुलना उत्पत्ति 12:3; निर्गमन 19:5)। यीशु की मृत्यु पाप की समस्या से निपटी (तुलना यूहन्ना 3:16)। सभी को बचाया जा सकता है अगर वे पश्चाताप, विश्वास, आज्ञाकारिता, सेवा और दृढ़ता के वाचा दायित्वों का प्रत्युत्तर देते हैं। सभी के लिए परमेश्वर का वचन है "आओ" (तुलना यशायाह 55)।

विशेष विषय: YHWH की अनंत छुटकारे की योजना (SPECIAL TOPIC: YHWH's ETERNAL REDEMPTIVE PLAN)

मैं आप पाठक से इस बात को स्वीकार करना चाहता हूँ कि मैं इस बिंदु पर पक्षपाती हूं। मेरा व्यवस्थित धर्मशास्त्र कैल्विनवाद या विधानवाद नहीं है, लेकिन यह महान आज्ञा का सुसमाचारवाद है (तुलना मत्ती 28:18-20; लूका 24:46-47; प्रेरितों के काम 1:8)। मेरा मानना है कि परमेश्वर के पास सारी मानव जाति (जैसे, उत्पत्ति 3:15; 12:3; निर्गमन 19:5-6; यिर्मयाह 31:31-34; यहेजकेल 18; 36:22-39; प्रेरितों के काम 2:23; 3:18; 4:28; 13:29; रोमियों 3:9-18,19-20,21-31), उन सभी के लिये जो उसके स्वरूप और समानता में बनाये गए थे (तुलना उत्पत्ति 1:26-27) के छुटकारे के लिए एक अनन्त योजना थी वाचाएँ मसीह में एक हैं (तुलना गलातियों 3: 28-29; कुलुस्सियों 3:11)। यीशु परमेश्वर का रहस्य है, छिपा हुआ किंतु अब प्रगट है (तुलना इफिसियों 2:11-3:13)! नये नियम का सुसमाचार, न कि इस्राएल, पवित्रशास्त्र की कुंजी है।

यह पूर्व-समझ, पवित्रशास्त्र की मेरी सभी व्याख्याओं को रंग देती है। मैंने इसके माध्यम से सभी ग्रंथों को पढ़ा! यह निश्चित रूप से एक पूर्वाग्रह है (सभी व्याख्याकारों के होते है!), लेकिन यह एक पवित्रशास्त्रीय-रूप से सूचित पूर्वधारणा है।

उत्पत्ति 1-2 का केंद्र YHWH के द्वारा एक ऐसी जगह का सृजन किया जाना है जहाँ वह और उसकी सर्वोच्च सृष्टि, मानवजाति, संगति (तुलना उत्पत्ति 1:26,27; 3:8) कर सकते हैं। भौतिक सृजन इस पारस्परिक दिव्य कार्यसूची के लिए एक मंच है।

1. सन्त अगस्तीन ने इसे प्रत्येक व्यक्ति में एक दिव्य-आकार के छेद के रूप में चित्रित किया है जो केवल परमेश्वर द्वारा ही भरा जा सकता है।
2. सी. एस. लुईस ने इस ग्रह को "छुआ हुआ ग्रह" कहा, (अर्थात, मनुष्यों के लिए परमेश्वर द्वारा तैयार किया गया)।

पुराने नियम में इस दिव्य कार्यसूची के कई संकेत हैं।

1. उत्पत्ति 3:15 पहली प्रतिज्ञा है कि YHWH मानव जाति को पाप और विद्रोह के भयानक झमेले में नहीं छोड़ेगा। यह इस्राएल का संदर्भ नहीं देता है क्योंकि उत्पत्ति 12 में अब्राहम के बुलाए जाने तक इस्राएल या वाचा के लोग नहीं है।
2. उत्पत्ति 12:1-3 YHWH की अब्राहम के लिए, जो वाचा के लोग, इस्राएल बन जाएगा, प्रारंभिक बुलाहट और प्रकटीकरण है लेकिन इस प्रारंभिक बुलाहट में भी, परमेश्वर की नज़र पूरी दुनिया पर थी। पद 3 पर ध्यान दें!
3. निर्गमन 20 (व्यवस्थाविवरण 5) में YHWH ने अपने खास लोगों को मार्गदर्शन करने के लिए मूसा को अपनी व्यवस्था दी। ध्यान दें कि निर्गमन 19:5-6 में, YHWH ने इस्राएल के अनोखे संबंध को मूसा पर प्रगट किया। लेकिन यह भी ध्यान दें कि वे दुनिया को आशीष देने के लिए अब्राहम की तरह चुने गए थे (तुलना निर्गमन 19:5, "समस्त पृथ्वी तो मेरी है")। YHWH को जानने और उसके प्रति आकर्षित होने के लिए इस्राएल को राष्ट्रों के लिए एक क्रियाविधि बनना था। दुख की बात है कि वे असफल रहे (तुलना यहेजकेल 36:27-38)।

4. भजनसंहिता में - 22:27-28; 66:4; 86:9 (प्रकाशितवाक्य 15:4)
5. भविष्यवक्ताओं के माध्यम से YHWH ने अपनी सार्वभौमिक छुटकारे की योजनाओं को प्रकट करना जारी रखा।
    a. यशायाह - 2:2-4; 12:4-5; 25:6-9; 42:6,10-12; 45:22; 49:5-6; 51:4-5; 56:6-8; 60:1-3; 66:18,23
    b. यिर्मयाह - 3:27; 4:2; 12:15-16; 16:19
    c. मीका 4:1-3
    d. मलाकी 1:11

इस सार्वभौमिक जोर को "नई वाचा" के उद्भव द्वारा सहज बनाया गया है (तुलना यिर्मयाह 31:31-34; यहेजकेल 36:22-38), जो YHWH की दया पर केंद्रित है, न कि पतित मनुष्यों के व्यवहार पर। एक "नया हृदय," एक "नया मन," और एक "नई आत्मा" है। आज्ञाकारिता महत्त्वपूर्ण है लेकिन यह आंतरिक है, केवल एक बाहरी संकेत नहीं है (तुलना रोमियों 3:21-31)।

नया नियम स्पष्ट रूप से सार्वभौमिक छुटकारे की योजना को कई तरीकों से पुष्ट करता है।
1. महान आज्ञा - मत्ती 28:18-20; लूका 24:46-47; प्रेरितों के काम 1: 8
2. परमेश्वर की अनन्त योजना (यानी, पूर्वनिर्धारित) - लूका 22:22; प्रेरितों 2:23; 3:18; 4:28; 13:29
3. परमेश्वर चाहता है कि सभी मनुष्य बचाये जाएँ - यूहन्ना 3:16; 4:42; प्रेरितों के काम 10:34-35; 1 तीमुथियुस 2:4-6; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3:9; 1 यूहन्ना 2:2; 4:14
4. मसीह पुराने नियम और नये नियम को एक करता है - गलातियों 3:28-29; इफिसियों 2:11-3:13; कुलुस्सियों 3:11। मसीह में सभी मानवीय बाधाएँ और भेद हटा दिए जाते हैं। यीशु "परमेश्वर का रहस्य" है, छिपा हुआ, किंतु अब प्रगट है (इफिसियों 2:11-3:13)।

नया नियम यीशु पर केंद्रित है, न कि इस्राएल पर। सुसमाचार, राष्ट्रीयता या भौगोलिक क्षेत्र नहीं, केंद्रीय है। इस्राएल पहला प्रकाशन था लेकिन यीशु अंतिम प्रकाशन है (तुलना मत्ती 5:17-48)।

मुझे आशा है कि आप विशेष विषय: क्यों पुराने नियम की वाचा की प्रतिज्ञाएँ नये नियम की वाचा की प्रतिज्ञाओं से भिन्न प्रतीत होती हैं को पढ़ने के लिए कुछ समय निकालेंगे। आप इसे www.freebiblecommentary.org पर ऑनलाइन पा सकते हैं।

▣ **"परमेश्वर उसमें और वह परमेश्वर में बना रहता है"** यह मानव जाति के साथ परमेश्वर के संबंधों की वाचासंबंधी संरचना को दर्शाता है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है, कार्यसूची निर्धारित करता है और वाचा के लिए आधार प्रदान करता है, लेकिन मनुष्यों की जिम्मेदारी है कि वे आरम्भ में प्रत्युत्तर दें और प्रतिक्रिया करना जारी रखें।

बने रहना वाचा की एक आवश्यकता है, लेकिन यह एक अद्भुत वादा भी है (तुलना यूहन्ना 15)। कल्पना कीजिए, सृष्टि का रचयिता इस्राएल का पवित्र जन, पतित मनुष्यों के साथ बने रहता (में वास करता) है (तुलना यूहन्ना 14:23)! 1 यूहन्ना 2:10 पर बने रहना पर विशेष विषय देखें।

4:16 "उसे हम जान गए हैं और हमने उस पर विश्वास किया है" ये दोनों क्रियाएँ पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक हैं। विश्वासियों का मसीह में परमेश्वर के प्रेम का निश्चित विश्वास का आश्वासन, अस्तित्वगत परिस्थितियाँ नहीं, उनके संबंध का आधार है। विशेष विषय: आश्वासन 1 यूहन्ना 5:13 पर देखें ।

▣ **"जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है"** यह परमेश्वर के निरंतर प्रेम को व्यक्त करने वाला एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है।

▣ **"परमेश्वर प्रेम है"** यह महत्त्वपूर्ण सत्य दोहराया गया है (तुलना 1 यूहन्ना 4:8)।

4:17 "इसी से प्रेम सिद्ध होता है" यह यूनानी शब्द *telos* (तुलना 1 यूहन्ना 4:12) से है। इसका अर्थ है संपूर्णता, परिपक्वता और पूर्णता, न कि पापहीनता।

▣ **"हम में"** इस पूर्वसर्ग (*meta*) को "हम में" (TEV, NJB), "हमारे बीच" (NKJV, NRSV, NIV, REB) या "हमारे साथ" (NASB) के रूप में समझा जा सकता है।

▣ **"कि हमें साहस हो"** मूल रूप से इस शब्द का अर्थ था अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता। यूहन्ना इसे विस्तृत रूप से प्रयोग करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:28; 3:21; 5:14)। यह एक पवित्र परमेश्वर के पास आने में हमारी निर्भीकता की बात करता है (तुलना इब्रानियों 3:6; 10:35)। यूहन्ना 7:4 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"न्याय के दिन, क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी संसार में हैं"** मसीहियों को जैसा यीशु ने प्रेम किया वैसा प्रेम करना है (तुलना 1 यूहन्ना 3:16; 4:11)। उन्हें अस्वीकार और सताया जा सकता है जैसा उसे किया गया था, लेकिन उन्हें भी पिता और आत्मा के द्वारा प्रेम और स्थिर किया जाता है जैसे उसे किया था! एक दिन सभी मनुष्य जीवन के वरदान के लिए परमेश्वर को लेखा देंगे (तुलना मत्ती 25:31-36; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)। न्याय का दिन उन लोगों के लिए जो मसीह में हैं कोई भय का कारण नहीं है।

4:18 "प्रेम में भय नहीं होता" जब हम परमेश्वर को पिता के रूप में जानने लगते हैं, तो हम अब उससे न्यायाधीश के रूप में डरते नहीं हैं। अधिकांश, यदि सब नहीं, तो मसीही धर्म के रूपांतरणों में न्याय का भय, दण्ड की आज्ञा का भय, नरक का भय निहित है। हालाँकि, छुटकारा पानेवाले मनुष्यों के जीवन में एक बढ़िया बात होती है: जो डर के साथ शुरू होता है वह बिना किसी डर के खत्म होता है।

▣ **"भय में दण्ड निहित है"** यह एक दुर्लभ शब्द है जिसका प्रयोग केवल यहाँ और मत्ती 25:46 (क्रिया का रूप 2 पतरस 2:9 में है) में किया गया है, जो कि एक युगांत-विषयक विन्यास भी है। वर्तमान काल क्रिया का अर्थ है कि परमेश्वर के प्रकोप का डर अस्थायी (समय में) और युगांत-विषयक (समय के अंत में) दोनों है। मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है (तुलना उत्पत्ति 1:26-27) जिसमें व्यक्तित्व, ज्ञान, पसंद और परिणामों के दृष्टिकोण निहित हैं। यह एक नैतिक सृष्टि है। मनुष्य परमेश्वर के नियमों को नहीं तोड़ते; वे खुद को परमेश्वर के नियमों पर तोड़ते हैं!

4:19 "हम इसलिए प्रेम करते हैं" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। "हम प्रेम करते हैं" के बाद NKJV एक प्रत्यक्ष कर्म जोड़ता है। एक प्रत्यक्ष कर्म के लिए पांडुलिपि विकल्प हैं:

1. एक बृहदक्षर यूनानी पांडुलिपि (א) में "परमेश्वर" (*ton theon*) लगाया जाता है
2. ψ में "उसे" (*auton*) लगाया जाता है (KJV)
3. वुल्गेट में "एक दूसरे को" लगाया जाता है।

ये प्रत्यक्ष कर्म बाद के परिवर्धन हो सकते हैं। UBS^4 क्रिया को केवल "A" दर्ज़ा (निश्चित) देता है।

▣ **"क्योंकि उसने पहिले हमसे प्रेम किया"** 1 यूहन्ना 4:10 का दोहराया गया जोर है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (तुलना यूहन्ना 6:44,65), लेकिन पतित मानवजाति को अवश्य प्रत्युत्तर देना चाहिए (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16)। विश्वासियों को उनकी विश्वसनीयता पर भरोसा है और उसकी विश्वासयोग्यता में विश्वास है। त्रिएक परमेश्वर का प्रेमपूर्ण, क्रियाशील, विश्वासयोग्य चरित्र, छुटकारा पाई हुई मानवजाति की आशा और आश्वासन है।

4:20 "यदि कोई कहे" यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। एक तर्क प्रस्तुत करने के लिए झूठे शिक्षकों के कथनों को उद्धृत करते हुए यूहन्ना का यह एक और उदाहरण है (तुलना 1 यूहन्ना 1:6,8,10; 2:4,6)। यह साहित्यिक शैली कठोर समालोचना कहलाती है (तुलना मलाकी, रोमियों और याकूब)।

▣ **"'मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ' और अपने भाई से घृणा करे"** हमारे जीवन शैली प्रेम से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि क्या हम मसीही हैं (तुलना मरकुस 12:28-34)। मतभिन्नता संभव है, लेकिन स्थायी घृणा (वर्तमान काल) नहीं। विशेष विषय: जातिवाद यूहन्ना 4:4 पर देखें।

▣ **"वह झूठा है"** यूहन्ना कई "तथाकथित" विश्वासियों को झूठा कहता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:4,22; 4:20)। यूहन्ना यह भी कहता है कि जो लोग झूठे सत्यों का प्रचार करते हैं वे परमेश्वर को झूठा बनाते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 1:6,10; 5:10)। निश्चित रूप से स्वयं को धोखा देने वाले धर्मावलम्बी हैं!

4:21 यह पद अध्याय को सारांशित करता है! प्रेम एक सच्चे विश्वासी का ऐसा प्रमाण है जिसका प्रतिरूप नहीं बनाया जा सकता। घृणा दुष्ट की संतान का प्रमाण है। झूठे शिक्षक झुंड को विभाजित कर रहे और झगड़े करवा रहे हैं।

▣ **"भाई"** यह मान लिया जाना चाहिए कि "भाई" शब्द अस्पष्ट है। इसका मतलब हो सकता है "संगी मसीही" या "संगी मनुष्य।" हालाँकि, विश्वासियों के लिए यूहन्ना का "भाई" का आवर्तक प्रयोग का तात्पर्य पहला अर्थ है (तुलना 1 तीमुथियुस 4:10)।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. वास्तविक मसीही धर्म के तीन प्रमुख जाँचों की सूची बनाएँ।
2. कोई किस प्रकार जान सकता है कि कौन सच में परमेश्वर के लिए बोलता है?
3. सत्य के दो स्रोतों (व्यक्तिनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ) को सूचीबद्ध करें।
4. "संसार का उद्धारकर्ता" शीर्षक के बारे में क्या महत्वपूर्ण है?
5. झूठों (यानी, झूठे विश्वासियों) को प्रकट करने वाले कार्यों को सूचीबद्ध करें।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1 यूहन्ना 5

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
विश्वास संसार पर विजय है	विश्वास से आज्ञाकारिता	विजयी विश्वास	संसार पर हमारी विजय	
	4:20-5:5			
5:1-5		5:1-5	5:1-5	विश्वास का स्त्रोत
पुत्र के विषय में साक्षी	परमेश्वर की साक्षी की निश्चितता		यीशु मसीह के विषय में साक्षी	5:5-13
5:6-12	5:6-13	5:6-12	5:6-12	
अनन्त जीवन का ज्ञान		निष्कर्ष	अनंत जीवन	
5:13-15	प्रार्थना में विश्वास और कृपा	5:13	5:13-15	पापियों के लिए प्रार्थना
	5:14-17	5:14-17		5:14-17
5:16-17	सत्य को जानना, झूठ का इन्कार करना		5:16-17	पत्र का सारांश
5:18-21	5:18-21	5:18-20	5:18	5:18-21
			5:19	
			5:20	
		5:21	5:21	

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 5:1-4

[1]जो कोई विश्वास करता है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है; और जो पिता से प्रेम करता है, वह उस से भी प्रेम करता है जो उस से उत्पन्न हुआ है। [2]जब हम परमेश्वर से प्रेम करते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं तो इसी से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतानों से प्रेम करते हैं। [3]क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें; और उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं। [4]क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिसने संसार पर जय प्राप्त की यह है-हमारा विश्वास।

5:1 "जो" (दो बार) *pas* शब्द का प्रयोग 1 यूहन्ना (तुलना 1 यूहन्ना 2:29; 3:3,4,6 [दो बार] 9,10; 4:7; 5:1) में बार-बार किया गया है। किसी को भी यूहन्ना की स्पष्ट धर्मशास्त्रीय श्रेणियों से बाहर नहीं रखा गया है। यह यीशु मसीह को स्वीकार करने के लिए परमेश्वर का सार्वभौमिक निमंत्रण है (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:16; 1 तीमुथियुस 2:4; 2 पतरस 3:9)। यह रोमियों 10:9-13 में पौलुस के महान निमंत्रण के समान है।

▣ **"विश्वास करता है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है। यह यूनानी शब्द (संज्ञा - *pistis*; क्रिया - *pisteuō*) है जिसका अनुवाद "विश्वास," "भरोसा," या "आस्था" हो सकता है। हालाँकि, 1 यूहन्ना और पास्टर-संबंधी पत्रियों (I & 2 तीमुथियुस और तीतुस) में यह अक्सर सैद्धांतिक विषयवस्तु (तुलना यहूदा 1:3,20) के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। सुसमाचारों और पौलुस में इसका प्रयोग व्यक्तिगत भरोसे और प्रतिबद्धता के लिए किया जाता है। सुसमाचार भरोसा करने के लिए सत्य और विश्वास करने के लिए एक व्यक्ति दोनों है और, जैसा कि 1 यूहन्ना और याकूब स्पष्ट करते हैं, जीने के लिए प्रेम और सेवा का एक जीवन। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"कि यीशु ही मसीह है"** झूठे शिक्षकों की त्रुटि का सार मनुष्य यीशु के, जो पूर्ण देवता भी था, व्यक्तित्व और कार्य पर केंद्रित है (तुलना 1 यूहन्ना 5:5)। नासरत का यीशु प्रतिज्ञा किया गया मसीहा है! मसीहा आश्चर्यजनक रूप से (यानी, पुराने नियम से) भी दिव्य है। यह वाक्यांश एक शपथ था, संभवतः बपतिस्मा में (तुलना 1 यूहन्ना 2:22), जोड़े गए वाक्यांश "परमेश्वर का पुत्र" के साथ (तुलना 1 यूहन्ना 4:15; 5:5)। निश्चित रूप से यीशु के मसीहा होने की यह पुष्टि पुराने नियम की पृष्ठभूमि वाले लोगों से संबंधित है (यानी, यहूदी, धर्मान्तरित, और परमेश्वर का भय रखने वाले)।

▣ **"परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है"** यह एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है जो एक कार्य की परिणति पर जोर देता है, जो एक बाहरी माध्यम के द्वारा (परमेश्वर, तुलना 1 यूहन्ना 5:4,18; 2:29) एक स्थायी अवस्था में उत्पन्न किया जाता है ।

NASB	**"उस से उत्पन्न संतान को प्रेम करता है"**
NKJV	**"उस से प्रेम करता है जो उस से उत्पन्न हुआ है"**
NRSV	**"माता-पिता से प्रेम करता है संतान से प्रेम करता है"**
TEV	**"पिता से प्रेम करता है उसकी संतान से भी प्रेम करता है"**
NJB	**"पिता से प्रेम करता है पुत्र से प्रेम करता है"**

यह वाक्यांश शायद पिता को इनके प्रयोग के कारण यीशु को प्रेम करते हुए संदर्भित करता है (1) एकवचन; (2) अनिर्दिष्टकाल; और (3) झूठे शिक्षकों के धर्मशास्त्रीय रूप से यीशु को पिता से अलग करने के प्रयासों के कारण । हालाँकि, यह मसीहियों को एक दूसरे से प्रेम करने के आवर्ती विषय से संबंधित हो सकता है (तुलना 1 यूहन्ना 5:2) क्योंकि हम सभी का एक ही पिता है।

5:2 यह पद, पद 3 के साथ, 1 यूहन्ना के प्रमुख विषयों में से एक को दोहराता है। प्रेम, परमेश्वर का प्रेम, चलते रहनेवाले प्रेम (तुलना 1 यूहन्ना 2:7-11; 4:7-21) और आज्ञाकारिता (तुलना 1 यूहन्ना 2:3-6) द्वारा व्यक्त किया गया है। एक सच्चे विश्वासी के प्रमाणों पर ध्यान दें।

1. परमेश्वर से प्रेम करता है
2. परमेश्वर की संतान से प्रेम करता है (1 यूहन्ना 5:1)
3. परमेश्वर की संतानों से प्रेम करता है (1 यूहन्ना 5:2)
4. आज्ञाओं का पालन करता है (1 यूहन्ना 5:2,3)
5. जय प्राप्त करता है (1 यूहन्ना 5:4-5)

5:3 "क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करें" संबंधकारक वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिनिष्ठ या

एक संयोजन हो सकता है। प्रेम भावात्मक नहीं बल्कि क्रियात्मक है, जो परमेश्वर की ओर से और हमारी दोनों ओर है। आज्ञाकारिता महत्त्वपूर्ण है (तुलना 1 यूहन्ना 2:3-4; 3:22,24; यूहन्ना 14:15,21,23; 15:10; 2 यूहन्ना 6; प्रकाशितवाक्य 12:17; 14:12)।

▣ **"उसकी आज्ञाएँ बोझिल नहीं हैं"** नई वाचा में जिम्मेदारियाँ हैं (तुलना मत्ती 11:29-30, जहाँ यीशु "जुआ" शब्द का प्रयोग करता है; रब्बियों ने इसका प्रयोग मूसा के नियमों के लिए किया था, मत्ती 23:4)। । वे परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के कारण लागू होते हैं, लेकिन उस संबंध का आधार नहीं बनते हैं, जो परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है अनुग्रह, मानव प्रदर्शन या योग्यता पर नहीं (तुलना इफिसियों 2:8-9,10)। यीशु के दिशानिर्देश झूठे शिक्षकों से बहुत अलग हैं, जिनके पास या तो कोई नियम (विधिमुक्तिवादी) नहीं थे या बहुत सारे नियम (विधिवादी) थे! मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि जितना मैं उसके लोगों की सेवा करके परमेश्वर की सेवा करता हूँ उतना और अधिक मैं उदारवाद और विधिवाद की दो चरम सीमाओं से डरता हूँ।

विशेष विषय: यूहन्ना के लेखन में "आज्ञा" शब्द का प्रयोग यूहन्ना 12:50 पर देखें

5:4
NASB, NKJV,
NRSV "क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है"
TEV, NJB "क्योंकि परमेश्वर की हर संतान"

यूनानी पाठ में "सब" (*pas*) शब्द को जोर देने के लिए पहले लिखा गया है, जैसा कि 1 यूहन्ना 5:1 में। नपुंसकलिंग एकवचन (*pan*) का प्रयोग किया गया है जिसका अनुवाद है "जो कुछ।" हालाँकि, संदर्भ एक व्यक्तिगत लक्ष्यार्थ (यानी सामान्य अर्थ) की माँग करता है, क्योंकि यह "उत्पन्न" के पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत के साथ संयुक्त है। वही जो यीशु पर विश्वास करता है और परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है संसार पर जय प्राप्त करता है (तुलना 1 यूहन्ना 4:4; 2:13,14)।

▣ **"संसार पर जय प्राप्त करता है"** "जय प्राप्त करता है" *nikaō* का वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है (तुलना 1 यूहन्ना 2:13,14; 4:4; 5:4,5)। 1 यूहन्ना 5:4 में एक ही मूल का दो बार प्रयोग अधिक किया गया है।

1. संज्ञा, "विजय," *nikē*
2. अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य कृदंत, *nikaō*, "जय प्राप्त की है"

यीशु ने पहले ही संसार को जीत लिया है (पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक, तुलना यूहन्ना 16:33)। क्योंकि विश्वासी उसके साथ बने रहते हैं, वे भी संसार पर जय पाने की ताकत रखते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:13-14; 4:4)।

"संसार" शब्द का अर्थ है "परमेश्वर से अलग होकर संगठित और कार्य करने वाला मानव समाज।" स्वतंत्रता का एक दृष्टिकोण पतन और मानव विद्रोह का सार है (तुलना उत्पत्ति 3)। यूहन्ना 14:17 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"विजय"** यह क्रिया "जय प्राप्त की है" का संज्ञा रूप (*nikos*) है। 1 यूहन्ना 5: 4 के अंत में उसी मूल के अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य कृदंत का प्रयोग किया गया है। फिर 1 यूहन्ना 5:5 में फिर से *nikos* का एक और कृदंत रूप प्रयोग किया गया है। विश्वासी विजेता हैं और संसार भर पर मसीह की विजय में और उसके द्वारा आगे भी विजयी होते रहेंगे। शब्द "*nike*", टेनिस जूते के निर्माता के रूप में आज इतना लोकप्रिय है, यह विजय की देवी के लिए यूनानी नाम है।

▣ **"हमारा विश्वास"** यह यूहन्ना के लेखन में "विश्वास" (*pistis*) शब्द के संज्ञा रूप का एकमात्र प्रयोग है! संभवतः यूहन्ना "सही धर्मशास्त्र" (मान्यताओं की व्यवस्था के रूप में) बनाम मसीह के समान होने पर एक अत्यधिक बल के बारे में चिंतित था। यूहन्ना द्वारा विस्तृत रूप से क्रिया (*pisteuō*) का प्रयोग किया गया है। हमारा विश्वास विजय लाता है क्योंकि

1. यह यीशु की विजय से जुड़ा हुआ है।
2. यह परमेश्वर के साथ हमारे नए रिश्ते से जुड़ा हुआ है।
3. यह यूहन्ना 1:7 में हम में वास करनेवाली आत्मा की सामर्थ्य से जुड़ा हुआ है

विशेष विषय यूहन्ना 1:7; 2:23, और 1 यूहन्ना 2:10 पर देखें।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 5:5-12
5और वह कौन है जो संसार पर विजयी होता है, सिवाय उसके जो यह विश्वास करता है कि यीशु ही परमेश्वर का

पुत्र है? [6]यह वही है जो जल और लहू के द्वारा आया,अर्थात यीशु मसीह; केवल जल द्वारा ही नहीं, वरन जल और लहू द्वारा। [7]और आत्मा है जो साक्षी देता है, क्योंकि पवित्र आत्मा सत्य है। [8]साक्षी देने वाले तीन हैं: आत्मा, जल और लहू; और तीनों में सहमति है। [9]यदि हम मनुष्यों की साक्षी मान लेते हैं, तो परमेश्वर की साक्षी कहीं बढ़कर है;क्योंकि परमेश्वर की साक्षी यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में साक्षी दी है। [10]जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह स्वयं में साक्षी रखता है; वह जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता उसे झूठा ठहराता है, क्योंकि उसने उस साक्षी पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। [11]और साक्षी यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। [12]जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है; जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं उसके पास वह जीवन भी नहीं।

5:5 "यीशु परमेश्वर का पुत्र है" यह पद स्पष्ट रूप से हमारे विश्वास की विषयवस्तु को परिभाषित करता है, जिसका उल्लेख 1 यूहन्ना 5: 4 में किया गया है। हमारी विजय यीशु में, जो सम्पूर्ण मनुष्य और सम्पूर्ण परमेश्वर दोनों है, विश्वास की हमारी घोषणा/स्वीकारोक्ति है (तुलना 1 यूहन्ना 4:1-6)। ध्यान दें कि विश्वासी इस बात की पुष्टि करते हैं कि यीशु है (1) मसीहा (1 यूहन्ना 5:1); (2) परमेश्वर की संतान (1 यूहन्ना 5:1); (3) परमेश्वर का पुत्र (1 यूहन्ना 5:5,10); और (4) जीवन (तुलना 1 यूहन्ना 1:2; 5:20)। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें, जो क्रिया "विश्वास" से जुड़े सभी *hoti* खण्डों को सूचीबद्ध करता है।

▣ **"परमेश्वर का पुत्र"** 1 यूहन्ना 3:8 पर विशेष विषय देखें।

5:6 "यह वही है जो आया" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य कृदंत है जो उसके देह-धारण (यीशु मनुष्य और परमेश्वर दोनों के रूप में) और उसकी बलिदान की मृत्यु पर जोर देता है, इन दोनों को झूठे शिक्षकों ने नकार दिया।

▣ **"जल और लहू के द्वारा"** ऐसा प्रतीत होता है कि "जल" यीशु के शारीरिक जन्म (तुलना यूहन्ना 3:1-9) और "लहू" उसकी शारीरिक मृत्यु को संदर्भित करता है । ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों की यीशु की सच्ची मानवता की अस्वीकृति के संदर्भ में, ये दो अनुभव उसकी मानवता को सारांशित और प्रकट करते हैं।

ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों (सेरिंथस) से संबंधित अन्य विकल्प यह है कि "जल" यीशु के बपतिस्मे को संदर्भित करता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि "मसीह की आत्मा" मनुष्य यीशु पर उसके बपतिस्मे (पानी) पर आई और क्रूस (रक्त, NASB अध्ययन बाइबल में एक अच्छा सारांश देखें, पृष्ठ 1835) पर मनुष्य यीशु की मृत्यु से पहले छोड़ दिया।

तीसरा विकल्प यीशु की मृत्यु को वाक्यांश से जोड़ना है। भाला मारने से "लहू और जल" (तुलना यूहन्ना 19:34) बह निकला। झूठे शिक्षकों ने यीशु की प्रतिनिधिक, प्रतिस्थानापन्न मौत का अवमूल्यन हो सकता है।

▣ **"पवित्र आत्मा ही है जो साक्षी देता है"** पवित्र आत्मा की भूमिका है सुसमाचार को प्रकट करना। वह त्रिएकत्व का वह भाग है जो पाप का दोषी ठहराता है, मसीह की ओर ले जाता है, मसीह में बपतिस्मा देता है, और विश्वासी में मसीह बनाता है (तुलना यूहन्ना 16:7-15)। आत्मा हमेशा मसीह की साक्षी देती है, न कि स्वयं की (तुलना यूहन्ना 15:26)।

▣ **"पवित्र आत्मा सत्य है"** (तुलना यूहन्ना 14:17; 15:26; 16:13; 1 यूहन्ना 4:6)। यूहन्ना 6:55 और यूहन्ना 17:3 पर विशेष विषय देखें।

5:7 अंग्रेजी अनुवादों में इस बारे में कुछ भ्रम है कि 1 यूहन्ना 5:6,7, और 8 कहाँ शुरू और अंत होता है। 1 यूहन्ना 5:7 का भाग जो KJV में पाया जाता है जो कहता है "स्वर्ग में, पिता, वचन और पवित्र आत्मा, और ये तीनों एक हैं, "नये नियम की तीन प्रमुख प्राचीन बृहदक्षर यूनानी पांडुलिपियों: Alexandrinus (A), Vaticanus (B), या Sinaiticus (א), में नहीं पाए जाते हैं, न ही पांडुलिपियों के Byzantine परिवार में। यह केवल बाद की चार लघु अक्षर पांडुलिपियों में दिखाई देता है।

1. MS 61, 16 वीं शताब्दी में दिनांकित।
2. MS 88 12 वीं शताब्दी में दिनांकित, जहाँ अवतरण को बाद के हाथ से हाशिया में डाला जाता है।
3. MS 629, 14 वीं या 15 वीं शताब्दी में दिनांकित।
4. MS 635, 11 वीं शताब्दी में दिनांकित, जहाँ अवतरण को बाद के हाथ से हाशिया में डाला जाता है।

यह पद किसी भी प्रारंभिक कलीसिया पिता द्वारा उद्‌धृत नहीं किया गया है, यहाँ तक कि त्रिएकत्व पर उनके सैद्धांतिक विवादों में भी नहीं। यह एक बाद के लातिनी पांडुलिपि परिवार (*Sixto-Clementine*) को छोड़कर सभी प्राचीन संस्करणों से अनुपस्थित है। यह ओल्ड लैटिन या जेरोम के वुल्गेट में नहीं है। यह स्पेन के कुपंथी प्रिससिलियन, जिनकी मृत्यु 385 ई. में हुई थी, के आलेख में पहली बार दिखाई देता है। यह उत्तरी अफ्रीका और इटली में 5 वीं शताब्दी में लातिनी पिताओं द्वारा उद्‌धृत

किया गया था। यह पद 1 यूहन्ना के मूल प्रेरित वचनों का भाग नहीं है।

एक परमेश्वर (एकेश्वरवाद) लेकिन तीन व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों (पिता, पुत्र और आत्मा) का बाइबल सिद्धांत इस पद की अस्वीकृति से प्रभावित नहीं होता है। हालाँकि यह सच है कि बाइबल कभी भी "त्रिएकत्व" शब्द का प्रयोग नहीं करती है, कई बाइबल अवतरण परमेश्वर के तीन व्यक्तियों के एक साथ कार्य करने की बात करते हैं:

1. यीशु के बपतिस्मे पर (मत्ती 3:16-17)
2. महान आज्ञा (मत्ती 28:19)
3. भेजी गई आत्मा (यूहन्ना 14:26)
4. पतरस का पिन्तेकुस्त उपदेश (प्रेरितों के काम 2: 33-34)
5. पौलुस की शरीर और आत्मा की चर्चा (रोमियों 8:7-10)
6. पौलुस की आत्मिक वरदानों की चर्चा (1 कुरिन्थियों 12:4-6).
7. पौलुस की यात्रा की योजनाएँ (2 कुरिन्थियों 1: 21-22)
8. पौलुस का अन्तिम आशीर्वचन (2 कुरिन्थियों 13:14)
9. समय की परिपूर्णता के बारे में पौलुस की चर्चा (गलातियों 4: 4-6)
10. पौलुस की पिता की स्तुति की प्रार्थना (इफिसियों 1:3-14)
11. पौलुस ने अन्यजातियों के पूर्व अलगाव की चर्चा (इफिसियों 2:18)
12. पौलुस की परमेश्वर की एकता की चर्चा (इफिसियों 4:4-6)
13. पौलुस की परमेश्वर की दया की चर्चा (तीतुस 3:4-6)
14. पतरस का परिचय (1 पतरस 1:2)

यूहन्ना 14:26 पर त्रिएकत्व पर विशेष विषय देखें।

5:8 "आत्मा और जल और लहू; और इन तीनों में सहमति है" पुराने नियम में किसी मामले की पुष्टि करने के लिए दो या तीन गवाहों की आवश्यकता होती थी (तुलना व्यवस्था विवरण 17:6; 19:15)। यहाँ, यीशु के जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं को उसकी पूर्ण मानवता और देवत्व के साक्षी के रूप में दिया गया है। इस पद में, "जल" और "लहू" का उल्लेख "आत्मा" के साथ फिर से किया गया है। "जल" और "लहू" शब्द 1 यूहन्ना 5:6 में वर्णित हैं। कबूतर के उतरने के कारण "आत्मा" यीशु के बपतिस्मे का उल्लेख कर सकती है। सटीक ऐतिहासिक संकेत के बारे में जो इन तीनों में से हर एक दर्शाता है, कुछ असहमति है। ये झूठे शिक्षकों की यीशु की सच्ची मानवता की अस्वीकृति से संबंधित होने चाहिए।

5:9 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है। जिन कलीसियाओं को पौलुस लिख रहा था वे भ्रमित थे क्योंकि ऐसा लगता है कि उन्होंने ज्ञानवादी शिक्षकों के उपदेशों या शिक्षाओं को सुन रखा था।

▣ **"यदि हम मनुष्यों की साक्षी मान लेते हैं, तो परमेश्वर की साक्षी कहीं बढ़कर है"** यह दिव्य साक्षी, संदर्भ में संदर्भित करती है

1. पवित्र आत्मा की साक्षी
2. यीशु के सांसारिक जीवन और मृत्यु के लिए प्रेरितीय साक्षी (उदाहरण, 1:1-3)

▣ **"कि उसने अपने पुत्र के विषय में साक्षी दी है"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जिसका अर्थ है अतीत में एक ऐसा कार्य जो परिणति की स्थिति में आ गया है और बना रहता है। यह यीशु के बपतिस्मे पर (तुलना मत्ती 3:17) या उसके रूपांतरण पर (तुलना मत्ती 17:5; यूहन्ना 5:32,37; 8:18) परमेश्वर की मौखिक पुष्टि या दोनों को पवित्रशास्त्र (यानी, सुसमाचार) में दर्ज़ किए जाने का उल्लेख कर सकता है। विशेष विषय: यीशु के गवाह यूहन्ना 1:8 पर देखें।

5:10 "स्वयं में साक्षी रखता है" इस वाक्यांश की दो तरीकों से व्याख्या करना संभव है।

1. विश्वासियों में आत्मा की व्यक्तिपरक आंतरिक साक्षी (तुलना रोमियों 8:16)
2. सुसमाचार का सत्य (तुलना प्रकाशितवाक्य 6:10; 12:17; 19:10)

विशेष विषय: यीशु के गवाह यूहन्ना 1:8 पर देखें।

▣ **"उसे झूठा ठहराता है"** यह एक और पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। जो लोग यीशु के बारे में प्रेरितीय साक्षी को अस्वीकार करते हैं वे परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 5:12) क्योंकि वे परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं।

▣ **"क्योंकि उसने विश्वास नहीं किया"** यह एक और पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो कभी न सुधर सकने योग्य स्थाई स्थिति पर जोर देता है।

5:11-12 "कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो अतीत के कार्य या पूर्ण किए गए कार्य की बात करता है (तुलना यूहन्ना 3:16)। अनन्त जीवन को यूहन्ना 17:3 में परिभाषित किया गया है। कुछ उदाहरणों में वाक्यांश स्वयं यीशु को संदर्भित करता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:2; 5:20), कहीं यह परमेश्वर की ओर से एक वरदान है (तुलना 1 यूहन्ना 2:25; 5:11; यूहन्ना 10:28), जो मसीह में विश्वास के द्वारा प्राप्त होता है (तुलना 1 यूहन्ना 5:13; यूहन्ना 3:16)। पुत्र में व्यक्तिगत विश्वास के बिना पिता के साथ कोई सहभागिता नहीं कर सकता है!

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 5:13-15
[13]मैंने तुमको जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ये बातें इसलिए लिखी हैं कि तुम जानो कि
अनन्त जीवन तुम्हारा है। [14]और जो साहस हमें उसके सम्मुख होता है वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के
अनुसार कुछ माँगें, तो वह हमारी सुनता है। [15]यदि हम जानते हैं कि जो कुछ हम उस से माँगते हैं वह हमारी
सुनता है, तो हम यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उस से माँगा वह हमें प्राप्त हो चुका है।

5:13 "नाम पर विश्वास करते हो" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है, जो निरंतर विश्वास करने पर जोर देता है। यह नाम का जादुई या रहस्यमय प्रयोग नहीं है (जैसे कि परमेश्वर के नामों पर आधारित यहूदी रहस्यवाद, *Kabbalah*), लेकिन व्यक्ति के विकल्प के रूप में नाम का पुराने नियम का प्रयोग है। यूहन्ना 2:23 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"कि तुम जानो कि"** यह एक पूर्ण कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है (*oida* रूप में पूर्ण है, लेकिन वर्तमान के रूप में इसका अनुवाद किया गया है)। किसी के उद्धार का आश्वासन एक प्रमुख अवधारणा है, और 1 यूहन्ना का अक्सर घोषित उद्देश्य है। पत्रों/उपदेशों में दो यूनानी समानार्थी शब्द (*oida* और *ginōskō*) का प्रयोग किया गया है, जिसका अनुवाद "जानो" है। यह स्पष्ट है कि आश्वासन सब विश्वासियों की धरोहर है! यह भी स्पष्ट है कि उस समय की स्थानीय स्थिति और अभी की सांस्कृतिक संदर्भ के कारण अब ऐसे सच्चे विश्वासी हैं जिनके पास आश्वासन नहीं है। यह पद, धर्मशास्त्रीय रूप से यूहन्ना रचित सुसमाचार (तुलना 1 यूहन्ना 20:31) के समापन के समान है।

1 यूहन्ना (5:13-20) का समापन संदर्भ उन सात चीजों को सूचीबद्ध करता है जो विश्वासी जानते हैं। सुसमाचार की सच्चाइयों का उनका ज्ञान एक विश्वदृष्टिकोण प्रदान करता है, जिसे जब मसीह में व्यक्तिगत विश्वास के साथ जोड़ा जाता है, तो आश्वासन की मूल आधारशिला होता है।

1. विश्वासियों के पास अनन्त जीवन होता है (1 यूहन्ना 5:13, *oida*, पूर्ण कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक)
2. परमेश्वर विश्वासियों की प्रार्थनाओं को सुनता है (1 यूहन्ना 5:15, *oida*, पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक)
3. परमेश्वर विश्वासियों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है (1 यूहन्ना 5:14, *oida*, पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक)
4. विश्वासी परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं (1 यूहन्ना 5:18, *oida*, पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक)
5. विश्वासी परमेश्वर के हैं (से हैं) (1 यूहन्ना 5:19, *oida*, पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक)
6. विश्वासियों को पता है कि मसीह आया है और उसने आकर उन्हें समझ दी है (1 यूहन्ना 5:20, *oida*, पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक)
7. विश्वासी उसे जो सत्य है - या तो पिता या पुत्र, को जानते हैं (1 यूहन्ना 5:20, *ginōskō*, वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक)

विशेष विषय: आश्वासन (SPECIAL TOPIC: ASSURANCE)

A. क्या मसीही जान सकते हैं कि वे उद्धार पा चुके हैं (तुलना 1 यूहन्ना 5:13)? 1 यूहन्ना में तीन परीक्षण या प्रमाण हैं।
   1. मत-संबंधी (विश्वास, 1 यूहन्ना 1:1,5,10; 2:18-25; 4:1-6,14-16; 5:11-12)
   2. जीवनशैली (आज्ञाकारिता, 1 यूहन्ना 2:2-3; 2:3-6; 3:1-10; 5:18)
   3. सामाजिक (प्रेम, 1 यूहन्ना 1:2-3; 2:7-11; 3:11-18; 4:7-12, 16-21)

B. आश्वासन एक साम्प्रदायिक मुद्दा बन गया है
   1. जॉन केल्विन ने परमेश्वर के चुनाव को आश्वासन का आधार बनाया। उन्होंने कहा कि हम इस जीवन में कभी निश्चित नहीं हो सकते।
   2. जॉन वेस्ले ने धार्मिक अनुभव को आश्वासन का आधार बनाया। उनका मानना था कि हमारे पास ज्ञात पाप से ऊपर उठकर रहने की क्षमता है।
   3. रोमन कैथोलिक और चर्च ऑफ़ क्राइस्ट एक आधिकारिक कलीसिया को आश्वासन का आधार बनाते हैं।जो जिस समूह से है वही आश्वासन की कुंजी है।
   4. अधिकांश धर्मप्रचारक बाइबल के वादों पर जो विश्वासी के जीवन में (यानी, प्रतिदिन मसीह समान होना) आत्मा के फल (तुलना गलातियों 5:22-23) से जुड़े हुए हैं, आश्वासन का आधार रखते हैं।

C. विश्वासियों का प्राथमिक आश्वासन त्रिएक परमेश्वर के चरित्र से जुड़ा हुआ है
   1. परमेश्वर पिता का प्यार
      a. यूहन्ना 3:16; 10:28-29
      b. रोमियों 8:31-39
      c. इफिसियों 2:5,8-9
      d. फिलिप्पियों 1:6
      e. 1 पतरस 1:3-5
      f. 1 यूहन्ना 4:7-21
   2. परमेश्वर पुत्र के कार्य
      a. हमारी बदले मृत्यु
         1) प्रेरितों के काम 2:23
         2) रोमियों 5:6-11
         3) 2 कुरिन्थियों 5:21
         4) 1 यूहन्ना 2:2; 4:9-10
      b. महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना 17:12)
      c. निरंतर मध्यस्थता
         1) रोमियों 8:34
         2) इब्रानियों 7:25
         3) 1 यूहन्ना 2:1
   3. परमेश्वर आत्मा की सेवकाई
      a. बुलाहट (यूहन्ना 6:44,65)
      b. छाप लगना
         1) 2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5
         2) इफिसियों 1:13-14; 4:3
      c. आश्वासन देना
         1) रोमियों 8:16-17
         2) 1 यूहन्ना 5:7-13

D. लेकिन मनुष्यों को परमेश्वर की वाचा के प्रस्ताव (आरम्भ में और लगातार दोनों) का प्रत्युत्तर देना चाहिए
   1. विश्वासियों को पाप (पश्चाताप) से यीशु (विश्वास) के द्वारा परमेश्वर की ओर फिरना चाहिए
      a. मरकुस 1:15
      b. प्रेरितों के काम 3:16,19; 20:21
   2. विश्वासियों को मसीह में परमेश्वर का प्रस्ताव ग्रहण करना चाहिए (विशेष विषय: "ग्रहण करना," "विश्वास करना," "अंगीकार करना/दावा करना," और "पुकारना" का अर्थ क्या है? देखें)
      a. यूहन्ना 1:12; 3:16
      b. रोमियों 5:1 (और समरूपता के अनुसार 10:9-13)
      c. इफिसियों 2:5,8-9

3. विश्वासियों को विश्वास में बने रहना चाहिए (विशेष विषय देखें: धीरज)
    a. मरकुस 13:13
    b. 1 कुरिन्थियों 15:2
    c. गलातियों 6:9
    d. इब्रानियों 3:14
    e. 2 पतरस 1:10
    f. यहूदा 20-21
    g. प्रकाशितवाक्य 2:2-3,7,10,17,19,25-26; 3:5,10,11,21

E. आश्वासन कठिन है क्योंकि
1. अक्सर विश्वासी कुछ ऐसे अनुभवों की तलाश करते हैं जिनका वादा बाइबल में नहीं किया गया है
2. अक्सर विश्वासी सुसमाचार को पूरी तरह से नहीं समझते हैं
3. अक्सर विश्वासी जानबूझकर पाप करना जारी रखते हैं (तुलना 1 कुरिन्थियों 3:10-15; 9:27; 1 तीमुथियुस 1:19-20; 2 तीमुथियुस 4:10; 2 पतरस 1:8-11।
4. कुछ व्यक्तित्व प्रकार (यानी, आदर्शवादी) कभी भी परमेश्वर की बिना शर्त स्वीकृति और प्यार को स्वीकार नहीं कर सकते हैं
5. बाइबल में झूठे दावों के उदाहरण हैं (तुलना मत्ती 13:3-23; 7:21-23; मरकुस: 14-20; 2 पतरस 2:19-20; 1 यूहन्ना 2:18-19, विशेष विषय: स्वधर्मत्याग देखें)

इस सिद्धांत की एक अलग रूपरेखा के लिए विशेष विषय:मसीही आश्वासन देखें

5:14 "जो साहस हमें उसके सम्मुख होता है" यह एक आवर्तक विषय है (तुलना 1 यूहन्ना 2:28; 3:21; 4:17)। यह परमेश्वर के पास जाने में हमारी निर्भीकता या स्वतंत्रता को व्यक्त करता है (तुलना इब्रानियों 4:16)। यूहन्ना 7:4 पर विशेष विषय देखें।

▣ **"यदि"** यह एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगें"** यूहन्ना के कथन विश्वासी की परमेश्वर से विनती करने की क्षमता में असीमित प्रतीत होते हैं। कैसे और किस लिए प्रार्थना करता है यह एक सच्चे विश्वासी का एक और प्रमाण है। हालाँकि, आगे निरीक्षण करने पर, हमें पता चलता है कि प्रार्थना अपनी इच्छा के अनुसार कुछ माँगना नहीं, बल्कि हमारे जीवन में परमेश्वर की इच्छा को माँगना है (तुलना 1 यूहन्ना 3:22; मत्ती 6:10; मरकुस 14:36)। 1 यूहन्ना 3:22 पर पूर्ण टिप्पणी देखें। विशेष विषय: परमेश्वर की इच्छा के लिए यूहन्ना 4:34 देखें। विशेष विषय: प्रार्थना, असीमित फिर भी सीमित 1 यूहन्ना 3:22 पर देखें।

विशेष विषय: मध्यस्थता की प्रार्थना (SPECIAL TOPIC: INTERCESSORY PRAYER)

I. प्रस्तावना
  A. यीशु के उदाहरण के कारण प्रार्थना महत्त्वपूर्ण है
    1. व्यक्तिगत प्रार्थना, मरकुस 1:35; लूका 3:21; 6:12; 9:29; 22:31-46
    2. मंदिर का शुद्धिकरण, मत्ती 21:13; मरकुस 11:17; लूका 19:46
    3. आदर्श प्रार्थना, मत्ती 6:5-13; लूका 11:2-4
  B. प्रार्थना एक व्यक्तिगत, ख्याल रखनेवाले परमेश्वर में, जो हमारी प्रार्थनाओं के माध्यम से हमारे और दूसरों के लिए कार्य करने के लिए मौजूद, तैयार, और सक्षम है, हमारे विश्वास को वास्तविक क्रिया में लाना है।
  C. परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से कई क्षेत्रों में अपने बच्चों की प्रार्थना पर काम करने के लिए खुद को सीमित कर लिया है (तुलना याकूब 4:2)
  D. प्रार्थना का प्रमुख उद्देश्य त्रिएक परमेश्वर के साथ हमारी संगति और समय है।
  E. जो कुछ भी या जो कोई भी विश्वासियों से संबंधित है, वह प्रार्थना का दायरा है। हम एक बार प्रार्थना कर सकते हैं, विश्वास रखते हुए, या विचार या चिंता के लौटने पर बार बार कर सकते हैं।
  F. प्रार्थना में कई तत्व शामिल हो सकते हैं
    1. त्रिएक परमेश्वर की स्तुति और आराधना
    2. परमेश्वर को उसकी उपस्थिति, संगति और प्रावधानों के लिए धन्यवाद

3. हमारे अतीत और वर्तमान दोनों के पापों का अंगीकार
4. हमारी आवश्यकताओं या इच्छाओं के लिए विनती
5. मध्यस्थता जहाँ हम पिता के सामने दूसरों की आवश्यकताओं को रखते हैं

G. मध्यस्थता की प्रार्थना एक रहस्य है। परमेश्वर उन लोगों से जिनके लिए हम प्रार्थना करते हैं,जितना हम करते हैं, उससे कहीं अधिक प्रेम करता है, फिर भी हमारी प्रार्थना अक्सर एक परिवर्तन, प्रतिक्रिया या आवश्यकता को प्रभावित करती है, न केवल हम में, बल्कि उनमें।

II. बाइबल तथ्य

A. पुराना नियम

1. मध्यस्थता की प्रार्थना के कुछ उदाहरण:
   a. अब्राहम ने सदोम के लिए निवेदन किया, उत्पत्ति 18:22ff
   b. इस्राएल के लिए मूसा की प्रार्थना
      (1) निर्गमन 5:22-23
      (2) निर्गमन 32:9-14,31-35
      (3) निर्गमन 33 :12-16
      (4) निर्गमन 34:9
      (5) व्यवस्थाविवरण 9 :18, 25-29
   c. शमूएल इस्राएल के लिए प्रार्थना करता है
      (1) 1 शमूएल 7: 5-6,8-9
      (2) 1 शमूएल 12:16-23
      (3) 1 शमूएल 15:11
   d. दाऊद अपने पुत्र के लिए, 2 शमूएल 12:16-18
2. परमेश्वर मध्यस्थता करनेवालों की खोज में है, यशायाह 59:16
3. ज्ञात, अंगीकार न किया गया पाप या एक पश्चाताप न करने की प्रवृत्ति हमारी प्रार्थनाओं को प्रभावित करती है
   a. भजनसंहिता 66:18
   b. नीतिवचन 28:9
   c. यशायाह 59:1-2; 64:7

B. नया नियम

1. पुत्र और आत्मा की मध्यस्थता की सेवकाई
   a. यीशु
      (1) रोमियों 8:34
      (2) इब्रानियों 7:25
      (3) 1 यूहन्ना 2:1
   b. पवित्र आत्मा, रोमियों 8:26-27
2. पौलुस की मध्यस्थता की सेवकाई
   a. यहूदियों के लिए प्रार्थना
      (1) रोमियों 9:1ff
      (2) रोमियों 10:1
   b. कलीसियाओं के लिए प्रार्थना करता है
      (1) रोमियों 1:9
      (2) इफिसियों 1:16
      (3) फिलिप्पियों 1:3-4,9
      (4) कुलुस्सियों 1:3,9
      (5) 1 थिस्सलुनीकियों 1:2-3
      (6) 2 थिस्सलुनीकियों 1:11
      (7) 2 तीमुथियुस 1:3
      (8) फिलेमोन, 4

c. पौलुस ने कलीसियाओं को उसके लिए प्रार्थना करने के लिए कहा
   (1) रोमियों 15:30
   (2) 2 कुरिन्थियों 1:11
   (3) इफिसियों 6:19
   (4) कुलुस्सियों 4:3
   (5) 1 थिस्सलुनीकियों 5:25
   (6) 2 थिस्सलुनीकियों 1:3

3. कलीसियाओं की मध्यस्थता की सेवकाई
   a. एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें
      (1) इफिसियों 6:18
      (2) 1 तीमुथियुस 2:1
      (3) याकूब 5:16
   b. विशेष समूहों के लिए प्रार्थना का अनुरोध
      (1) हमारे बैरी, मत्ती 5:44
      (2) मसीही सेवक, इब्रानियों 13:18
      (3) राजाओं, 1 तीमुथियुस 2:2
      (4) रोगी, याकूब 5:13-16
      (5) विश्वास से भटक जाने वाले, 1 यूहन्ना 5:16

III. उत्तर प्राप्त प्रार्थना के लिए नियम
   A. मसीह और आत्मा से हमारा संबंध
      1. उसमें बने रहना, यूहन्ना 15:7
      2. उसके नाम में, यूहन्ना 14:13,14; 15:16; 16:23-24
      3. आत्मा में, इफिसियों 6:18; यहूदा 20
      4. परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, मत्ती 6:10; 1 यूहन्ना 3:22; 5:14-15
   B. उद्देश्य
      1. हिचकिचाना नहीं, मत्ती 21:22; याकूब 1:6-7
      2. नम्रता और पश्चाताप, लूका 18:9-14
      3. अनुचित रूप से माँगकर, याकूब 4:3
      4. स्वार्थ, याकूब 4:2-3
   C. अन्य पहलू
      1. हियाव
         a. लूका 18:1-8
         b. कुलुस्सियों 4:2
      2. लगातार माँगना
         a. मत्ती 7:7-8
         b. लूका 11:5-13
         c. याकूब 1:5
      3. घर में कलह, 1 पतरस 3:7
      4. ज्ञात पाप से मुक्त
         a. भजन 66:18
         b. नीतिवचन 28:9
         c. यशायाह 59:1-2
         d. यशायाह 64:7

IV. धर्मशास्त्रीय निष्कर्ष
   A. कैसा सौभाग्य। कैसा अवसर। कैसा कर्तव्य और जिम्मेदारी।
   B. यीशु हमारा उदाहरण है। आत्मा हमारा मार्गदर्शक है। पिता बेसब्री से इंतजार कर रहा है।
   C. यह आपको, आपके परिवार, आपके दोस्तों और दुनिया को बदल सकती है।

5:15 "यदि" यह एक प्रथम श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है (लेकिन *ean* और निर्देशात्मक के साथ, A. T. Robertson, *Word Pictures in the New Testament*, p. 243 देखें) जिसे लेखक के परिप्रेक्ष्य या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सत्य माना जाता है। यह एक असामान्य प्रतिबंधात्मक वाक्य है।

1. इसमें *ei* के बजाय *ean* है (तुलना प्रेरितों 8:31; 1 थिस्सलुनीकियों 3:8)
2. यह *ean* में एक संशयार्थ-सूचक (यानी, माँगें) से जुड़ा है, जो कि तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य के लिए सामान्य व्याकरणिक संरचना है।
3. यूहन्ना 5:14 और 16 में तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक हैं।
4. परमेश्वर की इच्छा (1 यूहन्ना 5:14) और यीशु के नाम से जुड़ी मसीही प्रार्थना का धर्मशास्त्र (1 यूहन्ना 5:13)

▣ **"हम जानते हैं"** यह एक और पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है, जिसका अनुवाद एक वर्तमान के रूप में किया गया है, जो कि 1 यूहन्ना 5:14 के समानांतर है। यह विश्वासियों का आश्वासन है कि पिता अपनी संतान की बात सुनता और उनका जवाब देता है।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 5:16-17

[16]यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे जिसका परिणाम मृत्यु न हो, तो वह प्रार्थना करे और परमेश्वर उसके कारण उन्हें जिन्होंने ऐसा पाप किया हो जिसका परिणाम मृत्यु नहीं है, जीवन देगा। ऐसा पाप तो है जिसका परिणाम मृत्यु है; मैं यह नहीं कहता कि कि इस बात के लिए निवेदन करे। [17]सब प्रकार की अधार्मिकता पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है जिसका परिणाम मृत्यु नहीं होता।

5:16 "यदि" यह एक तीसरी श्रेणी का प्रतिबंधात्मक है जिसका अर्थ है संभावित कार्य। पद 16 हमारे संगी मसीहियों के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता पर जोर देता है (तुलना गलातियों 6:1; याकूब 5:13-18) कुछ सुझाई गई सीमाओं के भीतर (ऐसे पाप के लिए नहीं जिसका परिणाम मृत्यु है), जो झूठे शिक्षकों से संबंधित लगता है (तुलना 2 पतरस 2)।

▣ **"अपने भाई को ऐसा पाप करते हुए देखे जिसका परिणाम मृत्यु न हो"** यूहन्ना ने पाप की कई श्रेणियों को सूचीबद्ध किया है। कुछ संबंधित हैं (1) देवता के साथ सहभागिता से; (2) अन्य विश्वासियों के साथ सहभागिता से; और (3) संसार के साथ सहभागिता से। सर्वोच्च पाप यीशु मसीह में भरोसे/आस्था/विश्वास की अस्वीकृति है। यह ऐसा पाप है जिसका परिणाम अन्तिम मृत्यु है! W. T. Conners अपनी *Christian Doctrine* में कहते हैं:

> "इसका मतलब, हालाँकि, सिद्धांत या हठधर्मिता को स्वीकार करने से इन्कार करने के अर्थ में अविश्वास नहीं है। यह किसी का नैतिक और आत्मिक ज्योति की अस्वीकृति में अविश्वास है, खासकर जब कि वह ज्योति समाविष्ट है यीशु मसीह में। यह स्वयं की परमेश्वर के अंतिम प्रकाशन की जैसा कि मसीह में किया गया है अस्वीकृति है । जब यह अस्वीकृति निश्चित और स्वेच्छाचारी हो जाती है, तो यह ऐसा पाप बन जाती है जिसका परिणाम मृत्यु है (1 यूहन्ना 5:13-17)। इस प्रकार यह नैतिक आत्महत्या बन जाता है। अपनी स्वयं की आत्मिक आँखें बाहर निकाल रहा है। यह उच्च कोटि के प्रबोधन के संबंध में छोड़कर और कहीं नहीं होता है। यह परमेश्वर के प्रकटीकरण के रूप में मसीह की जानबूझकर, स्वेच्छाचारी, दुर्भावनापूर्ण अस्वीकृति है, यह जानते हुए कि वह इस तरह का प्रकटीकरण है। यह जानबूझकर सफेद को काला कहना है" (pp. 135-136)।

विशेष विषय: पाप का फल मृत्यु क्या है? (SPECIAL TOPIC: WHAT IS SIN UNTO DEATH?)

A. व्याख्यात्मक विचार
   1. उचित अभिज्ञान 1 यूहन्ना के ऐतिहासिक विन्यास से संबंधित होना चाहिए
      a. कलीसिया में झूठे ज्ञानवादी शिक्षकों की उपस्थिति (विशेष विषय: ज्ञानवाद) देखें (तुलना 1 यूहन्ना 2:19,26; 3:7; 2 यूहन्ना 7; विशेष विषय: ज्ञानवाद देखें)
         (1) "सेरिन्थियन" ज्ञानवादियों ने सिखाया कि मनुष्य यीशु ने अपने बपतिस्मे पर मसीह की आत्मा प्राप्त की और मसीह की आत्मा क्रूस पर उसकी मृत्यु से पहले छोड़कर चली गई (तुलना 1 यूहन्ना 5:6-8)
         (2) "डॉकैटिक" ज्ञानवादियों ने सिखाया कि यीशु एक दिव्य आत्मा था, एक सच्चा मनुष्य नहीं (तुलना 1 यूहन्ना 1:1-3)
         (3) दूसरी शताब्दी के लेखन में प्रकट ज्ञानवाद ने मानव देह के बारे में दो अलग-अलग विचारों को प्रतिबिंबित किया

(a) चूंकि उद्धार मन पर प्रगट एक सच्चाई था, मानव देह आत्मिक क्षेत्र के लिए अप्रासंगिक था। इसलिए, जो कुछ भी वह चाहता था पा सकता था। इन्हें अक्सर विधिमुक्त या अनैतिक ज्ञानवादी कहा जाता है।
(b) दूसरे समूह ने निष्कर्ष निकाला कि चूँकि देह स्वाभाविक रूप से दुष्ट है (यानी यूनानी विचार), इसलिए किसी भी शारीरिक इच्छा को त्याग दिया जाना चाहिए। इन्हें "तपस्वी" ज्ञानवादी कहा जाता है।

b. इन झूठे शिक्षकों ने कलीसिया को छोड़ दिया था (तुलना 1 यूहन्ना 2:19), लेकिन उनके प्रभाव ने नहीं!

2. उचित अभिज्ञान पूरी पुस्तक के साहित्यिक संदर्भ से संबंधित होना चाहिए
   a. 1 यूहन्ना को झूठे शिक्षण का सामना करने और सच्चे विश्वासियों को आश्वस्त करने के लिए लिखा गया था
   b. इन दो उद्देश्यों को सच्चे विश्वासियों के परीक्षणों में देखा जा सकता है
      (1) सिद्धांतिक
         (a) यीशु वास्तव में मनुष्य था (तुलना 1 यूहन्ना 1:1-3; 4:14)
         (b) यीशु वास्तव में परमेश्वर था (तुलना 1 यूहन्ना 1:2; 5:20)
         (c) मनुष्य पापी और पवित्र परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार हैं (तुलना 1 यूहन्ना 1:6,10)
         (d) मनुष्यों को भी क्षमा किया जाता है और परमेश्वर के साथ इनके द्वारा सही ठहराया जाता है
            i. यीशु की मृत्यु (तुलना 1 यूहन्ना 1:7; 2:1-2; 3:16; 4:9-10,14; 5:6-8)
            ii. यीशु में विश्वास (तुलना 1 यूहन्ना 1:9; 3:23; 4:15; 5:1,4-5,10-12,13)
      (2) व्यावहारिक (सकारात्मक)
         (a) जीवनशैली आज्ञाकारिता (तुलना 1 यूहन्ना 2:3-5; 3: 22,24; 5: 2-3)
         (b) जीवनशैली प्रेम (1 यूहन्ना 2:10; 3:11,14,18,23; 4:7,11-12,16-18,21)
         (c) जीवनशैली मसीह की समानता (पाप नहीं करता, तुलना 1 यूहन्ना 1:7; 2:6,29; 3:6-9; 5:18)।
         (d) जीवनशैली बुराई पर जीत (तुलना 1 यूहन्ना 2:13,14; 4:4; 5:4)
         (e) उसका वचन उनमें बना रहता है (तुलना 1 यूहन्ना 1:10; 2:14)
         (f) उनमें आत्मा है (तुलना 1 यूहन्ना 3:24; 4:4-6,13)
         (g) उत्तर-प्राप्त प्रार्थना (तुलना 1 यूहन्ना 5:14-15)
      (3) व्यावहारिक (नकारात्मक)
         (a) जीवनशैली पाप (तुलना 1 यूहन्ना 3:8-10)
         (b) जीवनशैली बैर (तुलना 1 यूहन्ना 2:9,11; 3:15; 4:20)
         (c) जीवनशैली अनाज्ञाकारिता (तुलना 1 यूहन्ना 2:4; 3:4)
         (d) संसार से प्रेम रखते हैं (तुलना 1 यूहन्ना 2:15-16)
         (e) मसीह का इन्कार करते हैं (पिता और पुत्र का इन्कार करते हैं, तुलना 1 यूहन्ना 2:22-23; 4:2-3; 5:10-12)

3. उचित अभिज्ञान संबंधित पाठ में विशिष्ट वस्तुओं से जुड़ी होनी चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 5:16-17)
   a. क्या 1 यूहन्ना 5:16 का "भाई" शब्द उन दोनों तरह के लोगों से संबंधित है जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु न हो और जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु हो?
   b. क्या अपराधी कभी कलीसिया के सदस्य थे (तुलना 1 यूहन्ना 2:19)?
   c. इसका शाब्दिक महत्त्व क्या है:
      (1) "पाप" के साथ कोई शब्द वर्ग नहीं?
      (2) क्रिया "देखे" अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक के साथ तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक के रूप में है?
   d. एक मसीही की प्रार्थना (तुलना याकूब 5:15-16) पापी के व्यक्तिगत पश्चाताप के बिना अनन्त जीवन, *zōē* को दूसरे में कैसे पुनर्स्थापित कर सकती है?
   e. 1 यूहन्ना 5:17 कैसे पाप के प्रकारों से संबंधित है (फल मृत्यु, फल मृत्यु नहीं)?

B. धर्मशास्त्रीय समस्याएँ
1. क्या एक व्याख्यकार को इस पाठ को इनसे जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए
   a. सुसमाचारों का "अक्षम्य" पाप (विशेष विषय: अक्षम्य पाप देखें)
   b. इब्रानियों 6 और 10 का "एक ही बार में हटाया गया" पाप

। यूहन्ना का संदर्भ यीशु के दिन में फरीसियों के अक्षम्य पाप के समतुल्य प्रतीत होता है (तुलना मत्ती 12:22-37;

मरकुस 3: 22-29) और साथ ही इब्रानियों 6 और 10 के अविश्वासी यहूदी। सभी तीन समूहों (फरीसी, अविश्वासी यहूदी, और झूठे ज्ञानवादी शिक्षक) ने सुसमाचार को स्पष्ट रूप से सुना, लेकिन यीशु मसीह पर भरोसा करने से इन्कार कर दिया।

2. क्या इस पाठ को देखने के लिए आधुनिक सांप्रदायिक प्रश्न एक धर्मशास्त्रीय ढाँचा होना चाहिए?

धर्मप्रचारवाद ने मसीही अनुभव की शुरुआत को अधिक महत्त्व दिया है और सच्चे विश्वास के चल रहे जीवनशैली प्रमाणों की उपेक्षा की है। हमारे आधुनिक धर्मशास्त्रीय प्रश्नों ने पहली शताब्दी के मसीहियों को झकझोर दिया होता। हम चयनित बाइबल "प्रमाण-पाठों" और हमारे अपने तर्कसंगत अनुमानों या संप्रदाय आधारित पूर्वाग्रहों के आधार पर "निश्चितता" चाहते हैं।

हमारे धर्मशास्त्रीय प्रश्न, ढाँचा और विशेषक हमारी अपनी असुरक्षा को दर्शाते हैं। हम बाइबल जितना देती है उससे अधिक जानकारी और स्पष्टीकरण चाहते हैं, इसलिए हमारा सुनियोजित धर्मशास्त्र पवित्रशास्त्र के कुछ छोटे खंड लेता है और तर्कसंगत, पश्चिमी, विशिष्ट सिद्धांतों के विशाल जाल बुनता है!

मत्ती 7 और मरकुस 7 में यीशु के शब्द आरंभिक कलीसिया के लिए पर्याप्त थे! यीशु चेलों की तलाश करता है, निर्णयों की नहीं, दीर्घकालिक जीवनशैली विश्वास की, न कि अल्पकालीन भावनात्मक विश्वास की। (तुलना मत्ती 13:10-23; 28:18-20; यूहन्ना 8:31-59)। मसीहियत एक पृथक भूतकालीन कृत्य नहीं है, बल्कि निरंतर जारी रहनेवाला पश्चाताप, विश्वास, आज्ञाकारिता और धीरज है। मसीहियत स्वर्ग का टिकट नहीं है, जो अतीत में खरीदा गया था, और न ही एक अग्नि बीमा पॉलिसी है, जो स्वार्थी, ईश्वरविहीन जीवनशैली से किसी को बचाने के लिए निकाली गई थी! विशेष विषय: स्वधर्मत्याग देखें

3. क्या पाप का फल मृत्यु शारीरिक मृत्यु को या अनन्त मृत्यु को दर्शाता है? इस संदर्भ में यूहन्ना के *zōē* के प्रयोग का अर्थ है कि इसका विपरीत अनन्त मृत्यु को दर्शाता है। क्या यह संभव है कि परमेश्वर पाप करनेवाले बच्चों को घर ले जाए (शारीरिक मृत्यु)? इस संदर्भ का निहितार्थ यह है कि (1) साथी विश्वासियों की प्रार्थना और (2) अपराधी का व्यक्तिगत पश्चाताप मिलकर विश्वासियों को बहाल करता है, लेकिन अगर वे एक ऐसी जीवनशैली को जारी रखते हैं जो विश्वास करने वाले समुदाय पर कलंक लगाती है, तो परिणाम इस जीवन से एक "असामयिक" या शीघ्र शारीरिक प्रस्थान हो सकता है (तुलना *When Critics Ask* by Norman Geiler and Thomas Howe, p. 541)

▣ **"परमेश्वर उसके कारण उन्हें जीवन देगा"** यहाँ धार्मिक और शाब्दिक समस्या "जीवन" (*zoē*) शब्द का अर्थ है। यूहन्ना के लेखन में सामान्यत: यह अनन्त जीवन को संदर्भित करती है, लेकिन इस संदर्भ में इसका अर्थ स्वास्थ्य की बहाली या क्षमा है (यानी, याकूब 5:13-15 में याकूब के "चंगा" के प्रयोग की तरह)। जिस व्यक्ति के लिए प्रार्थना की जाती है, उसे "एक भाई" कहा जाता है, जिसका दृढ़तापूर्वक अर्थ है एक विश्वासी (यूहन्ना द्वारा अपने पाठकों के लिए शब्द का स्वयं का प्रयोग)।

5:17 सब पाप गंभीर है, लेकिन सब पाप को पश्चाताप (प्रारंभिक, तुलना मरकुस 1:15, 20:21; निरंतर; तुलना 1 यूहन्ना 1:9) और अविश्वास के पाप को छोड़कर मसीह में विश्वास के माध्यम से क्षमा किया जा सकता है !

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 5:18-20

[18]हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता; परन्तु वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता। [19]हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। [20]हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ चुका है, और उसने हमें समझ दी है, कि हम उसे जो सत्य है जान सकें; और हम उसमें हैं जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चा परमेश्वर, और अनन्त जीवन है।

5:18 "हम जानते हैं" 1 यूहन्ना 5:13 में दूसरे अनुच्छेद में टिप्पणियाँ देखें।

▣ **"जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता"** यह एक पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत है। यह 1 यूहन्ना 3:6 और 9 का स्पष्ट दावा है। अनन्त जीवन में देखने योग्य विशेषताएं हैं। विधिमुक्तिवादी झूठे शिक्षकों की जीवनशैली उनके कभी न सुधर सकने योग्य हृदयों को प्रकट करती है (तुलना मत्ती 7)!

यूहन्ना दो अलग-अलग तरह के झूठे शिक्षकों को संबोधित कर रहा था। एक जिसने पाप में शामिल होने से इन्कार किया (तुलना 1 यूहन्ना 1:8-2:1) और दूसरा समूह जिसने पाप को अप्रासंगिक बना दिया था (तुलना 1 यूहन्ना 3:4-10 और यहाँ)। पाप को आरम्भ में स्वीकार किया जाना चाहिए और अस्तित्व में आने से बचाना चाहिए। पाप एक समस्या है, एक समस्या,

और लगातार एक समस्या है (तुलना 1 यूहन्ना 5:21)।

Bruce Metzger, *A Textual Commentary of the Greek New Testament* (p. 718) में कहा गया है कि पांडुलिपि भिन्नता इस बात पर आधारित है कि प्रतिलिपि लेखक ने "परमेश्वर से उत्पन्न हुआ" वाक्यांश को क्या सोचा कि वह संदर्भित करता है

1. यीशु - तो *auton* सबसे उचित बैठता है (A*, B*)
2. विश्वासी - तो *eauton* सबसे उचित बैठता है (א, A^c)

UBS[4] #1 को "B" दर्ज़ा (लगभग निश्चित) देता है।

▣ **"लेकिन वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसकी रक्षा करता है"** पहली क्रिया एक अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य कृदंत है, जो एक बाहरी माध्यम (अर्थात, आत्मा तुलना रोमियों 8:11) द्वारा पूरा किया गया परिपूर्ण कार्य। यह देह-धारण को संदर्भित करता है।

दूसरी क्रिया "उसकी" (*auton*) के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यह अक्षरशः है, "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, वह उसकी रक्षा करना जारी रखता है।" यह मसीह के द्वारा विश्वासी को निरंतर बनाए रखने को दर्शाता है। यह अनुवाद प्राचीन यूनानी बृहदक्षर पांडुलिपियों A* और B* का अनुसरण करता है। यह व्याख्या अंग्रेजी अनुवादों NASB, RSV, और NIV में पाई गई है।

पांडुलिपियों में א और A^c का एक और सर्वनाम है, "खुद की रक्षा करता है" (*eauton*) जिसका अर्थ है कि जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है उसे खुद की रक्षा करने की जिम्मेदारी है। यहाँ क्रिया "उत्पन्न हुआ" के लिए प्रयुक्त क्रिया का यीशु के लिए और कहीं भी प्रयोग नहीं किया गया है। 1 यूहन्ना 3:3 और 5:21 में विश्वासियों के लिए निजवाचक अवधारणा का प्रयोग किया गया है। अंग्रेजी अनुवादों KJV और ASV द्वारा इसका अनुसरण किया गया है।

NASB	**"और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता"**
NKJV	**"वह दुष्ट उसे नहीं छूता"**
NRSV	**"वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता"**
TEV	**"वह दुष्ट उन्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकता"**
NJB	**"उस दुष्ट का उन पर कोई वश नहीं"**

यह वर्तमान मध्यम निर्देशात्मक है जिसका अर्थ है कि दुष्ट "उसे पकड़ कर रखना" जारी नहीं रख सकता। यूहन्ना के लेखन में इस शब्द का एकमात्र दूसरा प्रयोग उसके सुसमाचार, 20:17 में है। बाइबल और अनुभव से स्पष्ट है कि मसीहियों को लुभाया जाता है। इस वाक्यांश के अर्थ के बारे में तीन प्रमुख सिद्धांत रहे हैं।

1. विश्वासी व्यवस्था के उल्लंघन के आधार पर दुष्ट के द्वारा दोषी ठहराए जाने से मुक्त हैं (धर्मी ठहराया जाना)
2. यीशु हमारे लिए प्रार्थना करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:1; लूका 22:32-33)
3. शैतान हम से लड़कर हमारा उद्धार नहीं छीन सकता; (तुलना रोमियों 8:31-39), हालाँकि वह हमारे जीवन में परमेश्वर की गवाही को विफल कर सकता है और संभवतः, 1 यूहन्ना 5:16-17 के आधार पर, इस संसार से एक विश्वासी को जल्दी निकाल ले सकता है!

5:19 "हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं" यह निश्चित विश्वास आश्वासन है, मसीह यीशु में एक विश्वासी का विश्वदृष्टिकोण (तुलना 1 यूहन्ना 4:6)। और बाकी सब कुछ इस अद्भुत सत्य पर आधारित है (तुलना 1 यूहन्ना 5:13)। 1 यूहन्ना 5:13 पर टिप्पणी देखें।

▣ **"सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है"** यह एक वर्तमान मध्यम (प्रतिपादक) निर्देशात्मक है (तुलना यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11; 2 कुरिन्थियों 4:4; इफिसियों 2:2; 6:12)। यह इनसे सम्भव हुआ (1) आदम के पाप से; (2) शैतान का विद्रोह; और (3) पाप करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत पसंद।

5:20 "हम जानते हैं" 1 यूहन्ना 5:13 के दूसरे अनुच्छेद पर सम्पूर्ण टिप्पणी देखें।

▣ **"परमेश्वर का पुत्र आ चुका है"** यह वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक दिव्य पुत्र के देह-धारण की पुष्टि करता है। मानव देह के साथ देवता ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों के लिए एक बड़ी समस्या थी, जिन्होंने तत्व की दुष्टता पर जोर दिया।

▣ **"हमें समझ दी है"** यह एक और पूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है। यीशु, न कि ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों, ने देवता में आवश्यक अंतर्दृष्टि प्रदान की है। यीशु ने अपने जीवन, उसकी शिक्षाओं, उसके कार्यों, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के माध्यम से पिता को पूर्ण रूप से प्रकट किया है! वह परमेश्वर का जीवित वचन है; कोई भी उसके बिना पिता के पास नहीं पहुँच सकता (तुलना यूहन्ना 14:6; 1 यूहन्ना 5:10-12)।

▣ **"हम उसमें हैं जो सत्य है; अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन है"** यह पहला वाक्यांश "उसमें हैं जो सत्य है" परमेश्वर पिता को संदर्भित करता है (1 यूहन्ना 6:55 और यूहन्ना 17:3 पर विशेष विषय देखें), लेकिन दूसरे वाक्यांश में संदर्भित, "सच्चा परमेश्वर," की पहचान करना कठिन है। संदर्भ में यह पिता को संदर्भित करता हुआ प्रतीत होता है, लेकिन धर्मशास्त्रीय रूप से यह पुत्र का उल्लेख हो सकता है। व्याकरणिक अस्पष्टता उद्देश्यपूर्ण हो सकती है, जैसा कि यूहन्ना के लेखन में ऐसा अक्सर होता है, क्योंकि किसी को पिता में होने के लिए पुत्र में होना आवश्यक है (तुलना 1 यूहन्ना 5:12)। पिता और पुत्र दोनों का देवत्व और सत्यता (सत्य), एक अभिप्राय सहित धर्मशास्त्रीय जोर हो सकता है (तुलना यूहन्ना 3:33; 7:28; 8:26)। नया नियम नासरत के यीशु के पूर्ण देवत्व का दावा करता है (तुलना यूहन्ना 1:1,18; 20:78; फिलिप्पियों 2:6; तीतुस 2:13; और इब्रानियों 1:8)। हालाँकि, ज्ञानवादी शिक्षकों ने भी यीशु के देवत्व की पुष्टि की होगी (कम से कम दिव्य आत्मा अंदर वास करने के द्वारा)।

NASB (अद्यतन) पाठ: 1 यूहन्ना 5:21
[21]**बच्चों, अपने आप को मूर्तियों से बचाए रखो।**

5:21

NASB	**"अपने आप को मूर्तियों से बचाए रखो"**
NKJV, NRSV	**"अपने आप को मूर्तियों से दूर रखो"**
TEV	**"अपने आप को झूठे ईश्वरों से सुरक्षित रखो!"**
NJB	**"झूठे ईश्वरों से बचे रहो"**

यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य आज्ञार्थक, एक सशक्त सामान्य सत्य है। यह पवित्रिकरण में मसीहियों की सक्रिय भागीदारी (तुलना 1 यूहन्ना 3:3), जिसका वे पहले से ही यीशु मसीह में आनंद ले रहे हैं, को संदर्भित करता है (तुलना इफिसियों 1:4; 1 पतरस 1:5)।

शब्द मूर्तियों (जो यूहन्ना के लेखन में केवल दो बार यहाँ और प्रकाशितवाक्य 9:20 में एक पुराने नियम के उद्धरण में प्रयोग किया गया है), या तो झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं और जीवन शैली से संबंधित है, या क्योंकि मृत सागर चीरक इस शब्द का प्रयोग "पाप" के अर्थ में करते हैं, शब्द "मूर्ति" और "पाप" पर्यायवाची हो सकते हैं।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. ऐसी तीन प्रमुख जाँचों की सूची बनाएँ जो विश्वासियों को आश्वस्त करती हैं कि वे मसीह में हैं।
2. 1 यूहन्ना 5:6 और 8 में "जल" और "लहू" शब्द किसे संदर्भित करते हैं?
3. हम कैसे जान सकते हैं कि हम मसीही हैं? क्या कुछ मसीही हैं जो नहीं जानते हैं?
4. वह कौन सा पाप है जो मृत्यु की ओर ले जाता है? क्या एक विश्वासी से यह हो सकता है?
5. क्या यह परमेश्वर की सुरक्षित रखने की सामर्थ्य है या हमारे स्वयं के प्रयास जो हमें प्रलोभन से मुक्ति दिलाते हैं?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

2 यूहन्ना

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग*

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
अभिवादन	चुनी हुई महिला को शुभकामना		प्रस्तावना	शुभकामना
vv. 1-3	vv. 1-3	vv. 1-2	vv. 1-3	vv. 1-3
		v. 3		
सत्य और प्रेम	मसीह की आज्ञाओं के अनुसार चलें		सत्य और प्रेम	प्रेम की व्यवस्था
vv. 4-11	vv. 4-6	vv. 4-6	vv. 4-6	vv. 4-5
				v. 6
	मसीह-विरोधी और भरमाने वालों से सावधान रहें			मसीह के दुश्मन
	vv. 7-11	vv. 7-11	vv. 7-8	vv. 7-11
			vv. 9-11	
अंतिम अभिवादन	यूहन्ना की विदाई की शुभकामनाएँ		अंतिम शब्द	
vv.12-13	vv.12-13	v. 12	v. 12	v. 12
		v. 13	v. 13	v. 13

* हालांकि वे प्रेरित नहीं हैं, अनुच्छेद विभाग मूल लेखक के अभिप्राय को समझने और अनुसरण करने की कुंजी है। प्रत्येक आधुनिक अनुवाद ने अनुच्छेद को विभाजित और सारांशित किया है। हर अनुच्छेद में एक केंद्रीय विषय, सत्य या विचार होता है। प्रत्येक संस्करण उस विषय को अपने विशिष्ट तरीके से समाहित करता है। जब आप पाठ को पढ़ते हैं, अपने आप से पूछें कि कौन सा अनुवाद आपकी विषय और पद विभाजन की समझ के लिए उपयुक्त है।
हर अध्याय में हमें पहले बाइबल पढ़ना चाहिए और उसके विषयों (अनुच्छेदों) को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए, फिर आधुनिक संस्करणों के साथ अपनी समझ की तुलना करनी चाहिए। केवल जब हम मूल लेखक के अभिप्राय को उसके तर्क और प्रस्तुति को समझकर समझते हैं, तब हम सही मायने में बाइबल को समझ सकते हैं। केवल मूल लेखक ही प्रेरित है-पाठकों को संदेश को बदलने या संशोधित करने का कोई अधिकार नहीं है। बाइबल के पाठकों पर अपने दिन और अपने जीवन के लिए प्रेरित सत्य को लागू करने की ज़िम्मेदारी है।
ध्यान दें कि सारे तकनीकी शब्दों और संक्षिप्तीकरणों को निम्नलिखित आलेखों में स्पष्ट रूप से समझाया गया है: यूनानी व्याकरणिक संरचना की संक्षिप्त परिभाषा, पाठ संबंधी आलोचना और शब्दावली।

संक्षिप्त प्रस्तावना

2 यूहन्ना 1 यूहन्ना के संदेश और साहित्यिक शैली से स्पष्ट रूप से संबंधित है। ये संभवत: एक लेखक द्वारा लगभग एक ही समय में लिखे गए हैं। यह पहली सदी के व्यक्तिगत पत्रों की खासियत है कि यह एक व्यवस्थित रूप में लिखा जाता था और एक पपीरस पत्र पर ठीक बैठता था।

1 यूहन्ना कई कलीसियाओं को लिखा गया था (और एक अर्थ में, सभी कलीसियाओं), 2 यूहन्ना एक स्थानीय कलीसिया और उसके अगुवे को संबोधित किया गया है (हालाँकि, नये नियम के अधिकांश व्यक्तिगत पत्रों के समान इसे पूरी कलीसिया के लिए पढ़ा गया)। यह एशिया माइनर (तुर्की) में पहली शताब्दी की कलीसिया के जीवन की एक अदभुत छोटी सी खिड़की है।

वाचन चक्र एक

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की स्वयं की व्याख्या के लिए ज़िम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को अपने प्रकाश में चलना चाहिए। आप, बाइबल, और पवित्र आत्मा व्याख्या में प्राथमिकता है। आपको इसे एक टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक बैठक में पढ़ें। संपूर्ण पुस्तक की केंद्रीय विषय वस्तु अपने स्वयं के शब्दों में बताएं।

1. पूरी किताब की विषय वस्तु
2. साहित्य का प्रकार (शैली)

वाचन चक्र दो

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की स्वयं की व्याख्या के लिए ज़िम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को अपने प्रकाश में चलना चाहिए। आप, बाइबल, और पवित्र आत्मा व्याख्या में प्राथमिकता है। आपको इसे एक टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को दूसरी बार एक बैठक में पढ़ें। मुख्य विषयों की रूपरेखा बनाएं और एक वाक्य में इस विषय को व्यक्त करें।

1. पहली साहित्यिक इकाई का विषय
2. दूसरी साहित्यिक इकाई का विषय
3. तीसरी साहित्यिक इकाई का विषय
4. चौथी साहित्यिक इकाई का विषय
5. आदि।

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 1-3
1मुझ प्राचीन की ओर से, उस चुनी हुई महिला तथा उसके बच्चों के नाम जिनसे मैं सत्य में प्रेम रखता हूँ; और न केवल मैं, वरन वे सब भी जो सत्य को जानते हैं, 2अर्थात उस सत्य के कारण जो हम में बना रहता है, और सर्वदा हमारे साथ रहेगा: 3अनुग्रह, दया और शांति परमेश्वर पिता और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से हमारे साथ सत्य और प्रेम में बने रहेंगे।

पद 1 "प्राचीन" यह शीर्षक (*presbuteros*) 2 और 3 यूहन्ना के लेखक की पहचान करने के लिए प्रयोग किया जाता है। बाइबल में इसके कई तरह के अर्थ हैं।

जोहानिन लेखन विभिन्न तरीकों से लेखकीय पदनामों का प्रदर्शन करता है।

1. सुसमाचार एक गुप्त वाक्यांश "प्रिय शिष्य" का प्रयोग करता है
2. पहला पत्र अनाम है
3. दूसरे और तीसरे पत्र का शीर्षक "प्राचीन" है
4. प्रकाशितवाक्य, जो भविष्य सूचक लेखन के लिए इतना अस्वाभाविक है, लेखक को "अपने दास यूहन्ना" के रूप में सूचीबद्ध करता है

इन लेखनों के लेखकत्व के बारे में टिप्पणीकारों और विद्वानों के बीच बहुत चर्चा हुई है उन सभी में कई भाषाई और शैलीगत समानताएँ और भिन्नताएँ हो सकती हैं। इस स्थान पर ऐसा कोई स्पष्टीकरण नहीं है जो सभी बाइबल शिक्षकों द्वारा स्वीकार किया किया गया हो। मैं इन सब पर प्रेरित यूहन्ना के लेखकत्व की पुष्टि करता हूँ, लेकिन यह एक व्याख्या-संबंधी मुद्दा है और एक प्रेरणादायक मुद्दा नहीं है। वास्तव में बाइबल का परम लेखक परमेश्वर की आत्मा है। यह एक विश्वसनीय प्रकटीकरण है, लेकिन आधुनिक लोग अभी इसके लेखन या संकलन की साहित्यिक प्रक्रिया को नहीं जानते या समझते हैं।

विशेष विषय: प्राचीन (SPECIAL TOPIC: ELDER)

I. पुराने नियम में प्रयोग
   A. परमेश्वर के उन स्वर्गदूतों के लिए प्रयुक्त, जिनसे स्वर्गदूतों की महासभा बनी (BDB 278, KB 278, तुलना यशायाह 24:23)। इसी शब्दावली का प्रयोग प्रकाशितवाक्य के दिव्य प्राणियों के लिए किया गया है (तुलना प्रकाशितवाक्य 4:4, 10; 5:5,6,8,11,14; 7:11,13; 11:16; 14:3; 19:4)।
   B. पुराने नियम में जनजातीय अगुवों के लिए प्रयुक्त (तुलना निर्गमन 3:16; गिनती 11:16)। बाद में नये नियम में इस शब्द को यरूशलेम के अगुवों के एक समूह के लिए प्रयोग किया गया है, जिन्होंने यहूदियों के उच्च न्यायालय, महासभा की रचना की (तुलना मत्ती 21:23; 26:57)। यीशु के दिन में यह सत्तर सदस्यीय मण्डल एक भ्रष्ट याजकपद द्वारा नियंत्रित किया जाता था (यानी, हारून के वंश का नहीं बल्कि रोमी अधिपतियों से खरीदा गया)।

II. नये नियम में प्रयोग
   A. एक नये नियम की कलीसिया के स्थानीय अगुवों के लिए प्रयुक्त। यह तीन पर्यायवाची शब्दों में से एक था (पादरी, अध्यक्ष और प्राचीन, तुलना तीतुस 1:5,7; प्रेरितों के काम 20:17,28)। पतरस और यूहन्ना इसका प्रयोग खुद को नेतृत्व समूह में शामिल करने के लिए करते हैं (तुलना 1 पतरस 5:1; 2 यूहन्ना 1; 3 यूहन्ना 1)।
   B. 1 पतरस 1:1 और 5 में शब्द प्राचीन (*presbuteros*) पर एक क्रीड़ा है। यह शब्द स्पष्ट रूप से नेतृत्व के शीर्षक (तुलना पद 1) और आयु के निर्देश (तुलना पद 5) के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस शब्द का प्रयोग यह देखते हुए आश्चर्यजनक है कि यह मूल रूप से नेतृत्व का यहूदी जनजातीय पदनाम है, जबकि "बिशप" या "अध्यक्ष" (*epicopos*) नेतृत्व के लिए यूनानी नगर-राज्य पदनाम था। 1 पतरस अन्यजाति विश्वासियों को संबोधित करने के लिए यहूदी शब्दों का प्रयोग करता है।

      पतरस स्वयं को "सह-प्राचीन" कहता है, *presbuteros* शब्द के साथ पूर्वसर्ग *syn* है, जिसका अर्थ है "के साथ संयुक्त भागीदारी" पतरस अपने प्रेरितीय अधिकार (तुलना 2 यूहन्ना 1, जहाँ एक और प्रेरित खुद को "प्राचीन" कहता है) का दावा नहीं करता है, लेकिन स्थानीय अगुवों को (यानी, "मैं प्रोत्साहित करता हूँ," एक वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक) निम्नलिखित के प्रकाश में कार्य करने और जीवनयापन करने की गम्भीरता से सलाह देता है

      1. मसीह के उदाहरण
      2. उसकी वापसी की निकटता

      आरंभिक कलीसियाओं में नेतृत्व के पदों को कोई वेतन नहीं दिया जाता था, लेकिन प्रत्येक स्थानीय कलीसिया के भीतर सेवकाई और नेतृत्व के ईश्वर प्रदत्त वरदानों को मान्यता दी जाती थी। वरदान प्राप्त होने की इस पुष्टि को विशेष रूप से यहूदी विश्वासी समुदाय के बीच "वृद्ध-ज्ञान" के प्रति सांस्कृतिक श्रद्धा के साथ संतुलित बनाना पड़ता था। इसलिए, पतरस दोनों प्रकार के नेतृत्व को संबोधित करता है।

      यह भी ध्यान दें कि "प्राचीन" बहुवचन है। यह (1) कई घर कलीसिया के अगुवों (तुलना प्रेरितों के काम 20:17) या (2) अगुवों के एक मण्डल के बीच अलग-अलग आत्मिक वरदान (तुलना इफिसियों 4:11) का उल्लेख कर सकता है, जो स्पष्ट रूप से बताता है कि सेवकाई सभी विश्वासियों के लिए है। यह "याजकों के समाज" की अवधारणा के समानांतर है (तुलना 1 पतरस 2:5,9)।
   C. कलीसिया में बूढ़े पुरुषों के लिए प्रयोग किया गया, जरूरी नहीं कि नेतृत्व के लिए (तुलना 1 तीमुथियुस 5:1; तीतुस 2:2)।

▣ **"चुनी हुई महिला तथा उसके बच्चे"** इस शीर्षक के बारे में बहुत चर्चा हुई है। कई लोगों ने यह दावा करने की कोशिश की है कि यह या तो एक *Electa*, यूनानी शब्द निर्वाचित या चुना गया से (क्लेमेंट ऑफ अलेक्जेंड्रिया) या *Kyria*, यूनानी शब्द महिला (Athanasius) से, नाम की एक महिला को लिखा गया था। हालाँकि, मैं जेरोम से सहमत हूँ कि यह निम्न कारणों से एक कलीसिया को संदर्भित करता है।

1. कलीसिया के लिए यूनानी शब्द स्त्रीलिंग है (2 यूहन्ना 1:1)
2. LXX में "चुना हुआ" लोगों के एक समुदाय को संदर्भित करता है (तुलना 1 पतरस 2:9)
3. यह कलीसिया का मसीह की दुल्हन के रूप में संदर्भ हो सकता है। (तुलना. इफिसियों 5:25-32; प्रकाशितवाक्य 19: 7-8; 21:2)
4. इस कलीसिया के सदस्यों को बच्चों के रूप में संदर्भित किया गया हैं (तुलना 2 यूहन्ना 1:13)
5. इस कलीसिया की एक सहयोगी है जो दूसरी स्थानीय कलीसिया को संदर्भित करती प्रतीत होती है। (तुलना 2 यूहन्ना 1:13)
6. पूरे अध्याय में एकवचन और बहुवचन के बीच एक क्रीड़ा है (2 यूहन्ना 1:4,5,13 में एकवचन; 2 यूहन्ना 1:6, 8,10,12)
7. इस शब्द का प्रयोग 1 पतरस 5:13 में एक कलीसिया के लिए इसी तरह किया गया है।

▣ **"जिनसे"** यह आश्चर्य की बात है कि यह एक पुल्लिंग बहुवचन सर्वनाम है क्योंकि यह या तो "महिला", जो कि स्त्रीलिंग है, या "बच्चे" जो नपुंसक है, से जुड़ने के लिए है। मुझे लगता है कि यह प्रतीकात्मक के रूप में वाक्यांश को चिह्नित करने का यूहन्ना का तरीका था।

▣ **"प्रेम रखता हूँ"** यूहन्ना सुसमाचार और प्रकाशितवाक्य में *agapaō* के साथ पर्यायवाची रूप में *phileō* का प्रयोग करता है, लेकिन 1, 2, और 3 यूहन्ना में वह केवल *agapaō* (तुलना 2 यूहन्ना 1:3,5,6; 1 यूहन्ना 3:18) का प्रयोग करता है।

▣ **"सत्य"** सत्य अक्सर दोहराया जाने वाला विषय है (तुलना 2 यूहन्ना 1:1 [दो बार],2,3,4)। 2 यूहन्ना 1:9 [दो बार] और 10 में "यह शिक्षा" वाक्यांश "सत्य" का पर्याय है। यह शब्द पर संभवतः स्थानीय कुपन्थ के कारण जोर दिया गया है जो कि इस छोटे पत्र में स्पष्ट है (तुलना 2 यूहन्ना 1:4,7-10) जैसा कि 1 यूहन्ना में है।

"सत्य" तीन बातों में से एक का उल्लेख हो सकता है: (1) यूहन्ना में पवित्र आत्मा (तुलना यूहन्ना 14:17); (2) यीशु मसीह स्वयं (तुलना यूहन्ना 8:32; 14:6); और (3) सुसमाचार की विषयवस्तु (तुलना 1 यूहन्ना 3:23)। यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर विशेष विषय देखें।

पद 2 "जो हम में बना रहता है" यह विश्वासियों का वर्णन करने के लिए यूहन्ना के पसंदीदा शब्दों में से एक "बने रहो" का एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है, यूहन्ना 2:10 पर विशेष विषय देखें। यह पवित्र आत्मा के हम में वास करने (तुलना रोमियों 8:9; या पुत्र, रोमियों 8:9-10) को संदर्भित करता है। त्रिएकत्व के सारे व्यक्ति भी विश्वासियों में/के साथ/द्वारा (तुलना यूहन्ना 14:23) बने रहते हैं।

▣ **"सर्वदा हमारे साथ रहेगा"** सत्य सभी विश्वासियों में और उनके साथ हमेशा बना रहता है। आश्वासन का कितना शक्तिशाली कथन! 1 यूहन्ना 5:13 पर विशेष विषय देखें। सत्य, सुसमाचार का व्यक्ति और सुसमाचार का संदेश दोनों है। यह "सत्य" हमेशा प्रेम, परमेश्वर के लिए प्रेम, संगी वाचा भाइयों/बहनों के लिए प्रेम और खोए हुए संसार के लिए प्रेम लाता है (तुलना 1 यूहन्ना 4:7-21) ।

"सर्वदा" अक्षरशः है "अनन्त काल" (तुलना यूहन्ना 4:14; 6:51,58; 8; 35,51; 10:28; 11:26; 12:34; 13: 8; 14:16; 1 यूहन्ना 2:17)। विशेष विषय: सर्वदा यूहन्ना 6:58 पर देखें।

पद 3 "अनुग्रह, दया और शांति" यह दो अपवादों के साथ पहली सदी के एक यूनानी पत्र का एक विशिष्ट प्रस्तावना है। सबसे पहले, इसे विशिष्ट रूप से मसीही बनाने के लिए थोड़ा बदल दिया गया है। "शुभकामना" के लिए यूनानी शब्द *chairein* है। इसे *charis* में बदल दिया गया है, जिसका अर्थ है "अनुग्रह।" यह प्रस्तावना पादरी संबंधी पत्र, 1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2 के समान है; वहाँ के दो शब्दों को गलातियों और 1 थिस्सलुनीकियों के पौलुस की प्रस्तावना में दोहराया गया है

दूसरा, सामान्य व्याकरणिक संरचना एक प्रार्थना है या स्वास्थ्य की कामना है। हालाँकि, 2 यूहन्ना सत्य का एक कथन, एक वांछित दिव्य परिणाम के साथ परमेश्वर के साथ खड़े होने की प्रतिज्ञा है।

यह विचार करने योग्य है कि क्या धर्मशास्त्रीय रूप से इन शब्दों के बीच एक साभिप्राय अनुक्रम या संबंध है। अनुग्रह और

दया परमेश्वर के चरित्र को दर्शाते हैं जो पतित मानवजाति के लिए मसीह के माध्यम से एक मुफ्त उद्धार लाता है। शांति परमेश्वर के वरदान के प्राप्तकर्ता को दर्शाता है। विश्वासी एक पूर्ण परिवर्तन का अनुभव करते हैं। जिस प्रकार पतन ने मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित किया है, उसी प्रकार, उद्धार पुनः स्थापित करता है, पहले स्थिति (विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना) के माध्यम से, फिर अन्दर वास करने वाली आत्मा द्वारा सक्षम विश्वदृष्टिकोण में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के द्वारा, जिसका परिणाम एक प्रगतिशील मसीह के समान होना (प्रगतिशील पवित्रीकरण) होता है। मानवजाति में परमेश्वर का स्वरूप(तुलना उत्पत्ति 1:26-27) पुनः स्थापित होता है!

दूसरी संभावना झूठे शिक्षकों के प्रकाश में इन तीन शब्दों की आवश्यकता से संबंधित है। उन्होंने "अनुग्रह" और "दया" पर सवाल उठाया और "शांति" के अतिरिक्त सब कुछ लाए। यह भी ध्यान देने की बात है कि यूहन्ना के लेखन में यह "दया" (*eleeōi*) का एकमात्र प्रयोग है। "अनुग्रह" (*charis*) का प्रयोग केवल यहीं पर, 2 यूहन्ना 1:14,16,17 में सुसमाचार में, और प्रकाशितवाक्य (तुलना 1:4; 22:21) किया गया है।

जेरोम बाइबल की टिप्पणी में इस तथ्य का उल्लेख है कि इन तीन शब्दों का पुराने नियम की वाचा से संबंध है (पृष्ठ 412)। नये नियम के लेखक (लूका को छोड़कर) बोलचाल की यूनानी में लिखने वाले इब्रानी विचारक थे। नये नियम की शब्दावली के अधिकांश भाग का मूल सेप्टुआजिंट है।

▣ **"परमेश्वर पिता और. . .यीशु मसीह की ओर से"** दोनों ही संज्ञाओं में पूर्वसर्ग (*para*) है जो व्याकरणिक रूप से उन्हें समान पायदान पर रखता है। यह यीशु मसीह के पूर्ण देवत्व का दावा करने का एक व्याकरणिक तरीका था।

▣ **"पिता के पुत्र"** 1 यूहन्ना में एक निरंतर जोर यह है कि कोई भी पुत्र को पाए बिना पिता को नहीं पा सकता (तुलना 1 यूहन्ना 2:23; 4:15; 5:10)। झूठे शिक्षकों ने परमेश्वर के साथ एक अनोखे और विशेष संबंध का दावा किया, लेकिन धर्मशास्त्रीय रूप से पुत्र के व्यक्तित्व और कार्य का अवमूल्यन किया। यूहन्ना बार-बार दोहराता है कि यीशु है (1) पिता का पूर्ण प्रकटीकरण और (2) पिता तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग (तुलना यूहन्ना 14:6)।

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 4-6
4मुझे तेरे कुछ बालकों को देखकर बड़ा आनन्द हुआ है कि वे उस आज्ञा के अनुसार जो पिता से हमें प्राप्त हुई है, सत्य पर चलते हैं। 5अब हे महिला, मैं तुझ से निवेदन करते हुए कोई नई आज्ञा के रूप में नहीं लिखता, परन्तु वही जो आरम्भ से हमें मिली है, कि हम परस्पर प्रेम करें। 6प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें। यह वही आज्ञा है जिसे तुमने आरम्भ से सुना है, जिस पर तुम्हें चलना चाहिए।

पद 4 "मुझे बड़ा आनन्द हुआ है" यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्मवाच्य (प्रतिपादक) निर्देशात्मक है। संभवतः प्राचीन ने अपने कुछ यात्रा करनेवाले सदस्यों से इस कलीसिया के बारे में सुना।

▣ **"कि वे सत्य पर चलते हैं"** यह या तो संदर्भित करता है,
1. कलीसिया में कुछ लोगों के ईश्वरीय, प्रेममय जीवन को (तुलना 2 यूहन्ना 1:3-4)
2. मण्डली में कुपंथियों, जिन्होंने कुछ लोगों को भटका दिया, की उपस्थिति को स्वीकार करने का एक तरीका

▣ **"उस आज्ञा के अनुसार जो पिता से हमें प्राप्त हुई है"** यह एक अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो एक दूसरे को प्रेम करने की आज्ञा देने का उल्लेख करता है, जैसा कि यीशु ने उनसे प्रेम किया (तुलना यूहन्ना 13:34-35; 15:12; 1 यूहन्ना 3:11; 4:7,11-12,21)।

पद 5 "वही जो आरम्भ से हमें मिली है" यह एक अपूर्ण कर्तृवाच्य निर्देशात्मक है जो यीशु के शिक्षण की शुरुआत को संदर्भित करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:7,24; 3:11)। आज्ञा की विषयवस्तु की " एक दूसरे के लिए प्रेम" (तुलना 2 यूहन्ना 1:5) और "यीशु मसीह के देह-धारण करके आने को स्वीकारना" (तुलना 2 यूहन्ना 1:7) के रूप में पुन: पुष्टि की गई है। ध्यान दें कि यह विषयवस्तु, व्यक्तिगत और जीवन शैली है।

▣ **"कि हम परस्पर प्रेम करें"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य संशयार्थ-सूचक है (जैसा कि इस पद में अंतिम क्रिया है, चलें)। यह कुपंथियों की विशेषता थी कि वे एकान्तवादी और प्रेमरहित हों। यह यूहन्ना की तीन जाँचों में से पहली है कि कोई कैसे जान सकता है कि वह एक मसीही है। 1 यूहन्ना की पुस्तक में ये तीन जाँचें हैं: प्रेम, जीवनशैली और सिद्धांत। 2 यूहन्ना में इन तीन जाँचों को दोहराया गया है।

1. प्रेम (तुलना 2 यूहन्ना 1:5; 1 यूहन्ना 2:7-11; 3:11-18; 4:7-12,16-21; 5:1-2)
2. आज्ञाकारिता (तुलना 2 यूहन्ना 1:6; 1 यूहन्ना 2:3-6; 3:1-10; 5:2-3)
3. सिद्धांत संबंधी विषयवस्तु (तुलना 2 यूहन्ना 1:7; 1 यूहन्ना 1:1ff; 2:18-25; 4: 1-6,14-16; 5:1,5,10)

पद 6 "प्रेम यह है" प्रेम (*agapē*) एक चल रही (वर्तमान काल) क्रिया है, न कि केवल एक अनुभूति। प्रेम सारे सच्चे विश्वासियों का "चिन्ह" है (तुलना 1 कुरिन्थियों 13; गलातियों 5:22; 1 यूहन्ना 4:20-21)।

▣ **"आरम्भ से"** 1 यूहन्ना 1:1 पर टिप्पणी देखें। मुझे लगता है कि 1 यूहन्ना और 2 यूहन्ना में वाक्यांश का प्रयोग यीशु की सार्वजनिक सेवकाई की शुरुआत के संदर्भ के रूप में किया जाता है।

▣ **"जिस पर चलना चाहिए"** मसीहत एक प्रारंभिक प्रतिबद्धता और जीवन शैली का परिवर्तन है (तुलना 1 यूहन्ना 2:6)। हमारी जीवन शैली हमारा उद्धार नहीं करती है, लेकिन यह सत्यापित करती है कि हमारा उद्धार हुआ है (तुलना इफिसियों 2:8-9 और 2:10)।

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 7-11
[7]क्योंकि संसार में बहुत से भरमाने वाले निकल पड़े हैं जो यह नहीं मानते कि यीशु मसीह देह-धारण करके आया है। यही तो भरमाने वाला और मसीह-विरोधी है। [8]अपने प्रति सावधान रहो, ऐसा न हो कि जो कुछ हमने कमाया उसे गवाँ दो, वरन यह कि तुम पूरा प्रतिफल प्राप्त करो। [9]जो कोई बहुत दूर भटक जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं; जो उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता और पुत्र दोनों ही हैं। [10]यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे, तो न उसे अपने घर में आने दो और न नमस्कार करो; [11]क्योंकि जो ऐसे मनुष्य को नमस्कार करता है, वह उसके कुकर्मों में सहभागी होता है।

पद 7 "क्योंकि बहुत से भरमाने वाले" शब्द "भरमाने वाले" यूनानी शब्द *planē* से आता है, जिससे हमें अंग्रेजी शब्द "ग्रह" मिलता है। प्राचीन दुनिया में खगोलीय पिण्डों की गति का मानचित्रण और अध्ययन किया जाता था (*zodiak*)। तारे एक नियत आकृति में नियोजित होते हैं, लेकिन कुछ तारे (यानी, ग्रह) अनियमित रूप से गतिशील होते हैं। प्राचीनों ने उन्हें "भटकने वाले" कहा है। यह उन लोगों के लिए रूपक में विकसित हुआ जो सत्य से भटक जाते हैं।

ये झूठे शिक्षक केवल सचमुच गलत या गुमराह लोग नहीं हैं, जो कि सुसमाचार से अनभिज्ञ हैं। यूहन्ना के लेखन में फरीसी और झूठे शिक्षक दोनों उन्हें प्राप्त स्पष्ट ज्योति के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। यही कारण है कि उनके विद्रोह को "अक्षम्य पाप" या "जिस पाप का परिणाम मृत्यु" कहा जाता है (1 यूहन्ना 5:16 पर टिप्पणी देखें)। त्रासदी यह है कि उन्होंने दूसरों को विनाश के लिए उकसाया। नया नियम स्पष्ट रूप से बताता है कि झूठे शिक्षक प्रकट होंगे और बड़ी समस्याएँ पैदा करेंगे (तुलना मत्ती 7:15; 24:11,24; मरकुस 13:22; 1 यूहन्ना 2:26; 3:7; 4:1)।

▣ **"संसार में निकल पड़े हैं"** यहाँ का संसार मात्र हमारा भौतिक ग्रह है। इन झूठे शिक्षकों ने या तो मसीही कलीसिया को छोड़ दिया है (तुलना1 यूहन्ना 2:19) या वे मिशनरी कार्य कर रहे हैं (तुलना 1 यूहन्ना)।

▣ **"जो यह नहीं मानते"** यह शब्द *homologeō* है, जिसका तात्पर्य मसीह में विश्वास की सार्वजनिक घोषणा और पाप स्वीकारोक्ति है। विशेष विषय: स्वीकारोक्ति यूहन्ना 9:22-23 पर देखें ।

▣ **"यीशु मसीह देह-धारण करके आया है"** इन भरमाने वालों ने मसीह के व्यक्तित्व के बारे में अपनी झूठी शिक्षाओं को जारी रखा है। यह वचन 1 यूहन्ना 4:1-6 की "आत्माओं की परख" करने की चेतावनी को दोहराता है, विशेष रूप से क्योंकि वे यीशु की पूर्ण मानवता से संबंधित हैं (तुलना यूहन्ना 1:14; 1 तीमुथियुस 3:16)। ज्ञानवाद ने "आत्मा" (परमेश्वर) और "तत्व" (शरीर) के बीच एक अनन्त द्वैतवाद की पुष्टि की। उनके लिए, यीशु न पूर्ण रूप से परमेश्वर न पूर्ण रूप से मनुष्य हो सकता था

ऐसा लगता है कि प्रारंभिक ज्ञानवादी विचार के अन्तर्गत कम से कम दो धर्मशास्त्रीय वर्ग थे।

1. यीशु की मानवता से इनकार (डोसेटिक); वह मानवीय प्रतीत होता था, लेकिन एक आत्मा था
2. इस बात से इनकार कि क्रूस पर मसीह मर गया; इस समूह (सेरिंथियन) ने जोर देकर कहा कि "मसीह आत्मा" यीशु पर उसके बपतिस्मे पर आया था और उसके क्रूस पर मरने से पहले उसे छोड़ गया

यह संभव है कि वर्तमान काल, "देह-धारण करके आया है", यूहन्ना द्वारा सेरिंथियन ज्ञानवाद को अस्वीकार करने का तरीका है और 1 यूहन्ना 4:1-6, डोसेटिक ज्ञानवाद को अस्वीकार करने का उसका तरीका है।

▣ **"यही तो भरमाने वाला और मसीह-विरोधी है"** 1 यूहन्ना 2:18 में बहुवचन "अनेक मसीह-विरोधी" और एकवचन "मसीह-विरोधी" के बीच एक अंतर है। यूहन्ना के दिन में बहुवचन आया था और उन्होंने कलीसियाओं को छोड़ दिया था (तुलना 1 यूहन्ना 2:19), लेकिन एकवचन भविष्य में पेश किया गया है (2 थिस्सलुनीकियों 2 में "पाप-पुरुष" देखें)। हालाँकि, इस पद में, 1 यूहन्ना 2:18-25 में बहुवचन की तरह, एकवचन का प्रयोग किया गया है।

पद 8 "अपने प्रति सावधान रहो" यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। यह "देखो" (*blepō*) शब्द है, जिसका प्रयोग दुष्ट के खिलाफ चेतावनी के लिए रूपक के रूप में किया गया है (तुलना मत्ती 24:4; मरकुस 13:5; लूका 21:8; प्रेरितों के काम 13:40; 1 कुरिन्थियों 8:9; 10:12; गलातियों 5:12; इब्रानियों 12:25)। विश्वासी भ्रांति को परखने के लिए जिम्मेदार हैं क्योंकि

1. वे सुसमाचार को जानते हैं।
2. उनके पास आत्मा है।
3. उनके पास मसीह के साथ चल रही सहभागिता है

NASB **"ऐसा न हो कि जो कुछ हमने कमाया उसे गवाँ दो"**
NKJV **"ऐसा न हो कि जिन बातों के लिए हमने काम किया है हम उन्हें गवाँ दें"**
NRSV **"ताकि जिन बातों के लिए हमने काम किया है उसे तुम गवाँ न दो"**
TEV **"ताकि जिन बातों के लिए हमने काम किया है उसे तुम नहीं गवाँओगे"**
NJB **"या हमारा सारा काम व्यर्थ हो जाएगा"**

इस पद्य में पहले सर्वनाम से संबंधित एक यूनानी पांडुलिपि भिन्नता है: यह "तुम" (NASB, NRSV, TEV) या "हम" (NKJV) होना चाहिए? UBS[4] पाठ "तुम" का समर्थन करता है, जिसका अर्थ है कि संबोधित किए गए लोग प्रेरितीय गवाह द्वारा दिए गए सुसमाचार के लक्ष्यों को शायद पूरा नहीं कर पाएँगे।

▣ **"वरन यह कि तुम पूरा प्रतिफल प्राप्त करो"** यह एक अनिर्दिष्टकाल संशयार्थ-सूचक है जो उनके सुसमाचार को ग्रहण करने की ओर संकेत करता है। संशयार्थ-सूचक की आकस्मिकता उनके उद्धार से संबंधित नहीं है, लेकिन उनके माध्यम से सुसमाचार की परिपक्वता और विस्तार से (तुलना 1 कुरिन्थियों 9:27; 15:10,14,58; 2 कुरिन्थियों 6:1; गलातियों 2:2; फिलिप्पियों 2:16; 1 थिस्सलुनीकियों 2:1; 3:5)।

पद 9
NASB **"जो कोई बहुत दूर भटक जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता"**
NKJV **"जो कोई अपराध करता है और मसीह के सिद्धांत में बना नहीं रहता"**
NRSV **"प्रत्येक जो मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता"**
TEV **"जो कोई मसीह की शिक्षा में नहीं रहता, लेकिन उससे दूर चला जाता है"**
NJB **"यदि कोई मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, लेकिन उससे दूर चला जाता है"**

सबसे पहले, *pas* के नकारात्मक प्रयोग पर ध्यान दें। सुसमाचार का निमंत्रण "सब" के लिए है, लेकिन दुर्भाग्य से इसलिए भी कुपन्थ की संभावना भी है। दो वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत इस संभावित कुपन्थ की विशेषता बताते हैं: "दूर चला जाता है" और "बना नहीं रहता।" पहला " दूर चले जाना" झूठे शिक्षकों का एक नारा रहा होगा, जिसका अर्थ है कि उनके पास प्रत्यक्षदर्शी प्रेरितों से परे उन्नत सत्य था। विश्वासियों में रहनेवाला सत्य का वचन उनकी विशेषता बताता है (तुलना यूहन्ना 8:31; 15:7; 1 यूहन्ना 2:14, यूहन्ना 5:38 में; 1 यूहन्ना 1:10 में नकारात्मक)। यूहन्ना 8:31 पर धीरज और यूहन्ना 6:64 पर स्वधर्मत्याग विशेष विषय देखें।

"मसीह की" का संबंधकारक वाक्यांश संदर्भ हो सकता है

1. मसीह की शिक्षाओं का
2. मसीह के बारे में शिक्षाओं का
3. यूहन्ना के सामान्य दोहरे अर्थ

संबंधकारक कई और अस्पष्ट हैं! केवल संदर्भ ही आशयित अर्थों को निर्धारित कर सकता है लेकिन अक्सर, जैसा कि यहाँ, वे अधिव्यापन करते हैं।

▣ **"उसके पास परमेश्वर नहीं"** "मसीह की शिक्षा" और पद 2 का "सत्य" समानांतर है। झूठे शिक्षकों और उनके अनुयायियों के लिए कोई प्रतिफल नहीं है (तुलना पद 8)। वे आत्मिक रूप से खो गए हैं और परमेश्वर के साथ नहीं हैं क्योंकि पिता को प्राप्त करने के लिए पुत्र को प्राप्त करना चाहिए (तुलना 1 यूहन्ना 5:10-12)। परमेश्वर के साथ क्रिया "है" का प्रयोग (दो बार, वर्तमान कर्तृवाच्य निर्देशात्मक) केवल यहाँ और 1 यूहन्ना 2:23 में पाया जाता है।

पद 10 "यदि" यह एक प्रथम श्रेणी का प्रतिबंधात्मक वाक्य है जो लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सही माना जाता है। झूठे शिक्षक आएँगे!

▣ **"न उसे अपने घर में आने दो"** यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है जिसका तात्पर्य अक्सर प्रक्रिया में एक कार्य को रोकना होता है (संदर्भ से निर्धारित होना चाहिए)।

"घर" मसीही आतिथि-सत्कार का उल्लेख हो सकता है (तुलना मत्ती 25:35; रोमियों 12:13; 1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8; इब्रानियों 13:2; 1 पतरस 4:9 या 3 यूहन्ना 5-6), लेकिन संदर्भ में यह संभवत: एक यात्री सेवक को घर-कलीसिया में बोलने के लिए आमंत्रित करने को संदर्भित करता है (तुलना रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; फिलिप्पियों 2)

▣ **"और न नमस्कार करो"** यह नकारात्मक सामान्य प्रत्यय के साथ एक और वर्तमान कर्तृवाच्य आज्ञार्थक है। अपने आप को इन "तथाकथित मसीहियों" के तुल्य न बनाओ।सहभागिता के किसी भी प्रकार के संकेत को गलती से स्वीकृति समझा जा सकता है (तुलना 2 यूहन्ना 1:11)। यह कथन आज के लिए लागू करना बहुत कठिन है। इसलिए कई लोग मसीही होने का दावा करते हैं। फिर भी उनके साथ साझा करने के प्रयास में हमें सौहार्दपूर्ण और वार्तालाप में संलग्न होना चाहिए।फिर भी, मसीही अगुवों को कुपंथ के साथ किसी भी पहचान से सावधान रहना चाहिए। यह, निश्चित रूप से, मसीही संप्रदायों पर लागू नहीं होता है!

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 12-13

[12]मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और स्याही से लिखना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा है कि मैं तुम्हारे पास आकर आमने-सामने बातें करूँगा, जिस से कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। [13]तेरी चुनी हुई बहन के बच्चे तुझे नमस्कार कहते हैं।

पद 12 "मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं" यह 3 यूहन्ना 1:13-14 के उपसंहार के समान है।

▣ **"तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए"** यह उद्देश्य का एक पूर्ण कर्मवाच्य संशयार्थ-सूचक वर्णनात्मक है (एक उद्देश्य खंड आकस्मिकता दिखाता है)। यह यूहन्ना में एक सामान्य विषय था (तुलना यूहन्ना 3:29; 15:11; 16:24; 17:13; 1 यूहन्ना 1:4)। यह आनंद इन पर आधारित था

1. शिक्षक की उपस्थिति
2. सत्य का ज्ञान जो वह लाया

यूहन्ना ने 2 यूहन्ना 1:4 में प्रेम और आज्ञाकारिता में निरंतर चलने पर अपने "आनन्द" का उल्लेख किया था।

पद 13 यह वचन 2 यूहन्ना 1:1 की तरह, एक सहयोगी कलीसिया और उसके सदस्यों की बात करने के लिए रूपक भाषा का प्रयोग करता है।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. 1 यूहन्ना में पाई गई तीन जाँचों को सूचीबद्ध करें जो 2 यूहन्ना में दोहराई गई हैं।
    a.
    b.
    c.
2. क्या यह पत्र एक महिला को या एक कलीसिया को लिखा गया है?
3. आपको इस छोटे से पत्र से कैसे पता चलेगा कि कुपंथी मंडली में मौजूद थे?
4. 2 यूहन्ना 1:7 में कौन या क्या ढ़ोंगी और मसीह-विरोधी है?
5. क्या 2 यूहन्ना 1:10 और 11अपने शत्रुओं का भी अतिथि-सत्कार करने और उनसे प्रेम करने की नये नियम की आज्ञा का विरोधाभास है?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

3 यूहन्ना

आधुनिक अनुवादों के अनुच्छेद विभाग*

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
अभिवादन	गयुस को शुभकामना		प्रस्तावना	संबोधन और शुभकामनाएँ
v. 1	vv. 1-4	v. 1	v. 1a	vv. 1-4
			v. 1b	
vv. 2-4		vv. 2-4	vv. 2-4	
सहयोग और विरोध	उदारता के लिए प्रशस्त		गयुस की प्रशंसा	
vv. 5-8	vv. 5-8	vv. 5-8	vv. 5-8	vv. 5-8
	दियुत्रिफेस और देमेत्रियुस		दियुत्रिफेस और देमेत्रियुस	दियुत्रिफेस के उदाहरण से सावधान
vv. 9-10	vv. 9-12	vv. 9-10	vv. 9-10	vv. 9-11
vv. 11-12		vv. 11-12	vv. 11	देमेत्रियुस की प्रशस्ति
			v. 12	v. 12
अन्तिम शुभकामनाएँ	विदाई की शुभकामना		अन्तिम शुभकामनाएँ	उपसंहार
vv. 13-15	vv. 13-15	vv. 13-14	vv. 13-14	vv. 13-15
		v. 15	v. 15a	
			v. 15b	

* हालांकि वे प्रेरित नहीं हैं, अनुच्छेद विभाग मूल लेखक के अभिप्राय को समझने और अनुसरण करने की कुंजी है। प्रत्येक आधुनिक अनुवाद ने अनुच्छेद को विभाजित और सारांशित किया है। हर अनुच्छेद में एक केंद्रीय विषय, सत्य या विचार होता है। प्रत्येक संस्करण उस विषय को अपने विशिष्ट तरीके से समाहित करता है। जब आप पाठ को पढ़ते हैं, अपने आप से पूछें कि कौन सा अनुवाद आपकी विषय और पद विभाजन की समझ के लिए उपयुक्त है।
हर अध्याय में हमें पहले बाइबल पढ़ना चाहिए और उसके विषयों (अनुच्छेदों) को पहचानने की कोशिश करनी चाहिए, फिर आधुनिक संस्करणों के साथ अपनी समझ की तुलना करनी चाहिए। केवल जब हम मूल लेखक के अभिप्राय को उसके तर्क और प्रस्तुति को समझकर समझते हैं, तब हम सही मायने में बाइबल को समझ सकते हैं। केवल मूल लेखक ही प्रेरित है-पाठकों को संदेश को बदलने या संशोधित करने का कोई अधिकार नहीं है। बाइबल के पाठकों पर अपने दिन और अपने जीवन के लिए प्रेरित सत्य को लागू करने की ज़िम्मेदारी है।
ध्यान दें कि सारे तकनीकी शब्दों और संक्षिप्तीकरणों को निम्नलिखित आलेखों में स्पष्ट रूप से समझाया गया है: यूनानी व्याकरणिक संरचना की संक्षिप्त परिभाषा, पाठ संबंधी आलोचना और शब्दावली।

वाचन चक्र एक

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की स्वयं की व्याख्या के लिए ज़िम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को अपने प्रकाश में चलना चाहिए। आप, बाइबल, और पवित्र आत्मा व्याख्या में प्राथमिकता है। आपको इसे एक टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक बैठक में पढ़ें। संपूर्ण पुस्तक की केंद्रीय विषय वस्तु अपने स्वयं के शब्दों में बताएं।

1. पूरी किताब की विषय वस्तु
2. साहित्य का प्रकार (शैली)

वाचन चक्र दो

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की स्वयं की व्याख्या के लिए ज़िम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को अपने प्रकाश में चलना चाहिए। आप, बाइबल, और पवित्र आत्मा व्याख्या में प्राथमिकता है। आपको इसे एक टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

बाइबल की पूरी पुस्तक को दूसरी बार एक बैठक में पढ़ें। मुख्य विषयों की रूपरेखा बनाएं और एक वाक्य में इस विषय को व्यक्त करें।

1. पहली साहित्यिक इकाई का विषय
2. दूसरी साहित्यिक इकाई का विषय
3. तीसरी साहित्यिक इकाई का विषय
4. चौथी साहित्यिक इकाई का विषय
5. आदि।

वाचन चक्र तीन

अनुच्छेद स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय का अनुसरण करना

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है।व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

एक बैठक में अध्याय पढ़ें। विषयों को पहचानें। उपरोक्त पाँच अनुवादों के साथ अपने विषय विभाजन की तुलना करें। अनुच्छेद लेखन प्रेरित नहीं है, लेकिन यह मूल लेखक के अभिप्राय, जो व्याख्या का केंद्र है, का पालन करने की कुंजी है। हर अनुच्छेद में एक और केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला अनुच्छेद
2. दूसरा अनुच्छेद
3. तीसरा अनुच्छेद
4. आदि

3 यूहन्ना पर प्रासंगिक अन्तर्दृष्टि

प्रस्तावना

A. इस छोटे पत्र को केवल 3 यूहन्ना शीर्षक दिया गया है क्योंकि यह 2 यूहन्ना से थोड़ा छोटा है। मुझे लगता है कि 2 यूहन्ना और 3 यूहन्ना दोनों एक स्थानीय कलीसिया, एशिया माइनर के रोमी प्रान्त, शायद पहली सदी के अंत में, के लिए एक संतुलित संदेश बनाते हैं

B. यूहन्ना कुपंथी, भ्रमणकारी प्रचारकों की समस्या से निपटता है, जबकि 3 यूहन्ना भ्रमणकारी मसीही प्रचारकों की मदद करने की चेतावनी से निपटता है।

C. 3 यूहन्ना में तीन अलग-अलग पुरुष विशिष्ट रूप से नामित हैं।
   1. गयुस (प्राप्तकर्ता कलीसिया में एक धर्मी व्यक्ति)
      a. बाइबल के अन्य भागों में तीन गयुसों का उल्लेख किया गया है: मैसीडोनिया का गयुस, प्रेरितों के काम 19:29; दिरबे का गयुस, प्रेरितों के काम 20:4; और कुरिंथ का गयुस, रोमियों 16:23; 1 कुरिन्थियों 1:14।
      b. "अपोस्टोलिक कॉन्स्टिट्यूशंस" के रूप में जाना जाने वाला लेखन यूहन्ना द्वारा नियुक्त बिशप के रूप में गयुस का नाम सूचीबद्ध करता है।
   2. दियुत्रिफेस (प्राप्तकर्ता कलीसिया में एक ईश्वर-रहित उपद्रवी)
      a. नये नियम में यह इस व्यक्ति का एकमात्र उल्लेख है। उसका नाम एक बहुत ही दुर्लभ नाम है जिसका अर्थ है "ज्यूस द्वारा पोषित" यह कितना विडंबनापूर्ण है कि जिस व्यक्ति का नाम "ज्यूस" के नाम पर रखा गया

यात्रियों के खिलाफ होगा जबकि "ज्यूस" यात्रियों का रक्षक था।"
   b. उसका मनोभाव 3 यूहन्ना 1:9-10 में उजागर हुआ है।
3. देमेत्रियुस (इस स्थानीय कलीसिया के लिए यूहन्ना का पत्रवाहक)
   a. जाहिर तौर पर वह यात्री मिशनरियों में से एक है और इफिसुस में प्रेरित यूहन्ना का पत्रवाहक है।
   b. "द एपोस्टोलिक कॉन्स्टिट्यूशंस" परंपरा ने देमेत्रियुस को फिलेदिलफिया का बिशप कहा है, जो प्रेरित यूहन्ना द्वारा नियुक्त किया गया था।

D. उपदेशकों/शिक्षकों/प्रचारकों का मूल्यांकन और समर्थन करने के विषय में आरम्भिक कलीसिया ने संघर्ष किया । दूसरी शताब्दी के आरंभिक काल से एक गैर-कैनोनिकल मसीही लेखन *The Didache* or *The Teaching of the Twelve Apostles* में ये दिशानिर्देश दिए हैं:

अध्याय XI-शिक्षकों, प्रेरितों, और भविष्यद्वक्ताओं से संबंधित

"इसलिए, जो कोई भी, आता और तुम्हें इन बातों को सिखाता है जो पहले से कही गई हैं, उसे ग्रहण करो। लेकिन अगर शिक्षक खुद फिर जाता है और इसके विनाश के लिए एक और सिद्धांत सिखाता है, तो उसकी न सुनो, लेकिन अगर वह इस प्रकार सिखाता है कि धार्मिकता और प्रभु के ज्ञान को बढ़ाए, तो उसे प्रभु के रूप में ग्रहण करो। लेकिन प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के विषय में, सुसमाचार की आज्ञा के अनुसार, इस प्रकार करो: प्रत्येक प्रेरित को जो तुम्हारे पास आता है उसे प्रभु के रूप में ग्रहण किया जाए। लेकिन वह एक दिन से अधिक न रहे, लेकिन यदि आवश्यकता हो, तो अगले दिन भी रहे; लेकिन अगर वह तीन दिन रहता है, तो वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है। और जब प्रेरित जाता है, तो जब तक वह न ठहरे तब तक की रोटी के अतिरिक्त उसे कुछ भी न दो; लेकिन अगर वह पैसे माँगता है, तो वह एक झूठा भविष्यद्वक्ता है" (p. 380)।

अध्याय XI-मसीहियों का स्वागत-सत्कार

"लेकिन जो कोई भी आत्मा में कहे, मुझे धन दो, या कुछ और दो, तुम उसकी मत सुनो; लेकिन यदि वह तुम्हें दूसरे के लिए देने के लिए कहता है जो जरूरतमंद हैं, तो कोई उसे न जाँचे।

लेकिन प्रभु के नाम में आने वाले हर एक को ग्रहण करो, और उसके बाद तुम उसे सिद्ध करो और उसे जानो, क्योंकि तुमको पूर्ण रूप से समझना है। यदि आनेवाला एक पथिक है, तो तुम अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसकी सहायता करो; लेकिन वह तुम्हारे साथ न रहे, यदि आवश्यकता हो तो, बस दो या तीन दिन। लेकिन यदि वह तुम्हारे साथ रहने का इच्छुक हो, तो कारीगर होने के कारण, उसे काम करके खाने दो; लेकिन यदि उसके पास कोई धंधा न हो, अपनी समझ के अनुसार इस बात का ध्यान रखो कि एक मसीही के रूप में, वह तुम्हारे साथ बिना काम के न रहे। लेकिन यदि वह ऐसा न करना चाहे, तो वह एक मसीह-व्यापारी है। सावधान रहो कि तुम अपने आप को ऐसों से अलग रखो" (p. 381)।

शब्द और पाठ अध्ययन

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 1
[1]मुझ प्राचीन की ओर से प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सत्य में प्रेम रखता हूँ।

पद 1 "प्राचीन" शब्द "पादरी" और "बिशप" का पर्याय है (तुलना तीतुस 1:5,7; प्रेरितों के काम 20:17,28)। 2 यूहन्ना 1:1 पर पूर्ण टिप्पणी देखें।

▣ **"प्रिय"** यह यूहन्ना के पत्रों की विशेषता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:7; 3:2,21; 4:1,7,11; 3 यूहन्ना 1,2,5,11), लेकिन सुसमाचारों या प्रकाशितवाक्य में विश्वासियों के लिए एक शीर्षक के रूप में नहीं पाया गया है।

▣ **"गयुस"** इस बात पर बहुत चर्चा हुई है कि क्या गयुस या दियुत्रिफेस इस स्थानीय कलीसिया के पादरी हैं। इस थोड़ी सी उपलब्ध जानकारी से कोई भी कट्टर कथन करना मुश्किल है। 3 यूहन्ना 1:9 के कारण, जहाँ "कलीसिया" और "उनमें" का उल्लेख किया गया है, यह संभव है कि दियुत्रिफेस एक घर कलीसिया का अगुवा था और गयुस दूसरी घर कलीसिया का अगुवा था जो बहुत करीब थी, लेकिन यह शुद्ध परिकल्पना है ।

▣ **"जिस से मैं सत्य में प्रेम रखता हूँ"** "प्रेम और सत्य" यूहन्ना के पत्रों में अक्सर एक साथ पाए जाते हैं (तुलना 2 यूहन्ना 2-2,3; 3 यूहन्ना 1,3,4,8,12)। सत्य उल्लेखित कर सकता है

1. पवित्र आत्मा (तुलना यूहन्ना 14:17)
2. पुत्र यीशु (तुलना यूहन्ना 8:32; 14:6)
3. सुसमाचार की विषयवस्तु (तुलना 1 यूहन्ना 2:2; 3:23)

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 2-4
[2]हे प्रिय, मेरी प्रार्थना है कि जैसे तेरी आत्मा उन्नति कर रही है,वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे और स्वस्थ रहे। [3]क्योंकि मैं बड़ा आनन्दित हुआ जब भाइयों ने आकर तेरे सत्य की साक्षी दी, अर्थात यह तू किस प्रकार सत्य में चल रहा है। [4]मेरे लिए इस से बढ़कर और आनन्द की बात नहीं कि यह सुनूँ कि मेरे बच्चे सत्य पर चल रहे हैं।

पद 2 "मेरी प्रार्थना है" यह एक विशिष्ट यूनानी पत्र की शुरुआत है। यह प्राप्तकर्ताओं की समृद्धि और स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना/कामना है। यह किसी प्रियजन का अभिवादन करने का एक तरीका था। इसे "स्वास्थ्य, संपत्ति सुसमाचार" के एक पाठ-प्रमाण के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता है, जो आधुनिक अमेरिका में बहुत लोकप्रिय है। Gordon Fee (एक करिश्माई विद्वान), *The Disease of the Health*, *Wealth Gospel* देखें। चंगाई पर मेरे विचारों के लिए, कृपया www.freebiblecommentary.org पर याकूब 5 पर मेरी टिप्पणियाँ ऑनलाइन देखें।

▣ **"तू सब बातों में उन्नति करे और स्वस्थ रहे"** यह पहली सदी के यूनानी-रोमी जगत में एक विशिष्ट प्रारंभिक प्रार्थना है। यह कभी भी "स्वास्थ्य, संपत्ति और समृद्धि" के प्रचारकों के लिए एक पाठ-प्रमाण नहीं था। संदर्भ से हटाए गए बाइबल पाठों का प्रयोग किसी भी बात का दावा करने के लिए किया जा सकता है। आज पाठ का वह अर्थ नहीं हो सकता है, जो अपने दिन में कभी नहीं था। एकमात्र प्रेरित व्यक्ति ही मूल लेखक है। हमें उसके विचारों को समझना चाहिए, अपने स्वयं के विचारों को नहीं थोपना चाहिए!

▣ **"आत्मा"** यह शब्द "*psuche*" (आत्मा) लगभग "*pneuma*" का पर्याय है। इनका प्रयोग व्यक्तित्व या स्वयं के सार को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। यह मनुष्य (शरीर, प्राण, आत्मा) के एक अलग हिस्से का उल्लेख नहीं करता है। मनुष्य एक एकता हैं (तुलना उत्पत्ति 2:7)। हम एक प्राण हैं; हम में प्राण नहीं है।

पद 3 "मैं बड़ा आनन्दित हुआ" (तुलना 2 यूहन्ना 4; फिलिप्पियों 4:10)।

▣ **"आकर साक्षी दी"** ये दोनों वर्तमान कृदंत हैं जिनका अर्थ है कि

1. इस कलीसिया के सदस्य नियमित रूप से इफिसुस की यात्रा करते थे और यूहन्ना को सूचित करते थे
2. लौटने वाले मिशनरियों ने गयुस की उदारता की सूचना दी

संभवतः यूहन्ना, एक बूढ़ा व्यक्ति, आसानी से यात्रा नहीं कर सकता, लेकिन वह कलीसियाओं की स्थिति और वृद्धि के बारे में सुनना पसंद करता था।

▣ **"सत्य में चल रहा है"** यह वाक्यांश "ज्योति में चलने" का धर्मशास्त्रीय समानांतर है (तुलना 1 यूहन्ना 1:7)। मसीहत मुख्य रूप से एक पंथ, एक अनुष्ठान, या एक संस्था नहीं है जिसमें सम्मिलित हुआ जाए, लेकिन यीशु मसीह के साथ संबंध में रहने का एक जीवन है। आरम्भिक कलीसिया को पहले "मार्ग" कहा गया था (तुलना प्रेरितों के काम 9:2, 19:9,23; 24:22)। सत्य केवल बौद्धिक (विषयवस्तु) नहीं है, बल्कि एक संबंध (मसीह के माध्यम से पहले परमेश्वर के साथ जिसका परिणाम एक दूसरे के लिए प्रेम होता है)भी है। यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर सत्य पर विशेष विषय देखें।

पद 4 "मेरे बच्चे" यह यूहन्ना के पत्रों में एक सामान्य पदनाम है (तुलना 1 यूहन्ना 2:12,13,18,28; 3:7,18; 4:4; 5:21)। यहाँ पर जोर है (1) यूहन्ना का प्रेरितीय अधिकार या (2) रोमी प्रांत एशिया माइनर (पश्चिमी तुर्की), जहाँ उसने अपनी सेवकाई के आखिरी दिन बिताए थे, की कलीसियाओं और मसीहियों के लिए यूहन्ना के स्नेह का शब्द।

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 5-8
[5]हे प्रिय, तू भाइयों के लिए जो कुछ कर रहा है उसे विश्वासयोग्यता से पूरा कर रहा है, और विशेषकर जब वे परदेशी हैं; [6]उन्होंने कलीसिया के सामने तेरे प्रेम की साक्षी दी है, और अच्छा होगा यदि तू उन्हें इस प्रकार विदा

करे जैसे परमेश्वर को सोहता है। [7]क्योंकि वे उस नाम के लिए निकले हैं और ग़ैरयहूदियों से कुछ नहीं लेते। [8]इसलिए हमें ऐसों को संभालना चाहिए, जिससे कि हम भी सत्य में सहकर्मी हों।

पद 5 "उसे विश्वासयोग्यता से पूरा कर रहा है" गयुस द्वारा ये कार्य पद 9-10 में दियुत्रिफेस के कार्यों के बिल्कुल विपरीत हैं। विशेष विषय देखें: आस्था, भरोसा, विश्वास और विश्वासयोग्यता यूहन्ना 1:7 और यूहन्ना 1:14 पर देखें

▣ **"तू जो कुछ कर रहा है"** यह *ean* एक संबंध-सूचक सर्वनाम और एक अनिर्दिष्टकाल मध्यम संशयार्थ-सूचक है जो एक स्थिति को पूरी होने की संभावना से व्यक्त करता है। गयुस ने हर अवसर पर और हर संभावित रीति से यात्री मिशनरियों की मदद की थी।

▣ **"विशेषकर जब वे परदेशी हैं"** कलीसियाओं को इन भ्रमणकारी मसीही मिशनरियों का स्वागत और समर्थन करते रहना चाहिए था, लेकिन स्थानीय स्थिति के कारण, गयुस अकेले ही इन भाइयों की मदद कर रहा था, जिनके बारे वह इससे अधिक कुछ नहीं जानता था कि वे भी यीशु मसीह को जानते, उसकी सेवा करते और प्रेम करते थे।

पद 6 "उन्होंने कलीसिया के सामने तेरे प्रेम की साक्षी दी है" जाहिर है कि इफिसुस की आरम्भिक कलीसिया में उनकी सामूहिक आराधना के दौरान मिशनरी सूचना का समय भी था।

विशेष विषय: कलीसिया (*ekklēsia*) (SPECIAL TOPIC: CHURCH (*ekklēsia*))

यह यूनानी शब्द, *ekklēsia* दो शब्दों से है, "में से" और "बुलाये गए"। इस शब्द का एक सांसारिक प्रयोग (यानी, नागरिकों को एक सभा में बुलाया जाना, तुलना प्रेरितों के काम 19:32,39,41) और इस्राएल की "मण्डली" (*Qahal*, BDB 874, KB 1078, तुलना गिनती 16:3; 20:4; व्यवस्थाविवरण 31:30) के लिए सेप्टुआजिंट के इस शब्द के प्रयोग के कारण,एक धार्मिक प्रयोग था। आरम्भिक कलीसिया ने खुद को पुराने नियम के परमेश्वर लोगों के क्रम में देखा। वे नए इस्राएल थे (तुलना रोमियों 2:28-29; गलातियों 3:29; 6:16; 1 पतरस 2:5,9; प्रकाशितवाक्य 1:6), परमेश्वर के विश्वव्यापी मिशन की पूर्ति (तुलना उत्पत्ति 3:15; 12:3; निर्गमन 19:5-6; मत्ती 28:18-20; लूका 24:47; प्रेरितों के काम 1:8; विशेष विषय: YHWH की अनंत छुटकारे की योजना देखें)।

इस शब्द को सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में कई अर्थों में प्रयोग किया जाता है।

1. नगर की सांसारिक सभा, प्रेरितों के काम 19:32,39,41
2. मसीह में परमेश्वर के सार्वभौमिक लोग, मत्ती 16:18 और इफिसियों
3. मसीह में विश्वासियों की एक स्थानीय मण्डली, मत्ती 18:17, प्रेरितों के काम 5:11 (इन पदों में, यरूशलेम में कलीसिया); प्रेरितों के काम 13:1; रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; फिलेमोन पद 2
4. स्तिफनुस के धर्मोपदेश में सामूहिक रूप से इस्राएल के लोग, प्रेरितों के काम 7:38
5. एक क्षेत्र में परमेश्वर के लोग, प्रेरितों के काम 8:3; गलातियों 1:2 (यहूदा या पलस्तीन)

कलीसिया एक इकट्ठा हुए लोग हैं, एक इमारत नहीं। सैकड़ों वर्षों तक कलीसिया की इमारतें नहीं थीं। याकूब (आरंभिक मसीही पुस्तकों में से एक) में कलीसिया को "*synagōgē*" (सभा) शब्द से संदर्भित किया गया है। कलीसिया के लिए यह शब्द केवल याकूब में मिलता है (तुलना याकूब 2:2; 5:14)।

▣ **"अच्छा होगा"** यह "कृपया" (तुलना प्रेरितों के काम 10:33) के लिए मिस्र के पपीरस (Moulton and Milligan, *The Vocabulary of the Greek Testament* देखें) में पाया जाने वाला एक यूनानी मुहावरा है।

▣ **"इस प्रकार विदा करे"** यह यात्री मिशनरियों को सुसज्जित करने, उनके लिए प्रार्थना करने और उनकी आवश्यकताओं की आपूर्ति करने के लिए एक पारिभाषिक मुहावरा है (तुलना प्रेरितों के काम 15:3; रोमियों 15:24; 1 कुरिन्थियों 16:6; 2 कुरिन्थियों 1:16; तीतुस 3:13)

▣ **"जैसे परमेश्वर को सोहता है"** इसका अर्थ है एक सार्थक, प्रेमपूर्ण, भरपूर रीति से (तुलना कुलुस्सियों 1:10; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12)। विश्वासियों को सुसमाचार के कार्यकर्ताओं के साथ ऐसा व्यवहार करना है जो उसके यथायोग्य है जिसकी वे सेवा करते हैं (तुलना इफिसियों 4:1)

पद 7
NASB, REB "वे निकले हैं"

NKJV "वे आगे बढ़े हैं"
NRSV "उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की"
TEV, NJB "वे चल पड़े हैं"

इसी सामान्य क्रिया का प्रयोग किया जाता है इनके लिए

1. 1 यूहन्ना 2:19 में कलीसिया छोड़ने वाले झूठे शिक्षक
2. 1 यूहन्ना 4:13 में संसार में निकल पड़ने वाले झूठे भविष्यद्वक्ता
3. 2 यूहन्ना 1:74 में संसार में निकल पड़ने वाले भरमाने वाले।
4. 3 यूहन्ना 1:7 में (संसार में) निकल पड़ने वाले सच्चे प्रेरितीय गवाह

NASB "नाम के लिए"
NKJV "उसके नाम के लिए"
NRSV "मसीह की के लिए"
TEV "मसीह की सेवा में"
NJB "पूरी तरह से नाम के लिए"

यह यीशु मसीह के व्यक्ति और कार्य के प्रतीक "नाम" का एक उदाहरण है। जब विश्वासी उसके नाम पर विश्वास करते हैं (तुलना यूहन्ना 1:12; 3:18; रोमियों 10:9; 1 कुरिन्थियों 12; 3; फिलिप्पियों 2:9-11), वे उसके नाम में क्षमा किए जाते हैं (1 यूहन्ना 2:13), वे उसके नाम के लिए काम भी करते हैं (तुलना मत्ती 10:22; 24:9; मरकुस 13:13; लूका 21:12,17; यूहन्ना 15:21; 20:31; प्रेरितों 4:17; 5:41; 9:14; रोमियों 1:5; 1 पतरस 4:14,16; प्रकाशितवाक्य 2:3)।

NASB "ग़ैरयहूदियों से कुछ नहीं स्वीकारते"
NKJV "ग़ैरयहूदियों से कुछ नहीं लेते"
NSRV "गैर-विश्वासियों से कोई सहायता नहीं स्वीकारते"
TEV "अविश्वासियों से कोई भी मदद स्वीकार किए बिना"
NJB "किसी भी बात के लिए गैर-विश्वासियों पर निर्भर किए बिना"

यह वाक्यांश इन गवाहों को उनके प्रावधान के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हुए संदर्भित करता है, जिस प्रकार यीशु ने मत्ती 10:5-15 में बारहों को और लूका 10:4-7 में सत्तर को कहा।

यह पहली शताब्दी के अंत भाग का मूर्तिपूजकों या अविश्वासियों के लिए एक संकेत के रूप में "अन्यजातियों" का प्रयोग है (तुलना मत्ती 5:47; 1 पतरस 2:12; 4:3)। विश्वासियों को सुसमाचार के काम का समर्थन करना चाहिए! कोई किसकी सहायता करता है यह उसके हृदय को दर्शाता है।

यूहन्ना के दिन में कई यात्री शिक्षक धन और प्रतिष्ठा के लिए पढ़ाते थे। परमेश्वर के शिक्षकों/उपदेशकों/प्रचारकों की उनके वचनों के कारण मदद नहीं की जानी चाहिए, लेकिन उनके प्रभु के कारण जिसके मिशन के लिए वे त्यागभाव से शामिल थे।

पद 8 "हमें चाहिए" यह एक बार-बार दोहराई जाने वाली, नैतिक चेतावनी है (तुलना यूहन्ना 13:14; 19:7; 1 यूहन्ना 2:6; 3:16; 4:11)। *opheilō* शब्द का अर्थ अक्षरशः आर्थिक ऋण में होना है, लेकिन इसका प्रयोग आलंकारिक रूप से किसी के प्रति बाध्यता या ऋणी होने के लिए किया जाने लगा।

▣ **"ऐसों को संभालना"** अधिकांश स्थानीय धर्मशालाओं की खेदजनक नैतिक परिस्थितियों के कारण आतिथि-सत्कार प्रारंभिक कलीसिया का एक महत्त्वपूर्ण कर्तव्य था (तुलना मत्ती 25:35; रोमियों 12:13; 1 तीमुथियुस 3:2; 5:10; तीतुस 1:8; इब्रानियों 13:2; 1 पतरस 4:9)।

▣ **"जिससे कि हम भी सत्य में सहकर्मी हों"** क्योंकि विश्वासियों ने मिशनरियों की मदद की, वे उनके विश्वास और सत्य के काम में शामिल हैं। यह एक सुसमाचार सिद्धांत है! मसीही दान के नये नियम के दिशानिर्देश 2 कुरिन्थियों 8-9 में पाए जाते हैं

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 9-10
9मैंने कलीसिया को कुछ लिखा; परन्तु दियुत्रिफेस, जो उनमें प्रमुख बनने की लालसा रखता है, हमारी नहीं

मानता। [10]इसलिए, यदि मैं आऊँ तो उसके उन कार्यों की जो वह करता है, याद दिलाऊँगा। वह अनुचित रूप से हमारे विरुद्ध बुरी-बुरी बातें कहकर दोष लगता है; और इतने से ही संतुष्ट नहीं, वह न तो स्वयं भाइयों को ग्रहण करता वरन उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं मना करता और कलीसिया से निकाल देता है।

पद 9 "मैंने कलीसिया को कुछ लिखा" यह 1 या 2 यूहन्ना या एक खोए हुए पत्र का संदर्भ हो सकता है; पूरी संभावना है कि यह 2 यूहन्ना को संदर्भित करता है। विशेष विषय: कलीसिया (*Ekklēsia*) 3 यूहन्ना 1:6 पर देखें ।

▣ **"परन्तु दियुत्रिफेस, जो उनमें प्रमुख बनने की लालसा रखता है"** यह एक वर्तमान कर्तृवाच्य कृदंत है। यह एक संयुक्त शब्द "प्रेम" (*phileō*) और "प्रमुख पद पर होना" (*prōteuō*) है। नये नियम में इसका प्रयोग केवल यहाँ किया जाता है, लेकिन दूसरे शब्द का प्रयोग कुलुस्सियों 1:18 में मसीह के प्रधान पद के लिए किया जाता है। यह मनुष्य पहला दर्ज़ किया गया "सत्ता-दलाल " या "कलीसिया मालिक" है। हमें नहीं पता कि वह पादरी था या केवल एक महत्त्वपूर्ण साधारण व्यक्ति था। हालाँकि, यह उसके इरादों को दर्शाता है। इस तरह के अहंकारी व्यक्ति हर युग में कलीसिया में मौजूद रहे हैं! क्या वह एक ज्ञानवादी भी था यह अनिश्चित और अनकहा है, परन्तु संभव है।

James Dunn, *Unity and Diversity in the New Testament*, p. 392, दियुत्रिफेस को "प्रारंभिक कैथोलिकवाद" के उदाहरण के रूप में देखता है।

> "विशेष रूप से, यूहन्ना के व्यक्तिवाद को बहुत अनुग्राह्यतापूर्वक सटीक रूप से इस तरह के संस्थागत रुझानों के विरोध में जो पादरी-संबंधी पाठों में स्पष्ट है, समझा जा सकता है (pp. 129f., ऊपर, तुलना फिर इब्रानियों और प्रकाशितवाक्य- §§31.2, 3)। इसी तरह जोहानिन लेखन से ऐसा लगता है कि कुछ भी उस तरह के संस्कारवाद के विरोध में है जो इग्नाशियस के शुरुआती कैथोलिक धर्म में स्पष्ट रूप से स्थापित है ('अमरता की औषधि' - Eph., 20.2) (ऊपर 41 देखें) इन सब में से सबसे दिलचस्प है 3 यूहन्ना 9f. में दियुत्रिफेस पर 'प्राचीन' का आक्षेप । स्पष्ट रूप से कम से कम इस कलीसिया पर दियुत्रिफेस का नियंत्रण था: न केवल वह अतिथि मसीहियों का स्वागत करने से इन्कार करने में सक्षम था, बल्कि वह उन्हें जो उसे नाराज़ करते थे, 'कलीसिया से भी निकाल देता है'। दियुत्रिफेस, दूसरे शब्दों में, एक राजशाही बिशप के अधिकार के साथ काम कर रहा था (तुलना इग्नाशियस, Eph., 6.1; Trall, 7.2; Smyrn., 8.1f), और यही कलीसिया- संबंधी प्रमुखता और सत्ता की वासना थी (*philōprōteuōn*) जिसके विरोध में 'प्राचीन' ने लिखा। दूसरे शब्दों में, यह मानते हुए कि 3 यूहन्ना । और 2 यूहन्ना के समान उसी पृष्ठभूमि से आता है, इसे एक तरह के सम्मेलन या कॉन्वेंटिकल मसीहत पर प्रतिक्रिया, एक संस्था- विरोधी और व्यक्तिगत भक्तिवाद के रूप में देखा जाता है, जो आरम्भिक कैथोलिकवाद के बढ़ते प्रभाव का विरोध करता है।

▣ **"हमारी नहीं मानता"** न केवल दियुत्रिफेस ने यूहन्ना के प्रेरितीय अधिकार को अस्वीकार किया, बल्कि वह उग्रता के साथ प्रेरितीय नीति को अस्वीकार करने में शामिल था और यहाँ तक कि उन लोगों से प्रतिशोध ले रहा था, जो इनका अनुसरण करते थे!

पद 10 "यदि" एक तृतीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्य।

▣ **"उसके उन कार्यों की जो वह करता है, याद दिलाऊँगा"** यूहन्ना स्पष्ट रूप से इस व्यक्ति के उद्देश्यों (तुलना 3 यूहन्ना 1:9) और कार्यों (तुलना 3 यूहन्ना 1:10) की रूपरेखा प्रस्तुत करना चाहता है:

1. NASB - "अनुचित रूप से हमारे विरूद्ध बुरी-बुरी बातें कहकर दोष लगाता है"
   NKJV - "दुर्भावनापूर्ण शब्दों के साथ हमारे खिलाफ बकबक करता है"
   NRSV - "हमारे खिलाफ झूठे आरोप फैलाता है"
   TEV - "वह भयानक बातें जो वह हमारे बारे में कहता है और जो झूठ बोलता है"
   NJB - "दुष्ट आरोप वह हमारे खिलाफ प्रचार करता रहा है"
2. "वह स्वयं भाइयों को ग्रहण नहीं करता"
3. "उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं मना करता है"
4. "वह उन्हें कलीसिया से निकाल देता है"

यह मनुष्य अपनी ओर ध्यान खींचना चाहता है और किसी के साथ लोकप्रियता नहीं बाँटेगा। वह कलीसिया में से किसी को भी जो उससे असहमत होता है, या असहमत हो सकता है हटा देता है।

▣ **"उन्हें कलीसिया से निकाल देता है"** यही प्रबल क्रिया (*ekballō*) यूहन्ना 9:34,35 में आराधनालय से निकाले गए उस अंधे मनुष्य के लिए प्रयोग की गई है जिसे यीशु ने चंगा किया था।

इसे यूहन्ना 12:31 में शैतान के निकाले जाने के लिए भी प्रयोग किया गया है।

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 11-12
[11]प्रिय, बुराई का नहीं परन्तु भलाई का अनुकरण करना। जो भलाई करता है वह परमेश्वर से है; पर जो बुराई करता है उसने परमेश्वर को नहीं देखा। [12]दिमेत्रियुस के विषय में सब ने, यहाँ तक कि सत्य ने भी, अच्छी साक्षी दी है; और हम भी साक्षी देते हैं, और तू जानता है कि हमारी साक्षी सच्ची है।

पद 11 "बुराई का अनुकरण न करना" यह एक वर्तमान मध्यम (प्रतिपादक) आज्ञार्थक है जिसका तात्पर्य अक्सर प्रक्रिया में एक कार्य को रोकना होता है। हमें इस यूनानी शब्द (*mimeomai*) से अंग्रेजी शब्द "नकल करना" मिलता है। हमें अपने प्रेरणास्त्रोतों को सावधानी से चुनना चाहिए। वे कलीसिया में परिपक्व मसीही व्यक्ति होने चाहिए (तुलना 2 थिस्सलुनीकियों 3:7,9; इब्रानियों 6:12; 13:7)। दिमेत्रियुस एक अच्छा उदाहरण है, दियुत्रिफेस एक बुरा उदाहरण है।

▣ **"जो भलाई करता है वह परमेश्वर से है"** यूहन्ना के पत्रों की तीन जाँचें हैं जिनके द्वारा कोई जान सकता है कि वह मसीही है। यह आज्ञाकारिता की जाँच का उल्लेख करता है (तुलना 1 यूहन्ना 2:3-6,28-29; 3:4-10; 5:18; 2 यूहन्ना 6)। अन्य दो जाँचों के भी संकेत हैं: (1) सिद्धांत (3 यूहन्ना 1:3-4) और (2) प्रेम (3 यूहन्ना 1:1-2,6)।

▣ **"जो बुराई करता है उसने परमेश्वर को नहीं देखा"** झूठे शिक्षक परमेश्वर को अंतरंग रूप से जानने का दावा करते थे लेकिन ईश्वर-रहित और प्रेमहीन जीवन जीते थे। यह विधिमुक्त, व्यभिचारी ज्ञानवादियों को दर्शाता है जो मानते थे कि उद्धार पुष्टि करने के लिए एक बौद्धिक सत्य है, लेकिन दैनिक जीवन से कोई संबंध नहीं है।

पद 12 "दिमेत्रियुस के विषय अच्छी साक्षी दी है" यह एक पूर्ण कर्मवाच्य निर्देशात्मक है। यह वास्तव में मिशनरी दिमेत्रियुस के बारे में, जिसने शायद 3 यूहन्ना को गयुस तक पहुँचाया था, यूहन्ना से गयुस के लिए एक सिफारिशी-पत्र प्रतीत होता है। नये नियम में अन्य सिफारिशी-पत्रों के लिए, प्रेरितों के काम 18:27; रोमियों 16:1; 1 कुरिन्थियों 16:3; 2 कुरिन्थियों 3:1; 8:16-24; कुलुस्सियों 4:10 देखें।

▣ **"यहाँ तक कि सत्य ने भी"** सत्य (यूहन्ना 6:55 और 17:3 पर विशेष विषय देखें) को दिमेत्रियुस की अच्छी साक्षी का एक और गवाह के रूप में मानवीकरण किया गया है।

▣ **"तू जानता है कि हमारी साक्षी सच्ची है"** यूहन्ना मसीह के लिए अपनी स्वयं की विश्वसनीय साक्षी का दावा कर रहा है (तुलना यूहन्ना 19:35; 21:24)।

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 13-14
[13]मैं तुझे बहुत कुछ लिखना तो चाहता था, परन्तु स्याही और कलम से नहीं। [14]मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट होगी; तब हम आमने-सामने बातचीत करेंगे।

पद 13 यह 2 यूहन्ना 12 के समान है

NASB (अद्यतन) पाठ: पद 14b
[14b]तुझे शान्ति मिले। मित्रगण तुझे नमस्कार कहते हैं। वहाँ प्रत्येक मित्र को नाम ले लेकर नमस्कार कहना।

पद 14 "तुझे शान्ति मिले" यह स्पष्ट रूप से इब्रानी मुहावरे *shalom* (तुलना लूका 10:5) का एक संदर्भ है। इसका अर्थ "नमस्कार" या "अलविदा" हो सकता है। यह न केवल समस्याओं की अनुपस्थिति को, बल्कि परमेश्वर के आशीर्वाद की उपस्थिति को व्यक्त करता है। ये अटारी में चेलों के लिए पुनरुत्थित मसीह के पहले शब्द थे (तुलना यूहन्ना 20:19,21,26)। पौलुस (तुलना इफिसियों 6:23) और पतरस (तुलना 1 पतरस 5:14) दोनों ने इसे परमेश्वर के लोगों के लिए एक अन्तिम प्रार्थना के रूप में प्रयोग किया।

▣ **"नाम ले लेकर"** यह एक-एक, व्यक्तिगत रूप से और गर्मजोशी से के लिए एक मुहावरा है। इसका प्रयोग अक्सर मिस्र के पपीरस में किया जाता था।

चर्चागत प्रश्न

यह एक अध्ययन मार्गदर्शक टिप्पणी है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी स्वयं की व्याख्या के लिए जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उस प्रकाश में चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्राथमिकता में हैं। आपको एक टीकाकार पर इसे नहीं छोड़ना चाहिए।

ये चर्चागत प्रश्न आपको पुस्तक के इस खंड के प्रमुख मुद्दों के माध्यम से सोचने में मदद करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। वे विचारोत्तेजक होने चाहिए, निर्णायक नहीं।

1. इस बात के कई सिद्धांत हैं कि गयुस और दियुत्रिफेस के एक दूसरे के साथ मतभेद क्यों थे। कुछ सुझाव दिए गए हैं:
   a. धर्मशास्त्रीय कारण
   b. सामाजिक कारण
   c. कलीसिया-संबंधी कारण
   d. नैतिक कारण

   इन संभावनाओं में से प्रत्येक को समझाइए और वे 3 यूहन्ना से कैसे संबंधित हो सकते हैं।
2. 2 यूहन्ना और 3 यूहन्ना कैसे संबंधित हैं?
3. 1 यूहन्ना में पाई जाने वाली मसीही आश्वासन की उन तीन जाँचों की सूची दें जो 2 यूहन्ना और 3 यूहन्ना में दोहराई गई हैं।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

यूनानी व्याकरणिक शब्दों की संक्षिप्त परिभाषाएँ

कोइन (बोलचाल की) यूनानी भाषा, जिन्हें अक्सर हेलेनिस्टिक यूनानी कहा जाता है, सिकन्दर महान (336-323 ई.पू.) की विजय के साथ शुरू होने वाली और लगभग आठ सौ वर्षों (300 ई.पू.- 500 ई.) तक जारी रहने वाली भूमध्य जगत की सामान्य भाषा थी। यह सिर्फ एक सरलीकृत, प्राचीन यूनानी नहीं थी, बल्कि कई मायनों में यूनानी का एक नया रूप थी जो प्राचीन निकट पूर्व और भूमध्य जगत की दूसरी भाषा बन गया।

नये नियम की यूनानी कुछ मायनों में अनूठी थी क्योंकि इसके उपयोगकर्ता, लूका और इब्रानियों के लेखक को छोड़कर, शायद अरामी को अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में प्रयोग करते थे। इसलिए, उनका लेखन अरामी के मुहावरों और संरचनात्मक रूपों से प्रभावित था। इसके अलावा, वे सेप्टुआजिंट (पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) को पढ़ते और उद्धृत करते थे जो कोइन (बोलचाल की) यूनानी में भी लिखा गया था। लेकिन सेप्टुआजिंट यहूदी विद्वानों द्वारा भी लिखा गया था जिनकी मातृभाषा यूनानी नहीं थी।

यह एक चेतावनी के रूप में कार्य करता है कि हम नए नियम को एक तंग व्याकरणिक संरचना में धकेल नहीं सकते हैं। यह अद्वितीय है और इसकी इनसे बहुत सी समानताएँ हैं (1) सेप्टुआजिंट; (2) यहूदी लेखन जैसे जोसेफस; और (3) मिस्र में पाए जाने वाले पपीरस। फिर हम नए नियम का व्याकरणिक विश्लेषण किस प्रकार करें ?

कोइन यूनानी और न्यू टेस्टामेंट कोइन यूनानी की व्याकरणिक विशेषताएं तरल हैं। कई मायनों में यह व्याकरण के सरलीकरण का समय था। प्रसंग हमारा प्रमुख मार्गदर्शक होगा। शब्दों का अर्थ केवल एक बड़े संदर्भ में होता है, इसलिए, व्याकरणिक संरचना को केवल इनके प्रकाश में समझा जा सकता है (1) एक विशेष लेखक की शैली; और (2) एक विशेष संदर्भ। यूनानी रूपों और संरचनाओं की कोई निश्चयात्मक परिभाषा संभव नहीं है।

कोइन यूनानी मुख्य रूप से एक मौखिक भाषा थी। अक्सर क्रियाओं का प्रकार और रूप व्याख्या की कुंजी होता है। अधिकतर मुख्य खंडों में क्रिया सबसे पहले आती है, जो इसका उत्कर्ष दर्शाती है। यूनानी क्रिया के विश्लेषण में तीन बातों की जानकारी पर ध्यान दिया जाना चाहिए: (1) काल, वाच्य और भाव (शब्द रूप या शब्द संरचना) का मूल जोर; (2) विशेष क्रिया का मूल अर्थ (कोशरचना); और (3) संदर्भ का प्रवाह (वाक्यविन्यास)।

I. काल
   A. काल या अवस्था में क्रियाओं का संबंध पूर्ण क्रिया या अपूर्ण क्रिया से है। इसे अक्सर "पूर्णकालिक" और "अपूर्णकालिक" कहा जाता है।
      1. पूर्णकालिक किसी क्रिया के होने पर केंद्रित होता है। कुछ और जानकारी नहीं दी जाती है, सिवाय इसके कि कुछ हुआ! इसके आरम्भ, निरंतरता या परिणति को नहीं बताया जाता है।
      2. अपूर्णकालिक एक क्रिया की सतत प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करता है। इसे रेखीय कार्य, आवधिक कार्य, प्रगतिशील कार्य आदि शब्दों में वर्णित किया जा सकता है।
   B. लेखक किस प्रकार से कार्य को प्रगति करता हुआ देखता है, इस आधार पर काल को वर्गीकृत किया जा सकता है
      1. यह हुआ = अनिर्दिष्टकाल
      2. यह हुआ और परिणाम बना रहता है = पूर्ण
      3. यह भूतकाल में घटित हो रहा था और परिणाम बने हुए थे, लेकिन अब नहीं = पूर्ण भूतकाल
      4. यह हो रहा है = वर्तमान
      5. यह हो रहा था = अपूर्ण
      6. यह होगा = भविष्य

      शब्द "उद्धार" इस बात का एक ठोस उदाहरण होगा कि ये काल व्याख्या में कैसे मदद करते हैं। इसकी प्रक्रिया और परिणति दोनों को दर्शाने के लिए इसका प्रयोग कई अलग-अलग कालों में किया गया था:
      1. अनिर्दिष्टकाल - "उद्धार हुआ है" (तुलना रोमियों 8:24)
      2. पूर्ण - " उद्धार हुआ है और परिणाम जारी है" (तुलना इफिसियों 2: 5,8)
      3. वर्तमान - "उद्धार पाते हो" (तुलना I कुरिन्थियों 1:18; 15: 2)
      4. भविष्य - " उद्धार पाएँगे" (तुलना रोमियों 5:9,10; 10:9)
   C. क्रिया काल पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, व्याख्याकार उन कारणों को ढूँढते हैं जिनकी वजह से मूल लेखक ने स्वयं

को व्यक्त करने के लिए एक विशेष काल को चुना। मानक "बिना तामझाम" काल था अनिर्दिष्टकाल। यह नियमित "अविशिष्ट," "अचिह्नित," या "अविरत" क्रिया रूप था। इसका प्रयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है, जिसे संदर्भ को निर्दिष्ट करना होगा। यह बस कहता था कि कुछ हुआ। बीते समय का पहलू केवल निर्देशात्मक भाव में नियत है। यदि किसी अन्य काल का प्रयोग किया जाता था, तो कुछ अधिक विशिष्ट पर जोर दिया जा रहा था। पर क्या?

1. पूर्ण काल। यह परिणामों के बने रहने के साथ एक पूर्ण कार्य की बात करता है। कुछ मायनों में यह अनिर्दिष्टकाल और वर्तमान काल का संयोजन था। सामान्यतः बने रहने वाले परिणामों या एक कार्य के पूरा होने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है (उदाहरण: इफिसियों 2:5 & 8, "तुम्हारा उद्धार हुआ है और जारी है")।
2. पूर्णभूत काल। यह एकदम पूर्णकाल जैसा था, सिवाय इसके कि परिणाम रुक गए हैं। उदाहरण: यूहन्ना 18:16 "पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा।"
3. वर्तमान काल। यह अधूरी या अपूर्ण क्रिया की बात करता है। सामान्यतः घटना की निरंतरता पर ध्यान केंद्रित करता है। उदाहरण: 1 यूहन्ना 3:6 और 9, "जो उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता।" "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता।"
4. अपूर्ण काल। इस काल में वर्तमान काल से संबंध पूर्ण और पूर्णभूत के बीच के संबंध के अनुरूप है। अपूर्ण काल अधूरी क्रिया की बात करता है जो हो रही थी लेकिन अब रुक गई है या भूतकाल में एक क्रिया की शुरुआत। उदाहरण: मत्ती 3:5, "तब उसके पास यरूशलेम के लोग निकल आए" या "फिर यरूशलेम के लोगों ने उसके पास जाना शुरू कर दिया।"
5. भविष्य काल। यह एक क्रिया की बात करता है जिसे सामान्य रूप से भविष्य की समय सीमा में प्रस्तुत किया गया था। यह वास्तविक घटना के बजाय एक घटना की संभावना पर केंद्रित होता है। यह अक्सर घटना की निश्चितता की बात करता है। उदाहरण: मत्ती 5:4-9, "धन्य हैं वे. . .होंगे. . ."

II. वाच्य

A. वाच्य क्रिया के कार्य और उसके कर्त्ता के बीच के संबंध का वर्णन करता है।

B. कर्तृवाच्य सामान्य, अपेक्षित, बल-रहित तरीका है यह बताने का कि कर्त्ता क्रिया का कार्य कर रहा था।

C. कर्मवाच्य का मतलब है कि कर्त्ता एक बाहरी माध्यम द्वारा उत्पन्न क्रिया का कार्य प्राप्त कर रहा था। कार्य का उत्पन्न करने वाले बाहरी माध्यम को यूनानी नये नियम में निम्नलिखित पूर्वसर्गों और कारकों द्वारा इंगित किया गया था:

1. अपादान कारक के साथ *hupo* द्वारा एक व्यक्तिगत प्रत्यक्ष माध्यम (तुलना मत्ती 1:22; प्रेरितों के काम 22:30)।
2. अपादान कारक के साथ *dia* द्वारा एक व्यक्तिगत मध्यवर्ती माध्यम (तुलना मत्ती 1:22)।
3. साधक कारक के साथ सामान्यतः *en* द्वारा एक अवैयक्तिक माध्यम।
4. कभी-कभी मात्र साधक कारक के द्वारा या तो एक व्यक्तिगत या अवैयक्तिक माध्यम।

D. मध्यम वाचक का अर्थ है कि कर्त्ता क्रिया के कार्य को उत्पन्न करता है और क्रिया के कार्य में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होता है। यह अक्सर उच्च व्यक्तिगत हित का वाचक कहा जाता है। इस संरचना ने किसी तरह से खण्ड या वाक्य के कर्त्ता पर जोर दिया। यह संरचना अंग्रेजी में नहीं मिलती है। इसकी यूनानी में अर्थ और अनुवाद की व्यापक संभावना है। रूप के कुछ उदाहरण हैं:

1. निजवाचक - स्वयं पर विषय की प्रत्यक्ष कार्रवाई। उदाहरण: मत्ती 27: 5 "खुद को फांसी लगा ली।"
2. गहन - कर्त्ता अपने लिए कार्य उत्पन्न करता है। उदाहरण: 1 कुरिन्थियों 11:14 "शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।"
3. पारस्परिक - दो विषयों का परस्पर संबंध। उदाहरण: मत्ती 26:4 "उन्होंने आपस में षड्यंत्र रचा।"

III. भाव (या "रीति")

A. कोइन यूनानी में चार भाव हैं। वे क्रिया के वास्तविकता से संबंध की ओर संकेत करते हैं, कम से कम लेखक के स्वयं के मन में। भावों को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया गया है: जो कि वास्तविकता को इंगित करती है (निर्देशात्मक) और जो कि संभाव्यता को दर्शाती है (संशयर्थक, आज्ञार्थक और इच्छार्थक) ।

B. निर्देशात्मक भाव कम से कम लेखक के मन में होने उस कार्य को जो हो चुका है या हो रहा था, व्यक्त करने के

लिए सामान्य भाव थी। यह एकमात्र यूनानी भाव था जिसने एक निश्चित समय व्यक्त करता था, और यहाँ भी यह पहलू माध्यमिक था।

C. संशयार्थ-सूचक भाव भविष्य के संभावित कार्य को व्यक्त करती थी। अभी तक कुछ नहीं हुआ है, लेकिन संभावना थी कि यह होगा। इसमें बहुत कुछ भविष्य के निर्देशात्मक के समान था। अंतर यह था कि संशयार्थ-सूचक कुछ हद तक संदेह व्यक्त करती है। अंग्रेजी में यह अक्सर "could," "would," may" या "might" शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है।

D. इच्छार्थक भाव एक इच्छा को व्यक्त करता था जो सैद्धांतिक रूप से संभव थी। इसे संशयार्थ-सूचक की तुलना में वास्तविकता से एक कदम आगे माना जाता था। इच्छार्थक कुछ शर्तों के तहत संभावना को व्यक्त करता है। नए नियम में इच्छार्थक दुर्लभ था। इसका सबसे नियमित प्रयोग पौलुस का प्रसिद्ध वाक्यांश है, "ऐसा कदापि न हो" (KJV, "परमेश्वर न करे"), पंद्रह बार (तुलना रोमियों 3:4, 6, 31; 6:2,15; 7:7,13; 9:14; 11:1, 11; 1 कुरिन्थियों 6:15; गलातियों 2:17; 3:21; 6:14)। अन्य उदाहरण लूका 1:38, 20:16, प्रेरितों के काम 8:20 और 1 थिस्सलुनीकियों 3:11 में पाए जाते हैं।

E. आज्ञार्थक भाव एक आज्ञा पर जोर देता था जो संभव थी, लेकिन जोर वक्ता के अभिप्राय पर था। इसने केवल स्वेच्छिक संभाव्यता पर बल दिया और दूसरों की पसंद पर निर्भर थी। प्रार्थना और तीसरे व्यक्ति के अनुरोधों में आज्ञार्थक का विशेष प्रयोग था। ये संकेत नये नियम में केवल वर्तमान और अनिर्दिष्टकाल में पाए गए थे।

F. कुछ व्याकरण कृदंतों को दूसरे प्रकार के भाव के रूप में वर्गीकृत करते हैं। वे यूनानी के नये नियम में बहुत आम हैं, जिन्हें सामान्य रूप से क्रिया के विशेषणों के रूप में परिभाषित किया गया है। उनका अनुवाद मुख्य क्रिया के साथ किया जाता है जिससे वे संबंधित होते हैं। कृदंतों के अनुवाद में एक विस्तृत विविधता संभव थी। कई अंग्रेजी अनुवादों से परामर्श करना सबसे अच्छा है। बेकर द्वारा प्रकाशित *The Bible in Twenty Six Translations* यहाँ बड़ी सहायता करेगी।

G. अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक एक घटना को दर्ज करने का सामान्य या "अचिह्नित" तरीका था। किसी भी अन्य काल, वाच्य या भाव का कुछ विशिष्ट व्याख्यात्मक महत्त्व था जो मूल लेखक सूचित करना चाहते थे।

IV. यूनानी से परिचित न होने वाले व्यक्ति के लिए निम्नलिखित अध्ययन साधन आवश्यक जानकारी प्रदान करेंगे:

A. Friberg, Barbara and Timothy. *Analytical Greek New Testament*. Grand Rapids: Baker, 1988.
B. Marshall, Alfred. *Interlinear Greek-English New Testament*. Grand Rapids: Zondervan, 1976.
C. Mounce, William D. *The Analytical Lexicon to the Greek New Testament*. Grand Rapids: Zondervan, 1993.
D. Summers, Ray. *Essentials of New Testament Greek*. Nashville: Broadman, 1950.
E. अकादमिक मान्यता प्राप्त कोइन यूनानी पत्राचार पाठ्यक्रम शिकागो, आईएल में मूडी बाइबल संस्थान के माध्यम से उपलब्ध हैं।

V. संज्ञाएँ

A. वाक्य- रचना की दृष्टि से, संज्ञाओं को कारक के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। कारक संज्ञा का वह विभक्त रूप है जो क्रिया और वाक्य के अन्य भागों से अपना संबंध दिखाता है। कोइन यूनानी में कई कारक कार्यों को पूर्वसर्गों द्वारा इंगित किया गया था। चूंकि कारक रूप कई अलग-अलग रिश्तों की पहचान करने में सक्षम था, इसलिए इन संभावित कार्यों को स्पष्ट रूप से अलग करने के लिए पूर्वसर्ग विकसित हुए।

B. यूनानी कारकों को निम्नलिखित आठ तरीकों से वर्गीकृत किया गया है:

1. कर्त्ता कारक का प्रयोग नामकरण के लिए किया जाता था और यह सामान्य रूप से वाक्य या खंड का कर्त्ता था। इसका प्रयोग जोड़ने वाली क्रियाओं "होना" या "बनना" के साथ विधेय संज्ञा और विशेषण के लिए भी किया जाता था।
2. संबंध कारक का प्रयोग विवरण के लिए किया जाता था और सामान्य रूप से उस शब्द को एक विशेषता या गुण प्रदान करता था जिससे वह संबंधित था। यह इस प्रश्न का उत्तर देता था, "किस प्रकार का?" इसे अक्सर अंग्रेजी के पूर्वसर्ग "का" के प्रयोग द्वारा व्यक्त किया जाता था।

3. अपादान कारक ने संबंध कारक के समान ही विभक्त रूप का प्रयोग किया, लेकिन इसका प्रयोग पृथक्करण का वर्णन करने के लिए किया गया था। यह सामान्य रूप से समय, स्थान, स्रोत, उत्पत्ति या स्तर में एक बिंदु से अलग होने को दर्शाता है। इसे अक्सर अंग्रेजी पूर्वसर्ग "से" के प्रयोग द्वारा व्यक्त किया जाता था।
4. सम्प्रदान कारक का प्रयोग व्यक्तिगत रुचि का वर्णन करने के लिए किया जाता था। यह एक सकारात्मक या नकारात्मक पहलू को दर्शाता है। अक्सर यह गौण कर्म होता था। यह अक्सर अंग्रेजी पूर्वसर्ग "के लिए" द्वारा व्यक्त किया जाता था।
5. अधिकरण सम्प्रदान कारक के समान ही विभक्त रूप था, लेकिन यह स्थान, समय या तार्किक सीमा में स्थिति या स्थान का वर्णन करता था। यह अक्सर अंग्रेजी के पूर्वसर्गों "में, पर, के बीच, दौरान, पर, और बगल में" द्वारा व्यक्त किया जाता था।
6. करण कारक समान रूप से विभक्त और स्थानिक मामलों का था। इसका अर्थ है साधन या संगति। यह अक्सर अंग्रेजी प्रस्ताव द्वारा, "द्वारा" या "के साथ" व्यक्त किया गया था।
7. कर्म कारक का प्रयोग किसी कार्य के निष्कर्ष का वर्णन करने के लिए किया गया था। यह एक सीमा- बंधन व्यक्त करता था। इसका मुख्य प्रयोग प्रत्यक्ष कर्म था। यह इस प्रश्न का उत्तर देता था, "कितनी दूर?" या "किस हद तक?"
8. संबोधन कारक का प्रयोग सीधे संबोधन के लिए किया जाता था।

VI. सम्मुच्यबोधक और योजक

A. यूनानी बहुत सटीक भाषा है क्योंकि इसमें बहुत सारे संयोजक हैं। वे विचारों (खंड, वाक्य और अनुच्छेद) को जोड़ते हैं। वे इतने सामान्य हैं कि उनकी अनुपस्थिति (asyndeton) अक्सर टीका संबंधी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में, ये सम्मुच्यबोधक और योजक लेखक के विचार की दिशा दिखाते हैं। वे अक्सर यह निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण होते हैं कि वह वास्तव में क्या कहने की कोशिश कर रहा है।

B. यहाँ कुछ सम्मुच्यबोधकों और योजकों और उनके अर्थों की एक सूची दी गई है (यह अधिकतर जानकारी H. E. Dana and Julius K. Mantey's *A Manual Grammar of the Greek New Testament* से ली गई है)।

1. समय योजक
   a. *epei, epeidē, hopote, hōs, hote, hotan* (संशयार्थ-सूचक) - "जब"
   b. *heōs* - "जबकि"
   c. *hotan, epan* (संशयार्थ-सूचक) - "जब भी"
   d. *heōs, achri, mechri* (संशयार्थ-सूचक) - "जब तक"
   e. *priv* (क्रियार्थक) - "पहले"
   f. *hōs* - "चूंकि," "कब," "जैसा कि"
2. तार्किक योजक
   a. उद्देश्य
      (1) *hina* (संशयार्थ-सूचक), *hopōs* (संशयार्थ-सूचक), *hōs* - "इसलिए कि," "कि"
      (2) *hōste* (संधायक कर्म कारक क्रियार्थक) - "कि"
      (3) *pros* (संधायक कर्म कारक क्रियार्थक) या *eis* (संधायक कर्म कारक क्रियार्थक) - "कि"
   b. परिणाम (उद्देश्य और परिणाम के व्याकरणिक रूपों के बीच घनिष्ठ संबंध है)
      (1) *hōste* (क्रियार्थक, यह सबसे आम है) - "इसलिए कि", "अतः"
      (2) *hiva* (संशयार्थ-सूचक) - "इसलिए कि"
      (3) *ara* - "ताकि"
   c. कारणात्मक या कारण
      (1) *gar* (कारण/प्रभाव या कारण/निष्कर्ष) - "के लिए," "क्योंकि"
      (2) *dioti, hotiy* - "क्योंकि"
      (3) *epei, epeidē, hōs* - "चूंकि"
      (4) *dia* (कर्म कारक के साथ) और (संधायक क्रियार्थक के साथ) - "क्योंकि"

d. आनुमानिक
   (1) *ara, poinun, hōste* - "इसलिए"
   (2) *dio* (सबसे मजबूत आनुमानिक सम्मुच्यबोधक) - "किस कारण," "कारण," "इसलिए"
   (3) *oun* - "इसलिए," "तो," "फिर," "फलस्वरूप"
   (4) *toinoun* - "तदनुसार"

e. विरोधात्मक या विपरीत
   (1) *alla* (मजबूत विरोधात्मक) - "लेकिन," "के अलावा"
   (2) *de* - "लेकिन," "हालांकि," "फिर भी," "दूसरी ओर"
   (3) *kai* - "लेकिन"
   (4) *mentoi, oun* - "हालांकि"
   (5) *plēn* - "फिर भी" (अधिकतर लूका में)
   (6) *oun* - "हालांकि"

f. तुलना
   (1) *hōs, kathōs* (तुलनात्मक खंडों को समाविष्ट करता है)
   (2) *kata* (*katho, kathoti, kathōsper, kathaper* यौगिकों में)
   (3) *hosos* (इब्रानी में)
   (4) *ē* - "से"

g. निरंतर या श्रृंखला
   (1) *de* - "और," "अब"
   (2) *kai* - "और"
   (3) *tei* - "और"
   (4) *hina, oun* - "कि"
   (5) *oun* - "तब" (यूहन्ना में)

3. प्रभावी प्रयोग
   a. *alla* - "निश्चितता," "हाँ," "वास्तव में"
   b. *ara* - "वास्तव में," "निश्चित रूप से," "सचमुच"
   c. *gar* - "लेकिन वास्तव में," "निश्चित रूप से," "निःसन्देह"
   d. *de* - "निःसन्देह"
   e. *ean* - "यहाँ तक की"
   f. *kai* - "यहाँ तक की," "निःसन्देह," "सचमुच"
   g. *mentoi* - "निःसन्देह"
   h. *oun* - "सचमुच," "हर प्रकार से"

VII. प्रतिबंधात्मक वाक्य

A. प्रतिबंधात्मक वाक्य वह है जिसमें एक या अधिक प्रतिबंधात्मक खंड होते हैं। यह व्याकरणिक संरचना व्याख्या में सहायता करती है क्योंकि यह नियम, कारण या वजह बताती है कि मुख्य क्रिया का कार्य क्यों होता है या नहीं होता है। प्रतिबंधात्मक वाक्यों के चार प्रकार थे। वे उससे जो लेखक के दृष्टिकोण से या उसके उद्देश्य के लिए सही माना जाता था उस ओर आगे बढ़ते हैं जो केवल एक इच्छा थी।

B. प्रथम श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य उस कार्य को जो लेखक के दृष्टिकोण से या उसके उद्देश्यों के लिए सही माना गया था, भले ही इसे "यदि" के साथ व्यक्त किया गया हो, व्यक्त करता है। कई संदर्भों में इसका अनुवाद "चूंकि" (तुलना मत्ती 4:3; रोमियों 8:31) किया जा सकता है। हालाँकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी प्रथम श्रेणी वास्तविक रूप से सही हैं। अक्सर वे एक तर्क में एक बात सिद्ध करने के लिए या एक भ्रांति (तुलना मत्ती 12:27) को उजागर करने के लिए प्रयोग किया जाता था।

C. द्वितीय श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य को अक्सर "तथ्य के विपरीत" कहा जाता है। यह एक बात सिद्ध करने के लिए कुछ

ऐसा कहता है वास्तविकता से असत्य था। उदाहरण:

1. "यदि यह मनुष्य नबी होता तो जो वह नहीं है, तो जान जाता कि वह स्त्री जो उसे छू रही है, कौन है और कैसी है, लेकिन वह नहीं जानता" (लूका 7:39)
2. "यदि मूसा का विश्वास करते, जो तुम नहीं करते, तो मेरा भी विश्वास करते, जो तुम नहीं करते" (यूहन्ना 5:46)
3. "यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता रहता, जो मैं नहीं कर रहा, तो मैं मसीह का दास न होता, जो मैं हूँ" (गलातियों 1:10)

D. तृतीय श्रेणी भविष्य के संभावित कार्य की बात करती है। यह अक्सर उस कार्य की संभावना को मान लेता है। सामान्य रूप से इसका तात्पर्य एक आकस्मिकता है। मुख्य क्रिया का कार्य "यदि" खंड में कार्य पर आकस्मिक है। 1 यूहन्ना से उदाहरण: 1:6-10; 2:4,6,9,15,20,21,24,29; 3:21; 4:20; 5:14,16।

E. चतुर्थ श्रेणी संभावना से हटकर सबसे दूर है। यह नये नियम में दुर्लभ है। वास्तव में, कोई पूर्ण चतुर्थ श्रेणी प्रतिबंधात्मक वाक्य नहीं है जिसमें प्रतिबंध के दोनों भाग परिभाषा में उचित बैठते हैं। आंशिक चतुर्थ श्रेणी का एक उदाहरण 1 पतरस 3:14 में शुरुआती खंड है। समापन खंड में आंशिक चतुर्थ श्रेणी का एक उदाहरण प्रेरितों के काम 8:31 है।

VIII.निषेध

A. mē सामान्य प्रत्यय के साथ वर्तमान आज्ञार्थक अक्सर (लेकिन विशेष रूप से नहीं) पहले से ही प्रक्रिया में एक कार्य को रोकने पर जोर देता है। कुछ उदाहरण: "अपने लिए पृथ्वी पर धन-संचय मत करो. . ." (मत्ती 6:19); "अपने प्राण के लिए यह चिंता न करना. . ." (मत्ती 6:25); "न अपने शरीर के अंगों को अधर्म के हथियार बनाकर पाप को सौंपो..." (रोमियों 6:13); "परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो. . ." (इफिसियों 4:30); और "दाखरस पीकर मतवाले न बनो. . ." (5:18)।

B. mē सामान्य प्रत्यय के साथ अनिर्दिष्टकाल संशयार्थ-सूचक का जोर "किसी कार्य को शुरू या आरम्भ भी नहीं करने" पर है। कुछ उदाहरण: "यह न समझो कि. . ." (मत्ती 5:17); "चिंता न करो. . ." (मत्ती 6:31); "तू न लज्जित हो. . ." (1 तीमुथियुस 1:8)।

C. संशयार्थ-सूचक भाव के साथ दोहरा नकारात्मक एक बहुत ही सशक्त खण्डन है। "नहीं, कभी नहीं" या "किसी भी परिस्थिति में नहीं।" कुछ उदाहरण: "वह कभी नहीं, कभी मृत्यु को न देखेगा" (यूहन्ना 8:51); "मैं फिर कभी नहीं, नहीं, कभी नहीं. . ." (1 कुरिन्थियों 8:13)।

IX. उपपद (एक शब्द वर्ग)

A. कोइन यूनानी में निश्चयवाचक उपपद "the" का अंग्रेजी के समान प्रयोग था। इसका मूल कार्य "एक सूचक" के समान था, एक शब्द, नाम या वाक्यांश पर ध्यान आकर्षित करने का एक तरीका। नए नियम में इसका प्रयोग भिन्न-भिन्न लेखकों ने भिन्न- भिन्न प्रकार से किया है। निश्चयवाचक उपपद भी इस प्रकार कार्य कर सकता है

1. एक संकेतवाचक सर्वनाम की तरह एक विपरीत रचना;
2. पहले से प्रस्तुत विषय या व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए एक संकेत के रूप में;
3. एक संयोजक क्रिया के साथ एक वाक्य में कर्त्ता की पहचान करने के तरीके के रूप में। उदाहरण: "परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना 4:24); "परमेश्वर ज्योति है" (1 यूहन्ना 1:5); "परमेश्वर प्रेम है" (4:8,16)।

B. कोइन यूनानी में अंग्रेजी "a" या "an" जैसा अनिश्चयवाचक उपपद नहीं था। निश्चयवाचक उपपद की अनुपस्थिति का अर्थ हो सकता है

1. किसी चीज़ की विशेषताओं या गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करना
2. किसी चीज़ की श्रेणी पर ध्यान केंद्रित करना

C. नये नियम के लेखक व्यापक रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि उपपद को किस प्रकार प्रयुक्त किया गया।

X. यूनानी नये नियम में महत्त्व दिखाने के तरीके

A. नये नियम में भिन्न-भिन्न लेखकों में महत्त्व दिखाने की तकनीकों में भिन्नता है। सबसे सुसंगत और औपचारिक लेखक लूका और इब्रानियों के लेखक थे।

B. हमने पहले कहा है कि अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक मानक और महत्त्व के लिए अचिह्नित था, लेकिन किसी भी अन्य काल, वाच्य या भाव का व्याख्यात्मक महत्त्व था। इसका अर्थ यह नहीं है कि अनिर्दिष्टकाल कर्तृवाच्य निर्देशात्मक अक्सर एक महत्त्वपूर्ण व्याकरणिक अर्थ में प्रयोग नहीं किया जा रहा था। (उदाहरण: रोमियों 6:10 [दो बार])।

C. कोइन यूनानी में शब्द क्रम
   1. कोइन यूनानी एक उपेक्षित भाषा थी जो शब्द क्रम पर अंग्रेजी की तरह निर्भर नहीं थी। इसलिए, लेखक सामान्य अपेक्षित क्रम को बदल सकता था यह दर्शाने के लिए
      a. लेखक पाठक के लिए जिस बात पर महत्त्व देना चाहता था
      b. लेखक ने जो सोचा वह पाठक के लिए आश्चर्यजनक होगा
      c. लेखक ने जिस बात को गहराई से महसूस किया
   2. यूनानी में सामान्य शब्द क्रम एक अस्थिर मुद्दा है। हालाँकि, कथित सामान्य क्रम है:
      a. संयोजक क्रियाओं के लिए
         (1) क्रिया
         (2) कर्त्ता
         (3) पूरक
      b. सकर्मक क्रियाओं के लिए
         (1) क्रिया
         (2) कर्त्ता
         (3) कर्म
         (4) अप्रत्यक्ष कर्म
         (5) पूर्वसर्गिक वाक्यांश
      c. संज्ञा वाक्यांशों के लिए
         (1) संज्ञा
         (2) संशोधक
         (3) पूर्वसर्गिक वाक्यांश
   3. शब्द क्रम एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण टीका संबंधी मुद्दा हो सकता है। उदाहरण:
      a. "उन्होंने मुझे और बरनाबास को संगति का दाहिना हाथ दिया।" वाक्यांश "संगति का दाहिना हाथ" इसके महत्त्व को दर्शाने के लिए विभाजित और अग्रीकृत है (गलातियों 2:9)।
      b. "मसीह के साथ" पहले रखा गया। उसकी मृत्यु महत्त्वपूर्ण थी (गलातियों 2:20)
      c. "बार बार तथा अनेक प्रकार से" (इब्रानियों 1:1) को पहले रखा गया ।परमेश्वर ने स्वयं को कैसे प्रकट किया यह इस बात की विषमता है, प्रकटीकरण के तथ्य की नहीं।

D. सामान्यतः कुछ सीमा तक इनके द्वारा महत्त्व दिखाया गया था
   1. सर्वनाम की पुनरावृत्ति जो क्रिया के विभक्त रूप में पहले से ही मौजूद था। उदाहरण: "मैं, स्वयं, अवश्य तुम्हारे साथ रहूँगा. . ." (मत्ती 28:20)।
   2. शब्दों, वाक्यांशों, खंडों या वाक्यों के बीच अपेक्षित सम्मुच्यबोधक, या अन्य संयोजक रचना की अनुपस्थिति। यह एक संयोजक-लोप अलंकार ("बाध्य नहीं") कहा जाता है। संयोजक रचना अपेक्षित थी, इसलिए इसकी अनुपस्थिति ध्यान आकर्षित करेगी। उदाहरण:
      a. धन्य वचन, मत्ती 5:3ff (सूची पर महत्त्व दिया)
      b. यूहन्ना 14:1 (नया विषय)
      c. रोमियों 9:1 (नया खंड)
      d. 2 कुरिन्थियों 12:20 (सूची पर महत्त्व दिया)
   3. किसी दिए गए संदर्भ में मौजूद शब्दों या वाक्यांशों की पुनरावृत्ति। उदाहरण: "उसकी महिमा की स्तुति" (इफिसियों 1:6, 12 और 14)। इस वाक्यांश का प्रयोग त्रिएकत्व के प्रत्येक व्यक्ति के कार्य को दिखाने के लिए किया गया था।

4. शब्दों के बीच एक मुहावरे या शब्द (ध्वनि) क्रीड़ा का प्रयोग
    a. व्यंजना - वर्जित विषयों के लिए स्थानापन्न शब्द, जैसे मृत्यु के लिए "नींद" (यूहन्ना 11:11-14) या "पैर" पुरुष जननांग के लिए (रूत 3:7-8; 1 शमूएल 24:3)।
    b. शब्द-बाहुल्य - परमेश्वर के नाम के लिए स्थानापन्न शब्द, जैसे "स्वर्ग का राज्य" (मत्ती 3:2) या "आकाशवाणी" (मत्ती 3:17)।
    c. अलंकार
        (1) असंभव अतिशयोक्ति (मत्ती 3:9; 5:29-30; 19:24)
        (2) सौम्य अतिशयोक्तिपूर्ण कथन (मत्ती 3:5; प्रेरितों के काम 2:36)
        (3) मानवीकरण (1 कुरिन्थियों 15:55)
        (4) विडंबना (गलातियों 5:12)
        (5) काव्यात्मक अवतरण (फिलिप्पियों 2:6-11)
        (6) शब्दों के बीच ध्वनि क्रीड़ाएँ
            (a) "कलीसिया"
                (i) "कलीसिया" (इफिसियों 3:21)
                (ii) "बुलाहट" (इफिसियों 4:1,4)
                (iii) "बुलाए गए" (इफिसियों 4:1,4)
            (b) "स्वतंत्र"
                (i) "स्वतंत्र स्त्री" (गलातियों 4:31)
                (ii) "स्वतंत्रता" (गलातियों 5:1)
                (iii) "स्वतंत्र" (गलातियों 5:1)
    d. मुहावरेदार भाषा - वह भाषा जो सामान्य रूप से सांस्कृतिक और भाषा विशिष्ट है:
        (1) "भोजन" का आलंकारिक प्रयोग (यूहन्ना 4:31-34)
        (2) "मंदिर" का आलंकारिक प्रयोग (यूहन्ना 2:19; मत्ती 26:61)
        (3) दया का इब्रानी मुहावरा, "अप्रिय" (उत्पत्ति 29:31;व्यवस्थाविवरण 21:11; लूका 14:36; यूहन्ना 12:25; रोमियों 9:13)
        (4) "सब" बनाम "बहुतों" यशायाह 53:6 ("सब") की तुलना 53:11 और 12 ("बहुतों") के साथ करें। शब्द समानार्थी हैं जैसा रोमियों 5:18 और 19 दर्शाते हैं।
5. एक शब्द के बजाय एक पूर्ण भाषाई वाक्यांश का प्रयोग। उदाहरण: "प्रभु यीशु मसीह।"
6. *autos* का विशेष प्रयोग
    a. जब उपपद के साथ (गुणवाचक स्थिति) हो, इसका अनुवाद किया गया "वही"।
    b. जब उपपद के बिना (विधेय की स्थिति) हो, अवधारक निजवाचक सर्वनाम के रूप में इसका अनुवाद किया गया- "स्वयं (पुल्लिंग)," "स्वयं (स्त्रीलिंग)," या "स्वयं (नपुसकलिंग)।"

E. गैर-यूनानी पढ़ने वाला बाइबल छात्र कई तरीकों से महत्त्व (जोर) की पहचान कर सकता है:
1. एक विश्लेषणात्मक शब्द-संग्रह और अंतः पंक्तिक यूनानी/अंग्रेजी पाठ्य का प्रयोग।
2. अंग्रेज़ी अनुवादों की तुलना, विशेष रूप से अनुवादों के भिन्न सिद्धांतों से। उदाहरण: "शब्दशः" अनुवाद (KJV, NKJV, ASV, NASB, RSV, NRSV) की तुलना "सक्रिय समतुल्य" (Williams, NIV, NEB, REB, JB, NJB,TEV) के साथ। यहाँ *The Bible in Twenty-Six Translations* published by Baker, एक अच्छी सहायक होगी।
3. *The Emphasized Bible* by Joseph Bryant Rotherham (Kregel, 1994) का प्रयोग।
4. एक बहुत ही शाब्दिक अनुवाद का प्रयोग
    a. *The American Standard Version* of 1901
    b. *Young's Literal Translation of the Bible* by Robert Young (Guardian Press, 1976).

व्याकरण का अध्ययन थकाऊ है लेकिन उचित व्याख्या के लिए आवश्यक है। ये संक्षिप्त परिभाषाएँ, टिप्पणियाँ और उदाहरण गैर-यूनानी पढ़ने वाले व्यक्तियों को इस खण्ड में उपलब्ध व्याकरणिक टिप्पणियों का प्रयोग करने के लिए

प्रोत्साहित और सुसज्जित करने के लिए हैं। निश्चित रूप से इन परिभाषाओं को अति सरलीकृत किया जाता है। उन्हें एक हठधर्मी, अनम्य तरीके से नहीं, परन्तु नए नियम के वाक्यविन्यास की अधिक समझ की ओर बढ़ने के लिए एक सोपान के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए। उम्मीद है कि ये परिभाषाएँ नये नियम पर पारिभाषिक टिप्पणियों जैसे अन्य अध्ययन साधनों की टिप्पणियों को समझने के लिए पाठकों को सक्षम बनाएँगी।

हमें बाइबल के पाठों में मिली जानकारी के आधार पर अपनी व्याख्या को सत्यापित करने में सक्षम होना चाहिए। व्याकरण इन बातों में से सबसे अधिक उपयोगी है; अन्य बातों में ऐतिहासिक विन्यास, साहित्यिक संदर्भ, समकालीन शब्द प्रयोग और समानांतर अवतरण होंगे।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

पाठ्य समीक्षा

यह विषय इस प्रकार से व्यवहार में लाया जाएगा कि इस टिप्पणी में पाए गए पाठ्य टिप्पणियों की व्याख्या की जा सके। निम्नलिखित रूपरेखा का प्रयोग किया जाएगा।

I. हमारी अंग्रेजी बाइबल के पाठ्य स्रोत
   A. पुराना नियम
   B. नया नियम
II. "लघु समीक्षा" जिसे "पाठ्य समीक्षा" भी कहते हैं, की समस्याओं और सिद्धांतों का संक्षिप्त वर्णन।
III. आगे पढ़ने के लिए सुझाए गए स्रोत

I. हमारी अंग्रेजी बाइबल के पाठ्य स्रोत
   A. पुराना नियम
      1. मैसोरेटिक टेक्स्ट (MT) – इब्रानी व्यंजन पाठ रब्बी एक्बिा द्वारा 100 ई. में निर्धारित किया गया था। स्वर बिंदु, उच्चारण, हाशिये की टिप्पणी, विराम चिह्न और तंत्र बिंदु छठी शताब्दी ई. में जोड़े जाने लगे और नौवीं शताब्दी ई. में पूर्ण किए गए। यह मैसोरीट्स नामक यहूदी विद्वानों के एक परिवार द्वारा किया गया था। वे जिस पाठ्य रूप का प्रयोग करते थे, वह उसी प्रकार था जैसे कि मिश्नाह, तल्मूद, टार्गम्स, पेशेट और वुल्गेट।
      2. सेप्टुआजिंट (LXX) - परंपरा कहती है कि राजा टॉलेमी II (285-246 ई.पू.) के प्रायोजन के तहत अलेक्जेंड्रिया पुस्तकालय के लिए 70 दिनों में 70 यहूदी विद्वानों द्वारा सेप्टुआजिंट प्रस्तुत किया गया था। अनुवाद का कथित तौर पर अलेक्जेंड्रिया में रहने वाले एक यहूदी अगुवे द्वारा अनुरोध किया गया था। यह परंपरा "लेटर ऑफ अरिस्टियास" से आई है। LXX अक्सर रब्बी एक्बिा (MT) के पाठ से भिन्न इब्रानी पाठ परंपरा पर आधारित था।
      3. डेड सी स्क्रोल (DSS) – रोमी ई.पू. काल (200 ई.पू. से 70 ई. तक) में मृत सागर चीरक (DSS) यहूदी अलगाववादियों के एक संप्रदाय जो "एसेनेस" कहलाता है, के द्वारा लिखे गए थे। मृत सागर के आसपास कई स्थलों में पाई जाने वाली इब्रानी पांडुलिपियाँ, MT और LXX दोनों के पीछे कुछ अलग इब्रानी पाठ्य परिवार दिखाती हैं।
      4. इन ग्रंथों की तुलना ने व्याख्याकारों को पुराने नियम को समझने में कैसे मदद की है, इसके कुछ विशिष्ट उदाहरण हैं।
         a. LXX ने अनुवादकों और विद्वानों की MT को समझने में मदद की है
            (1) यशायाह 52:14 का LXX, "कई <u>उसे</u> देखकर आश्चर्यचकित होंगे।"
            (2) यशायाह 52:14 का MT, "बहुत-से लोग <u>तुझे</u> देखकर चकित हुए।"
            (3) यशायाह 52:15 में LXX के सर्वनाम भेद की पुष्टि की गई है
               (a) LXX, "इस प्रकार वह अनेक जातियों को चकित करेगा"
               (b) MT, "इसलिए वह कई जातियों को छिड़कता है"
         b. DSS ने अनुवादकों और विद्वानों की MT को समझने में मदद की है
            (1) यशायाह 21:8 का DSS, "तब पहरेदार दहाड़ा, मैं बुर्ज पर खड़ा हूँ. . ."
            (2) यशायाह 21:8 का MT, "और मैं एक सिंह के समान दहाड़ा, हे प्रभु, मैं प्रतिदिन लगातार बुर्ज पर खड़ा रहा. . ."
         c. LXX और DSS दोनों ने यशायाह 53:11 को स्पष्ट करने में मदद की है
            (1) LXX और DSS, "अपनी आत्मा की मनोव्यथा वह प्रकाश देखेगा, वह संतुष्ट होगा"
            (2) MT, "वह देखेगा. . .उसकी आत्मा की मनोव्यथा को, वह संतुष्ट होगा"
   B. नया नियम
      1. यूनानी नए नियम की सभी या कुछ भागों की 5,300 से अधिक पांडुलिपियाँ विद्यमान हैं। लगभग 85 पपीरस पर लिखी गई हैं और 268 पांडुलिपियाँ हैं जो पूर्ण बृहदक्षरों (uncials) में लिखी हैं। बाद में, नौवीं शताब्दी ई. के लगभग.., एक छोटे अक्षर की लिपि (minuscule) विकसित की गई थी। लिखित रूप में यूनानी पांडुलिपियों की संख्या 2,700 है। हमारे पास आराधना में प्रयोग किए जाने वाले पवित्रशास्त्र के पाठों की सूचियों की लगभग

2,100 प्रतियाँ हैं जिसे हम भजन पुस्तिका कहते हैं।

2. पपीरस पर लिखी गई लगभग 85 यूनानी पांडुलिपियाँ जिनमें नियम के कुछ हिस्से हैं, संग्रहालयों में रखी गई हैं। कुछ दूसरी शताब्दी ई से दिनांकित हैं, लेकिन अधिकांश तीसरी और चौथी शताब्दी ई. से हैं। इनमें से किसी भी MSS में पूरा नया नियम नहीं है। सिर्फ इसलिए कि ये नये नियम की सबसे पुरानी प्रतियाँ हैं इसका स्वतः यह अर्थ नहीं है कि उनके कम पाठभेद हैं। इनमें से कईयों की स्थानीय प्रयोग के लिए तेजी से प्रतिलिपियाँ बनाई गईं। प्रक्रिया में सावधानी नहीं बरती गई। इसलिए, उनके कई पाठभेद हैं।
3. कोडेक्स सिनैटिकस, जिसे इब्रानी अक्षर א (*aleph*) या (01) द्वारा जाना जाता है, सीनै पहाड़ पर सेंट कैथरीन मठ में टिसचेन्डोर्फ द्वारा पाया गया। यह चौथी शताब्दी ई. से दिनांकित है। और इसमें पुराने नियम और यूनानी नये नियम दोनों के LXX शामिल हैं। यह "अलेक्जेंड्रियन टेक्स्ट" प्रकार का है।
4. कोडेक्स एलेक्जेंड्रिनस, जिसे "A" या (02) के रूप में जाना जाता है, एक पाँचवीं शताब्दी की यूनानी पांडुलिपि है जो मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में पाई गई थी।
5. कोडेक्स वेटिकनस, जिसे "B" या (03) के रूप में जाना जाता है, रोम में वेटिकन के पुस्तकालय में पाया जाता है और चौथी शताब्दी ई. के मध्य से दिनांकित है। इसमें पुराने नियम और यूनानी नये नियम दोनों का LXX है। यह "अलेक्जेंड्रियन टेक्स्ट" प्रकार का है।
6. कोडेक्स एफ्रेमी, जिसे "C" या (04) के रूप में जाना जाता है, पाँचवीं शताब्दी की यूनानी पांडुलिपि थी जो आंशिक रूप से नष्ट हो गई थी।
7. कोडेक्स बेज़ेई, जिसे "D" या (05) के रूप में जाना जाता है, एक पाँचवीं या छठी शताब्दी की यूनानी पांडुलिपि। यह प्रमुख रूप से "पश्चिमी पाठ" को प्रस्तुत करती है। इसमें कई परिवर्धन हैं और किंग जेम्स अनुवाद के लिए मुख्य यूनानी गवाह थी।
8. NT MSS को तीन, संभवतः चार, कुछ विशेषताओं को साझा करने वाले वर्गों में बाँटा जा सकता है।
   a. मिस्र से अलेक्जेंडरियन टेक्स्ट
      (1) P^{75}, P^{66} (लगभग 200 ई.), जो सुसमाचार दर्ज़ करता है
      (2) P^{46} (लगभग 225 ई.) जो पौलुस के पत्रों को दर्ज़ करता है
      (3) P^{72} (लगभग 225-250 ई.) जो पतरस और यहूदा को दर्ज़ करता है
      (4) कोडेक्स B, वेटिकनस कहलाता है (लगभग 325 ई.) को दर्ज़ करता है, जिसमें सम्पूर्ण पुराना नियम और नया नियम शामिल है
      (5) इस पाठ प्रकार से ओरिजन के उद्धरण
      (6) अन्य MSS जो इस पाठ प्रकार को दर्शाते हैं वे हैं א, C, L, W, 33
   b. उत्तरी अफ्रीका से पश्चिमी पाठ
      (1) उत्तरी अफ्रीकी कलीसिया पिताओं, टर्टुलियन, साइप्रियन,के उद्धरण और पुराने लातीनी अनुवाद
      (2) इरेनयूस के उद्धरण
      (3) तातियन और पुराने सीरियाई अनुवाद के उद्धरण
      (4) कोडेक्स D "बेज़ेई" इस पाठ प्रकार का अनुसरण करता है
   c. कॉन्स्टेंटिनोपल से पूर्वी बीजान्टिन पाठ
      (1) यह पाठ प्रकार 5,300 MSS के 80% से अधिक में परिलक्षित होता है
      (2) जिसे सीरिया के अन्ताकिया के कलीसिया पिताओं, कप्पदुकियों, क्राइसोस्टोम, और थिरोडोरेट द्वारा उद्धृत किया गया है
      (3) कोडेक्स A, केवल सुसमाचारों में
      (4) कोडेक्स E (आठवीं शताब्दी) सम्पूर्ण नये नियम के लिए।
   d. चौथा संभावित प्रकार पलस्तीन से "सीजेरियन" है
      (1) यह मुख्य रूप से केवल मरकुस में देखा जाता है
      (2) इसके कुछ गवाह P^{45} और W हैं

II. "लघु समीक्षा" या "पाठ्य समीक्षा" की समस्याएँ और सिद्धांत

A. पाठभेद कैसे बने
   1. असावधानीवश या आकस्मिक (अधिकतर घटनाएँ)
      a. हाथ की नकल करते समय नज़र चूकना जिसमें दो समान शब्दों के दूसरे उदाहरण को पढ़ लिया जाता है और इस तरह बीच के सभी शब्द छूट जाते हैं (होम्योटाइलूटोन)
         (1) एक दोहरे अक्षर शब्द या वाक्यांश को छोड़ने में नज़र चूकना (हैप्लोग्राफ़ी)
         (2) यूनानी पाठ के वाक्यांश या पंक्ति को दोहराने में दिमाग चूकना (डिट्टोग्राफ़ी)
      b. मौखिक श्रुतलेख द्वारा नकल करने में सुनने में चूकना जिसमें वर्तनी गलत हो जाती है (इटासिस्म)। अक्सर गलत वर्तनी का तात्पर्य या वर्तनी, एक समान दिखने वाला यूनानी शब्द होता है।
      c. आरंभिक यूनानी ग्रंथों में कोई अध्याय या पद्य विभाजन नहीं था, शब्दों के बीच बहुत कम या कोई विराम चिह्न और कोई विभाजन नहीं था। अक्षरों को विभिन्न स्थानों पर विभाजित करके अलग-अलग शब्द बनाना संभव है।
   2. साभिप्राय
      a. नकल किए गए पाठ के व्याकरणिक रूप में सुधार करने के लिए परिवर्तन किए गए।
      b. अन्य बाइबल पाठों के साथ पाठ की पुष्टि करने के लिए परिवर्तन किए गए थे (समानंतरों का सामंजस्य)
      c. दो या अधिक प्रकार के पाठभेद पठनों को एक लंबे संयुक्त पाठ में जोड़कर परिवर्तन किए गए (सम्मिश्रण)
      d. पाठ में एक कथित समस्या को सुधारने के लिए परिवर्तन किए गए (तुलना 1 कुरिन्थियों 11:27 और 1 यूहन्ना 5:7-8)
      e. पाठ के ऐतिहासिक विन्यास या उचित व्याख्या के रूप में कुछ अतिरिक्त जानकारी को एक लेखक द्वारा हाशिये में रखा गया, लेकिन एक दूसरे लेखक द्वारा पाठ में रखा गया (तुलना यूहन्ना 5:4)
B. पाठ्य समीक्षा के मूल सिद्धांत (किसी पाठ का मूल पठन निर्धारित करने के लिए तार्किक निर्देश जब पाठभेद मौजूद हों)
   1. सबसे अजीब या व्याकरणिक रूप से असामान्य पाठ संभवतः मूल है
   2. सबसे छोटा पाठ संभवतः मूल है
   3. पुराने पाठ पर, मूल पाठ से उसकी ऐतिहासिक निकटता के कारण, अधिक भार दिया जाता है, बाकी सब कुछ समान होने पर।
   4. MSS जो भौगोलिक रूप से विविध हैं मूल पठन हैं।
   5. सैद्धान्तिक रूप से कमजोर पाठ, विशेष रूप से पांडुलिपि परिवर्तन की अवधि के प्रमुख धर्मशास्त्रीय चर्चाओं से संबंधित, जैसे कि 1 यूहन्ना 5:7-8 में त्रिएकत्व, पसंद किए जाने चाहिए।
   6. वह पाठ जो अन्य पाठभेदों की उत्पत्ति को सबसे अच्छी तरह से समझा सकता है।
   7. दो उद्धरण जो इन चिन्ताजनक पाठभेदों में संतुलन दिखाने में मदद करते हैं
      a. J. Harold Greenlee's की पुस्तक, *Introduction to New Testament Criticism*, p. 68:
         "कोई भी मसीही सिद्धांत एक विवादास्पद पाठ पर आधारित नहीं है; और नये नियम के छात्र को अपने पाठ के प्रेरित मूल से अधिक रूढ़िवादी या सैद्धान्तिक रूप से मजबूत होने की इच्छा से सावधान रहना चाहिए।"
      b. W. A. Criswell ने *The Birmingham News* के Greg Garrison को बताया कि वह (क्रिसवेल) इस बात को नहीं मानते कि बाइबल का हर शब्द प्रेरित है, "कम से कम हर शब्द जो सैकड़ों अनुवादकों द्वारा आधुनिक जनता को दिया गया है।" क्रिसवेल ने कहा: "मैं पाठ्य समीक्षा में बहुत विश्वास करता हूँ। जैसा कि, मुझे लगता है, मरकुस के 16 वें अध्याय का अंतिम आधा भाग कुपन्थ है: यह प्रेरित नहीं है, यह सिर्फ मनगढ़ंत है. . .जब आप उन पांडुलिपियों की तुलना करते हैं बहुत पुराने समय में , मरकुस की पुस्तक के उपसंहार के जैसी कोई बात नहीं थी। किसी ने इसे जोड़ा. . ."

         SBC त्रुटिहीनतावादियों के कुलपिता ने यह भी दावा किया कि यूहन्ना 5 में बैतहसदा के कुण्ड पर यीशु के विवरण में "प्रक्षेप" भी स्पष्ट है। और उन्होंने यहूदा की आत्महत्या के दो अलग-अलग विवरणों पर चर्चा की (तुलना मत्ती 27 और प्रेरितों के काम 1): "यह आत्महत्या का सिर्फ एक अलग दृष्टिकोण है," क्रिसवेल ने कहा। "अगर यह बाइबल में है, तो इसके लिए एक स्पष्टीकरण है। और यहूदा की आत्महत्या के दो विवरण

बाइबल में हैं।" क्रिसवेल ने कहा, "पाठ्य समीक्षा अपने आप में एक अद्‌भुत विज्ञान है। यह अल्पकालिक नहीं है, यह असंगत नहीं है। यह गतिशील और केंद्रीय है. . ."

III. पांडुलिपि समस्याएँ (पाठ्य समीक्षा)

A. आगे पढ़ने के लिए सुझाए गए स्रोत:

1. *Biblical Criticism: Historical, Literary and Textual*, by R.H. Harrison
2. *The Text of the New Testament: Its Transmission, Corruption and Restoration* by Bruce M. Metzger
3. *Introduction to New Testament Textual Criticism*, by J. H Greenlee

Copyright © 2013 Bible Lessons International

शब्दकोष

अभिग्रहणवाद। यह यीशु के देवता के साथ संबंध के आरम्भिक विचारों में से एक था। यह मूलतः यह दावा करता है कि यीशु हर तरह से एक सामान्य मनुष्य था और उसके बपतिस्मे पर (तुलना मत्ती 3:17; मरकुस 1:11) या उसके पुनरुत्थान पर परमेश्वर द्वारा विशेष अर्थ में अपनाया गया था (रोमियों 1:4)। यीशु ने ऐसा अनुकरणीय जीवन जिया कि परमेश्वर ने किसी समय, (बपतिस्मा, पुनरुत्थान) उसे अपने "पुत्र" के रूप में अपना लिया (तुलना रोमियों 1:4; फिलिप्पियों 2:9)। यह एक प्रारंभिक कलीसिया और आठवीं शताब्दी का अल्पसंख्यक दृष्टिकोण था। परमेश्वर के एक मनुष्य बनने के बजाय (देहधारण) यह उलटा हो जाता है और अब मनुष्य परमेश्वर बन जाता है!

यह शब्दों में अभिव्यक्त करना मुश्किल है कि यीशु, परमेश्वर पुत्र, पूर्व-विद्यमान देवता को एक अनुकरणीय जीवन के लिए किस प्रकार पुरस्कृत या गुणानुवादित किया गया। यदि वह पहले से ही परमेश्वर था, तो उसे कैसे पुरस्कृत किया जा सकता है? यदि उसके पास पूर्व-विद्यमान दिव्य महिमा थी, तो उसे और अधिक आदर कैसे दिया जा सकता है? हालाँकि यह समझ पाना हमारे लिए कठिन है, पिता ने किसी तरह यीशु को पिता की इच्छा को पूर्ण रूप से पूरा करने के लिए एक विशेष अर्थ में आदर दिया।

अलेक्जेंड्रियाई शिक्षा। बाइबल की व्याख्या का यह तरीका दूसरी शताब्दी ई. में मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में विकसित किया गया था। यह फिलो के मूल व्याख्यात्मक सिद्धांतों का प्रयोग करता है, जो प्लेटो का एक अनुयायी था। इसे अक्सर अन्योक्तिपरक विधि कहा जाता है। सुधार के समय तक कलीसिया में इसका प्रभुत्व था। इसके सबसे समर्थ प्रस्तावक ओरिजन और अगस्तीन थे। Moises Silva, *Has The Church Misread The Bible?* (Academic, 1987) देखें

अलेक्जेंड्रिनस। अलेक्जेंड्रिया, मिस्र की इस पाँचवीं शताब्दी की यूनानी पांडुलिपि में पुराना नियम, अपोक्रिफा, और अधिकांश नया नियम शामिल है। यह पूरे यूनानी नये नियम (मत्ती, यूहन्ना और 1 कुरिन्थियों के कुछ हिस्सों को छोड़कर) के हमारे प्रमुख गवाहों में से एक है। जब यह पांडुलिपि, जिसे "A" नामित किया गया है और पांडुलिपि जिसे "B" नामित किया गया है (वेटिकनस) एक पठन पर सहमत होते हैं, तो इसे अधिकांश मामलों में अधिकांश विद्वानों द्वारा मूल माना जाता है।

अन्योक्ति। यह बाइबल की व्याख्या का एक प्रकार है, जो मूलतः अलेक्जेंड्रियाई यहूदी धर्म के अंतर्गत विकसित हुआ। इसे अलेक्जेंड्रिया के फिलो ने लोकप्रिय बनाया था। इसका मूल जोर बाइबल के ऐतिहासिक विन्यास और/या साहित्यिक संदर्भ को अनदेखा करके पवित्रशास्त्र को किसी की संस्कृति या दार्शनिक प्रणाली के लिए प्रासंगिक बनाने की एक इच्छा है। यह पवित्रशास्त्र के प्रत्येक पाठ के पीछे एक छिपा हुआ या आत्मिक अर्थ ढूँढ़ताहै। यह स्वीकारा जाना चाहिए कि यीशु ने मत्ती 13 में, और पौलुस ने, गलातियों 4 में, सत्य को व्यक्त करने के लिए अन्योक्ति का प्रयोग किया। यह, हालाँकि, प्ररूपविज्ञान के रूप में था, पूरी तरह से एक अन्योक्ति नहीं।

विश्लेषणात्मक शब्द-संग्रह। यह एक प्रकार का अनुसंधान साधन है, जो नए नियम में प्रत्येक यूनानी रूप की पहचान करने में किसी को सहायक होता है। यह यूनानी वर्णमाला क्रम में, रूपों और बुनियादी परिभाषाओं का संकलन है। एक अंतः पंक्तिक अनुवाद के संयोजन में, यह गैर-यूनानी पाठक विश्वासियों को व्याकरणिक और वाक्यविन्यास रूपों का विश्लेषण करने के लिए सहायता करता है।

पवित्रशास्त्र की समरूपता। यह वह वाक्यांश है जिसका प्रयोग इस दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए किया जाता है कि सम्पूर्ण बाइबल परमेश्वर से प्रेरित है और इसलिए विरोधाभासी नहीं बल्कि पूरक है। यह पूर्व-कल्पित प्रतिज्ञान बाइबल के पाठ की व्याख्या करने में समानांतर अवतरणों का प्रयोग करने के लिए एक आधार है।

अस्पष्टता। यह उस अनिश्चितता को संदर्भित करता है जो एक लिखित दस्तावेज़ में आती है जब दो या अधिक संभावित अर्थ होते हैं या जब दो या अधिक बातों का एक ही समय में उल्लेख किया जा रहा हो। यह संभव है कि यूहन्ना उद्देश्यपूर्ण अस्पष्टता (दोहरे अर्थवाले) का प्रयोग करता है।

मानवरूपी। अर्थ "मानव के साथ जुड़ी हुई विशेषताओं वाला", इस शब्द का प्रयोग परमेश्वर के बारे में हमारी धार्मिक भाषा का वर्णन करने के लिए किया जाता है। यह मानव जाति के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द से आया है। इसका अर्थ है कि

हम परमेश्वर के बारे में ऐसे बोलते हैं जैसे कि वह एक मनुष्य था। परमेश्वर का वर्णन शारीरिक, समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक शब्दों में किया गया है जो मानव से संबंधित हैं (तुलना उत्पत्ति 3:8; 1 राजाओं 22:19-23)। यह, ज़ाहिर है, केवल एक समरूपता है। हालाँकि, हमारे पास प्रयोग करने के लिए मानवीय शब्दों के अलावा कोई श्रेणी या शब्द नहीं हैं। इसलिए, परमेश्वर का हमारा ज्ञान, यद्यपि सत्य है, सीमित है।

अन्ताकियाई शिक्षा। बाइबल की व्याख्या की इस पद्धति का विकास अन्ताकिया, सीरिया में अलेक्जेंड्रिया, मिस्र की अन्योक्तिपरक विधि की प्रतिक्रिया के रूप में तीसरी शताब्दी ई. में हुआ था। इसका मूल जोर बाइबल के ऐतिहासिक अर्थ पर ध्यान केंद्रित करना था। इसने बाइबल को सामान्य, मानवीय साहित्य के रूप में व्याख्यायित किया। यह पद्धति इस विवाद में शामिल हो गई कि क्या मसीह की दो प्रकृतियाँ (नेस्टोरियनवाद) थी या एक प्रकृति (सम्पूर्ण परमेश्वर और सम्पूर्ण मनुष्य)। इसे रोमन कैथोलिक कलीसिया द्वारा कुपन्थी कहा गया और फारस में स्थानांतरित कर दिया गया था लेकिन शिक्षा का महत्त्व बहुत कम था। इसके बुनियादी व्याख्या संबंधी सिद्धांत बाद में प्राचीन प्रोटेस्टेंट सुधारकों (लूथर और केल्विन) के व्याख्यात्मक सिद्धांत बन गए।

विरोधात्मक। यह तीन वर्णनात्मक शब्दों में से एक है जिसका प्रयोग इब्रानी काव्य की पंक्तियों के बीच संबंध को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह कविता की उन पंक्तियों से संबंधित है जो अर्थ में विपरीत हैं (तुलना नीतिवचन 10:1, 15:1)।

भविष्यसूचक साहित्य। यह मुख्य रूप से, संभवतः विशिष्ट रूप से, एक यहूदी शैली थी। यह विदेशी जगत की शक्तियों द्वारा यहूदियों पर आक्रमण और कब्जे के समय में प्रयोग किया जाने वाला एक गूढ़ प्रकार का लेखन था। यह मानता है कि एक व्यक्तिगत,छुटकारा देनेवाले परमेश्वर ने संसार की घटनाओं को बनाया और नियंत्रित करता है, और यह कि इस्राएल में उसकी विशेष रुचि और ध्यान है। यह साहित्य परमेश्वर के विशेष प्रयास के माध्यम से अंतिम विजय का वादा करता है।

यह कई गूढ़ शब्दों के साथ अत्यधिक प्रतीकात्मक और काल्पनिक है। इसने अक्सर रंगों, संख्याओं, दर्शनों, स्वप्नों, दैवीय मध्यस्थता, गुप्त कोड शब्दों और अक्सर अच्छे और बुरे के बीच एक स्पष्ट द्वैतवाद में सत्य को व्यक्त किया।

इस शैली के कुछ उदाहरण हैं (1) पुराने नियम में, यहेजकेल (अध्याय 36-48), दानिय्येल (अध्याय 7-12), जकर्याह; और (2) नये नियम में, मत्ती 24; मरकुस 13; 2 थिस्सलुनीकियों 2 और प्रकाशितवाक्य।

पक्ष समर्थक (पाशंसक विद्या)। यह "न्यायिक बचाव" के लिए यूनानी मूल से है। यह धर्मशास्त्र में एक विशिष्ट अध्ययन का विषय है जो मसीही विश्वास के लिए प्रमाण और उचित तर्क देने का प्रयास करता है।

A priori. मूल रूप से यह "पूर्वधारणा" शब्द का पर्याय है। इसमें पहले से स्वीकार की गई परिभाषाओं, सिद्धांतों या पदों पर जिन्हें सच माना गया है, तर्क-वितर्क निहित है । यह वह है जिसे निरीक्षण या विश्लेषण के बिना स्वीकार किया जाता है।

एरियनवाद। अरियस तीसरी और शुरुआती चौथी शताब्दी में अलेक्जेंड्रिया मिस्र में कलीसिया में एक प्रेस्बिटेर थे। उन्होंने पुष्टि की कि यीशु पूर्व विद्यमान था, लेकिन दिव्य नहीं (पिता के समान सार का नहीं), संभवतः नीतिवचन 8:22-31 का अनुसरण करते हुए। अलेक्जेंड्रिया के बिशप द्वारा उन्हें चुनौती दी गई, जिन्होंने एक विवाद शुरू किया (318 ई.) जो कई वर्षों तक चला। एरियनवाद पूर्वी कलीसिया का आधिकारिक पंथ बन गया। 325 ई. में निकैया की परिषद ने अरियस की निंदा की और पुत्र की पूर्ण समानता और देवत्व का दावा किया।

अरस्तू। वह प्राचीन यूनान के दार्शनिकों में से एक, प्लेटो के शिष्य और सिकंदर महान के शिक्षक थे। उनका प्रभाव, आज भी, आधुनिक अध्ययन के कई क्षेत्रों तक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने अवलोकन और वर्गीकरण के माध्यम से ज्ञान पर जोर दिया। यह वैज्ञानिक पद्धति के सिद्धांतों में से एक है।

स्वहस्त-लेख। यह बाइबल के मूल लेखनों को दिया गया नाम है। ये मूल, हस्तलिखित पांडुलिपियाँ खोई जा चुकीं हैं। केवल प्रतिलिपियों की प्रतिलिपियाँ ही बची है। यह इब्रानी और यूनानी पांडुलिपियों और प्राचीन संस्करणों में कई पाठ्य भेदों का स्रोत है।

बीज़ेई। यह छठी शताब्दी ई. की एक यूनानी और लातीनी पांडुलिपि है। यह "D" द्वारा नामित है इसमें सुसमाचार और प्रेरितों के काम और कुछ सामान्य पत्रियाँ शामिल हैं। कई शास्त्रीय परिवर्धन इसकी विशेषता है। यह "टेक्स्टस रिसेप्टस" के लिए आधार बनाता है, जो किंग जेम्स वर्जन के पीछे प्रमुख यूनानी पांडुलिपि परंपरा है।

पूर्वाग्रह। यह एक वस्तु या दृष्टिकोण की ओर एक मजबूत पूर्ववृत्ति का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। यह वह मानसिकता है जिसमें किसी विशेष वस्तु या दृष्टिकोण के बारे में निष्पक्षता असंभव है। यह एक पूर्वग्रहित स्थिति है।

बाइबल की सत्ता। इस शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया जाता है। इसकी परिभाषा यह है कि इस बात को समझना कि मूल लेखक ने अपने दिन में क्या कहा था और इस सत्य को हमारे दिन पर लागू करना। बाइबल की सत्ता को सामान्यतः स्वयं बाइबल को हमारे एकमात्र आधिकारिक मार्गदर्शक के रूप में देखने के रूप में परिभाषित किया गया है। हालाँकि, वर्तमान, अनुचित व्याख्याओं के प्रकाश में, मैंने बाइबल की इस अवधारणा को सीमित कर दिया है, कि इसकी ऐतिहासिक व्याकरणिक पद्धति के सिद्धांतों द्वारा व्याख्या की गई है।

कैनन (धर्म विधान)। यह एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग उन लेखनों का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जिन्हें विशिष्ट रूप से प्रेरित माना जाता है। इसका प्रयोग पुराने और नये नियम दोनों पवित्रशास्त्र के लिए किया जाता है।

मसीह केंद्रित। यह एक शब्द है जिसका प्रयोग यीशु की केन्द्रीयता का वर्णन करने के लिए किया जाता है। मैं इसे इस अवधारणा के संबंध में प्रयोग करता हूँ कि यीशु बाइबल के परमेश्वर हैं। पुराना नियम उसकी ओर संकेत करता है और वह इसकी पूर्ति और लक्ष्य है (तुलना मत्ती 5:17-48)।

टिप्पणी। यह एक विशेष प्रकार की शोध पुस्तक है। यह बाइबल की एक पुस्तक की सामान्य पृष्ठभूमि देता है। फिर यह पुस्तक के प्रत्येक विभाग का अर्थ समझाने की कोशिश करता है। कुछ लोग उपयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि अन्य लोग पाठ से अधिक पारिभाषिक तरीके से व्यवहार करते हैं। ये पुस्तकें सहायक हैं, लेकिन किसी को भी एक प्रारंभिक अध्ययन करने के बाद इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। टीकाकार की व्याख्याओं को कभी भी समालोचना के बिना स्वीकार नहीं करना चाहिए। विभिन्न धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोणों से कई टिप्पणियों की तुलना करना सामान्य रूप से सहायक है।

शब्दानुक्रमणिका। यह बाइबल अध्ययन के लिए एक प्रकार का शोध साधन है। यह पुराने और नए नियम के हर शब्द की हर घटना को सूचीबद्ध करता है। यह कई तरीकों से मदद करता है: (1) इब्रानी या यूनानी शब्द का निर्धारण जो किसी विशेष अंग्रेजी शब्द के पीछे निहित है; (2) उन अवतरणों की तुलना करना जहाँ एक ही इब्रानी या यूनानी शब्द का प्रयोग किया गया हो; (3) यह दिखाना कि कहाँ दो अलग-अलग इब्रानी या यूनानी शब्दों को एक ही अंग्रेजी शब्द द्वारा अनुवादित किया गया है; (4) कुछ पुस्तकों या लेखकों में कुछ विशेष शब्दों के प्रयोग की आवृत्ति दिखाना; (5) बाइबल में एक अवतरण खोजने में किसी की सहायता करना (तुलना Walter Clark's *How to Use New Testament Greek Study Aids,* pp. 54-55)

मृत सागर चीरक। यह इब्रानी और अरामी में लिखे गए प्राचीन ग्रंथों की एक श्रृंखला को संदर्भित करता है जो 1947 में मृत सागर के पास पाए गए थे। वे पहली शताब्दी के संप्रदायवादी यहूदी धर्म के धार्मिक पुस्तकालय थे। रोमी आक्रमण के दबाव और 60 के दशक के कट्टरपंथी युद्धों के कारण उन्हें इन चीरकों को भली भांति बंद मिट्टी के बर्तनों में छुपा दिया गया। उन्होंने हमें पहली सदी के पलस्तीन की ऐतिहासिक विन्यास को समझने में मदद की है और इस बात की पुष्टि की है कि मैसोरेटिक पाठ बहुत सटीक है, कम से कम आरम्भिक ईसा पूर्व काल में। उन्हें संक्षिप्त नाम "DSS" दिया गया है।

निगमनात्मक। तर्क या विचार की यह विधि सामान्य सिद्धांतों से हटकर तर्क शक्ति के माध्यम से विशिष्ट अनुप्रयोगों में प्रयुक्त होती है। यह आगमनात्मक तर्क, जो कि अवलोकन की गईं विशिष्टताओं से हटकर सामान्य निष्कर्षों (सिद्धांतों) के द्वारा वैज्ञानिक पद्धति को प्रतिबिंबित करता है, के विपरीत है।

द्वंद्वात्मक। यह तर्क करने का वह तरीका है जिसमें जो परस्पर विरोधी या विरोधाभासी प्रतीत होता है, उसे एक कसाव में एक साथ रखा जाता है, एक ऐसे एकीकृत उत्तर की खोज में जिसमें विरोधाभास के दोनों पक्ष शामिल हों। कई बाइबल सिद्धांतों में द्वंद्वात्मक जोड़े हैं, पूर्वनिर्धारण-स्वतंत्र इच्छा; सुरक्षा-दृढ़ता; आस्था-काम; निर्णय-शिष्यत्व; मसीही स्वतंत्रता-मसीही जिम्मेदारी।

प्रवासी। यह पारिभाषिक यूनानी शब्द है जिसका प्रयोग पलस्तीनी यहूदियों ने अन्य यहूदियों का वर्णन करने के लिए किया है जो प्रतिज्ञा के देश की भौगोलिक सीमाओं से बाहर रहते हैं।

सक्रिय समतुल्य। यह बाइबल अनुवाद का एक सिद्धांत है। बाइबल अनुवाद को "शब्द से शब्द" अनुरूपता से एक अबाध क्रम के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ "संक्षिप्त व्याख्या", जिसमें मूल शब्दों या वाक्यांशों के प्रयोग पर अधिक ध्यान न देते हुए केवल एक विचार का अनुवाद किया जाता है, हर इब्रानी या यूनानी शब्द के लिए एक अंग्रेजी शब्द दिया जाना चाहिए। इन दो सिद्धांतों के बीच में "सक्रिय समतुल्य" है जो मूल पाठ को गंभीरता से लेने का प्रयास करता है, लेकिन आधुनिक व्याकरणिक रूपों और मुहावरों में इसका अनुवाद करता है। अनुवाद के इन विभिन्न सिद्धांतों की एक अच्छी अच्छी चर्चा Fee and Stuart's *How to Read the Bible For All Its Worth*, p. 35 और Robert Bratcher's Introduction to the TEV में पाई जाती है।

चयनशील। इस शब्द का प्रयोग पाठ्य समीक्षा के संबंध में किया जाता है। यह एक ऐसे पाठ तक पहुँचने के लिए जो मूल स्वहस्त-लेखों के करीब माना जाता है, विभिन्न यूनानी पांडुलिपियों से पठन चुनने के चलन को संदर्भित करता है । यह इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करता है कि यूनानी पांडुलिपियों का कोई एक वर्ग मूलरूप को समझ पाता है।

स्वैर भाष्य। यह टीका के विपरीत है। यदि टीका मूल लेखक के अभिप्राय से "बाहर ले जाना" है, तो इस शब्द का तात्पर्य एक भिन्न विचार या मत को "अन्दर लेकर आना" होता है।

व्युत्पत्ति। यह शब्द अध्ययन का एक पहलू है जो किसी शब्द के मूल अर्थ का पता लगाने की कोशिश करता है। इस मूल अर्थ से, विशेष प्रयोग अधिक आसानी से पहचाने जाते हैं। व्याख्या में, व्युत्पत्ति मुख्य केंद्रबिंदु नहीं है, बल्कि एक शब्द का समकालीन अर्थ और प्रयोग है।

टीका। यह एक विशिष्ट अवतरण की व्याख्या करने के चलन के लिए पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ है "बाहर ले जाना" (पाठ से) जिसका तात्पर्य है कि हमारा उद्देश्य ऐतिहासिक विन्यास, साहित्यिक संदर्भ, वाक्यविन्यास और समकालीन शब्दार्थ के प्रकाश में मूल लेखक के अभिप्राय को समझना है।

शैली। यह एक फ्रांसीसी शब्द है जो विभिन्न प्रकार के साहित्य को दर्शाता है। शब्द का जोर है साहित्यिक रूपों को उन श्रेणियों में विभाजित करना जो सामान्य विशेषताओं को साझा करते हैं: ऐतिहासिक कथा, काव्य, कहावत, भविष्य सूचक और विधान।

ज्ञानवाद। इस कुपन्थ के बारे में हमारा अधिकांश ज्ञान दूसरी शताब्दी के ज्ञानवादी लेखन से आता है। हालाँकि, आरंम्भिक विचार पहली सदी (और उससे पहले) से मौजूद थे।

दूसरी शताब्दी के वैलेंशियन और सेरिन्थियन ज्ञानवाद के कुछ कथित सिद्धांत हैं: (1) तत्व और आत्मा सह-शाश्वत (एक सत्तामूलक द्वंद्ववाद) थे। तत्व दुष्ट है, आत्मा भला है। परमेश्वर, जो आत्मा है, सीधे तौर पर गढ़ने वाले दुष्ट तत्व के साथ शामिल नहीं हो सकता; (2) परमेश्वर और तत्व के बीच निर्गम (*eons* या दैवीय स्तर) हैं। अन्तिम या सबसे निम्न पुराने नियम का YHWH था, जिसने ब्रह्मांड (*kosmos*) का गठन किया था; (3) यीशु YHWH की तरह एक निर्गम था लेकिन ऊँचे स्तर पर, सच्चे परमेश्वर के करीब। कुछ लोगों ने उसे सर्वोच्च माना, लेकिन परमेश्वर से कम और निश्चित रूप से देहधारी देवता नहीं (तुलना यूहन्ना 1:14)। चूँकि तत्व दुष्ट है, यीशु एक मानव देह में होकर दिव्य नहीं हो सकता है। वह एक आत्मिक आभास था (तुलना 1 यूहन्ना 1:1-3; 4:1-6); और (4) उद्धार यीशु में विश्वास और विशेष ज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया जाता था, जो केवल विशेष व्यक्तियों द्वारा जाना गया है। स्वर्गीय क्षेत्रों से गुजरने के लिए ज्ञान (संकेत-शब्दों) की आवश्यकता थी। परमेश्वर तक पहुँचने के लिए यहूदी विधिपरायणता की भी आवश्यकता थी।

ज्ञानवादी झूठे शिक्षकों ने दो विपरीत नैतिक प्रणालियों का समर्थन किया: (1) कुछ लोगों के लिए, जीवनशैली उद्धार से संबंधित नहीं थी। उनके लिए, उद्धार और आत्मिकता को दैवीय स्तरों (*eons*) के माध्यम से गुप्त ज्ञान (संकेत-शब्दों) में समझाया गया था; या (2) दूसरों के लिए, जीवनशैली उद्धार के लिए महत्त्वपूर्ण थी। उन्होंने सच्ची आत्मिकता के प्रमाण के रूप में एक आत्म संयमी जीवन शैली पर जोर दिया।

हेर्मेनेयुटिक्स। यह उन सिद्धांतों के लिए शब्द है जो टीका का मार्गदर्शन करतें हैं। यह विशिष्ट दिशानिर्देशों और कला/दान दोनों का एक समूह है। बाइबल का, या पवित्र, हेर्मेनेयुटिक्स सामान्यतः दो श्रेणियों में विभाजित हैं: सामान्य सिद्धांत और

विशेष सिद्धांत। ये बाइबल में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के साहित्य से संबंधित हैं। प्रत्येक अलग प्रकार (शैली) के अपने विशिष्ट दिशानिर्देश हैं, लेकिन कुछ सामान्य मान्यताओं और व्याख्या की प्रक्रियाओं को भी साझा करती है।

उच्च समीक्षा। यह बाइबल की व्याख्या की एक प्रक्रिया है जो बाइबल की एक विशेष पुस्तक के ऐतिहासिक विन्यास और साहित्यिक संरचना पर केंद्रित है।

मुहावरा। इस शब्द का प्रयोग विभिन्न संस्कृतियों में पाए जाने वाले वाक्यांशों के लिए किया जाता है, जिनका विशेष अर्थ होता है, जो व्यक्तिगत शब्दों के सामान्य अर्थ से जुड़ा नहीं होता है। कुछ आधुनिक उदाहरण हैं: "जो बहुत अच्छा था," या "तुमने मुझे बस मार डाला।" बाइबल में इस प्रकार के वाक्यांश भी हैं।

प्रकाशन। यह उस अवधारणा को दिया गया नाम है कि परमेश्वर ने मानवजाति से बातचीत की है। पूर्ण अवधारणा सामान्य रूप से तीन शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती है: (1) प्रकटीकरण- परमेश्वर ने मानव इतिहास में कार्य किया है; (2) प्रेरणा- उसने कुछ चुने हुए पुरुषों को मानव जाति के लिए दर्ज़ करने के लिए उसके कार्यों और उनके अर्थ की उचित व्याख्या दी है; और (3) प्रकाशन -उसने मानवजाति को उसके आत्म-प्रकटीकरण को समझने में मदद करने के लिए अपनी आत्मा दी है।

आगमनात्मक। यह तर्क या विचार का वह तरीका है जो विशेष से सम्पूर्ण की ओर जाता है। यह आधुनिक विज्ञान की अनुभवजन्य पद्धति है। यह मूलतः अरस्तू का दृष्टिकोण है।

अंतः पंक्तिक। यह एक प्रकार का अनुसंधान साधन है, जो उन लोगों को जो एक बाइबल की भाषा नहीं पढ़ते हैं, इसके अर्थ और संरचना का विश्लेषण करने में सक्षम करता है। यह मूल बाइबल की भाषा के नीचे शब्द के लिए एक शब्द स्तर पर अंग्रेजी अनुवाद को रखता है। यह साधन, "विश्लेषणात्मक शब्द संग्रह" के साथ संयुक्त होने पर, इब्रानी और यूनानी के रूपों और मूल परिभाषाओं को बताता है।

प्रेरणा। यह वह अवधारणा है कि परमेश्वर ने बाइबल के लेखकों को सही ढंग से और स्पष्ट रूप से उसके प्रकटीकरण को दर्ज करने के लिए मार्गदर्शन करने के द्वारा मानवजाति से बात की है। पूर्ण अवधारणा सामान्य रूप से तीन शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती है: (1) प्रकटीकरण- परमेश्वर ने मानव इतिहास में कार्य किया है; (2) प्रेरणा- उसने कुछ चुने हुए पुरुषों को मानव जाति के लिए दर्ज़ करने के लिए उसके कार्यों और उनके अर्थ की उचित व्याख्या दी है; और (3) प्रकाशन - उसने मानवजाति को उसके आत्म-प्रकटीकरण को समझने में मदद करने के लिए अपनी आत्मा दी है।

विवरण की भाषा। इसका प्रयोग उन मुहावरों के संबंध में किया जाता है जिनमें पुराना नियम लिखा गया है। जिस प्रकार पाँचों इंद्रियों को प्रतीत होता है, यह उसी प्रकार से हमारे संसार की बात करती है। यह वैज्ञानिक विवरण नहीं है, और न ही इसका उद्देश्य यह था।

विधिपरायणता नियमों या संस्कारों पर अत्याधिक जोर देना इस प्रवृति की विशेषता है। यह परमेश्वर द्वारा स्वीकृति के साधन के रूप में मानव द्वारा नियमों के व्यवहार पर भरोसा करने के लिए प्रवृत्त होता है। यह संबंध को तुच्छ समझता है और व्यवहार को बढ़ावा देता है, दोनों एक पवित्र परमेश्वर और पापी मानवता के बीच वाचा के संबंध के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।

शाब्दिक। यह अन्तकिया के पाठय-केंद्रित और ऐतिहासिक पद्धति के हेर्मेनेयुटिक्स के लिए एक और नाम है। इसका अर्थ है कि व्याख्या में मानव भाषा का सामान्य और स्पष्ट अर्थ शामिल है, हालाँकि फिर भी यह आलंकारिक भाषा के प्रयोग को मान्यता देता है।

साहित्यिक शैली। यह उन विशिष्ट रूपों को संदर्भित करता है जो मानव संचार हो सकता है, जैसे कि काव्य या ऐतिहासिक कथा। प्रत्येक प्रकार के साहित्य में सारे लिखित साहित्य के लिए सामान्य सिद्धांतों के अतिरिक्त अपनी स्वयं की विशेष व्याख्या से संबंधित प्रक्रियाएँ होती हैं।

साहित्यिक इकाई। यह बाइबल की एक पुस्तक के प्रमुख विचार विभागों को संदर्भित करती है। यह कुछ पदों, अनुच्छेदों या अध्यायों से बना हो सकती है। यह एक केंद्रीय विषय के साथ एक स्व-निहित इकाई है।

लघु समीक्षा। "पाठ्य समीक्षा देखें।"

पांडुलिपि। यह शब्द यूनानी नये नियम की विभिन्न प्रतियों से संबंधित है। सामान्य तौर पर उन्हें इनके द्वारा विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया जाता है (1) वह वस्तु जिस पर उन्हें लिखा जाता है (पपीरस, चमड़ा), या (2) लेखन का रूप (सभी बृहदक्षर या छोटे अक्षर की लिपि)। "MS" (एकवचन) या "MSS" (बहुवचन) इनका संक्षिप्त रूप है।

मैसोरेटिक पाठ। यह नौवीं शताब्दी ई. के यहूदी विद्वानों की पीढ़ियों द्वारा प्रस्तुत पुराने नियम की इब्रानी पांडुलिपियों को संदर्भित करता है, जिसमें स्वरांकन बिंदु और अन्य पाठ्य टिप्पणियाँ शामिल हैं। यह हमारे अंग्रेजी पुराने नियम के लिए मूल पाठ बनाता है। इसके पाठ की ऐतिहासिक रूप से इब्रानी MSS द्वारा, विशिष्ट रूप से यशायाह, जिसे मृत सागर चीरकों से जाना जाता है, पुष्टि की गई है। "MT" इसका संक्षिप्त रूप है।

लक्षणालंकार। यह वह अलंकार है जिसमें किसी वस्तु का नाम उसके साथ जुड़ी किसी और बात का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में, "केतली उबल रही है" का वास्तविक अर्थ है "केतली के भीतर का पानी उबल रहा है।"

मुराटोरियन फ्रेगमेंट्स। यह नये नियम की धर्मवैधानिक पुस्तकों की एक सूची है। इसे 200 ई. से पहले रोम में लिखा गया था। इसमें भी प्रोटेस्टेंट नये नियम के समान ही सत्ताईस पुस्तकें हैं। यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि रोमी साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में स्थानीय कलीसियाओं ने चौथी सदी की प्रमुख कलीसिया काउंसिल से पहले "व्यावहारिक रूप से" धर्मविधान (कैनन) को निर्धारित कर दिया था।

प्राकृतिक प्रकटीकरण। यह मनुष्य के लिए परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण की एक श्रेणी है। इसमें प्राकृतिक व्यवस्था (रोमियों 1:19-20) और नैतिक चेतना शामिल है (रोमियों 2:14-15)।भजनसंहिता 19:1-6 और रोमियों 1-2 इसका वर्णन करता है। यह विशेष प्रकटीकरण से अलग है, जो बाइबल में परमेश्वर का और सर्वोच्च रूप से नासरत के यीशु का विशिष्ट आत्म-प्रकटीकरण है।

मसीही वैज्ञानिकों (जैसे ह्यूग रॉस के लेखन) के बीच "पुरानी पृथ्वी" आंदोलन द्वारा इस धर्मशास्त्रीय श्रेणी पर फिर से जोर दिया जा रहा है। वे इस श्रेणी का प्रयोग यह बताने के लिए करते हैं कि सम्पूर्ण सत्य परमेश्वर का सत्य है। प्रकृति परमेश्वर के बारे में ज्ञान का एक खुला द्वार है; यह विशेष प्रकटीकरण (बाइबल) से अलग है। यह आधुनिक विज्ञान को प्राकृतिक व्यवस्था पर शोध करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। मेरी राय में यह आधुनिक वैज्ञानिक पश्चिमी दुनिया का साक्षी बनने का एक शानदार अवसर है।

नेस्टोरियनवाद। नेस्टोरियस पाँचवीं शताब्दी में कॉन्स्टेंटिनोपल के कुलपति थे। उन्होने सीरिया के अन्ताकिया में प्रशिक्षिण लिया था और यह दावा किया कि यीशु के दो स्वभाव थे, एक सम्पूर्ण मानव और दूसरा एक सम्पूर्ण दिव्य। यह दृष्टिकोण अलेक्जेंड्रिया के रूढ़िवादी एक स्वभाव दृष्टिकोण से हट कर था। नेस्टोरियस की मुख्य चिंता थी मरियम को दिया गया "परमेश्वर की माँ" नाम। नेस्टोरियस का विरोध अलेक्जेंड्रिया के सिरिल और निहितार्थ से, उनके अपने अन्ताकियाई प्रशिक्षण द्वारा किया गया। अन्ताकिया बाइबल की व्याख्या के लिए ऐतिहासिक-व्याकरणिक-शाब्दिक दृष्टिकोण का मुख्यालय था, जबकि अलेक्जेंड्रिया के व्याख्या के चार-गुना (अन्योक्ति संबंधी) शिक्षा का मुख्यालय था। नेस्टोरियस को अंततः पद से हटा दिया गया और निर्वासित कर दिया गया।

मूल लेखक। यह पवित्रशास्त्र के वास्तविक साहित्यकारों/लेखकों को संदर्भित करता है।

पपीरस। यह मिस्र से एक प्रकार की लेखन सामग्री है। इसे सरकंडों से बनाया जाता है। यह वह सामग्री है जिस पर यूनानी नये नियम की हमारी सबसे पुरानी प्रतियाँ लिखी गई हैं।

समानांतर अवतरण। वे इस अवधारणा का हिस्सा हैं कि सम्पूर्ण बाइबल ईश्वर-प्रदत्त है और इसलिए, यह स्वयं की सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार और मिथ्याभासी सत्यों की संतुलक है। यह तब भी सहायक होता है जब कोई अनिश्चित या अस्पष्ट अवतरण की व्याख्या करने का प्रयास करता है। वे किसी दिए गए विषय पर सबसे स्पष्ट अवतरण और किसी दिए गए विषय के अन्य पवित्रशास्त्रीय पहलुओं को खोजने में भी मदद करते हैं।

संक्षिप्त व्याख्या। यह बाइबल अनुवाद का एक सिद्धांत है। बाइबल अनुवाद को "शब्द से शब्द" अनुरूपता से एक अबाध क्रम के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ "संक्षिप्त व्याख्या", जिसमें मूल शब्दों या वाक्यांशों के प्रयोग पर अधिक ध्यान

न देते हुए केवल एक विचार का अनुवाद किया जाता है, हर इब्रानी या यूनानी शब्द के लिए एक अंग्रेजी शब्द दिया जाना चाहिए। इन दो सिद्धांतों के बीच में "सक्रिय समतुल्य" है जो मूल पाठ को गंभीरता से लेने का प्रयास करता है, लेकिन आधुनिक व्याकरणिक रूपों और मुहावरों में इसका अनुवाद करता है। अनुवाद के इन विभिन्न सिद्धांतों की एक अच्छी अच्छी चर्चा Fee and Stuart's *How to Read the Bible For All Its Worth*, p. 35 में पाई जाती है।

अनुच्छेद। यह गद्य में मूल व्याख्यात्मक साहित्यिक इकाई है। इसमें एक केंद्रीय विचार और उसका विकास शामिल है। यदि हम इसके प्रमुख जोर (केंद्रीय विचार) पर लक्ष्य रखते हैं तो हम सूक्ष्म बातों को प्रमुखता नहीं देगें या मूल लेखक के अभिप्राय को नहीं चूकेंगे।

संकीर्णता। यह उन पूर्वाग्रहों से संबंधित है जो एक स्थानीय धर्मशास्त्रीय/सांस्कृतिक विन्यास में सीमित हैं। यह बाइबल के सत्य या उसके अनुप्रयोग की अन्तरसांस्कृतिक प्रकृति को नहीं पहचानता है।

मिथ्याभास। यह उन सत्यों को संदर्भित करता है जो विरोधाभासी प्रतीत होते हैं, फिर भी दोनों सत्य हैं, हालाँकि आपस में तनाव है। वे मानो विपरीत दिशाओं से प्रस्तुत करते हुए सत्य का गठन करते हैं। बहुत से बाइबल के सत्य को मिथ्याभासी (या द्वंद्वात्मक) जोड़ियों में प्रस्तुत किया गया है। बाइबल की सच्चाइयाँ अलग-थलग तारे नहीं हैं, बल्कि वे नक्षत्र हैं जो तारों के नमूनों से बने हैं।

प्लेटो। वह प्राचीन यूनान के दार्शनिकों में से एक थे। उनके दर्शन ने आरम्भिक कलीसिया को अलेक्जेंड्रिया, मिस्र के विद्वानों और बाद में, ऑगस्तीन के माध्यम से प्रभावित किया। उनका मानना था कि पृथ्वी पर सब कुछ भ्रमित करनेवाला और एक आत्मिक मूलरूप आदर्श की प्रति मात्र था। धर्मशास्त्रियों ने बाद में प्लेटो के "रूपों/विचारों" को आत्मिक क्षेत्र के समान माना।

पूर्वधारणा। यह किसी विषय की हमारी पूर्वकल्पित समझ को दर्शाता है। अक्सर हम स्वयं पवित्रशास्त्र में जाने से पहले मुद्दों के बारे में राय या निर्णय लेते हैं। इस मनोवृत्ति को पूर्वाग्रह, एक *priori* स्थिति, एक कल्पना या एक पूर्वज्ञान के रूप में भी जाना जाता है।

प्रूफ़-टेक्स्टिंग। यह अपनी साहित्यिक इकाई में निकटतम संदर्भ या विस्तृत संदर्भ की परवाह किए बिना एक पद को उद्धृत करके शास्त्र की व्याख्या करने का नित्य प्रयोग है। यह मूल लेखक के अभिप्राय में से पदों को हटा देता है और बाइबल की सत्ता का दावा करते हुए सामान्यतः एक व्यक्तिगत राय को साबित करने का प्रयास इसमें शामिल है।

रब्बियों का यहूदी धर्म। यहूदी लोगों के जीवन का यह चरण बेबीलोन के निर्वासन (586-538 ई.पू.) में शुरू हुआ। जैसे ही याजकों और मंदिर के प्रभाव को हटाया गया, स्थानीय आराधनालय यहूदी जीवन का केंद्रबिंदु बन गए। यहूदी संस्कृति सहभागिता, आराधना और बाइबल अध्ययन के ये स्थानीय केंद्र, राष्ट्रीय धार्मिक जीवन का केंद्रबिंदु बन गए। यीशु के दिनों में इस "शास्त्रियों का धर्म" याजकों के धर्म के समानांतर था। 70 ई. में यरूशलेम के पतन के समय, फरीसियों के वर्चस्व वाले शास्त्रीय रूप ने यहूदी धार्मिक जीवन की दिशा को नियंत्रित किया। तोराह की एक व्यावहारिक, कानूनी व्याख्या इसकी विशेषता है, जैसा कि मौखिक परंपरा (तल्मूद) में बताया गया है।

प्रकटीकरण। यह उस अवधारणा को दिया गया नाम है कि परमेश्वर ने मानवजाति से बातचीत की है। पूर्ण अवधारणा सामान्य रूप से तीन शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती है: (1) प्रकटीकरण- परमेश्वर ने मानव इतिहास में कार्य किया है; (2) प्रेरणा-उसने कुछ चुने हुए पुरुषों को मानव जाति के लिए दर्ज़ करने के लिए उसके कार्यों और उनके अर्थ की उचित व्याख्या दी है; और (3) प्रकाशन -उसने मानवजाति को उसके आत्म-प्रकटीकरण को समझने में मदद करने के लिए अपनी आत्मा दी है।

शब्दार्थ क्षेत्र। यह एक शब्द के साथ जुड़े अर्थों के विभिन्न प्रकारों को संदर्भित करता है। ये एक शब्द के विभिन्न संदर्भों में अलग-अलग लक्ष्यार्थ हैं।

सेप्टुआजिंट। यह इब्रानी पुराने नियम के यूनानी अनुवाद को दिया गया नाम है। परंपरा कहती है कि मिस्र के अलेक्जेंड्रिया के पुस्तकालय के लिए सत्तर यहूदी विद्वानों द्वारा सत्तर दिनों में लिखा गया था। पारंपरिक तिथि लगभग 250 ई.पू. (वास्तव में संभवतः इसे पूरा होने में एक सौ साल लग गए)। यह अनुवाद महत्त्वपूर्ण है क्योंकि (1) यह हमें मैसोरेटिक

इब्रानी पाठ से तुलना करने के लिए एक प्राचीन पाठ देता है; (2) यह हमें तीसरी और दूसरी शताब्दी ई. पू. में यहूदी व्याख्या की स्थिति दिखाता है; (3) यह हमें यीशु की अस्वीकृति से पहले यहूदी मसीहाई समझ देता है। इसका संक्षिप्त नाम "LXX" है।

सिनैटिकस। यह चौथी शताब्दी ई. की एक यूनानी पांडुलिपि है। इसे जर्मनी के विद्वान, टिस्चेनडोर्फ ने सीनै पर्वत के पारंपरिक स्थल जेबेल मूसा पर सेंट कैथरीन मठ में पाया था। इस पांडुलिपि को इब्रानी वर्णमाला के पहले अक्षर *"aleph"* [א] द्वारा नामित किया गया है। इसमें पुराना और पूरा नया नियम दोनों शामिल हैं। यह हमारे सबसे प्राचीन बृहदक्षर MSS में से एक है।

आत्मिक बनाना। यह शब्द अन्योक्ति में वर्णन करने का इस अर्थ में पर्याय है कि यह एक अवतरण के ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ को हटा देता है और अन्य मानदंडों के आधार पर उसकी व्याख्या करता है।

पर्यायवाची। यह सटीक या बहुत समान अर्थ वाले शब्दों को संदर्भित करता है (हालाँकि वास्तव में कोई दो शब्दों का एक पूर्ण शब्दार्थ अतिव्यापन नहीं है)। वे इतने करीब से संबंधित हैं कि वे अर्थ को खोए बिना वाक्य में एक दूसरे की जगह ले सकते हैं। इसका प्रयोग इब्रानी काव्यात्मक समानतावाद के तीन रूपों में से एक को नामित करने के लिए भी किया जाता है। इस अर्थ में यह काव्य की उन दो पंक्तियों को संदर्भित करता है जो एक ही सत्य को व्यक्त करती हैं (तुलना भजनसंहिता 103:3)।

वाक्य-विन्यास। यह एक यूनानी शब्द है जो एक वाक्य की संरचना को संदर्भित करता है। यह इस बात से संबंधित है कि एक वाक्य के भागों को किस प्रकार एक पूर्ण विचार बनाने के लिए एक साथ रखा गया है।

कृत्रिम। यह तीन शब्दों में से एक है जो इब्रानी काव्य के प्रकारों से संबंधित है। यह शब्द काव्य की उन पंक्तियों के बारे में बात करता है जो एक दूसरे में एक बढ़ने वाले अर्थ में निर्मित होती हैं, जिसे कभी-कभी "मौसमी" कहा जाता है (तुलना भजनसंहिता 19:7-9)।

सुनियोजित धर्मशास्त्र। यह व्याख्या का एक चरण है जो बाइबल की सच्चाइयों को एकीकृत और तर्कसंगत तरीके से वर्णन करने की कोशिश करता है। यह मसीही धर्मशास्त्र की श्रेणियों (परमेश्वर, मनुष्य, पाप, उद्धार, आदि) के आधार पर मात्र एक ऐतिहासिक प्रस्तुति के बजाय एक तार्किक प्रस्तुति है।

तल्मूद। यह यहूदी मौखिक परंपरा के संहिताकरण का शीर्षक है। यहूदियों का मानना है कि यह सीनै पहाड़ पर परमेश्वर द्वारा मूसा को मौखिक रूप से दिया गया था। वास्तव में यह वर्षों से यहूदी शिक्षकों का कुल ज्ञान प्रतीत होता है। तल्मूद के दो अलग-अलग लिखित संस्करण हैं: बेबीलोनियाई और छोटा, अधूरा पलस्तीनी।

पाठ्य समीक्षा। यह बाइबल की पांडुलिपियों का अध्ययन है। पाठ्य समीक्षा आवश्यक है क्योंकि कोई भी मूलरूप मौजूद नहीं है और प्रतियाँ एक दूसरे से भिन्न होती हैं। यह विभिन्नताओं को समझाने और पुराने और नये नियम के स्व-हस्त लेखों के मूल शब्दांकन के (यथासंभव निकट) आने का प्रयास करता है। इसे अक्सर "लघु समीक्षा" कहा जाता है।

टेक्स्टस रिसेप्टस। यह पदनाम 1633 ई. में यूनानी नये नियम के एलेज़वीर के संस्करण में विकसित हुआ था। मूल रूप से यह यूनानी नये नियम का एक रूप है जिसे इरास्मस (1510-1535), स्टीफेनस (1546-1559) और एलेज़वीर (1624-1678) कुछ बाद की यूनानी पांडुलिपियों और लातिनी संस्करणों से बनाया गया था। *An Introduction to the Textual Criticism of the New Testament*, p. 27 में, ए. टी. रॉबर्टसन कहते हैं "बीजान्टिन पाठ व्यावहारिक रूप से टेक्स्टस रिसेप्टस है।" बीजान्टिन पाठ प्रारंभिक यूनानी पांडुलिपियों के तीन वर्गों (पश्चिमी, अलेक्जेंड्रियन और बीजान्टिन) का सबसे कम मूल्यवान है। इसमें हाथ से नकल किए गए ग्रंथों की सदियों की संचयित त्रुटियाँ हैं। हालाँकि, ए. टी. रॉबर्टसन यह भी कहते हैं, "टेक्स्टस रिसेप्टस ने हमारे लिए काफी हद तक एक सटीक पाठ संरक्षित किया है" (p. 21)। यह यूनानी पांडुलिपि परंपरा (विशेष रूप से इरास्मस का 1522 का तीसरा संस्करण) 1611 ई. किंग जेम्स वर्जन का आधार है।

तोराह। यह "शिक्षण" के लिए इब्रानी शब्द है। यह मूसा के लेखन के लिए आधिकारिक शीर्षक बन गया (उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक)। यह यहूदियों के लिए, इब्रानी कैनन (धर्मविधान) का सबसे आधिकारिक विभाग है।

प्रतीकात्मक। यह एक विशेष प्रकार की व्याख्या है। सामान्यतः इसमें एक अनुरूप प्रतीक के माध्यम से पुराने नियम के अवतरणों में पाया गया नये नियम का सत्य शामिल है। हेर्मेनेयुटिक्स की यह श्रेणी अलेक्जेंड्रियन विधि का एक प्रमुख तत्व थी। इस प्रकार की व्याख्या के दुरुपयोग के कारण, इसका प्रयोग नए नियम में दर्ज विशिष्ट उदाहरणों तक सीमित रखना चाहिए।

वेटिकनस। यह चौथी शताब्दी ई. की यूनानी पांडुलिपि है। यह वेटिकन के पुस्तकालय में पाया गया था। मूल रूप से इसमें पुराना नियम, एपॉक्रिफा और नया नियम शामिल है। हालाँकि, कुछ हिस्से खो गए थे (उत्पत्ति, भजन, इब्रानियों, पादरी-संबंधी, फिलेमोन और प्रकाशितवाक्य)। यह स्वहस्त लेखों के मूल शब्द निर्धारण में एक बहुत ही उपयोगी पांडुलिपि है। यह एक बड़े अक्षर "B" द्वारा नामित है

वुल्गेट। यह बाइबल के जेरोम के लातिनी अनुवाद का नाम है। यह रोमन कैथोलिक कलीसिया के लिए मूल या "सामान्य" अनुवाद बन गया। यह 380 ई. में किया गया था।

बुद्धि साहित्य। यह प्राचीन निकट पूर्व (और आधुनिक संसार) के साहित्य की एक सामान्य शैली थी। यह मूलतः नई पीढ़ी को काव्य, कहावत या निबंध के माध्यम से सफल जीवनयापन के लिए दिशानिर्देशों का निर्देश देने का एक प्रयास था। इसे सामूहिक समाज की बजाय व्यक्ति को अधिक संबोधित करता था। इसने इतिहास के संकेतों का प्रयोग नहीं किया बल्कि जीवन के अनुभवों और अवलोकन पर आधारित था। बाइबल में, अय्यूब से लेकर श्रेष्ठगीत तक YHWH की उपस्थिति और आराधना को ग्रहण किया, लेकिन यह धार्मिक विश्वदृष्टिकोण हर बार हर मानव अनुभव में स्पष्ट नहीं है।

एक शैली के रूप में यह सामान्य सत्य बताता है। हालाँकि, इस शैली का प्रयोग हर विशिष्ट परिस्थिति में नहीं किया जा सकता है। ये सामान्य कथन हैं जो हमेशा हर व्यक्तिगत परिस्थिति पर लागू नहीं होते हैं।

इन संतों ने जीवन के कठिन प्रश्न पूछने का साहस किया। अक्सर वे पारंपरिक धार्मिक विचारों (अय्यूब और सभोपदेशक) को चुनौती देते थे। वे जीवन की त्रासदियों के बारे में आसान जवाबों के लिए एक संतुलन और तनाव बनाते हैं।

विश्वचित्र और विश्वदृष्टिकोण। ये साथी शब्द हैं। ये दोनों सृष्टि से संबंधित दार्शनिक अवधारणाएँ हैं। "विश्वचित्र" शब्द सृजन के "कैसे" का उल्लेख है, जबकि "विश्वदृष्टि" का संबंध "कौन" से है। ये शब्द उस व्याख्या के लिए प्रासंगिक हैं जिससे उत्पत्ति 1-2 मुख्य रूप से संबंधित है, सृजन का कौन, न कि कैसे।

YHWH. यह पुराने नियम में परमेश्वर के लिए वाचा का नाम है। इसे निर्गमन 3:14 में परिभाषित किया गया है। यह इब्रानी शब्द "होना" का प्रेरणार्थक रूप है। यहूदी नाम का उच्चारण करने से डरते थे, ऐसा न हो कि वे इसे व्यर्थ में ले लें; इसलिए, उन्होंने इब्रानी शब्द *Adonai,* "प्रभु" से इसे बदल दिया। इस वाचा के नाम का इस तरह अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

मत-संबंधी कथन

मैं विशेष रूप से विश्वास या पंथ के कथनों की परवाह नहीं करता। मैं खुद बाइबल की पुष्टि करना पसंद करता हूँ। हालांकि, मैंने महसूस किया कि विश्वास का एक कथन उन लोगों को जो मुझ से अपरिचित हैं, मेरे मत-संबंधी दृष्टिकोण का मूल्यांकन करने का एक मार्ग प्रदान करेगा। हमारे इतने धर्मशास्त्रीय त्रुटि और धोखे के दिन में, मेरे धर्मशास्त्र का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत किया गया है।

1. बाइबल, पुराने और नए नियम दोनों, परमेश्वर का प्रेरित, अचूक, आधिकारिक, अनंत वचन है। यह अलौकिक नेतृत्व के तहत मनुष्यों द्वारा दर्ज परमेश्वर का स्व-प्रकटीकरण है। यह हमारा परमेश्वर और उनके उद्देश्यों के बारे में स्पष्ट सच्चाई का एकमात्र स्रोत है। यह उसकी कलीसिया के लिए विश्वास और व्यवहार का एकमात्र स्रोत भी है।
2. केवल एक ही अनंत, सृष्टिकर्ता, उद्धारक परमेश्वर है। वह दृश्य और अदृश्य सभी चीजों का निर्माता है। उसने खुद को प्यार और देखभाल करने वाले के रूप में प्रकट किया है, हालांकि वह निष्पक्ष और न्यायी भी है। उसने स्वयं को तीन विशिष्ट व्यक्तियों में प्रकट किया है : पिता, पुत्र और आत्मा, वास्तव में अलग फिर भी मूलतत्व में समान।
3. परमेश्वर अपनी दुनिया के नियंत्रण में सक्रिय है। उसकी रचना के लिए एक अनंत योजना है जो अटल है और व्यक्तिगत रूप से केंद्रित है जो मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा की अनुमति देता है। परमेश्वर के ज्ञान और अनुमति के बिना कुछ भी नहीं होता है, फिर भी वह स्वर्गदूतों और मनुष्यों दोनों के बीच व्यक्तिगत पसंद की अनुमति देता है। यीशु पिता का चयनित मनुष्य है और सभी संभावित रूप से उसी में चुने जाते हैं। घटनाओं के बारे में परमेश्वर का पूर्वज्ञान मनुष्यों को एक निर्धारित पूर्व लिखित आलेख के अधीन नहीं करता है। हम सभी अपने विचारों और कर्मों के लिए जिम्मेदार हैं।
4. मानव जाति ने परमेश्वर की छवि में रचित और पाप से मुक्त होकर भी, परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करना चुना। हालांकि एक अलौकिक कर्ता के द्वारा ललचाए गए, आदम और हव्वा अपनी इच्छानुसार आत्म-केन्द्रित होने के लिए जिम्मेदार थे। उनके विद्रोह ने मानवता और सृजन को प्रभावित किया है। हम सभी को आदम में अपनी सामाजिक स्थिति और हमारे व्यक्तिगत स्वेच्छिक विद्रोह के लिए परमेश्वर की दया और कृपा दोनों की आवश्यकता है विद्रोह।
5. परमेश्वर ने पतित मानवता के लिए क्षमा और उद्धार का एक साधन प्रदान किया है। यीशु मसीह, परमेश्वर का अनोखा बेटा, एक मनुष्य बना, एक पाप रहित जीवन जिया और अपनी प्रतिस्थापन मृत्यु के माध्यम से, मानव जाति के लिए पाप के दंड का भुगतान किया। वह परमेश्वर के साथ उद्धार और संगति का एकमात्र तरीका है। उसके द्वारा किए गए कार्य में विश्वास के माध्यम के सिवाय मुक्ति का और कोई साधन नहीं है।
6. हममें से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से यीशु में क्षमा और उद्धार के परमेश्वर के प्रस्ताव को स्वीकारना चाहिए। ये है यीशु के माध्यम से परमेश्वर के वादों में स्वेच्छिक विश्वास और ज्ञात पाप से अपनी मर्जी से मुड़ जाने के माध्यम से पूरा किया।
7. हम सभी मसीह में अपने विश्वास और पाप से पश्चाताप के आधार पर पूरी तरह से क्षमा और बहाल हुए हैं। हालाँकि, इस नए रिश्ते के प्रमाण एक परिवर्तित और परिवर्तनशील जीवन में देखे गए हैं। मानवता के लिए परमेश्वर का लक्ष्य किसी दिन केवल स्वर्ग नहीं है, बल्कि अभी मसीह के समान बनना है।जो सही मायनों में छुड़ाए गए हैं, कभी-कभार पाप करने के बावजूद, जीवन भर विश्वास और पश्चाताप में बने रहेंगें।
8. पवित्र आत्मा "दूसरा यीशु है।" वह खोए हुओं को मसीह की ओर ले जाने के लिए और बचाए हुओं में मसीह की समानता विकसित करने के लिए दुनिया में मौजूद है। आत्मा के वरदान उद्धार में दिए जाते हैं। वे यीशु का जीवन और सेवकाई हैं जो उसके शरीर, कलीसिया के बीच बाँट दिए गए हैं। वरदान जो मूल रूप से यीशु के मनोभाव और उद्देश्य हैं, आत्मा के फल से प्रेरित होने चाहिए। आत्मा हमारे दिन में सक्रिय है जैसा वह बाइबल के समय में था।
9. पिता ने पुनर्जीवित यीशु मसीह को सभी चीजों का न्यायाधीश बना दिया है। वह सारी मानव जाति का न्याय करने के लिए धरती पर लौटेगा। जिन लोगों ने यीशु पर विश्वास किया है और जिनके नाम मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं उन्हें उसकी वापसी पर उनके अनंत गौरवान्वित शरीर प्राप्त होगें। वे हमेशा उसके साथ रहेंगे। हालांकि, जिन्होंने परमेश्वर की सच्चाई का प्रत्युत्तर देने से मना कर दिया है, वे त्रिगुणात्मक परमेश्वर के साथ संगति की खुशियों से सदा के लिए अलग हो जाएंगे। वे शैतान और उसके स्वर्गदूतों के साथ दोषित ठहराए जाएंगे।

यह निश्चित रूप से पूर्ण या विस्तृत नहीं है, लेकिन मुझे आशा है कि यह आपको मेरे दिल का धर्मशास्त्रीय स्वाद देगा। मुझे कथन पसंद है:

"अनिवार्यताओं में - एकता, बाह्य-उपकरणों में - स्वतंत्रता, सभी चीजों में - प्रेम।"